॥ श्रीः ॥

भारतभ्रमण।

(पाँच खण्डोंमेंसे)

प्रथमखण्ड।

बाबू साधुचरणप्रसाद विरचित।

जिसमें

भारतवर्ष अर्थात् हिन्दुस्थानके तीर्थ, शहर और अन्य प्रसिद्ध

स्थानोंके भूतकालिक और वर्तमानकालिक वृत्तान्त

पूर्णरीतिसे लिखे गये हैं

स्तकालय
रुकुल कांगड़ी

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणयन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकाशित किया।

संवत् १९६६, शके १८३१.

इस ग्रन्थका सर्वाधिकार ऐक्ट २५ सन् १८६७ के अनुसार "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्षके स्वाधीन हैं। इसे छापने वा अनुवाद करनेका साहस कोई न करें।

बाबू साधुचरण प्रसाद, ग्रन्थकर्त्ता.

बाबू तपसीनारायण ग्रन्थकर्त्ता के लघुभ्राता.

भूमिका।

मैं परम कारुणिक परमेश्वर को बार बार नमस्कार करता हूं, जिनकी अपार कृपा से मेरा "भारतभ्रमण" समाप्त हुआ। इस के पश्चात् मैं किंचित् आरंभ का वृत्तांत लिखता हूं। मेरे पिता जी की तीर्थोंमें बड़ी श्रद्धा थी; वह प्रतिवर्ष तीर्थयात्रा के लिये जाया करते थे। सन १८८० ईसवी से तो वह अपने गृह का समस्त कार्य छोड़ तीर्थ स्थानों या अपने शिवमन्दिरमें अपना कालक्षेप करने लगे। जमींदारी और अदालत के संपूर्ण कार्य का भार मेरे ऊपर था। मैं सौभाग्यवश एक समय अपने पिता के साथ अनेक तीर्थों में पर्यटन करता हुआ उज्जैन गया। उस यात्रा के समय मुझको ऐसा जान पड़ा कि भारतवर्ष में भ्रमण करने वाले सर्वसाधारण लोग तीर्थों के संपूर्ण प्रसिद्ध स्थानों और शहर तथा प्रसिद्ध स्थानों की सब दर्शनीय वस्तुओं को नहीं देख सकते। पंडे लोग तथा दिखलाने वालों को तो केवल अपने लाभही से काम रहता है, इसलिये मेरे मन में एकाएक यह अंकुर उठा कि एक ऐसी पुस्तक होनी चाहिए जो भारत में भ्रमण करने वालों को आगे आगे मार्ग दिखलावे और किसी प्रधान स्थान अथवा वस्तुओं को देखने से छूटने न देवे।

कुछ दिनों के उपरांत मेरा मन एक बारगी भारत-भ्रमण में लग गया। सो मैंने संपूर्ण भारतवर्ष अर्थात् हिन्दुस्तान के भिन्न भिन्न प्रांतों में ५ बार ५ यात्रा करके प्राय: संपूर्ण तीर्थ स्थानों, शहरों और अन्य अन्य प्रसिद्ध स्थानों में जाकर जिस प्रकार हो सका सब स्थानों और वस्तुओं का पता लगा कर उनका वृत्तांत लिखा और अनेक बड़े बड़े मन्दिर और दर्शनीय वस्तुओं का नकशा बनाया और हिन्दुओं के तीर्थस्थानों, देवमन्दिरों इत्यादि के अतिरिक्त भारतवर्ष के जैन, बौद्ध, सिक्ख, पारसी इत्यादि के पवित्र स्थानों और मन्दिरों और मुसलमानों की मसजिदों, दरगाहों और प्रसिद्ध स्थानों के वृत्तांतों को भी लिख लिया।

मेरी पहिली यात्रा सन १८९१-१८९२ ईस्वी, दूसरी यात्रा सन १८९२, तीसरी यात्रा सन १८९२-१८९३, चौथी यात्रा सन १८९३ और पांचवीं यात्रा सन १८९६ ईस्वी में हुई थी। मैंने जिस क्रम से भारतवर्ष में भ्रमण किया उसी क्रम से पांचों यात्रा के पांच खंड बनाकर इस पुस्तक का नाम "भारतभ्रमण" रक्खा। पहिले खंड में पश्चिमोत्तर देश का भाग, मध्यभारत, राजपूताना अजमेर और मध्यदेश का हिस्सा; दूसरे खंड में पश्चिमोत्तर देश का भाग, अवध, पंजाब, काश्मीर और सिंध देश, तीसरे खंड में बंगाल के चारों सूबे अर्थात् विहार बंगाल, उड़ीसा और छोटा नागपुर और स्वतंत्र राज्य नैपाल तथा भूटान और अंगरेजी राज्य आसाम, चौथे खंड में मध्यदेश का भाग, बरार, बंबई हाता, मदरास हाता, हैदराबाद का राज्य, मैसूर का राज्य और कुर्ग और पांचवें खंड में पश्चिमोत्तर देश के बदरिकाश्रम इत्यादि पहाड़ी देशों के वृत्तांत लिखे हुए हैं।

मैंने अनेक अंगरेजी, पारसी तथा हिन्दी की किताबों से वृत्तांत और ऐतिहासिक बातों को और स्मृति, पुराण, महाभारत, रामायण आदि धर्म पुस्तकों से प्राचीन कथाओं को निकाल कर "भारतभ्रमण" में लिखा है।

निम्नलिखित स्मृति, पुराण इत्यादि धर्म पुस्तकों की भारत-वर्ष संबंधी प्राचीन कथा संक्षिप्त करके भारतभ्रमण के उचित स्थलों में लिखी गई हैं उनके नाम ये हैं;—२० स्मृतियां,—१ मनुस्मृति. २ अत्रिस्मृति. ३ विष्णुस्मृति. ४ हारीतस्मृति. ५ औशनसस्मृति. ६ आंगिरसस्मृति. ७ यमस्मृति. ८ आपस्तंबस्मृति. ९ संवर्तस्मृति. १० कात्यायनस्मृति. ११ बृहस्पतिस्मृति. १२ पाराशरस्मृति. १३ व्यासस्मृति. १४ शंखस्मृति. १५ लिखितस्मृति. १६ दक्षस्मृति. १७ गौतमस्मृति. १८ शातातपस्मृति. १९ वसिष्ठस्मृति और २० याज्ञवल्क्यस्मृति। १८ पुराण.—१ ब्रह्मपुराण. २ पद्मपुराण. ३ विष्णुपुराण. ४ देवीभागवत. ४ श्रीमद्भागवत. ५ वायुपुराण. ५ शिवपुराण. ६ बृहन्नारदीयपुराण. ७ मार्कंडेयपुराण. ८ अग्निपुराण. ९ कूर्मपुराण. १० ब्रह्मवैवर्तपुराण. ११ लिंगपुराण. १२ वामनपुराण. १३ मत्स्यपुराण. १४ वाराहपुराण. १५ भविष्यपुराण. १६ ब्रह्मांडपुराण. १७ स्कंदपुराण और १८ गरुडपुराण। (देवीभागवत और श्रीमद्भागवत दोनों अपने को १८ पुराणों में कहते हैं। बहुतेरे लोग देवीभागवत को और बहुतेरे श्रीमद्भागवत को १८ पुराणों में मानते हैं। पुराणों में सर्वत्र १८ पुराण में एक पुराण भागवत लिखा है और कई एक पुराणों में शिवपुराण को छोडकर अठारह पुराणों में वायुपुराण और कई एक में वायुपुराण को निकाल कर अठारह पुराणों में शिवपुराण लिखा है) अन्य धर्म पुस्तकें और उपपुराण;—१८ पर्व महाभारत, वाल्मीकिरामायण, दूसरा बृहद्शिवपुराण उर्दू अनुवाद, गणेशपुराण, नृसिंहपुराण, कल्किपुराण, सौरपुराण, सांबपुराण और जैमिनीपुराण। इनके अतिरिक्त अनेक भाषा पुस्तकों की कथा भी स्थान स्थान में लिखी गई हैं। जो विज्ञपुरुष प्राचीन कथाओंको विस्तारपूर्वक धर्मपुस्तकों में देखना चाहें वे "भारतभ्रमण" में लिखे हुए पते से उन कथाओं को सहज में पा सकते हैं। मैंने प्राचीन कथाओं या इतिहासों में कुछ तर्क या बढाव नहीं किया है। यदि अनुवाद की भूल से किसी स्थान में चूक हुई हो तो पाठकगण उसे क्षमा करें।

इस पुस्तक में शहर, कसबे, देशी राज्य और जिलों की मनुष्य-संख्याभी लिखी गई हैं। जिनकी संख्या सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय की नहीं मिली, उनकी सन १८८१ की मनुष्य गणनाके समयकी लिखी गई। मैंने अधिकाईके क्रमसे इस पुस्तकमें संख्या लिखीहै क्योंकि ऐसा न करनेसे शीघ्र नहीं जान पडेगा कि इस जिले या शहरमें किस मतके या किस जातिके मनुष्य अधिक हैं, इस कारण बहुतेरे स्थानों में ब्राह्मण इत्यादि उच्च जातियों से प्रथम चमार इत्यादि नीच जाति, जिनकी संख्या अधिक है लिखी गई है। चमार डोम इत्यादि नीच जातियों के लोग हिन्दुओं के देव देवियों को मानते हैं और हिन्दुओं की अनेक रीतियों पर चलते हैं इस कारण मनुष्य-गणनाके समय वे लोग हिन्दू में गिने गए हैं, अतएव मनुष्य-गणना के अनुसार मैंने इनको हिन्दुओंमें लिखा है। इनके अतिरिक्त भारतवर्ष में जहां जहां रेलवे का जंक्शन अर्थात् मेल है उन स्थलोंसे प्रत्येक दिशाओं के प्रसिद्ध स्टेशनों का फासिला इस पुस्तक में लिखा गया है और 'प्रथमखंड' के आरंभमें भारतवर्षीय विवरण दियागया है।

इस पुस्तक में भारतवर्ष के संपूर्ण प्रसिद्ध स्थान, शहर, कसबे और तीर्थ स्थानों के वर्तमान और भूतकालिक वृत्तांत यथासाध्य लिखे गए हैं। भारतवर्ष में सैकडों पवित्र स्थान और दर्शनीय वस्तुएं विद्यमान हैं और इनके संबंध में असंख्य पवित्र प्राचीन कथा और

ऐतिहासिक बातें लिखी हुई हैं। इनको देखने और जानने की श्रद्धा किसको नहीं होगी, किन्तु सर्वसाधारण लोग इस अनुपम देश का पर्यटन और बहुतेरे ग्रन्थ और ऐतिहासिक किताबों का अवलोकन नहीं कर सकते। मुझको आशा है कि उनके लिये इस भारतभ्रमण का पढना अवश्य आनंद दायक होगा और जो इसको अपने साथ लेकर पर्यटन करेंगे उनको यह पुस्तक संपूर्ण दर्शनीय स्थान और वस्तुओंको बतलावेगी। मेरा अभिप्राय इस ग्रन्थ के लिखने से यही है कि सर्वसाधारण लोग इसे पढ कर लाभ उठावें। इससे यदि उनका कुछ भी उपकार होगा तो मैं अपना परिश्रम सफल जानूंगा। अंत में मैं अपने अनुज बाबू तपसी नारायण को असंख्य धन्यवाद देता हूं जिनकी सहायता से मैंने इस बृहद्ग्रन्थ को समाप्त किया। इसको प्रथमावृत्ति हमने काशीजी में छपवाई थी और अब मैं द्वितीयावृत्ति छापने के लिये अपनी परम प्रसन्नता से सर्वाधिकार सहित खेमराज श्रीकृष्णदास अध्यक्ष "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस बम्बई को समर्पण करताहूं और दूसरे कोई महाशय इसे छापने तथा अनुवाद करनेका साहस न करें।

विज्ञजन और महात्माओं का कृपाभिलाषी—
साधु चरणप्रसाद,

धन्यवाद ।

हमारा भारतवर्ष पुण्यभूमि इसलिये कहा जाता है कि इसमें चार धाम, सात मोक्षपुरी कितने ही पुण्य क्षेत्र श्रीगंगा आदि कितनी ही पवित्र नदियां आदि हैं, उनके दर्शन स्पर्श स्नानादिसे मनुष्योंके बड़ेसे भी बड़े पाप नष्ट होकर धर्म, अर्थ और कामकी वृद्धि होती है। इसी लिये हिन्दू लोग अपने जीवनमें यथाशक्ति गङ्गादि नदियोंमें स्नान तथा पवित्र स्थलोंकी यात्रा करना अपना मुख्य कर्तव्य समझते हैं। जो जितना अधिक तीर्थ पर्यटन करता है उतनी ही पूज्य दृष्टि उसके ऊपर लोगोंकी होती है। यद्यपि जिस तीर्थमें जाओ वहांके तीर्थ पुरोहित अथवा तीर्थोंमें भ्रमण करानेवाले लोगोंसे किसी प्रकार काम चलता है पर साधारण स्थितिके मनुष्य जो कि पर्याप्त धन नहीं रखते उन्हें उक्त लोगोंसे कुछ सुभीता नहीं होसकता। हम बाबू साधुचरण प्रसादजीको हार्दिक धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने भारतवर्षके तीर्थयात्रा करने वालोंके लाभार्थ यह भारत भ्रमण बनाकर तीर्थ यात्राके विषयमें बडा भारी अभाव मिटा दिया है। इस पुस्तकमें प्रसंगवश चारों वेद, अठारहों पुराण, मनु आदि महर्षियोंके धर्मशास्त्र और महाभारत आदि इतिहास ग्रन्थोंसे प्रमाण ढूँढ ढूँढ कर उन उन स्थानोंका महत्त्व बतलाया गया है। इतनाही नहीं बल्कि भारतवर्षभर के प्रसिद्ध प्रसिद्ध स्थान, वहांके राज्य, उनका भूगोल वहांकी जनसंख्या, उनकी जाति, धर्म इत्यादि जानने योग्य प्राय: सभी बातें इस ग्रन्थमें लिख दी गयी हैं। यह पुस्तक केवल तीर्थयात्रियोंहीके लाभकी नहीं बल्कि भारतवर्षके वृत्तान्त जाननेकी इच्छा करनेवाले पथिक—चाहों हिन्दू, जैनी, अंगरेज, मुसलमान कोई भी हो, और वह तीर्थयात्रा देशाटन तथा व्यापार जिस किसी उद्देशसे यात्रा करने वाला हो सबको समान लाभदेने वाली है, आद्योपान्त इसको पढ़के यदि कोई पृथ्वीका भ्रमण करना चाहे तो उसको विना परिश्रम पृथिवीभरके स्थान आदिका अनुभव होसकताहै। कोई राजा महाराजा आदि महानुभाव यदि भारतवर्षका भ्रमण करना चाहें तो प्रत्येक देशके अनुभवी मनुष्योंको इकट्ठा करनेमें कितना धनव्यय करना पडेगा, पर इस एक पुस्तकके पढलेने अथवा पास रखनेसे साधारण मनुष्य भी अच्छी तरह भ्रमण पूर्ण कर सकते हैं। अभी तक ऐसी उपयोगी पुस्तकके न होनेसे भारतवर्षके सुख पूर्वक भ्रमण करनेमें जो न्यूनता थी वह उक्त बाबू साधुचरण प्रसादजीने अनन्त धनव्यय तथा अनेक कष्टोंको सहकर दूर करदी अत: आपको जितने धन्यवाद दिये जावें थोडे हैं। उक्त बाबू साहब और भी विशेष धन्यवादके योग्य इसलिये हैं कि आपको अपनी जमीदारीके अनेक झन्झटोंसे अवकाश न मिलनेपर भी आपने लोकोपकार दृष्टिसे उस कार्य्यको अप्रधान समझ प्राय: ५ वर्षतक निरन्तर इसी कामको किया है, और भगवान्की कृपासे अपने सदुद्योगमें आप सफलयत्न हुए हैं। उपसंहारमें हम आपको हार्दिक धन्यवाद देते हैं कि आपने इस लोकोपकारक पुस्तकके रजिस्टरी सहित पुनर्मुद्रणादि अधिकार हमें सदैवके लिये देकर बाधित किया है।

हमने इस उपयोगी पुस्तकको सर्वसाधारणके लाभके लिये उत्तमतासे छापा है, आशा है कि लोग हाथों हाथ इसे लेकर लाभ उठावेंगे।

आपका—कृपाकांक्षी—

खेमराज श्रीकृष्णदास.

अध्यक्ष "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) प्रेस-मुम्बई.

भारतवर्षीय संक्षिप्त विवरण

अर्थात्।

भारतभ्रमण ग्रंथका सारांश।

भारतवर्ष।

महाभारत और पुराणों में राजा भरत के नाम से इसका नाम भारत-वर्ष लिखा है। मुसलमानों ने भारत-वर्षका नाम हिंदुस्तान रक्खा। अंगरेज लोग इसको इंडिया कहते हैं।

भारत-वर्ष एक बडा देश (८ अंश से ३५ अंश उत्तर अक्षांश तक और ६७ अंश से ९२ अंश पूर्व देशांतर तक) त्रिभुज के समान आकार का एशिया महा द्वीप के मध्य से दक्षिण की ओर समुद्र में कुछ दूर तक फैला हुआ है। इसकी उत्तरी सीमा हिमालय पर्वतकी श्रेणी है, पश्चिमकी ओर अरब का समुद्र और पूर्वकी ओर बंगाले की खाडी है। इसके पश्चिमोत्तरमें सुलेमान और हाला पर्वत हैं, जिनके उस पार बलूचिस्तान और अफगानिस्तान देश है और पूर्वोत्तर में आसाम की पहाडी है, जो ब्रह्मा देश से इसको अलग करती है। भारत-वर्ष की लंबाई उत्तर से दक्षिण तक प्राय: १९०० मील और चौडाई भी पूर्वसे पश्चिम तक अधिक से अधिक इतनीही है, परंतु इसकी शकल कन्याकुमारी की ओर जो भारत-वर्ष का दक्षिणी शिरा है, गावदुम होती चली गई है।

यह देश स्वाभाविक ३ खंडों में बँटा है, पाहिले भाग में हिमालय पर्वत शामिल है जो उत्तर की ओर दीवार की तरह पडा है; दूसरा भाग हिमालय की जडसे दक्षिण की ओर फैला हुआ है उसमें वह संपूर्ण भूमि शामिल है जो हिमालय की बडी बडी नदियों से सींची जाती है तीसरा भाग नदियों के मैदान की दक्षिण सीमासे ऊपर की ओर ढालुआं होता गया है और ऊंची सतह त्रिकोण को शकल का बन गया है, जिस पर भारत-वर्ष का आधा दक्षिण भाग शामिल है। इस जमीन के टुकडे में मध्य देश, बरार, मद्रास मईसूर, निजाम हैदराबाद का राज्य और सेन्धिया और होलकर के राज्य इत्यादि देश शामिल हैं। इस भाग के पूर्ववाले समुद्रके किनारे को 'कारोमंडल' और पश्चिम के तट को 'मलेवार' कहते हैं। जिस भाग में हिमालय है, उसको उत्तराखंड, विन्ध्याचल और हिमालय के बीच के भाग को आर्यावर्त वा मुख्य हिन्दुस्तान और समुद्र के बीच के भाग को दक्षिण, कहते हैं। अंगरेजों ने बंगाले की खाढी के पूर्व के ब्रह्मा मुल्क को हिन्दुस्तान में मिलादिया है।

पर्वत।

हिमालय, पृथ्वी के जाने हुए संपूर्ण पर्वतों से ऊंचा है। उसकी लंबाई पूर्वसे पश्चिमको अनुमान से १५०० मील और सबसे अधिक चौडाई उत्तरसे दक्षिणको लगभग ४०० मील है। उस पर उंचाई के कारण सदा हिम अर्थात् बर्फ रहती है, इसी कारण उस पर्वत को हिमालय हिमाचल और हिमाद्रि कहते हैं। उसीके अंतर्गत उत्तरीय भाग में कैलास पर्वत है।

हिमालय की २ पहाडी दीवारें करीब करीब पूर्व से पश्चिम तक समानांतर रेखा की तरह खींची हुई हैं और मध्य में नीची जमीन या घाटी है। इनमें से दक्षिणी दीवार के लंबकी ऊंचाई जो भारत वर्ष के मैदानों की उत्तर सीमा पर है, २०००० फीट से अधिक अर्थात् ४ मील है। उसकी सबसे ऊंची चोटी एवरेष्ट पहाड २९००० फीट ऊंची है। इस सिलसिले का उतार उत्तरकी ओर सीढियों की भांति है, जो लगभग १३ हजार फीट समुद्र के जलसे ऊंचा है। इन नीची जगहों के पीछे हिमालय पहाड का भीतरी सिलसिला एक बडी पहाडी दीवार के समान बर्फ से ढँका हुआ देख पडता है दोनों दीवार के उस पार वह घाटियां हैं जिनसे सिन्ध सतलज और ब्रह्मपुत्र नदियां निकली हैं। इन घाटियों के उत्तर समुद्र के जल से १६०० फीट ऊंचा तिब्बत का मैदान आरंभ होता है। हिमालयकी चोटियां तिब्बत और हिन्द के बीच में सर्वदा बर्फ से ढपी रहती हैं और पहाडियों के ढालुए भागपर बडे बडे बर्फके मैदान हैं, जिनमें से एककी लंबाई लगभग६० मील की है। हिमालयके कमसे कम ४० चोटी वा शृंग २०००० फीटसे अधिक ऊंचे हैं जिनमें प्रसिद्ध ये हैं, भुटानमें चमलारी (२४००० फीट ऊंची), शिकम में किनबिनाचिंगा (२८१५६ फीट); नैपाल में गौरीशंकर वा मउंट एवरिष्ट (२९००० फीट); और धौलागिरि वा देवग्गी (२६८६० फीट); कमाऊं में नंदा देवी (२६००० फीट); गढ़वाल में यमनोत्री (२६५०० फीट) और कश्मीर में नंदा पर्वत (२६६०० फीट)।

बिन्ध्याचल भारत-वर्ष के बीच में नर्मदा नदी के उत्तर है। उसकी जामघाट नामक चोटी समुद्र के जल से २३२८ फीट ऊंची है। अर्वली पर्वत, जिसका नाम पुराणों में अर्बुद गिरि है, राजपूताने में है। उसकी सबसे ऊंची चोटी आबू पहाड़ राजपूताने के मैदान से ५६५० फीट ऊंची है। सतपुड़ा बिन्ध्याचल की समानांतर रेखा में नर्मदा और तापती नदियों के बीच में स्थित है। पश्चिमी घाट तापती के मुहानेसे कुमारी अन्तरीप तक समुद्र के किनारे किनारे चला गया है, जिसको सह्याद्रि पर्वत भी कहते हैं। (देवीभागवत-सप्तमस्कंध-३८ वें अध्याय में लिखा है कि कोलापुर सह्याद्रि पर्वत पर है। वाल्मीकिरामायण-युद्धकांड के चौथे सर्ग में लिखा है कि श्रीरामचन्द्र किष्किन्धा से चल कर सह्याचल और मलयाचल पर्वतों के पार हो महेंद्राचल पर गए जहांसे समुद्र देख पड़ता था (इसीके अन्तर्गत दक्षिण भाग में मलयागिरि है। यह पहाड़ बोनेसनहिल के निकट ७००० फीट के लगभग ऊंचा है। पूर्वी घाट 'कारो मंडल' तट का किनारा कावेरी से उडीसा तक चलागया है, जो पश्चिमी घाट के बराबर ऊंचा नहीं है। (महाभारत के वनपर्व में राजा युधिष्ठिर की यात्रा के वृत्तांत से जान पड़ता है कि उड़ीसा दक्षिण महेंद्राचल है। नरसिंहपुराण के ५० वे अध्याय में है, कि संपाति पक्षी महेंद्राचल के वनमें रहता है और वाल्मीकिरामायण-सुन्दरकांड ५७ वें सर्ग तथा पद्मपुराण-पाताल खंड के ३६ वें अध्याय में लिखा है कि हनुमानजी लंकादहन कर के महेंद्राचल पर लौट आए) पश्चिमी और पूर्वी घाट के बीच में नीलगिरि है, जिसकी दादाबेटिया नामक सबसे ऊंची चोटी समुद्र के जल से ८६२२ फीट ऊंची है। नील गिरि के एक भाग में समुद्र के जल से ७००० ऊंची उत्तकमंद पहाड़ी है, जिस पर मदरास गवर्नमेंट का सदर मुकाम गर्मी के दिनों में होता है, इनके अतिरिक्त भारतवर्ष मे छोटी छोटी बहुत पहाड़ियां हैं।

बड़ी नदियां।

नम्बर	नदी	लंबाई मील	निकास का स्थान	देश जिन में होकर बहती हैं	सहायक नदियां	दिशा, जिस ओर बहती हैं	नदियों के किनारे वा निकट के शहर और प्रसिद्ध स्थान	नदियों का मुहाना
१	सिंध	१८००	कैलास पर्वत के उत्तर ओर	तिब्बत पंजाब और सिंध	अटक और पंजाब की पांचों नदियां आपस में मिल कर पंचनद के नाम से	पश्चिमोत्तर और पश्चिम दक्षिण	इसकाडा. अटक, कालाबाग, देराइस्माइलखां, देरागाजीखां, मिट्ठनकोट, ठट्टा, हैदराबाद और करांची	सिंध देश में अरब के समुद्र में
२	ब्रह्मपुत्र	१७००	मानसरोवर के पास कैलास पर्वत।	तिब्बत, आसाम और बंगाल	... ...	पूर्व, दक्षिण-पश्चिम, दक्षिण और पूर्व	डिब्रूगढ़ शिवसागर, नवगांव, दरंग, गौहाटी, ग्वालपाड़ा	पश्चिम की धार पद्मा में और पूर्व की धार समुद्र में।
३	गंगा	१५२०	हिमालय में गंगोत्री	पश्चिमोत्तर बिहार और बंगाल	रामगंगा, यमुना, गोमती, सरयू. सोन, गंडकी कोशी इत्यादि	दक्षिण-पश्चिम दक्षिण-पूर्व और पूर्व-दक्षिण	हरिद्वार. फर्रुखाबाद, कनौज, कानपुर, इलाहाबाद, मिरजापुर, चुनार, बनारस, गाजीपुर बक्सर	बंगाले की खाड़ीमें

							दानापुर, पटना, मुंगेर, भागलपुर, राजमहल इत्यादि	
४	गोदावरी	९००	बंबई हातेमें नासिकके पास त्र्यंबक	बंबई हाते निजाम राज्य और मद्रास हाते	वरदा और बान गंगा	दक्षिण–पूर्व	त्र्यंबक नासिक, पैठन, नांदेड, और राजमेंहद्री	समुद्रमें राज महेंद्री के पांस
५	यमुना	८६०	हिमालयमें यमुनोत्री	पंजाब और पश्चिमोत्तर की सीमा और पश्चि-मोत्तर देश	चंबल और बेतवा	दक्षिण और दक्षिण–पूर्व	दिल्ली, मथुरा, वृन्दावन, आगरा, इटावा, काल्पी, हमीरपूर, और राजापूर	इलाहाबाद के नीचेगंगा में
६	सतलज	८५०	हिमालयमें मानसरोवर झीलके पास	पंजाब	व्यास	पश्चिम, कुछ दक्षिण	रामपूर, फाजिलका और बहावलपूर	चुनाव में बहावल पुर से ४० मील नीचे

नम्बर	नदी	लंबाई मील	निकास का स्थान	देश जिन में होकर बहती हैं	सहायक नदियां	दिशा जिस ओर बहती हैं	नदियोंके किनारोंके शहर वा प्रसिद्ध स्थान	नदियोंका मुहाना
७	कृष्णा	८००	बंबई हाते में महाबलेश्वर	बम्बईहाता निजाम राज्य और मदरास हाता	मालपर्व, गतपर्व, भीमा और तुंगभद्रा	दक्षिण-पूर्व और पूर्व	महाबलेश्वर. वाई. पेजवाड़ा और मच्छली-वन्दर	समुद्रमें मच्छली बंदरके नीच
८	चनाब	७६५	हिमालय के दक्षिण अलंगसे	कश्मीर और पंजाब	झेलम रावी और सतलज	दक्षिण, पश्चिमोत्तर पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम ।	सियालकोट, गुजरात, झंग और मुलतान	मिट्ठनकोटके नीचे सिंध नदीम
९	नर्मदा	७५०	रीवां राज्य में अमरकंटक	मध्य भारत और बंबईहाता	... ...	पश्चिम	हुशंगाबाद, हंडिया, ओंकारनाथ और भडोच	बंबईहाताभें भडौच के नीचे खंभात की खाढ़ी
१०	सरयू वा घाघरा	६००	हिमालय	अवध पश्चिमोत्तर और बिहार	... .	दक्षिण-पूर्व	अयोध्या, मनियर, रिविलगंज, छपरा.	छपरास ७मील पूर्व गंगामें

११	चंवल	५७०	मालवा में विंध्याचल	मध्यभारत और राजपूताना	...	...	...	उत्तर और पूर्वोत्तर	कोटा और धौलपुर	यमुना में इटावे के पास
१२	महानदी	५२०	मध्यदेश में नवगढ़ के पास।	मध्यदेश और उड़ीसा	...	...	...	पूर्व	संभलपुर और कटक	कटकसे पूर्व बंगालेकी खाढ़ीमें
१३	गोमती	५००	हिमालय	अवध और पश्चिमोत्तर।				दक्षिण—पूर्व	नैमिषारण्य लखनऊ और जवनपुर	बनारसके नीचे गंगामें
१४	भीमा	५००	वंबई हाते में	बंवई हाता और निजाम राज्य	...	...	...	दक्षिण—पूर्व	पंढरपुर	कृष्णा नदीमें
१५	झेलम	४९०	हिमालयके दक्षिण अलंगसे	कश्मीर और पंजाब	...	...	...	पश्चिम और पश्चिम—दक्षिण	श्रीनगर (कश्मीर) झेलम पिंडदादनखां, भेरा और शाहपुर	झांगसे २० मील नीचे चनावमें
१६	कावेरी	४७२	कूर्ग की पहाड़ियां	मईसूर और करनाटक	...	...	...	दक्षिण—पूर्व	श्रीरंगपट्टन, तंजोर, त्रिचनापल्ली और श्रीरंग	मदरास हातेमें पोटोनोवाके निकट पूर्वी घाटमें

नंबर	नदी	लंबाई मील	निकास का स्थान	देश जिन में होकर बहती है	सहायक नदियां	दिशा, जिस ओर बहती हैं	नदियों के किनारों के शहर वा प्रसिद्ध स्थान	नदियों का मुहाना
१७	सोन	४६४	मध्य देश में अमरकंटक	मध्यदेश, बूंदेलखंड और बिहार	... ...	उत्तर ओर	... .	छपरा से ६ मील पूर्व गंगा में
१८	रावी	४५०	हिमालय के दक्षिण अलंग से	कश्मीर और पंजाब	... ...	पश्चिम दक्षिण	चंबा और लाहौर	मुलतान से ४० मील ऊपर चनाव में
१९	तापती	४४०	सतपुड़ा पहाड़ी	मध्यदेश और बंबई हाता	... ...	पश्चिम	बुरहानपुर और सूरत	सूरत से पश्चिम खंभात की खाढ़ी।
२०	तुंगभद्रा	४२०	मईसूर राज्य में	मईसूर राज्य, मदरास हाता और निजाम राज्य की सीमा	....	पूर्व	हरिहर और करनल	कृष्णानदी में

२१	वरदा	४१०	गोंडवाने के इलाके में मध्यदेश की पहाडी	बरार और मध्य देश की तथा निजाम राज्य और मध्य देश की सीमा	... .	दक्षिण-पूर्व	... ...	गोदावरी नदी में
२२	गंडक	४००	हिमालय	नैपाल राज्य और बिहार।	... .	दक्षिण-पूर्व	मुक्तिनाथ, हाजीपुर, और सोनपुर	पटना से उत्तर गंगा में
२३	बेतवा	३६०	मालवा में विंध्याचल	मध्यभारत और मध्यदेश की सीमा।	... ...	पूर्वोत्तर	भोपाल भिलसा, झांसी और उरछा	यमुना में हमीरपुर के पास
२४	रामगंगा	३००	हिमालय	अवध और पश्चिमोत्तर।	... ...	दक्षिण पूर्व	मुरादाबाद और बरेली	फर्रुखाबाद के नीचे गंगा में
२५	व्यासा	२९०	हिमालय के दक्षिण अलंग अभयकुंड।	पंजाब	....	पश्चिम और पश्चिम-दक्षिण	कपुरथला	सतलज में के हरी पटना के पास
२६	कोसी	२२५	हिमालय	नैपाल राज्य और विहार	... ...	दक्षिण कुछ पूर्व	... ...	गंगामें भागलपुर के नीचे

क्षेत्रफल; बर्गमील, कसबे और गांव तथा मनुष्य संख्या सन् १८९१ ई० में ।

क्षेत्रफल आदि	भारतवर्ष	अंगरेजी देश	देशीराज्य.
क्षेत्रफल वर्गमील	१५६०१६०	९६४९९३	५९५१६७
कसबा और गांव	७१७५४५	५३७१०१	१७९६४८
(क) कसबे	२०३५	१४१६	६१९
(ख) गांव	७१५५१४	५३६४८५	१७९०२९
मकाने, जिनमें आदमी हैं	५२९३२१०२	४०४६३९६३	१२४६८१३९
(क) कसबोंमें	५१२८३९५	३७४५४०८	१३८२९८७
(ख) गांवों में	४७८०३७०७	३६७१८५५५	११०८५१५२
संपूर्णमनुष्य-संख्या	२८७२२३४३१	२२११७२९५२	६६०५०४७९
(क) कसबों में	२७२५११७६	२०३९११२९	६८६००४७
(ख) गांवोंमें	२५९९७२२५५	२००७८१८२३	५९१९०४३२

दर्जे और संख्या सन् १८९१ ई०में।

	दरजे और संख्या	कसबों और गावोंकी संख्या	मनुष्य-संख्या
	१०१ से १९९ तक	३४३०५२	३२६२५८५८
	२०० से ऊपर	२२२९९६	७११८००१८
	५०० से ऊपर	९७८४६	६७४७५१०९
	१००० से ऊपर	३८१२८	५१३४९३३८
	२००० से ऊपर	७९०६	१९११३६१६
	३००० से ऊपर	३६७०	१४०५९०८९
	५००० से ऊपर	१५०२	१००४८८३८
	१०००० से ऊपर	३६६	४४०२०६२
	१५००० से ऊपर	१५०	२५४११३५
	२०००० से ऊपर	१६८	४९२५१५८
	५०००० से ऊपर	७६	९३०९४३४
बिना दरजेका	(क) मुसाफिर इत्यादि	... ...	५६३३४
बिना दरजेका	(ख) नहीं रजिस्टर किया हुआ	१५८९	१३७४४२
	संपूर्ण	७१७५४९	२८७२३४३१

विभाग।

नंबर	विभाग	क्षेत्रफल वर्गमील	मनुष्य–संख्या सन् १८९१	संख्या, प्रति वर्ग मील में	संपूर्ण क्षेत्रफल में सैकडे	संपूर्ण मनुष्य संख्यामें सैकड़े
१	हिमालय और पूर्वी पहाड़ियां	१५०५७०	६५४२६५०	४३	९६८	२२८
२	उत्तरी मैदानें	५३७२०९	१५११६८९६७६	२८२	३४४३	५२८३
३	मध्य पहाड़ियां	२२०४३१	२४६८०६६१	११२	१४१२	८६०
४	मध्य मैदान	९७३९०	१३७३८३६२	११४	१२३७	१०५०
५	डेकानका प्लेटू	१९३१०४	३०१४८८०२	१५६	१२३७	१०५०
६	दक्षिणी मैदान	६२४९४	१९८६२३७६	३१८	४००	६९२
७	पूर्वोत्तर लिटरल	३०८७१	११२१७२०९	३६३	२००	३९१
८	पश्चिमी लिटरल	९६५८१	२१६४८१८५	२२४	६२२	७५४
९	ब्रह्मा	१७१४३०	७६०५५६०	४४	१०९६	२६५
	संपूर्ण	१५६००८०	२८७१३३४८१	१८४	१००	१००
	अदन, कोटा अंडमन टापूए, इत्यादि	८०	८९९५०			
	संपूर्ण	१५६०१६०	२८७२२३४३१			

विभाग।

नम्बर	विभाग	मनुष्य-संख्या
१	शिकम (रजिष्टर किया हुआ)	३०४५८
२	मनीपुर (तसखीसी)	२५००००
३	बृटिस बलोचिस्तान (रजिष्टर किया हुआ)	१४५४१७
४	सिससालिबिनशानराज्य (रजिष्टर किया हुआ) ...	३७२९६९
५	ब्रह्मा के सरहद्दी देश	११६४९३
६	राजपूताने के पहाड़ीदेश (रजिष्टर किया हुआ) ...	२०४२४१
	कुल-जो मर्दुम शुमारी में शामिल नहीं है	११२९५७८
१	फरांसीसियों के अधिकार में	२८२९२३
२	पोर्चुगीयों के अधिकार में	५६१३८४
	कुलहिंदुस्तान में विदेशी राज्यों में	८४४३०७
	दोनों जोड़	१९६३८८५
	मर्दुमशुमारी में शामिल किया हुआ	२८७२२३४३१
	संपूर्ण	२८९१८७३१६

अङ्गरेजी देशों का विवरण।

नंबर	देश	क्षेत्रफल	मनुष्य-सन्			मनुष्य-संख्या प्रतिवर्ग-मील	पढ़े हुए		पढ़ते हुए		पढ़े बेपढ़े कुछ नहीं लिखे गए
		वर्ग मील	१८९१ में	पुरुष	स्त्री		पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	
१	बंगाल	१५१५४३	७१३४६९८७	३५५६३२९९	३५७८३६८८	४७१	२९४८७९४	१०९६८४	८८३२५०	३४१३०	१०७३८६
२	पश्चिमोत्तर	१०७५०३	४६९०५०८५	२४३०३६०१	२२६०१४८४	...	१२५७१५०	३८४६६	२३८४४०	८४०४	... ...
	(क) पश्चिमोत्तर देश	८३२८६	३४२५४२५४	१७८१२८५०	१६४४१४०४	४११	९३७४३०	३०६१०	१८३७३७	७०१	... ...
	(ख) अवध	२४२१७	१२६५०८३१	६४९०७५१	६१६००८०	५१२	३१९७२०	७८५६	५४७०३	१४०३	. . ...
३	मद्रास	१४११८९	३५६३०४४०	१७६१९३१५	१८०११०४५	२५२	२०२१२८९	१२०३२४	५७६०७९	५९१२७	३२३८६६
४	पंजाब	११०६६७	२०८६६८४७	११२५५९८६	९६१०८६१	१८८	६७५९४१	१८२०६	१५८८४९	७८३४	...
५	बंबई प्रेसीडेंसी	१२५१४४	१८९०११२३	९७९३९८१	९१०७१४२	...	१५२१७२	५४६९९	३३४७७०	२४९८१	...
	(क) बंबई	७७२७५	१५९८५२७०	८१९४४७७	७७९०७९३	२०७	८४३०५५	४९९७६	३०४१७६	२२४०१	...
	(ख) सिंध	४७७८९	२८७१७७४	१५६८५९०	१३०३१८४	६०	१०२९७०	४३६२	२९६२९	२४८९	....

	(ग) अदन	८०	४४१२९	३०९१४	१३१६५	...	६१४७	३६१	९५५	९१	...
६	मध्य देश	८६५०१	१०७८४२९४	५३९७३०४	५३८६९९०	१२५	२३०५९२	६९८२	७६३०६	३९०१	...
७	ब्रह्मा	१७१४३०	७६०५५६०	३८७६३०१	३७२९२५९	...	१५१५०८३	८९३७६	२२७४९८	१८२२५	...
	(क) ऊपरी ब्रह्मा	८३४७३	२९४६९३३	१४१४००५	१५३२९२८	३५	५५३७३३	२००९३	९९२२९	३३७२	...
	(ख) निचला ब्रह्मा	८७९५७	४६५८६२७	२४६२२९६	२१९६३३१	५३	९६१३५०	६९२८३	१२८२६९	१४८५३	...
८	आसाम	४९००४	५४७६८३३	२८१९५७५	२६५७२५८	११२	१६२५५३	५७६१	४९१११	३४२७	४१५९०
९	बरार	१७७१८	२८९७४९१	१४९१८२६	१४०५६६५	१६३	८७१२८	१७२२	३८५०२	९७६	...
१०	अजमेर मेखारा	२७११	५४२३५८	२८८३२५	२५४०३३	२००	३२११४	१५४०	६१७९	४७०	...
११	कुर्ग	१५८३	१७३०५५	९५९०७	७७१४८	१०९	१७७४७	६७६	४१९२	६१०	...
१२	क्वेटा इत्यादि	...	२७२७०	२३८६४	३४०६	...	७३१२	३८३	३६७	८६	...
१३	अंडमन	...	१५३०९	१३३७५	२२३४	...	२७८९	१०५	३४४	७७	...
	संपूर्ण	९६४९९३	२२११७२९५२	११२५४२७३९	१०८६३०२१३	६३०	९९०३६६४	४४७९२४	२५९३८८७	१६२२४८	४७२८४२

देशी राज्योंका विवरण।

राज्य या एजेंसी।

नम्बर	देश	क्षेत्रफल वर्गमील	मनुष्य-सन् १८९१ में	पुरुष	स्त्री	मनुष्य-संख्या प्रतिवर्ग-मील	पढ़े हुए		पढ़ते हुए		पढ़े व पढ़े कुछ नहीं लिखे गए
							पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	
१४	राजपूताना	१३०२६८	१२०१६१०२	६३५३४८८	५६६२६१४	९२	२९५१	४८३	४६५	१२३	११९९९३८६
१५	हैदराबाद	८२६९८	११५३७०४०	५८७३१२९	५६६३९११	१३९	३४३५६६	११०६६	७६५२२	३२३८	... ...
१६	मध्यभारत	७७८०८	१०३१८८१२	५३९५५३६	४९२३२७६	१३३	१५५३२	११४८	२२९१	२७३	१०२११७८६
१७	बंबई राज्य	६९०४५	८०५९२९८	४१२०१२५	३९३९१७३	१२६	३६२६४४	१३४०४	१०५५४५	५८५५	१९२३६
१८	मईसूर	२७९३६	४९४३६०४	२४८३४५१	२४६०१५३	१७७	२००४९५	११४९९	६१०७६	६४१५	....
१९	पंजाब के राज्य	३८२९९	४२६३२८०	२३२४०९१	१९३९१८९	१११	१२३२३६	२०००	१३४०४	३७५	... ...
२०	मदरास के राज्य	९६०९	३७००६२२	१८५३९७६	१८४६६४६	३८५	३६०७४६	४८३८०	८२३१८	१६१६०	... ...

२१	बंगालके राज्य	३५८३४	३२९६३७९	१६७३१८६	१६२३१९३	९२	७२६४२	२०२६	१५७९२	५०३	१३७४४२
२२	कश्मीर	८०९००	२५४३९५२	१३५३२२९	११९०७२३	३१	५३	५१	८	६	२५४३८१३
२३	बड़ोदा	८२२६	२४१५३९६	१२५२९८३	११६२४१३	२९४	१३६३६४	४५५२	३९२९०	२२५६	...
२४	मध्य देश-के राज्य	२९४३५	२१६०५११	१०८९०११	१०७१५००	७३	४८७१०	६२७	४९९१	१७१	...
२५	पश्चिमोत्तर देशके राज्य	५१०९	७९२४९१	४०९४७०	३८३०२१	१९५	१२२११	३१८	१९६९	३८	...
२६	शान राज्य	....	...	२९९२	२८८२	११०	...	१२२१	१७	... ...	१	....
	संपूर्ण देशी राज्य	५९५१६७	६६०५०४७९	३४१८४५५७	३१८६५९२२	१११	१६५०३७१	९५५७१	४०३६७१	३५४१४	२४९११६६३
	संपूर्ण भारतवर्ष	१५६०१६०	२८७२२३४३१	१४६७२७२९६	१४०४९६१३५	१८४	११५५४०३५	५४३४९५	२९९७५५८	१९७६६२	२५३८४५०५

अंग्रेजी राज्य निवासियोंके मत का विभाग ।

नम्बर	देश	मनुष्य-संख्या सन् १८९१	हिन्दू	मुसलमान	जंगली जातियाँ इत्यादि	बौद्ध	कृस्तान	सिक्ख	जैन	पारसी	यहूदी	छोटी छोटी मजहबें	जिनका कोई मजहब नहीं लिखा गया
१	बंगाल	७१३४६९८७	४५२२०१२४	२३४३७५९१	२२९४५०६	१८९११२२	१९०८२९	४१२	७०४२	१७९	१४४७	१७	५७१८
२	पश्चिमोत्तर	४६९०५०८५	४०४०२२३५	६३४६६५१	... ...	१३८७	५८४४१	११३४३	८४६०१	३४२	६०	३	२२
	(क) पश्चिमोत्तर देश	३४२५४२५४	२९३८६०२६	४७२५७२१	... ...	११९१	४९१२९	९७४०	८२१३४	२६८	३५	....	१०
	(ख) अवध	१२६५०८३१	११०१६२०९	१६२०९३०	... ...	१९६	९३१२	१६०३	२४६७	७४	२५	३	१२
३	मद्रास	३५६३०४४०	३१९९८३०९	२२५०३८६	४७२८०८	१०३६	८६५५२८	१२८	२७४२५	२४६	४२	२९	१४५०३
४	पंजाब	२०८६६८४७	७७४३४७७	११६३४१९२	... ...	५७६८	५३५८७	१३८९९३४	३९४७७	३५७	२७	२८	...
५	बंबई प्रेसीडेंसी	१८९०११२३	१४६५९९२६	३५३७१०३	२१३६१८	६९७	१६१७७०	८१८	२४०४३६	७४२६३	१२४६५	२७	...
	(क) बंबई	१५९८५२७०	१४०८९६७४	१२८६७६३	१३५६८३	६७१	१५१००१	९८	२३९५१३	७२४११	९४२९	२७	...
	(ख) सिंध	२८७१७७४	५६७५३९	४२१५१४७	७७९३५	२	७७६४	७२०	९२३	१५३४	२१०	...	...

	(ग) आंदन	४४१२९	२६१३	३५२४३	... ...	२४	३००५	... ...	... .	३१८	२८२६	....	...
६	मध्यदेश	१०७८४२९४	८८३१४५६	२९७६०४	१५९२१४९	३२२	१२९७०	१७२	४८६४४	७८१	१७६	९	...
७	ब्रह्मा	७६०५५६०	१७१५७७	२५३०३१	१६८४४९	६८८८०७५	१२०७६८	३१६४	... .	९६	३५१	१८	३१
	(क) ऊपरी ब्रह्मा	२९४६९३३	२९०५५	४२३८२	१९४२८	२८४४५६९	८७८६	२५९१	... ...	९	८३	...	३०
	(ख) निचला ब्रह्मा	४६५८६२७	१४२५२२	२१०६४९	१४९०२१	४०४३५०६	१११९८२	५७३	... ...	८७	२६८	१८	१
८	आसाम	५४७६८३३	२९९७०७२	१४८३९७४	९६९७६५	७६९७	१६८४४	८३	१३६८	...	५	२५	...
९	बरार	२८९७४९१	२५३१७९१	२०६६८१	१३७१०८	४	१३५९	१७७	१८९५२	४१२	२	३	२
१०	अजमेर मेरवाड़ा	५४२३५८	४३७९८८	७४२६५	... ...	... ...	२६८३	२१३	२६९३९	१९८	७१	१	...
११	कूर्ग	१७३०५५	१५६८४५	१२६६५	... ...	... ...	३३९२	... ...	११४	३९	....	....	... ...
१२	केटा इत्यादि	२७२७०	११६९९	११३६८	... ...	... ...	३००८	११२९	... ...	३९	२३	२	२
१३	अंडमन	१५६०९	९४३३	३९८०	२४	१२९०	४८३	३९५	३	....	... ...	१	....
	संपूर्ण	२२११७२९५२	१५५१७१९४३	४९५५०४९१	५८४८४२७	७०९५३९८	१४९१६६२	१४०७९६८	४९५००१	७६९५२	१४६६९	१६३	२०२७८

देशीराज्य निवासियों के मत का विभाग ।

देशी राज्य या एजेंसी

नम्बर	देश	मनुष्य-संख्या सन् १८९१	हिंदू	मुसलमान	जंगली जातियाँ इत्यादि	बौद्ध	कृस्तान	सिक्ख	जैन	पारसी	यहूदी	छोटी छोटी मजहबें	जिनका कोई मजहब नहीं लिखा गया
१४	राजपूताना	१२०१६१०२	१०१९२८२९	९९१३५१	४११०७८	...	१८५५	१११६	४१७६१८	२३८	१५	२	...
१५	हैदराबाद	११५३७०४०	१०३१५२४९	११३८६६६	२९१३०	...	२०४२९	४६३७	२७८४५	१०५८	२६	...	...
१६	मध्य भारत	१०३१८८१२	७७३५२४६	५६८६४०	१९१६२०९	...	५९९९	१८२५	८९९८४	८३७	७२	...	...
१७	बंबई के राज्य	८०५९२९८	६७८१०६५	८५३८९२	९७६४१	१	८२३९	९४	३१४७७३	२५११	१०८२	...	...
१८	मईसूर	४९४३६०४	४६३९१२७	२५२९७३	....	५	३८१३५	२९	१३२७८	३५	२१	१	...
१९	पंजाब के राज्य	४२६३२८०	२४९४२२३	१२८१४५१	...	४६८	३२२	४८०५४७	६२०६	५५	६	...	२
२०	मदरास के राज्य	३७००६२२	२७५९२११	२२५४७८	...	...	७१४६५१	...	१०	१	१२६७	२	२

२१	बंगाल-के राज्य	३२९६३७९	२६०३८९०	२२०७५६	४५८५५५	५५९५	१६५५	५	२२८	...	...	१६	५६७९
२२	काश्मीर	२५४३९५२	६९१८००	१७९३७१०	... ...	२९६००८	२१८	११३९९	५९३	९	...	...	१६६१५
२३	बडोधा	२४१५३९६	२१३७५६८	१८८७४०	२९८५४	१	६४६	११	५०३३२	८२०६	३६	...	२
२४	मध्यदेश के राज्य	२१६०५११	१६५८१५३	११८७५	४८९५७२	३	३३८	१	५६८	...	...	१	...
२५	पश्चिमोत्तर देश के राज्य.	७९२४११	५४९५६८	२४२५३२	... .	१०७	७७	५	२०२	...	...	....	...
	शान-राज्य	२९९२	१८५५	६०९	१	१७५	१५४	१९६	...	२	...	...	...
	संपूर्ण देशी-राज्य.	६६०५०४७९	५२५५९७८४	७७७०६७३	३४३२०४०	३५९६३	७९२७१८	४९९८६५	९२१६३७	१२९५२	२५२५	२२	२२३००
	संपूर्ण भारत वर्ष ब्रह्मा के साथ	२८७२२३४३१	२०७७३१७२७	५७३२११६४	९२८०४६७	७१३१३६१	२२८४३८०	१९०७८३३	१४१६६३८	८९९०४	१७१९४	१८५	४२५७८

शहर और बडे कसबे।

नंबर	कसबा	देश, या एजेंसी	जिला या राज्य	मनुष्य संख्या सन् १८९१
१	बंबई और छावनी	बंबई	बंबई	८२१७६४
२	कलकत्ता किला और २ शहर तलियाँ	बंगाल	चौवीस परगना	७४११४४
३	मद्रास और किला	मद्रास	मद्रास	४५२५१८
४	हैदराबाद छावनी और शहर तलियाँ	हैदराबाद	हैदराबाद	४१५०३९
५	लखनऊ और छावनी	अवध	लखनऊ	२७३०२८
६	बनारस और छावनी	पश्चिमोत्तर	बनारस	२१९४६७
७	दिल्ली और छावनी	पंजाब	दिल्ली	१९२५७९
८	मंडला और छावनी	ब्रह्मा	मंडला	१८८८१५
९	कानपुर और छावनी	पश्चिमोत्तर	कानपुर	१८८७१२
१०	बंगलोर और छावनी	मईसूर	बंगलोर	१८०३६६
११	रंगून और छावनी	ब्रह्मा	रंगून	१८०३२४
१२	लाहौर और छावनी	पंजाब	लाहौर	१७९८५४
१३	इलाहाबाद और छावनी	पश्चिमोत्तर	इलाहाबाद	१७५२४६
१४	आगरा और छावनी	पश्चिमोत्तर	आगरा	१६८६६२
१५	पटना	बंगाल	पटना	१६५१९२
१६	पूना और छावनी	बंबई	पूना	१६१३९०
१७	जयपुर	राजपूताना	जयपुर	१५८९०५

नंबर	कसबा	देशी एजेंसी	जिला या राज्य	मनुष्यसंख्या सन् १८९१
१८	अहमदाबाद और छावनी	बंबई	अहमदाबाद	१४८४१२
१९	अमृतसर और छावनी	पंजाब	अमृतसर	१३६७६६
२०	बरैली और छावनी	पश्चिमोत्तर	बरैली	१२१०३९
२१	मेरठ और छावनी	पश्चिमोत्तर	मेरठ	११९३९०
२२	श्रीनगर और छावनी	कश्मीर	कश्मीर	११८९६०
२३	नागपुर	मध्यदेश	नागपुर	११७०१४
२४	होडा	बंगाल	होड़ा	११६६०६
२५	बड़ोदा और छावनी	बड़ोदा	बड़ोदा	११६४२०
२६	सूरत और छावनी	बंबई	सूरत	१०९२२९
२७	करांची और छावनी	सिंध	करांची	१०५१९९
२८	ग्वालियर (लस्कर)	मध्यभारत	ग्वालियर	१०४०८३
२९	इन्दौर और रेजीडेंसी	मध्यभारत	इंदौर	९२३२८
३०	त्रिचनापली और छावनी	मद्रास	त्रिचनापली	९०६०९
३१	मदुरा	मद्रास	मदुरा	८७४२८
३२	जबलपुर और छावनी	मध्यदेश	जबलपुर	८४४८१
३३	पेशावर और छावनी	पंजाब	पेशावर	८४१९१
३४	मिरजापुर	पश्चिमोत्तर	मिरजापुर	८४१३०
३५	ढाका	बंगाल	ढाका	८२३२१
३६	गया	बंगाल	गया	८०३८३

नंबर	कसबा	देश या एजेंसी	जिला या राज्य	मनुष्यसंख्या सन् १८९१
३७	अंबाला और छावनी	पंजाब	अंबाला	७९२९४
३८	फैजाबाद और छावनी	अवध	फैजाबाद	७८९२१
३९	शाहजहांपुर और छावनी	पश्चिमोत्तर	शाहजहांपुर	७८५२२
४०	फर्रुखाबाद और छावनी	पश्चिमोत्तर	फर्रुखाबाद	७८०३२
४१	रामपुर और छावनी	पश्चिमोत्तर	रामपुर	७६७३३
४२	मुलतान और छावनी	पंजाब	मुलतान	७४५६२
४३	मईसूर और छावनी	मईसूर	मईसूर	७४०४८
४४	रावलपिंडी और छावनी	पंजाब	पिंडी	७३७९५
४५	दरभंगा	बंगाल	दरभंगा	७३५६१
४६	मुरादाबाद और छावनी	पश्चिमोत्तर	मुरादाबाद	७२९२१
४७	भोपाल	मध्यभारत	भोपाल	७०३३८
४८	कलकत्तेकी दक्षिणी शहर तली	बंगाल	चौवीसपरगना	६९६४२
४९	भागलपुर	बंगाल	भागलपुर	६९१०६
५०	अजमेर	अजमेर	अजमेर	६८८४३
५१	भरतपुर	राजपूताना	भरतपुर	६८०३३
५२	सेलम	मद्रास	सेलम	६७७१०
५३	जलंधर और छावनी	पंजाब	जलंधर	६६२०२
५४	कालीकट	मद्रास	कालीकट	६६०७८
५५	गोरखपुर और छावनी	पश्चिमोत्तरदेश	गोरखपुर	६३६२०
५६	सहारनपुर	पश्चिमोत्तरदेश	सहारनपुर	६३१९४

नंबर	कसबा	देश या एजेंसी	जिला या राज्य	मनुष्य-संख्या सन् १८९१
५७	शोलापुर	बंबई	शोलापूर	६१९१५
५८	जोधपुर	राजपूताना	मारवाड़	६१८४९
५९	अलीगढ़ (कोइल)	पश्चिमोत्तर देश	अलीगढ़	६१४८४
६०	मथुरा और छावनी	पश्चिमोत्तरदेश	मथुरा	६११९५
६१	बलारी और छावनी	मदरास	बलारी	५९४६७
६२	नागपटम्	मदरास	तंजोर	५९२२१
६३	हैदराबाद और छावनी	सिंध	हैदराबाद	५८०४८
६४	भावनगर	बंबई	काठियावार	५७६५३
६५	छपरा	बंगाल	सारन	५७३५२
६६	मुंगेर	बंगाल	मुंगेर	५७०७७
६७	बीकानेर	राजपूताना	बीकानेर	५६२५२
६८	पटियाला	पंजाब	पटियाला	५५८५६
६९	मोलमेन्	ब्रह्मा	एवर्ष्ट	५५७८५
७०	स्यालकोट और छावनी	पंजाब	स्यालकोट	५५०८७
७१	तंजोर	मदरास	तंजोर	५४३९०
७२	कुंभकोणम्	मदरास	तंजोर	५४३०७
७३	झांसी और छावनी	पश्चिमोत्तरदेश	झांसी	५३७७९
७४	हुबली	बम्बई	धारवाड़	५२५९५
७५	अलवर	राजपूताना	अलवर	५२३९८
७६	फिरोजपुर और छावनी	पंजाब	फिरोजपुर	५०४३७
	जोड़ ७८			९४२८२९८

भाषा ।

खांदान और झुण्ड ।		नंबर	भाषा (बोली) ।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१ ।
एरीयो इण्डिक ।		१	हिंदी	८५६७५३७३
	उत्तरी ।	२	पंजाबी	१७७२४६१०
		३	काश्मीरी	२९२७६
		४	शाइना इत्यादि	६
		५	चित्राली	११
		६	पहाड़ी (पश्चिमी)	१५२३२४९
		७	पहाड़ी (मध्य)	११५३२३३
	पश्चिमी ।	८	पहाड़ी (पूर्वी)	२४२६२
		९	सिंधी	२५९२३४१
		१०	कच्छी	४३९६९७
		११	गुजराती	१०६१९७८९
		१२	मारवाड़ी	११४७४८०
		१३	महाराष्ट्री	१८८९२८७५
		१४	गोवानीज और पोर्चुगीज	३७७३८
	पूर्वी ।	१५	हलाबी	१४३७२०
		१६	उड़िया	९०१०९५७
		१७	बंगला	४१३४३६७२
	छितराए हुए ।	१८	आसामी	१४३५८२०
		१९	उर्दू	३६६९३९०
		२०	संस्कृत	३०८
			संपूर्ण आर्यभाषा	१९५४६३८०७

खांदान और झुण्ड ।		नंबर	भाषा (बोली) ।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१
द्राविडियन ।	दक्षिणी ।	२१	तामिल	१५२२९७५९
		२२	तेलगू	१९८८५१३७
		२३	कनारी	९७५१८८५
		२४	कोडागू (कुर्गी)	३७२१८
		२५	मलेयालम	५४२८२५०
		२६	तुलू	४९१७२८
		२७	तोडा और कोटा	१९३७
	उत्तरी ।	२८	सिंहाली	१८७
		२९	माहल	३१६७
		३०	गोंड़	१३७९५८०
		३१	खांद	३२००७१
		३२	ओरावन	३६८२२२
		३३	मल-पहाडिया	३०८३८
कोलारियन	पूर्वी ।	३४	खरवार इत्यादि	७६५१
		३५	ब्राहवी	२८९९०
			संपूर्ण द्राविडियन	५२९६४६२०
		३६	संथाल	१७०९६८०
	पश्चिमी	३७	मुण्डा वा कोल	६५४५०७
		३८	खरिया	६७७७२
		३९	वैगा	४८८८३
		४०	कोरवा याकूर	१८५७७५
		४१	भील	१४८५९६

खांदान और झुंड ।		नम्बर	भाषा (बोली) ।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१
कोलारियन ।	दक्षिणी ।	४२	सवर	१०२०३९
		४३	गदावा	२९७८९
		४४	ज्वांग और मलेर	११९६५
			कुल कोलारियन	२९५९००६
एरियन और द्राविडियन		४५	जिप्सी भाषा	४०११२५
खासी ...		४६	खासी	१७८६३७
तिब्बती बरमन ।	हिमालयन ।	४७	तिब्बतन (भोटी)	२०५४४
		४८	कनावरी	९२६५
		४९	नैपाली	१९५८६६
		५०	लेपचा	१०१२५
		५१	भुटानी	९४७०
		५२	कचारी	१९८७०५
	बोडो (आसाम)	५३	गारो	१४५४२५
		५४	लालुंग	४०२०४
		५५	कोच	८१०७
		५६	मेच	९०७९६
		५७	टिपरा	१२१८६४
		५८	छोटी बोडो भाषाएँ	४३१४
	पूर्वोत्तर सरहद ।	५९	अबोर मीरी	३५७०३
		६०	आकामिस्मी इत्यादि	१२८२

खांदान और झुण्ड ।		नंबर	भाषा (बोली) ।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१
तिब्बती बरमन ।	नागा ।	६१	नागा	१०२९०८
		६२	मिकिर	९०२३६
		६३	सिंगफो	५६६९
	खीनलुशाई	६४	मनीपुरी	८८५११
		६५	कुकी	१८८२८
		६६	लुसाइयाझो	४१९२६
		६७	खीन	१२६९१५
	बरमिज ।	६८	अरकानिज	३६६४०३
		६९	बरमिज	५५६०४६१
		७०	निकोबारी	१
			कुल तिब्बती बरमन	७२९३९२८
मोनअना ।		७१	मोनया तलाइंग	२२६४९५
		७२	पलांउ	२८४७
			कुलमोन अनाम	२२९३४२
शानयाताइक ।	ब्रह्मा ।	७३	शान	१७४८७१
		७४	लावो या श्यामी	४
	आसाम ।	७५	अइटोन	२
		७६	खामतो	२९४५
		७७	फकियाल	६२५
			कुल शानयाताइक	१७८४४७

खांदान और झुण्ड	नंबर	भाषा (बोली)।	मनुष्य–संख्या सन् १८९१
मलेयन।	७८	मेले	२४३७
	७९	सालोन	१६२८
	८०	जावानी	१९
		कुल मलेअन	४०८४
सिनिटिक।	८१	कारेन	६७४८४६
	८२	चीनी	३८५०४
		कुल सिनिटिक	७१३३६०
जापानिज	८३	जापानी	९३
एरियो इरैनिक। उत्तरी।	८४	परासियन	२८१८९
	८५	आरमेनियन	८३३
दक्षिणी।	८६	पस्तो	१०८०९३१
	८७	बलोच	२१९४७५
		कुलइरैनिक	१३२९४२८
सेमिटिक।	८८	हिब्रु	२१७१
	८९	अरबिक	५३३५१
	९०	सिरियक	१२
		कुलसेमिटिक	५५५३४
तुरैनिक। तातार।	९१	तुर्की	६०७
उग्रियन।	९२	मगयार	४२
	९३	फीन	१०
		कुल तुरैनिक	६५९

खांदान और झुण्ड ।	नंबर ।	भाषा (बोली) ।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१।
एरियो युरोपियन । — टिउटनिक ।	९४	अङ्गरेज	२८८४९९
	९५	जरमन	२२१५
	९६	डच	११९
	९७	फ्लेमिस	२२
स्कंडीनेवियन ।	९८	डेनिस	९४
	९९	स्वेडिस	१८७
	१००	नरवेजियन	१५२
सेलटिक ।	१०१	वेल्स	२४५
	१०२	आइरिस	२९९
	१०३	गायलिक	२६४
	१०४	सेलटिक	२
मेडीटेरेनियम ।	१०५	ग्रीक	३८०
	१०६	लैटिन	१
	१०७	इटालियन	६९०
	१०८	मालटिज	३२
	१०९	रोमानियन	२२
	११०	इसपैनिस	१५९
	१११	फ्रेंच	२१७१
स्लेवोनिक ।	११२	रूसी	९५
	११३	पोलिस	४६
	११४	बोहेलियन	१
	११५	बुलगारियन	४९
	११६	स्लेवोनिक	१
		कुल युरोपियन	२४५७४५

खांदान और झुण्ड ।	नंबर ।	भाषा (बोली) ।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१
	११७	बास्क	१
	११८	नेग्रोभाषा	९६१२
		बेला पहचान के लायक	३६३
		नहीं दाखिल किया हुआ	१९६५९
		कुल गिनती किया हुआ भाषा द्वारा	२६२०४७४४०
		नहीं गिनती किया हुआ भाषा द्वारा	२५१७५९९१
		हिन्दुस्तान	२८७२२३४३१

जाति और पेशे।

क	लश्करी, कास्तकार और खेत में काम करने वाले।	८५७२९२२७
ख	मवेशी चराने वाले और भेडिहर इत्यादि।	१६७२१४९४
ग	जंगली जातियाँ	१५८०६९१४
घ	मछुहा।	८२६१८७८
ङ	कारीगर अर्थात् सोनार, लोहार, बढ़ई, कसेरा, दरजी, बुनने और रंगने वाले, तेल पेरने वाले, कुम्हार, नियारिया इत्यादि।	२८८८२५५४
च	दैहिक और घरेऊ काम करने वाले अर्थात् हज्जाम, धोबी, भरभूजा, हलवाई इत्यादि	१४०१९६२६
छ	चमड़ेके काम करने वाले और गांवके नीच काम करने-वाले इत्यादि	३०७९५७०३
ज	व्यापारी और बिसाती	१२२७०९७३
झ	वृत्तिवाले—साधु, पुरोहित, पुजारी इत्यादि और लिखने-वाले कायस्थ इत्यादि	२१६५२४२२
ञ	हुनर और छोटे पेशे वाले, बाजे वाले, नाचने गाने वाले इत्यादि	४१५३२७५
ट	गाड़ीवान, मुटिहा, जानवर लादने वाले इत्यादि	९७३६२६
ठ	जांता चक्की बनाने वाले मिट्टी और पत्थर के काम करने-वाले, शान धरने वाले, चटाई और बेंतका काम-करने वाले, शिकार करने वाले, जादूगर इत्यादि	३४५७६६६
ड	नामुकर्रर हिंदुस्तानी पदबियाँ	३०७९२०४
ढ	हिन्दुस्तानी क्रुस्तान	१८३५८४८
ण	मुसलमान	३४३४८०८५
त	हिमालियन मंगोलाइट	२४४७२२
थ	आसाम और ब्रह्मा वाले अर्थात् बरमीज, कारने शान और चीनी इत्यादि	७२९५६१८
द	पश्चिमी एशियाटिक—यहूदी, आरमेनियम और पारसी	१०७८६४
ध	युरासियन	८१०४४
न	युरोपियन	१६६४२८
प	अफ्रिकन	१८७७५
		२८९९०४९४३

जाति और संख्या ।

नंबर अधिकाई के सिलसिलेसे ।	जाति ।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१ ।
१३६	अकसाली—ङ	३०७६७०
१२४	अग्रवाला—ज	३५४१७७
१०६	अगासे—च	१२६७१०
१५१	अग्रो—ङ	२४१३३६
२२०	अनादी—ग	८४९८८
२७६	अफ्रिकन—प	१८७७५
१६६	अंबातन—च	१८६१८७
८९	अंबान—क	६१६३२८
२५२	अरब—ण	३९३३८
२१८	अराख—छ	८५५२२
१८०	अरोरा—ज	६७३६९५
३०३	आरमोनियन—द	१२९५
११२	आराकानी—थ	४५२१६४
२०६	असारी—ङ	१००४०९
३००	असुरो—ङ	३५५२
६	अहीर (ग्वाला अलग हैं)—ख	८१५५२१९
२५६	अहेरिया—ठ	३६३२०
१८१	अहोमा—थ	१५३५१८
१०१	औरावन—ग	५२३२५८
८४	इडैगा—ख	६६५२३२
१६२	इदगा—च	१९६९०१
२३७	इरुला—ग	५८५०३
७३	इलुआ—च	७०३२१५
१४६	उपार—ङ	२६७७१५
२४५	उलमा—झ	५०१६५

नंबर अधिकाई के सिलसिलेसे ।	जाति ।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१ ।
१५०	कचारी—ग	२४३२७८
३९	काछी—क	१३८४२२२
२६५	कंजर—ठ	२९४८६
२२६	कथोडी—ग	७७७०५
२०२	कंधेरा आदि—ङ	१०५६१३
२५१	कनाकन—झ	४१०१३
२६७	कनिसन—ञ	२७१९८
८३	कमार—ङ	६६६८८७
१८८	करन—झ	१४६०५३
२४१	करनाम—झ	५४१७७
४९	कलाल—च	११९५०९७
१३८	कसाई—च	३०२६१२
१७७	कसेरा इत्यादि—ङ	१६१५९६
३०	कहार—ध	१९४३१५५
२४८	काठी—क	४१९९६
२२१	काथे (मनीपुरी)—ग	८४५४०
९९	कांदू—च	५२४१५५
२४	कायस्थ—झ	२२३९८१०
९५	कारेन—थ	५४०८७६

नंबर अधिकाई के सिलसिले से।	जाति ।	मनुष्य-संख्या सन १८९१ ।
११७	काल्टा—क	४१०९८३
१६३	कालू—ङ	१९९३०५
१६९	किरार—ग	१७५५०८
२६८	कुकी—ग	२५९४०
४	कुनवी इत्यादि—क	१०५३१३००
१०	कुंभार—ङ	३३४६४८८
१७९	कुर—ग	१५५८३१
५३	कुरनेवर—ख	१०५९१८५
१९२	कुसबन—ङ	१३८०५७
३२	कृस्तान हिंदुस्तानी—ढ	१८०७०९२
२६६	कृस्तान गोआनिज—ढ	२८७५६
५४	केवट—ध	९८९३५२
१३३	कैकोला—ङ	३१६६२०
२१	केवरत—क	२२९८८२४
३४	कोइरी—क	१७३५४३१
२०	कोच—ग	२३६४३६५
३०४	कोटा—क	१२०१
२६०	कोडागन—क	३२६४१
९४	कोमठी—ज	५४५२०६

नंबर अधिकाई के सिलसिले से ।	जाति ।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१ ।
१७८	कोरवा—ग	१५८७००
१६१	कोरवी—ठ	२०७०४५
५०	कोरी—ङ	११८७६१३
१०८	कोल—ज	४७४९६९
१५	कोली—क	३०५८१६६
१५६	कोस्ती—ङ	२२५०१९
८१	खंडाइट—क	६७१२७२
१४१	खटिक—च	२९३७७१
१९९	खत्री—ङ	११६८८०
७८	खत्रा—ज	६८६५११
२००	खरवार—ग	११२२९८
१५९	खस—च	२१५२००
१३९	खाती—ङ	३०१४७६
८७	खांड़—ग	६२७३८८
२५९	खांचू—त	३३४९०
१७१	खासा—ग	१७२१५०
२२२	खोन—ग	८२७१०
२८४	खीन खेरमा—ग	१४२००
२८१	खोनङ्गो—ग	१५६६६
२८४	खुमरा—ठ	६५५४

नंबर अधिकाई के सिलसिले से ।	जाति ।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१ ।
२५७	गडबा—ग	३४१२७
१९७	गमला—च	१२२३२२
१५२	गवंडला—च	२३५९०२
२२७	गबंडिथा आदि—ङ	७६९९५
१४२	गांडा—ङ	२९१७६८
४४	गाडेरिया—ख	१२९४८३०
२५०	गारुड़ी—झ	४१४१२
१८४	गारो—ग	१५०२२७
२५	गावली, ग्वाला इत्यादि—ख (अहीर अलग है)	२२३७३०३
२७	गूजर—क	२१७१६२७
२०१	गूरा इत्यादि—झ	११०५२९
२८६	गूरूं—त	१०८९४
१३	गोंड—ग	३०६१६८०
२६७	गोंधाली—ञ	१८०३४
१९०	गोरिया इत्यादि—च	१४१६२८
२५८	गोला—च	३३८०४
१५३	गोसाईं—झ	२३१६१२
१३१	गौडी—ध	३१७१११

नंबर अधिकाई क सिलसिलेसे ।	जाति ।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१ ।
१८९	घनि । —	१४२३७४
१९४	—	१३०४८१
१७५	घाटवाल—छ	१६७०८९
२४६	घासिया—ठ	४६०७७
२५५	चंगार—ठ	३६५६९
३	चमार—छ	११२५८१०५
२६९	चाकर—च	२५७०६
२०८	चारन—झ	९९०९०
३०१	चिंगपाऊ आदि—ग	३४८३
२४९	चीनीज—थ	४१८३२
२४०	चुरिहा—	५५६१८
४७	चुहारा—छ	१२४३३७०
७४	चेटी—ज	७०२१४१
१००	चेरूमा—क	५२३७४४
११९	ज म—झ	३९६५९८
२२३	जटापू—ग	८११५२
७	जाट—क	६६८८७३३
१६०	जोगी—ठ	२१४५४६
११६	जोगी—ङ	४२४२१९
२१९	जोतसी—ञ	८५३०६

नंबर अधिकाई के सिलसिलेसे ।	जाति ।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१ ।
१८	जोलहा—ङ	२६६०१५९
३०५	झालगर—ङ	५५५
१०३	झिनवार—घ	४८९८१९
२९१	झोरा—ङ	७३३७
२८९	टांककार—ठ	९५०८
२०७	टिपरा—ग	९९३९५
३०४	टोडा—ग	७३९
२३५	ठठेरा—ङ	६०८३७
२८०	डंकउत—य	१६०६२
१८६	डफाली इत्यादि—ञ	१४७३६४
४६	डोम—छ	१२५७८२६
१२८	ततवा—ङ	३२८७७८
१०४	तंता—ङ	४८३९४२
२३९	तातान—ङ	५६८४४
७५	तरखाना—ङ	६९६७८१
१५७	तंबोली—च	२२२०४८
९६	तीया—च	५३८०७५
२४४	तूर्क—ण	५७५०३
९	तेली और घांची—ङ	४१४७८०३
२४२	थारू—त	५३८७५
२९०	थोरिया—ज	९०९७

नंबर अधिकाई के सिलसिलेसे।	जाति।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१।
७२	दरजी और सींपी—ङ	७१००९२
१७२	दुबला—क	१७२०५२
४५	दुसाध—छ	१२८४१२६
३०२	देवली—ङ	२२८९
२७३	दोगला—थ	१९८२१
२९९	धंगारी—ङ	३६७२
२३०	धांका—ग	६७४५१
४३	धांगर—ख	१३०५५८३
६२	धानुक—छ	८८३२७८
१४४	धीमर—ध	२८७४३६
१०२	धेद—छ	५०८३१०
२८	धोबी—च	२०३९७४३
१९१	नट—ठ	१३९०६८
१९	नाई इत्यादि (हजाम अलगहै) —च	२५३२०६७
२०५	नाग—ग	१०१५६८
२९	नामासद्रा—क	१९४८६५८
५५	नायर—क	९८०८६०
२९५	नियरिया—क	५८०८
२९७	नेवार—त	४९७९
२२८	नैकाडा—ग	७४४७९

नंबर अधिकाई के सिलसिले से।	जाति।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१ ।
१०५	पंचमशाली-क	४८२७६३
२११	पटनूली-क	९६४४३
१२	पठान-ण	३२२५५२१
२९३	पंधारी-ट	६७५१
२६४	प्रभू-झ	२९५५९
२६	पराइया (परिया)-छ	२२१०९८८
२३६	परी -च	६०१२९
१२६	पान-ग	३४१७४०
२१५	पारसी-द	८९६१८
६५	पाला-क	८१४९८९
२३	पाली-क	२२४२४९९
४०	पासी-छ	१३७८३४४
७०	पिंजारी-क	७५३६७५
६४	फकीर-झ	८३०४३१
१११	बड़ागो-क	४५२३३९
५८	बढ़ई-क	९३२७१८
९३	बनिजारा-ट	५६१६४४
१३	बनिया और महाजन-ज	३१८६६६६
	बरमिज-थ	५४०८९८४
२३४	बरवाला-ठ	६३८५६

नंबर अधिकाई-के सिलसिलेसे।	जाति।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१।
१३७	बलाई—ड	३०५६३५
६७	बलिजा—ज	८०४३०७
५६	बलोच—ण	९७१८३५
२१४	बंसफोर—ठ	८९९५५
२२९	बसोर—ठ	७३३४५
२५३	बहेलिया—ठ	३९२०३
६६	बागडी—क	८०४९६०
१६८	बागडी—ठ	१७९०७०
२३१	बाबा—झ	६६११५
१५८	बांभी—छ	२२०५९६
९०	बावरो—क	६१२४३०
२	ब्राह्मण—झ	१४८२१७३२
२६०	बिधुर—झ	३३४३७
८५	बिराध—छ	६५९८६३
२४३	बुरुध—ठ	५३४१३
२३२	बेदिया—ठ	६५१९४
१८२	बेलदार—ठ	१५२५१५
१०७	बेलमा—क	४७९७८३
१९३	बेगा—ग	१३६४७८
२१७	बैध—म	८७१९३

नंबर अधिकाई-के सिलसिलेसे।	जाति।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१।
१४५	वैरागी–	२७५६०४
१०९	वैष्णव–झ	४६९०५२
२५४	बोगर–छ	३७००२
२०३	भंडारी (हजामत बनाने-वाला)–च	१०३०२६
१७३	भंडारी (ताडी सराब-वाला)–च	१७००१४
१२५	भरभूंजा–च	३४३३०८
१९५	भरवड–ख	१२८२७१
१०६	भाट–झ	४८१११९
२८७	भांड–ञ	९७८३
२७१	भांडिया–ञ	२४५३९
१७०	भिलाला–ग	१७५३२९
२०९	भिस्ती–च	९८८२४
३६	भिल–ग	१६६५४७४
१५४	भुँइमाली–छ	२३१४२९
६१	भुँइया इत्यादि–ग	९०९८२२
४८	भूमिहार–क	१२२२६७४
१३२	भुइहारी–छ	३१६७८७
९१	भोंई–घ	६०६१९०
२०७	भोटिया–त	२५६७०

नंबर अधिकाई-के सिलसिलेसे	जाति।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१।
२७५	मंगार—त	१९३८३
१८२	मंगाला—च	१५४४३८
२१३	मनिहार—ज	९०१३१
६०	मपिला—ज	९१६४३६
१३५	मरवा—क	३१३८८१
५२	मलाह (केवट अलग है) —घ	११४७५४४
२३८	महतम—ठ	५६९८४
१६	महारा—छ	२९६०५६८
११	महाराष्ट्र—क	३३२४०९५
७६	मांग—छ	६९०४५८
१४८	माळी—घ	२६०४९६
५९	मांडिगा—छ	९२७३३९
४१	माला—क	१३६५५२०
३१	माली—क	१८७६२११
२१२	मिक्रिर—ग	९४८२९
१३४	मिरसो—व	३१६४२२
८२	मीना—ग	६६९७८५
१४०	मुत्रासा—छ	२९६७४३
२७२	मुरमो—त	२१८८९
८८	मुसहर—क	६२२०३४
११८	मूंडा—ग	४१०६२४
११२	मेओ—क	३६५७२६

नंबर अधिकाई-के सिलसिले से	जाति।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१।
१८५	मेघ—छ	१४८२१०
२१०	मेच—ग	९६८७३
७१	मेहतर—छ	७२७९८५
१५५	मेहरा—छ	२२६२१६
१२७	मोगल—ण	३३३११४
	मोघिया—ठ	१४६६६७
५७	मोची—छ	९६११३३
११●	मीन—थ	४६७८८५
२७८	यहूदी—द	१६९५१
२८५	याऊ—थ	१२९३४
२२४	यूरेसियन—ध	८१०४४
१७६	यूरोपियन—न	१६६४२८
१६४	रँगरेज—ङ	१८७६९८
११५	रवारी—ख	४३४७८८
२७४	राज इत्यादि—ङ	१९७७०
५	राजपूत—क	१०४२४३४६
२३३	राभोसी—छ	६३९९१
१७	रेड्डी—क	२६६५३९९
२२५	रेहगर—ङ	७७८५६
२६३	लदाखी—त	३०६७२
१२९	लवाना—ट	३२७७४८

नंबर अधिकाई-के सिलसिले से	जाति।	मनुष्य-संख्या, सन् १८९१।
२६१	लहेरा–ङ	३२१३९
१२३	लाबे–ज	३६४२९३
८६	लिंगायत–क	६५५४९१
२८३	लिंबू–त	१५०७९
२४७	लुसाई–ग	४३८४०
२८८	लेपचा–त	९७४५
३५	लोध–क	१६७४०९८
६८	लोनिया–ङ	७९६०८०
९७	लोहाना–ज	५३०४६८
३३	लोहार–ङ	१८६९२९३
४२	वकिलिगा–क	१३६०५५८
१४९	वनान–च	२५८५०८
१६५	बनिया–ङ	१८६२९७
१४३	बलइया–ठ	२८९४११
१७४	वारली–ग	१६८६३१
२२	वेलाला–क	२२५४०७३
६९	बीड़यावाडर–ठ	७९३५१६
१३०	सकला–च	३२७७२०
२१६	सतानी–झ	८८३५४
३७	संथाल–ग	१४९४०४५

नंबर, अधिकाई के सिलसिले से	जाति ।	मनुष्य-संख्या सन् १८९१ ।
११४	सबर–ग	४३८३१७
२६२	संसिया–ठ	३०७०४
१२१	साधू–झ	३७६१३०
१६७	सान–थ	१८२७४५
७७	साना–च	६९०४३४
१२०	साली–ङ	३९४६४०
२७९	सिकिलगर–ठ	१६७८१
११३	सिक्लिया–छ	४४५३६६
७९	सुतार–ङ	६८१७९०
२९६	सुनवार–त	५२१०
९८	सुंडी–च	५२५६९८
१	सेख–ण	२०६४४९९३
१९८	सेवक इत्यादि–झ	१२१६४७
५१	सोनार–ङ	११७८७९५
९२	हजाम (नाई अलग है)–च	६०५७२१
१४७	हलुआई–च	२६०८०१
२०४	हलावा–ज	१०२६४३
१८३	हो–ग	१५०२६२
६३	होलर–छ	८८०४४१

संक्षिप्त-प्राचीन-कथा ।

लिंगपुराण--(४७ वां अध्याय) शिवपुराण (ज्ञान संहिता ४७ वां अध्याय और विष्णुपुराण ७४ वां अध्याय) राजा प्रियव्रत के बड़े पुत्र 'आग्नीध्र' ने जंबूद्वीपके ९ खंडों को अपने ९ पुत्रों को विभाग कर दिया, जिनमें हेमनामक दक्षिण का 'वर्ष' अर्थात् दक्षिणी खंड; जो हिमालय युक्त है, आग्नीध्र के बड़े पुत्र 'नाभि' को मिला। नाभि का पुत्र 'ऋषभ' हुए और ऋषभके १०० पुत्र हुए। राजा ऋषभ अपने बड़े पुत्र 'भरत' को राजतिलक देकर आप परमधाम को गए। यह हिमालय के दक्षिण का देश भरत के अधिकार में हुआ,इसलिये इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा।

श्रीमद्भागवत-५ वां स्कंध-दूसरे अध्याय से ७ वें अध्याय तक और गरुडपुराण ५४ वां अध्याय-राजा प्रियव्रत का पुत्र आग्नीध्र जंबूद्वीप का राजा हुआ, जिसके ९ पुत्र थे,-नाभि, किंपुरुष, हरिवर्ष, इलावृत, रम्यक, हिरण्यमय, कुरु, भद्राश्व और केतुमाल। वे अपने अपने नामसे जंबूद्वीप के ९ खंड करके राज्य भोगने लगे। नाभि के पुत्र राजा ऋषभदेवके १०० पुत्र हुए, जिनमें भरत सबसे बड़ा था; उसके नाम से इस खंड को भारतवर्ष कहते हैं। इस वर्ष का नाम पहले 'अजनाभ' था, परन्तु जबसे भरत राजा हुए, तबसे इसका नाम भारतवर्ष प्रसिद्ध हुआ।

ब्रह्मवैवर्त (कृष्ण जन्मखंड-५९ वां अध्याय)

विष्णुपुराण-(दूसरा अंश तीसरा अध्याय) और बृहन्नारदीयपुराण (तीसरा अध्याय) क्षार समुद्र से उत्तर और हिमालय पर्वतसे दक्षिण भारतवर्ष (हिंदुस्तान) है।

अग्निपुराण-(११९ वां अध्याय) समुद्र से उत्तर और हिमवान् पर्वत से दक्षिण ९ सहस्र कोस विस्तार का भारतवर्ष है। स्वर्ग और मोक्ष पद के प्राप्त करनेवाले मनुष्योंके लिये यह कर्मभूमि है। मनुस्मृति-(दूसरा अध्याय) पूर्व के समुद्र से पश्चिम के समुद्र तक नर्मदा नदी और हिमवान् पर्वत के बीच के देश को 'आर्यावर्त' देश कहते हैं। सरस्वती और दृषद्वती, इन दोनों देव नदियों के अंतर्वर्ती देश को 'ब्रह्मावर्त' कहते हैं। इस देश में चारों वर्ण और संकर जातियों के बीच, जो आचार परंपरा क्रमसे चले आते हैं, उसे 'सदाचार' कहते हैं। कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पंचाल और शूरसेन (मथुरा) देशों को 'ब्रह्मर्षि-देश' कहते हैं, जो ब्रह्मावर्त से कुछ निकृष्ट है। इन देशों में उत्पन्न हुए ब्राह्मणोंके समीप पृथ्वी के सब लोगों को अपना अपना आचार व्यवहार सीखना उचित है। हिमालय और विंध्य पर्वतों के मध्य में 'विनशन' देश के पूर्व और प्रयाग के पश्चिम जो भूमि है, उसे, 'मध्यदेश' कहते हैं। द्विजातियों को यत्नपूर्वक इन देशों का अवलंबन करना चाहिये।

वशिष्ठस्मृति—(पहिला अध्याय) हिमालय के दक्षिण और विंध्य पर्वत के उत्तर जो धर्म वा आचार है, वह जानने योग्य है, इसी देश को 'आर्यावर्त' कहते हैं।

महाभारत-(शांतिपर्व-१९२ वां अध्याय) उत्तर में सब गुणों से रमणीय, पवित्र, हिमालय पर्वतके बगल में पुण्य और कल्याणकारी, जो सब सुन्दर देश हैं, उन्हींको 'परलोक' कहा जाता है। वहां पर कोई मनुष्य पापकर्म नहीं करता, सदा सब पवित्र और निर्मल रहा करते हैं। वे देश स्वर्ग के समान सब गुणों से युक्त हैं।

भविष्यपुराण-(६ वां अध्याय) सरस्वती, दृषद्वती और गंगा इन तीन नदियों के बीच जो देश है, वह देवताओंका बनाया हुआ है; उसको 'ब्रह्मावर्त' कहते हैं। हिमालय और बिन्ध्य इन दोनों पर्वतों के मध्य में कुरुक्षेत्र से पूर्व और प्रयाग से पश्चिम जो देश है, उसको 'मध्यदेश' कहते हैं। हिमालय और बिंध्य पर्वतों के बीच में पूर्वके समुद्र से पश्चिमके समुद्र तक जो देश है, उसको 'आर्यावर्त' कहते हैं।

कूर्मपुराण-(ब्राह्मीसंहिता-उत्तरार्द्ध-१६ वां अध्याय) द्विजोंको हिमालय और बिंध्य पर्वतों के मध्य में वास करना चाहिए। पूर्व वा पश्चिम के समुद्रवर्ती देशों को छोड़ करके पूर्व अथवा पश्चिम के भागोंके शुभ देशों में वे वास कर सकते हैं; किन्तु अन्य देशों में उनको निवास नहीं करना चाहिए।

लिंगपुराण-(५२ वां अध्याय) भारतवर्ष के मनुष्य अनेक वर्ण के होते हैं और कर्म के अनुसार आयुष भोगते हैं, परंतु उनकी परम आयुष १०० वर्ष की है। वे इन्द्रद्वीप, कशरू, ताम्रद्वीप, गभस्तिमान्, नागद्वीप, सौम्य, गांधर्व, वारुण, कुमारिका खंड, इत्यादि देशों में बसते हैं। म्लेच्छ, पुलिंद, किरात, शबर आदि अनेक जातियां चारोंओर बसती हैं। उनके अंतर यवन रहते हैं। मध्य में ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र इन चारों वर्णों का निवास है।

विष्णुपुराण-(दूसरा अंश तीसरा अध्याय) भारत के पूर्व में किरातदेश, पश्चिम में यवन देश है और मध्य में ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र बसे हैं।

गरुडपुराण-(पूर्वार्द्ध, ५५ वां अध्याय) भारतवर्ष में ९ द्वीप हैं, इन्द्रद्वीप, कशेरु, ताम्रवर्ण, गभस्तिमान्, नाग, कटाह, सिंहल, सौम्य, और वारुण भारत में पूर्व किरात, पश्चिम यवन, दक्षिण अंध और उत्तर तुरुष्क बसते हैं, और इसके मध्य भाग में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र निवास करते हैं।

वामनपुराण-(१३ वां अध्याय) भरतखंड में भी ९ खंड होरहे हैं और समुद्र करके अंतरित हुए नवों खंड आपस में अगम्य हैं-(१) इंद्रद्वीप, (२) कसरू, (३) ताम्रपर्ण, (४) गभस्तिमान, (५) नागद्वीप (६) कटाह, (७) सिंहल, (८) वारुण और (९) कुमाराख्य। दाक्षिण उत्तर के मध्य कुमाराख्य खंड है पूर्व में किरात, पश्चिम में यवन, दक्षिण में अंध्र और उत्तर में तुरुष्क स्थित है, ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र मध्य भाग में बसते हैं।

मध्य भाग में मत्स्य, मुकुंद, कुणि, कुंडल, पांचाल, कोशल, वृष, शबर, कोवीर, सुलिंग, शक, समाशंख, पश्चिम तक बा ।क, वाट धान, आभीर, कालतोपक, पश्चिम दिशा में नर्मदा, भारुकच्छ, सारस्वत, सौराष्ट्र अवंती और अर्बुद, उत्तर में गांधार, यवन, सिंधु सौबीर, कैकेय, कांबोज, बर्ब्बर, अंग, चीन, पूर्व में बंग, मदगर, प्रागज्योतिष प्रष्ठ, विदेह और मागध, और दक्षिण में चोल, मुषिकाध, महाराष्ट्र, कलिंग, आभीर, शबर,नल, इत्यादि देश हैं। विंध्य पर्वतके मूलमें मेकल, उत्कल, दशार्ण, भोज, तोसल, कोशल त्रैपुर, नैषध, अवंती, बीतिहोत्र और पर्वतों के समीप खस, त्रिगर्त, किरात, शिखाद्रिक देशहैं

मत्स्यपुराण-(११३ वां अध्याय) कु , पांचाल, शाल्व, जांगल, शूरसेन, भद्रकार, ब्राह्म, पट्टचर, मत्स्य, किरात, कुल्य, कुंतल, काशी, कोशल, अवंती, कलिंग, मूक और अंधक यह मध्य के देश हैं बाह्लीक, वाटधान, अभीर, कालतोपक, यह शूद्रोंके देश हैं और पल्लव, आंतखंडित, गांधार, यह यवनों के देश हैं। सिंधु, सौवीर, मुद्रक, शक, पुलिंद, कैकय आदि दश देशों में क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र बसते हैं।

उत्तर में आत्रेय, भरद्वाज, प्रस्थल, जांगल इत्यादि पूर्व में अंग, वंग, मालव, प्रागज्योतिष, पुंड्र, विदेह, ताम्रलिप्तक, शाल्व, मागध, दक्षिण में पांड्य केरल, चोल, नवराष्ट्र, कलिंग, कारुष, शबर, पुलिंद, विंध्य, वैदर्भ, दंडक इत्यादि, बिन्ध्य के समीप में भारुकच्छ, सारस्वत, कच्छिक, सौराष्ट्र आनर्त और अर्बुद, विंध्याचल के पीठपर मालव, करुष, मेकल, उत्कल, दशार्ण, भोज, किष्किंधक, तोशल, कोशल, त्रैपुर, निषध, अवंती इत्यादि और पर्वतों में त्रिगर्त मंडल किरात इत्यादि देश बसे हैं। (१२० वां अध्याय)- हिमवान पर्वत के पृष्ठभाग के मध्य में कैलास पर्वत है।

आदिब्रह्मपुराण-(२६ वां अध्याय) भारतवर्ष १०००० योजन है, जिसके पूर्व में किरात, पश्चिम में यवन आदि और मध्य में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र बसते हैं और मध्य में मत्स्य, कुल्य, बाह्लीक, मेकल, गांधार, यवन, सिंधु, सौबीर, भद्रक, कलिंग, कैकय, कांबोज, बर्ब्बर, पुष्कल, काश्मीर देश पूर्व में अंधक, प्रागज्योतिष, मद्र, विदेहदेश, दक्षिण में कुमार, बासक, महाराष्ट्र माहिषक कालिंग आभीर, पुलिंद, मैलेय, वैदर्भ, दंडक, भोजबर्धन, कौलक, कुंतल देश और बिंध्याचलके पृष्ठपर दशार्ण, किस्किंधक, तोषल, कोशल, तुसार, कांबोज, यवन देश हैं।

कूर्मपुराण-(ब्राह्मीसंहिता ४६ वां अध्याय) पूर्व कुरु, पांचाल, मध्यदेश, और काम रूप दक्षिण में पुंड, कलिंग, मगधदेश इत्यादि पारियात्र पर्वत पर सौराष्ट्र आभीर, अर्बुद, मालक, और मालवा और पश्चिम में सौबीर सैंधव, हूण, शाल्व, कान्यकुब्ज मद्र, अंबर और पारसीक देश हैं।

महाभारत--(भीष्मपर्व-९ वां अध्याय) महेंद्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान, ऋक्षवान, बिंध्य और पारियात्र, येही पहाड़ों के ७ कुल हैं। इनके पास अप्रसिद्ध हजारों पहाड़ विद्यमान हैं (महाभारत में हिमालय, कैलास, गंधमादन, अर्बुद आदि पहाड़ों के भी नाम हैं)।

वाराहपुराण-(८३ वां अध्याय), मत्स्यपुराण-(११३ वां अध्याय), भविष्यपुराण (५७ वां अध्याय), कूर्मपुराण (४७ वां अध्याय), आदिब्रह्मपुराण-(२६ वां अध्याय), गरुडपुराण (पूर्वार्द्ध, ५५ वां अध्याय), अग्निपुराण-(११९ वां अध्याय) और विष्णु पुराण (दूसरा अंश-तीसरा अध्याय) महेंद्राचल, मलयाचल, सह्याचल, शुक्तिमान, ऋक्षवान, विंध्याचल और पारियात्र ये ७ भारतवर्ष में मुख्य पर्वत हैं।

मत्स्यपुराण (११३ वां अध्याय), कूर्मपुराण (ब्राह्मीसंहिता, ४६ वां अध्याय), वाराहपुराण (८३ वां अध्याय), भविष्यपुराण (५७ वां अध्याय), आदिब्रह्मपुराण (२६ वां अध्याय) और विष्णुपुराण (द्वितीय अंश, तृतीय, अध्याय)-हिमालय पर्वत से गंगा यमुना, लोहिता (रामगंगा), गोमती, सरयू, गंडकी, कौशिकी (कोशी), सिंध, शतद्रू,

(सतलज), बिपाशा (व्यासा), ऐरावती (रावी), चन्द्रभागा (चनाव), सरस्वती, दृषद्वती, देवीका, कुहू, धूतपापा, बाहुदा, निखिरा, चक्षुमती, वितस्ता (झेलम), निश्चला, इक्षु और त्रिशिरा; महेन्द्राचल से बिसामा, ऋषिकुल्या, त्रिभांगा, पितृसोमा, बहुला इक्षु इत्यादि नदियां; मलयाचल से ताम्रपर्णी, कृतमाला, पुष्पजाती, उत्पलावती, आदि नदियां; सह्याचल से गोदावरी, भीमरथी (भीमा), कृष्णा, वेणी, तुंगभद्रा, कावेरी, सुप्रयोगा, पापनाशिनी आदि; शुक्तिमान पर्वत से काशिका, सुकुमारी, मंदबाहिनी, इत्यादि; पारियात्र पर्वत से चर्मण्वती (चंवल), वेत्रवती (वेतवा), चन्द्रनाभा, पर्णाशा, कावेरी, (ओंकारनाथ के पासवाली), वेणुमती, वेदवती, मनोरमा, इत्यादि, ऋक्षवान पर्वत से चित्रकूटा, तमसा, करतोया पिशाचिका, बिशाला, बिरजा, बालुबाहिनी, दशार्णा इत्यादि और बिंध्यपर्वत से वैतरणी, बेणा, शीघ्रोदा, विपाशा, इत्यादि नदियां निकली हैं। तापी (तापती) नदी का निकास स्थान किसी पुराण में विन्ध्याचल, किसी में ऋक्षवान पर्वत और किसी पुराण में पारियात्र पहाड़ लिखा है; इसी प्रकार से नर्मदा, सान, मंदाकिनी, महानदी, क्षिप्रा, मही, और पयोष्णी का भी।

मनुस्मृति-(१० वां अध्याय) ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, अम्बष्ठ, निषाद, बिल के जीवों को मारने वाला उग्र, सूत (सारथी), मागध, वैदेह (अंतःपुर का रक्षक), अयोगव (काष्ठ चीरने वाला), क्षत्ता (बिल के जीवों को मारने वाला) चांडाल, आक्षत, आभीर, धिग्वर्ण (चर्मकार), पुक्कस (बिल के जीवों को मारने वाला), कुक्कुटक, श्वपाक, बेण (करताल मृदंग बजाने वाला), भुर्ज, कांक, झल्ल, मल्ल, निछबि, नट, करण, खस, द्रविड़, सुधन्वा, आचार्य, कारूख, बिजन्मा, मैत्रा, सात्वत, सैरिंध्र, मैत्रेय (राजा को जगाने वाला), मार्गबा (नौकाचलाने वाला), कारावरट, (चर्म छेदक), मेद (जं ली पशुओं ी हिंसा करने वाला), पांडुपाक (बांसुरी बेचने वाला), आहिंडक, स्वपाक (जल्लाद का कार्य करने वाला), अंत्यावसाई श्मशान कार्य से जीविका करने वाला)।

औशनस्मृति-(आरंभ में) वेणुक, चर्मकार, रथकार, (स्तुति करने वाले), चांडाल (मल को उठाने वाला), श्वपच (कुत्ते का मांस खाने वाला), आयोगव (वस्त्र बुनने और कांसे के व्यापार से जीविका करने वाला), ताम्रोपजीवी (ठठेरा), सूनिक (सोनी), उद्बन्धक (वस्त्रों को धोने वाला), पुलिंद (मांस वृत्ति करने वाला), पुल्कस (सुरा वृत्तिवाला), रजक (धोबी), रंजक (रंगरेज), नर्त्तक (नट), वैदेहिक (बकरी, भैंस और गौ को पालने वाला), सूचिक (दरजी) पाचक (रसोइया), चक्री (तेल वा लवण की जीविका करने वाला तेली), भिषक (वैद्यक करने वाला), अंबष्ठ (खेती और लकड़ी से जीविका करने वाला), कुंभकार (मट्टी के पात्र बनाने वाला), नापित (नाई), पार्शव (पहाड़ों पर रहने वाला), मणिकार, उग्र (राज का दन्ड धारण करने वाला), शुंडिक (सूली देने का काम करनेवा), सूचक (दरजी), क (बढ़ई), मत्स्यबंधक), (धीवर) कन्टकार।

अंगिरास्मृति-(आरंभ में) रजक, चर्मक (चमार), नट, बुरुड़, कैबर्त, भेद, भील।

पाराशरस्मृति (११ वां अध्याय) दास, नापित (नाई), गोपाल, अर्द्ध सीरी उप बाभिया),

व्यासस्मृति-(पहला अध्याय) वणिक, किरात, कायस्थ, मालाकार (माली), कुटुम्बी बरट, भेदु, चांडाल, दास, श्वपच, कोलक।

गौतमस्मृति-(चौथा अध्याय) अंबष्ठ, उग्र, निषाद, दौष्यन्त, पार्शव, सूत, मागध, अयोगव, वैदेहक, चांडाल, धीमर, पुष्कस, भृजकन्टक, माहिष्य, वैदेह, यवन, कर्ण।

वशिष्ठस्मृति-(१८ वां अध्याय) चांडाल, वेण, अंत्यावसायी, रोमक, पुल्कस, सूत अंबष्ठ, निषाद, उग्र (भील) पार्शव।

पद्मपुराण-(सृष्टिखंड तीसरा अध्याय) कायस्थ, कर्ण, (१५ वां अध्याय) कायस्थ द्वा

(भूमिखंड-२९ वां अध्याय) निषाद, किरात, भील, नाहलक, भ्रमर, पुलिंद, सूत, मागध, बंदी; चारण (नट)। स्वर्गखंड-१८ वां और ३१ वां अध्याय) चमार, पासी, कोरी।

ब्रह्मवैवर्तपुराण-(ब्रह्मखंड १० वां अध्याय) गोप, नाई, भील, मोदक, कूंवर, तांबोली सोनार, करन, अम्बष्ठ, मालाकार, कर्मकार, शंखकार, कुविंदक, कुंभकार, कांसकार, सूत्रधार, चित्रकार, अट्टालिकाकार, कोटक, तैलकार, तीवर, सेट, मल्ल, मातर, भड, काड, कलंद, चांडाल, चर्मकार, मांसछेद, पोंच, कत्तार, काउरा, हडी, डम, गंगापुत्र, खुगी, मदक, राजपुत्र शौंडक, आंतरी, कैवर्त, धीवर, रजक, कोयाली, सरवस्वी, व्याध कुदर (कोटिक), वागतीत, म्लेच्छजाति, जोला, शराक सूत, भट (भाट)।

(कृष्ण जन्म खंड-८५ वां अध्याय) सोनार, कायस्थ।

अंग्रेजी राज्य का आयव्यय ।

भारतवर्षीय अंग्रेजी गवर्नमेंटकी एक वर्षकी आमद और खर्च—

सन् १८८७–८८ ईसवी ।

आमदनी रुपया	करोड	लाख	खर्च रुपया	करोड	लाख
भूमि से	२२	९८	भूमि, अफिऊन,		
अफिऊन से	८	५४	निमक, आबकारी,		
निमक से	६	७२	स्टाम्प, कष्टम,		
आबकारी से	४	५०	जंगल विभाग, और रजि-		
स्टाम्पसे	३	८५	स्टरी में ।	९	६१
परदेश की आमदनी			रेलवे में,	१६	५७
रफतनी का महसूल,			डाक, टेलीग्राफ और टक-		
जंगलकी आमदनी,			शाल में	२	९०
रजिस्टरी की आमदनी,			नहर इत्यादि में	२	४९
और देशी राजाओं से कर	७	९६	सेना में खर्च	२०	४६
रेलवे से आमदनी,	१४	४१	बेतन	१२	९०
डाक, टेलीग्राफ और टक-			छुरी, पेंशन, कागज,		
शाल से,	२	१९	कलम, बंटा, इत्यादि,	४	७८
नहर इत्यादि से,	१	७१	सूद	५	५२
अदालत, पुलिस,			घाट, रास्ता इत्यादि	५	६०
जहाज, शिक्षा, चिकित्सा			सीमा रक्षा	०	५७
और विज्ञान से,	१	४२	अकाल निवारन	०	९
छापा, कागज और कलम से,	१	३५	रेल इत्यादि	०	८
सैनिक विभाग से,	०	९८	जोड़	८१	५७
सूद,	०	७५			
घाट, रास्ता और मकान से,	०	५७			
जोड़,	७७	९३			

देशी राज्योंका विवरण।

नंबर	राज्य	क्षेत्र फल, वर्गमील	मनुष्य-संख्या सन् १८८१ ई०	मालगुजारी	शहर और कसबे इत्यादि	प्रदेश
१	हैदराबाद	८२६९८	९८४५५९४	३०००००००	हैदराबाद, औरंगाबाद, गुलबर्गा, कादिराबाद, रायचूर, बीढ, गडवाल, मोमीनाबाद, नंदेर, कल्यान, हिंगौली, नारांपेट, वारंगल, इंडुर, वरमथ, बीदर, निर्मल, मनवट, भराशिर, प्रभानी, सिकंदराबाद, बलारम, दौलताबाद, इलोर, असाई। ...	हैदरा वाद (दक्षिण)
२	बड़ौदा	८२२६	२१८५००५	१५००००००	वडौदा, पाटन, बीसनगर, काडी, नौसारी, सिद्धपुर, बाड़नगर, अमरेलो, पेटलाद, दभोई, सोजित्रा, ऊंझा, बासो, द्वारिका। ...	बंबई
३	ग्वालियर	२९०४६	३११५८५७	१२५०००००	ग्वालियर, उज्जैन, मंडेशर, नीमच, साजापुर, बारनगर, नरबर, भिलसा, चंदेरी।	मध्य भारत
४	मैसूर	२७९३६	४९१४११०	१०६०००००	बंगलोर, मैसूर, श्रीरंगपट्टन, कोलर, शिमोगा, तमकूर, चिकबालापुर। ...	मैसूर

नंबर	राज्य	क्षेत्र फल वर्ग मील	मनुष्य-संख्या सन १८८१ ई०	मालगुजारी	शहर और कसबे इत्यादि	प्रदेश
५	कश्मीर	८०१९००	२५११०९०	८००००००	श्रीनगर, जंबू, अनंतनगर, सोपर, पहुंच मीरपुर, बारामूला, बटाला।	कश्मीर
६	इन्दौर	८४००	१०५४२३७	७००००००	इंदौर, मऊ, रामपुर, मांडू, मंडलेश्वर। ...	मध्यभारत (मालवा)
७	ट्रावंकोट	६७३०	२४०११५८	३६०००००	त्रिवेंद्रम, अलोपी, कीलन, नागरकोयल। ...	मदरास
८	जयपुर	१४४६५	२५३४३५७	६१०-०००	जयपुर, शिकार, फतहपुर, माधवपुर, हिंड, उन, नवलगढ, सांभर, झुंझनू, रामगढ़, उदयपुर, खंडेला इत्यादि।	राजपूताना
९	पटियाला	५९५१	१४६७४३३	४९०००००	पटियाला, नारनवल, बूसी, सुनाम, महेंद्रगढ़ समाना। ...	पंजाब
१०	जोधपुर	३७०००	१७५०४०३	४१०००००	जोधपुर, नागोड़, पाली, कचवाड़ा सुजात, बिलारा, डिडवाना, फतोदो।	राजपूताना
११	भोपाल	६८७६	९५४९०१	४००००००	भोपाल, सिहोर।	मध्यभारत
१२	उदयपुर	१२६७०	१४९४२२०	३७०००००	उदयपुर, भिलवाड़ा, चित्तौर, श्रीनाथद्वारा कांकरौली,	राजपूताना

१३	भावनगर	२८६०	४००३२३	३४०००००	भावनगर, ...	बंबई (काठियावार)
१४	कच्छ	६५००	५१२०८४	३००००००	मांडवी, भुज, अंजर मांडवा	बंबई (गुजरात)
१५	कोटा	३७९७	५१७२७५	२९०००००	कोटा	राजपूताना
१६	भरतपुर	१९७४	६४५५४०	२७०००००	भरतपुर, दीग, कामा	राजपूताना
१७	अलवर	३०२४	६४२९२६	२६०००००	अलवर, राजगढ	राजपूताना
१८	नवानगर	३७९१	३१६१४७	२४०००००	नवानगर	बंबई (काठियावार)
१९	कोल्हापुर	२८१६	८००१८९	२३०००००	कोल्हापुर, इंचलकरंजी	बंबई
२०	जूनागढ	३२७९	३८७४९९	२१०००००	जूनागढ, विरावल सोमनाथ,पट्टन	
२१	बीकानेर	२२३४४	५०९०२१	१८०००००	बीकानेर चुरु रतनगढसुजनगढ भटनेर ...	राजपूताना
२२	बहावलपुर	१७२८५	५७३४९४	१६०००००	बहावलपुर, अहमदपुर खांपुर उच्छ ...	पंजाब
२३	रामपुर	१०९९	५४१९१४	१६०००००	रामपुर, तांडा शाहाबाद	पश्चिमोत्तर
२४	कोचीन	१३६१	६००२७८	१६०००००	आरनीकोलम, मतनचेरर त्रिचुर	मदरास
२५	झालावार	२६९४	३४०४८८	१५०००००	झालरापाटन छावनी....	राजपूताना
२६	कूचाबिहार	१३०७	६०२०८४	१३०००००	कूचबिहार	बंगाल
२७	रतलाम	७२९	८७३१४	१३०००००	रतलाम	मध्यभारत (मालवा)
२८	टाक	२५०९	३३८०२९	१२०००००	टोंक	राजपूताना
२९	गोंडल	१०२४	१३५६०४	१२०००००	गोंडल	बंबई (काठियावार)

नम्बर	राज्य	क्षेत्र फल वर्ग मील	मनुष्य संख्या सन १८८१ ई०	मालगुजारी	शहर और कसबे इत्यादि	प्रदेश
३०	रीवां	१००००	१३०५१२४	११०००००	रीवां, सतना	मध्यभारत (बघेलखंड)
३१	कपुरथला	६२०	२५२६१७	१००००००	कपुरथला, पुगवारा, फगवारा, सुलतापुर	पंजाब
३२	बूंदी	२३००	२५४७०१	१००००००	बूंदी	राजपूताना
३३	मारवी	८२१	८९९६४	१००००००	मौरवी	बंबई (काठियावार)
३४	धौलपुर	१२००	२४९६५७	९०००००	धौलपुर वारी, राजखेरा, पुरानी, छावनी	राजपूताना
३५	दतिया	८३६	१८२५९८	९०००००	दतिया	मध्यभारत (बुँदेलखंड)
३६	उरछा	१९३४	३११५१४	९०००००	उरछा टिहरी (टीकमगढ)	मध्यभारत (बुंदेलखंड)
३७	जावरा	८७२	१०८४३४	८०००००	जावरा	मध्यभारत (मालवा)
३८	ध्रानगड्रा	११५६	९९६८६	७५००००	ध्रानगड्रा	बंबई (काठियावार)
३९	धाड	१७४०	१४९२४४	७०००००	धाड	मध्यभारत (मालवा)
४०	नाभा	९३६	२६१८२४	६५००००	नाभा	पंजाब
४१	कांबे	३५०	८६०७४	६२५०००	कांबे	बंबई
४२	प्रतापगढ	१४६०	७९५६८	६०००००	प्रतापगढ	राजपूताना
४३	राधनपुर	११५०	९८१२९	६०००००	राधनपुर	बंबई
४४	जींद	१२३२	२४९८६२	३०००००	जींद	पंजाब

४५	खैरपुर	६१०९	१२०,१५३	५५००००	खैरपुर	...	...	...	...	सिंध
४६	पोरबँदर	६३६	७१०७२	५५००००	पोरबंदर	...	...	...	...	बंबई (काठियावार)
४७	पालनपुर	३१५०	२३६४८१	५०००००	पालनपुर	...	...	...	...	बंबई
४८	चरखारी	७८७	१२३०१५	५०००००	चरखारी	...	...	...	...	मध्यभारत (बुँदेलखंड)
४९	राजगढ	६५५	११७५३३	५०००००	राजगढ़	...	...	...	...	मध्यभारत (भोपाल एजेंसी)
५०	नरसिंहगढ़	६२३	११२४२७	५०००००	नरसिंहगढ़	...	...	...	...	तथा
५१	करौली	१२०८	१४८६७०	५०००००	करौली	...	...	...	...	राजपूताना
५२	पन्ना	२५६८	२२७३०६	४५००००	पन्ना	...	...	...	...	मध्यभारत (बुंदेलखंड)
५३	समथर	१७४	३८६३३	४०००००						मध्यभारत
५४	देवास	२८९	१४२१६२	४०००००	देवास	...	...	...	...	मध्यभारत (मालवा)
५५	किसुनगढ	८११	११२६३३	३५००००	किसुनगढ़	...	...	...	...	राजपूताना
५६	मंडी	१०००	१४७०१७	३५००००	मंडी...	...	...	...	...	पंजाब
५७	सावंत वाडी	९००	१७४४३३	३२५०००						बंबई
५८	पदूकोट	११०१	४७५०००	३०००००	पदूकोटा	...	...	...	...	मदरास
५९	फरीदकोट	६४३	९७०१४	३०००००	करीदकोट	...	...	...	...	पंजाब
६०	मलियरकोटला	१६४	७१०४४	२८४०००	मलियर कोटल		...	...	...	तथा
६१	वांसवाडा	१३००	१७५१४५	२८००००	वांसवाडा	...	...	...	...	राजपूताना
६२	लिमडो	३४४	४३०६३	२६४०००	लिमड़ो	...	...	...	...	वंबई (काठियावाड़)
६३	टिपरा	४०८६	९५६३७	२५००००	अगरताला	...	...	...	...	वंगाल

नम्बर	राज्य	क्षेत्र फल वर्ग मील	मनुष्य-संख्या सन् १८८१ई०	मालगुजारी	शहर और कसबे इत्यादि	प्रदेश
६४	छतरपुर	११६९	१६४३७६	२५००००	छतरपुर	मध्यभारत (बुंदेलखंड)
६५	चंबा	३१८०	११५७७३	२३५०००	चंबा....	पंजाब
६६	अजयगढ	८०२	८१४५४	२२५०००	नवशहर	मध्यभारत (बुंदेलखंड)
६७	बिजावर	९७३	११३२८५	२२५०००	बिजावर	तथा
६८	राजनंदगांव	९०५	१६४३३९	२२२०००	राजनंदगांव	मध्यदेश
६९	खैरागढ	९४०	१६६१३८	२१४२००	खैरागढ	तथा
७०	डूंगरपुर	१०००	१५३३८१	२१००००	डूंगरपुर	राजपूताना
७१	सिरमोर	१०७७	११२३६१	२१००००	नाहन	पंजाब
७२	राजकोट	२८३	४६५४०	२०५०००	राजकोट	बंबई (काठियावार)
७३	सिरोही	३०२०	१४२९०३	१७५०००	सिरोही आबू	राजपूताना
७४	जैसलमेर	१६४४७	१०८१४३	१५८०००	जैसलमेर	तथा
७५	नागौडा	४५०	७९६२९	१५००००	नागौडउचहरा	मध्यभारत (बुंदेलखंड)
७६	टिहरी	४१८०	१९९८९६	१४२०००	टिहरी	पश्चिमोत्तर
७७	बस्तर	१३०६२	१९६२४८	१४१०००	बस्तर या जगदलपुर	मध्यदेश
७८	कालाहाडी	३७४५	२२४५४८	१०००००	कालहाडी	तथा

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय देशी राज्यों में से हैदराबाद राज्य में ११५३-७०४० मनुष्य, बड़ोदा-राज्य में २४१५३९६, मैसूर राज्य में ४९४३६०४, कश्मीर में २५४-३९५२, ट्रावंकोर में २५५७८४०, जयपुर राज्य में २८२४४८०, पटियाला-राज्य में १५३८-८१०, जोधपुर-राज्य में २५२४०३०, उदयपुर-राज्य में १८३२४२० भरतपुर-राज्य में ६४०-६२०, अलवर-राज्य में ७६९०८०, बीकानेर-राज्य में ८३१२१०, बहावलपुर-राज्य में ६४-८९००, रामपुर-राज्य में ५५८२७६, कोचीन-राज्यमें ७१५८७०, टोंकराज्य में ३७९३३०, कपुरथला-राज्य में २९९५९०, मोर्वी-राज्य में ८६९६४, धौलपुर-राज्य में २७९८८०, नाभा-राज्य में २८२७६०, किसुनगढ़ राज्य में १२५५१६, फरीद, कोट-राज्य में ११५०४०, मलि-यर कोठला-राज्य में ७५७५० मनुष्य थे।

कपुरथला के महाराज को पंजाब के राज्य की मालगुजारी के अलावे अवध की मिल-कियत से ८००००० रुपये मालगुजारी आती है और टिपरा के राजा को अपने राज्य की मालगुजारी के अतिरिक्त अंगरेजी राज्य की जिमींदारी से २५०००० रुपये की आमदनी है।

ऊपर लिखे हुए देशी राज्यों के अलावे हिंदुस्तान में अंगरेजी रक्षा के अधीन मनीपुर, पटना, पालीटाना, माइहर, रायगढ़, सोनपुर, सारनगढ़, सरगुजा, बामरा, गंगापुर, शिकम, धोराजी इत्यादि बहुतेरे छोटे देशी राज्य हैं।

स्वाधीन राज्य।

अंगरेजी और करद राज्यों के अतिरिक्त हिंदुस्तान में नैपाल और भूटान दो हिन्दुस्ता-नी स्वाधीन राज्य हैं;—(१) नैपाल-राज्य तिब्बत और भारतवर्ष के अंगरेजी राज्य के बीच में हिमालय पर्वत के दक्षिणी सिल सिले पर स्थित है। इसकी लंबाई पूर्व से पश्चिम तक लग-भग ५०० मील और चौड़ाई उत्तर से दक्षिण को ७० मील से १५० मील तक और इसका क्षेत्रफल लगभग ५४००० मील वर्गमील है। इस राज्य में करीब ३०००००० मनुष्य बसते हैं और १००००००० रुपये मालगुजारी आती है। (२) भूटान-राज्य हिमालय और आसाम के बीच में हिमालय पर है इसका अनुमानिक क्षेत्रफल १९००० वर्गमील और इसकी अनुमा-न से मनुष्य संख्या १५०००० है।

फ्रांसीसियों और पोर्चुगीजियों का राज्य।

अंगरेजी और हिंदुस्तानी राज्यों के अलावे, जिनका वर्णन होचुका, हिंदुस्तान में कुछ थोड़ा सा राज्य परदेशी बादशाह फ्रांसीसियों और पोर्चुगीजों के अधिकार में है,—(१) फ्रांसी-सियों का राज्य मदरासहाते के दक्षिण अर्काट में पांडीचरी, तंजोर में कारीकाल, गोदावरी में यानाम, और मलेबार में माही और बंगाल हाते के हुगली जिले में चंदरनगर है। संपूर्ण राज्य का क्षेत्रफल २७८ वर्गमील है, जिसमें सन १८९१ में २८२९२३ मनुष्य थे। (२) पोर्चु-गीजों का राज्य बंबईहाते के रतनागिरि और उत्तरी किनारे के मध्य में गोआ, सूरत और थाना के मध्य में दमन और काठियावाड़ के दक्षिण में ड्यू है। इसके संपूर्ण राज्य का क्षेत्रफल १०-६६ वर्गमील है, जिसमें सन १८९१ ई० में ५६१३८४ मनुष्य थे।

संक्षिप्त ऐतिहासिक विवरण।

भारतभ्रमण में स्थान स्थान पर इतिहास लिखे गए हैं, इस लिये यहां बहुत संक्षिप्त लिखा जाता है।

लगभग २५०० वर्ष पहले हिंदु-शास्त्र का मत अच्छी तरह से प्रचलित था, परंतु इसके पश्चात् गौतम बुद्ध ने, जिसका जन्म ईशा से६२३ वर्ष पहले हुआ था, बौद्ध मत नियत किया, जो १००० वर्ष से अधिक समय तक हिंदू मत का मुकाबिला करता रहा। सन् ईस्वी की नवीं शताब्दी में बौद्ध मत के लोग हिंदुस्तान से जबर्दस्ती निकाल दिए गए परंतु एशिया में अभी तक इस मत के लोग ५० करोड़ हैं (भारतभ्रमण-तीसराखंड के बुद्ध गया में देखो)

भारतवर्ष का बाहरी इतिहास यूनानियों की चढ़ाई से आरंभ होता है। सन् ईस्वी के ३२७ वर्ष पहले, वर्ष के आरंभ में यूनान का सिकंदर हिंदुस्तान में आ पहुंचा और अटक के नदी को पार करके झेलम की ओर चला। उस समय पंजाब में छोटे छोटे अनेक राजा थे, जो एक दूसरे से डाह करते थे, इनमें से हिंदू राजा पोरस ने झेलम नदी पर सिकंदर का मुकाबिला किया। अंत में वह परास्त हुआ, उसका पुत्र मारा गया और वह जखमी होकर भागा, परंतु जब पोरस ने अधीनता स्वीकार की, तब सिकंदर ने उसका राज्य वापस देकर उसको अपना मित्र बना लिया। इसके पश्चात् वह दक्षिण- पूर्व को अमृतसर की ओर बढा और फिर पश्चिम की ओर पीछे को हटा और संगला पर कथेई की कोम को परास्त करके व्यासा नदी पर पहुंचा। पीछे वह कई कारणों से लाचार होकर झेलम को लौट गया। वहां से उसने नदी की राह से नौकाओं पर ८ हजार फौज भेजी और बाकी को २ भागोंमें विभक्त करके स्थल मार्गसे नदी के किनारे किनारे कूच किया। मुलतान में, जो उस समय भी दक्षिणी पंजाब की राजधानी था, सिकंदर को माली की कौम से बडी लडाई हुई, शहर के लेने के समय सिकंदर जखमी होगया, इसलिये उसके सिपाहियों ने क्रोध में आकर मुलतान के संपूर्ण बासिंदों को तलवार से काटडाला। सिकंदर ने वहांसे जाकर चनाब और सतलज के संगम के पास शहर इस्कंदरिया की नेव दी, जो अब उच्च कहलाता है। आस पास की रियासतों ने उसकी अधीनता स्वीकार की, इसके उपरांत वह सिंध प्रदेश में होकर नदी की राह से दक्षिण ओर सिंध के मुहाने तक गया। डेलटा की चोटी पर उसने पटाला शहर को नए सिर से बनवाया, जो अब सिंध में हैदराबाद के नाम से प्रसिद्ध है। सिकन्दर पंजाब और सिंध देश में दो वर्ष तक रहा परंतु इसके बीच उसने कोई सूबा फतह नहीं किया, बल्कि उस देश की रियासतों से अहदनामा किया और किले में फौज नियत की। उसने अपने सहायक सर्दारों को बहुत मुल्क देदिया और पश्चिम अफगानिस्तान की सीमा से लेकर पूर्व व्यास नदी तक और दक्षिण में डेल्टा तक जगह जगह सिपाहियों को रक्खा उसने अपनी फौज का एक भाग पारस की खाड़ी के किनारे किनारे रवाना किया और बाकी फौज को बलुचिस्तान और पारस होकर खूदसूसा को लेगया मार्ग में बहुत तकलीफ उठाते हुए सन् ईस्वी के ३२५ वर्ष पहले वह सुसा में पहुँचा। सिकंदर की मृत्यु होने के पीछे सन ईस्वी के ३२३ वर्ष पहले, जब उसका राज्य बाँटा गया तब बलख और हिंदुस्तान का मुल्क सेल्यूकस निकेटर के हिस्से में पड़ा, जिसने शाम का राज्य नियत किया।

जिस समय सिकंदर पंजाब में था, उस समय हिंदुस्तान के बहुत सरदार उसके दरबार में हाजिर रहते थे, उनमें से चंद्रगुप्त नामक सरदार पर किसी कारण से सिकंदर नाराज होगया, तब वह (सन् ईस्वी से ३२६ वर्ष पहले) लश्कर से जान लेकर भाग गया उसके कई एक वर्ष पीछे चंद्रगुप्त ने डाकू और लुटेरों की सहायता से मगधके राजा नन्द को

बरबाद करके ईसा से ३१६ वर्ष पहले एक राज्य नियत किया । उसने नन्द की राजधानी पाटलिपुत्र पर जिसको अब पटना कहते हैं, अधिकार करके गंगा के संपूर्ण मैदान में अपनी हुकूमत कायम की और उत्तर और पश्चिम की यूनानी और देशी रियासतों को अपने अधीन बनाया। सिकंदर के मरने के पीछे जब उसका सेनापति सेल्युकस ११ वर्ष तक शाम के राज्यके प्रबंध में लगा रहा, उसी समय चंद्रगुप्त उत्तरीय हिंदुस्तान में एक राज्य कायम करने में लगा था. इन दोनों का राज्य बढते बढते एक दूसरे से मिल गया। अन्तमें सेल्युकस ने यूनानियों का विजय किया हुआ मुल्क जो काबुल की वादी और पंजाब के मुल्क में था, चंद्रगुप्त के हाथ बेंच डाला और अपनी पुत्री का विवाह भी उससे कर दिया। एक यूनानी एलची सन् ईस्वी के ३०६ वर्ष पहले से २९८ वर्ष पहले तक चंद्रगुप्त के दरबार में तैनात रहा।

सिकंदर के बाद यूनानियों की हिंदुस्तान में कोई बडी विजय नहीं हुई। सेल्युकस के पोते एटियोकस ने सुप्रसिद्ध बौद्ध राजा अशोक से जो चंद्रगुप्तका पोता था, सन् ईस्वी के २५६ वर्ष पहले अहद नामा किया। यूनानियों ने हिमालय के पश्चिमोत्तर बाकटिया में अपना राज्य कायम किया था। १००वर्ष तक यूनानी बादशाह पंजाब पर आक्रमण करते रहे और इनमेंसे कोई कोई सन ईस्वी से१८१ वर्ष पहले से सन्१६१वर्ष पहले तक पूर्व मथुरा और अवध तक और दक्षिण सिंध और कच्छ तक पहुंचे परंतु उन्होंने कोई बादशाहत कायम न की यूनानी लोग सिवाय ज्योतिष और उसदे संगत राशी के हिन्दुस्तान में अपने आने का कुछ निशान नहीं छोड़ गए।

सिदिया वाले सन् ईस्वी के करीब १०० वर्ष पहले से सन् ५०० ईस्वी तक हिंदुस्तान पर आक्रमण करते रहे। सिदियन लोग मध्य एशिया से आए, उनका कोई खास नाम न होने के कारण उनको सिदियन कहते हैं, उनके मोखतलिफ फिरके थे। कहते हैं कि सू नामक एक तातार या सिदियन के फिरके ने सन् ईस्वी के १२६ वर्ष पहले यूनानी खांदान के बेक्ट्रिया के राज्य से जो हिमालय के पश्चिमोत्तर था, निकाल दिया । उसके चंद रोज बाद सदियन लोग पर्वतों के दरों में होकर हिंदुस्तान में आने लगे और उन्होंने उन आबादियों को जो बेक्ट्रिया के युनानियों ने कायम की थी,फतह कर लिया। सन् ईस्वी के आरम्भ में उत्तरीय हिंदुस्तान और उससे आगे के मुल्कों में सिदियनों का एक जबरदस्त राज्य कायम होगया । सिदियनों में कनिश्क बहुत प्रसिद्ध बादशाह था, जिसने सन् ४० ईस्वी में बौद्धों का चौथा जलसा मुकर्रर किया था। उसकी राजधानी काश्मीर था और उसका राज्य दक्षिण में आगरा और सिन्ध से लेकर हिमालय के उत्तर आरकंद और कोहकन्दतक फैला था। इस बड़े अरसे में हिन्दुस्तान के राजाओं ने सिदियनों को अपने मुल्क से निकालने में बड़ी बहादुरी दिखलाई इन में उज्जैन के राजा विक्रमादित्य बहुत प्रसिद्ध हैं, जिन्होने सन् ईस्वी से ५७ वर्ष पहले सिदियनों को परास्त कर के उस बिजय की यादगार में संवत् बांधा, जिससे हिंदुस्तान में वर्ष गिनने की रीति नियत हुई।

सौ वर्ष के पीछे शालवाहन नामक राजा सिदियनों का शत्रु हुआ, जिसके नाम से सन् ७८ ईस्वी में शालवाहन शाका (शक) जारी हुआ, नीचे लिखे हुए हिंदुस्तान के ३ बड़े राजों के वंशधर फिर ५ सदियों तक सिंदियनों से लड़ते रहे। (१) शाह वंशके राजाओं ने सन् ६० ईस्वी से सन २३५ तक बंबई के उत्तर और पश्चिम में और (२) गुप्त-वंश के राजाओं ने सन् ३१९ से सन् ४७० ईस्वी तक अवध और उत्तरीय हिंदुस्तान में राज्य किया और इसके बाद वे सिदियन के नये आए हुए दलों से हार गए। वल्लभी-वंश के राजा सन

४८० से सन् ७२२ ईस्वी के पीछे तक कच्छ, मालवा और बंबई के उत्तर जिलों पर राज्य करते रहे। सरहदी सूबों के निवासियों में अब तक भी बहुत सिदियन हैं । महाभारत और पुराणों में सिदियन लोग 'शक' करके प्रसिद्ध हैं, जिनके सम्बन्ध से बिक्रमादित्य का दूसरा नाम शकारी भी पड़ा था ।

महम्मद साहब ने, जो सन् ५७० ईस्वी में अरब में पैदा हुए थे, एक मजहब जारी किया, जिसकी गरज मुल्कों के विजय करने की थी । सन् ६३२ ईस्वी में उनका देहांत होगया । उसके १५ वर्ष पीछे खलीफा उसमान ने दरियाई फौज अरबसे बंबई के किनारेकी ओर थाना और भड़ौच को भेजी । इसके अलावे अरब के मुसलमानों ने सन् ६६२ और ६६४ ईस्वी में हिन्दुस्तान पर आक्रमण करके लूट मार की, परन्तु उन आक्रमणों से कोई नतीजा नहीं निकला । हिन्दुस्तान के लोगों ने हिंदुस्तान के बंदरगाह में जब अरब के लोगोंका एक जहाज लूट लिया, तब अरब के महम्मद कासिम ने सन् ७१२ ईस्वी में सिन्ध देश पर आक्रमण किया । वह उस देश पर विजय प्राप्त करके सिन्ध नदीके दर्रे में रहने लगा; जो सन् ७१४ ईस्वी में मरगया । लोग ऐसा भी कहते हैं कि राजपूतों ने सन् ७५० में मुसलमानों के सूबेदार को निकाल दिया था, परन्तु सिन्ध के मुल्क पर सन् ८२८ ईस्वीतक हिन्दुओं की दोबारा हुकूमत नहीं होने पाई थी ।

मुसलमानों के विजय के पहले हिंदुस्तान के हिंदू सरदारों के मुल्कों में फौजी इंतजाम बहुत अच्छा था, जिसके कारण मुसलमान लोग आगे नहीं बढ सके । विन्ध्याचल पहाड़ के उत्तर ३ राजे हुकूमत करते थे । पश्चिमोत्तर सिंध नदी के मैदानोंमें और यमुना के ऊपर के भाग के मुल्कों में राजपूत लोग हुकूमत करते थे और मुल्कका वह भाग, जिसको पूर्व काल में मध्यदेश कहते थे, बलवान राज्यों में बटा हुआ था और इन सबका हाकिम कन्नौज का राजा था, बिहार से लेकर नीचे तक गंगा के नीचे दर्रे में पालयानि बुद्ध खांदान के राजा लोग कहीं कहीं राज्य करते थे । विन्ध्याचल पहाड़ के उत्तर और दक्षिण के दोनों हिस्सों के पूर्वी और बिचली जमीन में पहाड़ी और जंगली लोग रहते थे, उनके पश्चिम ओर मालवा का हिन्दू राज्य था, वहां बडे बड़े जागीरदार वर्तमान थे । विन्ध्याचल पर्वत के दक्षिण द्राविड़ में बहुत लंकाके राजा थे, जो पांडिया चोला और चेराखांदान के आधीन हुकूमत करते थे, पांडिया अर्थात् पांड्य राज्य की राजधानी मदरास हाते में मदुरा थी । यह राज्य सन् ईस्वी से पहले चौथी सदी में कायम हुआ था, जिसको सन् १३०४ ई० में मुसलमान मलिक काफूर ने बरबाद किया, चोला की राजधानी 'काम्बेकोनम्' और चेरा की राजधानी तालकंद थी, जिसमें सन् २८८ ई० से सन् ९०० ई० तक चेरा खांदान के लोग राज्य करते रहे । अब वह शहर मैसूर राज्य में कावेरी नदी के बालू में ढक गया है ।

लाहौर के राजा जयपाल ने सन् ९७७ ईस्वी में अफगानों की लूटसे तंग होकर अफगानिस्तान के अंतरगत गजनी की बादशाहत पर आक्रमण किया । गजनी—खांदान के शाहजादे सुबुकतगीने बड़ी लड़ाई के पश्चात् उसको परास्त किया. तब वह १० लाख दिरहम अर्थात् ढाई लाख रुपये देने का वादा करके अपनी फौज के साथ लौट आया, उसके पश्चात् जब राजा ने सुबुकतगी को दिरहम नहीं दिया, तब उसने हिंदुस्तान में आकर जयपाल को फिर परास्त किया और पेशावर के किले में एक अफसर के अधीन १० हजार सवार तैनात किया । सन् ९९७ ईस्वी में सुबुकतगी के मर जाने पर उसका १६ वर्ष का पुत्र महमूदगजनी के तख्त

पर बैठा, जिसने सन् १०० ईस्वी से हिंदुस्तान पर १७ बार आक्रमण किया था। इनमें से १३ हमले पंजाबके अनेक शहरों के विजय करने के लिये हुए थे, परन्तु कश्मीर के आक्रमण में उसकी विजय नहीं हुई और बाकी ३ हमले जो कन्नौज, ग्वालियर और सोमनाथ, दूर के शहरों पर हुए, वे बहुत बड़े थे। प्रत्येक हमलोंमें मुसलमानों का कब्जा हिंदुस्तान पर बढ़ताही गया। महमूद थानेसर, नगर कोट कोट और सोमनाथ के मन्दिरोंसे बहुत दौलत लेगया। उसका सोलहवां हमला जो सन् १०२४ ईस्वी में गुजरात सोमनाथ पर हुआ था। बहुत प्रसिद्ध है। १७ हमलों का नतीजा यह हुआ कि पंजाब के पश्चिम के शहर गजनी के राज्यमें मिला लिए गए महमूद गजनवी ने हिंदुस्तानमें रह कर बादशाहत करने की इच्छा कभी नहीं की थी, वह सन् १०३० ईस्वी में मरगया, उसके बाद के गजनी के बादशाहों के अधीन करीब १५० वर्ष तक पंजाब मुसलमानों के राज्य का सूबा बना रहा।

गोर और गजनी जो अफगानों के २ शहर हैं इनमें बहुत दिनों से दुश्मनी चली आती थी। सन् १०१० ईस्वी में महमूद गजनवी ने गोर को जीता था, परंतु सन् १०५२ में गोर ने गजनी को लेलिया और खुसरो, जो महमूद की नसल का पिछला बादशाह था, भागकर अपने हिंदुस्थान के राज्य की राजधानी लाहौर में छिपा, परंतु सन् ११८६ ईस्वी में यह मुल्क भी उसके हाथ से निकल गया और गोरियों का सरदार शहाबुद्दीन जो महम्मद गोरी के नाम से अधिक प्रसिद्ध है, हिन्दुस्तान को फतह करने लगा।

सन् ११९१ ईस्वी में महम्मद गोरी ने दिल्ली पर आक्रमण किया, जो थानेसर में हिंदुओं से परास्त हुआ और कठिनता से लडाई के मैदान से जान लेकर भागा, परंतु उसने लाहौर में पहुंच कर अपने छितर बितर सिपाहियों को फिर इकट्ठा किया और मध्य एशिया से नई फौज की सहायता पाकर सन् ११९३ ईस्वी में फिर हिंदुस्तान पर चढाई की। चौहान राजपूत पृथ्वीराज अजमेर और दिल्ली का राजा था और राठौर राजपूत जयचंद कन्नौज में राज्य करता था। उस समय राजपूत राजाओं में परस्पर एका न था, इस कारण वे लोग इकट्ठे होकर महम्मदगोरी से नहीं लड सके। कन्नौज के राजा जयचंदकी दिल्लीके राजा पृथ्वीराज से दुश्मनी थी, इस लिये वह दिल्ली पर आक्रमण करने के लिये अफगानों को दिल्ली पर चढा लाया। पृथ्वीराज और महम्मदगोरी से दृषद्वती नदी के किनारे पर बडा संग्राम हुआ, अंत में पृथ्वीराज मारा गया। दिल्ली पर मुसलमानों का अधिकार हुआ। इसके पश्चात् सन् ११९४ ईस्वीमें महम्मद गोरीने कन्नौजके राजा जयचंदको परास्त किया राजा मारागया। यूथ के यूथ कन्नौज के राठौर राजपूत और उत्तरी हिंदुस्तान के दूसरे राजपूत अपने अपने देश को छोड कर उस देश में चले गए, जो सिन्ध नदी के पूर्वी रेगिस्तान से मिला है। वहां जाकर उन्हों ने लडने की जगहों की नेव दी, जो अब तक राजपूताने के नाम से प्रसिद्ध है।

महम्मद गोरी खुद बनारस और ग्वालियर तक गया, उसके सेनापति बख्तियार खिलजी ने सन् ११९९ में बंगाले को डेल्टा तक लेलिया। महम्मद गोरी कभी अफगानिस्तान में लड़ता था और कभी हिन्दुस्तान पर हमला करता था। उसको ऐसा सावकाश नहीं मिलता था कि वह अपने विजय किए हुए हिंदुस्तानके मुल्कोंका प्रबंध करे; वह संपूर्ण उत्तरी हिन्दुस्तान को सिंध नदी के डेल्टा से लेकर के गंगा के डेल्टा तक अपने सिपहसालारों के हवाले करके अपने देश को चला गया। सन् १००६ में उसके मरने के बाद उसके सिपहसालारों ने अपने अपने आधीनके देशोंपर अपना अपना अधिकार कर लिया। कुतबुद्दीन दिल्लीका बादशाह बन गया।

दिल्लीके मुसलमान बादशाह,—सन् १२०६ से १८५७ ई० तक।

नंबर	बादशाह	बादशाह के पिता	जाति	राज्य आरंभ सन् ई०	विवरण
१	कुतबुद्दीन ऐबक	०	गुलाम	१२०६	यह शहाबुद्दीन महम्मद गोरी का गुलाम था। इसने दिल्ली के निकट 'कुतबुल इसलाम' मसजिद बनवाई।
२	आरामशाह	कुतबुद्दीनऐबक	,,	१२१०	इसको १ वर्ष के भीतरही अल्तमश ने गद्दी से उतार दिया।
३	शमसुद्दीन अल्तमश	०	,,	१२११	यह कुतबुद्दीन का दामाद था। इसके राज्य के समय बंगाल, मुलतान, कच्छ, सिंध, कन्नोज, बरार, मालवा और ग्वालियर दिल्ली के राज्य में मिल गए थे।
४	रुकनुद्दीन फीरोज़ शाह	शमसुद्दीन अल्तमश	,,	१२३६	यह ७ महीने तख्त पर रहा। इसको लोगों ने गद्दी से उतार दिया।
५	रजिया बेगम	तथा	,,	१२३६	यह हबसी गुलाम से प्रीति रखती थी, इस कारण सरदारों ने इसको मार डाला।
६	बहराम शाह	तथा	,,	१२४०	यह बड़ा मूर्ख था, लोगों ने इसको कैद कर लिया।
७	मसऊदशाह	फीरोज़शाह	,,	१२४२	यह बहरामशाह का भतीजा था, जिसको लोगों ने मार डाला।
८	नासिरुद्दीन महमूद	०	,,	१२४६	यह मसऊद का चचा था।
९	गयासुद्दीन बलबन	०	,,	१२६६	यह नासिरुद्दीन का बहनोई था। इसने मेवात के लाख राजपूतों के सिर काट डाले और दुश्मनोंको दबाया।
१०	कैकुबाद	कुराखां	,,	१२८७	यह बलबन का पोता था। दुश्मनों ने जहर देकर इसको मार डाला।
१	जलालुद्दीन फीरोज़ शाह	०	खिलजी पठान	१२९०	यह सीधा था। इसके राज्य के समय मालवा और उज्जैन जीता गया। अलाउद्दीन ने इसको मार डाला।

२	अलाउद्दीन	०	,,	१२९६	यह जलाउद्दीन का भतीजा था, जो अपने चाचाको मार गद्दी पर बैठा। यह बड़ा निर्दयी था। इसने गुजरात और देवगढ़ को जीता। तथा सख्तीसे अपना राज्य बढाया।
३	मुबारकशाह	अलाउद्दीन	,,	१३१६	इसको खुसरो खां ने मार डाला।
४	खुसरोखां	०	,,	१३२१	इसने मुबारक शाह को मार कर चार महीने सिका चलाया। यह हिंदू से मुसलमान हो गया था।
१	गयासुद्दीन तुगलक	०	तुगलक	१३२१	इसने दिल्ली और कुतबमीनार के बीच में तुगलकाबाद का किला बनवाया।
२	महम्मद आदिल तुगलक	गयासुद्दीन	,,	१३२५	इसने दिल्ली के निकट आदिलाबाद बसा कर वहां एक किला बनवाया।
३	फीरोजशाह	महम्मद आदिल	,,	१३५१	इसने अनेक धर्मार्थ काम किए और फीरोजाबाद शहर को बसाया।
४	गयासुद्दीन तुगलक दूसरा	फिरोजशाह	,,	१३८८	यह ५ महीने राज्य करने के पश्चात् मारा गया।
५	अबूबकरशाह	फिरोज़शाहकापो०	,,	१३८९	यह कैद में मरा।
६	नासिरुद्दीनमहम्मद	तथा	,,	१३९०	
७	हुमायू सिकंदरशाह	नासिरुद्दीन	,,	१३९३	केवल ४५ दिन बादशाह रहा।
८	महमूदशाह	हुमायूसिकंदरशाह	,,	१३९३	
९	नसरतशाह	बरामदखां	,,	१३९५	
१०	महमूदशाहदूसरी बार	०	,,	१४००	
११	दौलत खांलोदी	महमूदखां	,,	१४१३	
१	खिजिरशाह	मलिक सुभान	सैयद	१४१४	यह दिल्ली में तख्त पर बैठा और वहांही मरा।
२	मुबारकशाह दूसरा	सिजिरशाह	,,	१४२१	यह दिल्ली में तख्त पर बैठा और वहांही मारा गया।

नंबर	बादशाह	बादशाह का बाप	जाति	राज्य आरंभ सन् ई०	विवरण
३	महम्मदशाह	फरीदखां	,,	१४३४	यह खिजिरशाह का पोता था, जो दिल्ली में तख्त पर बैठा और वहांही गाड़ा गया।
४	आलमशाह	महम्मदशाह	,,	१४४५	इसके समय दिल्ली का राज्य नाम मात्र रह गया था। यह बहलोल लोदी को दिल्ली का राज्य दे कर कमाऊं चला गया और मरने पर वहांहीं गाड़ा गया।
१	बहलोल लोदी	कालाबहादुर	लोदी	१४५१	यह अफगान था, जिसने राज्य को बहुत बढ़ाया, मरने पर यह दिल्ली में गाड़ा गया।
२	सिकंदरलोदी	बहलोललोदी	,,	१४८९	यह जलाली कसबे में राज्य पर बैठा, और मरने पर दिल्ली में गाड़ा गया।
३	इब्राहिमलोदी	सिकंदरलोदी	,,	१५१७	यह दिल्ली में राज्य पर बैठा, आगरे में रहता था और मारे जाने के पश्चात् पानीपत में गाड़ा गया।
१	बाबर	उमरशेख मिर्जा	मुग़ल	१५१६	यह तातारी था। इब्राहिम लोदी को पानीपत में परास्त कर के दिल्ली का बादशाह बना।
२	हुमायू	बाबर	,,	१५३०	शेरशाह ने सन १५४० में इसको खदेर दिया।
	शेरशाह	हसनखां	अफगान	१५४०	यह बंगाले की ओर सुलतांपुर में राज्य पर बैठा और सन् १५४० में हुमायू को खदेर कर दिल्ली में राज्य करने लगा, जो कालिंजर में मारा गया और सहसराम में गाड़ा गया।
	इसलामसाह उपनाम जलालखां नामांतर सलीम शाह	शेरशाह	,,	१५४५	यह कालिंजर के किले के नीचे बादशाह बनाया गया, और मरने पर सहस राम में दफन किया गया।

१	फीरोज़शाह	इसलामशाह	अफगान	१५५३	यह दिल्ली में गद्दी पर बैठा । इसके मामा ने इसको मार डाला ।
	मुहम्मदआदिलशाह	निज़ामखां	,,	१५५३	यह दिल्ली में तख्त पर बैठा ।
	सुलतानइब्राहिमसूर	०	,,	१५५४	यह शेरशाह का चचेरा भाई था, जो दिल्ली में तख्त पर बैठा ।
	सिकंदरशाह	हुसैन	,,	१५५५	यह शेरशाह का चचेरा भाई था ।
२	हुमायूँ दूसरीबार	बाबर	मुगल	१५५५	यह दूसरी बार हिंदुस्तान में आकर शेरशाह की संतान को परास्त करके आगरे में तख्त पर बैठा, और ६ मास दिल्ली के राज्य करने के उपरांत सन १५५६ के जनवरी में सीढ़ी से गिर कर मर गया और दिल्ली में गाड़ा गया।
३	अकबर	हुमायूं	,,	१५५६	अकबर १३ वर्ष की अवस्था में गद्दी पर बैठा और लगभग ५० वर्ष तक राज्य करता रहा । इसने हिंदुस्तान में बहुत बड़ा मुगल राज्य कायम कर दिया । यह हिंदू और मुसलमान दोनों से समान बर्ताव करता था । इसके समान प्रतापी और चतुर भारत वर्ष के मुसलमान बादशाहों में कोई नहीं हुआ है । अकबर आगरे में रहता था । और मरने पर सिकंदरे में दफन किया गया।
४	जहांगीर	अकबर शाह	,,	१६०५	यह आगरे में गद्दी पर बैठा, इसके राज्य के समय राज्य की बढ़ती नहीं हुई । यह मरने पर लाहौर के निकट शाहदरे में गाड़ा गया ।
५	शाहजहां	जहांगीर	,,	१६२८	इसके राज्य के समय कंधार का सूबा मुगल–राज्य से अलग हो गया, परन्तु इसने दक्षिण में राज्य बढ़ाया और उत्तरी हिंद में बेजोड़ आलीशान इमारतें बनवाईं । सन १६५८ ई० में इसके पुत्र औरंगजेब ने इसको कैद

नंबर.	बादशाह	बादशाह का बाप	जाति	राज्य आरंभ सन् ई०	विवरण
					कर लिया । सन १६६६ में यह आगरे में मरा और ताजमहल में गाड़ा गया ।
६	औरंगजेब	शाहजहां	"	१६५८	इसने अपने बाप को कैद किया, अपने भाइयों को मार डाला, हिन्दुओं को बहुत सताया और उनके बहुतेरे देव मंदिरों को तोड़ दिया । इसके राज्य के सम दक्षिण के अनेक राज्य फतह हुए और मुगल–राज्य का सबसे अधिक फैलाव हुआ था । यह दक्षिण के अहमद नगर में मरा और औरंगाबाद में गाड़ा गया ।
७	आजमशाह महम्मद शाहिद	औरंगजेब	"	१७०७	औरंगजेब के मरतेही सिक्ख, राजपूत और महाराष्ट्रों ने दिल्ली के राज्य को हर तरफ से दबाना आरंभ किया । आजमशाह दुश्मनों के हाथ से मारा गया ।
८	बहादुरशाह उपनाम शाह आलम पहला	औरंगजेब	मुगल	१७०७	आज़मशाह का भाई मुअजिम बहादुरशाह की पदवी से गद्दी पर बैठा ।
९	जहांदारशाह	बहादुरशाह	"	१७१२	यह फर्रुखसियर की बगावत में मारा गया ।
१०	फर्रुखसियर	अज़ीमउल–शा (बहादुरशाहका बेटा)	"	१७१३	इसके राज्य के समय कुल राजपूताना मुगल राज्य से अलग हो गया दो सैयदों ने सन १७१९ में इस को मार डाला ।
११	महम्मदशाह	जहांदार शाह	"	१७२०	महम्मद शाह के राज्य के पहले लगभग एक वर्ष में ४ बादशाह हो चुके थे । इसके राज्यके समय मुगलों का राज्य बहुत घट गया और नादिरशाह ईरानी ने दिल्ली में आम कतल करवाया ।

१२	अहमद शाह	महम्मदशाह	”	१७४८	इसके राज्य के समय महाराष्ट्रों ने सूबा उड़ीसा और बंगाल को और अहमद शाह दुर्रानी ने पंजाबको लेलिया अंतमें यह गद्दी से उतार दिया गया।
१३	आलमगीरदूसरा	मगरुद्दीन जहांदार शाह	”	१७५४	इसके राज्य के समय अहमदशाह दुर्रानी के हमलों से दिल्ली गारत हो गई और दिल्ली पर महाराष्ट्रोंका अधिकार हुआ। बादशाह को उसके वजीर ने मार डाला।
१४	शाहआलम दूसरा	आलमगीर दूसरा	”	१७५९	यह महाराष्ट्रों के आधीन केवल नाम का बादशाह था अंगरेजों ने सन १८०३ ई० में शाह आलम और दिल्लीको सिंधिया से ले लिया।
१५	अकबर दूसरा	शाहआलमदूसरा	”	१८०६	यह अंगरेजों के आधीन नाम का बादशाह रहा।
१६	महम्मद बहादुरशाह	अकबर दूसरा	”	१८३७	यह मुगल खांदान के अंतका बादशाह था, जिसको अंगरेजी सरकारकी ओर से ८० हजार रुपये मासिक पेंशन मिलती थी। यह सन १८५७ के बलवे में बागी होने के कारण कैद कर के रंगून भेजा गया, जो सन १८६२ ई० में वहांही मर गया।

११

दक्षिण मदरास हाते के मुदरा शहर में पांड्य वंश के राजाओं ने ईसा से ४०० वर्ष पहले से सन् १३०४ ईस्वी तक ११६ पुश्त तक राज्य किया, जिस (राज्य) को अलाउद्दीन के सेनापति मलिक काफूर ने बिनाश किया था। उसके पश्चात् बहुत से हिंदू राजे अठारहवीं शताब्दी तक पांड्य के राज्य पर लगातार राज्य करते रहे। चोला वंश के राजाओं ने ६६ पुस्त तक राज्य किया, जिनकी राजधानी प्रथम काम्बेकोनम और पीछे तंजोर थी। पीछे बिजया नगर के एक नायक ने तंजोर पर हुकूमत की। शिवाजी के भाई बंकाजीने सन् १६५६ और १६७५ ई० के दरमियान तंजोर को लेलिया। चेरा वंश के राजागण सन् २८८ से सन् ९०० तक ५० पुस्त तक राज्य करते रहे. जिनकी राजधानी मैसूर के राज्य में तालकंद शहर था, जो अब बालू में ढक गया है। एक हिंदू राजाके वंशधरों ने बलारी जिले के विजय-नगर में सन् १११८ से सन् १५६५ ई० तक राज्य किया, जिसको दक्षिण के मुसलमान बादशाहों ने मिल कर तिलीकोट की लडाई में परास्त कर दिया। बहमनी खांदान के मुसलमानों ने सन् १३४७ से सन् १५२५ ई० तक क्रमसे गुलबर्गा, वारंगल और बीदर में राज्य किया। उनके अधीन करीब करीब वही मुल्क था, जो अब निजाम हैदराबाद के अधिकार में है।

दक्षिण के (पीछे के) ५ मुसलमानी राज्य—(१) इमादशाही खांदान के राजाओं ने, जिनकी राजधानी बरार देश का एलिचपुर था, सन् १४८४ से सन् १५७४ ई० तक राज्य किया। वह राज्य पीछे अहमद नगर के राज्य में मिल गया। (२) अहमदनगर में निजा-मशाही खांदान का राजा राज्य करता था, जिसको सन् १६३६ ई० में बादशाह शाहजहां ने लेलिया। (३) आदिलशाही खांदान के राजाओं ने सन् १४८९ से १६८८ ई०तक बीजापुर में राज्य किया। औरंगजब ने उस राज्य को लेलिया। (४) कुतबशाही खांदान के राजा सन् १५१२ से सन् १६८८ तक गोलकुंडा में राज्य करते रहे। इस राज्य को भी औरंगजेब ने छीन लिया। (५) बरीदशाही खांदान के राजाओं ने सन् १४९८ से सन् १६०९ ई० के पीछे तक बीदर में राज्य किया। औरंगजेब ने सन् १६५७ ई०में बीदर के किले को सर किया था।

बंगाले का सूबेदार फकीरुद्दीन सन् १३४० ई० में दिल्ली राज्य की तावेदारी छोड कर बादशाह बनगया। उसने गौड को अपनी राजधानी बना कर अपने नाम का सिक्का चलाया। बंगाल के २० बादशाहों ने सन् १५३८ ई० तक राज्य किया था। गुजरात का सूबा सन् १३७१ ई० में मुसलमानी राज्य होगया। मालवा प्रदेश को, जो मुसलमान हाकिम के अधीन स्वतंत्र होगया था, सन् १५३१ ई० में गुजरात के बादशाह ने अपने राज्य में मिला लिया। अकबर ने सन १५७३ ई० में गुजरात को जीता। जौनपुर. जिसके अधीन बनारस की अमलदारी भी थी, सन् १३९३ से १४७८ ई० तक मुसलमानी राज्य रहा।

महाराष्ट्रों का वर्णन—सन् १६३४ ई० के लगभग शाहजी भोंसला दक्षिण भारत में प्रसिद्ध होने लगा। वह अहमदनगर और बीजापुर की मुसलमानी रियासतों की ओर से मुगलों के साथ लड़ता था। उसकी मृत्यु होने पर उसका पुत्र शिवाजी, जिसका जन्म सन् १६२७ ई० में था, उसकी जागीर का मालिक हुआ। शिवाजी ने दक्षिण के हिंदुओं को इकट्ठा करके एक कोमी जमायत बनाई, जिसको उत्तर की बादशाही फौज से और दक्षिण की मुसलमानी रियासतों से शत्रुता थी। दक्षिण के स्वतंत्र मुसलमानी राजालोग

और औरंगजेब परस्पर लड कर निर्बल होने लगे थे, शिवाजी ने सन् १६५९ ई० में बीजापुर के सिपहसालार को धोखा देकर मारडाला और सन् १६६४ तक बंबई हाते की उत्तरीय सीमा तक देश को लेलिया। सन् १६६४ में उसने राजा की पदवी लेकर अपने नाम का सिक्का जारी किया और सन् १६७४ में रायगढ में गद्दी पर बैठ कर कर्नाटक तक अपनी फौज भेजी। सन् १६८० ई० में शिवाजी के देहांत होने पर उसका पुत्र शंभाजी उत्तराधिकारी हुआ, जिसको सन् १६८९ में औरंगजेबने परास्त करके मारडाला और उसके शिशु पुत्र शाहूजीको कैद रक्खा। सन् १७०७ में औरंगजेबके मरनेपर शाहूजी दिल्ली को तावेदारी कबूल करके अपने बापकी रियासत पर बहाल हुआ। उसने अपनी रियासतका प्रबंध अपने दीवान बालाजी विश्वनाथ को पेशवा की पदवी के साथ सुपुर्द करदिया, जो स्वतंत्र होगया।

सन् १७२० ई० में बालाजी पेशवा ने दक्षिण की मालगुजारी पर चौथ हासिल की। पूना और सितारा के चारों ओर के देश का राज्य महाराष्ट्रों को पक्के तौर से मिल गया। दूसरे पेशवा बाजीराव ने सन् १७३६ में मालवा पर अपना अधिकार कर लिया और सन् १७३९ में पुर्चगीजों से बसीन का किला जीतलिया। तीसरे पेशवा बालाजी बाजीराव के समय में महाराष्ट्रों का भय संपूर्ण मुगल-राज्य में फैल गया। महाराष्ट्रों के एक यूथ के सरदार नागपुर के राघोजी भोंसले ने सन् १७४३ में बंगाल पर चढाई की। गंगा की बादी के उपजाऊ सूबों में भोंसला बराबर लूट पाट करता रहा। पूना के महाराष्ट्रों ने उत्तरी भारत को पंजाब तक लूटा।

सन् १७६१ ई० से पहले चौथे पेशवा माधवराव के राज्य के समय सिंधिया और हुलकर दो और महाराष्ट्र मुगलों के पुराने सूबे मालवा और उसके चारों ओर के देश में स्वतंत्र राजा बन गए। उसी समय गायकवार ने बड़ौदा में अपना राज्य नियत लिया। सन् १७६१ में महाराष्ट्रों के पानीपत में परास्त होने के पीछे कुछ दिनों तक सिंधिया और हुलकर चुप रहे परंतु उसके १० वर्ष के भीतरही उन्होंने मालवा के कुल सूबों को लेलिया और राजपूत जाट और रुहेलों के सूबों पर पश्चिम में पंजाब से लेकर पूर्वमें अवधतक (सन् १६६१ से १६७१ तक) वे चढाई करते रहे। सिंधिया और हुलकर ने सन् १७७१ में दिल्ली के बादशाह शाहआलम को दिल्ली के राज्य पर नाम के लिये बहाल किया, परंतु वास्तव में सन् १८०३-४ ई० तक वह उनका कैदी बना रहा।

नागपुर के भोंसला ने सन् १७५१ ई० में बंगाल से चौथ मालगुजारी तहसीली और सूबे उडीसा का दक्षिणी भाग अपने अधीन करलिया, परंतु जब सन् १७५६ और१७६५के बीच में बंगाल पर अंगरेजी अधिकार होगया तब महाराष्ट्रों की चढ़ाई बंद हुई। सन् १८०३ ई०में अंगरेजों ने महाराष्ट्रों को सूबे उडीसा से निकाल दिया।

बड़ोदा के गायकवार ने गुजरात, बंबई के पश्चिमोत्तर किनारे पर और काठियावार में अपना राज्य फैलाया।

अंगरेजों का वृत्तांत–पोर्चुगीज और फ्रांसीस युरोपियन हिंदुस्तान में आए. उनका वृत्तांत गोआ और पांडीचेरी में लिखा गया है। अंगरेज मसाले के टापुओं से हिन्दुस्तान में आए, उन्होंने पहले पहल कारोमंडल के किनारे पर बस्तियां कायम की। सन् १६१० ई०में उनकी एक आढ़त मछली बंदर में नियत हुई। सन् १६३९ में अंगरेजों ने चंद्रगिरि के राजा

से मद्रासपट्टन खरीदकर सेंटजार्ज किला बनवाया। कई एक वर्ष तक तो मद्रास जावा टापू के बांटम शहर के अधीन रहा. परंतु सन् १६५३ में वह एक अलग सदर मुकाम बनाया गया। सुरत और अहमदाबाद की अंगरेजी कोठियां सन् १६१५ में कायम हुई थीं। सन् १६६१ में पोर्चगीज के बादशाह ने बंबई का टापू अंगरेजों को दहेज में देदिया। सन्१७४० में हुगली की कोठी और सन् १८४२ में बालासोर की कोठी कायम हुई। सन्१६४५ में एक जहाज का सर्जन गेबियल बोटन ने बादशाह शाहजहां से अपनी खिदमत के बदले में कंपनी के लिये तिजारत का संपूर्ण हक हासिल किया। सन १६८१ में बंगाल की कोठियां मद्रास की कोठियों से अलग कर ली गई। सन् १६८६ में, जब बंगाले के नवाब शाइस्ताखां ने हुक्म दिया कि अंगरेजों की बंगाल की कुल कोठियां जब्त कर ली जांय, तब हुगली के अंगरेज सौदागर सतानती को चले गए। वहां उन्होंने फोर्ट विलियम किले की नेवदी और सन् १७०० ई० में औरंगजेब के बेटे आजम से सतानती, कालीकट और गोविंदपुर, इन तीन गावों को खरीदा, जो अब कलकत्ते के हिस्से हैं।

सन् १७०७ ई० में औरंगजेब के मरतेही संपूर्ण दक्षिणीहिंद दिल्ली के राज्य से अलग होगया। निजामुलमुल्क, आर्कट का नवाब, त्रिचना पल्ली का राजा, मैसूर, का राजा इत्यादि सब स्वतंत्र बन गए।

सन् १७४६ में फ्रांसीसियों ने अंगरेजों से मद्रास छीन लिया था, परंतु सन् १७४८में एक अहद नामे के अनुसार वह फिर अंगरेजों को मिल गया। सन् १७६० से सन् १८०३ई० तक अंगरेजों ने फ्रांसीसियों से कई वार पांडीचेरी को छीन लिया था, परंतु सन १८१७ में उनको लौटा दिया तबसे वह उनके कब्जे में है।

सन् १७५७ ई० में अंगरेजों ने बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को परास्त किया और मीर जाफर को मुर्सिदाबाद के नवाब की गद्दी पर बैठाया। उन्होंने इस कारवाई के लिये बादशाही फरमान हासिल किया। उस अरसे में नवाब ने कलकत्ते की चारो ओर की जिमीदारी जो अब चौबीस परगने का जिला कहलाता है, इष्टइन्डियन कंपनी को देदी। उसके पीछे दिल्ली के बादशाह ने कंपनी के अफसर क्लाइव को सरकारी महसूल भी माफ कर दिया। पीछे चौबीस परगना कम्पनी की दायमी मिलकियत होगई।

सन् १७६१ में अंगरेजों ने मीरजाफर को गद्दी से उतार कर उसके दामाद मीर कासिम को मुर्शिदाबाद की गद्दी पर बैठाया। इस कार्रवाइ से अंगरेजों को बर्द्वान, चटगांव और मेदनीपुर, इन तीन जिलों की माफी मिली, जिसकी सालाना तहसील ५० लाख रुपये की थी। उसके पश्चात् मीर कासिम ने अंगरेजों की हुकूमत से छुटकारा पाने के लिए मुंगेर में फौज दुरस्त की और अवध के नवाब वजीर को मिला कर अंगरेजों से लड़ने का सामान किया। सन् १७६३ में तमाम सूबे में फसाद फैल गया। अंगरेजों के दो हजार हिंदुस्तानी सिपाही पटने में काट डाले गए। मुसलमानों ने दो सौ अङ्गरेजों को, जो उस सूबे में मिले, काटडाला। पीछे अङ्गरेजों ने घेरिया और उधानाला की दो बड़ी लाड़ाइयों में मीर कासिम की फौज को परास्त किया। मीर कासिम अवध के नवाब के पास भाग गया। अवध के नवाब सुजाउद्दौला ने पटने को धमक दी। सन् १७६४ ई० में अंगरेजों ने बक्सर की लड़ाई म नवाब को परास्त किया।

सन् १७६५ में अंगरेजों ने नवाब सिराजुद्दौला को अवध का सूबा दे दिया और नवाब ने उनको लड़ाई का खर्च ५० लाख रुपये देने का इकरार किया और अंगरेजों ने दिल्ली के बादशाह शाहआलम को इलाहाबाद और कोड़ा के सूबे देकर उसके बदले में सूबे बंगाल, बिहार और उडीसा की दीवानी अर्थात् माल का इन्तजाम और उत्तरी सरकार का मुल्की इन्तजाम बादशाह से लेलिया। नवाब मीर कासिम केवल नाम के लिये मुर्शिदाबाद में रक्खा गया और उसको कंपनी की ओर से ६० लाख रुपये सालाना मिलने लगा। इस रकम का आधा बादशाह को बतौर कर के बंगाल से दिया जाता था। कंपनी के गवर्नर क्लाइव ने सन् १७६६ में, जब एक नाबालिग को नवाब की गद्दी पर बैठाया, तब उसकी पेंशन ६० लाख से ४५ लाख रुपये कर दी और सन् १७६९ में, जब दूसरे नाबालिग को नव्वाब बनाया; तब ४५ लाख से ३५ लाख रुपया कर दिया। सन् १७७२ ई० में क्लाइब की जगह वारेन हेस्टिंग्ज बंगाल का गवर्नर हुआ, उसने नाबालिग नवाब की पेंशन आधी कम कर दी।

सन् १७७३--१७७४ में हेस्टिंग्ज ने इलाहाबाद और कोड़े के सूबों को अवध के नव्वाब के हाथ बेंच दिया। उस समय दिल्ली का बादशाह महाराष्ट्रों के आधीन था, इस लिये हेस्टिंग्ज ने कर के ३८ लाख रुपये उनको देने से इनकार किया।

अंगरेजों से महाराष्ट्रों की पहली लड़ाई सन् १७७८ से १७८१ तक हुई। सन् १७८१ में सलबई के अहदनामें से अङ्गरेजों को सिलसट, एलीफेंट के और २ दूसरे टापू मिले।

उसी समय मैसूर के हैदर अली की फौज ने कर्नाटक के पालीलूर में अङ्गरेजी लशकर के एक मजबूत हिस्से को कतल कर डाला और मैसूर के सवार मदरास के निकट तक लूट पाट करते रहे। हेस्टिंग्ज ने अपनी फौज भेजी, लड़ाई जोर शोर से जारी रही, सन् १७८२ में हैदरअली मर गया, अन्त में उसके बेटे टीपू से सन् १७८४ में मेल हुआ। दोनों ओर से अपनी अपनी जीत लौटा दी गई। मैसूर की दूसरी लड़ाई सन् १७९० से सन् १७९२ तक होती रही, उस समय दक्षिण के निजाम और महाराष्ट्रों के यूथ अङ्गरेजों के मददगार थे। आखिरकार टीपू ने ३ करोड़ रुपया लड़ाई का खर्च और अपना आधा राज्य अङ्गरेजों और उनके मददगारों को देकर सुलह कर लिया। सन् १७९९ में मैसूर की तीसरी लड़ाई हुई, उसमें भी हैदराबाद के निजाम और महाराष्ट्रों की सेना अङ्गरेजों की सहायक थी, टीपू सुलतान थोड़ा मुकाबिला करके श्रीरंगपट्ट को लौट गया, जब उसकी राजधानी पर आक्रमण हुआ, तब वह बड़ी बहादुरी से लड़ कर मारागया। अङ्गरेजों ने उसराज्य के बीच का हिस्सा, जो मैसूर का पुराना राज्य था, मैसूर राज वंश के एक हिंदू नाबालिग को देदिया और बाकी राज्य निजाम, महाराष्ट्रों और अङ्गरेजों में बाँटा गया। उसी जमाने में तंजोर का राज्य और हिंदुस्तान के दक्षिण पूर्व का भाग; जो आर्कट के नव्वाब के हाथ में था, अङ्गरेजी सरकार के हाथमें आया। अठारहवीं सदी के समाप्त होने के पहलेही अङ्गरेजों का राज्य समुद्र से बनारस तक पक्का होगया। सन् १८०१ में लखनऊ के अहदनामे के अनुसार गंगा और यमुना के बीच की उपजाऊ भूमि रुहेलखंड के साथ अङ्गरेजों के हाथ में आगई।

सन् १८०० ई० में पेशवा, गायकवाड़, भोसला, सिंधिया और हुलकर ये ५ महाराष्ट्रों के बड़े सरदार थे, जो पूना के पेशवा को अपने यूथ का सरदार मानते थे। सन् १८०२ में

हुलकर ने जब पेशवा को परास्त किया, तब उसने भाग कर अङ्गरेजी राज्य में पनाह ली और मदद देने वाली फौज के खर्च के लिये कई एक जिले अंगरेजों को देदिये। सन् १८०२ से सन् १८०४ ई० तक मार्किस आफ वेलस्ली ने आरगाम और असाई की बड़ी लड़ाइयों में महाराष्ट्रों को परास्त किया और अहमदनगर लेलिया। लार्ड लेक ने अलीगढ़ और लसवारी के मैदान में बड़ी लड़ाइयां जीतीं, दिल्ली और आगरे को लेलिया और सिंधिया की फौज को खड़बड़ा दिया। सिंधिया ने यमुना नदी के उत्तर के देश के दावे से अपना हाथ खैंच लिया और दिल्ली के बादशाह शाह आलम को अङ्गरेजों की रक्षा में छोड़ दिया। नागपुर के भोसला ने लाचार होकर अङ्गरेजों को सूबे उडीसा और हैदराबाद के निजाम को बरार देश देदिया।

सन् १८०५ ई० में अङ्गरेजी सेनापति लार्डलेक ने भरतपुर पर चढ़ाई की, जो बहुत सैनिकों के मारेजाने पर सिकस्त होकर लौट गया।

सन् १८१४ ई० में अङ्गरेजों की नैपालियों से लड़ाई आरंभ हुई। जनरल अक्टर लोनी ने सतलज नदी से फौज उतार कर एक एक करके नैपालियों के किले सर किए। सन् १८१५ में इसीने पटने से आक्रमण करके राजधानी काठमांडू के निकट पहुंचकर नैपालियों को लाचार किया। सुगौली में अहदनामा हुआ, जो आज तक वैसाही बना है।

सन् १८१७ ई० में पूनाके अहदनामों के अनुसार गायकवार पूनाके राज्यसे बाहर होगया और कई नये जिले अंगरेजोंको दे दिए गए। अंगरेजोंने किर्कीमें बाजीराव पेशवा को और महीदपुर की बड़ी लड़ाई में हुलकर को परास्त किया और पेशवाका राज्य अपने बंबई हाते के राज्य में मिलाकर उसके लिये आठ लाख रुपये सालाना पेंशन करदी। शिवाजी के वंश में से एक आदमी सितारा की गद्दी पर बैठाया गया, एक नाबालिग हुलकर का उत्तराधिकारी कबूल किया गया। आर एक नाबालिग नागपुर का राजा बनाया गया। उसी सन में अंगरेजी सरकार ने पिंडारियों को परास्त किया, उसी जमाने में राजपूताने के राजाओं ने ने अंगरेजी गवर्नमेंट की आधीनता स्वीकार करली।

सन १८२४ ई० में अंगरेजों ने वर्मा पर चढ़ाई की, दो वर्ष तक लड़ाई होती रही। सन १८२६ में अहदनामा हुआ, जिससे वर्मा के बादशाह ने आसाम की दावी छोड दी और अराकान तथा टेने सरिम के सूबे को, जिन पर अंगरेजी फौज का अधिकार था, देदिया।

जब भरतपुर की गद्दी के बारे में बखेड़ा झगड़ा हुआ, तब अंगरेजी सरकार ने भरतपुर पर चढ़ाई की। उन्होंने सन् १८२६ ई० में सुरंग से किले को तोड़ कर भरतपुरको लेलिया और भरतपुर के दुर्जनसाल को राज सिंहासन से उतार कर बलवंतसिंह को बैठाया।

सन् १८३९ के अगस्त में अंगरेजी सरकार ने अफगानिस्तान के जमाशाह दुर्रानीके भाई शाहशुजा को जो, भाग कर लुधियाने में रहता था, काबुल की गद्दी पर बैठाया और वहां के अमीर दोस्त महम्मदखां बारक जई को परास्त करके कलकत्ते में भेज दिया। अंगरेजी फौज ने दो वर्ष तक अफगानिस्तान में अपना अधिकार रक्खा, परन्तु सन् १८५१ ई० के नवम्बरमें बलवा होगया, अंगरेजी एजेंट काबुल में कतल किया गया, दोस्त महम्मदखांके बड़े बेटे अकबरखांने पोलिटिकल अफसर सरविलियम मेकनाटन को दगासे मारडाला, दो महीनेके पीछे जाड़े के समय में अंगरेजी फौज छावनी से हिंदुस्तान को रवाना हुई, वहां के सरदारों ने उनको निरापद हिन्दुस्तान में जाने देने का वादा किया। चलनेके समय अंगरेजी फौज में

४ हजार लड़ने वाले थे और संपूर्ण लशकर की भीड १२ हजार थी, जिनमें से केवल डाक्टर बेडन बच कर जलालाबाद के किले में पहुंचे, बाकी संपूर्ण फौज खुर्द काबुल और जगदल के तंग दर्रो में अफगानों की छुरियों और बंदूकों तथा बर्फ से मर गई, परन्तु अकबरखां ने कई एक बचे, स्त्री और अफसरों को कैद कर रक्खा । पीछे अंगरेजी सरकार ने बदला लेने के लिये अफगानिस्तान में फौज भेजी । सन् १८४२ ई० के सितंबर में उसने काबुलका बड़ा बाजार बारूदसे उडादिया और सरकारी कैदियोंको वापस लिया। इसके पश्चात् अंगरेजी फौज हिन्दुस्तान में चली आई और अफगानिस्तान का अमीर दोस्त महम्मद खां छोड दिया गया ।

सन् १८४३ ई० में अंगरेजों ने सिंधके अमीरोंको परास्त करके सिंध देशको ले लिया ।

महाराज रणजीतसिंह सन्१८००ई में अफगानके बादशाहकी ओरसे लाहौरके सूबेदार बने, जिन्होंने अपना राज्य दक्षिण मुलतान, पश्चिम पेशावर और उत्तर कश्मीरतक फैलाया ।

सन् १८०९ में महाराज से अंगरेजों की संधि हुई, उसके अनुसार पूर्व में रणजीतसिंह और अंगरेजी राज्य की सीमा सतलज नदी हुई, सन् १८३९ में महाराज रणजीतसिंह का देहांत हुआ, उनके पुत्रों में से कोई ऐसा न था, जो उनके राज्य का प्रबंध कर सके, इस लिये लाहौर में सेनापति, मंत्री और रानियों में बड़ा झगड़ा आरंभ हुआ सिक्खों की फौज स्वतंत्र बन गई । सन् १८४५ में सिक्खोंकी फौज ले सतलज पार हो कर अंगरेजी राज्य पर आक्रमण किया । दो महीनेके अरसे में मुदकी, फिरोजपुर, अलीवाल और सुबरांव में चार बड़ी लड़ाइयां हुई । प्रति लडाइयों में अंगरेजी फौज बहुत मारी गई, परन्तु अंतमें सिक्ख परास्त हो कर भाग गए । लाहौर दरबार ने अंगरेजी अधीनता स्वीकारकी, संधि के अनुसार महाराज रणजीतसिंह दिलीपसिंह लाहौरके राजा बनाए गए । सतलज और रावीके बीचकी भूमि अङ्गरेजोंको मिली । लाहौर दरबारमें रेजीडंट नियत हुए । उसके पश्चात् सन् १८४८ ई०में दो अंगरेजी अफसर मुलतानमें मार डाले गए, इसलिये अंगरेजीसे सिक्खोंकी दूसरी लडाई हुई । सिक्खोंके लशकर फिर इकट्ठा होकर बडी बहादुरीसे लड़ा । चिलियान वालेकी लडाईके मैदानमें अंगरेजोंके २४०० सिपाही और अफसर मारे गए और सन् १८४८ की तारीख १३ जनवरीको अंगरेजोंकी ४ तोपें और३पलटनोंके निशान हाथसे जाते रहे, परन्तु अंतमें 'गुजरात' के निकट अंगरेजोंकी विजय हुई । ता० २९ मार्चको पंजाब देश अंगरेजी राज्यमें मिला लिया गया । महाराज दिलीपसिंहके लिये ५८०००० रुपये सालाना पेंशन नियत की गई ।

सन् १८४८ में सिताराका राजा बिना पुत्र मर गया, तब सन् १८४९ में सरकारने उसके गोद लिये हुए पुत्रको ना मंजूर करके उसके राज्यको अपने राज्यमें मिला लिया, इसी प्रकार सन् १८५३ में जब नागपुरका भोंसला निष्पुत्र मर गया, तब उसका राज्यभी अंगरेजी राज्यमें मिला लिया गया, वही देश मध्यदेशके नामसे प्रसिद्ध हुआ ।

सन् १८५२ ई० में अंगरेजोंसे बर्माकी दूसरी लडाई हुई, अंगरेजोंने इरावती नदीकी सब बादीपर रंगूनसे प्रोम तक अराकान और टेनासरिमके सूबोंमें, जिनको सन् १८२६ में ले लिया था, मिला लिया ।

अवधके नव्वाब वाजिदअलीशाहके राज्यमें लाखों आदमीपर जुलम होने लगा, इस लिये सन् १८५६ ई० की १३ फरवारीको अवध प्रदेश अंगरेजी राज्यमें मिला लिया गया । वाजिदअलीशाहको १२ लाख रुपया सालाना पेंशन नियत हुई, वह कलकत्तेमें रहने लगे ।

सन् १८५७ का बलवा–ऐसी अफवाह छावनीयोंमें उडी कि बंगाल हातेके सिपाहियोंके कारतूसमें सूअरकी चर्बी लगी है । सिपाहियोंको बहुत समझाया गया पर उनको विश्वास न हुआ । सन् १८५७ की १० वीं मईको मेरठमें सिपाहियोंने बगावतकी (उन्होंने जेलखाना तोड डाला और जो अंगरेज सामने आए उन्हें कतल किया, बाद वे लोग दिल्ली चले गये । दूसरे दिन मुसलमानों ने दिल्ली में बलबा किया । इसके पश्चात् चारों ओर से बागी दिल्ली में पहुंचने लगे । पश्चिमोत्तर देश और अवध से बंगाले के जिलों तक बगावत फैल गई । ईशाई मतके लोग बहुत मारे गए । सिक्ख लोग बागी नहीं हुए, हजारहां सिक्ख अंगरेजी फौज में भरती होने आए । बंगाल देश के दाक्षिण में बहुतेरे सिपाही बागी होकर चारों ओर छितर बितर हो गए । मदरास और बंबई हाते की हिंदुस्तानी फौजें अंगरेजी सरकार की मित्र बनी रही । मध्य देश में बहुतेरे बडे २ सरदारों की फौजें आगे पीछे बिगड कर बागियों से जा मिलीं, परंतु हैदराबाद की रियासत अंगरेजों के मित्र रही । कानपुर, लखनऊ और दिल्ली में बागियों का जोर रहा, वहां बहुत युरोपियन मारे गए । यद्यपि १८ महीनों तक जगह जगह बराबर लडाई होती रही, परंतु दिल्ली की जीत और लखनऊ के अंगरेजों के छुटकारा होने के बाद बगावत बहुत कमजोर हो गई । अवध की बेगम, बरेली के नव्वाब और नाना साहब के उभाड़ने से अवध और रुहेलखंड की प्रजाओं ने बागी सिपाहियों का साथ दिया । नैपाल के सरजंगबहादुर ने अंगरेजों की बडी सहायता की संपूर्ण शहर क्रम से जीते गए और संपूर्ण बागी सन १८५९ ई तक सरकारी राज्य की सीमा के पार भगा दिए गए ।

सन् १८५८ में झांसीकी रानी अंगरेजोंसे लड़ी और बड़ी बहादुरीसे लड़कर मारी गई । उसका सहायक तांतियाटोपी भागा भागा फिरा, जो सन् १८५९ में पकड़ा गया ।

सन १८५८ में हिंदुस्तानका राज्य इष्टइंडियन कंपनीके हाथसे महारानी विक्टोरियाके हाथमें आया । सन १८५८ के नवंबरको इलाहाबादमें दर्बार करके खबर दी गई कि अबसे हिंदुस्तानका राज्य महारानी विक्टोरियाने अपने हाथमें ले लिया ।

सन १८५८ ई० में अफगानिस्तानके अमीर शेरअली खांने रूसियोंका सन्मान और अंगरेजोंका अनादर किया । अंगरेजी फौजने तीन ओरसे चढाई कर थोडे मुकाबलेके पीछे दर्रोंको ले लिया शेर अलाखां भाग गया । उसके बेटे याकूबखांके साथ अहदनामा हुआ परन्तु अफगानोंने कई एक महीनेके भीतरही अंगरेजी रजीडंटको कतल कर डाला, इस कारण से फिर लडाई की जरूरत पडी । अंगरेजों ने याकूबखां को गद्दी से उतार कर हिंदुस्तान में भेजा और काबुल तथा कंधार को लेलिया । सन् १८८० ई० में याकूबखां के भाई अयूबखां ने कंधार और हेलमंद नदी के बीच में एक अंगरेजी ब्रिगेड को परास्त किया, तब अंगरेजी सरकार ने अयूबखां की फौज को परास्त किया और दोस्त महम्मदखां के घराने के अबदुल रहमान खां को काबुल का अमीर बनाया । पीछे अंगरेजी फौज लौट आई ।

सन १८८६ ई० में (लडाई के उपरांत) अंगरेजी सरकार ने वर्मा के राजा थीबो को राज्य च्युत कर दिया, वह दक्षिण हिंदुस्तान में रक्खा गया । वर्मा का भाग पहिलेही से अंगरेजी अधिकार में हो चुका था, शेष वडा भागभी अंगरेजी गवर्नमेंट के अधीन होगया ।

भारत भ्रमण-प्रथम खंडका सूचीपत्र।

॥ इति भारतभ्रमण प्रथम खण्ड सूची ॥

॥ श्रीः ॥

॥ ऋद्धिसिद्धीश्वराय नमः ॥

भारतभ्रमण ।

प्रथम खण्ड ।

प्रथम अध्याय १.

चरजपुरा, बलिया और भृगुक्षेत्र.

चरजपुरा ।

गणपति गिरिजा श्रीरमण, गिरिजापति गिरिराय ।
विधि बानी गुरु व्यास रवि, बार बार शिर नाय ॥
साधुचरण परसाद लहि, साधुचरण परसाद ।
आरंभत भारत-भ्रमण, लहन रसिकजन स्वाद ॥

मेरी प्रथम यात्रा सन् १८९१ ई० (सम्वत् १९४८) के सितम्बर (आश्विन) में मेरी जन्मभूमि 'चरजपुरा' से आरंभ हुई ।

चरजपुरा पश्चिमोत्तर प्रदेशके बनारस विभागमें बलिया जिलेके दोआबा परगनेमें लगभग ११०० मनुष्योंकी बस्ती है । जिसके पूर्व ओर मेरे पिता बाबू विष्णुचन्द्रजीका बनवाया हुआ शिवमंदिर सुशोभित है गंगा और सरयू नदियोंके मध्यमें होनेसे इस परगने का नाम 'दोआबा' है । दोआवा परगना पहिले परगना बिहियाके नामसे बिहारके शाहाबाद जिलेमें था, परन्तु सन १८१८ ई० में पश्चिमोत्तर देशके गाज़ीपुर जिलेमें कर दिया गया; तबसे तपा दोआबा परगना बिहिया कहलाने लगा । सन १८८४ के नये बँदोबस्तसे परगना दोआबा लिखा जाता है । इस ग्रामसे २ मील दक्षिण गंगा और आठ मील उत्तर सरयू बहती हैं । पाहिले गंगा और सरयूका संगम यहांसे ८ मील पूर्वोत्तर था, परन्तु अब यह संगम यहां से २५ मील पूर्व हरदी छपराके पश्चिम है ।

इस ग्रामसे ४ मील उत्तर रानीगंज बाजारके पास अगहन सुदी पंचमी को (जिस तिथिको जनकपुरमें श्रीरामचंद्रका विवाह हुआ था) लगभग १५ वर्षसे सुदिष्ट बाबाके

धनुर्यज्ञका मेला होता है । सुदिष्ट बाबा मधुकरीय सम्प्रदायके एक वृद्ध साधु हैं, जिनके समीप विभूति और आशीर्वादके लिये बहुतसे लोग आते हैं ।

चरजपुरासे १८ मील पश्चिम गंगाके बाएँ किनारेपर इस जिलेका सदर स्थान बलिया, १८ मील पूर्व–दक्षिण गंगाके दक्षिण शाहाबाद जिलेका सदर स्थान आरा और १८ मील पूर्वोत्तर सरयू नदीके बाएँ किनारेपर सारन जिलेका सदर स्थान छपरा है ।

बलिया और भृगुक्षेत्र।

बलिया पश्चिमोत्तर देशके बनारस विभागमें जिलेका सदर स्थान गंगाके बाएँ किनारेपर एक छोटासा कसबा है । यह २२ अंश ४३ कला ५५ विकला उत्तर अक्षांश और ८४ अंश ११ कला ५ विकला पूर्व–देशान्तरमें है ।

इस वर्षकी मनुष्य–गणनाके समय बलियामें १६३७२ मनुष्य थे, अर्थात् १३४८१ हिन्दू, २८७९ मुसलमान, १० कृस्तान और २ पारसी ।

बलियामें बालेश्वरनाथ महादेवका पुराना मन्दिर गंगामें गिरगया; तब बाबू गणपति-सहाय डिप्टीने पहिले मंदिरके स्थानसे कुछ उत्तर हटकर दूसरा मंदिर अच्छे डौलका चन्देसे बनवादिया है । इस ज़िलेके सेशन जजका काम ग़ाज़ीपुरके जज करते हैं । पहिले बलिया ग़ाज़ीपुर के ज़िले में थी ।

बलियाके चौकको रावर्ट्स साहब कलक्टरने सन १८८२ ई० में बनवाया था । चौक मंडलाकार है और इसके हर एक ओरमें एकही तरहकी छतदार कोठरियोंके आगे ऐंठुए खंभे लगेहुए एकही तरहके दालान हैं । चौकके मध्यमें कूप है, जिससे चारोंओर सड़कें निकली हैं । कूपके समीप भी चारोंओर मंडलाकार एकही तरहकी दूकानें बनी हैं ।

भृगुक्षेत्र वा भृगुआश्रम की बस्ती अब बलियामें मिलकर बसी है । भृगुजीका मन्दिर कईबार स्थान स्थान पर बनता और गंगाजीमें गिरतागया, पर अब बलियाके समीप नया मंदिर बना है । यहां कार्तिककी पूर्णिमाको भारतवर्षके बडे मेलोंमेंसे एक भृगुक्षेत्रका प्रख्यात मेला होता है और एक सप्ताहसे अधिक रहता है । मेलेमें बनारस आदि शहरोंसे दूकानें आती हैं । घोडे और विशेष करके गाय बैल आदि चौपाये (मवेशियां) बहुत बिकते हैं । मेलेमें २००००० से ४००००० तक मनुष्य आते हैं । सन् १८८२ ई. में ६०००० चौपाये आए थे । मेलेसे राजकर ५८७०) रुपया मिला ।

बलिया जिला–सन १८७९ ई. की पहली नवंबरको ग़ाज़ीपुर और आजमगढके पूर्वीय परगनोंसे बलिया जिला नियत हुआ । इसके उत्तर और पूर्व सरयू नदी इसको गोरखपुर और बिहारके सारन जिलोंसे अलग करती है, दक्षिण गंगा इसको बिहारके शाहाबाद जिलेसे अलग करती है और पश्चिम ग़ाज़ीपुर और आजमगढ जिले हैं ।

इस वर्षकी मनुष्य गणनाके समय बलिया जिलेमें ९४३००० मनुष्य थे, अर्थात् ४५२४१६ पुरुष और ४९०५८४ स्त्रियां । सन१८८१ ई. में बलिया जिलेका क्षेत्रफल ११२४ वर्ग मील और मनुष्य संख्या ९२४७६३ थी, अर्थात् प्रति-वर्ग-मील में औसत ८०८ मनुष्य थे । पश्चिमोत्तर देशमें बनारस जिले को छोड़कर बलिया जिले का औसत घनापन दूसरे जिलोंसे अधिक है, जिनमें ८५५४१० हिन्दू, ६९३२१ मुसलमान और ३२ दूसरी जातिके मनुष्य थे । हिन्दुओंमें १३११२६ राजपूत, १०२३०० ब्राह्मण, २६०३३ भूमिहार, ८७५५४

चमार, ५८१४७ भर, जो आदि निवासी जातियोंमें से हैं और अब हिन्दूमें गिने जाते हैं, और शेष दूसरी जातियां थीं।

इस जिलेमें बलिया, बांसडीह और रसडा इन तीन स्थानोंमें तहसीली है। इस जिले के १० कसबोंमें सन् १८८१ में ५००० से अधिक मनुष्य थे, अर्थात् बलियामें ८७९८ सन १८९१ में १६३७२, सहतवारमें ११०२४ सन् १८९१ में ११५१५ बडा गांवमें १०८४७ सन १८९१ में १०७२५ रसड़ामें ११२२४ रेवतीमें ९९३३, बांसडीहमें ९६१७, बैरियामें ९१६०, मनियरमें ८६००, सिकंदरपुरमें ७०२७ और तुर्त्तीपारमें ६३०७।

द्वितीय अध्याय २.

ब्रह्मपुर, डुमरांव, वकसर, सहसराम, गाज़ीपुर और मुगलसराय जंक्शन।

ब्रह्मपुर।

चरजपुरासे १६ मील दक्षिण सूबे बिहारके शाहाबाद जिलेमें आरासे २३ मील पश्चिम ईस्ट इंडियन रेलवेका स्टेशन रघुनाथपुर है। जिससे २ मील उत्तर ब्रह्मपुरमें जिसको सर्वसाधारण लोग बरमपुर कहते हैं, ब्रह्मेश्वरनाथ महादेवका शिखरदार पश्चिम मुखका बड़ा मन्दिर है जिसके पास पार्वतीका एक छोटा मन्दिर और पक्का सरोवर है।

फाल्गुन और वैशाखकी शिवरात्रियोंको ब्रह्मपुरमें बड़ा मेला होता है। जिसमें घोड़े और दूसरे दूसरे चौपाए बहुत बिकते हैं। मेला एक सप्ताह तक रहता है।

भलुनी भवानी—ब्रह्मपुरसे बीस बाईस मील दक्षिण है। चैत्र नवमीके समय भलुनी भवानी का मेला होता है और १० दिनसे अधिक रहता है। इसमें घोड़े और मवेशियां नहीं जातीं पर दूसरी वस्तुएँ बहुत बिकती हैं। इमलीके बागमें सरोवरके पास भवानीका मन्दिर है।

डुमरांव।

रघुनाथपुरसे १० मील (आरासे ३३ मील) पश्चिम डुमरांवका रेलवेस्टेशन है। जिससे १ १/२ मील दक्षिण बिहारके शाहाबाद जिलेमें डुमरांव एक छोटासा कसबा है। यह २५ अंश ३२ कला ५९ विकला उत्तर अक्षांश और ८४ अंश ११ कला ४२ बिकला पूर्व देशान्तरमें है।

इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय डुमरांवमें १८३८४ मनुष्य थे, अर्थात् १४९०० हिन्दू और ३४८४ मुसलमान।

यहांके राजा भोजवंशी उज्जैन क्षत्री हैं। इनकी जमींदारी शाहाबाद और बलिया आदि जिलोंमें फैली हुई है। डुमरांवमें महाराजकी बड़ी फुलवाड़ी और गढ़के भीतरकी ठाकुरवाड़ी देखने योग्य है। फुलवाड़ीमें एक सरोवर और कई उत्तम कोठियां बनी हुई हैं जिनमें मेहमान लोग ठहरते हैं। डुमरांवमें एंट्रेंस स्कूल और अस्पताल है और चैत्र नवमी तथा जन्माष्टमीके महोत्सव बड़े धूमधामसे होते हैं। बड़े समारोहसे श्रीठाकुरजीकी सवारी निकलती है और सैकड़ों पंडितोंको नियमित बिदाई मिलती है।

डुमरांवका इतिहास।

राजा भोजसिंहने भोजपुरको बसाया और इसी कारणसे यह परगना यह प्रदेश 'भोजपुर' नामसे प्रसिद्ध है। उनका टूटाहुआ गढ़ डुमरांवसे ३ मीलपर अबतक वर्त्तमान है।

पीछे भोजसिंहका राज्य डुमरांव; बक्सर और जगदीशपुर इन तीन हिस्सोंमें बटगया। डुमरांव राज्यको स्थापित हुए ५०० वर्षसे अधिक हुए। सन १८१५ ईसवीमें डुमरांवके राजा जयप्रकाशसिंहने नैपालकी लड़ाईके समय अंगरेजी सरकारकी अच्छी सहायताकी थी। उसी समय उनको सरकारसे महाराज बहादुरकी पुश्तैनी पदवी मिली।

वृद्ध महाराज महेश्वरबख्शसिंह बहादुरके देहान्त होनेपर सन १८८१ ईस्वीमें उनके पुत्र महाराज सर राधाप्रसादसिंह बहादुर (के० सी० आई० ई०) को राजगद्दी मिली, जिनकी अवस्था इस समय ५० वर्षकी है। अंगरेजी दरबारोंमें बिहारके सम्पूर्ण जमींदार राजाओंमें महाराजको प्रधान आसन मिलता है।

बक्सरके राजाकी जमींदारी बिक गई है।

जगदीशपुरके बाबू कुँवरसिंहका नाम सन १८५७ के बलवे में बागियोंके साथ मिलने के कारण प्रसिद्ध है। वे अपने अनुज बाबू अमरसिंहके साथ सन १८५७ की जुलाईमें दानापुरके बागी सिपाहियोंमें मिलकर अंगरेजोंके विरुद्ध खड़े हुए थे। लग भग ६ महीने तक तो जगदीशपुर मोरचा बन्दी करके रहे, परन्तु सन १८५८ की जनवरी में घबड़ा कर पश्चिमको चले गये। फरवरीके मध्यमें लखनऊसे भागते हुए आजमगढ़ जिलेमें आये. अंगरेजी सेनाने 'अतरवलिया' में उनपर आक्रमण किया, किन्तु परास्त होकर वह आजमगढ़में हट आई। बाबू कुँवरसिंहने आकर अंगरेजी सेनापर घेरा डाला, जब सरकारी अफसरके अधीन एक सेना आई तब अप्रैलके मध्यमें बाबू कुँवरसिंह परास्त होकर भागे। जब अंगरेजी पल्टनने पश्चिमसे उनका पीछा किया, तब वे बागी सिपाहियोंके साथ अपने घरकी ओर लौटे, चरजपुरासे ३ मील दक्षिण–पूर्व शिवपुर घाटके पास गंगाके बाँयें किनारे कुँवरसिंहके पहुँचनेपर अंगरेजी फौज पीछेसे पहुँचगई। उस समय बहुतेरे सिपाही भागे और बहु तेरे कुँवरसिंहके साथ नावों द्वारा गंगापार हुए। बाबू कुंवरसिंह जब हाथीपर सवार हो किनारेसे चले, तब अंगरेजोंने इस पारसे उनपर गोला मारा, जिसका टुकड़ा उनके हाथमें लगा, जिससे वे जगदीशपुरमें जाकर मरगये। पीछे अमरसिंह भाग गये, परन्तु बागियोंकी जमायत जगह जगह तहसीलों और थानोंपर आक्रमण करती हुई इधर उधर फिरा करती थी। अक्टूबरमें कर्नल केलीके अधीन जिला साफ करनेके लिये जब एक फौज भेजी गई; तब वे छितर बितर हो गये। अंगरेजी सर्कारने कुंवरसिंह और अमरसिंहकी जमींदारी जब्त करके नीलाम करदी। जगदीशपुरका देवमन्दिर पहिले ही बारूदसे उड़ा दिया गया था।

बक्सर।

डुमरांवसे १० मील (आरासे ४३ मील) पश्चिम बक्सरका रेलवे स्टेशन है।

बक्सर बिहारके शाहाबाद जिलेका सब डिवीजन गंगाके दहिने किनारे पर एक छोटा कसबा है। लोग कहते हैं कि 'व्याघ्रसरका' अपभ्रंश बक्सर है। यह २५ अंश ३४ कला २४ विकला उत्तर अक्षांस और ८४ अंश ४६ विकला पूर्व देशान्तरमें है।

यहां गल्लेकी बड़ी मंडी है और विशेष करके चीनी, रूई और लवणका व्यापार होता है।

इस वर्षकी जन-संख्याके समय बक्सरमें १५५०६ मनुष्य थे, अर्थात् ११७२५ हिन्दू १ जैन, १७ बौद्ध, ३५९२ मुसलमान और १७१ क्रस्तान।

गंगाके किनारेपर एक छोटा पुराना किला है, जिसके बगलोंमें सूखी खाई और गंगाकी ओर ईटेका पुश्ता है। भीतरके मकानोंमें नहर विभागके अफसर रहते हैं।

किलेसे पश्चिम और दक्षिण शोणकी प्रधान पश्चिमी नहरकी एक शाखा है, जो डिहरीसे १२ मील पर पश्चिमी नहरसे निकल उत्तर आकर बक्सरके पास गंगामें मिली है। सरकारी स्टीमर असबाब और मुसाफिरोंको लेकर आते जाते हैं। नहरकी चौड़ाई ४७ फीट नेवके पास और ७५ फीट पानीकी लकीरके पास और गहराई ७ फीट है, जिसके दक्षिण बक्सरके राजाका साधारण मकान है। ये राजा, राजा भोजसिंहके वंशमें हैं, इनकी सम्पूर्ण जमींदारी बिकगई है।

चरित्रबन-राजाके मकानसे पश्चिम कच्ची सड़क उत्तरसे दक्षिणको गई है, जिससे पश्चिम गंगाके किनारे तक चरित्रबन है। इसमें अब वनके वृक्ष लता आदि नहीं हैं, वरन छोटे बड़े २५ से अधिक देवमन्दिर हैं, जिनमें सोमेश्वरनाथ शिवका मन्दिर पुराना सूर्य्यपुराके दीवान और डुमरांवके महाराजकी ठाकुरवाड़ी उत्तम है। राजाके मकानसे पश्चिम-दक्षिण सड़कके पश्चिम ओर एक टीलेपर एक कोठरीमें राम और लक्ष्मणकी मूर्तियाँ हैं, जिसके नीचेकी तहमें महर्षि विश्वामित्र हैं; जहां जानेके लिये कोठरीके दोनों ओरसे सीढ़ियां नीचेको गई हैं। इस स्थानका नाम 'रामचबूतरा है'।

रामेश्वरका मन्दिर-किलेसे पूर्व गंगाके तीर रामेश्वर घाटपर रामेश्वर शिवका गुम्बजदार पूर्व मुखका मन्दिर है। जगमोहनके दाहिने महावीर और बाएँ भैरवकी मूर्ति है। मन्दिरके दक्षिण एक कोठरीमें महाबीरकी मार्बुलकी छोटी मूर्ति है और उत्तर गंगाका घाट पक्का बना हुआ है। मन्दिरके आस पास इमली, पीपल और बटके वृक्षों पर बन्दरोंके झुण्ड रहते हैं।

सिकरौरके एक ब्राह्मणने इस घाटके पश्चिम एक दूसरा पक्का घाट और विश्वामित्रका एक मन्दिर बनवानेका काम आरंभ किया है।

बक्सरमें मकरकी संक्रान्तिको गंगा-स्नानका मेला होता है। बक्सर तीर्थकी परिक्रमाकी यात्रा अगहन बदी ५ से आरंभ होकर ५ दिनमें समाप्त होती है, इसमें विशेषकर उसके आस पासके लोग जाते हैं।

बक्सर विश्वामित्र ऋषिका सिद्धाश्रम है। लोग ऐसा कहते हैं कि, श्रीरामचन्द्र और लक्ष्मणने अयोध्यासे आकर यहीं विश्वामित्रके यज्ञकी रक्षा की थी।

सहसराम।

सहसराम बक्सरसे लगभग ३५ मील दक्षिण, शाहाबाद जिलेका सब डिवीजन बड़ी सड़कके पास एक छोटा कसबा है। यह२४ अंश५६ कला५९ विकला उत्तर अक्षांश और ८४ अंश ३ कला ७ विकला पूर्व देशांतरमें है। बक्सरसे सहसराम तक नहरमें आगबोट चलता है।

इस वर्षकी जन-संख्याके समय सहसराममें २२७१३ मनुष्य थे, जिनमें १३१३० हिन्दु, ९५७१ मुसलमान और १२ क्रस्तान।

कसबेके पश्चिम एक बड़े तालाबके मध्यमें शेरशाहका अठपहला बड़ा मकबरा है जिसकी छत ४ मेहराबियों पर बनी है। इसमें जानेके लिये तालाबमें एक ओर पुल बना है। मकबरेके खर्चके लिये बडी जागिर है।

बंगालका हाकिम शेरशाह अफ़गान सन् १५४२ ई० में हुमायूंको निकाल कर दिल्ली का बादशाह बना, परन्तु सन् १५४५ में कालिंजरके बड़े किलेपर धावा करते समय वह मारा गया और उसका बेटा उसकी जगह गद्दीपर बैठा। शेरशाहके पोतेके राज्यके समय सन १५५६ ई०में हुमायूँ अफ़गानोंको परास्त करके फिर दिल्लीका बादशाह बनगया।

सहसरामसे कई मीलके अन्तरपर शोण नदीके किनारे एक पहाडीपर (रूहतास) रोहिताश्व गढका किला है और कसबेके पूर्व ऊंची पहाड़ीपर चंदन शाहिद मसजिद है।

ग़ाज़ीपुर।

बक्सरसे २२ मील आरासे ६५ मील पश्चिम दिलदार नगर रेलवेका जंक्शन है, जिससे १२ मील उत्तर गंगाके दहिने किनारे 'तारीघाट' को रेलवेकी शाखा गई है।

पश्चिमोत्तर प्रदेशके बनारस विभागमें जिलेका सदर स्थान गंगाके बाएं किनारे पर लगभग २ मील लंबा और $\frac{3}{4}$ मील चौडा ग़ाज़ीपुर एक कसबा है। यह २५ अंश ३५ कला उत्तर अक्षांश और ८३ अंश ३८ कला ७ विकला पूर्व देशांतर में है।

इस वर्षकी जन संख्याके समय ग़ाज़ीपुरमें ४४९७० मनुष्य थे, (२३०७७ पुरुष और २१८९३ स्त्रियां) इनमें ३०४४९ हिन्दू १४२३९ मुसलमान, २६१ कृस्तान, १३ सिक्ख ४ जैन और ४ यहूदी। मनुष्य संख्याके अनुसार ग़ाज़ीपुर भारतवर्षमें ८८ वां और पश्चिमोत्तर प्रदेशमें १६ वां नगर है।

ग़ाज़ीपुरमें कोतलवालीका मकान, सिविल कचहरियां और सरकारी अफीम महकमे की सदर कोठी, जहाँ पश्चिमोत्तर देशसे संपूर्ण अफीम इकट्ठी की जाती है, देखने योग्य है। और भी कई देवमन्दिर और बड़े बड़े मकान बने हैं। गंगाके तीर कई घाटोंपर नीचेसे ऊपर तक पत्थरकी सीढियां हैं। यहांका जज बलिया जिलेका भी जज है।

भारतवर्षके गवर्नर जनरल लार्ड कार्नवालिस सन १८०५ ई० में इसी जगह मरे थे। उनके स्मरणार्थ १००००० रुपयेके खर्चसे यहां एक ऊंचा समाधिस्तम्भ बना है। अवधके राज प्रतिनिधिके अधीन शेख अब्दुल्लाका बनवाया हुआ ४० स्तम्भोंका महल अब उजडी पुजड़ी दशामें है और मसूद अब्दुल्ला और फजलअली की कबरें शहर में हैं।

ग़ाज़ीपुर जिला–जिलेके उत्तर आजमगढ़ पश्चिम बनारस और जौनपुर, दक्षिण विहार के शाहाबाद और पूर्व वलिया जिले हैं।

इस वर्षकी मनुष्य गणनाके समय इस जिलेमें १०८४७२९ मनुष्य थे, जिनमें ५३४ ६००पुरुष और ५५०१२९ स्त्रियां। सन १८८१ ई० में जिले का क्षेत्रफल १४७३ वर्गमील और मनुष्य संख्या १०१४०९९ थी; अर्थात् प्रतिवर्गमीलमें औसत ६८८ मनुष्य थे, जिनमें ९१३७६४ हिन्दू, ९९६७८ मुसलमान, ६४८ कृस्तान, ८ यहूदी और एक पारसी। हिंदुओं में १५४२४६ अहीर, १३०७१६ चमार, ९१६७५ राजपूत, ७७२६२ कच्छी, ६७८४० ब्राह्मण; ४७१८१ भूमिहार, ४३८४६ भर, ३५९८९ कहार, २२४७८ तेली, २१४१९ लोहार, १८६ ३३ नोनिया, १५४२१ कायस्थ, १४२४७ कुँभार, १४०२९ मलाह, १३२३९ कलवार, १०० २३ कुरमी; ८५५४ गड़रिया, ८५३६ नाई, ७८१३ सोनार, ७७०९ धोबी, ६२६९ तम्बोली, ४२५१ बनियें और शेष दूसरी जातियाँ थीं। मुसलमानोंमें ९६७८७ सुन्नी और २८ ९१ शीया थे।

जिलेके ८ कसबोंमें सन १८८१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय ५००० से अधिक मनुष्य थे। ग़ाज़ीपुर ३२८८५, गहमर १०४४३ (सन १८९१ में ११११२९), रेवतीपुर १०१९७ (सन १८९१ में १०९६१)' शेरपुर ९०३० (सन १८९१ में १२१५६) नाढी ५४१५' जमांनियां ५११६ और बहादुर गंजमें ५००७। ग़ाज़ीपुर जिलेमें गंगासे दक्षिण जमनियां, दिलदार नगर और गहमर रेलवेके तीन स्टेशन हैं। सन १७८९ में इस जिलेकी भूमिका प्रबन्ध हुआ और पीछे दायमी मुस्तहर किया गया।

ग़ाज़ीपुरका इतिहास।

चौथी शताब्दीसे सातवीं तक जिलेकी भूमि मगधके गुप्त वंशियोंके राज्योंमें थी। सन १३३० के लगभग एक सैयद प्रधान मसूदने ग़ाज़ीपुर शहरको बसाया; जिसने इस देशके हिंदू राजाको लड़ाईमें मारा था। सुलतान महम्मद तुगलकने इस कामसे प्रसन्न होकर उसको गाजीकी पदवीके साथ इस मिलकियतको देदिया, तबसे इसीके नामसे शहरका नाम ग़ाज़ीपुर पड़ा. यह सन १३९४ से १४७६ तक जौनपुरके सर्की वंशके राज्योंमें था। इसके अनंतर उनकी घटतीके पीछे यह पश्चिमी सुलतानोंके राज्योंमें मिलगया और सन १५२६ में आस पासके देशोंके सहित बाबरने इसको जीता। अकबरके राज्यके तीसरे वर्षमें जौनपुरके गवर्नरखां जमांने मुगलोंके लिये फिर गाजीपुरको लेलियां, जिसके नामसे जमांनियां कसबाका नाम निकलता है।

मुगलसराय जंक्शन।

दिलदार नगर स्टेशनसे ३६ मील आरासे १०१ मील और कलकत्तासे ४६९ मील पश्चिम और बनारससे ७ मील पूर्व मुगलसराय रेलवेका जंक्शन है, जहांसे रेलवे लाइन ३ ओर गई है-

(१) पश्चिम ईस्टइण्डियन रेलवे जिसका महसूल पहले दर्जेका प्रति मील १ ½ आना; दूसरे दर्जेका ९ पाई, दरमियानी दर्जेका ३ ½ पाई और तीसरे दर्जेका २ ½ पाई है।

मील	प्रसिद्ध स्टेशन
२०	चुनार
४०	मिरजापुर
४५	विन्ध्याचल
९१	नयनी जंक्शन
९५	इलाहाबाद

(२) पूर्व, थोड़ा उत्तर इस्टइण्डियन रेलवे,

मील	प्रसिद्ध स्टेशन
३६	दिलदार नगर जं०
५८	बक्सर
८७	बिहिया
१०१	आरा
१०९	कोयलवरका पुल
१२५	दानापुर
१३१	बांकीपुर जंक्शन

उत्तर पश्चिम

मील	प्रसिद्ध स्टेशन
६	दीघाघाट

दक्षिण

मील	प्रसिद्ध स्टेशन
८	पुनपुन
५७	गया

(३) पश्चिमोत्तर अवध रुहेलखण्ड रेलवे गई है; जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ $\frac{1}{3}$ पाई है।

मील प्रसिद्ध स्टेशन
७ बनारस (काशी)
१० बनारस (छावनी,)
२८ फूलपुर
४६ जौनपुर
१२६ अयोध्या (रानोपाली)
१३० फैजाबाद जंक्शन
१९२ बाराबंकी जंक्शन
२०९ लखनऊ जंक्शन

फैजाबाद जंक्शनसे ६ मील पूर्व अयोध्याका रामघाट स्टेशन और बाराबंकी जंक्शनसे २१ मील पूर्वोत्तर बहराम घाट है।

लखनऊसे पश्चिमोत्तर रुहेलखण्ड कमाऊं रेलवे पर ५५ मील सीतापुर, १६३ मील पीलीभीत और २४१ मील काठगोदाम, लखनऊसे पश्चिमोत्तर अवध रुहेलखण्ड रेलवेपर १०२ मील शाहजहांपुर और १४६ मील बरैली जंक्शन. और दक्षिण–पश्चिम ३४ मील उन्नाव और ४६ मील कानपुर जंक्शन है।

तृतीय अध्याय ३.

बनारस जौनपुर और आज़मगढ़।

काशी वा बनारस।

मुगुलसराय जंक्शनसे ७ मील पश्चिमोत्तर बनारसमें राजघाटका रेलवे स्टेशन है। बनारस २५३ फीट समुद्रके जलसे ऊंचा है और पश्चिमोत्तर देशमें किस्मत और जिलेका सदर स्थान, भारतवर्षके पुराने शहरोंमेंसे पश्चिमोत्तर प्रदेशमें एक सबसे बड़ा और प्रसिद्ध शहर गंगाके बाएँ किनारे पर बसा है। यह बनारस और काशी दोनों नामोंसे प्रख्यात है। अंगरेजी दफ्तरोंमें बनारस लिखा जाता है और पुराणोंमें काशी, अविमुक्त क्षेत्र, वाराणसी आदि इसका नाम लिखा है। वरुणा और असी इन दोनों नदियोंके मध्यमें होनेके कारण इसका नाम 'वाराणसी' पड़ा, जिसका अपभ्रंश बनारस है। वरुणा नदीके समानांतर उत्तर पंचक्रोशीकी सड़क काशीकी उत्तरी सीमा कही जाती है, जिससे उत्तर सारनाथ है। यह २५ अंश १८ कला ३१ विकला उत्तर अक्षांश और ८३ अंश ३ कला ४ विकला पूर्व देशान्तरमें है।

गंगाके दहिने किनारेसे मन्दिरों और मकानोंसे पूर्ण, अर्द्ध–चन्द्राकार गंगाके बाएं किनारेसे ३ मील लंबी काशी देख पड़ती है। मन्दिरोंके ऊपर शिखर, गुंबज और कलश, और मसजिदोंके ऊपर मीनारें और नीचे घाटोंपर पत्थरकी सीढियां शहरकी शोभाको बढ़ा रही हैं। घाटोंपर हिंदुस्तानके अनेक प्रदेशोंके यात्री देख पड़ते हैं।

असीघाटके पास गंगा ठीक उत्तरको बहती है और आगे क्रम क्रमसे ईशान कोणकी ओर लौटी है और राजघाटके पाससे पूर्वोत्तरको गई है। काशीके पास गंगाकी चौड़ाई $\frac{3}{4}$ मील है।

राजघाटके रेलवे स्टेशनसे असी–संगम ३ $\frac{1}{4}$ मील है। दोनोंके मध्यमें विश्वनाथजीका सोनहला मन्दिर सुशोभित है। वरुणा–संगमसे राजघाट १ $\frac{3}{4}$ मील, पंचगंगा घाट २ मील,

मणिकर्णिका घाट २ $\frac{1}{4}$ मील, दशाश्वमेध घाट २ $\frac{1}{2}$ से कुछ अधिक और असी संगम घाट ४ मील है।

इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय काशी और छावनीमें २१९४६७ मनुष्य थे(११५०६२ पुरुष और १०४४०५ स्त्रियां) जिनमें १६८६९१ हिंदू, ४९४०५ मुसलमान, १२०६ कृस्तान, १०९ जैन, ५२ सिक्ख, २ यहूदी, १ बौद्ध और १ पारसी। इनमें २५००० के लगभग ब्राह्मण थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार काशी भारतवर्षमें छठवां और पश्चिमोत्तर प्रदेशमें पहला शहर है। शहरका क्षेत्रफल (छावनी छोड़कर) ३४४८ एकड़ है।

भारतवर्षके पुराने शहरोंमें बनारस सबसे सुन्दर और उत्तम है। गंगाके आस पासके शहरकी गलियोंमें, जो पत्थरसे पाटी हुई हैं,मीलों तक चले जाइये,धूप नहीं लगेगी। दोनों ओर चौमहले, पंचमहले, छः महले और सतमहले मकानोंकी पंक्तियां देख पड़ेंगी। इन पतली गलियोंमें प्रायः सब लोग पैदलही चलते हैं। गृहोंके शिरोभाग देखने पर सिरकी पगड़ी गिर जायगी अधिकांश मकान पुरानी चालके पत्थरके ह। चौखंभे महल्लेमें ग्वालियरके महाराजका पंचमहला मकान काठसे बना है, जिसके पास 'आमर्दकेश्वर' हैं। कोतवालीके समीप बनारस का चौक है, जिससे पूर्व घड़ीका टावर (मीनार) है।

राजघाट स्टेशनसे विश्वेश्वर गंज बाजार, जिसमें सब भांतिकी थोक और खुदरा जिनिस बिकती हैं, और चौक होती हुई एक चौड़ी सड़क अस्सीघाट पर गई। इसके बांए अर्थात् दक्षिण ओर शहरमें कोई चौड़ी सड़क नहीं है, परन्तु दहिने लंबी, चौड़ी कई सड़कें निकली हैं, और दूर तक शहर फैला हुआ है, जिसमें स्थान स्थान पर अंगरेजी और देशी बड़े बड़े मकान बने हैं। इसी ओर अनेक स्कूल, अनेक जनाना स्कूल, अनेक अस्पताल, सिविल कचहरियां, सिकरौड़की छावनी, जेल, अंगरेजी कबरगाह, बहुतेरे बाग़ान, और अनेक गिर्जा हैं। गिर्जाओंमें सेंटमेरी चर्च सबसे बड़ा है, इसमें चार पांचसौ आदमी बैठ सकते हैं। यह घड़ीका एक टावर है। सिकरौड़की फौजी छावनी राजघाट स्टेशनसे ३ मील पश्चिम और सहरकी बस्तीसे लगभग २ मील पश्चिम उत्तर है, जहां यूरोपियन और देशी फौज रहती है।

ऐसा कहा जा सकता है कि काशीकी पंचक्रोशीके भीतर काशीके मनुष्योंसे अधिक देवमूर्तियां हैं। बहुतेरे स्थानोंमें मूर्तियोंका बड़ा बटोर है, जिनमें अधिक शिवलिंग हैं। मंदिर अनगिनत हैं, जिनमें बहुतेरे मंदिर छोटे हैं। अत्यन्त छोटे मंदिरोंको छोड़कर इस समय १५५० मंदिर अनुमान किए जाते हैं। पुराणोंमें लिखे हुए कितने शिवलिंग, देवमूर्तियां, देवमंदिर और कुंड लोप हो गए हैं, कितने नए स्थापित हुए और बने हैं और कितनोंके स्थान बदल गए हैं। मुसलमानी राज्यके समय पुराने मंदिर तोड़ दिए गए थे।

बनारसमें दस्तकारीका उत्तम नमूना देखा जाता है। यह शहर कारचोबीके काम, पीतलके बर्तन, लकड़ीके खिलौने और रेशमके कामके लिये प्रसिद्ध है। साटन मखमल और रेशमों पर सोने और चांदीके सूतसे कारचोबीके उत्तम २ काम बनते हैं। यहां चांदी सोनेके बहुत बारीक तागे तैय्यार होते हैं और रेशमी साड़ी, दुपट्टे, कमख्वाब, टोपी, सलमा इत्यादि बहुत बनते हैं।

काशीमें समय समय स्थान स्थान पर बहुतसे मेले होते हैं, जिनमें बुढ़वा मंगलका मेला सबसे विख्यात है। चैत्र प्रतिपदाके पीछे जो दूसरा मंगलवार आता है, उस दिनसे आरंभ

होकर शुक्रवार तक यह मेला रहता है। इस मेलेके समय बजड़ों और सैकडों नावों पर चढ़कर काशीके लोग अबीर गुलाल उड़ाते हुए एक ओरसे दूसरी ओर जाते हैं। किसी नाव पर नाच किसी पर गाना बजाना होता है डोंगियों पर पूरी मिठाई और पानकी दूकानें जाती हैं। इस मेलेको देखनेके निमित्त दूर दूरसे लोग आते हैं।

काशीमें ग्रहण–स्नानका बड़ा माहात्म्य है, इसलिये ग्रहणोंमें भारतवर्षके सभी प्रदेशोंसे लाखों यात्री काशीमें आते हैं। ग्रहण–स्नानके समय संपूर्ण घाट मनुष्योंसे पूर्ण हो जाते हैं। बहुतेरे लोग नाव और डोंगियोंपर चढ़कर गंगामें मणिकर्णिका घाटपर जाते हैं। मणिकर्णिकाके आस पासकी गलियोंमें आदमियोंकी बड़ी भीड़ होती है। कई एक दिनोंतक 'विश्वनाथ' के मंदिरमें अत्यंत भीड़ रहती है।

वरुणा–संगमघाट (१)–यहां वरुणानामक एक छोटी नदी पश्चिमसे आकर और दक्षिण घूमकर गंगामें मिलगई है; जिसके तटमें संगमसे पूर्व (अर्थात् वरुणाके बाएं) 'वाशि-ष्ठेश्वर' ऋत्वीश्वर शिव हैं। यह घाट काशीके अति पवित्र ५ घाटोंमेंसे एक है। दूसरे४ पंचगंगा, मणिकार्णिका, दशाश्वमेध और असी–संगमघाट हैं।

वरुणा–संगमके पास 'विष्णु–पादोदक' तीर्थ और 'श्वेतद्वीप' तीर्थ हैं।

भादों सुदी १२ को वरुणा–संगम पर स्नान और दर्शनकी भीड़ होती है और महा वारुणीके समय भी यहां भीड़ होती है।

आदिकेशव, संगमेश्वर, आदि–संगमकी ऊंची भूमिपर सीढ़ियोंके सिरेपर 'आदिके-शव' का पत्थरका शिखरदार मंदिर और जगमोहन हैं। आदिकेशवकी श्याम रंगकी सुंदर चतुर्भुज मूर्ति दो हाथ ऊंची खड़ी है। इनका मुकुट चांदीका है और चारों हाथोंके शंख, चक्र, गदा, पद्ममें चांदी जड़ी है। इनके एक ओर 'जय' और दूसरी ओर 'विजय' की मूर्ति है। आदिकेशवके बाई ओर भीतमें काशीके द्वादशादित्योंमेंसे मंडलाकार ' केशवादित्य ' हैं। मंदिर के उत्तर 'हरिहरेश्वर' शिवका शिखरदार मंदिर है।

आदिकेशवके मंदिरके हातेसे बाहर दक्षिण ओर एक शिखरदार मंदिरमें 'वेदेश्वर' और 'नक्षत्रेश्वर' शिवलिंग हैं, वेदेश्वरके नीचेकी कोठरीमें 'श्वेतद्वीपेश्वर' शिवलिंग हैं।

आदिकेशवके मंदिरसे आगे अर्थात् पूर्व ११ सीढ़ियोंसे नीचे 'संगमेश्वर' का जो काशीके ४२ लिंगोंमेंसे एक हैं, शिखरदार मंदिर है। संगमेश्वरके पूर्वकी दालानमें 'ब्रह्मेश्वर' नामक चतुर्मुख शिवलिंग हैं।

सन १८५७ के बलवेके समय आदिकेशवका मंदिर बंद कर दिया गया था. परंतु सन १८६३ में फिर खोलदिया गया।

आदिकेशवके मंदिरसे उत्तर एक पुरानी बेमरम्मत धर्मशाला है, जिसके घेरेमें 'वामन जी' का शिखरदार मंदिर है।

आदिकेशवके मंदिरसे पश्चिम और किलेके फाटकसे दक्षिण पश्चिम एक छोटेसे मंदिरमें काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'खर्व विनायक' हैं।

आदिकेशवसे पश्चिम दक्षिण लगभग ३०० गज दूर मार्गके समीप एक मंदिरमें काशीके ५६ विनायकों में से 'राजपुत्र विनायक' हैं।

लिंगपुराण-(९२ वां अध्याय) वरुणा और गंगा नदियोंके संगमपर ब्रह्माजीने 'संगमेश्वर' नामक लिंग स्थापन किया।

स्कंदपुराण-(काशीखंड ५१ वां अध्याय) माघ शुक्ल सप्तमीके दिन केशवादित्यके पूजन करनेसे सात जन्मका पाप छूटजाता है।

(५८ वां और १०० वां अध्याय) भाद्र शुक्ल एकादशी, द्वादशी तथा पूर्णिमाको वरुणा संगमपर स्नान करनेसे पिशाचका जन्म नहीं होता और वहां पिण्डदान करनेसे पितरोंकी मुक्ति हो जाती है।

(६१ वां अध्याय) भाद्र शुक्ल द्वादशीको विष्णुपादोदक तीर्थमें जाकर वामनजी और आदिकेशवजीकी पूजा करनी चाहिए।

शिवपुराण-(६ वां खंड १२ वां अध्याय) शिवजीने राजा दिवोदासको काशीसे अलग करनेके लिए विष्णुको मंदराचलसे काशीमें भेजा। विष्णुने पहिले गंगा और वरुणाके संगमपर जाकर और हाथ पांव धोकर सचैल स्नान किया। उसी दिनसे वह स्थान पादोदक तीर्थके नामसे प्रसिद्ध हुआ। विष्णुने उस स्थानपर अपने स्वरूपको पूजा,वही मूर्ति आदिकेशवके नामसे प्रसिद्ध है। (१३ वां अध्याय) विष्णु अपने पूर्ण स्वरूपसे केशवीरूपधर वहां स्थितहुए और अपने एक छोटे अंशसे काशीके भीतरगए; गरुड़ और लक्ष्मी उस स्थानसे कुछ दूर उत्तर स्थित हुई। पादोदक तीर्थसे दक्षिण शंखतीर्थ, उससे दक्षिण चक्रतीर्थ गदातीर्थ पद्मतीर्थ गरुड़तीर्थ, नारदतीर्थ, प्रह्लादतीर्थ, आदि हैं।

राजघाट (२) की ऊंची भूमि-वरुणा संगमसे राजघाटके रेलवे स्टेशनके पासतक वरुणा और गंगाके बीचमें शहरकी भूमिसे ३५ फीट ऊंची जीभकी शकलकी तीनकोनी जमीन है, यहां एक समय राजा बनारसका बड़ा किला था। सन १०१८ ई० में गजनीका महमूद हिंदुस्तानकी नवी चढ़ाईके समय बनारस तक आया था। उसने बनारसके अंतिम राजपूत राजा बनारको जीत कर मार डाला और यहांके किलेको नष्ट करडाला। सन १८५७ के बलवेके समय अंगरेजोंने इस स्थानको वसायाथा, परंतु यहांका पवन स्वास्थ्यकर न होनेके कारण सन १८६५ ई० में इसको छोड दिया।

यहां दो पुराने फाटक, कई एक पुरानी मसजिदें और सन १८६८ ई० का बना हुआ एक सिपाही लाल महम्मदखाँका मकबरा है, जिसके चारों कोनोंकी ओर एक एक छोटे बुर्ज हैं। किलेके बीचमें 'योगीबिरिका' एक छोटा मंदिर है, जिसमें योगीबीरकी मूर्ति खड़ाऊं पर चढ़ी हुई खड़ी है।

राजघाट और प्रह्लादघाटके बीचमें किनारेपर काशीके ४२ लिंगोंमेंसे स्वर्लीनेश्वर और प्रह्लादघाटकी सड़कके समीप काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'वरद विनायक' हैं।

गंगाका पुल-वरुणा संगमसे ३/४ मील पश्चिम दक्षिण राजघाटके स्टेशनके पास गंगापर रेलवे पुल है। यह बड़े बड़े १५ पायोंके ऊपर लोहेका बहुत मजबूत बना है। इनमें ८ पाये सूखी ऋतुओंमें गंगाकी दहिनी ओरकी सूखी भूमिपर रहते हैं। पुलके बीचवाली सडकसे रेलगाडी, घोड़ेगाड़ी और एक्के जाते हैं, जिसके दोनों ओर मुसाफिरोंके जानेके लिये पांच पांच फीट चौडी सडकें हैं। पुलके दोनों छोरोंपर एक एक ऊंचे मकान बने हैं। पुलकी लंबाई ३५८० फीट और गहराई १४१ फीट है। इसके बनानेमें ७५००००० रुपयेसे कुछ अधिक

खर्च पड़ा है। इसका काम सन १८८० ई०में आरंभ हुआ और सन १८८७ ई०में भारतवर्षके गवर्नर जनरल लार्ड डफरिनने इसको खोला, इससे इसका नाम डफरिन ब्रिज पड़ा। पुलका महसूल एक आदमीको एक पैसा लगता है।

प्रह्लादघाट (३)–राजघाटसे कुछ दूर पश्चिम दक्षिण पत्थरसे बांधा हुआ और गंगामें निकला हुआ लंबा चौड़ा और सादा प्रह्लादघाट है। वरुणा–संगमसे यहां तक कोई पक्का घाट नहीं है और राजघाटसे यहां तक गंगाके किनारे कोई प्रसिद्ध वस्तु नहीं है।

प्रह्लादघाटके निकट 'प्रह्लादेश्वर' और ५६ विनायकोंमेंसे 'पिचंडील विनायक' हैं।

नया घाट (४)–प्रह्लादघाटसे आगे अर्थात् दक्षिण पत्थरसे बना हुआ नया घाट है, जिसको शाहाबाद जिलेके चैनपुर भभुआके रहनेवाले बाबू नरसिंहदयालने बनवाया।

नए घाटसे आगे सूखा हुआ तेलिया नाला है, बरसातमें जिससे होकर गंगामें पानी गिरता है। राजघाटसे त्रिलोचन घाट तक घनी बस्ती नहीं है। तेलिया नाला और त्रिलोचन–घाटके बीचमें कच्चे गोलाघाटके ऊपर 'भृगुकेशव' हैं।

त्रिलोचन–घाट (५)–तेलिया नालेसे आगे पत्थरसे बांधाहुआ 'त्रिविष्टप तीर्थ' है, जो त्रिलोचन–घाटके नामसे प्रसिद्ध है। यहां वैशाख मासमें, विशेष कर वैशाख शुक्ल ३ को स्नानकी भीड़ होती है। सीढ़ियोंके दोनों बगलोंपर नीचे दो दो और ऊपर एक एक पाया और घाटपर दोनों ओर दालान है। घाटसे उत्तर शहरके पानी गिरनेके लिए नल है।

घाटसे उत्तर एक मढ़ीमें काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'हिरण्यगर्भेश्वर' शिव लिंग और काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'प्रणवविनायक' हैं। इससे पूर्व गंगाकी ओर एक मढ़ीमें 'शांतनेश्वर' हैं।

त्रिलोचन शिवका मन्दिर–त्रिलोचनघाटसे ऊपर 'त्रिलोचननाथका' शिखरदार मन्दिर है। वर्त्तमान मन्दिरको लगभग ५० वर्ष हुए कि पूनाके नातू वालाने बनवाया। मन्दिरके चारोंओर ४ द्वार हैं। मध्यमें पीतलके हौजमें काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'त्रिलोचन शिव लिंग' हैं, जिनपर गर्मीके दिनोंमें फव्वारेका जल गिरा करता है। हौजमें किनारे पर पार्वतीजीकी मूर्ति है। मन्दिरकी दीवारमें गणेशजी और लक्ष्मीनारायणकी मूर्तियां और पीछेकी ओर महावीरकी मूर्ति है, जिसके समीप काशीके द्वादश आदित्योंमेंसे मंडलाकार अरुणादित्य हैं मन्दिरके चारोंओर आसपासके मकानोंमें लगभग ५० पुराने शिवलिंग और कई देवमूर्तियां हैं।

मन्दिरके नैर्ऋत्य कोणके पास एक छोटे मन्दिरमें 'वाराणसी देवी' हैं, जिनके पश्चिम एक आलेमें ५६ विनायकोंमेंसे 'उद्दंडमुण्ड विनायक' हैं।

त्रिलोचनके मन्दिरके घेरेसे बाहर पूर्व ओर एक मन्दिरमें काशीके अष्ट महालिंगोंमेंसे एक 'नर्मदेश्वर' और दूसरे मन्दिरमें ४२ शिवलिंगोंमेंसे 'आदि महादेव' हैं। जिनके निकट काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'मोदकप्रिय' विनायक हैं। आदि महादेवके घेरेमें एक दूसरे मन्दिरमें अष्ट महालिंगोंमेंसे 'पार्वतीश्वर' हैं। त्रिलोचन महल्लेमें पाठन दरवाजेके निकट अष्टमहाभैरवों-मेंसे 'संहारभैरव' हैं।

स्कंदपुराण–(काशीखंड–६९ वां अध्याय) श्रावण शुक्ल चतुर्दशीको आदि महादेवके पूजन करनेसे बहुत लिंगोंकी पूजाका फल मिलता है।

(७५ वां अध्याय) बैशाख शुक्ल तृतीयाको त्रिलोचनेश्वरके पूजन करनेसे प्रमादकृत पाप निवृत्त होता है ।

(९० वां अध्याय) चैत्र शुक्ल तृतीयाको पार्वतीश्वरकी पूजा करनेसे सौभाग्य मिलता है ।

कामेश्वरका मन्दिर—कामेश्वर शिवलिंग काशीके ४२ लिंगोंमेंसे हैं । इनका मन्दिर मत्स्योदरी तालाबके पूर्व ओर त्रिलोचनघाटके उत्तर त्रिलोचन महल्लेकी गलीमें बाजारके पास दक्षिण है । यहां छोटे छोटे २ चौकमें आठ दश मन्दिर और एक वट वृक्ष है । इनमें जो सबसे बड़ा मन्दिर है उसके मध्यमें ‘ प्रहसितेश्वर ’ और एक ओर पीतलके हौजमें ‘ कामेश्वर ’ शिवलिंग है, और छोटे मन्दिरोंमें और बटवृक्षकी जड़के पास साठ सत्तर शिवलिंग; मोरपर चढ़ी हुई मत्स्योदरी देवी, नृसिंहजी, दुर्वासा ऋषि, सीताराम आदि देवमूर्ति और काशीके द्वादश-आदित्योंमेंसे ‘ खखोलकादित्य ’ हैं ।

स्कन्दपुराण—(काशीखंड ७३ वां अध्याय) बैशाख शुक्ल चतुर्दशीको ‘ मत्स्योदरी तीर्थ’ की यात्रासे सर्व तीर्थोंकी यात्राका फल मिलता है ।

(८५ वां अध्याय) चैत्र शुक्ल त्रयोदशीको कामेश्वरके दर्शन पूजन करनेसे बहुत पुण्य होता है ।

ओंकारेश्वरका मन्दिर—मत्स्योदरीसे उत्तर कोयला बाजारके पास ओंकारेश्वर महल्लेमें एक छोटे टीले पर २४ सीढ़ियोंके ऊपर छोटे मन्दिरमें काशीके ४२ लिंगोंमेंसे ‘ ओंकारेश्वर ’ शिवलिंग है । मन्दिरके चारोंओर द्वार और मन्दिरके पास नीमके कई वृक्ष हैं ।

कूर्मपुराण—(ब्राह्मी संहिता—३१ वां अध्याय) मत्स्योदरीके तटपर पवित्र और गुह्य ‘ ओंकारेश्वर ’ शिवलिंग हैं ।

स्कन्दपुराण—(काशी खंड—७४ वां अध्याय) वैशाख शुक्ल चतुर्दशीको प्रणवेश्वर—यात्रासे भुक्ति मुक्ति मिलती है ।

अढ़ाई कंगूरा मसजिद—ओंकारेश्वरके मन्दिरसे पूर्वोत्तर कुछ दूर बनारसकी बड़ी मसजिदोंमेंसे एक अढ़ाई कंगूरा नामक मसजिद है । यह दो मंजिली है, इसके बडे आंगनके दरवाजे पर बड़ा फाटक लगा है ।

हिन्दू, बौद्ध और मुसलमान इन तीनोंके मतोंके मन्दिरोंके सामान इस मसजिदमें देख पड़ते हैं । इससे जान पड़ता है कि तीनों मजहबवाले अपनी अपनी अमलदारीमें एकही समानको अपने अपने मन्दिर बनानेके काममें लाए होंगे ।

गंज शाहिद मसजिद—अढ़ाई कंगूरा मसजिदसे पूर्वओर यह मसजिद है । इसके छोटे कितेमें ४ कत्तारोंमें नव नव फीट ऊंचे ३२ खंभे और बड़े कितेमें दश दश फीट ऊंचे ४० खंभे लगे हैं ।

राजा बनारके किलेपर धावा करते समय जो मुसलमान सिपाही मारे गये थे, वे यहां गाड़े गए थे, उन्हींके यादगारमें यह मसजिद है ।

महथाघाट (६)—त्रिलोचन घाटके आगे पत्थरसे बांधा हुआ महथा घाट मिलता है जिसके ऊपर ‘ नर नारायण ’ का मन्दिर है । यहां पौष मासकी पूर्णिमाको स्नानकी भीड़ होती है ।

(काशीखंड—६१ वां अध्याय) पौष मासमें नर नारायणके दर्शन पूजनसे बदरिकाश्रम तीर्थकी यात्राका फल होता है और गर्भवासका भय छूट जाता है ।

गायघाट (७)-महथाघाटसे आगे गंगामें निकली हुई भूमिपर पत्थरसे बना हुआ गायघाट (गोप्रेक्ष तीर्थ) है । घाटपर पत्थरके चौखूटे कई पाये और घाटके दोनों ओर दूर तक कच्चा घाट है । घाटके निकट हनुमानजीके मन्दिरमें काशीकी ९ गौरियोंमेंसे ' मुख-निर्मालिका ' गौरी हैं ।

लालघाट (८)-यह ' गोपीगोविंद ' तीर्थ लालघाटके नामसे प्रसिद्ध है । घाट पत्थरसे बांधा हुआ है । अगहनकी पूर्णिमाको यहां स्नानकी बड़ी भीड़ होती है । घाटसे ऊपर एक मन्दिरमें 'गौरीशंकर' नामके काशीके प्रसिद्ध ४२ लिंगोंमेंसे 'गोप्रेक्षेश्वर' शिवलिंग और 'गोपी-गोविंद' की मूर्ति हैं ।

स्कंदपुराण—(काशीखंड-६१ वां अध्याय) गोपीगोविंदके पूजनसे भगवान्‌की माया स्पर्श नहीं करती (८४ वां अध्याय) गोपीगोविंद तीर्थमें स्नान करनेसे गर्भवास छूट जाता है ।

सीतलाघाट (९)-सीतलाघाटके दक्षिण ओर ' सीतलादेवी' का मन्दिर है ।

राजमन्दिरघाट (१०)—स्नान करनेको यह लंबा घाट है । घाटके ऊपर एक पुस्ता और एक मकानकी पीछेकी दीवार है, जिसमें पहले एक राजा रहता था, इसलिये इस घाटका यह नाम पड़ा । यहां हनुमानजीके मन्दिरमें 'लक्ष्मी-नृसिंह' की मूर्ति है ।

(काशीखंड-६१ वां और ८४ वां अध्याय) लक्ष्मनृसिंहके दर्शनसे भय छूटजाता है और लक्ष्मीनृसिंह तीर्थमें स्नान करनेसे निर्वाणपद मिलता है ।

ब्रह्माघाट (११)-यह बहुत पुराना घाट है । इसके सिरेपर कई वृक्ष हैं । लगभग ५५ वर्ष हुए कि बाजीराव पेशवाने इस घाटकी मरम्मत करवाई थी । ब्रह्माघाटके ऊपर एक गलीमें 'ब्रह्मेश्वर महादेव' का मन्दिर है ।

दत्तात्रेय-ब्रह्माघाटसे ऊपर कुछ दूर पश्चिम मुखके मन्दिरमें सोनहले सिंहासन पर शुक्ल वर्ण और ६ भुजावाले दत्तात्रेय खड़े हैं । मन्दिरके आगे बहुत बड़ा दालान है । यह मन्दिर संवत् १९२१ का बना हुआ है ।

दुर्गाघाट-(१२)-घाटके पास 'नृसिंह' हैं ।

स्कंदपुराण-(काशीखंड-६१ वां अध्याय) वैशाख शुक्ल चतुर्दशीको 'खर्व नृसिंह' के दर्शन पूजन करनेसे संसार-भय निवृत्त होता है ।

ब्रह्मचारिणी दुर्गा-घाटसे ऊपर एक पंचमंजिले मकानके नीचेवाले मंजिलकी एक कोठरीमें श्यामवर्ण काशीकी ९ दुर्गाओंमेंसे 'ब्रह्मचारिणी' दुर्गा हैं ।

ग्वालियरके दीवान दिनकररावका राममन्दिर-दुर्गाघाट और ब्रह्मचारिणी दुर्गासे उत्तर यह मन्दिर है । इस उत्तम मन्दिरमें सोनहले बड़े सिंहासन पर बहु मूल्य वस्त्रोंसे सज्जित राम, लक्ष्मण और जानकीकी मूर्तियां खड़ी हैं । राम और लक्ष्मणके शिरोंपर सुन्दर पगिया है । मन्दिरके चारोंओर नकाशीदार खंभ लगे हुए और शीशे टँगेहुए दालान हैं । मन्दिरके आगे दो मंजिला और आगेकी ओर लंबा मंडप है । इसके मध्यमें सहन और एक ओर जगमोहन और ३ ओर उत्तम खंभे लगे हुए दालान है । मंडपमें बहुतेरे बहुमूल्य झाड़ और दीवारगीरें लगी हैं और बड़े बड़े आइने खड़े किए गए हैं, जिनमें दर्शकगण और मन्दिरके असबाब देख पड़ते हैं । इस स्थान पर पुजारी और अधिकारियोंके अतिरिक्त हथियारबंद कई नौकर हैं । मन्दिरके आस पास दीवान साहबके कई मकान हैं ।

पंचगंगाघाट (१३) —यह घाट काशीके पांच अतिपवित्र घाटोंमेंसे एक है। यहां नदियां गुप्त रहकर गंगामें मिली हैं, इसीसे इस घाटका नाम 'पंचगंगा' है। पंचगंगामें 'विष्णुकांची तीर्थ' और 'बिंदु तीर्थ है।

लगभग ३०० वर्ष हुए आंबेरके राजा मानसिंहने इस घाटको पत्थरसे बनवाया था। घाटके कोनेके पास पत्थरका एक दीप-शिखर है, जिस पर लगभग १००० दीप रखनेके लिए अलग अलग स्थान बने हैं, जिनपर उत्सवके समय दीप जलाए जाते हैं घाटसे ऊपर बहुतसे देवमंदिर हैं। कार्तिक भर पंचगंगा घाटपर कार्तिक स्नानकी भीड़ रहती है। त्रिलोचनघाटसे यहां तक लगातार बड़े बड़े मकान नहीं ह।

स्कंदपुराण—(काशीखंड—५९ वां अध्याय) प्रथमही धर्मनदका पुण्य धूतपापामें मिल गया था। किरणा, धूतपापा, सरस्वती, गंगा और यमुना इन पांचोंके योग होनेसे पंचनद, जिसको पंचगंगा कहते हैं, विख्यात हुआ है। इसका नाम सतयुगमें धर्मनद, त्रेतामें धूतपापा द्वापरमें बिंदुतीर्थ था, और कलियुगमें पंचनद कहलाता है। इस अध्यायमें पंचनदकी उत्पत्ति की कथा है (६० वां और ८४ वां अध्याय) कार्तिक मासभर न हो सके तो एकादशीसे पूर्णिमा तक पंचगंगा स्नान और बिंदुमाधवके दर्शन करनेसे सब पाप दूर होते हैं। कार्तिकमें एक दिन स्नान करनेसे १०० वर्ष तपस्या करनेका फल मिलता है और होम करनेसे यज्ञ करनेका फल होता है।

बिंदुमाधवका मन्दिर—पंचगंगा—घाटके बिना शिखरके मन्दिरमें बड़े सिंहासन पर छोटी श्यामल चतुर्भुज बिंदुमाधवकी मूर्ति है। चारों भुजाओंके शंख, चक्र, गदा और पद्म, और शिरका मुकुट सुनहला और सिंहासन, चौकी आदि पीतलकी हैं।

शिवपुराण—(६ वां खंड—१४ वां अध्याय) राजा दिवोदासके काशीसे विरक्त होने पर विष्णुने गरुड़को शिवके समीप भेजा, अग्निबिंदु ब्राह्मणको देखकर उसपर कृपा किया और फिर वह पंचनदके ऊपर बैठकर शिवका स्मरण करने लगे।

स्कंदपुराण (काशीखंड ६० वां अध्याय) विष्णुने पंचनद पर तपस्वी अग्निबिंदु ब्राह्मण को वरदान दिया कि मैं इस स्थानपर बिंदुमाधवके नामसे स्थित हूंगा और इस स्थानका नाम तुम्हारे नामके अनुसार बिंदुतीर्थ होगा।

पंचगंगेश्वर शिव—बिंदुमाधवके समीपही उत्तर एक मन्दिरमें पंचगंगेश्वर शिवलिंग हैं। यहांके अर्घ, हौज और चौकठ पर पीतल जड़ा है और नन्दी बड़ा है। कोई कोई कहते हैं कि मन्दिरके बाहर पश्चिम मसजिदसे उत्तर एक मकानके बगलके नीचे गलीके किनारे गहरे स्थानमें पंचगंगेश्वर शिवलिंग हैं, जिनको कोई कोई ' दधिकल्पेश्वर ' कहकर पुकारते और कहते हैं कि पंचगंगेश्वर गुप्त हैं।

माधवराय घाट (१४)—यह पंचगंगा घाटका एक हिस्सा जान पड़ता है। इसकी सीढ़ियां एक पुराने फाटकके पास ऊपरको गई हैं, जहांसे नीचेके घाट और गंगाके मनोहर दृश्य देख पड़ते हैं।

माधवरायका धरहरा घाटके ऊपर ऊंची भूमि पर औरंगजेबकी बनवाई हुई एक बड़ी और सुन्दर काशीकी बड़ी मसजिदोंमेंसे एक पत्थरकी मसजिद है, जो बिंदुमाधवके बड़े मंदिरका सामग्रीसे बनी थी। मसजिदके आगे सुन्दर ऊंचे ३ मेहराब हैं और आगेके दोनों बाजुओं

पर मसजिदकी नेवसे १४२ फिट ऊंचे तीन मंजिले दो बुर्ज अर्थात् धरहरे हैं, जिनका व्यास नीचे ८ $\frac{१}{४}$ फीट और ऊपर ७ $\frac{१}{२}$ फीट है । ऊपर चढ़नेके लिये बुर्जोंके भीतर चक्राकार सीढ़ियाँ बनी हैं । बुर्जों पर चढ़नेसे सारा शहर देख पड़ता है । मसजिदका अधिकारी मुसलमान एक पैसा लेकर लोगोंको बुर्ज पर चढ़ने देता है । इसके बनानेवाला माधवराय नामक एक हिंदू कारीगर था, इसीसे बुर्जोंका नाम माधवरायका धरहरा पड़ा ।

द्वारिकाधीशका मन्दिर औरंगजेबकी मसजिदके पीछे एक मन्दिरमें द्वारिकाधीशकी और दूसरेमें राधाकृष्णकी मूर्तियाँ हैं । दोनों मन्दिरोंकी मूर्तियोंका उत्तम शृङ्गार और पीतल जड़े हुए सिंहासन हैं ।

लक्ष्मणबाला घाट (१५)–गंगाके घुमावके पास यह पक्का घाट है, जिसके सिरेपर पूनाके बाजीराव पेशवाका बनवाया हुआ कालेरंगकी सुन्दर अनेक खिड़िकियों वाला एक उत्तम मकान है, जो अब महाराज सेन्धियाके अधिकारमें है ।

लक्ष्मणबालाका मन्दिर–लक्ष्मणबाला घाटके सिरे पर ग्वालियरके महाराज सेंधियाका बनवाया हुआ लक्ष्मणबालाजी अर्थात् वेङ्कटेश भगवान्‌का सुन्दर मन्दिर है । जिसमें श्यामल चतुर्भुज उत्तम शृङ्गारसे सज्जित सुन्दर सिंहासनमें लक्ष्मणबालाजीकी मूर्ति है । जिनके दोनों ओर छोटी छोटी एक एक मूर्तियां खड़ी हैं और एक ओर सोनेका सूर्य्य और दूसरी ओर चांदीका चंद्रमा है । मन्दिरके आगे जगमोहनके स्थान पर एकही छतके नीचे चारों बगलों पर ३२ उत्तम खंभोंका दालान और मध्यमें आंगन है । रास अथवा कथा आंगनमें होती है और चारोंओरके दालानमें दर्शक वा श्रोतालोग बैठते हैं । मन्दिरके चारोंओर आंगनके बगलोंमें मकान हैं ।

त्रेताका राम–लक्ष्मणबालाके मन्दिरके पूर्वओर धरहरेके पश्चिम एक बड़े भारी मकानके दालानमें राम, लक्ष्मण और जानकीकी मूर्तियां हैं । इनका शृङ्गार सुन्दर है ।

गभस्तीश्वर–लक्ष्मणबालाके उत्तर एक छोटे मन्दिरमें काशीके अष्ट महालिंगोंमेंसे ' गभस्तीश्वर ' शिवलिंग हैं ।

मंगलागौरी–गभस्तीश्वरके मन्दिरके पास एक कोठरीमें काशीकी ९ गौरियोंमेंसे ' मंगला गौरीकी ' मूर्ति है ।

यहां द्वादश आदित्योंमेंसे ' मयूखादित्य ' और ५६ विनायकोंमेंसे ' मित्र विनायक ' हैं ।

स्कंदपुराण–(काशीखंड-४९ वां अध्याय) अर्कवारको गभस्तीश्वर और मंगलागौरीके दर्शन करनेसे फिर जन्म नहीं होता और चैत्र शुक्ल तृतीयाके दिन मंगलागौरीके पूजन करनेसे सौभाग्य मिलता है ।

ग्वालियरके दीवान बालाजी पन्त जठारका मन्दिर–घुमाव रास्तेकी सीढ़ियोंसे उतर कर लक्ष्मणबाला घाट पर इस मन्दिरके पास पहुँचना होता है । इस उत्तम मन्दिरमें बहुमूल्य वस्त्रोंसे सुशोभित शुक्ल वर्ण लक्ष्मीनारायणकी मूर्ति है । मन्दिरके आगेकी दीवार और खंभे पर जड़ावका काम है और दीवारके पास द्वारके दोनों ओर आदमीसे अधिक बड़े एक एक सिपाही खड़े हैं, जिन पर उत्तम काम किया हुआ है । खंभों और सिपाहियों पर कपड़ा ओहार रहता है । और आसपास मकान बने हैं ।

रामघाट (१६)-२०० वर्षसे अधिक हुए इस बड़े घाटको जयपुरके महाराजने बनवाया था। यहां रामतीर्थ है, रामनवमीके दिन यहां स्नानकी बड़ी भीड़ होती है। घाटके शिरे पर जयपुरके महाराजके बनवाए हुए एक मन्दिरमें राम और जानकीकी धातु विग्रह बहुत सुन्दर मूर्ति है। मन्दिरके आगे जगमोहनके स्थान पर लंबा और सुन्दर दालान है।

रामघाट पर काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'कालविनायक' हैं और घाटसे थोडीदूर पर नीचेके मंजिलमें 'आनंदभैरव' है।

स्कंदपुराण-(काशीखंड-८४ वां अध्याय) चैत्र शुक्ल नवमीको रामतीर्थ यात्रासे सर्व धर्मका फल होता है।

अग्नीश्वर घाट (१७)-यह घाट साधारण है। इसके दोनों बगलोंमें एक एक दालानहैं। पूनाके अंतिम पेशवा बाजीरावने इसको बनवाया था। घाटसे ऊपर एक मन्दिरमें 'अग्नीश्वर शिव' और दूसरे मन्दिरमें काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'उपशांत शिव' हैं।

भोंसला घाट (१८)-लगभग १०० वर्ष हुए, नागपुरके राजाने, जिनकी भोंसलाकी पदवी है, इस घाटको बनवाया था; जो गंगाके किनारेके उत्तम घाटोंमेंसे एक है। घाटके ऊपर सुन्दर पत्थरके खंभे लगे हुए दालान हैं, जिनके भीतर दोहरी मेहराब लगा हुआ दरवाजा है। इस जगहसे ऊपर लक्ष्मीनारायणके मन्दिर तक सीढ़ियाँ लगी हैं और दालानके आगे दोनों ओर एक एक पाया बना है।

भोंसला घाटके पास 'नागेश्वर' और ५६ विनायकोमेंसे 'नागेश विनायक' एकही मंदिरमेंहै।

भोंसलाका मन्दिर-भोंसला घाटके सिरेपर भोंसलाका बनवाया हुआ सिखरदार एक बड़ा मन्दिर है, जिस पर बाहर चारोंओर नीचेसे ऊपर तक खोदकर छोटी छोटी बहुतसी मूर्तियां बनी हैं। मन्दिरमें बहुमूल्य वस्त्र भूषणोंसे युक्त लक्ष्मीनारायणकी सुन्दर मूर्ति है मन्दिरके आगे जगमोहनके स्थान पर ३० खंभे लगे हुए लक्ष्मणबालाके मन्दिरके दालानके समान लंबा दालानहै और मन्दिरके चारोंओर आंगनके बगलोंमें मकान और ओसारे हैं।

गंगामहल घाट (१९) -भोंसलाघाटसे दक्षिण गंगामहल घाट है। घाटके बीचमें गोलाकार एक पाया है, जिसके दोनों ओर आठ पहला एक एक पाया है। तीनों पर जानेकी सीढियां लगी हैं। घाटके सिरेपर महाबीरकी २ मूर्तियां और गंगाजीका एक मन्दिर है।

संकटाघाट (२०)-यह पत्थरसे बांधा हुआ घाट 'यमतीर्थ' है। घाटपर एक मन्दिरमें यमेश्वर और एक मन्दिरमें काशीके १२ आदित्योंमेंसे 'यमादित्य' है। कार्तिक शुक्ल द्वितीयाको यहां स्नानकी भीड़ होती है।

स्कंदपुराण-(काशीखंड ५१ वां अध्याय) भरणी,मंगल और चतुर्दशीके योग होने पर यहां तर्पण श्राद्ध करनेसे पितरोंके ऋणसे मुक्ति होती है।

घाटसे ऊपर महाराष्ट्रीय स्त्री गहना बाईका बनवाया हुआ 'संकटा देवी' का मन्दिर है। एक आंगनके चारोंओर दो मंजिले मकान हैं। एक ओरके मकानमें चांदी जड़े हुए बड़े सिंहासनमें आदमीके समान बड़ी 'संकटा देवी' की मूर्ति है, जो काशीकी ९ दुर्गाओंमेंसे 'महागौरी' दुर्गा हैं। दालानमें पत्थरका बड़ा सिंह है। संकटाजीके मन्दिरके बाहर फाटकके दक्षिण उसी मन्दिरमें 'कृष्णेश्वर' और 'याज्ञवल्क्येश्वर' शिवलिंग हैं। जिनके सामने एक

मन्दिरमें बड़े अर्घे पर मोटा और बड़ा 'हरिश्चन्द्रेश्वर' शिवलिंग है। थोड़ी दूर जाने पर एक मन्दिरमें 'वसिष्ठेश्वर' 'वामदेवेश्वर' और 'अरुंधती देवी' हैं। इस मन्दिरके द्वार पर 'चिंतामणि-बिनायक' हैं, जिससे पश्चिमोत्तर 'सेनाबिनायक' और संकटाजीके मन्दिरके बाहर पूर्व ओर कोनेमें 'विंध्यवासिनी' देवीका मन्दिर है।

वसिष्ठ वामदेवसे थोड़ी ही दूर सेंधियाघाट (बीर तीर्थ) पर काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'आत्माबीरेश्वर' का मन्दिर है। इसी मन्दिरमें काशीकी ९ दुर्गाओंमेंसे 'कात्यायनी दुर्गा' हैं। इनके पासके दालानमें 'मंगलेश्वर' और 'बुधेश्वर' शिवलिंग और ५६ विनायकोंमेंसे 'मंगल-विनायक' और बहुतसे दूसरे दूसरे देवता हैं। गलीकी दूसरी ओरके मन्दिरमें 'बृहस्पतीश्वर' आदि कई शिवलिंग और कई देवमूर्तियां हैं। इनमेंसे कई शिवलिंग हैं, जिनके सामने फाटकके बगलमें 'पार्वतीश्वर' शिवलिंग है।

स्कंदपुराण-(काशीखंड-१५ वें अध्यायसे १७ वें अध्याय तक) बुधाष्टमीके योगमें बुधेश्वरके पूजन करनेसे सुबुद्धि प्राप्त होती है, गुरुपुष्य योगमें बृहस्पतीश्वरके पूजन करनेसे महापातक निवृत्त होता है और भौमयुक्त चतुर्थी होनेपर मंगलेश्वरके पूजन करनेसे ग्रहबाधाकी निवृत्ति होती है।

सिद्धेश्वरी देवी-एक मन्दिरमें 'सिद्धेश्वरीदेवी' हैं जिसके पास 'सिद्धेश्वर' 'कलियुगेश्वर' और काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'चंद्रेश्वर' तीन शिवलिंग हैं। दूसरे आंगनमें 'चंद्रकूप' नामक एक पक्का कूंआ और कई देवता हैं इस कूपपर सोमावती अमावास्याके दिन पिंडदानकी भीड़ होती है।

'विरेश्वर' शिवलिंग नीमवाली ब्रह्मपुरीमें हैं।

स्कंदपुराण-(काशीखंड-१४ अध्याय) प्रतिमासकी अमावास्याको चंद्रकूपयात्रासे भुक्ति मुक्ति मिलती है और सोमवती अमावास्याको चंद्रकूपपर श्राद्ध करनेसे गयाश्राद्धका फल होता है।

सेंधियाघाट (२१)-सङ्कटाघाटसे दक्षिण मणिकर्णिका-घाटसे लगा हुआ उत्तरकी ओर हीन दशामें सेन्धियाघाट है। देखनेसे जान पड़ता है कि यह बहुत उत्तम बना था। खोदावका काम बहुत जगह पूरा नहीं हुआ है। घाटके ऊपरके भागोंकी नेव हटगई है और सारी बनावट पीछेकी ओर गिर गई है। सन १८३० ई० के लगभग ग्वालियरकी महारानी वैजाबाईने इसको बनवाया था। घाटकी सीढ़ियोंपर एक बड़ा मन्दिर है, जिसके नीचेका भाग वर्षाकालमें पानीमें डूब जाता है। यह घाट 'बीरतीर्थ' है।

स्कन्दपुराण-(काशीखंड-८४ वां अध्याय) बीरतीर्थमें स्नान करके बीरेश्वरके पूजन करनेसे सन्तान-प्राप्ति होती है।

मणिकर्णिका-घाट (२२)-यह घाट काशीके अति पवित्र पांच घाटोंमेंसे एक और दूसरे चारोंसे भी अधिक पवित्र और विख्यात है। इसके ऊपर 'मणिकर्णिका-कुण्ड' है, इससे इस घाटका यह नाम पड़ा है। इन्दौरकी महारानी अहिल्या बाईने, जिसने सन १७६५ ई०से सन १७९५ तक राज्य किया, सन ई० के १८ वें शतकके अन्तमें इस घाटको बनवाया था। गङ्गा और मणिकर्णिकाके बीचमें विष्णुके चरणचिह्न हैं, जिसके पास मरे हुए राजा लोग और दूसरे मान्यगण जलाए जाते हैं। इसके पास एक कोठरीमें अहिल्या बाईकी

खण्डित मूर्ति है। कुण्डसे दक्षिण पश्चिम अहिल्या बाईका बनवाया हुआ विशाल मन्दिर है, जिसके मध्यमें एक शिवलिंग और एक ओर 'तारकेश्वर' शिवलिंग हैं। गङ्गाके किनारे नकाशी दार कई मन्दिर हैं।

मणिकर्णिका घाट, काशी.

काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'महेश्वर' नामक बहुत बड़ा फटा हुआ लिंग एक मढ़ीमें है।

मणिकर्णिका–कुण्ड–नीचेके मन्दिरकी सतहसे २० सीढ़ियोंके ऊपर मणिकर्णिका कुण्डके ऊपरका फरस है कुण्डमें चारोंओर नीचे तक पत्थरकी २१ सीढ़ियां और ऊपर चारों बगलों पर लोहेके जङ्गलका घेरा है। कुण्ड सिरे पर लग भग ६० फीट लम्बा और नीचे :लग भग २० फीट लम्बा और २ फीट चौड़ा है, गंगासे कुण्डके पेन्दी तक गंगासे पानी आनेके लिये एक नाला है। कभी कभी कुंडमें केवल दो तीन फीट ऊंचा पानी रहता है।

यहां नित्य स्नान करने वाले यात्रियोंकी भीड़ रहती है और सैकड़ों आदमी जप पूजा करते हुए बैठे देख पड़ते हैं।

काशीके यात्री प्रथम मणिकर्णिका-कुण्ड और गङ्गामें स्नान करके विश्वनाथका दर्शन करते हैं।

शिवपुराण–(८ वां खण्ड-३२ वां अध्याय) शिवजीने अपनी बाईं भुजासे विष्णुको प्रकट किया, विष्णुने शिवकी आज्ञासे तप करनेके निमित्त काशीमें पुष्करिणीको खोदा और अपने पसीनेसे उसे भरकर वह तप करने लगे। बहुत दिनोंके उपरान्त उमा सहित सदाशिवजी वहां प्रकट हुए शिवजीने अपना सिर हिलाया और विष्णुकी स्तुति कर अपनी प्रसन्नता प्रकटकी उसी दशामें शिवजीके कानसे मणि उस स्थान पर गिर पड़ी, जिससे वह स्थान मणिकर्णिका नामसे प्रसिद्ध हुआ।

स्कन्दपुराण-(काशीखण्डके २६ वें अध्यायमें भी यह कथा है और लिखा है कि विष्णुने अपने चक्रसे पुष्करिणीको खोदा,इसलिए इसका नाम चक्रपुष्करिणी भी हुआ) (काशीखण्ड-२१ वां और ८४ वां अध्याय) इसमें स्नान करनेसे गर्भवास छुट जाता है ।

अमेठीके राजाका मन्दिर-मणिकर्णिका कुण्डके पश्चिम पासही अलवरके महाराजका उत्तम शिवमन्दिर बन रहा है; जिससे पश्चिम अमेठीके राजाका पञ्चायतन मन्दिर है । बीच वाले मन्दिरमें दुर्गाजीकी मूर्ति और चारों कोनोंमें पीतल जड़े हुए हौजोंमें एक एक शिवलिंग हैं । बीचवाले मन्दिरके चारों दिशाओंमें मेहरावदार नकाशीदार चार चार खम्भोंका दालान है । चारोंओर घोडमुहोंके स्थानों पर अच्छी सङ्गतराशीकी पचास साठ पुतलियां हैं । पांचों मन्दिरोंके शिखरों पर ऊंचे सुनहले एक एक कलश और बहुतेरी सुनहरी कलशियां लगी हैं । मन्दिरसे पूर्व ओसारेमें पीतलका परदार सिंह और पीतलका नन्दी खड़ा है । मन्दिरके चारों ओर आंगनके बगलोंमें मकान हैं ।

सिद्धिबिनायक-अमेठीके मन्दिरके पासही पश्चिमोत्तर एक कोठरीमें काशीके ५६ बिनायकोंमेंसे 'सिद्धिबिनायक' हैं ।

मणिकर्णिकेश्वर-काकारामकी गलीमें बर्द्धमानके राजाकी कोठीके पश्चिम एक कोठरीके भीतर गहरे स्थानमें काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'मणिकर्णिकेश्वर' हैं । बहुतेरे लोग ऊपरहीसे शिवके ऊपर जल पुष्प आदि छोड़ते हैं । एक दूसरी कोठरीसे २१ सीढ़ियोंके नीचे जाने पर शिवलिंगके पास आदमी पहुँचता है ।

ज्योतिरूपेश्वर-मणिकर्णिकेश्वरके पास एक मकानमें काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'ज्योतिरूपेश्वर' शिवलिंग हैं । उनके पास कई छोटे छोटे लिंग हैं ।

मणिकर्णविनायक-मणिकर्णिका-घाटसे थोड़ी दूर ज्ञानवापी जानेवाली गलीमें स्वर्गद्वार पर चौकीके पास एक छोटे मन्दिरमें काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'मणिकर्णविनायक' हैं ।

यवविनायक-मणिकर्णिकासे ज्ञानवापी जानेके रास्तेमें (ब्रह्मनालमें) बाई ओर गलीसे १२ सीढ़ियोंके ऊपर एक छोटे मन्दिरमें 'यवविनायक' हैं, जिनको 'सप्तावरणविनायक' भी कहते हैं । यहां पंचकोशी यात्रा समाप्त होती है । यहांसे आगे थोड़ी दूर पर 'स्वर्गद्वारेश्वर' समीपही पश्चिम 'पुलहेश्वर' और 'पुलस्तेश्वर' हैं । थोड़ी दूर आगे कुंजबिहारीजी गंगापुत्रके मकानमें काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'अमृतेश्वर' शिवलिंग हैं ।

मणिकर्णिकासे ज्ञानवापी जानेवाली गलीके दोनों बगलोंपर छोटे छोटे मन्दिरोंमें और आलोंमें बहुतेरे शिवलिंग और देवमूर्तियां हैं और दोनों ओर कंगले मंगते बैठे रहते हैं । दहिनी ओर एक स्थानपर दर्भगाके महाराजका सुन्दर मन्दिर है, जिसके सामने दक्षिण रास्तेके दूसरे ओर गहरे और अंधेरे स्थानमें कई सीढ़ियोंके नीचे 'नीलकंठेश्वर' शिवलिंग हैं ।

ज्ञानवापी-विश्वनाथके मन्दिरसे उत्तर ४८ खंभोंपर चारोंओरसे खुला हुआ पत्थरका सुन्दर मंडप है, जिसको ग्वालियरकी महारानी बैजाबाईने सन १८२८ ई० में बनवाया इसीमें पूर्व किनारेके पास 'ज्ञानवापी' नामसे विख्यात एक कूप है। सन ई०की १७ वीं सदी में बादशाह औरंगजेबने जब विश्वनाथके पुराने मन्दिरको तोड़ दिया, लोग कहते हैं कि तब विश्वनाथ शिवलिंग इसीमें चले गए । कूप पत्थरकी टट्टीसे घेरा हुआ है । इसके मुखपर लोहेकी

चादर दी गई है। यात्रीगण कूपमें जल अक्षत आदि गिराते हैं। कूपके निकट एक पुजारी बैठा रहता है, जो यात्रियोंके हाथमें पवित्र जल देता है।

ज्ञानवापीके पूर्वोत्तर मैदानमें पुराने नंदीके स्थानपर नैपालके महाराजका दिया हुआ ७ फीट ऊंचा एक बड़ा 'नंदी' (बैल) है, जिसके पास एक चबूतरे पर बहुत छोटे मन्दिरमें 'गौरीशंकर' की मूर्त्ति है। शिवके वाम जंघे पर गणेशको गोदमें लिए हुये पार्वतीजी बैठी हैं। इस मन्दिरके नीचे 'तारकेश्वर' शिवका स्थान है. जो काशीके ४२ लिंगोंमेंसे और ११ महारुद्रोंमेंसे हैं।

स्कंदपुराण—(काशीखंड--३३ वां अध्याय) ज्ञानोदय तीर्थके स्पर्श मात्रसे सर्व पाप छुट जाता है और अश्वमेधका फल मिलता है। फल्गुतीर्थमें स्नान करके पितरोंके तर्पण करनेसे जो फल मिलता है, ज्ञानोदय तीर्थमें श्राद्ध कर्म करनेसे वही फल होता है। कृष्ण अष्टमी गुरु पुष्य व्यतीपात योगमें ज्ञानवापीके निकट पिंडदान करनेसे कोटि गयाके श्राद्धका फल मिलता है। शिवतीर्थ, ज्ञानवापी, ज्ञानतीर्थ, तारकाख्य तीर्थ और मोक्षतीर्थ इसीका नाम है।

विश्वनाथका मन्दिर—ज्ञानवापीसे दक्षिण काशीके मन्दिरोंमें सबसे अधिक प्रख्यात विश्वनाथ शिवका मन्दिर है। और संपूर्ण शिवलिंगोंमें विश्वनाथ अर्थात् विश्वेश्वर शिव प्रधान हैं।

विश्वनाथका शिखरदार मन्दिर ५१ फीट ऊंचा पत्थरका सुन्दर बना हुआ है। मन्दिरके चारों ओर पीतलके किंवाड़ लगे हुए एक एक द्वार हैं। मन्दिरके पश्चिम गुंबजदार जगमोहन और जगमोहनके पश्चिम इससे मिला हुआ 'दंडपाणीश्वर' का पूर्व मुखका शिखरदार मन्दिर है। इन मन्दिरोंको सन ई० की १८ वीं सदीमें इंदौरकी महारानी अहिल्या बाईने बनवाया था। विश्वनाथके मन्दिरके शिखर पर और जगमोहनके गुंबजके ऊपर तांबेके पत्तर पर सोना का मुलम्मा है, जिसको लाहौरके महाराज रणजीतसिंहने अपनी अंतकी बीमारी (सन १८३९ई०) में दिलवाया। जगमोहनमें कई देवमूर्तियां और ५ बड़े घंटे हैं।

मन्दिरके आंगनके पश्चिमोत्तर कोनके पास पार्वती अर्थात् नवगौरियोंमेंसे 'सौभाग्य-गौरी' और गणेशका, पूर्वोत्तर कोनके पास भोग—अन्नपूर्णा अर्थात् नवगौरियोंमेंसे 'शृङ्गारगौरी' का, पूर्व दक्षिण 'अविमुक्तेश्वर' का, और दक्षिण पश्चिम कोनके पास 'सत्यनारायण' (विष्णु) का मन्दिर है। उत्तर और दक्षिणके दालानोंमें बहुतेरे शिवलिंग और देवमूर्तियां हैं। दंडपाणीश्वरके मन्दिरके पश्चिम-दक्षिण पासही मैदानमें 'शनैश्वरेश्वर' शिवलिंग हैं। आंगनका दरवाजा दक्षिण है, जिसके ऊपर गणेशकी पीतलकी मूर्ति और एक ओर चन्द्रमा और दूसरी ओर सूर्य्य हैं।

शिवपुराण—(८ वां खंड—१ ला अध्याय) शिवके १२ ज्योतिर्लिंग पूर्ण अंशसे इन देशोंमें विराजमान हैं। (१) सौराष्ट्रदेशमें सोमनाथ, (२) श्री शैलपर मल्लिकार्जुन, (३) उज्जैनमें महाकाल, (४) अमरेश, (५) हिमालयपर केदारेश, (६) डाकिनी तीर्थमें भीम-शंकर, (७) काशीमें विश्वनाथ, (८) गौतमीके तटपर त्र्यंबक, (९) चिता भूमिमें वैद्यनाथ, (१०) दारुक वनमें नागेश, (११) सेतुबंधपर रामेश्वर, और (१२) शिवमहमें घुसृणेश।

(काशीखंडके ९९ वें अध्यायमें विश्वेश्वरकी पूजाका विधान और माहात्म्य विस्तारसे लिखा है) ३३ वां अध्याय एक दिन शिवजीने संसारके [illegible] यह समझा कि

ब्रह्माने हमारी आज्ञासे सृष्टि उपजाई तो सब ब्रह्मांडके जीव अपने अपने कर्मोंमें बंध रहेंगे व हमारे रूपको क्योंकर जान सकेंगे; ऐसा विचार शिवजीने पांच कोश तक काशीको, जो अपने त्रिशूलमें उठा रक्खा था, धरतीमें छोड दिया और अपने लिंग अविमुक्त अर्थात् विश्वनाथको भी काशीमें स्थापित कर दिया और कहा कि काशी प्रलयमें भी नष्ट न होगी। (छठवां खंड पांचवां अध्यायका वृत्तांत प्राचीन कथामें देखो।

(३८ वां अध्याय) विश्वनाथके समान दूसरा लिंग नहीं है इनके 'हरेश्वर' मंत्री, 'ब्रह्मेश्वर' वेद पुराण सुनानेवाले, 'भैरव' कोतवाल, 'तारकेश्वर' धनाध्यक्ष, 'दंडपाणी' चोबदार, 'वीरेश्वर' भंडारी, 'ढुंढिराज' अधिकारी और दूसरे सब लिंग विश्वनाथके प्रजापालक हैं।

स्कंदपुराण--(काशीखंड २१वां अध्याय) कार्तिक शुक्ल १४ को विश्वेश्वरयात्रासे भुक्ति मुक्ति फल मिलता है। [३९ वां अध्याय] माघकृष्ण १४ को अविमुक्तेश्वर यात्रासे काशी वास का फल मिलता है।

शिवकी कचहरी--विश्वनाथके मन्दिरसे पश्चिमोत्तर शिवकी कचहरी है। विश्वनाथके आंगनके पश्चिमकी खिडकीसे जाना होता है, यहां एक मंडपमें और इससे बाहर कई पंक्तियोंमें लगभग १५० शिवलिंग हैं। जिनमें 'धर्मराज शिवलिंग प्रधान हैं। यहांके लिंगोंमें बहुतेर लिंग बहुत पुराने हैं। इसी कचहरीमें ५६ विनायकोंमेंसे 'मोदविनायक' 'प्रमोदविनायक' 'सुमुखविनायक' और 'गणनाथ विनायक' हैं।

अक्षयवट–विश्वनाथके मन्दिरके फाटकसे पश्चिम एक गली ढुंढिराज तक गई है। पहले बाएं ओर 'शनिश्चरका' दर्शन होता है, जिनका मुखमंडल चांदीका है। नीचे शरीर नहीं है, कपड़ा पहनाया गया है। शनिश्चरसे पश्चिम दाहिनी ओर एक आंगनके बगलके एक मकानमें 'महावीरजी' और कोनेके मकानमें 'अक्षयवट' नामक एक वटवृक्ष है, जिसको यात्री लोग अंकमाल करते हैं।

यहां काशीके १२ आदित्योंमेंसे 'द्रुपदादित्य' और एकादश महारुद्रोंमेंसे 'नकुलेश्वर' हैं।

अन्नपूर्णा–अक्षयवटसे पश्चिमगलीके बाएं 'अन्नपूर्णाका' मन्दिर है। पूनाके पहले बाजीराव पेशवाने सन् १७२५ ई० में वर्त्तमान मन्दिरको बनवाया था। आंगनके मध्यमें एक उत्तम मन्दिर है, जिसमें चांदीके सिंहासनपर अन्नपूर्णाकी पीतलमयी मूर्त्ति पश्चिम मुखसे बैठी है। मन्दिरके पश्चिम सुन्दर जगमोहन है। आंगनके चारों बगलोंपर दो मंजिले दालान और जगह जगह मन्दिरके हैं। पूर्वोत्तर लिंग स्वरूप 'कुबेर' पूर्व–दक्षिण 'सूर्य्य' दक्षिण–पश्चिम 'गणेश' पश्चिम 'विष्णु' पश्चिमोत्तर 'महावीर' और एक बड़े मन्दिरमें 'यंत्रमंत्रेश्वर' शिवलिंग हैं।

शिवपुराण–(६ वां खंड–१ ला अध्याय) शिवजी विश्वनाथके समीप पहुँचे और उन्होंने मणिकर्णिकामें स्नान करके विश्वनाथजीका दर्शन किया। गिरिजापति काशीमें स्थित हुए और उन्होंने काशीको अपनी राजधानी बनवाया। गिरिजाभी काशीमें रहगई, जो 'अन्नपूर्णेश्वरी' देवीके नामसे प्रसिद्ध हुई।

स्कंदपुराण–(काशीखंड ६१ वां अध्याय) चैत्र शुक्ल ८ और आश्विन शुक्ल ८ के दिन अन्नपूर्णाके दर्शन पूजन करके १०८ परिक्रमा करनेसे पृथ्वी परिक्रमाका फल मिलता है।

ढुंढिराज गणेश–अन्नपूर्णाके मन्दिरसे पश्चिम गलीके बाएं बगलपर कोटरियोंमें बहुत शिवलिंग और देवमूर्तियां हैं। जिससे थोड़ाही पश्चिम गलीके मोड़पर दाहिने ओर एक छोटी

कोठरीमें काशीके प्रसिद्ध देवताओंमेंसे एक 'ढुंढिराज' गणेश हैं। इनके चरण, सुंड, ललाट और चारों भुजाओंपर चांदी लगी है।

गणेशपुराण-(उत्तर खंड-४८ वां अध्याय) राजा दिवोदासके काशी छोड़नेपर शिवजीने काशीमें आकर सुन्दर बने हुए मन्दिरमें गंडकीके पाषाणसे बनी हुई ढुंढिराजजीकी मूर्तिकी स्थापना की।

स्कंदपुराण-(काशी खंड ५७ वां अध्याय) व्याकरण शास्त्रमें 'ढुंढि अन्वेषणे' धातु कही है; अतएव समस्त अर्थोंके अन्वेषण करनेके कारण 'ढुंढिराज' यह नाम हुआ।

माघ शुक्ल ४ को ढुंढिराजके पूजनसे आवर्ष विघ्नकी निवृत्ति होती है और काशीवासका फल मिलता है।

दंडपाणि-ढुंढिराजके पाससे उत्तर जो गली गई है, उसके बाएं एक कोठरीमें 'दंडपाणि' खड़े हैं, जिनके दाहने बाएं 'शुभ्रम विभ्रम' दो गण खड़े हैं और आगे कई लिंग हैं।

शिवपुराण-(६ वां खंड २ रा अध्याय) शिवजीने आनंद वनमें हरिकेश नामक तपस्वी को बरदान दिया कि काशीपुरीकी तुम रक्षा करो और शत्रुओंको दंड दो। तुम दंडपाणिके नामसे प्रसिद्ध होगे। उस दिनसे दंडपाणि काशीमें स्थित रहते हैं। बीरभद्रने दंडपाणिका अनादर किया, इससे उनको काशीका वास न मिला। वे दूसरे स्थानपर जारहे। अगस्त्य मुनिकोभी दंडपाणिकी सेवा न करनेसे काशी छोड़ देनी पडी।

स्कंदपुराण-(काशी खंड-३२ वां अध्याय) यह अन्न, मोक्ष और ज्ञानका दाता है। (दंडपाणिके प्रादुर्भावकी कथा शिवपुराणकी कथाके समान यहांभी है)।

पुराने विश्वेश्वर-इनको 'आदिविश्वेश्वर भी कहते हैं। ज्ञानवापीके पासके औरंगजेब वाली मसजिदसे पश्चिमकी ओर कारमाइकल लाइब्रेरीसे पश्चिमोत्तर सड़कके पास पुराने विश्वेश्वरका बड़ा मंदिर है मंदिरमें मार्बुलका फरस है। पीतल जडे हुए हौजमें ऊंचे अर्घ पर छोटा शिवलिंग है।

कोतवाली टोलामें 'ईशानेश्वर' और काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'गजकर्ण विनायक' हैं।

औरंगजेब मसजिद-ज्ञानवापीसे थोड़ी दूर उत्तम यह मसजिद है। बादशाह औरंगजेबने विश्वनाथका बडा मन्दिर तोड़कर उसके सामानसे यह मसजिद बनवाई, विश्वनाथके पुराने मन्दिरका एक हिस्सा मसजिदमें लगा हुआ इसके पीछे देख पडता है। मसजिदके आगे नकाशीदार खंभे जो लगे हैं, वे मन्दिरहीमें पहले लगे थे। एक बगलसे मसजिदमें जानेका रास्ता है।

लांगलीश्वर-औरंजेब मसजिदसे उत्तर खोवा बाजारमें 'पंचपांडव' के आगे मन्दिरमें काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'लांगलीश्वर' नामक मोटा और ऊंचा शिवलिंग है।

काशी करवट-एक गलीके किनारेपर एक आंगनमें सूखे कूपमें शिवलिंग है। लिंगके पास जानेके लिये एक मार्गहै, जो नियत समयपर खुलता है। यात्रीलोग ऊपरहीसे शिवलिंग पर जल अक्षत आदि गिराते हैं। कूपके पास बहुतेरे लोग करवट देते हैं और भीतपर फूलसे अपना नाम लिखते हैं। यहांका पुजारी दक्षिणा लेकर यात्रियोंको सुफल बोलता है।

काशी करवटसे दक्षिण कुछ दूरजानेपर विश्वनाथजीके दक्षिण कालिकागलीके सामने काशीके ११ महारुद्रोंमेंसे 'मदालतेश्वर' एक मकानके छोटे मन्दिरमें हैं। आगे कालिका गलीमें 'चंडी चंडीश्वर' एक छोटे मन्दिरमेंहैं। उसी गलीमें आगे जानेपर एक मन्दिरमें ९ दुर्गाओंमेंसे 'कालरात्री' दुर्गाकालिकाजीके नामसे प्रसिद्ध हैं। यहांसे कुछ दूर आगे पश्चिम 'शुक्रकूप' और

काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'शुक्रेश्वर' हैं। काशीखंडके १६ वें अध्यायमें लिखाहै कि शुक्रवारको शुक्रेश्वरके पूजनसे सुसंतान मिलतीहै। शुक्रेश्वरसे पश्चिम थोड़ी दूरपर 'भवानी शंकर' शिवलिंग और काशीकी ९ गौरियोंमेंसे 'भवानी गौरी, हैं। भवानी शंकरसे पश्चिम एक मकानमें काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'सृष्टिविनायक' हैं, जिनके पश्चिम दक्षिण एक बाडेमें काशीके ११ महारुद्रोंमेंसे 'प्रीतिकेश्वर' हैं। यहांसे पश्चिमोत्तर ढुंढिराजसे पश्चिम एक मकानमें 'पंचमुखी गणेश' हैं। ढुंढिराजके पश्चिम फाटकके पास एक बड़े शिवालेके एक कोठरीमें काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'यज्ञविनायक' हैं जिससे पश्चिम ओर सड़कपर एक छोटे मन्दिरमें 'समुद्रेश्वर' और इनसे उत्तर सड़ककी गलीमें 'ईशानेश्वर' हैं।

ईशानेश्वरसे पूर्वोत्तर और कारमाइकल लाइब्रेरीसे पश्चिमोत्तर सड़कके निकट 'पुराने विश्वेश्वर' का मन्दिर जयपुरके राजा मानसिंहका बनवायाहुआ है। मन्दिरमें मार्बुलका फर्शहै। पीतल जड़े हुए हौजमें ऊंचे अर्घेपर छोटा शिवलिंग है।

आदिविश्वेश्वरसे उत्तर चांदनी चौकमें काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'चित्रघंट विनायक' हैं। यहांसे उत्तर चंदूनाऊकी गलीमें काशीकी ९ दुर्गाओंमेंसे 'चित्रघंटा' दुर्गा हैं। यहां चैत्र शुक्ल तृतीया और आश्विन शुक्ल तृतीयाको दर्शन पूजनका मेला होता है। काशीखंडके ७० वें अध्यायमें लिखा है, कि जो चित्रघंटा देवीका दर्शन करता है, उस मनुष्यके पातकको चित्रगुप्त नहीं लिखते हैं।

गलीके बाहर पूर्व कुछ दक्षिण दूर जानेपर एक छोटे मन्दिरमें काशीके अष्ट महालिंगों मेंसे अनगढ चिपटा 'पशुपतीश्वर' शिवलिंग है। मन्दिरमें मार्बुलका फर्स लगा है, बाहर चारों ओर बहुत देवता हैं।

स्कंदपुराण-(काशीखंड-६१ वां अध्याय) चैत्र शुक्ल चतुर्दशीको पशुपतीश्वरके दर्शन पूजन करनेसे यमराजका भय छुट जाता है।

पशुपतीश्वरसे पूर्व-दक्षिण कश्मीरी मलकी हवेलीके सामने शीतला गलीमें एक अंधियारे गड़हेमें 'पितामहेश्वर' हैं। इनका दर्शन वर्षभरमें केवल एक दिन शिवरात्रिको होता है। इस स्थानसे थोड़ी दूर पूर्व कलशेश्वरीकी ब्रह्मपुरीमें कलशेश्वर और 'कलशेश्वरी'के मन्दिर हैं। यहां एक कूप 'कलशकूप' करके प्रसिद्ध है। कलशेश्वरसे पश्चिमोत्तर नंदनशाहके महल्लेमें 'परशुरामेश्वर' महादेवजीका मन्दिर है। पांच सात सीढ़ीके नीचे पीतलके हौजमें परशुरामेश्वर शिवलिंग हैं। परशुरामेश्वरसे उत्तर ठठेरी बाजारके कोनेपर गड़हेमें 'सत्यकालेश्वर' महादेव हैं।

गोपालमंदिर-सत्यकालेश्वरसे पूर्व चौखंभा महल्लेमें वल्लभ संप्रदायवालोंका गोपालमन्दिर काशीमें प्रसिद्ध है। मन्दिर लंबा चौड़ा राजसी मकानके समान पूर्वमुखका है। पत्थरकी लंबी सीढ़ियोंसे मन्दिरमें जाना होता है।

श्री गोपाललालजीके चौकके उत्तर एक दूसरे चौकमें श्रीमुकुन्दरायजी विराजते हैं। इन मन्दिरोंके पूर्व समीपहीमें मन्दिरके मालिक गोस्वामी श्री जीवनलाल बाबा विराजते हैं। मन्दिरका पट नियत समयमें खुलता है। दर्शकगण द्वारसे बाहर एकत्र होते हैं। श्रीगोपाललालकी झांकी मनोहर होती है। श्रावणमें झूलनोत्सव बड़े धूमधामसे होता है। वल्लभ संप्रदायके लोग बाल गोपालकी आराधना करते हैं। उत्सवोंके समयमें बालकोंके प्रिय बहुत

प्रकारके सुन्दर बहुमूल्य खिलौने रक्खे जाते हैं। सबसे बड़ा उत्सव जन्माष्टमीको होता है, जिसके दूसरे दिन बड़े धूमधामसे दधिकांदो होता है। कार्त्तिक शुक्ल प्रतिपदाको अन्नकूट होता है। संध्यासमय गोवर्धन पर्वत बनाकर पूजाजाताहै। और रात्रिमें बहुत प्रकारकी वस्तु भोग लगाई जाती हैं।

काशीमें गोपालमन्दिरके अतिरिक्त वल्लभसंप्रदाय वालोंके निम्नलिखित मन्दिर उत्तम हैं (१) गोपालमन्दिरके सामने पूर्व रणछोरजीका मन्दिर (२) बड़े महाराजजीका मान्दिर (३) बड़े महाराजजीके मन्दिरसे उत्तर बलदेवजीका मन्दिर (४) बलदेवजीसे पूर्व भाटके महल्लेमें दाऊजीका मन्दिर है।

गोपालमन्दिरके पश्चिमोत्तर सिद्धिमाताकी गलीमें काशीकी९ दुर्गाओंमेंसे 'सिद्धिदा दुर्गा' सिद्धिमाताके नामसे प्रसिद्ध हैं। दाऊजीके मन्दिरसे पूर्व कुछ दूर एक गुजरातीके मकानमें 'आदि बिंदुमाधव' जीकी मूर्ति है, जिससे पूर्वोत्तर थोडी दूर पर एकही मन्दिरमें 'आमर्दकेश्वर' और 'कालमाधव' जी हैं। जिनसे उत्तर 'पापभक्षेश्वर' महादेव हैं।

मधुवनदास द्वारिकादासकी धर्मशाला-भैरव बाजारमें माधोदास सामियाकी गलीके बगलपर काठकी हवेलीके पास ही यह धर्म्मशाला संवत् १९४१ की बनवाई हुई है। नीचेके मंजिलमें ६ कमरे दो बगल दालान, दूसरे मंजिलमें ७ कमरे और २ दालान तीसरे मंजिलमें ७ कमरे और चौथे मंजिलमें सिर्फ एक बंगला है।

कालभैरव--इनको 'भैरवनाथ' भी लोग कहते हैं। भैरवनाथ महल्लेमें शिखरदार मन्दिरमें सिंहासनके ऊपर 'कालभैरवकी' पाषाण प्रतिमा है। इनके मुखमंडल और चारों हाथोंपर चांदी लगी है। मन्दिरके द्वार तीन ओर हैं। मन्दिर और जगमोहन दोनोंमें श्वेत और नील मार्बुलका फरस है। दरवाजेके बाएं ओर पत्थरका एक बड़ा कुत्ता और दोनों ओर सोटे लिये हुए दो द्वारपाल खड़े हैं। आंगनके चारों बगलोंपर पक्के दालान हैं। आगे बड़ा महाबीर, दाहने दालानमें योगेश्वरी, जो काली करके प्रसिद्ध है और महाबीरकी बड़ी बड़ी मूर्तियां हैं। आंगनका एक दरवाजा मन्दिरके आगे दूसरा मन्दिरके पीछे है। पीछे वाले दरवाजेसे बाहर एक छोटे मन्दिरमें क्षेत्रपाल भैरवकी मूर्ति है। कालभैरवके वर्तमान मन्दिरको सन १८२५ ई० में पूनाके बाजीराव पेशवाने बनवाया था। यहांके पुजारी मोरपंखके सोटेसे बहुतेरे यात्रियोंकी पीठ ठोकते हैं कालभैरवको कोई कोई मद्य भी चढ़ाता है। इनकी सवारी कुत्ता है। ये पापी लोगोंको दंड देनेवाले काशीके कोतवाल हैं। अगहन कृष्णाष्टमीको भैरवके दर्शनकी बड़ी भीड़ होती है।

शिवपुराण—(७ वां खंड-१५ वां अध्याय) ब्रह्मा और विष्णुके परस्पर झगड़ेके समय दोनोंके मध्यमें एक ज्योति प्रकट हुई। जिसको देख ब्रह्माने अपने पांचवें मुखसे कहा कि, हे विष्णु! इस ज्योतिमें किसी मनुष्यका स्वरूप दिखाई देता है। इतनेमें एक मनुष्य नील लोहित बरण चंद्रभाल त्रिशूल हाथमें लिए सर्पोंका भूषण बनाए देख पड़ा। ब्रह्माने कहा कि तुम तो हमारे भ्रूमध्यसे उपजे हुए रुद्र हो, हमारी शरणमें आओ, हम तुम्हारी रक्षा करेंगे ब्रह्माका ऐसा गर्व देखकर शिवजीने महाकोप करके भैरवको उत्पन्न किया और कालराज, कालभैरव पापभक्षण आदि नाम उसका रक्खा। भैरवने अपनी बाईं उंगलीके नखसे ब्रह्माका पांचवां शिर काट लिया (१६ वां अध्याय) ब्रह्महत्या शिवसे प्रकट होकर भैरवके पीछे पीछे दौड़ने लगी (१७ वां अध्याय) भैरव ब्रह्माका सिर हाथमें लेकर सब देशोंकी परिक्रमा कर जब

काशीमें आए तब ब्रह्महत्या पृथ्वीके नीचे चली गई। भैरवके हाथसे ब्रह्माका सिर धरतीमें गिर पड़ा, उसी स्थानका नाम 'कपालमोचन' तीर्थ हुआ।

मार्गशीर्ष कृष्णाष्टमीको भैरवका जन्म हुआ। उसी तिथिको भैरवका व्रत होता है। अष्टमी, चतुर्दशी और रविवारको भैरवके दर्शन पूजनसे बड़ा फल मिलता है।

स्कंदपुराण—(काशीखंड–३१ वां अध्याय) (शिवपुराणकी ऊर्द्ध लिखित भैरवके जन्मकी कथा यहां भी है) मार्गशीर्ष कृष्णाष्टमी कालभैरवके जन्मका दिन है उस दिन कालभैरवके दर्शन, पुजन और वहां जागरण और दीपदान करनेसे सब पाप छुट जाता है और वर्ष पर्यन्त किसी काममें विघ्न नहीं होता! और इस तिथिमें कालकूप और कालभैरव यात्रासे कलिकालका भय छुट जाता है।

(३० वां अध्याय) रविवार, मंगलवार और शिवरात्रिको कालभैरवके दर्शन पूजन तथा ८ परिक्रमा करनेसे सब पाप छुट जाता है।

(६१ वां अध्याय) मार्गशीर्ष शुक्ल ११ को कालमाधवके पूजन करनेसे कलिकालका भय निवृत्त होता है।

(८४ वां अध्याय) भौमाष्टमीको भैरवतीर्थमें स्नान और भैरवके पूजन करनेसे कलिकालका भय निवृत्त होता है।

कालदंड-कालभैरवके मन्दिरसे पूर्व एक गलीमें 'नवग्रहेश्वर' और 'व्यतीपातेश्वर' हैं। यहांसे पूर्वोत्तर एक मन्दिरमें 'कालेश्वर' शिवलिंग और ३ हाथ ऊंचा 'कालदंड' हैं। कालदंडका मुखमंडल धातुमय है। दीवारके पास 'काली' की मूर्ति है, जिसके निकट 'कालकूप नामक एक कूप है, जिसमें दीवारके छेदसे प्रकाश रहता है।

चिताघाट (२३)-मणिकर्णिका घाटसे दक्षिण-पश्चिम 'चिताघाट' है। इस घाट पर मुर्दे जलाए जाते हैं। आग डोमके घरसे लाई जाती है। डोम बड़ा धनी है, क्योंकि कोई कोई उसको सैकडों रुपये फीस दे देता है। यहां सती स्त्रियां और उनके पतियोंके यादगारमें (स्मरणार्थ) हाथ पकड़ेहुए पुरुष और स्त्रियोंकी पत्थरकी अनेक मूर्तियां हैं। घाटसे ऊपर राजा बल्लभ शिवाला नामक एक पुराना सुन्दर बड़ा मन्दिर है, जिसके चारों ओर ४ बुर्ज हैं मन्दिरके पश्चिम अधबना उजड़ा हुआ उमरावगिरिका पुस्ता है।

राजराजेश्वरी घाट (२४)—इसकी सीढ़ियां नहीं जोड़ी गई हैं, इसके पासकी इमारत गोसाई भवानी गिरिकी बनवाई हुई है। यहां 'राजराजेश्वरीजी' का मन्दिर है।

ललिता घाट (२५)—ललितातीर्थपर साधारण ललिताघाट है। घाटसे ऊपर काशीकी ९ दुर्गाओंमेंसे 'ललिता देवीका' मन्दिर है। जहां आश्विन कृष्ण द्वितीयाको दर्शन पूजनका मेला होता है। इस मन्दिरमें पूर्व ओर 'काशी देवी' हैं। मन्दिरके बाहर सीढीसे ऊपर जाकर आगे नीचे उतरनेपर 'गंगाकेशव' का मन्दिर मिलता है, जिसके बाहर एक चबूतरेपर काशीके १२ आदित्योंमेंसे 'गंगादित्य' हैं। घाटसे ऊपर गलीमें 'त्रिसंधेश्वर' का मन्दिर है, जिससे पूर्वोत्तर एक दालानकी कोठरीमें 'मोक्षेश्वर' और काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'करुणेश्वर' शिवलिंग हैं। इस मन्दिरसे पश्चिम लाहौरी टोलेमें काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'ज्ञानेश्वर' शिवलिंग एक खत्रीके मकानमें हैं।

स्कंदपुराण-(काशीखंड–७० वां अध्याय) आश्विन कृष्ण द्वितीयाको ललिता देवीके दर्शन पूजन करनेसे सौभाग्यफल मिलता है (९४ वां अध्याय) प्रतिमासके सोमवारको करुणेश्वरकी यात्रा करनेसे काशीवासका फल मिलता है।

नैपाली मन्दिर—ललिताघाटसे ऊपर नैपाली शिवमन्दिर दर्शनीय है। इसकी शकल चीनके मन्दिरोंके ढंगकी है। मन्दिरके शिरोभागपर दोहरी चकूटी और ऊपर मुलम्मेदार कलश है। छज्जेके किनारोंपर तोरणके समान घंटियां लटकाई गई हैं, जो हवासे बजती हैं। मन्दिरके आगे बड़ा नंदी है। मन्दिरके निकट नैपाली यात्रियोंके ठहरनेके लिये एक धर्मशाला है। इस ढाचेका मन्दिर काशीमें दूसरा नहीं है। इस मन्दिर के चारों ओर लकड़ी में अश्लील चित्र खुदे

मीरघाट (२६)—यहां 'विशाल तीर्थ' है। इस घाटकी पत्थरकी सीढ़ियां सादी हैं जो ऊपर और इसके पासवाले मन्दिरोंतक गई हैं। घाटकी नेवके पास पूर्व समयकी सतियोंके स्मारक चिह्न हैं। घाटके उत्तर मीरअली नव्वाबका पुस्ता है, जिसके निकटकी कोठरियें टूट फूट गई हैं।

धर्मकूप—मीरघाटसे ऊपर छोटे छोटे मन्दिरों और दीवारसे घेरा हुआ काशीके पवित्र कूपोंमेंसे 'धर्मकूप' है। घेरेके बाहर कूपसे पश्चिम 'विश्वबाहुका' देवीका मन्दिर है। इसी मन्दिरमें 'दिवोदासेश्वर' शिवलिंग हैं। धर्मकूपसे दक्षिण काशीके ४२ लिंगोंमें 'धर्मेश्वरका' मन्दिर है। धर्मकूपसे दक्षिण—पश्चिम काशीकी नव गौरियोंसे 'विशालाक्षी गौरीका' मन्दिर है। यहाँ भादोंकी कृष्ण ३ को दर्शनकी भीड़ होती है।

धर्मेश्वरके दर्शनका मेला कार्तिक शुक्ल ८ को होता है। घाटके निकट ऊपर एक मन्दिरमें काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'आशाविनायक' हैं। इस मन्दिरमें महावीरजीकी विशाल मूर्ति और दूसरी बहुतेरी देवमूर्तियां हैं। सामने एक मकानमें काशीके १२ आदित्योंमेंसे 'वृद्धादित्य' हैं। गलीमें 'आनंद भैरव' का मन्दिर है।

स्कंदपुराण—(काशीखंड--७० वां अध्याय) भाद्र कृष्ण तृतीयाको 'विशाल तीर्थ' की यात्रा और 'विशालाक्षी'के पूजन करनेसे काशीवासका फल होताहै। आश्विनके नवरात्रमें नवां दिन 'विश्वबाहुका' देवीके दर्शन पूजन करनेसे सकल मनोरथ सिद्ध होते हैं।

(७८ वां अध्याय) कार्तिक शुक्ल८ को धर्मकूपमें स्नान और धर्मेश्वरके दर्शन करनेसे सर्व धर्म करनेका फल मिलता है।

(८० वां अध्याय) चैत्र शुक्ल ३ को धर्मकूपमें स्नान और धर्मेश्वर, आशा विनायक, और 'विश्वबाहुका' देवीके दर्शन पूजन और व्रत करनेसे मनोरथ सिद्ध होता है।

मानमन्दिर घाट (२७)--अनुमान ३०० वर्षसे कम हुए, आंबेरके राजा मानसिंहने इस घाटको बनवाया था।

घाटसे ऊपर एक बडे पीपलके पेड़के दक्षिण ३ छोटे मन्दिर हैं। और उत्तर एक बड़े मन्दिरमें 'दाल्भ्येश्वर' शिवलिंग हैं। निवर्षणके समय वर्षा होनेके लिये इनका हौज पानीसे भरा जाताहै। मन्दिरके उत्तर एक मन्दिरमें 'सोमेश्वर' इससे उत्तरके मन्दिरमें 'सेतुबन्ध रामेश्वर' शिवलिंगहै।

घाटसे ऊपर 'लक्ष्मीनारायण' काशीकी ६४ योगिनियोंमेंसे 'बाराही' और सोमेश्वरके द्वारपर काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'स्थूलदन्त विनायक' हैं।

स्कंदपुराण—(काशी खंड–६९ वां अध्याय) प्रतिमासकी नवमी तिथिको काशीके सेतुबंध रामेश्वरका दर्शन और पूजन करना चाहिए।

मानमन्दिर-यह मकान आंबेरके राजा मानसिंहका बनाया हुआ गङ्गाके किनारेके मकानोंमें सबसे पुराना है। गङ्गाकी ओरसे यह मकान बहुत अच्छा देखपड़ताहै। आंगनके चारों ओर कमरे हैं। गङ्गाकी ओरका कमरा बहुत सुन्दरहै। इसमें पूर्व और पश्चिम पांच पांच और उत्तर और दक्षिण दो दो द्वारहैं। छतपर जानेके लिए पश्चिम दक्षिणके कोनेमें सीढ़ियां हैं।

छतके ऊपर आंबेरके राजा मानसिंहके कुलके सवाई जयसिंहके बनवाए हुए आकाशके ग्रह और नक्षत्रोंके बेधनेके लिए यंत्र बने हैं। दिल्लीके महम्मदशाहने, जिसने सन १७१९ से १७४८ ई० तक राज्य किया, सवाई जयसिंहको, जिसने सन १७२८ ई० में जयपुर शहरको बसाया, ज्योतिष विद्याकी उन्नतिके लिए उत्साहित किया था। सवाई जयसिंह ज्योतिष विद्यामें बड़े प्रसिद्ध थे, उन्होंने बनारस, दिल्ली, मथुरा, उज्जैन और जयपुरमें 'अबजरबेटरी'बनाया था।

१ याम्योत्तर भित्ति-यंत्र अर्थात् मध्याह्नमें उन्नतांश नापनेके लिये भित्तिस्थ दो तुरीय यंत्र छतके ऊपर जानेपर पहला यंत्र, जो दर्शकोंको मिलेगा, यह याम्योत्तर भित्ति यंत्र है। यह ईंट चूना और पत्थरसे बनी एक दीवाल है, जो याम्योत्तर वृत्तके धरातलमें उठाई गई है (याम्योत्तर रेखा उस भूमध्य रेखाका नाम है, जो किसी स्थान विशेषसे होकर उत्तर दक्षिण ध्रुवोंसे होती हुई गईहो।) इस दीवालकी उंचाई ११ फीट, लंबाई ९ फीट १ ३/४ इंच और चौड़ाई (अथवा भीतकी मोटाई) १फूट १/३ इंच है। इसका पूर्वीय भाग अति उत्तम चूनेके पलस्तरसे बहुत चिकना बनाया गयाहै। इसके ऊपरी भागमें लोहेकी दो खूंटियां दोनों तुर्य वृत्तोंके केंद्रमें दीवालके धरातल पर लंब रूप गड़ी हैं। ये भूमिसे १० फीट ४ १/४ इंच और आपसमें (एक दूसरीसे) ७ फीट ९ १/२ इंचकी दूरी पर है। बिंदुओंके परस्पर अन्तरको व्यासार्द्ध अर्थात त्रिज्या मान कर एक दूसरेको मध्यमें काटते हुए, वे दोनों चतुर्थांश वृत्त खींचें हैं; फिर उन्हीं बिंदुओंको केंद्र मान, इन चतुर्थांश वृत्तोंके बाहर, एकही केंद्रपर, तीन और चतुर्थांश वृत्त ऐसे बनाए हैं, और इस रीतिसे समान भागोंमें विभक्तहैं कि पहिले वृत्त खंडका एक भाग दूसरेके ६ भागोंके तुल्य है; और दूसरे वृत्त खंडका एक अंश, तीसरेके ६ भागोंके बराबरहै।

जब सूर्य याम्योत्तर वृत्त पर आता है, तब वृत्त खंडका वह भाग, जिस पर खूंटीकी छाया पड़ती है, नीचेसे गणना करनेसे जितने अंशहों, वह मध्याह्नके समय, सूर्यका मध्य उन्नतांश और ऊपरसे गणना करनेसे मध्यनतांश अर्थात् स्वस्तिकसे सूर्यके अंशात्मकका मान होता है। (उन्नतांश और नतांश आपसमें, एक दूसरेकी कोटि होते हैं, अतएव एकको नब्बे अंशमें घटा देनेसे दूसरा सहजही ज्ञात होजाता है) काशीमें सूर्य स्व स्वस्तिकके उत्तर कभी नहीं आता, इसलिए सूर्यका मध्य उन्नतांश और नतांश जाननेके अर्थ केवल वही वृत्त-खंड उपयोगी होगा, जिसका केंद्र दक्षिणकी ओर है। और यही वृत्त-खंड उन ग्रहों और नक्षत्रोंका मध्य उन्नतांश भी बतादेगा; जो स्व स्वस्तिकके दक्षिणकी ओर होकर याम्योत्तर वृत्त पर आते हैं। और इसका वृत्त-खंड, जिसका केंद्र उत्तरकी ओर है, स्वस्वस्तिकके उत्तरकी ओर होकर याम्योत्तर वृत्तसे जानेवाले ग्रह और नक्षत्रोंका उन्नतांश पूर्व युक्तिसे विदित करावेंगे। और जहां आकाश परमाक्रांतिसे अल्प हो, वहां जब सूर्य मध्याह्नमें स्वस्वस्तिकसे उत्तर होगा, वहां रविका मध्य नतोन्नतांश बतावेगा।

इस यंत्र द्वारा सूर्यकी सबसे बड़ी क्रांति अर्थात परमाक्रांति (झुकाव) और किसी स्थान विशेषके निरक्ष (नाड़ीमंडल) से अक्षांश नीचे लिखे रीत्यनुसार जाने जाते हैं।

याम्योत्तर भित्तिसंज्ञक यंत्रसे प्रत्यह् वेधकर मध्याह्नमें सूर्यका सबसे अधिक और सबसे न्यून नतांशका ज्ञान करो। अब इस सर्वाधिक और सर्व न्यून नतांशके अंतरका आधा करो, वही सूर्यकी परमाक्रांति होती है। इस आधेको सूर्यके सर्वाधिक नतांशमें घटा दो, अथवा सर्व न्यून नतांशमें जोड़ दो तो वही उस स्थानविशेषका अक्षांश होगा। जब उत्तरायण और सब न्यून नतांश स्वस्वस्तिकसे उत्तर हो तो पूर्व युक्तिसे जो परमाक्रांति निकले, उसे अक्षांश और अक्षांशको परमाक्रांति आती है। महाराज जयसिंहने इस यंत्रद्वारा सूर्यकी सबसे बड़ी क्रांति २३ अंश और २८ कला निकाली थी।

किसी स्थानके अक्षांश और मध्य नतांश विदित हो जानेपर सूर्यकी क्रांति बड़ी सरलतासे इस भांति जानी जाती है। मध्याह्नके समय स्वस्वस्तिकसे दक्षिण नतांश स्थानविशेषके अक्षांशका अंतर निकालो। यही अंतर उस मध्याह्नके समय सूर्यकी क्रांति होगी। यदि दक्षिण नतांशके अंश अक्षांशके अंशसे कम हों तो उत्तरा क्रांति, और यदि दक्षिण नतांशके अंश अक्षांशसे अधिक हो तो दक्षिणा क्रांति होगी। और यदि मध्याह्नका उत्तर नतांश हो तो अक्षांश और नतांशके योगके समान उत्तरा क्रांति होगी। इस भांति क्रान्ति विदित होने पर क्रान्ति और परमाक्रान्तिके वशसे चापीय त्रिकोण मितिसे उस स्थानका भुजांश भी सहजही ज्ञात हो सकता है।

इसीके पूर्व उसके समीपही एक बहुत चिकना स्थान था, जो अब थोड़ा बहुत खुदबुदहा हो गया है। इसकी चौड़ाई दीवालकी चौड़ाइके समान और लंबाई १० फीट ३ इंच है। दीवाल वाली प्रति खूंटियोंके ठीक ठीक पूर्व इस खुदबुदहे स्थानके पूर्ववाले प्रतिकोणमें एक एक खूंटी थी, जिनके शिरों पर एक एक छेद था, इनमेंसे दक्षिण वाली खूंटी निकल गई है, परंतु उत्तर वाली अभी ज्यों की त्यों वर्तमान है। इन खूंटियोंके बलसे दिक्शोधन कर रविका दिगंश ज्ञान होता था।

इसी स्थानके निकट एक चूनेका वृत्त बना है. जिसका व्यास २ फीट ८ इंच है; और एक पत्थरका वृत्त भी है, जिसका व्यास ३ फीट ५ इंच है। और उसीके समीप एक पत्थरका वर्गक्षेत्र बना है, जिसके प्रति भुज २ फीट २ इंचके बराबर हैं। ये दोनों वृत्त और वर्गक्षेत्र पलभा और दिगंश कोटि (अर्सिमत्) के अंश जाननेके अर्थ बनाए हुए हैं; परंतु अब सब चिह्न, जो इन पर बनाए गए थे, मिटगए हैं।

(दिगंशकोटि दिग्मंडल और याम्योत्तर मंडलसे उत्पन्न कोणके कहते हैं। यह कोण क्षितिजमें नापा जाता है। खस्वस्तिक और अधःस्वस्तिकमें लगा हुआ, ग्रहके केन्द्र पर जाने वाले महद्वृत्तको दिग्मंडल कहते हैं)।

२ इस यंत्रसे कुछ पूर्वका भाग लिए उत्तरकी ओर एक बहुत बड़ा यंत्र है, जिसको यंत्रसम्राट् अर्थात् यंत्रोंका राजा कहते हैं। इसमें चूने और ईटके बने दो दीवाल हैं, जो याम्योत्तर वृत्तके धरातलमें उत्तर ध्रुवकी उंचाई अर्थात् काशीकी अक्षांश तुल्य उंचाई पर उठाए गए हैं। और इनके बीचमें ऊपर तक जानेके अर्थ पत्थरकी सीढ़ियां बनी हैं। इन दोनों दीवालोंकी चौड़ाई (सीढ़ीको भी मिलाकर) ४ फीट ६ इंच और लम्बाई ३६ फीट है। इन दीवालोंका ऊपरी भाग चिकना पत्थरका ढालुआं फर्श किया हुआ है और उत्तर ध्रुव उसके धरातलमें देखा जाता है। अक्षांश तुल्य उंचाई करनेके लिए इस दीवालका दक्षिणी किनारा ६

फीट४ $\frac{1}{2}$ इंच और उत्तरी किनारा२२फीट३ $\frac{1}{2}$ इंच ऊंचा है। इन दोनों दीवालोंको धूपघटी की सूई अर्थात् शंकु कहते हैं। इस शंकुके दोनों ओर अर्थात् पूर्व और पश्चिम दोनों किनारे नाड़ी मंडलके धरातलमें एक एक वृत्त खंड हैं, जो चतुर्थांश वृत्तसे कुछ बड़े काशीके परम दिनमानार्द्धके तुल्य हैं। इनकी चौड़ाई ५ फीट ११ इंच और मुटाई ७ $\frac{1}{2}$ इंच है। प्रति वृत्त-खंडके दोनों किनारों पर इस भांति चिह्न किए हैं कि प्रति घटी ६ अंशके समान है और ६ तुल्य तुल्य भागोंमें विभक्त है। इस छठवें खंडकी चौड़ाई २ इंच है। इन वृत्तखंडोंके केन्द्र शंकुके ऊपरी किनारे उत्तर ध्रुव पर हैं और केन्द्रका ठीक ठीक स्थान जाननेके अर्थ उस स्थानमें एक एक लोहेकी कड़ी लगी हुई हैं। प्रत्येक वृत्तखंडके नीचे वाले किनारेकी त्रिज्या वा व्यासार्द्ध ९ फीट ८ $\frac{1}{8}$ इंच है।

इस यंत्रमें पश्चिम वृत्तखंडके वह भाग, जहां शंकुकी छाया पड़ती है, 'पूर्वनतघटी' अर्थात् मध्याह्न होनेमें कितना बाकी है, उस समयको; और पूर्व वृत्तखंडके वह भाग, जहां शंकुकी छाया पड़ती है, 'पश्चिम नतघटी' अर्थात् मध्याह्न हो जानेपर जो समय है, उसको बताते हैं। शंकु-छाया ठीक ठीक देखनेके अर्थ प्रति वृत्तखंडके दोनों किनारोंमें पत्थरकी सीढ़ियां बनी हैं। परन्तु अब वृत्तखंडोंके ऊपरी भागके प्रायः एक इंच नीचेकी ओर झुक जानेके कारण शंकुकी छायासे जाना हुआ समय ठीक ठीक नहीं होता।

शंकुकी छाया चंद्रमासे उतनी स्पष्ट नहीं पड़ती, जितनी कि सूर्यसे पड़ती है। और दूसरे ग्रह और नक्षत्रोंकी छाया जान नहीं पड़ती। अतएव चंद्रमा, ग्रह और नक्षत्रोंकी 'नतघटी' (मध्याह्नसे समयकी दूरी) नीचे लिखे रीत्यनुसार जानी जाती है।

लोहेके किसी तार वा एक सूधी नलिकाको इस भांति यंत्रपर लगाओ कि, उसका एक सिरा वृत्तखंडके किनारेपर हो और दूसरा धूपघटीकी सूई अर्थात् शंकुपर। अब तार या नलीके उस किनारेसे, जो वृत्तखंडपर है, उन ग्रह वा नक्षत्रोंको जिनकी 'नतघटी' निकालना है अव-लोकन करो; और इस भांति तार वा नलीको खसकाते जाओ कि वह ग्रह वा नक्षत्र नलीके भीतर दिखाई पड़ने लगे; और इसी रीतिसे वृत्तखंडोंपरके व संकेत जहां कि वृत्तखंडके नीचेका किनारा नलीसे कटता है, मध्याह्नके समयसे उस ग्रह अथवा नक्षत्र विशेषकी नतघटी बतलावेगा।

शंकुके किनारेका वह स्थान जो वृत्तखंडके केंद्र और नलीके बीचमें पड़ता है, उस ग्रह वा नक्षत्रकी क्रांतिकी स्पर्शरेखाके बराबर है। इसी भांति किसी ग्रह, तारे अथवा सूर्य्यकी याम्योत्तर वृत्तसे दूरी और क्रांति इस यंत्र द्वारा ज्ञात होती है। और किसी नक्षत्रका 'विषवांश' इस यंत्र द्वारा नीचे लिखी रीतिसे जाना जाता है—

(विषुवांश नाडीमंडलमें संपातसे उन अंशोंको कहते हैं, जो किसी नक्षत्र वा दूसरी आकाशीय वस्तुके साथ संपात अर्थात् दृश्य मेष लग्नके आरंभसे गोलाधारमें उठकर गिने जाते हैं। अथवा विषुव वृत्तके उस वृत्तखंडको, जो मेष लग्नके विंदु और विषुव वृत्तके उस विंदुके बीचमें पड़ता है, जो किसी नक्षत्रके ध्रुवप्रोतके साथ याम्योत्तर वृत्तपर आता है। यह अंशों अथवा समयमें गिना जाता है)।

याम्योत्तरसे सूर्यका, जब वे अस्त होनेके निकट हों, नतकाल निकालो। और इस समयसे किसी नाक्षत्री घटी द्वारा कालकी गणना उस समय तक करो, जब वह नक्षत्र, जिसका विषु-वांश जानना है, स्पष्टरूपसे दिखाई पड़ने लगे। इस रीतिसे जाने हुए समयमें सूर्यकी नतघटी

जो उसी समय गणना करके जानी गई हो, जोड़ दो. इस रीतिसे अंकमें सूर्यका विषुवांश, जो उसी समयके लिये गणना करके आया हो, जोड़ दो; यही अंक खमध्यका विषुवांश होगा। अब इसी यंत्रद्वारा उस नक्षत्रकी नतघटी निकालो और इसी घटीको खमध्य विषुवांशमें, यदि वह नक्षत्र उस समय पूर्वीय गोलाईमें होतो जोड़ दो, और यदि पश्चिमीय गोलार्द्धमें होतो घटा दो, जो शेष अंश प्राप्त हो, वही उस नक्षत्रका विषुवांश होगा।

इसी यंत्रमें शंकुके पूर्व याम्योत्तर भित्ति यंत्रकी भांति दो दोहरे दीवालमें बने वैसेही चतुर्थांश वृत्त हैं, जिनकी बनावट पूर्ण रीतिसे याम्योत्तर भित्ति यंत्र कीसी है; केवल भेद इतनाही है, कि दोनों खूंटियोंके बीचकी दूरी इस यंत्रमें १० फीट ४ $\frac{१}{२}$ इंच है।

३ इस यंत्रके पूर्व पत्थरका बना एक यंत्र है, जिसको 'नाडी यंत्र' कहते हैं। यह संवातके धरातलमें बनाया गया है, उसके उत्तर ओर एक पूरा वृत्त बना है, जिसका व्यास ४ फीट ७ $\frac{१}{४}$ इंच है। इस वृत्तमें दो व्यास एक दूसरेको लंबरूप काटते हुए खींचे हैं, जिसके कारण वृत्त ४ समान भागोंमें विभक्त हो गया है और प्रत्येक भाग ९० तुल्य तुल्य खंडोंमें विभक्त है वृत्तके केंद्रमें लोहेकी एक खूंटी गड़ी है, जो उत्तर ध्रुवको बताती है, उसकी छायासे सूर्य और दूसरे नक्षत्रोंकी नतघटी, जब वे उत्तरी गोलार्धमें रहते हैं जानी जाती है। और जब वे दक्षिणी गोलार्धमें रहते हैं तो याम्योत्तर वृत्तसे नतघटी जाननेके अर्थ इसी यंत्रके उत्तर भागमें (पहिले वृत्तके ठीक पीछे) एक दूसरा छोटा वृत्त भी पहलेकी भांति दोनों एक दूसरेको काटते हुए व्यासोंके खींचे रहनेसे ४ समान भागोंमें विभक्त हैं। और प्रत्येक चतुर्थांश वृत्त९० तुल्य तुल्य खंडोंमें बँटे हुए हैं।

४ नाडीयंत्रके पूर्व ठीक सम्राट् यंत्रकी नाई एक दूसरा यंत्र उससे छोटे आकारका है। इस यंत्रमें धूपघटीके शंकुकी लंबाई १० फीट १ इंच है और चौडाई १ फीट २ इंच। शंकुके दक्षिण भागकी उँचाई ३ फीट ६ $\frac{१}{४}$ इंच और उत्तर भागकी ८ फीट ३ इंच है। और प्रतिवृत्तखंडकी चौड़ाई १ फीट ९ $\frac{१}{४}$ इंचकी और मोटाई केवल ३ $\frac{३}{४}$ इंचकी है। और वृत्तखंडके नीचेके किनारेका व्यास ३ फीट ५ $\frac{३}{४}$ इंच है।

५ इस यंत्रके पासही दो भीतोंके मध्यमें बनाहुआ एक दूसरा यंत्र है, जिसको 'चक्र यंत्र' कहते हैं। यह धुरीपर घूमनेवाला लोहेका १ इंच मोटा वृत्त है। जिसके ऊपरी भागमें $\frac{१}{३}$ इंचकी मुटाईका पीतलका पत्र जड़ा है। इस यंत्रका धुरा दो दीवालोंके मध्यमें गड़ा है और उत्तर ध्रुवको बताता है। इस-वृत्ताकार यंत्रके किनारेकी चौड़ाई २ फीट है और उसकी परिधि ३६० तुल्य अंशोंमें विभक्त है। इसके प्रतिखंडकी चौड़ाई $\frac{३}{१०}$ इंच है। इस यंत्रके केंद्रमें लोहेकी १ खूंटी है, जिसमें पीतलकी एक सूई लगी है इस सूईकी चौड़ाई २ इंच है और उसके किनारे ऊपरवाली आकृतिके समान है। उसमें एक धातुनिर्मित व्यास परिधिके दोनों सिरोंको मिलाता है। (उसीमें धुरेका आकार बना है)।

इस यंत्रसे किसी ग्रह वा नक्षत्रके विषुवांशको जाननेके अर्थ वृत्त और सूईको इस तरहसे घुमाओ कि, वह ग्रह वा नक्षत्र सूईके बीचवाली रेखाके सीधमें आजाय। उस समय वृत्तके वे अंश, जो वृत्तके उस व्याससे, जो धुरीके साथ समकोण बनाता है कटते हैं, उस ग्रह वा नक्षत्र विशेषका विषुवांश विदित कराते हैं।

ऐसा अनुमान होता है कि यह यंत्र और कई एक आधार वृत्तोंसे घिरा था, जिनसे कि किसी ग्रह अथवा नक्षत्रकी याम्योत्तर वृत्तसे नतघटी जानी जाती थी । परंतु अब सब टूट फूट गए हैं और इस यंत्रके बीचकी सूई भी टेढ़ी हो गई है । अत एव ऊपर लिखे रित्यनुसार अब इस यंत्रद्वारा किसी ग्रह वा नक्षत्रका विषुवांश नहीं निकल सकता ।

(इसी यंत्रके पास चूनेका बना एक वर्गक्षेत्र है, जिसके किनारे नाली बनी है, उसमें जल भरकर देखनेसे सम धरातलकी परीक्षा की जाती थी कि, धरातल टेढ़ा तो नहीं हो गया है)

६ इस यंत्रके पूर्व चूनेका बना एक बहुत बड़ा यंत्र है, जिसको दिगंश यंत्र कहते हैं । इसके बीचोबीचमें एक गोल खंभा है, जिसकी उँचाई ४ फीट २ इंच और व्यास ३ फीट ७ $\frac{1}{2}$ इंच है । इस खंभेके केंद्रमें लोहेकी एक खूंटी गड़ी है, जिसके सिरे पर छेद है । यह खंभा (ईंट और चूनेसे बने) एक गोल दीवालसे घिरा है, जो इससे ७फीट ३ $\frac{1}{2}$ इंचकी दूरीपर ठीक खंभेके बराबर ऊंची बनी है; और उसकी चौड़ाई १ फीट ६ इंच है । इस दीवालके चारोंओर एक दूसरी गोलाकार दीवाल पहली दीवालकी दूनी उंचाईकी, उससे ३ फीट २ $\frac{1}{2}$ इंचकी दूरीपर बनी है, जिसकी चौड़ाई २ फीट $\frac{3}{4}$ इंच है । इन दीवालोंके ऊपरी भाग पत्थरसे पाटे हुए हैं और इनपर दिशाओं (उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, ईशान, नैर्ऋत्य, इत्यादि) के चिह्न बने हैं और दोनों दीवालोंके ऊपरी भाग ३६० तुल्य अंशोंमें विभक्त हैं । (बाहरी दीवालके भीतर वायव्य और ईशान कोणमें दो छोटे छोटे पर्वताकार चिह्न बने हैं) । बाहरी दीवालमें ४ खूंटियां (लोहेकी बनी) उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम दिशाओंको निश्चित कराती हुई गड़ी हैं । यह बड़ा यंत्र केवल किसी ग्रह वा नक्षत्रके दिगंशको जाननेके लिये बनाया गया है, जो नीचे लिखे रित्यनुसार जाना जाता है ।

बाहरी दीवालमें की खूंटियोंमें एक धागा उत्तरवाली खूंटीसे दक्षिणवाली खूंटी तक और दूसरा धागा पूर्व वालीसे पश्चिमवाली खूंटी तक, जो एक दूसरेको खंभेके केंद्रमें ठीक ऊपर काटेंगे, बांधो, और एक तीसरा धागा लेकर उसके एक शिरेको खंभेकें केंद्रमें पुष्टतासे बांधो और दूसरे शिरेको बाहरी दीवालके ऊपरी भागपर ले जाओ । अब अपनी आंखको बिचली दीवालकी गोलाईपर जमाकर जिस ग्रह अथवा नक्षत्रको दिगंश कोटि जानना हो, उस ग्रह अथवा नक्षत्रको देखना आरंभ करो और अपनी आंख ओर उस धागेको, जो खम्भेके केंद्रमें बँधा हुआ बाहरी दीवालके ऊपर गया है, इस भांति खसकाते जाओ कि वह ग्रह वा नक्षत्र इस घूमते हुए धागेपर आजाय । इस भांति उस ग्रह वा तारेकी :दिगंशकोटिका अंश बाहरी दीवालपर इस घूमते हुए धागे और उत्तर अथवा दक्षिणकी खूंटीके बीचमें मिल जायगा । यदि देखनेके समय वह ग्रह वा नक्षत्र उत्तर गोलार्द्धमें होतो उत्तर और यदि दक्षिण गोलार्द्धमें होतो दक्षिणवाली खूंटीसे अंशोंको देखना चाहिये ।

७ इस यंत्रके दक्षिण एक दूसरा नाडीयंत्र है, जो ठीक ठीक पहलेकी नाई बना है । परन्तु इसका व्यास ६ फीट ३ इंच है और इसके बीचकी खूंटी भी गिरगई है और इसपरके चिह्न और अंशोंके भाग तो बिलकुल मिटगए हैं ।

इस समय प्रायः सभी यंत्रोंपरके चिह्न मिटगएहैं (वा मिटतेजाते हैं) और स्वयं यंत्रभी टूटते फूटते जाते हैं । इसके अतिरिक्त अपने निर्मित स्थानसे झुक जानेके कारण सभी यंत्रोंमें दोष होगएहैं, जिनसे गणना करनेमें अत्यन्त अशुद्धता होती है ।

मंदिरके बाहर एक चूनेका बहुत बड़ा चबूतरा है, जिसके चारोंओर नाली बनी है। इस समय उसके सामने गृहोंके बन जानेके कारण अब उसपर धूप नहीं आती और वह बेमरम्मतभी होगई है। इस कारण उसका पूरा पूरा समाचार विदित नहीं होता। परन्तु इससे समधरातल और दिगंश इत्यादिका ज्ञान होता होगा, इसमें संशय नहीं।

दशाश्वमेध घाट (२८)–यह घाट शहरके घाटोंके मध्यमें और काशीके पांच अति पवित्र घाटोंमेंसे एक है। यहां प्रयाग तीर्थ है, माघ मासमें यहां स्नानकी भीड़ होती है। यहां जलके भीतर 'रुद्र सरोवर' तीर्थ है। मणिकर्णिका घाटको छोड़कर काशीके सब घाटोंसे यहां अधिक लोग देख पड़ते हैं। इस घाटपर तिजारती चीजें, बहुतसे असबाब और यात्री नावसे उतरते हैं। लकड़ी, घास, पत्थरके बने हुए छोटे बड़े मन्दिर और मिर्जापुर और चुनारके पत्थर यहां बहुत बिकते हैं। इस घाटपर नाव बहुत रहती हैं। बहुतेरे लोग घाटोंको देखनेके लिए यहांसे नावमें बैठकर गंगाके सिरेकी ओर अस्सी संगम घाटतक जाकर यहां लौट आते हैं और फिर यहांसे नीचेकी ओर वरुणा–संगम घाटतक जाते हैं। मानमन्दिर और दशाश्वमेध दोनों घाटोंके मध्यमें गंगाके तीर मैदान है। दशाश्वमेध घाटसे ऊपर एक मकानमें काशीके सुविख्यात पंडित स्वामी विशुद्धानन्दजी रहते थे।

दशाश्वमेधेश्वर शिव–एक खुलेहुए मंडपमें एक स्थानपर 'दशाश्वमेधेश्वर' शिवलिंग और दूसरे स्थानपर पीतलके सिंहासनमें एक छोटी मूर्ति है, जिसको लोग 'शीतला देवी' कहते हैं। शहरमें शीतला रोग फैलनेके समय इस देवीकी विशेष पूजा होती है। शीतला देवीके बगलमें 'वन्दि देवी'का (जो अब गुप्त हैं) स्थान है।

मंडपके दक्षिण–पश्चिम दो शिखरदार मन्दिरकी दीवारोंके आलोंमें आदमीके समान ऊंची गंगा, सरस्वती, यमुना, विष्णु, त्रिदेव और नृसिंहकी मूर्तियां हैं।

घाटके उत्तर पोठिया (जो बंगालमें रामपुर बौलियाके पास है) के राजाका बनवाया हुआ विशाल शिवमन्दिर है, जिसके उत्तर छोटे मन्दिरमें 'शूलटंकेश्वर' शिवलिंग हैं। इस मन्दिरमें काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'अभयद विनायक' हैं। घाटके ऊपर बड़े मन्दिरसे उत्तर 'प्रयागेश्वर' 'प्रयाग माधव', 'रुद्रसरोवर', और 'आदि वाराहेश्वर' शिवलिंगका मन्दिर है। मन्दिरके बाहर एक मढ़ीमें किसी भक्तकी स्थापित 'प्रयागमाधवकी' मूर्ति है। काशीखंडके अनुसार मानमन्दिर घाटके ऊपर एक मन्दिरमें 'प्रयागमाधव'की मूर्ति है, जो 'लक्ष्मीनारायण'के नामसे प्रसिद्ध है। आदिवाराहके पश्चिम गलीमें एक मन्दिरमें 'प्रयागेश्वर' को लोग पूजते हैं परन्तु काशीखंडके टीकाकारने 'शूलटङ्केश्वर' को प्रयागेश्वर कहकर लिखा है।

शिवपुराण–(६ वां खंड–९ वां अध्याय) शिवजीने राजा दिवोदासको काशीसे विरक्त करनेके लिये ब्रह्माको काशीमें भेजा। ब्रह्माने काशीमें जाकर राजा दिवोदासकी सहायतासे १० अश्वमेध यज्ञ किए। वही स्थान दशाश्वमेध नामसे प्रसिद्ध है। ब्रह्मा भी उस स्थानपर ब्रह्मेश्वर शिवलिङ्ग स्थापित करके रहगए। (काशीखंडके ५२ वें अध्यायमें भी यह कथा है)।

वामनपुराण–(३ रा अध्याय) विष्णुने कहा काशीमें जो दशाश्वमेध तीर्थ है, वहां मेरे अंशवाले केशवभगवान् वसे हैं।

स्कंदपुराण–(काशीखंड–५२ अध्याय) ज्येष्ठ शुक्ल दशमी पर्यंत दश दिन दशाश्वमेधमें स्नान करनेसे सर्व फल प्राप्त होता है। ज्येष्ठ शुक्ल दशमीको दशाश्वमेधेश्वरके दर्शन पूजन करनेसे १० जन्मका पाप निवृत्त होता है।

(६१ वां अध्याय) माघ मासमें प्रयागतीर्थ, प्रयागमाधव, और प्रयागेश्वर यात्रासे प्रयाग स्नान करनेसे दशगुणा फल मिलता है।

बालमुकुंदके चौहट्टाके निकट काशीके ४२ लिङ्गोंमेंसे 'ब्रह्मेश्वर' शिवलिङ्ग और ५६ विनायकोंमेंसे 'सिंहतुंड विनायक' हैं। अगस्त्यकुंडके निकट 'अगस्तीश्वर' और 'लोपामुद्रा' एक ही मन्दिरमें हैं। इनके दक्षिण 'कश्यपेश्वर' शिवलिंग और पश्चिमोत्तर जंगमबाड़ी महल्लेमें 'अंगिरेश्वर' शिवलिंग और काशीके १२ आदित्योंमेंसे 'विमलादित्य' हैं। इसी स्थान पर यक्षराजके पुत्र हरिकेशने तप किया था, जिसके प्रभावसे उसको 'दंडपाणि'का पद मिला, जिसके स्थापित यहां 'हरिकेशेश्वर' शिवलिंग हैं।

मिश्रपोखराके उत्तर एक मन्दिरमें 'ध्रुवेश्वर' और काशीके ४६ विनायकोंमेंसे 'चतुर्दंत विनायक' हैं। कोदई की चौकीके निकट 'वैद्यनाथ' 'गोकर्णेश्वर' और 'गोकर्ण कूप' हैं, (जिसके पश्चिम 'अत्रीश्वर' गुप्त हैं) गोकर्णेश्वरमें पूर्व दक्षिण कोदईकी चौकीसे आगे फाटकके भीतर 'त्र्यम्बकेश्वर' शिवलिंग हैं। (जो त्रिलोकनाथके नामसे प्रसिद्ध हैं) काशीखंडके ६९ वें अध्यायमें लिखा है कि सिंहराशिके बृहस्पति होनेपर काशीके त्र्यंबकेश्वरकी यात्रासे गोदावरी यात्रा का फल होता है। त्र्यंबकेश्वरसे पूर्व-दक्षिण 'गौतमेश्वर' का मन्दिर है, जिस जगह 'गोदावरी तीर्थ' गुप्त है। यहांपर काशीनरेश महाराजका बनवाया बड़ा भारी मन्दिर है। इस स्थानसे पूर्व कुछ दूर साक्षीविनायक महल्लेमें 'साक्षी विनायक' का मन्दिर है। बहुतेरे यात्री यहां अपनी यात्राकी साक्षी कराते हैं। इस मन्दिरको सन १७७० ई० में एक मरहठाने बनवाया था। गणेशकी विशालमूर्ति लाल रंगकी है। समीपहीमें काशीके ११ महारुद्रोंमेंसे 'मनःप्रकामेश्वर' शिवलिंगका मन्दिर है इस मन्दिरमें काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'कलिप्रिय विनायक' हैं। इस मन्दिरसे दक्षिण गलीके पूर्व किनारे 'कोटिलिंगेश्वर' शिवलिंग हैं जिससे पूर्व शकरकन्दकी गलीमें 'ब्राह्मीश्वर महादेव' हैं, जिनके पूर्व 'चतुर्वक्त्रेश्वर' शिवलिंग हैं।

अहिल्याबाई घाट (२९)-यह उत्तम घाट इंदौरकी महारानी अहिल्याबाईका बनवाया हुआ है।

मुन्शी घाट (३०)-यह घाट बहुत सुन्दर है। इसको नागपुरके दीवान श्रीधरनारायणदासने बनवाया था। इससे ऊपरकी कोठरियोंमें पत्थर खोदकर सुंदर काम बना है और बहुत बड़े बड़े मकान हैं; जैसे गंगाके किनारे दूसरे घाटों पर नहीं हैं।

राणामहल घाट (३१)-यह पुराना घाट उदयपुरके महाराणाका बनवाया हुआ है। घाटसे ऊपर काशीके५६विनायकोंमेंसे 'वक्रतुंड विनायक' सरस्वती विनायकके नामसे प्रसिद्ध हैं।

चौसठ घाट (३२)-बंगालेके राजा दिग्पतिने इस घाटको बनवाया था।

चौसठ देवीका मन्दिर-घाटसे ऊपर आंगनके बगलोंमें मकान हैं। पूर्व मुखके ३ द्वार वाले मकानमें सर्वांगमें पीतल जड़ी हुई काशीकी६४ योगिनियोंमेंसे प्रसिद्ध गजानना 'चतुःषष्ठी देवी'के नामसे प्रसिद्ध हैं। आगे सिंहहै। पूर्व बगलके मकानमें ऐसीही सर्वांगमें पीतल जड़ी हुई 'भद्रकाली'की मूर्ति है। चैत्र प्रतिपदाके दिन चतुःषष्ठी देवीकी पूजाका बड़ा मेला होता है।

शिवपुराण-(६ वां खंड-७ वां अध्याय) शिवजीने दिवोदास राजासे काशी छोड़ानेके निमित्त ६४ योगिनियोंको भेजा। जब काशीमें योगिनियोंकी युक्ति न चली तब वे मणिकर्णिकाके आगे स्थितहो गईं।

स्कंदपुराण–(काशीखंड–४५ वां अध्याय) आश्विनकी नवरात्रमें ९ दिन पर्यंत, प्रतिमासके कृष्णपक्षकी १४ को और चैत्र प्रतिपदाके दिन ६४ योगिनियोंके दर्शन पूजन करनेसे वर्षपर्यंत विघ्न नहीं होता।

घाटसे ऊपर ६४ देवीके मन्दिरसे पश्चिम देवनाथपुराके पास 'पुष्पदंतेश्वर, 'गरुड़ेश्वर' और 'पातालेश्वर' शिवलिंग हैं पुष्पदंतेश्वरके मन्दिरमें काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'एकदंत विनायक' हैं।

पांडेघाट (३३) और सर्वेश्वर-घाट (३४)–यहां सूनसान रहता है। सर्वेश्वर घाटके ऊपर सर्वेश्वर शिवलिंग हैं।

राजाघाट (३५)– इस घाटको और इस घाटके ऊपर वाले मन्दिर तथा मकानको पेशवाके नायब राजा विनायक रावने, जो चित्रकूटके पास करवीमें रहते थे, बनवाया था। मकानमें ब्राह्मण लोग रहते हैं। मकानकी मरम्मत और ब्राह्मणोंके खर्चके निमित्त राजाने सरकारमें रुपया जमा करा कर वसीयतनामा लिख दिया है। उत्तर शहरके बड़े बड़े मकान देख पड़ते हैं।

नारदघाट (३६)–सिरेकी ओर सीढ़ियां दाहिने घूमी हैं। घाटसे ऊपर एक गलीमें 'नारदेश्वर' शिवका छोटा मन्दिर है।

मानससरोवर घाट (३७) –यह घाट आंबेरके राजा मानसिंहका बनवाया हुआ है। नीचे से ऊपर तक थोड़ी चौड़ी सीढ़ियां हैं। घाटसे ऊपर एक गलीमें 'मानससरोवर' नामक कुंड है, जिसके निकट एक मन्दिरमें 'हंसेश्वर' शिवलिंग हैं। जिनसे दक्षिण कुछ दूर चलकर एक मकानमें कई सीढ़ियोंके ऊपर एक मंदिरमें 'रुक्मांगदेश्वर' शिवलिंग और 'चित्रग्रीवा' देवी हैं। आस पास कई देवस्थान हैं, मानससरोवरके पूर्व एक गलीमें 'बालकृष्ण' और चतुर्भुज विष्णुकी मूर्ति है। जिसके पास मानसिंहका बनवाया हुआ एक शिवमन्दिर है।

क्षेमेश्वरघाट (३८)–घाटसे ऊपर 'क्षेमेश्वर'का मन्दिर है।

चौकीघाट (३९)–घाटके ऊपर एक पीपलके वृक्षके नीचे चबूतरे पर जड़के चारोंओर बहुत देवमूर्तियां हैं।

केदारघाट (४०)–यह घाट काशीके उत्तम घाटोंमेंसे एक है। घाटपर कई शिवलिंग हैं। २५ सीढ़ियोंके ऊपर 'गौरीकुंड' नामक एक चौखूटा छोटा कुंड है।

केदारेश्वरका मन्दिर–गौरीकुंडसे ४७ सीढ़ियोंके ऊपर 'केदारेश्वर' शिवका मन्दिर है केदारेश्वर शिव काशीके १२ ज्योतिर्लिंगोंमेंसे और ४२ प्रधान लिंगोंमेंसे मन्दिरमें तीन डेवढ़ीके भीतर अनगढ़ और चिपटे केदारेश्वर लिंग हैं। वहां अँधेरा रहनेके कारण दिनमेंभी दीप जलते हैं। मन्दिरके किवाड़ों पर पीतल जडा है। दरवाजेके दोनों बगलोंमें चतुर्भुज छः छः फीट ऊंचे एक एक द्वारपाल खडे हैं। मन्दिरके आगे बांई और गौरी, स्वामिकार्तिक, गणेश, दंडपाणि भैरव, और दहिने धातुनिर्मित शिव पार्वती इत्यादि भोगमूर्तियां और आगे नन्दी बैल हैं। मन्दिरके बगलोंमें परिक्रमाका मार्ग है, जिसके बाद मन्दिरके आगे बड़ा जगमोहन और तीन ओर दालानोंमें कई छोटे देवमन्दिर और बहुत देवता हैं। पश्चिम ओर एकही तरहके दो मन्दिर हैं, जिनमेंसे दक्षिण वालेमें 'लक्ष्मीनारायण' और उत्तर वालेमें 'मीनाक्षी' देवीकी मूर्ति है। मन्दिरके दक्षिण भागकी कोठरीमें दक्षिणाकी

मूर्ति है। जगमोहनके उत्तर भागमें गौरी, स्वामिकार्तिक, गणेश और दंडपाणि भैरवकी धातुनिर्मित भोग मूर्तियां हैं। स्वामिकार्तिकके निकट धातुनिर्मित स्त्री हैं और स्थान स्थानपर उत्सव-मूर्तियोंके चढ़नेके लिये पीतलके बैल और हंस, काष्ठके मोर इत्यादि वाहन रक्खे हुए हैं। मन्दिरके चौकके घेरेके पूर्व और पश्चिम एक २ बड़े फाटक हैं, जिनके भीतर जूता पहनकर कोई नहीं जाता।

शिवकी मूर्ति पीतलके नन्दी बैलपर चढ़ाकर प्रतिमहीनेके दोनों प्रदोषोंको मन्दिरकी एक परिक्रमा कराई जाती है। उस दिन मूर्तियोंका शृंगार होता है और भोगकी तैय्यारी अधिक होती है। गौरीकी भोगमूर्ति प्रतिशुक्रवारको पीतलके हंसपर चढ़कर और स्वामिकार्तिक प्रतिषष्ठीको काष्ठके मयूरपर चढ़कर घूमते हैं। कार्त्तिक शुक्ल षष्ठीको स्वामिकार्तिक काष्ठके तारकासुरका वध करते हैं। उस दिन यहां मेला होता है। प्रतिचतुर्थीको काष्ठके मूसेपर गणेशजी और एकादशीके दिन लक्ष्मीनारायणकी भोग मूर्तियां घुमाई जाती हैं। नवरात्रमें कुमार स्वामीके मठसे दुर्गाकी मूर्ति लाकर जगमोहनमें रक्खी जाती है और दशमीको काष्ठके सिंहपर चढ़ाकर फिराई जाती है।

केदारजीके मन्दिरके घेरेसे बाहर दक्षिण 'नीलकंठेश्वर' का मन्दिर और आगे एक कोठरीमें लगभग दो हाथ ऊंचा 'सगरेश्वर' शिवलिंग है।

स्कन्दपुराण—(काशीखंड—७७ वां अध्याय) मंगलवारको अमावास्या हो तो केदार घाटपर और गौरी कुंडमें स्नान करके पिंडदान करनेसे १०१ कुलका उद्धार होता है। चैत्र कृष्ण १४ का व्रत करके तीन चुल्लू केदारोदक पीनेसे मनुष्य शिवरूप होता है। और जो केवल पूजनही करते हैं, उनके ७ जन्मका पाप छुट जाता है।

तिलभांडेश्वर—बंगाली टोलेमें हाईस्कूलके पासकी गलीके एक मन्दिरमें ४ २ फीट ऊंचा और १५ फीटके घेरेमें 'तिलभांडेश्वर' शिवलिंग है। मन्दिरके पास बहुत देवमूर्तियां और एक पीपलके वृक्षके नीचे बहुत शिवलिंग और देवमूर्तियां हैं।

ललीघाट (४१)—यह घाट ललीदासका बनवाया हुआ है। इसकी सीढ़ियां थोड़ी चौड़ी हैं। घाटसे ऊपर सड़कके निकट काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'लम्बोदर विनायक' अब 'चिंतामणि गणेश'के नामसे प्रसिद्ध हैं।

श्मशान घाट (४२)—यहां 'श्मशानेश्वर' शिवलिंग हैं और कभी कभी मुर्दे जलाए जाते हैं। लोग कहते हैं कि, मुर्दे जलानेके लिये पहले यही घाट था।

हनुमान-घाट (४३)—इस घाटकी सीढ़ियां सुन्दर हैं, जिनसे ऊपर 'हनुमानजी' का मन्दिर है।

हनुमानघाटके निकट काशीके अष्ट महाभैरवोंमेंसे 'रूरू भैरव' हैं।

दंडीघाट (४४)—बहुत दंडी स्नानके लिये इस घाटपर आते हैं। उनके दंड खड़े करनेके लिए नीचेकी सीढ़ियोंमें छिद्र बने हैं।

शिवाला-घाट (४५)—इसका पुश्ता दक्षिण और दूरतक चला गया है। स्थान स्थान पर आठ पहले पाये बने हैं, बीचके भागमें गुम्बजदार २ पाये हैं। घाटसे ऊपर बहुत बड़ा मकान है, जिसको बनारसके राजा चेतसिंह किलेके काममें लाते थे, अब इसमें सरकारसे पन्शनपानेवाले मुगल बादशाहके खानदानके लोग रहते हैं। इस मकानसे लगेहुए उत्तर

और गोसाईं लोगोंका उत्तम मठ है; जिनमें बहुत साधु रहते हैं। मठके समीप एक 'महाबीर-जी' का मन्दिर है, जिसमें 'स्वप्नेश्वर' शिवलिंग और 'स्वप्नेश्वरी' देवी हैं, जिनके दक्षिण 'हयग्रीव' भगवान् और 'हयग्रीव कुंड' है। ये सब स्थान भदैनी महल्लेके नामसे प्रसिद्ध हैं।

वक्षराजघाट (४६)—इसका बनानेवाला वक्षराज नामक एक मनुष्य था, जिससे इसको जैन लोगोंने खरीद लिया। घाटका उत्तरीय भाग लगभग १०० वर्षका बना हुआ है। घाटसे ऊपर ३ जैन मन्दिर हैं।

जानकीघाट (४७)—लगभग ८ वर्ष हुए, सुरसरिकी रानीने इस घाटको बनवाया है। इससे ऊपर रानीका बड़ा मकान और सुनहले कलशवाले ४ बड़े मन्दिर हैं।

इस घाटके पास बनारस वाटर वर्क्स 'पंपस्टेशन' है। यहांसे गंगाजल नलोंद्वारा सारे शहरमें जाता है।

तुलसीघाट (४८)—इस घाटकी शकल पुरानी है। यहां 'गंगासागर' तीर्थ है। काशी-खंडके ६९ वें अध्यायमें लिखा है कि, गंगासागरमें स्नान करनेसे सर्व तीर्थमें स्नान करनेका फल मिलता है।

तुलसीदासका मन्दिर—तुलसीघाटसे ऊपर तुलसीदासका मन्दिर है। मकानके घुमाव रास्तेसे तुलसीदासकी गद्दीके पास पहुँचना होता है, जिसके पास तुलसीदासकी खड़ाऊं और एक हाथसे छोटा एक नावका टुकडा रक्खा हुआ है। बहुत प्राचीन होनेसे खड़ाउओंकी लकड़ी गली जाती है, इससे उनपर कपड़े लपेटे गए हैं। यहांके अधिकारी कहते हैं कि खड़ाऊं तुलसीदासकी हैं और जिस नावपर वह पार उतरते थे उसी नावका यह टुकड़ा है।

इसी स्थानपर तुलसीदास रहते थे। संवत् १६८० (सन १६२३ ई०) में यहांहीं तुलसीदासका देहांत हुआ।

तुलसीदास पद्यमें भाषाकी पुस्तकोंको बनाकर भाषाके कवियोंमें शिरोमणि और उत्तरी भारतमें प्रख्यात हो गए हैं। इन्होंने संवत् १६३१ में मानस रामायणको रचा, जिसका प्रचार भाषाकी संपूर्ण पुस्तकोंसे अधिक है। इसके अतिरिक्त इनके बनाए हुए विनयपत्रिका, गीतावली, दोहावली, कवित्तरामायण, छप्पय रामायण, बरवा रामायण, वैराग्यसंदीपिनी, पार्वतीमंगल, जानकीमंगल, रामलला नहछू, कृष्णगीतावली; रामाज्ञा प्रश्न, कलिधर्माधर्म निरूपण, हनुमान-बाहुक, हनुमानचालीसा, संकटमोचन इत्यादि बहुतेरे छोटे बड़े ग्रंथ हैं।

तुलसीदासके मन्दिरके पश्चिमोत्तर एक कोठरीमें कपिल मुनिकी मूर्ति है, जिस मन्दिरमें एक सिंहासनपर राम, लक्ष्मण और जानकीजी विराजमान हैं। इसी मन्दिरमें 'त्रिविक्रम भग-वान' और 'असीमाधव' की मूर्तियां हैं।

लोलार्क कुंड—यह भदैनी महल्लेमें तुलसीघाटसे थोड़ीही दूरपर एक प्रसिद्ध कूंआ है, जिसको महारानी अहिल्याबाई, अमृतराव और कूचबिहारके राजाने बनवाया था। कूंएका व्यास १५ फीट है, जिसके एक ओर बिना पानीका चौखूटा बड़ा हौज है, जिसके ३ ओर ऊपरसे नीचेतक पत्थरकी चालीस सीढियां और एक ओर ऊंचा मेहराव है। जिससे होकर नीचे सीढ़ियों द्वारा कूंआमें पैठना होता है। यहां भाद्र षष्ठीको मेला होता है। सब लोग लोलार्क तीर्थमें स्नान करते हैं। लोलार्क कुंडकी सीढीपर काशीके १२ आदित्योंमेंसे 'लोलार्कादित्य' हैं। कुंडके ऊपर दक्षिण 'लोलार्केश्वर' शिवलिंग हैं। जिनके मन्दिरसे पूर्व एक मन्दिरमें 'अमरेश्वर'

और दूसरे मन्दिरमें 'पराशरेश्वर' शिवलिंग हैं। जिनसे पूर्व दक्षिण एक मन्दिरमें काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'अर्क विनायक' हैं।

स्कन्दपुराण-(काशीखंड ४६ वां अध्याय) शिवजीने राजा दिवोदासको काशीसे विरक्त करनेके लिए सूर्य्यको काशीमें भेजा। आने पर (शिवजीके कार्यके लिए) सूर्य्यका मन लोल (चंचल) हुआ, इस करके उनका नाम लोलार्क पड़ा। कार्य सिद्ध न होनेपर वह दक्षिण दिशामें अस्सी संगमके निकट स्थित हो गए। मार्गशीर्षकी सप्तमी, षष्ठी वा रविवारको वहां वार्षिकी यात्रा करनेसे मनुष्य पापसे छूट जाते हैं। लोलार्कके दर्शन करनेसे वर्षभरका पाप निवृत्त होता है। सूर्य्यग्रहणमें वहां स्नान दान करनेसे कुरुक्षेत्रसे अधिक फल प्राप्त होता है। माघ शुक्ल सप्तमीको अस्सी संगमपर स्नान करनेसे सप्त जन्मका पाप छूट जाता है। प्रत्येक रविवारको लोलार्ककी यात्रा करनेसे कुष्ठादि रोग नहीं रहते।

वामनपुराण-(१५ वां अध्याय) शिवजीने अपने भक्त सुकेशी दैत्यको सूर्यद्वारा पृथ्वीमें गिराया हुआ देखकर कोप किया। सूर्य महादेवके नेत्रोंकी अग्निसे तापित होकर वरुणा और अस्सी नदियोंके बीचमें गिरगए पीछे वह दग्ध होते हुए बारंबार कभी अस्सीमें कभी वरुणामें अलातचक्रकी भांति गोता मार मार भ्रमने लगे। तब ब्रह्माजी मंदराचलमें जाकर सूर्यके लिए शिवको काशीमें लाए। महादेवने सूर्यको हाथमें ग्रहण कर उनका लोल नाम धर कर उनको फिर रथमें आरोपित किया।

राममन्दिर-भदैनी महल्लेमें लोलार्क कुंडसे उत्तर राममन्दिर है। आंगनके चारों बगलों पर मकान हैं, जिनमेंसे दक्षिणवाले मन्दिरमें राम, लक्ष्मण और जानकीकी मूर्तियां हैं। राममन्दिरके चारोंओर बनारसके वाटर वर्क्सकी चिमनी और कारखानेका काम हुआ है।

राममन्दिरके लिये काशीका दंगा-इसी वर्ष (सन १८९१ ई०) के आरंभमें भदैनी महल्लेमें गंगाके पास जल-कलके लिये अंजन इत्यादि खड़े करनेके निमित्त भूमि नापी गई, उसके भीतर यह राममन्दिर भी आगया। हिंदुओंकी ओरसे मन्दिर बचानेके लिए अरजी पड़ी। अंतमें म्युनिसिपल बोर्डसे यह निश्चित हुआ कि अभी मन्दिर छोड़कर आस पासके मकानात गिराए जावें। कुछ दिनोंके पश्चात् २० फीट गहरा गढ़ा चारोंओरसे मन्दिरसे ऐसा सटकर खोदा गया कि दीवारोंके गिर जानेका पूरा भय था। हिंदुओंकी ओरसे एक अर्जी फिर दी गई कि हमें ३ फीट जमीन मन्दिरके आस पास पुश्ता बनानेको और ४ फीट सड़कके वास्ते दी जाय और उसका उचित मूल्य लेलिया जाय। इस अर्जी पर कुछ आज्ञा नहीं हुई, तब तक इंजिनियर साहिब चाहते थे कि सड़कवाला मार्ग बन्द कर दिया जावे, जिसमें कोई मन्दिरके पास न जा सके। ता० ८ अप्रैलको वह सीढ़ी भी खोद दी गई, जिससे मन्दिरमें जानेका मार्ग था; परन्तु लोगोंने मन्दिरमें जानेके अर्थ किसी भांति ईंट पत्थर डाल कर चढ़ने का रास्ता रातही रातमें तय्यार कर डाला।

ता० १५ अप्रैलके ११ $\frac{1}{2}$ बजे दिनको यह व्यर्थ कोलाहल हुआ कि भदैनीमें श्रीरामजी का मन्दिर खोदा जाता है। बस थोड़ीही देरमें सारे शहरमें हरताल होगया, बाजार बंद होगये, हजारों आदमी मन्दिरकी ओर जाते हुए दिखाई देने लगे, कई हजार मनुष्योंकी भीड़ इस मैदानमें जमा हो गई। अनेक बदमाशोंने पम्पिंग ऐंजिनको, जो गंगाके किनारे खड़ा था, टुकड़े टुकड़े कर डाला और छोटे बड़े नल, जितने पड़े थे उनमेंसे कितनोहींको तोड़ दिया

और कितनेहींको गंगामें डाल दिया। हुल्लड़ यहांतक बिगड़ा कि म्युनिसिपल कमिश्नर बाबू सीतारामके मकान और अस्तबलमें बदमाश और लूटेरोंने घुसकर उनका कई हजारका माल लूट लिया। बदमाशोंके कई दलोंने सड़क और गलियोंकी सरकारी लालटेनोंको तोड़ दिया। दंगा करनेवालोंने तारघर लूट लिया और तारको काट डाला। इन लोगोंने राजघाटके स्टेशन और पारसल गोदामके पारसल और असबाबको लूट लिया। तीन चार घंटे तक शहर में बड़ी हलचल थी, अनेक भलेमानुष रईसोंकी हानि हुई।

मजिस्ट्रेट साहेबने इन्तिजाम आरंभ किया और वे जिला सुपरिन्टेंडेंट पुलिस और अंगरेजी पलटनको साथ लेकर पहुँच गए। १२ वीं बंगाल पैदल भी उसी दम भेजी गई। दो कम्पनी गोरोंकी डफरिंग पुलकी रक्षाके लिए गई। तीन दिनतक तो कुछ दूकानें खुलीं और कुछ बन्द ही रहीं, परन्तु पीछे सब खुल गईं और नगरमें शान्ति-स्थापन हो गया।

जिन लोगोंने हुल्लड़ मचाया और लूट मार की, वे पकड़े जाने लगे। लगभग १००० आदमी पकड़े गए, इनमें अनेक राह चलनेवाले निरापराधी भी थे। ता० १८ अप्रैलसे अपराध सबूत न होनेसे बहुतेरे आदमी छुटने लगे, कितने लोग कैद हुए और कई आदमी काले-पानी भेजे गए।

ता० १० जूनको राममन्दिरके मालिक बाबू गोवर्द्धनदास गुजराती, एक धनी बाबू गोपालदास, बड़हरकी रानीके कारिन्दे मुन्शी गिरिजाप्रसाद, बाबू लक्ष्मणदास, पण्डित रामेश्वरदत्त, पण्डित सुखनन्दन और रघुनाथदास इनको तीन तीन वर्षका सपरिश्रम कारावास और क्रमसे २५०००, १००००, ३०००, ५०००, १०००, १०००, जुर्मानेकी सजा हुई। अभियुक्तोंकी ओरसे हाईकोर्टमें अपील हुई जिसपर तारीख ४ अगस्तको हाईकोर्टने गिरिजा-प्रसादके अतिरिक्त ६ आदमियोंका जुर्माना माफ कर दिया और उनकी सजा घटा कर अठारह महीनेकी कर दी।

बाजीराव-घाट (४९)—यह घाट तुलसीघाटसे लगा हुआ दक्षिण ओर बेमरम्मत पड़ा है। पूनाके अंतिम पेशवा बाजीरावने इसको बनवाया था। घाटसे ऊपरके मकानोंमें साधु लोग रहते हैं।

रालामिश्र-घाट (५०)—यह घाट काशीके सब पक्के घाटोंके अंतमें दक्षिण ओर है। इसके दोनों बाजुओंपर गोलाकार पाये हैं। घाटको रालामिश्र नामक एक धनी ब्राह्मणने बनवाया था।

अस्सीसंगम घाट (५१)—रालामिश्र-घाटसे दक्षिण मैदानमें काशीके पांच अतिपवित्र घाटोंमेंसे सबसे दक्षिणका अस्सी नामक कच्चा घाट है, यह हरिद्वार तीर्थ है। दक्षिण ओर एक नालाके समान लगभग ४० फीट चौड़ी अस्सी नामक नदी गंगामें मिली है। वर्षाकालमें इस नदीसे गंगामें पानी गिरता है।

अस्सीघाटसे ऊपर एक छोटे मन्दिरमें 'संगमेश्वर' शिवलिंग हैं।

जगन्नाथजीका मन्दिर—अस्सीघाटसे ऊपर एक मन्दिरमें कई ड्योढ़ीके भीतर जगन्नाथ, बलभद्र, और सुभद्रादेवीकी मूर्तियां हैं।

आषाढ़ शुक्ल २ को विजया-नगरके महाराजके बड़े रथपर चढ़कर जगन्नाथजी यात्रा करते हैं और उत्तरको ओर दाऊजीके मन्दिरके पास सिकड़ा तक जाते हैं। उस समय रथयात्राकी बड़ी तैय्यारी और दर्शकोंकी भीड़ होती है।

स्कन्दपुराण–(काशीखंड-४६ वां अध्याय) मार्गशीर्षमें कृष्णपक्षकी ६ को अस्सी संगम पर स्नान और पिंडदान करनेसे पितर तृप्त होते हैं।

पुष्कर-तीर्थ--अस्सी-संगमसे पश्चिम-दक्षिण पुष्कर-तीर्थ नामक सरोवर है।

दुर्गाकुंड-अस्सी घाटसे ½ मील पश्चिम दुर्गाकुंड महल्लेमें 'दुर्गाकुंड' नामक बड़ा सरोवर है, जिसके पास पत्थरसे बना हुआ काशीकी ९ दुर्गाओंमेंसे 'कूष्मांडाख्या' दुर्गाका उत्तम मन्दिर है। सरोवर और मन्दिर दोनोंको पिछले शतकमें रानी भवानीने बनवाया था। मन्दिरमें नकाशीका सुन्दर काम है। मन्दिरके आगेके मण्डपको लगभग २५ वर्ष हुए, एक फौजी अफसरने बनवाया था, जिसमें मिर्जापुरके मजिस्ट्रेटका दिया हुआ एक बड़ा घण्टा लटका है। मण्डपका फर्श नील और श्वेद मार्बुलके टुकड़ोंसे बना है। फाटकके पास २ सिंहकी मूर्ति और मन्दिरके चारोंओर छोटे छोटे कई मन्दिर हैं, जिनमें शिव, गणेश आदि देवताओंकी मूर्तियां हैं। मन्दिरके आंगनके चारों बगलोंपर दालान हैं, जिनमें साधु और यात्री रहते हैं। पश्चिम ओर प्रधान फाटक पर नौबतखाना है। घेरेके भीतर सदर दर्वाजेके पास काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'दुर्गविनायक' पश्चिम-दक्षिण और कालीजीके मन्दिरमें अष्ट महाभैरवोंमेंसे 'चण्ड भैरव' हैं। घेरेके बाहर दक्षिण दर्वाजेके पास एक मंदिरमें 'कुक्कुटेश्वर' शिवलिंग हैं। इस मन्दिरके पूर्वोत्तर किसी भक्तने दुर्गविनायकके नामसे एक मन्दिरमें गणेशकी मूर्त्ति स्थापितकी है, जिसको कोई कोई 'दुर्गविनायक' कहते हैं। यहां बहुत बन्दर रहते हैं। द्वारेश्वर और मायादेवी गुप्त हैं।

दुर्गाकुंडके पास एक बागमें सुविख्यात राजगुरु भास्करानन्द स्वामी दिगंबर वेषसे रहते थे और कुंडसे थोड़ी दूर विजया नगरके महाराजका महल है, जिससे पश्चिम कई जैन मन्दिर हैं। नवरात्रोंमें और श्रावणके मंगल और शुक्रवारको दुर्गाकुंड पर स्नान और दर्शनकी भीड़ होती है।

देवीभागवत–(३ रा स्कन्ध-२४ वां अध्याय) देवीजी सुबाहु राजापर प्रसन्न हुई। राजाने कहा कि, हे देवि! जबतक काशीपुरी रहे, तबतक आप इसकी रक्षाके निमित्त दुर्गा नामसे प्रसिद्ध होकर निवास करें। देवीजीने कहा कि, जबतक पृथ्वी रहेगी तबतक हम काशीवासिनी होंगी।

स्कन्दपुराण–(काशीखंड-७२ वां अध्याय) अष्टमी चतुर्दशी और मंगल वारको काशीकी दुर्गाका सर्वदा पूजन करना चाहिए। नवरात्रोंमें यत्नसे दुर्गाकी पूजा करनेसे विघ्न नाश होता है आश्विनके नवरात्रमें दुर्गाकुंडमें स्नान करनेसे दुर्गति नाश होती है और दुर्गाकी पूजा करनेसे ९ जन्मका पाप छूटजाता है।

कुरुक्षेत्र-तीर्थ–दुर्गाकुंडसे पूर्व कुछ उत्तर थोड़ी दूरपर, 'कुरुक्षेत्र' नामक एक पक्का सरोवर है। सूर्य्यग्रहणके समय यहां स्नानकी बड़ी भीड़ होती है।

कृमिकुंड–कुरुक्षेत्रसे दूर उत्तर सिद्धकुंड सुनहटिया है, जिसके उत्तर किनारामें सम्प्रदाय वालोंका एक बाग 'किनारामका स्थल'के नामसे प्रसिद्ध है। इस बागमें 'कृमिकुण्ड' और 'किनारामकी समाधि' है। जिनके पास काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'कूटदंत-विनायक' है।

रेवती-तीर्थ–कृमिकुंडसे दूर पश्चिमोत्तर 'रेवतीतीर्थ' रेवड़ी तालाबके नामसे प्रसिद्ध है।

श्री भास्करानन्द की मूर्त्ति पर अंकित पद्य

"जातो ब्रह्मकुले स्वतो हि पविता पूत: पुनर्विद्यया।
ज्ञानेन ज्वलितस्तपोभिरुदितो ब्राह्म्यं महो मूर्त्तिमत्॥
भित्वा संतमसं प्रबोध्य जगतीमानन्दयन् प्राणिनो।
ज्ञानप्रेममयोऽर्कवेन्द्र मिलित: श्री भास्करानन्दक:॥
हस्ताक्षर चरणानुरागी पद्मदेवनारायण रिया"

भारतभ्रमण-प्रथमखण्ड, तृतीय अध्याय पृ. ४० का परिशिष्ट

श्री भास्करानन्द की यह संगमरमर की मूर्त्ति दुर्गाकुंड, काशी, से पूर्व की ओर स्थित उनके समाधिमन्दिर वाले उद्यान में पूर्व की कोठरी में स्थापित है। यह वही उद्यान है जिसमें आर्यसमाज-संस्थापक महर्षि दयानन्द का काशी की पंडितमंडली (स्वामी विशुद्धानन्द और पं. बालशास्त्री आदि से काशीनरेश के नायकत्व में) से संवत् १८ वै.= ई. में शास्त्रार्थ हुआ था। वह उक्त समाधिमन्दिर से दक्षिण की ओर है। दक्षिणपश्चिम के कोने में ज़ीने के पास एक कोठरी है। उसके ऊपर एक बँगला (छप्पर) था। उसी में महर्षि दयानन्द ठहरे थे। यह स्थान १९ मार्च सन् १९३३ को उक्त भास्करानंद के मन्दिर के पुजारी मन्नीलाल मिश्र ने मुझको दिखलाया और उक्त शास्त्रार्थ की सब बातें भी श्रवण परम्परागत अपनी सुनी हुई मुझको सुनाईं। ह. भवानी प्रसाद:

१९ मार्च सि. १९३३ ई.
रविवार १०. बजे प्रात:

इस स्थान को २४ मार्च. ३३ ई. को पुन: देखा

शंखोद्धार-तीर्थ-रेवड़ी तालाबसे दूर पश्चिम कुछ दक्षिण 'संखूधारा तीर्थ' 'द्वारका तीर्थ' 'दुर्वासा ऋषि' और 'कृष्ण रुक्मिणी' हैं । प्रतिवर्ष कर्ककी संक्रांति भर हर सोमवारको यहां स्नान दर्शनकी भीड़ होती है।

कामाक्षाकुंड-यह संखूधारासे दूर उत्तर है यहां 'कामाक्षा देवी' 'वैजनाथ' काशीके अष्ट महाभैरवोंमेंसे 'क्रोधभैरव' और ६४ योगिनियोंमेंसे 'कामाक्षा योगिनी' हैं।

रामकुंड-कामाक्षा कुंडसे दूर उत्तर कुछ पूर्व रामकुंडके पास 'लवेश्वर' और 'कुशेश्वर' हैं।

शिवगिरिका तालाब-रामकुंडसे दूर पश्चिमोत्तर शिवगिरिके तालाबके पास (जो सिगिराकरके प्रसिद्ध है) काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'त्रिमुखविनायक' और ११ महारुद्रोंमेंसे 'त्रिपुरांतक' हैं।

शालकंटक विनायक-सिगिराके टीलासे लगभग २ मील पश्चिम मडु आडीहमें एक पक्के सरोवरके पश्चिम तटके ऊपर काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'शालकण्टक विनायक' हैं।

मातृकुंड-सिगिराके टीलासे पूर्व दूर लालापुरामें 'मातृकुण्ड' तीर्थ है। काशीखंडके ९७ वें अध्यायमें लिखा है कि, इस कुण्डमें स्नान करनेसे मातृदेवीकी कृपासे मनोवांछित फल मिलता है और मनुष्य माताके ऋणसे छुटकारा पाता है। मातृकुण्डसे पूर्व एक मन्दिरमें 'पितृश्वर' शिव लिंग और काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'क्षिप्रप्रसाद विनायक' हैं; जिसके पीछे एक छोटीमढीमें 'मातृदेवी' हैं। पितृश्वरके सामने 'पितृकुण्ड' एक बड़ा भारी सरोवर है।

फातमान-मातृकुंडसे पश्चिमोत्तर एक नई पोखरी है, जिससे पश्चिम ओर पिशाचमोचन कुंडसे थोडी दूर दक्षिण-पश्चिम मुसलमानोंके बनारसके कबरगाहोंमें मशहूर एक घेरे हुए बागमें यह फातमान है। कबरोंका घेरा नकाशीदार पत्थरसे बना है। सबसे उत्तम नकली कबर महम्मदकी पुत्री और अलीकी स्त्री फातमांकी है; जिसको एक परसियन कविशेख अली हाजिरने बनवाया था, जो बादशाह घरानेका था, और पिछले शतकमें भागकर यहां आया था।

मुगल बादशाहके खान्दानके लोग जो, पेंशन पाकर शिवालाघाटके पास रहते थे, वे इस बागमें गाड़े गए हैं।

शीया मुसलमान लोग मुहर्रमके दशवें दिन यहां ताजियोंको दफन करते हैं।

महम्मद साहेब सन ५७० ई० में अरबमें पैदा हुए थे, जिन्होंने मुसलमानी मजहबको कायम किया। सन ६२२ ई० की १६ जुलाईको शुक्रके दिन महम्मद साहेबने मक्केसे मदीनेके लिए यात्राकी। खलीफा उमरकी आज्ञासे मुसलमान लोग उसी दिनसे अपना हिजरी सन गिनने लगे। सूर्यके वर्षसे मुसलमानोंका चन्द्रवर्ष ११ दिन छोटा है। महम्मद साहेब सन ६३२ ई० में मरगए। फातमा महम्मद साहेबकी पुत्री थी। मुहर्रम सन हिजरीका पहला मास है। इसी महीनेकी १० वीं तारीखको अरबमें फुरात नदीके किनारे करबलाके रणक्षेत्रमें फातमाके पुत्र इमामहुसेन अपने शत्रु मुसलमानोंके हाथसे अपने कुटुम्बोंके साथ शहीद हुए थे। शत्रुओंने इमाम साहेबको जल तक न पीने दिया। इमामका शिशु पुत्र प्यासके मारे तड़फता मर गया। मुसलमान लोग इमामहुसेनके मरनेके यादगारमें मरसिया पढ़ते हैं और ताजियोंको दफन करते हैं।

लक्ष्मीकुंड-फातमानसे दक्षिण-पूर्व दूर दशाश्वमेध घाटसे पश्चिम जानेवाली सड़कके पास लक्ष्मीकुंड महल्लेमें 'लक्ष्मीकुंड' (लक्ष्मी तीर्थ) एक पक्का सरोवर है, जिसके निकट काशी

की ९ गौरियोंमेंसे 'महालक्ष्मी' गौरीका मन्दिर है । इस मन्दिरमें काशीकी ६४ योगिनियोंमेंसे 'मयूरी योगिनी' हैं । एक आंगनके एक बगलकी कोठरीमें महालक्ष्मीजीकी मूर्ति और दूसरे बगल एक शिवमन्दिर है । लक्ष्मीकुंडसे पूर्व कालीमठमें कालीकी मूर्ति है । यहां भाद्र शुक्ल अष्टमीसे आश्विन कृष्णाष्टमी तक १६ दिन पर्यंत स्नान दर्शनका मेला होता है, जो सोरहियाका मेला कहा जाता है ।

लक्ष्मीकुंडके निकट काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'कुंडिताक्ष विनायक' हैं ।

सूर्य्यकुंड–लक्ष्मीकुंडसे दूर पूर्वोत्तर 'सूर्य्य कुंड' नामक सरोवर है, जिसके ऊपर एक छोटे मन्दिरमें काशीके १२ आदित्योंमेंसे 'सांबादित्य' हैं । मन्दिरके बाहर पश्चिमके दालानमें काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'द्विमुख विनायक' हैं ।

बहुतेरे लोग प्रतिरविवारको स्नान दर्शनको यहां आते हैं । सूर्य्यकुंडके पास नित्य पानका बाज़ार लगता है ।

ताराचन्दकी धर्मशाला–टाउनहालसे दक्षिण नीचीबागके पूर्वोत्तर सड़कके बगल पर चौमोहानीके पास एक धर्मशाला है जिसको ५० वर्षसे अधिक हुए, लाहौरके महाराज रणजीत सिंहके दीवान ताराचन्दने बनवाया । नीचे बगलोंमें दालान और कोनोंके पास कोठरियां, और चौकके पूर्व बगलमें दो छोटे मन्दिर और ऊपर ६ कोठरियां हैं ।

बूलानालामें काशीकी ९ दुर्गाओंमेंसे 'सिद्धिदा दुर्गा' (सिद्धमाता हैं) ।

टाउनहाल–कालभैरके मन्दिरसे पश्चिम और कम्पनीबागसे दक्षिण काशीकी सबसे उत्तम इमारतोंमेंसे एक टाउनहाल है, जो हिन्दी और मूरिश ढाचेसे मिलाहुआ बना है । यह ईंटोंसे बना है । इसका प्रधान कमरा ७३ फीट लम्बा और ३२ फीट चौड़ा है, जिसमें ३०० से ४०० तक आदमी बैठ सकते हैं । इसके फाटकके ऊपर मार्बुलके तख्तेपर शिलालेख है, जिससे जान पड़ता है कि टाउनहालको हिज हाईनेस महाराज विजयानगरम् के० सी० एस० आई० ने बनवाया । इसका काम सन १८७३ ई० में आरंभ और सन १८७५ में समाप्त हुआ । सन १८७६ ई० में एच० आर० एच० प्रिंस आफ वेल्सने इसको खोला था ।

जैन मन्दिर–बनारसमें दश बारह जैन मन्दिर हैं, जिनमेंसे एक कम्पनीबागके पास एक बाग़में है, जिसमें जैन संतोंकी बहुत मूर्तियां हैं ।

कंपनीबाग़–टाउनहालके आगे सड़कसे उत्तर बनारसके उत्तम बाग़ोंमेंसे एक लोहेके जंगलोंसे घेरा हुआ 'कंपनीबाग़' है, जिसमें 'मंदाकिनी' तालाब है, जहां संध्याके समय बहुतेरे लोग हवा खाने जाते हैं । इसमें स्थान स्थान पर बैठनेके लिये बेंच रक्खे गए हैं ।

मंदाकिनी तालाब–कंपनीबाग़में 'मंदाकिनी तीर्थ' तालाब है, जिसमें बहुत मछलियां हैं; जो किसीसे डरती नहीं । बहुत लोग इनको अन्न खिलाते हैं । तालाबसे पूर्वोत्तर कंपनी बाग़में 'मंदाकिनी देवी' एक बहुत छोटे मन्दिरमें हैं ।

मध्यमेश्वर शिवलिंग–कंपनीबाग़से उत्तर राजा शिवप्रसाद सी० एस० आई० की बारहदरीके निकट एक मन्दिरमें काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'मध्यमेश्वर' शिवलिंग हैं ।

लिंगपुराण–(९२ वां अध्याय) शिवजीने कहा कि काशीमें मध्यमेश्वर नामक लिंग आपही प्रकट हुआ है ।

स्कंदपुराण–(काशीखंड–९७ वां अध्याय) चैत्र शुक्ल अष्टमीको मध्यमेश्वरके दर्शन और मंदाकिनीमें स्नान करनेसे २१कुलका उद्धार होता है ।

ऋणहरेश्वर—विश्वेश्वरगंज बाजारसे उत्तर एक सड़क वृद्धकालको गई है। सड़कसे बाएं ओरकी गलीपर गणेशगंजके बाड़ेके कोनेपर एक छोटे मन्दिरमें 'ऋणहरेश्वर' हैं, जिनसे उत्तर सड़कके किनारे एक मन्दिरमें 'हृषीकेश' विष्णुकी मूर्ति है।

रत्नेश्वर—वृद्धकाल जानेवाली सड़कपर वृद्धकाल महलेके एक छोटे मन्दिरमें काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'रत्नेश्वर' शिवलिंग हैं, जिनके समीपहीमें पूर्व-दक्षिण काशीके अष्ट महालिंगोंमेंसे 'सतीश्वर' शिवलिंगका एक मंदिर है, जिसमें 'अवंतिका' देवी भी हैं। यह लिंग और देवी दोनों श्रीमान् पंडित रामकृष्ण दीक्षितके उद्योगसे स्थापित कीगई। सतीश्वरके मन्दिरके पास एक प्राचीन कूप है, जो काशीखंडके अनुसार 'रक्तचूड़ामणि' कूप होता है।

शिवपुराण—(६ वां खंड—२१ वां अध्याय) राजा दिवोदासके काशी छोड़नेपर जब शिवजी काशीमें पहुँचे, तब हिमाचल गिरिजाको देखने और उसको धन देनेके निमित्त बहुत मुक्ता, मूँगा, हीरा आदि धन अपने साथ लेकर काशीमें आए। परन्तु उन्होंने काशीका ऐश्वर्य देख अतिलज्जित हो शिवसे भेंट नहीं की और रातभरमें एक शिवालय बनाकर चंद्रकांतिमणिका शिवलिंग उसमें स्थापित किया। जो कुछ धन द्रव्य शिवालय बनानेसे शेष रह गया था, वह इधर उधर फेंककर अपने घर चले गये। हिमाचलने रत्न फेंक दिया था, वह अपने आप इकट्ठा होकर एक शिवलिंग बनगया। (२२ वां अध्याय) शिवजीके दो गणोंने जाकर उनसे कहा कि किसी भक्तने आपका शिवालय वरुणाके तटपर बनाया है। शिवजीने वरुणा नदीके तटपर पहुँच शिवालय देखा। गिरिजाने उस लिंगका नाम 'गिरीश्वर' रक्खा. शिव और गिरिजा वहांसे जब कालराज भैरवके समीप पहुँचे तो उन्होंने उससे उत्तर एक उत्तम शिवलिंग देखा। शिवजीने उसका नाम 'रत्नेश्वर' रक्खा। (काशीखंडके ६६ और ६७ वें अध्यायमें यह कथा है)।

स्कंदपुराण—(काशीखंड-६७ वां अध्याय) फाल्गुन कृष्ण १४ को रत्नेश्वरकी यात्रासे स्त्री रत्नादि और ज्ञान प्राप्त होते हैं।

हरतीर्थ (हंसतीर्थ)—आलमगिरी मसजिदसे पूर्व-दक्षिण 'हरतीर्थ' नामसे प्रसिद्ध एक बड़ा सरोवर है, जिसका नाम काशीखंडमें 'रुद्रकुण्ड' लिखा है और लिखा है कि कौआ इस सरोवरमें गिरनेसे हंस हो गया इसलिये इस सरोवरका नाम हंस तीर्थ पड़ा। सरोवरके पश्चिम घाटके ऊपर एक छोटे मन्दिरमें 'हंसेश्वर' और 'रुद्रेश्वर' शिवलिंग हैं। इस मन्दिरमें काशीखंडमें लिखेहुए कई देवता हैं।

स्कन्दपुराण—(काशीखंड-६८ वां अध्याय) चैत्र शुक्ल पूर्णिमाको हंसतीर्थ (हरतीर्थ) और कृत्तिवासेश्वरकी यात्रासे काशीवासका फल प्राप्त होता है और फाल्गुन कृष्ण १४ की यात्रासे सर्व धर्मका फल प्राप्त होता है।

स्कन्दपुराण—(काशीखंड-९७ वां अध्याय) आर्द्रा चतुर्दशीके योग होनेपर हंसतीर्थ में स्नान और हंसेश्वर और रुद्रेश्वरके पूजन करनेसे मनुष्य रुद्रलोक पाता है।

कृत्तिवासेश्वर—वृद्धकालकी गलीकी दाहिनी ओर हरितीर्थ महल्लेमें आलमगीरी मसजिद है। औरंगजेबके समयमें 'कृत्तिवासेश्वर' के ३०० वर्षके पुराने मन्दिरको तोड़कर उसके सरंजामसे यह मसजिद बनी और औरंगजेबके दूसरे नाम (आलमगीर) से इसका नाम आलमगीरी मसजिदपडा। पत्थरके आठ खम्भोंकी तीनि पंक्तियोंपर मसजिदकी छत

है। मसजिद्की पिछली दीवारमें सन १०८७ हिजरी (सन् १६६५ ई०) लिखा है। मसजिद्के आगे मैदानमें एक छोटे हौजमें २ ½ फीट ऊंचा अठपहला फव्वारेका स्तम्भ है, जो काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'कृत्तवासेश्वर' शिवलिंग माना जाता है । फाल्गुनकी शिवरात्रिके दिन इस लिंगकी पूजाकी भीड़ होती है। इस स्थानसे पूर्व-दक्षिण हरतीर्थ तालाबके पश्चिम काशीवासी राय ललनजीके परदादा राजा पटनीमल साहेब बहादुरके बनवाए हुए एक विशाल मन्दिरमें एक बहुत बड़ा शिवलिंग है, जिसको कोई 'कृत्तवासेश्वर' कहते हैं।

शिवपुराण-(५ वां खंड-५५ वां अध्याय) महिषासुरके पुत्र गजासुरने ब्रह्माजीसे वरदान प्राप्त करके पृथ्वीको जीत लिया, परन्तु जब काशीमें आकर उसने उपद्रव किया तब शिवजीने गजासुरके शिरको त्रिशूलसे छेद लिया। उस समय वह पवित्र होकर शिवसे विनय करने लगा। शिवजीने गजासुरको वरदान दिया कि तेरा यह शरीर हमारा लिंग होकर कृत्तवासेश्वरके नामसे विख्यात हो; जिसके केवल दर्शनहीसे मोक्ष प्राप्त होगी। यह कहकर शिवजीने गजासुरको परमगति दी। (काशीखंडके ६८ वें अध्यायमें भी यह कथा है)।

वृद्धकालेश्वर-विश्वेश्वर गंजबाजारसे जो उत्तर सड़क गई है; उसके मोडके पास वृद्धकाल महल्ला है। रक्तचूड़ामणि कूपसे वृद्धकाल पर्यंतके स्थानको काशीखंडमें 'अवंतिका पुरी' लिखा है। काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'वृद्धकालेश्वर' का मन्दिर है। यह मन्दिर काशीके पुराने मन्दिरोंमेंसे है। पश्चिमके चौकके उत्तर किनारेपर वृद्धकालेश्वरका मन्दिर है, जिसमें २ कोठरियां हैं। पूर्व वालीमें 'वृद्धकालेश्वर' शिवलिंग और दूसरी पश्चिमवालीमें 'महाकालेश्वर' शिवलिंग हैं। मन्दिरके पास बहुत पुराना नन्दी (बैल) और छतके ऊपर आगेके दोनों कोनोंके पास पत्थरके २ दीप शिखर हैं, जिनपर हजारों दीप रखनेके अलग अलग स्थान हैं, जिनपर किसी उत्सवके समय दीप जलाए जाते हैं। आंगनके ३ बगलोंमें दालान हैं।

वृद्धकालेश्वरके मन्दिरके पूर्ववाले चौकमें उत्तर ओर 'वृद्धकाल कूप' नामक एक बड़ा कूप है, जिसके पासही दक्षिण 'अमृतकुंड' नामक छोटा अठपहला कुंड है। स्नान आदि कर्मोंसे जो कूपका जल बाहर गिरता है, वह इसी हौजमें जमा रहता है। लोग कहते हैं कि इस जलसे कुष्ठ आदि रोग छुटते हैं और आयु बढ़ती है। बहुत रोगी इस हौजमें स्नान करते हैं। श्रावणके प्रति रविवारको इसमें स्नानकी भीड़ होती है। कूपके उत्तर एक बड़े मन्दिरमें काशीके अष्ट महालिंगोंमेंसे 'दक्षेश्वर' शिवलिंग हैं। इस आंगनमें कई शिवलिंग और देवमूर्तियां हैं। कूपके दक्षिण कुछ पश्चिम एक मन्दिरमें 'हनुमानजी' की बड़ी मूर्ति है, जिसके आस पास कई पुराने मंदिरोंमें बहुतेरे शिवलिंग और देवमूर्तियां हैं। अमृतकुंडके पूर्व एक कोठरीमें काशीके अष्ट महाभैरवोंमेंसे 'असितांग भैरव' हैं। हनुमानजीसे पश्चिम एक लम्बे चौंडे मंदिरमें 'मालतीश्वर' शिवलिंग है, जिनके दर्शन पूजनका माहात्म्य काशीखंडमें अगहन सुदी ६ को अधिक लिखा है।

मृत्युंजय-इनका नाम काशीखंडमें 'अल्पमृत्यु-हरेश्वर' लिखा है। वृद्धकालेश्वरके मंदिरसे कई गज़ दक्षिण-पश्चिम एक गलीके बगलपर मृत्युंजयका छोटा मंदिर है, जिसके चारों ओर दरवाजे हैं पीतलके हौजमें मृत्युंजय शिवलिंग हैं। यहां पूजा जप और दर्शनकी भीड़ रहती है।

विश्वकर्मेश्वर—वृद्धकालसे पूर्वोत्तर दुली गड़हीके निकट एक छोटे मंदिरमें 'मणिप्रदीपेश्वर' शिवलिंग हैं, जिनसे उत्तर धनेसरा नामक स्थानमें 'धनेश्वर' शिवलिंग और 'नृसिंह भगवान्'

हैं। यहांसे कुछ दूर पूर्वोत्तर एक बहुत बड़े मंदिरमें 'सुमंतेश्वर' शिवलिंग और 'हनुमानजी' हैं। यहां हनुमानजीके होनेसे इस महल्लेका नाम हनुमान फटका हुआ है। मंदिरके उत्तर 'ऋण-मोचन' और 'पापमोचन' दो सरोवर हैं, जहां भाद्र कृष्ण अमावास्याको स्नानका मेला होता है। ऋणमोचनके पश्चिम ग्वालगड्डा नामक तालाबपर एक मंदिरमें काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'विश्व-कर्मेश्वर' शिवलिंग हैं।

गोरखनाथका मंदिर—मंदाकिनी महल्लेमें ऊंची भूमिपर, जिसको गोरख-टीला कहते हैं, एक आंगनके बीचमें एक शिखरदार बड़ा मंदिर है; जिसमें ऊंची गद्दीपर गोरखनाथका चरण-चिह्न है। मंदिरके जगमोहनसे आगे ३ छोटे मंदिरोंमें शिवलिंग और एकमें चरण-चिह्न है। मन्दिरके बाएं कोनेके पास गहरे हौजमें काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'वृषेश्वर' शिवलिंग हैं। आंगनके चारों बगलोंपर मकान हैं। यहां गोरख संप्रदायके साधुलोग रहते हैं।

नृसिंह-चबूतरा--गोरखटीलेके पश्चिम कुछ दूरपर नृसिंह चबूतरा है, जहां वैशाख शुक्ल १४ को संध्याके समय नृसिंह लीला होती है। इस चबूतरेसे पूर्व और उत्तर रामानुज संप्रदायके दो मन्दिर हैं। नृसिंह चबूतरेके दक्षिण एक बगीचेमें 'कल्याणी देवीका' मन्दिर है।

कल्याणी देवीसे दक्षिण कुछ दूर एक बगीचेमें 'हनुमानजी'की मूर्ति है, जहांसे पूर्व काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'जम्बुकेश्वर' शिवलिंग हैं।

बड़ेगणेश--कल्याणीदेवीसे दक्षिण कुछ दूर माधवदासके बागकी ओर सदर सडकसे थोड़ी दूर पर बड़े गणेशका मन्दिर है, जिनको लोग 'महाराज विनायक' और 'वक्रतुंड विनायक' भी कहते हैं। मन्दिरके शिखर पर सुनहला कलश और पताका लगी है। मन्दिरमें ३ ओर ३ द्वार हैं। गणेशकी विशाल मूर्तिके हाथ,पांव,सूंड और सिंहासन पर चांदी लगी है और छत्र मुकुट सुनहले हैं। गणेशके बगलोंमें उनकी स्त्रियां सिद्धि और बुद्धिकी मूर्तियां हैं, जिनके मुखमंडल चांदीके हैं। (गणेशपुराणके १२५ वें अध्यायमें लिखा है कि ब्रह्माजीने अपनी पुत्री सिद्धि और बुद्धिसे गणेशजीका विवाह कर दिया) मन्दिरहीमें गणेशजीके समीपही बांए ओर 'सिध्यष्टके-श्वर' शिवलिंग हैं। घेरेके भीतर खास मन्दिरके बाहर दक्षिण-पूर्व काशीके ५६ विनायकोंमेंसे हस्तदंत विनायक' हैं। द्वारसे बाहर मूसेकी बड़ी मूर्ति और दोनोंओर दीवारोंमें गणेशकी पुरानी २ मूर्तियां हैं। आंगनके चारोंओर दालान और दो बगलोंमें एक एक फाटक हैं। फाटक के पास दीवारमें मूसोंके बहुत चित्र बने हैं। मन्दिरके निकट गणेश पर चढानेके लिए दूब बिकती है। बडेगणेशका वर्त्तमान मन्दिर लगभग ५० वर्षका बना हुआ है।

माघकृष्ण ४ को यहां दर्शनकी बडी भीड होती है।

स्कंदपुराण—(काशीखंड-१०० वां अध्याय माघकृष्ण ४ को वक्रतुण्डकी यात्रासे वर्ष पर्यंत विघ्न नहीं होता)।

बडे गणेशसे दक्षिण पश्चिम इसी महल्लेमें एक कोठरीमें जगन्नाथ, बलभद्र और सौभद्र की मूर्तियां हैं, जिनसे दक्षिण कुछ दूर राजा बेतियाका विशाल मन्दिर है, जिसमें काशीके ११ महा रुद्रोंमेंसे 'आषाढीश्वर' शिवलिंग हैं; जिससे दक्षिण दूरतक महाराजके कई मकान चले गए हैं।

भूतभैरव--काशीपूरा महल्लेमें एक कोठरीके भीतर आदमीके समान बडी 'भूतभैरवकी मूर्ति है। इनकी आंख और कान ठीक हैं, पर मुख स्पष्ट नहीं है। यह काशीके अष्ट महाभैरवोंमें

से 'भीषण भैरव' हैं। जिनसे उत्तर 'कन्दुकेश्वर' शिवका मन्दिर है, जिसके दक्षिण और भूत-भैरवके मन्दिरसे पश्चिम काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'निवासेश्वर' शिवलिंग हैं। जिसके पश्चिम दक्षिण एक मंदिरमें काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'व्याघ्रेश्वर' शिवलिंग है। भूतभैरवसे पूर्व एक बड़े मठमें 'जैगीषव्येश्वर' शिवलिंग है। इसी जगह जैगीषव्य गुफा गुप्त है, यहां बहुतेरे शिवलिंग और देवमूर्तियां गुप्त हैं।

ज्येष्ठेश्वर—काशीपुरा महल्लेमें एक बड़े मन्दिरमें काशीके ४२ लिंगोंमेंसे 'ज्येष्ठेश्वर' हैं। इनके दर्शनकी प्रधान यात्रा ज्येष्ठ शुक्ल १४ को होती है। ज्येष्ठेश्वरके निकट एक छोटे मन्दिर में काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'ज्येष्ठ विनायक' हैं। इनके दर्शनकी प्रधान यात्रा ज्येष्ठ शुक्ल ४ को होती है। ज्येष्ठेश्वरके मन्दिरसे समीपही पश्चिमोत्तर एक मन्दिरमें काशीकी ९ गौरियोंमेंसे 'ज्येष्ठागौरी' हैं, जिनके सामने पूर्व 'ज्येष्ठावापी' गुप्त है।

शिवपुराण—(७ वां खंड—६ वां अध्याय) शिवजीने मंदराचलसे काशीमें जाकर ज्येष्ठ शुक्ल १४ को जैगीषव्यकी गुफाके निकट निवास किया और वहां ज्येष्ठेश्वर लिंगका स्थापित होना और ज्येष्ठा नाम देवीका प्रकट होना सुना।

स्कंदपुराण—(काशी खंड—५७ वां अध्याय) ज्येष्ठ शुक्ल ४ को ज्येष्ठ विनायककी यात्रा से सर्व विघ्न निवृत्त होते हैं।

(६३ वां अध्याय) ज्येष्ठ शुक्ल ८ को ज्येष्ठविनायक और ज्येष्ठा गौरीकी यात्रासे सौभाग्य फल मिलता है और ज्येष्ठ शुक्ल १४ ज्येष्ठेश्वर यात्रासे शत जन्मका पाप निवृत्त होता है।

(५५ वां अध्याय) आषाढ़शुक्ल पूर्णिमाको आषाढ़ीश्वरकी यात्रासे सर्व पाप निवृत्त होता है।

काशी देवी, सप्त सागर इत्यादि—ज्येष्ठेश्वरसे पूर्व-दक्षिण 'काशी देवी' का मंदिर है। इसी जगह 'सप्तसागर' नामसे प्रसिद्ध एक कूप है, जिससे पश्चिम 'कर्णघंटा' बड़ा भारी तालाब है। इसके स्नानका मेला, आषाढ़ी पूर्णिमाको होता है। यहां एक दालानमें कर्णघंटेश्वर और 'व्यासेश्वर' शिवलिंग हैं। तालाबके पूर्व 'व्यासकूप' है। यहांसे पूर्वोत्तर हरिशंकरी महल्लेमें 'हरिशंकरेश्वर' नामक लिंग गुप्त है। घण्टाकर्ण तालाबसे दक्षिण कुछ दूर मछरहट्टा महल्लेमें चित्रगुप्तेश्वर' शिवलिंग हैं, जिनके पश्चिम-दक्षिण गलीमें काशीके ११ महारुद्रोंमेंसे 'भारभूतेश्वर' और ५६ विनायकोंमेंसे 'राजविनायक' एकही मंदिरमें हैं इनसे पश्चिम-दक्षिण राजाके दरवाजेके भीतर 'किकसेश्वर' शिवलिंगका मंदिर है, जिससे पश्चिम हड़हाका तालाब है जिसको काशीखंडमें 'अस्तिक्षेप तड़ाग' के नामसे लिखा है। तालाबके निकट सरायके समीप 'हाटकेश्वर' का स्थान है, जो अब गुप्त है। इस स्थानसे पूर्व एक मंन्दिरमें किसी भक्तने हाटकेश्वर शिवलिंगका स्थापन किया है। हड़हा तालाबसे उत्तर 'भीमलोदी तीर्थ' गुप्त हैं। इस स्थानको भूलोटन कहते हैं। दीनानाथके गोलेके भीतर एक मकानमें 'उटजेश्वर' शिवलिंग है।

माधवदासका बाग—दीनानाथके गोलेसे पूर्वोत्तर यह बाग है। बागका दरवाजा एक गलीके बगलमें है। बागके चारोंओर ऊंची दीवार और सदर सड़ककी ओर बारहदरी नामकी ऊंची इमारत है। मध्यमें पत्थरकी एक खूबसूरत इमारत और पानीका एक हौज है।

प्रिंस आफ वेल्स अस्पताल—दीनानाथके गोलेके उत्तर माधवदासके बागके पश्चिम समीपही बनारसके उत्तम मकानोंमेंसे एक प्रिंस आफ वेल्स अस्पताल है। बड़े कमरेके ३ ओर

मेहराबदार ऊंचे दालान और पीछे अनेक द्वारवाले कमरे हैं। दालानोंमें कँगूरेके नीचे लोहेके जंगल लगे हैं।

इसके दहिने बाएं और पीछे पक्के मकान बने हैं, जिनमें रोगियोंके लिये साफ बिस्तरोंके साथ बहुतेरी चारपाइयां बिछी हैं। यहां बिना वारिसके रोगियोंको भोजन मिलता है। इसको बनारसके रईसोंने सन १८७६ ई० में प्रिंस आफ वेल्सके आनेके स्मारक चिह्नके लिए बनवाया है।

कबीरचौरा—कबीरचौरा महल्लेमें बड़े २ आंगनके चारोंओर मकान और मध्यमें सुनहले कलश और पताकावाले गुंबजदार छोटे मंदिरमें कबीरजीका चरण-चिह्न और एक बगलके दो मंजिले मकानमें कबीरजीकी गद्दी है। गद्दीके निकट कबीरजीकी टोपी और रामानंद स्वामी और कबीरजीकी तस्वीरें हैं। पैर धोकर चौगानमें जाना होता है। आँगनसे बाहर दीवारोंसे घेराहुआ बड़ा बाग है।

यहां कबीरपंथी महंत रंगूदास साहेब हैं। यहांकी गद्दीपर इस क्रमसे महंत हुए (१) श्रीकबीरजी, (२) श्रुतिगोपाल साहेब, (३) ज्ञानदास साहेब (४) रामदास साहेब, (५) लालदास साहेब, (६) हरिसुखदास साहेब, (७) सीतलदास साहेब, (८) सुखदास साहेब, (९) हुलासदास साहेब, (१०) माधोदास साहेब, (११) कोकिलदास साहेब, (१२) रामदास साहेब, (१३) महादास साहेब;(१४) हरिदास साहेब, (१५) शरणदास साहेब, (१६) पूरणदास साहेब, (१७) निर्ममदास साहेब, और (१८) वर्त्तमान रंगूदास साहेब हैं।

कबीरजी रामानंद स्वामीके १२ चेलोंमें सबसे प्रसिद्ध थे। उनका मत था कि हिंदू और मुसलमान दोनोंका ईश्वर एकही है। हिंदू उनको राम और मुसलमान अली कहकर पुकारते हैं। हमको चाहिए कि सब जीवोंपर दयादिखलावें और एक अद्वैतको सबमें देखें। इसलिए कबीरजी हिंदू और मुसलमान दोनोंको शिष्य करते थे।

कबीरपंथी संप्रदायके शिष्य और चेलोंमेंसे कोई भी जीवहिंसा, मद्य, मांस आदिका संग्रह नहीं करता। इस संप्रदायके बीजक, चौरासी अंगकी साखी, रेखता, झूलना अनुरागसागर, निर्भयज्ञानसागर, ज्ञानसागर, अम्बुसागर, विवेकसागर, श्वासगुंजार, कुरुमावली कबीरवाणी, लक्ष्माबोध,सरोधा, मुक्तिमाल, माखोखंड, ब्रह्मनिरूपण,गुमानभंजन, हंसमुक्तावली, आदि मंगलशब्दकूँजी, आदि भाषा पद्यमें असंख्य ग्रन्थ बने हैं।

कबीरजीकी कथा--कबीरपंथियोंकी पुस्तक निर्भयज्ञानसागरमें निम्नलिखित वृत्तांत है ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा चंद्रवारको काशीके लैहर नामक तालाबमें पुरइनके पत्रपर कबीरजी प्रकट हुए। काशीके रहनेवाला अली, उपनाम नीरू जोलीहा गोना कराकर अपनी स्त्री (नीमा) के साथ अपने घर आता था। उसकी स्त्री मार्गके लैहर तालाबमें बालकरूपी कबीरजीको पाकर अपने गृहमें लाई। कबीरजी लड़कपनहीसे ज्ञान उपदेश करने लगे।

एक समय जोलाहोंमें गोवध किया, कबीरजीने उस गऊको जिला दिया और नीरू टोलासे, जो कबीर चौरा महल्लेमें है, काशीपुरामें चले गए और साधुओंसे ज्ञानकी वार्ता करने लगे। जब साधुलोग उनके गुरुका नाम पूछने लगे, तब कबीरजीके चित्तमें आया कि मुझको गुरु बनानाचाहिए। रात्रिके समय रामानंद स्वामीके चरणकी ठोकर श्रीकबीरजीके शरीरमेंलगी, तब उन्होंने लड़के कबीरको उठाकर कहा कि बच्चा राम राम कहो। कबीरजीने

उसी नामको मंत्र मानकर रामानंद स्वामीको अपना गुरू समझा और अपनेको उनका चेला कहाना प्रारंभ किया । रामानन्द स्वामीने अपने चेलों द्वारा कबीरजीकी ऐसी बात और उनके ज्ञान कथनकी प्रशंसा सुनकर उनको बुलाया और पर्देकी ओटमें बैठाकर उनसे वार्तालाप करने लगे । जब कबीरजीने अपने शिष्य होनेका वृत्तांत कहा और अपूर्व ज्ञानकथन किया, तब रामानन्द स्वामीने प्रसन्न होकर उनको अपने चेलोमें मिला लिया । सर्वानन्दको ज्ञानकी वार्तामें परास्त करनेके उपरांत कबीरजी रामानंद स्वामीके १२ चेलोंमें प्रधान बनाए गए ।

सिकन्दरशाह (सिकन्दर लोदी जिसका राज्य सन १४८९ से १५१७ ई० तक था) के वदनमें ज्वाला उठी थी, कबीरजीने उस ज्वालाको छुडाया । कबीरजीका मान्य देख कर सिकन्दरके पीर शेख तर्कीको डाह हुई । उसने कबीरजीके वधके लिये बहुतेरे उपाय किए पर उनका कुछ नहीं हुआ । सिन्कदर कबीरजीके अनेक प्रभावोंको देखकर उनको अपने साथ काशीसे इलाहाबादमें लेगया । एक दिन इलाहाबादकी गंगामें एक मुर्दा बहा जाता था, कबीर जीने उसको जिलाकर उसका नाम कमाल रक्खा । यह देख कर सिकन्दर और शेख तकी सबको आश्चर्य हुआ । पश्चात् लोगोंने कबीरजीसे कहा कि आप काशीमें मरकर मुक्ति प्राप्त कीजिये । कबीरजीने कहा कि मैं मगहरमें शरीर छोडकर मुक्ति लूंगा । अंतमें कबीरजीने मगहरमें (जो गोरखपुर जिलेमें है) शरीर छोडा ।

डाक्टर हंटर साहेबके बनाए हुए हिंदुस्तानके इतिहास (पहले भागके ८ वें अध्याय) में लिखा है कि रामानन्द स्वामीकी गद्दीपर बैठने वालोंमें रामानंद स्वामी (सन १३०० से १४०० ई० तक) ५ वें थे । उनका मठ बनारसमें था, परन्तु वे स्थान स्थानपर फिरते और विष्णुके नामसे एक ईश्वरका उपदेश देते थे (रामानंद स्वामीहीसे वैरागी संप्रदायकी नेव पडी जिसमें जातिभेदका विचार कम रहता है और कर्महो प्रधान माना जाता है) रामानंद स्वामीके १२ चेलोंमें कबीरसाहेब जो सन १३०० से १४२० ई० तक थे, सबसे प्रसिद्ध थे ।

श्रीकबीरजीके जन्ममृत्युका सन संवत भिन्न भिन्न पुस्तकोंमें अनेक भांतिसे है अंगरेजी किताब 'हिंदू इजममें' लिखा है कि कबीरजी सन ई० की १४ वीं सदीके अंतमें थे । फारवेसकी डिक्शनरीमें है कि १५ वीं सदीमें थे । और मूरसाहेबकी किताबमें है कि १६ वीं सदीके आदिमें थे ।

एक शाखीमें यों लिखा है कि,–

"चौदहसौ पचपन साल गिरा चन्द्रवार एक ठाट ठए ।
जेठ सुदी बरसायतको पूरनमासी तिथि प्रगट भए ।।
घन गरज दामिनि दमके बूंदे बरषे झर लाग गए ।
लैहर तालाबमें कमल खिले तहां कबीर भानु प्रगट भए ।।

इसके अनुसार सन १३९८ ई० में कबीरजीका जन्म हुआ था ।
दूसरी एक शाखीमें एक दोहा यों है,–

दोहा ।

सम्वत पन्द्रह सौ औ पांच मों मगहर कियो गवन ।
अगहन सुदी एकादशी मिले पवन सों पवन ।।

इसके अनुसार कबीरजीका देहांत १४४८ ई० में हुआ ।
तीसरी शाखीमें यह दोहा है,—

दोहा।

सम्वत पन्द्रह सौ पछतरा, किया मगहरको गवन।
माघ सुदी एकादशी, रलो पवनमें पवन॥

गणेशबाग़—बनारसके प्रसिद्ध धनी राय ललनजीका गणेशबाग़ नामक मनोहर बाग़ है। सड़ककी ओर दो मञ्जिला मकान और बाग़के भीतर उत्तम कोठी बनी है।

पिशाचमोचन कुंड—बेतगञ्जकी सड़कके पास 'पिशाचमोचन कुंड' नामक एक बड़ा सरोवर है। दक्षिणका घाट जो टूट फूट गया है, वह ३०० वर्षका पुराना है। पश्चिमके घाट को कहा जाता है कि लगभग १०० वर्ष हुए, कुछ बलवंत राव और कुछ मिर्जा खुर्रम शाहने बनवाया था। उत्तरका घाट राजा मुरलीधरका बनवाया हुआ लगभग १२० वर्षका है। अगहन शुक्ल १४ को पिशाचमोचन कुंड पर मेला होता है, जो 'लोटा भण्टा' के नामसे प्रसिद्ध है।

पूर्वके घाटसे ऊपर छोटे छोटे कई मन्दिर, 'महाबीरजी' 'कपर्दीश्वर' शिवलिंग, काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'पञ्चास्य विनायक' (पांच मुंड वाले,) एक पीपल और इमिलीके वृक्षोंके नीचे पिशाचका एक बड़ा शिर, 'चतुर्भुज' विष्णु 'वाल्मीकि मुनि' और अन्य कई शिवलिंग और देवमूर्तियां हैं। घाटके निकट पण्डे, पुजारियोंके कई छोटे २ और कच्चे मकान हैं।

कुण्डके उत्तर वाल्मीकिके टीले पर 'वाल्मीकेश्वर' और काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'हेरम्ब विनायक' हैं।

शिवपुराण—(६ वां खंड—१० अध्याय) कपर्दीश्वर लिंगकी बड़ाई कौन कर सकता है। उसी स्थान पर बिमलोदक है। त्रेतायुगमें वाल्मीकि ऋषि इसी कुण्ड (विमलोदक) पर स्नान कर तप करते थे। एक दिन ऋषिने एक बड़े भयानक पिशाचको देखा और उसपर प्रसन्न हो उसको कुण्डके भीतर शिवलिंग दिखाकर स्नान कराया और उसके सर्वांगमें भस्म लगा दी, जिससे वह पिशाच मुक्ति पाकर सुंदर शरीर धर शिवपुरीको चला गया। उसी समयसे यह कुण्ड पिशाचमोचन नामसे प्रसिद्ध हुआ। (काशीखण्डके ५४ वें अध्यायमें भी यह कथा है)।

स्कंदपुराण—(काशीखण्ड—५४ वां अध्याय) मार्गशीर्ष शुक्ल १४ को पिशाचमोचन कुण्डमें स्नान, पिण्डदान और कपर्दीश्वर शिवके दर्शन करनेसे पितरोंकी पिशाचयोनिसे मुक्ति होती है। (५८ वां अध्याय) भाद्र मासकी शुक्ल ११ और १२ को पिशाचमोचन कुण्डमें स्नान करनेसे पिशाचका जन्म नहीं होता। (१०० वां अध्याय) पूर्णिमाको कुण्डके निकट पिण्डदान करनेसे पितरोंकी मुक्ति होती है।

हथुआंके महाराजकी कोठी—पिशाचमोचनके पूर्व सारन जिलेके हथुआके वर्तमान महाराज कृष्णप्रताप शाही बहादुरकी बनवाई हुई दो मञ्जिली बड़ी कोठी और मंदिर हैं। घेरेकी लंबाई पिशाचमोचनकी सरकारी सड़क तक लगभग ४०० गज है, जिसके भीतर बड़ा मैदान है। महाराज बड़े धर्मनिष्ठ और भक्त हैं। इनको काशीसे अधिक स्नेह है।

क्वीन्स कालेज—हथुआके महाराजकी कोठीसे उत्तर सड़कके बगलपर नारमलस्कूल कालेजके अधीन है। स्कूलसे पश्चिमोत्तर यह कालेज है। उत्तरी भारतमें अंगरेजोंकी बनाई हुई सबसे उत्तम इमारतोंमेंसे यह एक है। जगतगंज सड़कके पास चुनारके पत्थरसे इसकी मनोहर सूरत बनाई गई है। इसमें नकाशीका काम बहुत है। चारों कोनों और चारों दिशाओंमें एक

एक टावर और पतले पतले अनेक टावर हैं । नीचे मध्यमें बहुत बड़ा और ऊंचा हाल है, जिसके बगलोंमें भीतरसे दो मञ्जिले कमरे हैं । बाहर चारोंओर मेहराबदार बहुतसे द्वार हैं । जिसके खर्चसे इस कालेजका जौन हिस्सा बना है, उसका नाम अंगरेजी और हिन्दी अक्षरोंमें उस हिस्सेमें खोदागया है । इस इमारतमें बड़े २ चंदोंके अतिरिक्त १२६९० पाउण्ड सरकारी खर्च पड़ा है ।

कालेजके आगे पत्थरके ५ बतकोंके ऊपर पत्थरका छोटा कड़ाह, दाहने एक हौज, पीछे एक हौज और पत्थरकी एक धूपघड़ी है, जिससे उत्तर कालेजके हातेहीमें ३२ फीट ऊंचा एकही पत्थरका एक स्तम्भ खड़ा है, जो सन १८५९ ई० में उस समयके पश्चिमोत्तर देशके लेफ्टिनेंट गवर्नरके खर्चसे गाजीपुरके पास गंगाके किनारेसे लाकर यहां खड़ा किया गया था । इस स्तम्भपर गुप्त अक्षर खोदेहुए हैं, इससे यह सन ई० की चौथी सदीका जान पड़ता है । कालेजके चारोंओर बाग है ।

यह कालेज इलाहाबाद यूनीवर्सिटीके अधीन है । यहां कानून, अंगरेजी और संस्कृत विद्या पढ़ाई जाती है । कालेजके अधीन इसके हातेसे बाहर एक नार्मल स्कूल है । कालेज और स्कूल मिलकर इनमें ७०० विद्यार्थीसे अधिक हैं ।

धूपचण्डी–कालेजसे पूर्व कुछ दूर 'धूपचण्डी' का तालाब है, जिससे ऊपर एक मंदिरमें 'धूपचण्डी' देवी और काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'विकट द्विज विनायक' हैं ।

चित्रकूट–धूपचण्डीसे दक्षिण 'चित्रकूट तालाब' से ऊपर एक बागमें काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'विघ्नराज विनायक' का मन्दिर है, जिसके आस पास कई छोटे मंदिर हैं । जिनमेंसे एकमें राम; लक्ष्मण और जानकी और एकमें हनूमानजी हैं ।

नाटी इमिली–कालेजसे लौटनेपर आगे सड़कके दोनों बागोंकी इमारतें मिलती हैं । माधोजीके बाग और सड़कके निकट थोड़ा मैदान है, जिसमें एक ओर इमिलीका एक छोटा वृक्ष है । इसी स्थानपर रामलीलाके समय प्रतिवर्ष आश्विन शुक्ल ११ के दिन भरत-मिलापके मेलेकी बड़ी भीड़ होती है । यह 'नाटी इमिली' का मेला कहलाता है । उस दिन काशी और देहातके असंख्य लोग और काशीनरेश भरतमिलाप देखने आते हैं ।

यागेश्वरका मन्दिर–ईश्वरगंगीके निकट सड़कके दूसरी ओर घेरेके भीतर एक मन्दिरमें काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'चिंतामणिविनायक' और ३ हाथ ऊंचे और दश बारह हाथके घेरेमें गोलाकार श्यामवर्ण काशीके ११ महारुद्रोंमेंसे 'आग्नीध्रेश्वर' शिवलिंग हैं, जो अब यागेश्वर करके प्रसिद्ध हैं । मन्दिरके आगे काले पत्थरका एक बड़ा नंदी है । यागेश्वरसे पश्चिमोत्तर 'आग्नीध्र कुंड' ईश्वरगंगीके नामसे प्रसिद्ध है, जहां भाद्रकृष्ण ६ को स्नानका मेला होता है ।

गुहागंगा–छोटे द्वारवाली एक छोटी कोठरी है, जिसमें बैठकर प्रवेश करने पर एक अंधेरी गुफा (भुवेवरा) देख पड़ती है, जिसको 'गुहा गंगा' कहते हैं । एक पैसा लेने पर यहांका पुजारी ताला खोल कर कोठरीमें जाने देता है । इसके पास एक बड़ा दालान है, जिस में यात्री टिकते हैं गुफाके उत्तर एक बड़े बागमें 'उर्वशीश्वर' शिवलिंगका छोटा मन्दिर है ।

ज्वरहरेश्वर–जैतपुरा महल्लेमें एक कोठरीके भीतर 'ज्वरहरेश्वर' शिवलिंग हैं । कोठरीके निकट बहुत छोटे चार पांच मन्दिरोंमें शिवलिंग और कई देवमूर्तियां हैं । इन कोठरियोंमेंसे एकमें 'सिद्धेश्वर शिवलिंग हैं ।

वागीश्वरीका मन्दिर–जैतपुरा महलेमें आंगनके बगलके मन्दिरमें सिंहासनके ऊपर बैठी हुई तांबेके सिंहपर काशीकी नव दुर्गाओंमेंसे 'स्कंदमाता' दुर्गा खड़ी हैं, जिनको 'वागीश्वरी' कहते हैं। इनका मुखमण्डल और क्षत्र चांदीका है। इनके बाएं ओर 'स्वामिकार्तिक' की छोटी मूर्ति है। यहां लोग कहते हैं कि वागीश्वरीके सिंहासनसे नीचे एक कोठरीमें आधे हाथ ऊंची सरस्वतीकी मूर्ति है। मन्दिरके आगे अमेठीके राजाका बनवाया हुआ श्वेत सिंह खड़ा है। मन्दिरके आस पास गणेश, महावीर, आदि बहुत देवता हैं।

नागकुआं–वागीश्वरीके मंदिरसे थोड़ी दूरपर शहरके पश्चिमोत्तर हिस्सेमें नागकुआं महलेमें 'कर्कोटक तीर्थ' है, जो अब 'नागकुआं, करके प्रसिद्ध है। इसके नीचे जानेवाली सीढ़ियां १५० वर्षसे अधिककी नहीं हैं।

ऊपर मुरब्बा तालाबके समान है, जिसके ऊपर चारों बगलोंपर पत्थरके मुतके नीचे मध्यमें गोलाकार कुआं और चारोंओर ऊपरसे कुआंके निकट तक पत्थरकी सीढ़ियां हैं, अर्थात् दक्षिण और पश्चिम सीधे नीचे ३८ सीढ़ियां और ऊपर तथा पूर्व लहरदार सीढ़ियां हैं। कुआंमें स्नान करनेके लिये इसके भीतर चक्रदार सीढ़ियां बनी हैं। ऊपर पत्थरमें दो सर्प बने हैं।

श्रावण शुक्ल ५ (नागपञ्चमी) को यहां मेला होता है। लोग इस कुएंमें स्नान करते हैं।

वाराहपुराण–(२४ वां अध्याय) कश्यपकी कद्रू नामक स्त्रीसे अनंत; वासुकी आदि नागगण जन्में। इनकी संततियोंसे सम्पूर्ण जगत् पूर्ण हो गया। पृथ्वीके सब जीव व्याकुल हो ब्रह्माजीकी शरणमें गए। तब ब्रह्माजीने क्रोध कर वासुकी आदि सर्पोंको शाप दिया कि स्वायंभुव मन्वंतरमें माताके शापसे तुम सबोंका क्षय होगा। पश्चात् सर्पोंकी प्रार्थनापर ब्रह्माजी बोले कि तुम लोग वितल,सुतल और पातालमें निवास करो। फिर वैवस्वत मन्वतरमें कश्यपसे जन्म ले निज माताके शापसे गरुड़के भोजन होगे। अष्ट कुलके महानागोंको छोड़ तुच्छ सर्पोंको गरुड़ भोजन करेंगे। ब्रह्माजीका शापानुग्रह पंचमी तिथिको हुआ. इसलिये यह तिथि नागोंको बड़ी प्यारी है। जो इस तिथिमें पृथ्वीमें चन्दनसे वा गोमयसे अथवा दूसरे किसी रंगसे सर्पोंकी मूर्ति बना दूधसे स्नान करवाकर चंदनादिसे उनकी पूजा करें और अन्नत्याग व्रत करें; वे अनेक सुखोंसे युक्त और सर्पोंके प्रीतिपात्र होते हैं और उनके कुलमें सर्प-बाधा नहीं होती।

भविष्यपुराण–(३० वें अध्यायमें भी यह कथा है। और लिखा है कि) आस्तीक मुनिने पंचमी तिथिको नागोंकी रक्षाकी, इसलिये पंचमी नागोंको अति प्यारी हुई। (३४ वाँ अध्याय) श्रावण शुक्ल ५ को द्वारके दोनों ओर गोबरके नाग बना कर दही, दूध अक्षत आदिसे पूजन करे।

बकरिया कुंड–सिकरौरसे राजघाटको जो सड़क आई है, उसके दक्षिण नागकुआंसे उत्तर 'वर्करी कुण्ड' है जिसको बकरिया कुंड कहते हैं। यह अब गड़हाके समान एक पुराना कच्चा तालाब है, जिसमें मट्टी खोदी जाती है और वर्षाकालमें पानी रहता है। दक्षिण ओर टूटे फूटे छोटे पक्के घाटकी निशानी देख पड़ती है, जिसपर काशीके १२ आदित्योंमेंसे 'उत्तरार्क' हैं। घाटके उजड़े हुए बहुतेरे पत्थरके टुकड़े बौद्धोंके समयके हैं। घाटसे दक्षिण मुसलमानोंकी कबरें और उन्हींका एक पक्का मकान है, जिसके खम्भे बौद्ध इमारतोंके हैं: यहां पूर्व समयमें बौद्धमतवाले लोग रहते थे।

स्कन्दपुराण–(काशीखण्ड–४७ वां अध्याय) में बकारिया कुण्डका वृत्तांत और उसमें पौषमासमें स्नानका माहात्म्य कहा है और लिखा है कि, पौषमासके रविवारको उत्तरार्ककी यात्रा करनेसे काशीवासका फल प्राप्त होता है।

शैलपुत्री–सिकरौरसे राजघाट आनेवाली सड़कसे वरुणा नदीके मढ़ियाघाटके पास एक मन्दिरमें काशीकी ९ दुर्गाओंमेंसे 'शैलपुत्री' दुर्गा, ४२ लिंगोंमेंसे 'शैलेश्वर' और 'हुंडन' और 'मुंडन' गण हैं।

कपालमोचन–ऊपर लिखीहुई सड़कसे उत्तर बकरिया कुण्डसे लगभग १ मील पूर्व 'कपालमोचन' कुण्ड नामक एक बड़ा सरोवर है, जो चारोंओर पत्थरकी सीढ़ियोंसे घेरा हुआ है। भाद्र शुक्ल पूर्णिमाको यहां स्नान और लाठभैरवके दर्शन पूजनका मेला होता है। कपालमोचन पंचपुष्करिणियोंमेंसे एक है, शेष ४ पुष्करिणियोंके नामये हैं, ऋणमोचन, पापमोचन, ऐतरणी, वैतरणी।

शिवपुराण– (६ वां खंड–१ ला अध्याय) ब्रह्मा बोले कि भैरवने हमारे पांचवें शिरको काटडाला, क्योंकि मैंने उस मुखसे शिवकी निन्दा की थी, इसलिये भैरवको (हमारे शिर काटनेसे) चांडाली हत्या लगी। इससे संसार भरमें फिरकर काशीमें आए तुरंत उनकी हत्या जाती रही। जहांपर कि भैरवने हमारा शिर गिराया, वहां बड़ा तीर्थ हो गया और कपालमोचनके नामसे ख्यात हुआ।

स्कन्दपुराण–(काशीखंड–३१ वें अध्यायमें कपालमोचनकी कथा प्रायः शिवपुराणवाली कपालमोचनकी कथाके समान हैं और १०० वें अध्यायमें लिखा है कि भाद्रकृष्ण अमावास्याको पंचपुष्करीणी यात्रासे भैरवी यातनाका भय निवृत्त होता है)।

वामनपुराण–(२ रा अध्याय) महादेवजीने अपने नखके अग्रभागसे ब्रह्माका शिर काट दिया। वह शिर शिवजीके बायें हाथमें स्थित हो गया। तब शिवजी विष्णुके उपदेशसे भ्रमण करते हुए काशी गए और कुण्डमें स्नान करनेसे वह कपाल उनके हाथसे छुटगया, इसी भांति कपालमोचन तीर्थ हुआ है।

लाठभैरव—कपालमोचनके उत्तर किनारेपर पत्थरका बड़ा फ़र्श मुसलमानोंका निमाजगाह है फर्शके पश्चिम किनारेपर मुसलमानोंकी लंबी मसजिद है और उत्तर हिस्सेमें पूर्वके किनारे पर ९ गज लंबे और इतनेही चौड़े घेरेके भीतर ७ फीट ऊंची और ७ फीटके घेरेकी पत्थरके ऊपर तांबेसे मढ़ी हुई भैरवकी लाठ है, जिसको लाठभैरव और कपालभैरवभी कहते हैं। इसकी पूजा होती है। लाठके चारों ओर बहुत छोटे छोटे चबूतरे, एक छोटी मूर्ति और पत्थरका एक छोटा कुत्ता है। घेरेका द्वार दक्षिण है, इसके पीछे बहुत छोटा एक कूप है।

पहले यह लाठ मन्दिरके घेरेमें था, जो (मन्दिर) औरंगजेबके हुक्मसे तोड़ दिया गया। बहुत दिनोंसे इस स्थानका झगड़ा हिन्दू और मुसलमानोंमें चला आता है। फर्शसे पूर्व मुसलमानोंकी क़बरें हैं।

भादों शुक्ल पूर्णिमाको कपालमोचन तीर्थ (लाठभैरवके तालाब) में स्नान और लाठभैरवके दर्शनकी बड़ी भीड़ होती है।

स्कन्दपुराण–(काशीखंड–१०० वां अध्याय) भाद्र शुक्ल पूर्णिमाको कुलस्तम्भकी यात्रासे भैरवी यातनाका भय निवृत्त होता है।

कूष्मांड विनायक--काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'कूष्मांड विनायक' फुलवड़िया गांवमें हैं।

सारनाथ—वरुणा नदीपर पहिले पक्का पुल मिलता है, जिससे पश्चिम इमिलिया घाटके पास 'चण्डीश्वर' और काशीके ५६ विनायकोंमेंसे 'मुण्ड विनायक' हैं, और पंचकोशीकी सड़कसे उत्तर शहरसे ३ मील धामकसे थोड़ेही आगे मैदानमें एक छोटे टीलेपर सारनाथ, शिवका छोटा मन्दिर है, जिसमें 'सारनाथ' और 'सोमनाथ' २ शिवलिंग हैं। मन्दिरके पास नंदीकी २ पुरानी मूर्तियां, टूटी फूटी पांच सात बौद्ध मूर्तियां, एक साधुकी समाधी, एक छोटी पक्की कोठरी और एक कूप और मंदिरके सामने सारंग तालाब नामक एक छोटा कच्चा सरोवर है।

यहां श्रावण मासमें प्रति सोमवारको दर्शन पूजनका मेला होता है।

धामक (स्तूप) सारनाथके मन्दिरसे कई सौ गजकी दूरीपर एक बौद्ध स्तूप है, जो धामक करके प्रसिद्ध है। धार्मिकका अपभ्रंश धामक है। यह स्तूप नीचेसे ऊपर तक ठोस है। इसके नीचेका भाग चुनारके पत्थरसे बना हुआ अठपहला ४३ फीट ऊंचा है। इसका व्यास ९३ फीट और घेरा २९० फीट है। स्तूप विना गाराका बना है, हर एक पत्थरके टुकड़े ४ लोहेके कांटेसे एक दूसरेमें बांधे गए हैं। स्तूपके ऊपरका भाग ईटका है। पहले इसपर गच की होगी। ऊपरके कलशपर मुलम्मेदार छत्र लगा हुआ था, नीचेके भागके पहलोंमें ताकोंके चिह्न हैं। यह धामक यहांके मैदानसे १२८ फीट ऊंचा है।

सन १८३५ ई० में बहुत परिश्रमके सहित एक स्तम्भ स्तूपकी नेवतक डुबाया गया, परन्तु इससे कोई प्रसिद्ध बात जानी नहीं गई। परन्तु साधारण तरहसे जान पड़ता है कि यह स्तूप बौद्ध मतके स्मरणार्थ बना था। इसके बननेका ठीक समय ज्ञात नहीं है परन्तु इसकी शकलसे सन् ई०के७वें शतकका यह जान पड़ता है इसके चारों ओर मकानोंकी निशानियां और आसपास टूटीफूटी एक छोटी वावली, एक पुराना कूप,कईएक टूटीहुई बौद्ध मूर्तियां और ईटोंका बडा ढेर है। इससे जान पड़ता है कि ये सब पहलेके मठ, मन्दिर और भजनालयके टूटे फूटे सरंजाम हैं। सन १८३४-३५ में कनिंगहाम और सन १८५१ ई० में क्टीटा साहेबने इस स्थान को खोदा था, जिससे मन्दिर और मकानकी नेव जाहिर हुई। आगसे जलीहुई काठकी सस्थीरें पिघले हुए पीतलके बर्तन झुलसी हुई हड्डियोंके ढेर और भोजनकी वस्तुएं खोदनेपर मिलीं.इससे जान पडा कि अचानक आग लगनेसे बहुत आदमियोंके साथ मकान जल गएथे। इसी जगह एक लेख मिला था, जिसमें लिखा था कि गौडेश्वर राजा महीपालने श्रीधर्मर्षि (बुद्धदेव) के पाद पद्मोंकी पूजा करके काशीमें १०० ईशान और चित्रघंटा निर्माण किए। श्रीस्थिरपाल और इनके छोटे भाई वसंतपालने बौद्ध धर्मका पुनरुद्धार करके संवत् १०८३ में यह स्तूप बनवाया।

ऊपर लिखा हुआ स्तूप धामकके पास था, जिसका चिह्न अब नहीं है।

उत्तम संगतराशी वाली बहुत बौद्धमूर्तियां और पत्थरकी दूसरी चीजें यहांसे निकाल कर बनारसके कीन्स कालेजके पास और कलकत्तेके अजायबघरमें रक्खी गई हैं। और ईटें तथा पत्थरके बहुतसे असबाब इमारत बनानेके लिए यहांसे शहरमें गए हैं।

बुद्धदेवने गयासे आकर और बहुत दिनों तक यहां रह कर उपदेश किया था। बौद्धराजाओंके समय इस स्थानका नाम सारङ्गनाथ था जिसको अब सारनाथ कहते हैं। मगध देशके बौद्ध मत वाले गुप्त राजाओंके समय काशीका सौंदर्य घट गया था। उस समय सारनाथही बुद्धिकाशी नामसे शोभा और समृद्धिसे परिपूर्ण था। धामकसे कई सौ गज दूर २३ वें संतपारसनाथका मन्दिर है और यहां एक धर्मशाला और एक बाग है।

चौकंडी टावर–धामकसे ½ मील दक्षिण मैदानमें चौकण्डी नामक टावर है। आस-पासकी भूमिसे ७४ फीट ऊंचे ईंटें और मिट्टीके बेडौल पोस्ते पर २३ फीट ऊंचा ईंटोंसे बना हुआ ८ पहला टावर है, जिसका घेरा ९० फीट है। इसके चारों ओर एक एक द्वार हैं। इसके भीतर और सिरे पर जानेके लिए भीतरसे सीढियां लगी हैं। भीतर मध्यमें १५ फीट गहरा विना पानीका बिगडा हुआ कूप है, जिसमें जानेको नीचे एक बगलसे राह है।

चौकण्डीके उत्तर द्वार पर अरबी लेख है, जिससे जान पड़ता है कि यह हुमायूं बादशाह के समय सन १५३१ ई० में बना था। यहांका पुराना टावर तोड़ कर उसीके ईंटोंसे यह चौक-ण्डी बनी होगी, जो अब लोरिककी कुदान कहलाती है।

पुस्तेके नीचे एक बहुत पुराना छोटासा कुआं और टूटी हुई एक पुरानी मूर्ति है।

पंचक्रोशी यात्रा–काशीकी परिक्रमा ४७ मीलकी है। पञ्चक्रोशी यात्रा मणिकर्णिका-घाटसे आरंभ होती है। जहांसे कर्दमेश्वर ६ मील, भीमचण्डी १६ मील, रामेश्वर ३० मील, शिवपुर ३८ मील, कपिलधारा ४४ मील, और मणिकर्णिका ४७ मील है,। सब स्थानोंपर धर्म-शाला और दूकाने हैं। इनके अतिरिक्त दूसरे कई एक टिकनेके स्थान हैं। अस्सी संगम पर नरवा गांवमें एक धर्मशाला, कर्दमेश्वरके पास कंदवा गांवमें कई धर्मशालाएं, भीमचण्डीमें कई धर्मशालाएं, सिंधु सागरपर एक धर्मशाला, रामेश्वर गांवमें कई धर्मशालाएं, शिवपुरमें कई धर्मशालाएं, (यहां युधिष्ठिरेश्वर, अर्जुनेश्वर, भीमेश्वर, नकुलेश्वर और सहदेवेश्वर हैं; पर ये काशीरहस्यमें नहीं लिखे हैं,) सारंगतालाबपर एक धर्मशाला और कपिलधारामें कई धर्मशालाएं हैं। मणिकर्णिकासे अस्सी–संगम तक गंगाके तीर तीर अस्सी--संगमसे वरणा–संगमके निकट तक सड़क द्वारा और वरणा-संगमसे मणिकर्णिका तक गंगाके तीर तीर चलना होता है। गंगाके बढ़नेपर पंचक्रोशीके यात्री गंगाके किनारे नावपर जाते हैं। इसी पञ्चक्रोशीके भीतर 'मुक्तिक्षेत्र काशी' कही जाती है। पंचक्रोशी सड़कसे दाहने किनारे स्थान स्थानपर देवता और सड़कके किनारोंपर बड़े बड़े वृक्ष हैं। हर मासमें पञ्चक्रोशी यात्रा की जाती है, पर यहांके लोग अगहन और फाल्गुन महीनोंमें विशेषकर पञ्चक्रोशी यात्रा करते हैं। फाल्गुन मासमें ठाकुरजी यात्राके लिये जाते हैं, उस समय मार्गमें स्थान स्थान पर रामलीला और कृष्णलीला होती हैं। संगमें गवैए लोग भी गाते बजाते अबीर उड़ाते जाते हैं। कंदवा, भीमचण्डी, रामेश्वर, शिवपुर, सारंग–तालाब और कपिलधारा पर ठाकुरजी निवास करते हैं।

काशीरहस्यके १० वें अध्यायमें लिखा है कि पूर्व दिवसमें ढुंढिराजका पूजन करके इस क्रमसे स्नान, देवदर्शन करते हुए पञ्चक्रोशी यात्रा करनी चाहिए, जिसका संक्षिप्त वृत्तांत नीचे है,

(मणिकर्णिकाघाट पर) मणिकर्णिका, मणिकर्णिकेश्वर, सिद्धिविनायक; (ललिताघाट) गंगाकेशव, ललिता देवी; (मीरघाट) जरासंधेश्वर; (मानमंदिर) सोमेश्वर, दालभ्येश्वर; (दशाश्वमेध) शूलटंकेश्वर, आदि वाराह, दशाश्वमेधेश्वर, बंदिदेवी, (पांड़ेघाटके निकट) सर्वेश्वर; (केदारघाट) केदारेश्वर, (हनुमानघाट) हनुमदीश्वर; (हनुमानघाटसे पश्चिम-दक्षिण) लोलार्क, अर्क विनायक; (अस्सी संगम) संगमेश्वर; 'प्रथम निवास स्थान' (दुर्गा-जीके पास) दुर्गा कुण्ड, दुर्ग विनायक, दुर्गा देवी; (मार्गमें)विष्वक्सेनेश्वर, द्वितीय निवास-स्थान' (कर्दमेश्वरमें) कर्दमेश्वर, कर्दमतीर्थ, कर्दमकूप, सोमनाथ, (आगे क्रमसे) विरूपाक्ष

नीलकण्ठ, नागनाथ, (आगे सड़कमें) चामुंडा, (आगे गांवमें) मोक्षेश्वर, करुणेश्वर, (आगे गांवमें) वीरभद्रेश्वर, विकटाक्ष दुर्गा, (आगे गांवमें) (काशीके अष्टमहाभैरवोंमेंसे) 'उन्मत्त भैरव' नीलगण, कालकूट गण, (आगे क्रमसे) बिमल दुर्गा, महादेव, नंदीकेश गण, (आगे गांवमें) भृंगि-रीटि-गण, गणप्रिय, (गौरा गांवमें) विरूपाक्ष, (आगे क्रमसे) यज्ञेश्वर, विमलेश्वर, मोक्षदेश्वर, ज्ञानदेश्वर, अमृतेश्वर, (भीमचंडीमें) गंधर्व-सागर 'तृतीय निवासस्थान' भीमचंडी देवी, (काशीके ५६ विनायकोंमेंसे) 'भीमचंड विनायक' रविरक्ताक्ष, गंधर्व, नरकार्णवतारक शिव, एकपाद-गण, (आगे तालाब पर) महाभीम, (आगे गांवमें) भैरव, भैरवी, (आगे) भूतनाथ, सोमनाथ, (प्रसिद्ध) सिंधुसागर, (आगे झौंसा गांवमें) कालनाथ, (आगे क्रमसे) कपर्दीश्वर, कामेश्वर गणेश्वर, (चौखंडी गांवमें) वीरभद्र, चारुमुख, गणनाथ, (प्रसिद्ध) (काशीके ५६ विनायकोंमें) 'देहली विनायक' (इनके निकट) षोडश विनायक, (भुइली गांवमें) (काशीके ५६ विनायकोंमेंसे) 'उद्दण्ड विनायक' उत्कलेश्वर, (आगे क्रमसे) रुद्राणी, तपोभूमि, (रामेश्वर गांवमें) वरुणा तीर्थ, 'चतुर्थ निवासस्थान' (रामेश्वरमें) रामेश्वर, सोमेश्वर, भरतेश्वर, लक्ष्मणेश्वर, शत्रुघ्नेश्वर, भूमीश्वर, नहुषेश्वर, (वरुणापर) असंख्यात तीर्थ, असंख्यात लिंग, (कमोरा गांवमें) देवसंघेश्वर, (लैनमें) (५६ विनायकोंमें) 'पाशपाणि विनायक, (खजुरी गांवमें) पृथ्वीश्वर, स्वर्ग भूमि, (दीनदयालपुरामें) यूपसरोवर, (कपिलधारा) वृषभध्वज तीर्थ, 'पंचम निवासस्थान' (काशीके ४२ लिंगोंमेंसे) वृषभध्वज, (कोटवा गांवमें) ज्वाला नृसिंह, (गंगा-वरुणा-संगम) वरुणासंगम, आदि केशव, संगमेश्वर, खर्वविनायक, (प्रह्लाद घाट) प्रह्लादेश्वर, (त्रिलोचन घाट,) त्रिलोचनेश्वर, (पंचगंगा घाट पंचगंगा तीर्थ, बिंदुमाधव, (मंगलागौरीमें) गभस्तीश्वर, मंगलागौरी, (प्रसिद्ध) वसिष्ठ, वामदेव, (प्रसिद्ध) पर्वतेश्वर, (मणिकर्णिकापर) महेश्वर, (ब्रह्मनाल) सप्तावरण विनायक, (प्रसिद्ध) सिद्धिविनायक, मणिकर्णिका, विश्वेश्वर, मुक्तिमण्डप, विष्णु, दंडपाणि, ढुंढिराज, भैरव, आदित्य, मोदादिपंचविनायक।

लिंगपुराण—(९२ वां अध्याय) शिवजीने कहा कि, काशीमें ब्रह्माजीने गौओंके पवित्र दुग्धसे कपिलाह्रद नाम तीर्थ रचा है और वृषभध्वजरूपसे हमारा स्थापन किया है।

शिवपुराण–(६ वां खंड–१७ वां अध्याय) जिस समय शिवजी पार्वतीके सहित मन्दराचलसे काशीमें पहुँचे, उसी समय गोलोकसे सुनन्दा, सुमना, शिला, सुरभी और कपिला ये ५ गौवें आकर उनके सन्मुख खड़ी हुई। शिवजीने प्रसन्नतासे उनकी ओर देखा। इसमें गौवोंके थनोंसे दूध टपक कर एक कुण्ड होगया, जो कपिलाह्रदके नामसे प्रसिद्ध है। शिवजीने कहा कि, जो मनुष्य इस ह्रदमें तर्पण, श्राद्ध, आदिकर्म करेगा, उसको गयासे भी अधिक फल प्राप्त होगा।

स्कंदपुराण–(काशिखंड–६२ वां अध्याय) सोमवती अमावास्याको कपिलधारा तीर्थमें श्राद्ध करनेसे गयाश्राद्धसे अष्टगुण फल होता है।

रामनगर–अस्सी-संगमसे १ मील दक्षिण-पूर्व गंगाके दहिने तटपर महाराज काशी नरेशकी राजधानी रामनगर है। नगवा घाटपर पार उतारनेवाली नाव रहती है।

इस सालकी मनुष्यगणनाके समय रामनगरमें ११०९३ मनुष्य थे, जिनमें ८८९९ हिन्दू और २१९४ मुसलमान।

गंगाकी ओर महाराजके महलकी शकल बहुत सुन्दर है। इस ओरकी बालकानी पर चढ़नेसे काशीके शहरकी सुंदर छबि देख पड़ती है गंगाकी ओर राजमहलके एक भागमें वेद्व्यास और शुकदेवजी लिंगस्वरूप हैं। बहुतेरे यात्री इनके दर्शनके लिए यहां आते हैं।

महाराजके महलसे १ मील दूर राजा चेतसिंहका बनवाया हुआ एक बड़ा तालाब और एक बड़ा मन्दिर है। तालाबके चारों बगलोंमें सीढ़ियां हैं। मन्दिरका काम राजा चेतसिंहके समयमें आरंभ और उनके पीछेके राजाके समयमें समाप्त हुआ। मन्दिरपर चारों ओर अवतारों, देवताओं साधुओं और जानवरोंकी सैकड़ों मूर्तियां पत्थर खोद बनाई गई हैं। हिंदुओंके हाथकी कारीगरीका यह उत्तम नमूना है।

रामनगरकी रामलीला प्रख्यात है। ऐसी रामलीला भारतवर्षके दूसरे स्थानपर नहीं होती। यह मेला आश्विन महीनेमें एक महीनेसे कुछ कम दिनतक रात्रिमें होता है। विजया दशमीके दिन रावणवधकी लीला होती है। महाराजके सम्पूर्ण उत्तम असबाब हाथी, घोड़े, और सवारोंके सहित महाराज काशीनरेशकी सवारी मेलेमें आती है। सवारी निकलनेके समय तोपोंके शब्द होते हैं। उस दिन दर्शकोंकी बड़ी भीड़ होती है। रातको आतस बाजी छूटती है।

इतिहास—काशीसे ५ कोस दक्षिण गंगापुर नामक एक ग्राम है, जिसके जमींदार भूमिहार ब्राह्मण बाबू मनसाराम थे, जिन्होंने सन १७३० ई० में दिल्लीके बादशाह मुहम्मद शाहसे राजाकी पदवी प्राप्तकी और सन १७३७ में जौनपुरके जिलेमें एक किला दखल किया। राजा मनसारामके पुत्र राजा बलवंतसिंह सन् १७४० ई० में गंगापुरके राजा हुए। सन १७५२ ई० के पश्चात् उन्होंने बनारसमें आकर रामनगरके किलेको बनवाना प्रारम्भ किया। पश्चात् उनका राज्य इलाहाबादसे बक्सर तक फैल गया। सन १७७० में राजा बलवंतसिंहका देहांत होगया। उन्होंने अपनी पुत्रीके पुत्रको गोद लिया था, परन्तु उनकी मृत्यु होनेके उपरांत उनकी अविवाहिता स्त्रीके गर्भसे जन्मे हुए राजा चेतसिंह छल; बल, कौशलसे राजसिंहासन पर बैठे।

(चेतसिंहका वृत्तांत काशीके इतिहासमें है)

चेतसिंहके काशीसे भाग जानेपर राजा बलवंतसिंहकी पुत्रीके पुत्र राजा महीपनारायणसिंह राजसिंहासनपर बैठे, जिनके देहांत होनेके उपरांत सन् १७९५ ई० में उनके पुत्र राजा उदितनारायणसिंहको राजसिंहासन मिला। राजा उदितनारायणसिंहकी मृत्यु होनेपर उनके भतीजे महाराज ईश्वरीप्रसाद् नारायणसिंह सन १८३५ ई० में उत्तराधिकारी हुए। इनको सन् १८७७ ई० में दिल्लीदर्बारमें महाराजकी पदवी मिली। महाराज ईश्वरीप्रसादनारायणसिंह बहादुर सन् १८८९ ई० में ७० वर्षकी अवस्थामें मृत्युको प्राप्त हुए। अब उनके भतीजे ३१ वर्षकी अवस्थाके महाराज प्रभुनारायणसिंह बहादुर काशनिरेश हैं।

व्यासपुरा—रामनगरसे कई मील उत्तर ओर गंगाके दहिने मैदानके एक छोटे मन्दिरमें व्यासजी लिंगस्वरूप हैं।

माघमें प्रति सोमवार और शुक्रवारको व्यासजीके दर्शनका मेला होता है।

मत्स्यपुराण—(१८४ वां अध्याय) व्यासजीने भिक्षाकेलिये क्रोध किया, तब महादेवजीने कहा कि, आप क्रोधी हैं इसहेतु आपको काशी क्षेत्रमें बसना न होगा। तब व्यासजी

बोले कि हे देव! आप चतुर्दशी और अष्टमी इन दो दिनोंको मुझे यहां आनेकी आज्ञा दीजिए। शिवजीने कहा कि ऐसाही होगा। तब व्यासजीने उस क्षेत्रके गुणोंको जानकर उसी क्षेत्रके समीप निवास किया। यह कथा काशीखंडके ९६ वें अध्यायमें विस्तारसे है।

बनारस जिला–जिलेके उत्तर ग़ाज़ीपुर और जौनपुर, पश्चिम और दक्षिण मिर्जापुर और पूरब बिहारके शाहाबाद जिले हैं।

इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय बनारस जिलेमें ९२७६४७ मनुष्य अर्थात् ४६९६३७ पुरुष और ४५८०१० स्त्रियां थीं। सन १८८१ ई० में जिलेका क्षेत्रफल ९९८ वर्गमील, मनुष्य-संख्या ८९२६८४ थीं, और जिनमें ८०१५५६ हिंदू, ८९३५१ मुसलमान, १७६८ कृस्तान, ७ जैन, और २ पारसी। हिंदुओंमें १०४०९२ ब्राह्मण, १०१०९१ चमार, ८००८८ अहीर, ५३९३० राजपूत, ४१८३४ कच्छी, ३६४०७ भर, २९८४९ कुर्मी, २८३७६ कहार, २०९९४ लोहार, १९९२८ तेली, १९४२२ भूमिहार, १८३५३ बनियां, १७६९६ कलवार, १५५४८ कायस्थ, १५२३७ कुँभार, १५१३६ नोनियां, १२५१० गडेरिया, १०३१४ नाई, ९८७० मल्लाह, ७७१४ सोनार, ५५८१ तँबोली, ५१६४ पासी, और शेष दूसरी जातिके लोग थे, जिनकी संख्या ५००० से कम हैं।

बनारस शहरसे १६ मील नीचे गोमती नदी गंगामें मिली है। जिलेके दक्षिण-पूर्वकी सीमापर कर्मनाशा नदी है, जो सूखी ऋतुओंमें सूख जाती है। वरुणा नदी सर्वदा बहती है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा।

लिखितस्मृति–(११ वां श्लोक) काशीमें प्रवेश करके यदि कदाचित् कोई उसको त्याग कर दूसरे स्थानपर जाता है तो भूतगण ताली बजा कर उसको हँसते हैं।

शंखस्मृति–(१४ वां अध्याय) काशीका दान अनंत फलदायक है।

पाराशरस्मृति–(१२ वां अध्याय) संपूर्ण मरुत्, वसु, रुद्र, सूर्य्य और देवता ग्रहणके समय चंद्रमामें लीन होतेहैं, इसलिये ग्रहणमें दान देना चाहिए।

संवर्त्तस्मृति–(२११ वां श्लोक) चंद्र और सूर्य्यके ग्रहणमें दियाहुआ दान अक्षय होता है।

महाभारत–(वनपर्व–८४ वां अध्याय) तीर्थसेवी पुरुषको काशीपुरीमें जाकर वहां शिवकी पूजा करनी चाहिए। कपिलकुंडमें स्नान करनेसे राजसूययज्ञका फल होता है। वहांसे अविमुक्तेश्वर तीर्थमें जाना चाहिए। उन देवाधिदेवके दर्शन करतेही पुरुष ब्रह्महत्यासे छूट जाता है। वहां प्राण छोड़नेसे मोक्ष होता है।

(भीष्मपर्व–२४ वां अध्याय) काशीराज कुरुक्षेत्रके युद्धमें पांडवोंकी ओर थे। (कर्ण-पर्व–५ वां अध्याय) वसुदानके पुत्रने काशीराजको मारा।

(अनुशासन पर्व–३० वां अध्याय) काशीराज्यमें हर्यश्वनामक एक राजा था, वह वीतहव्यके वंशधरोंके हाथसे गंगा-यमुनाके बीच युद्धमें मारा गया। अनंतर हर्यश्वका पुत्र सुदेव उस राज्यपर अभिषिक्त हुआ। वीतहव्यके वंशवालोंने आकर उसे भी पराजित किया, तब सुदेवके पुत्र दिवोदास उस राज्य पर अभिषिक्त हुआ। महातेजस्वी दिवोदासने हैहय वंशियोंके बलको जान कर इन्द्रकी आज्ञानुसार गंगाके उत्तर तटके निकट और गोमतीके दक्षिण तट पर वाराणसी पुरी बसाई। राजा दिवोदास वाराणसीमें वास करने लगा। तब हैहयगणने फिर आकर उसपर आक्रमण किया। राजा दिवोदासने बहुत दिनों तक संग्राम कर-

नेके पश्चात् अनेक बाहनोंके मारे जानेपर स्वयं दीनता अवलंबनकी और पुरी परित्याग करके बृहस्पतिके ज्येष्ठ पुत्र भरद्वाजके आश्रममें जाकर उनके शरणागत हुआ। भरद्वाज ऋषिने उसके लिए पुत्रकामनासे यज्ञ किया, जिसके प्रभावसे राजाको प्रतर्द्दन नामक प्रसिद्ध पुत्र उत्पन्न हुआ।

आदि ब्रह्मपुराण-(११ वां अध्याय) काशीके राजा धन्वंतरिका पुत्र केतुमान, केतुमान का पुत्र भीमरथ और भीमरथका पुत्र दिवोदास हुआ। दिवोदासके राज्यके समय काशी शून्य हो गई थी, क्योंकि निकुंभने काशीको शाप दिया था कि १००० वर्ष तक यह शून्य रहेगी। शाप होजानेके उपरांत राजा दिवोदासने गोमती नदीके तटपर काशीवासियोंको बसा कर पुरी रचली, जिस पुरीमें पहले भद्रश्रेण्य राजाका राज्य था। दिवोदास भद्रश्रेण्यके पुत्रोंको मारकर उस पुरीमें अपना राज्य करने लगा।

जब दिवोदास काशीमें राज्य करता था, उस समय शिवजी पार्वतीकी प्रीतिके निमित्त हिमालयके समीप बसने लगे। पार्वतीकी माता मेनाने कहा कि, हे पुत्री! तेरे पति महादेव सब कालमें दरिद्री बने रहते हैं, इनमें कुछ शीलता नहीं है। यह वचन सुन पार्वती क्रोधकर शिवसे बोली कि मैं इस जगह नहीं बसूंगी, जहां आपका स्थान है, वहां मुझको ले चलिए. तब महादेवजीने तीनों लोकमें सिद्धक्षेत्र काशीपुरीको बसने योग्य विचारा, परंतु उस समय राजा दिवोदास काशीमें राज्य करता था। शिवजी निकुंभ पार्षदसे बोले कि, हे राक्षस! तू अभी जाकर कोमल उपायसे काशीपुरीको शून्य बनादे. निकुम्भने काशीपुरीमें कुण्ड नाम नापितसे स्वप्नमें कहा कि, तू मेरा स्थान बनादे, मैं तेरा कल्याण करूंगा। तब नापित राजाके द्वारपर निकुंभकी मूर्ति स्थापित कर नित्य पूजा करने लगा। निकुम्भ पार्षद पूजाको पाकर काशी वासियोंको पुत्र, द्रव्य, आयु, इत्यादि वर देने लगा, परन्तु राजाकी रानीको एक पुत्र मांगनेपर उसने वरदान नहीं दिया। इससे राजाने क्रोधकर निकुम्भके स्थानका नाश कर दिया। तब निकुम्भने राजाको शाप दिया कि बिना अपराध तूने मेरा स्थान गिरा दिया है, इसलिये तेरी पुरी आपही आप शून्य हो जायगी। उसी शापसे काशी शून्य हो गई (राजा गोमतीके तीर जा बसा) तब महादेवजी पार्वतीके सहित काशीमें अपना स्थान बनाकर बसने लगे।

शिवपुराण-(१ ला खंड- ४ था अध्याय) सदाशिवने उमाके साथ विहार करनेके लिये एक लोक बनाया, उस स्थानको किसी समय वे नहीं छोड़ते थे। इसी कारण उसको अविमुक्तक्षेत्र कहते हैं। वह स्थान संपूर्ण सृष्टिके जीवोंको आनन्द देनेवाला है, इसलिये उसका नाम आनन्दवन है। और वह स्थान सिद्धरूप, तेजस्वरूप, और अद्वितीय है, इसीसे उसका नाम काशी रक्खा गया।

(२ रा खंड-१७ वां अध्याय) सम्पूर्ण तीर्थोंमेंसे ७ पुरियोंको बहुत बड़ा कहा गया है उनमेंसे काशीकी बड़ाई सर्वोपरि है।

(६ वां खंड-५ वां अध्याय) स्वायंभुव मन्वंतरमें मनुके कुलमें राजा रिपुंजय (दिवोदास) हुआ, उसने काशीमें तपकरके ब्रह्मासे यह वरदान मांगलिया कि देवता आकाशमें स्थित हों और नागादि पातालमें रह कर फिर पृथ्वीमें न आवें। इस वृत्तांतको सुनकर शिवजी भी अपना लिंग काशीमें स्थित करके अपने गणोंसमेत मन्दराचल पर गये। उसी लिंगका नाम अविमुक्त हुआ, जो काशीमें वर्त्तमान है। यही कथा काशीखंडके ३९ वें अध्याय में है सब देवताओंके पृथ्वी छोड़ कर चले जानेपर दिवोदास काशीमें राज्य करने लगा।

(१७ वां अध्याय) शिवजीको काशी बिना नहीं रहा गया, इसलिये कुछ दिनोंके पश्चात् उन्होंने पहले ६४ योगिनियोंको दिवोदाससे काशी छुड़ानेके लिये भेजा । जब काशीमें योगिनियोंकी युक्ति न चली तब वे मणिकर्णिकाके आगे स्थित होगईं। (८ वां अध्याय) फिर शिवजीने सूर्य्यको काशीमें भेजा, एक वर्ष बीत गया, सूर्य्यकी भी कुछ न चली तब वे अपने १२ शरीर धरकर काशीमें स्थित हुए । जिनका नाम यह है,—

१ लोलार्क, २ उत्तरार्क, ३ सांबादित्य, ४ द्रौपदादित्य, ५ मयूखादित्य, ६ खखोलकादित्य, ७ अरुणादित्य, ८ वृद्धादित्य, ९ केशवादित्य, १० विमलादित्य, ११ कनकादित्य, और १२ यमादित्य ।

शिवजीने फिर ब्रह्माको काशीमें भेजा, ब्रह्मा १० अश्वमेध यज्ञ करके काशीमें रहगए । (११ वां अध्याय) शिवजीकी आज्ञासे गणपति काशीमें गए । (१२ वां अध्याय) गणपतिका विलंब देख शिवजीने विष्णुको काशीमें भेजा । (१४ वां अध्याय) गणपतिके कहनेके अनुसार १८ वें दिन विष्णुने ब्राह्मणका रूपधर, राजा दिवोदासके गृहपर जाकर उसे ज्ञानका उपदेश देकर राज्यसे विमुख करदिया और गरुड़को शिवके समीप भेजा। (१५ वां अध्याय) राजा दिवोदासने एक बहुत सुन्दर शिवमन्दिर बनवाकर नरेश्वरके नामसे शिवलिंग स्थापित किया और विमानपर चढ़कर शिवपुरीको प्रस्थान किया । जिस स्थानसे राजा शिवपुरीको गया था, वह स्थान भूपालश्रीके नामसे बड़ा तीर्थ हुआ जो लिंग दिवोदासेश्वर नामसे प्रसिद्ध है, उसकी पूजा करनेसे फिर आवागमनका भय नहीं रहता (२० वां अध्याय) शिवजी मन्दराचलसे काशीमें आए, उनके आनेपर इन स्थानोंके ब्राह्मण दर्शनके लिये आए । दण्डाघाट, मन्दाकिनीतीर्थ, हंसक्षेत्र, ऋणमोचनतीर्थ, दुर्वासातीर्थ, कपालमोचन, ऐरावतह्रद, मैनकुण्ड, वैतरणी, ध्रुवतीर्थ, पितृकुंड, उर्वशीह्रद, पृथूदकतीर्थ, यक्षिणीह्रद, पिशाचमोचनकुंड, मानसर, वासुकीह्रद, सीताह्रद, गौतमह्रद, दुर्गातिह्र ।

(८ वां खंड–३२ वां अध्याय) प्रलयके उपरांत शिवजी सब सृष्टिको अपनेमें लीन करके अकेले थे, तब उनका कोई वर्ण और रूप न था । उसी निर्गुण ब्रह्मने सगुण रूप धरनेका विचार किया और तुरन्त पांचभौतिक शरीर धर सगुण रूप होकर शिव 'हर' के नामसे प्रसिद्ध हुए । उनके शम्भु, महेश, आदि बहुतसे नाम हुए, फिर सगुण ब्रह्मने अपने शरीरसे शक्तिको उपजाया और एक रूपसे दो स्वरूप हुए । वही शिव और शक्तिने अपनी लीलाके निमित्त ५ कोशका एक क्षेत्र निर्माण किया, जिसको आनन्दवन, काशी, वाराणसी, अविमुक्तक्षेत्र, रुद्रक्षेत्र, और महाश्मशान आदि बहुत नामोंसे मनुष्य जानते हैं । शिव और शक्तिने उस स्थानमें बहुत बिहार किया (३३ वां अध्याय) अनंतर शिवने अपने लिंग अविमुक्त अर्थात् विश्वनाथको उसी काशीमें स्थापित कर दिया ।

(३८ वां अध्याय) काशीमें प्रसिद्ध लिंग ये हैं,—

१ विश्वेश्वर, २ केशवेश्वर, ३ लोलार्केश्वर, ४ महेश्वर, ५ कृत्तिवासेश्वर; ६ वृद्धकालेश्वर, ७ कालेश्वर, ८ कल्पेश्वर, ९ पर्वतेश्वर, १० पशुपतीश्वर, ११ केदारेश्वर, १२ कामेश्वर, १३ त्रिलोचन, १४ चंडेश्वर, १५ गरुडेश्वर, १६ गोकर्णेश्वर, १७ नन्दिकेश्वर, १८ प्रीतिकेश्वर, १९ भारभूतेश्वर; २० मणिकर्णिकेश्वर, २१ रत्नेश्वर, २२ नर्मदेश्वर, २३ लांगलीश्वर, २४ वरुणेश्वर, २५ शनैश्चरेश्वर, २६ सोमेश्वर, २७ बृहस्पतीश्वर, २८ रवीश्वर, २९ संगमेश्वर,

३० हरीश्वर, ३१ हरकेशेश्वर, ३२ शैलपतीश्वर, ३३ कुण्डकेश्वर, ३४ यज्ञेश्वर, ३५ सुरेश्वर, ३६ शक्रेश्वर, ३७ मोक्षेश्वर, ३८ रमेश्वर, ३९ तिलभांडेश्वर, ४० गुप्तेश्वर, ४१ मध्यमेश्वर, ४२ भौमेश्वर, ४३ बुधेश्वर, ४४ शुक्रेश्वर, ४५ तारकेश्वर, ४६ धनेश्वर, ४७ ऋषीश्वर, ४८ ध्रुवेश्वर ४९ महादेवेश्वर, ५० त्रिसंधेश्वर, ५१ कपर्दीश्वर, ५२ नीलेश्वर, ५३ सरेश्वर, ५४ ललितेश्वर, ५५ त्रिपुरेश्वर, ५६ हरेश्वर, ५७ बाणेश्वर' ५८ श्रीश्वर, और ५९ रामेश्वर।

(९ वां खंड-५ वां अध्याय) भक्त जन ओंकार और पंचाक्षरी इन दोनोंमें भिन्नता नहीं समझते, क्योंकि दोनोंमें ५ अक्षर हैं, केवल स्वर और व्यंजनका भेद है। जब कि कोई मनुष्य काशीमें मरता है, तब शिवजी यही पंचाक्षरी मंत्र उस मृतकके कानमें फूंक देते हैं, जिससे वह मुक्त हो जाता है।

लिंगपुराण-(पूर्व्वार्द्ध ९१ वां अध्याय) अविमुक्त क्षेत्र अर्थात् काशीमें जाकर किसी प्रकारसे देह छोड़नेवाला पुरुष निःसंदेह शिवसायुज्यको प्राप्त होता है।

(९२ वां अध्याय) पूर्व कालमें शिवजी विवाह करनेके उपरांत पार्वतीजी तथा नंदी आदि गणोंको साथ ले हिमालयके शिखरसे चले और अविमुक्त क्षेत्रमें आकर अविमुक्तेश्वर लिंगको देख वहांही उन्होंने निवास किया। शिवजी बोले कि हे पार्वती! देखो यह हमारा आनन्दवन शोभित हो रहा है। यह वाराणसी नामक हमारा गुप्तक्षेत्र सब जीवोंको मोक्ष देने वाला है। हमने कभी इस क्षेत्रका त्याग नहीं किया और न करेंगे, इसीसे इसका नाम अविमुक्त क्षेत्र है। यहां किसी समय जीव शरीरको त्यागे, परन्तु मोक्षही पाता है। हमारा भक्त जैगीषव्य मुनि इसी क्षेत्रके माहात्म्यसे परम सिद्धिको प्राप्त हुआ। जैगीषव्यकी गुफा योगियोंके लिये उत्तम स्थान है। गुफामें बैठ हमारा ध्यान करनेसे योगकी अग्नि अत्यन्त दीप्त होती है। काशी चारोंओर ४ कोसका क्षेत्र है, इसके भीतर मृत्यु होनेसे अवश्य मुक्ति होती है। अविमुक्तेश्वर अर्थात् विश्वेश्वर लिंगके दर्शन करनेसे मनुष्य पशुपाशसे विमुक्त होता है।

प्रति महीनेकी अष्टमी, चतुर्दशी, चंद्र और सूर्य्यके ग्रहण, विषुवत् और अयन संक्रांति और कार्तिक पूर्णिमा आदि सब पर्वोंमें विशेष करके इस क्षेत्रका सब सेवन करते हैं। वाराणसीकी उत्तर-वाहिनी गङ्गामें कुरुक्षेत्र, पुष्कर, नैमिष, प्रयाग, पृथूदक, आदि अनेक तीर्थ पर्वके दिन आकर निवास करते हैं।

मत्स्यपुराण-(१८३ वां अध्याय) विद्वान् लोग काशीमें भूमिका संस्कार भी नहीं करते। यह तीर्थ पूर्वसे पश्चिम २½ योजन लंबा और उत्तरसे दक्षिण ½ योजन चौड़ा है १७८ अध्यायसे १८५ अध्याय तक काशीकी कथा है।

पद्मपुराण-(सृष्टिखंड-१४ वां अध्याय) वरुणा और अस्सी नदियोंके मध्यमें अविमुक्त नामक स्थान है। काशीपुरीके निकट गंगा उत्तर-वाहिनी और सरस्वती पश्चिम-वाहिनी हैं। पुरीके निकट २ योजन उत्तर-वाहिनी गंगा हैं। जो उजले रंगको छोड़कर अन्य किसी रंगका एक वृषभ और एक गाय वहां छोड़ देता है, वह परमपदको जाता है।

(स्वर्गखंड-५७ वां अध्याय) विराट् पुरुषके ७ धातु ७ पुरियां हैं, जिनमें अस्सी वरुणाके बीचमें काशी है; जिसमें योगदृष्टिवाले ज्ञानीलोग रहते हैं।

(पातालखंड-९१ वां अध्याय) चंद्रग्रहणमें वाराणसीका स्नान मोक्षदायक होता है

गरुड़पुराण-(प्रेतकल्प-२७ वां अध्याय) अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवंतिका और द्वारावती यह ७ पुरी मोक्ष देनेवाली हैं।

कूर्मपुराण-(ब्राह्मी संहिता-३० वां अध्याय) शिवजीने कहा कि हमारी पुरी वाराणसी सब तीर्थोंमें उत्तम है हम कालरूप धरकर यहां रह सब जगत्का संहार करते हैं। चारों वर्णके मनुष्य, वर्णसंकर, स्त्री, म्लेच्छ, कीट, मृग, पक्षी और अन्य सकल जंतु, जिनकी मृत्यु काशीमें होती है, वे वृषभ पर चढ़ कर शिवपुरीमें जाते हैं । काशीमें मृत्यु होने पर किसी पापीको नरकमें जाना नहीं होता ।

(३१ वां अध्याय) कृत्तिवासेश्वर, मध्यमेश्वर, विश्वेश्वर, ओंकारेश्वर, और कपर्दीश्वर, वाराणसीमें गुह्यलिंग हैं।

मार्कण्डेयपुराण—(७ वां अध्याय) त्रेता युगमें हरिश्चन्द्रनामक राजा हुआ। विश्वामित्रने राजासे उसके शरीर, स्त्री और लड़केके अतिरिक्त सम्पूर्ण राज्य, सेवक, भण्डार, आदि दान मांग लिया और उसके उपरांत उससे कहा कि जब राज्य और पृथ्वी हमारी हो चुकी तब तुम यहांसे निकल जाओ। जब राजा वहांसे चला तब विश्वामित्रने कहा कि दक्षिणा मुझे दे दो। राजा बोला कि एक महीनेमें मैं आपकी दक्षिणा दूंगा (८ वां अध्याय) राजा हरिश्चन्द्र इसलिये काशी गया कि काशी मनुष्यलोकमें नहीं है। राजा वहां अपनी रानी और पुत्रको एक बूढ़े ब्राह्मणके हाथ बेंच कर उससे बहुत धन ले विश्वामित्रको देने लगा, तब विश्वामित्र क्रोध कर बोले कि यह थोड़ा धन है। राजाने और धन देनेको कहा। उस समय धर्म चांडालका रूप धारण कर वहां पहुंचा। तब विश्वामित्र बोले कि हे राजा! तुम इस चांडालकी सेवामें जाओ, मैंने अर्बुद द्रव्य इससे लेकर तुमको इसके अधीन किया। चांडालने बहुत ताड़ना करते हुए, राजाको अपने गृह ले जाकर आज्ञा दी कि तुम श्मशानमें रात दिन रह कर जो मृतक आवें उसको देखते रहो। राजा काशीपुरीके दक्षिण दिशामें जहां श्मशान था, वहां गया और हाथमें लकुट लिए इधर उधर घूमने और कहने लगा कि इस मृतकका इतना दाम हुआ और इतना बाकी है। राजा इस दाममें अपना, चांडालका और राजाका हिस्सा लगाता था। अनन्तर राजा हरिश्चन्द्रकी स्त्री अपने पुत्रको, जो सर्पके काटनेसे मरा था, जलानेके लिये उसी श्मशानमें ले आई। राजाने अपनी स्त्रीको पहचाना, पीछे रानीने भी राजाको पहचान लिया। राजाने चिता बना कर अपने पुत्रके मृतक देहको रक्खा, तब राजा और रानीने परमेश्वरका ध्यान किया। उस समय संपूर्ण देवता इन्द्रके सहित धर्मको आगे करके राजाके निकट पहुँचे। इन्द्रने हरिश्चन्द्रके पुत्रके शव पर अमृत छिड़क दिया, जिससे वह उठ बैठा। राजा हरिश्चन्द्र अपने पुत्र रोहिताश्वको अयोध्याका राज देकर अपनी प्रजा सहित बिमानमें बैठ स्वर्गको गया।

अग्निपुराण-(११२ वां अध्याय) महादेवजीने पार्वतीसे कहा है कि वाराणसी महातीर्थ है, जो यहांके बसने वालोंको भुक्ति मुक्ति प्रदान करती है। यहां स्नान, जप, होम, श्राद्धदान, निवास और मरण इन सबोंहीसे मुक्ति प्राप्त होती है।

स्कन्दपुराण-(काशीखंड-४६ वां अध्याय) जब काशीमें योगिनियोंकी युक्ति न चली, तब मन्दराचलसे शिवजीने सूर्य्यको काशीमें भेजा। सूर्यके अनेकरूप धरकर अनेक युक्ति करनेपर भी जब शिवजीका कार्य्य सिद्ध न हुआ, तब वह द्वादशरूप धरकर काशीमें रह गए जिनके नाम ये हैं—

(१) लोलार्क, (२) उत्तरार्क, (३) सांबादित्य, (४) द्रुपदादित्य, (५) मयूखादित्य, (६) खखोलकादित्य, (७) अरुणादित्य, (८) वृद्धादित्य, (९) केशवादित्य, (१०) विमलादित्य, (११) गंगादित्य, और (१२) यमादित्य ।

(५७ वां अध्याय) प्रतिमासमें मङ्गल वारको चतुर्थी वा चतुर्दशी होनेपर ५६ विनायककी यात्रा करनी चाहिए, जिनके नाम ये हैं,-

(१) अर्कविनायक, (२) दुर्गविनायक, (३) भीमचण्डविनायक, (४) देहलीविनायक, (५) उद्दंडविनायक, (६) पाशपाणिविनायक, (७) खर्वविनायक, (८) सिद्धिविनायक, (९) लम्बोदरविनायक, (१०) कूटदन्तविनायक, (११) शालकण्टकविनायक, (१२ कूष्मांडविनायक, (१३) मुण्डविनायक, (१४) विकटद्विजाविनायक, (१५) राजपुत्रविनायक, (१६) प्रणवविनायक, (१७) वक्रतुंडविनायक, (१८) एकदन्तविनायक, (१९) त्रिमुखविनायक, (२०) पञ्चास्यविनायक, (२१) हेरम्बविनायक, (२२) विघ्नराजविनायक, (२३) वरदविनायक, (२४) मोदकप्रियविनायक, (२५) अभयदविनायक, (२६) सिंहतुंडविनायक, (२७) कुंडिताक्षविनायक, (२८) क्षिप्रप्रसादविनायक, (२९) चिंतामणिविनायक, (३०) दन्तहस्तविनायक, (३१) पिचण्डिलविनायक, (३२) उद्दण्डमुण्डविनायक, (३३) स्थूलदन्तविनायक (३४) कलिप्रियविनायक, (३५) चतुर्दंतविनायक, (३६) द्विमुखविनायक, (३७) ज्येष्ठविनायक, (३८) राजविनायक, (३९) कालविनायक, (४०) नागेशविनायक, (४१) मणिकर्णविनायक, (४२) आशाविनायक, (४३) सृष्टिविनायक, (४४) यक्षविनायक, (४५) गजकर्णविनायक, (४६) चित्रघंटविनायक, (४७) मित्रविनायक, (४८) मंगलविनायक, (४९) मोदविनायक, (५०) प्रमोदविनायक, (५१) सुमुखविनायक, (५२) दुर्मुखविनायक, (५३) गणनाथविनायक (५४) ज्ञानविनायक, (५५) द्वारविनायक, (५६) अविमुक्तविनायक ।

(७२ वां अध्याय) प्रतिमासकी अष्टमी, चतुर्दशी, रवि और मंगलको अष्ट महाभैरवोंकी यात्रा करनेसे पाप निवृत्त होता है, जिनके नाम ये हैं,-

(१) रूरूभैरव, (२) चण्डभैरव, (३) असितांगभैरव, (४) कपालीभैरव, (५) क्रोधभैरव, (६) उन्मत्तभैरव, (७) संहारभैरव, और (८) भीषणभैरव ।

अष्टमी, चतुर्दशी और मंगलवारको काशीमें दुर्गति-नाशिनी दुर्गाकी पूजा करनी चाहिए और चैत्र शुक्ल १ से ९ पर्यंत नवदुर्गाकी यात्रा और दुर्गाकुण्डमें स्नान करनेसे ९ जन्मका पाप छूट जाता है। नव दुर्गाओंके ये नाम हैं,-

(१) शैलपुत्री दुर्गा, (२) ब्रह्मचारिणी दुर्गा, (३) चित्रघंटा दुर्गा, (४) कूष्मांडाख्या दुर्गा, (५) स्कन्दमाता दुर्गा, (६) कात्यायनी दुर्गा, (७) कालरात्रि दुर्गा, (८) महागौरी दुर्गा, और (९) सिद्धिदा दुर्गा ।

(१३ वां अध्याय) (काशीके ४२ शिवलिंग ३ भागोमें) प्रतिमासकी चतुर्दशीको ओंकारेश्वरादि चतुर्दश महालिंगोंकी यात्रा करनेसे शिवलोक प्राप्त होता है। उनके नाम ये हैं,-

(१) ओंकारेश्वर, (२) त्रिलोचनेश्वर, (३) महादेव, (४) कृत्तिवासेश्वर, (५) रत्नेश्वर, (६) चन्द्रेश्वर, (७) केदारेश्वर, (८) धर्मेश्वर, (९) वीरेश्वर, (१०) कामेश्वर, (११) विश्वकर्मेश्वर, (१२) मणिकर्णिकेश्वर, (१३) अविमुक्तेश्वर (१४) विश्वेश्वर ।

प्रतिमास की १४ को अमृतेश्वरादि चतुर्दश महालिङ्गोंकी यात्रा करनेसे मोक्षकी प्राप्ति होती है। उनके नाम ये हैं,–

(१) अमृतेश्वर, (२) तारकेश्वर, (३) ज्ञानेश्वर, (४) करुणेश्वर, (५) मोक्षद्वारेश्वर, (६) स्वर्गद्वारेश्वर,(७) ब्रह्मेश्वर, (८) लांगलीश्वर, (९) वृद्धकालेश्वर, (१०) चण्डीश्वर, (११) वृषेश्वर, (१२) नन्दिकेश्वर, (१३) महेश्वर, (१४) ज्योतिरूपेश्वर।

शैलेश्वरादि चतुर्दश महालिङ्गो की यात्रा करने से सायुज्य माक्ष की प्राप्ति होती है। उनके नाम ये हैं,–

(१) शैलेश्वर, (२) संगमेश्वर, (३) शिवलीनेश्वर, (४) मध्यमेश्वर, (५) हिरण्यगर्भेश्वर, (६) ईशानेश्वर, (७) गोप्रेक्षेश्वर, (८) वृषभध्वज, (९) उपशांत-शिव, (१०) ज्येष्ठेश्वर, (११) निवासेश्वर, (१२) शुक्रेश्वर, (१३) व्याघ्रेश्वर और (१४) जम्बुकेश्वर।

(१०० वां अध्याय): प्रतिमासके शुक्लपक्षकी तृतीयाको नव गौरियोंकी यात्रा करने से सौभाग्य मिलता है। उनके नाम ये हैं,–

(१) मुखनिर्मालिका गौरी, (२) ज्येष्ठा गौरी, (३) सौभाग्य गौरी, (४) शृगांरगौरी, (५) विशालाक्षी गौरी, (६) ललिता गौरी, (७) भवानी गौरी, (८) मङ्गला गौरी और (९) महालक्ष्मी गौरी।

एकादश महारुद्रोंको यात्रा करनेसे क्षेत्रोच्चाटनका भय निवृत्त होता है। उनके नाम ये हैं,—

(१) आग्नीध्रेश्वर, (२) उर्वशीश्वर, (३) नकुलेश्वर, (४) आषाढीश्वर, (५) भारभूतेश्वर, (६) लांगलीश्वर, (७) त्रिपुरांतक, (८) मनःप्रकामेश्वर, (९) प्रीतिके-श्वर, (१०) मदालसेश्वर और (११) तिलपर्णेश्वर,।

(१०० वां अध्याय) नित्य यात्रा। प्रथम सचैल चक्र–पुष्करणीमें स्नान करके यात्रा करे। विष्णु (सत्यनारायण) दण्डपाणि, महेश्वर, ढुंढिराज, ज्ञानवापी,नन्दिकेश्वर,तारकेश्वर, महाकालेश्वर, पुनः दण्डपाणि, विश्वेश्वर, अन्नपूर्णा।

(१०० वां अध्याय) अष्ट महालिंगोंकी यात्रा करनेसे सहस्र अपराधका दोष निवृत्त होता है। उनके नाम ये हैं,–

(१) दक्षेश्वर, (२) पार्वतीश्वर,(३) पशुपतीश्वर (४) गंगेश्वर, (५) नर्मदे-श्वर, (६) गभस्तीश्वर, (७) सतीश्वर, और (८) तारकेश्वर।

प्रतिदिन अन्तर्गृही यात्रा करनी चाहिये यथा,–

प्रातःस्नान करके पंचविनायक और विश्वेश्वरको नमस्कार करके निर्वाण मण्डपमें स्थित हो, वहांसे नियमयुक्त होकर मणिकर्णिका जाय। स्नान करके मौन हो मणिकर्णिके-श्वरका पूजन करके नीचे लिखेहुए प्रकारसे यात्रा करे,–

कमला–श्वतर, वासुकीश्वर, पर्वतेश्वर, गंगाकेशव, ललिता देवी, जरासंधेश्वर,सोमनाथ, बाराहेश्वर, ब्रह्मेश्वर, अगस्तीश्वर, कश्यपेश्वर, हरिकेशव, वैद्यनाथ, ध्रुवेश्वर, गोकर्णेश्वर, हाटकेश्वर, अस्तिक्षेप तड़ाग, कीकसेश्वर, भारभूतेश्वर, चित्रगुप्तेश्वर, चित्रघंटा दुर्गा, पशुप-

तीश्वर, पितामहेश्वर, कलशेश्वर, चन्द्रेश्वर, वीरेश्वर, विद्येश्वर, अग्नीश्वर, नागेश्वर, हरिश्चन्द्रेश्वर, चिन्तामणि विनायक, सेना–विनायक, वसिष्ठ, वामदेव, त्रिसंधेश्वर, विशालाक्षी गौरी, धर्मेश्वर, विश्वबाहुका, आशाविनायक, वृद्धादित्य, चतुर्वक्त्रेश्वर. ब्राह्मीश्वर, मनःप्रकामेश्वर, ईशानेश्वर, चण्डी, चण्डीश्वर, भवानीशङ्कर, ढुंढिराज, राजराजेश्वर, लांगलीश्वर, नकुलीश्वर, परान्नेश्वर, परद्रव्येश्वर, प्रतिग्रहेश्वर, निष्कलंकेश्वर, मार्कण्डेयेश्वर, अप्सरेश्वर, गंगेश्वर, ज्ञानवापी, नन्दिकेश्वर, तारकेश्वर, महाकालेश्वर, दंडपाणि महेश्वर, मोक्षेश्वर, वीरभद्रेश्वर, अविमुक्तेश्वर, पंचविनायक, (मोदविनायक, प्रमोदविनायक, सुमुखविनायक, दुर्मुखविनायक और गणनाथविनायक,) विश्वेश्वर। वहाँ मौनको त्यागकर मुक्तिमण्डपमें यात्राका विसर्जन करे।

(ऊपर लिखेहुए लिंगोंमेंसे परान्नेश्वर, परद्रव्येश्वर, प्रतिग्रहेश्वर, निष्कलंकेश्वर, मार्कण्डेश्वर, अप्सरेश्वर, गंगेश्वर, नन्दिकेश्वर, तारकेश्वर, महाकालेश्वर, महेश्वर, मोक्षेश्वर, वीरभद्रेश्वर और अविमुक्तेश्वर। (यह गुप्त हैं, परन्तु किसी भक्तने दण्डपाणिके सामने छोटे मन्दिरोंमें परान्नेश्वर, परद्रव्येश्वर, प्रतिग्रहेश्वर, निष्कलंकेश्वर और मार्कण्डेश्वर को स्थापन किया है।)

शिवलिङ्गकी प्राचीन कथा।

लिंगपुराण–(पूर्वार्द्ध–१७ वां अध्याय) जब १००० चौयुगीके अन्तमें वृष्टि न होनेके कारण स्थावर, जंगम सब शुष्क हो गए और पशु, पक्षी, मनुष्य, वृक्ष, आदि सब सूर्य्यके किरणोंसे दग्ध हो गए, पीछे समुद्रने सबको अपने जलमें डुबादिया और अन्धकार सबओर फैलगया; तब रजोगुणसे ब्रह्मा, तमोगुणसे रुद्र, सत्वगुणसे विष्णु और सर्वगुणोंसे महेश्वर प्रकट हुए। ब्रह्माने विष्णुसे अपनेको बड़ा और विष्णुने ब्रह्मासे अपनेको बड़ा कहा। इसलिये बहुत काल तक दोनोंमें घोर युद्ध होता रहा। तब उनको ज्ञान देनेके अर्थ एक लिंग प्रगट हुआ, जिनसे दोनोंको युद्धसे निवृत्त किया। उसी दिनसे जगत्‌में शिवलिंगकी पूजाका प्रचार हुआ। लिंगकी वेदी, पार्वती और लिंग साक्षात् शिवका रूप है। सब जगत्‌का उसीमें लय होता है, इसलिये उसका नाम लिंग है।

(७४ वां अध्याय) शिवलिंग ६ प्रकारके होते हैं। शिला, रत्न, धातु, काष्ठ, मृत्तिका और रंगके, जिनके ४४ भेद हैं। वेदी (अर्घा) युक्त शिवलिंगका पूजन करनेसे शिवपार्वती दोनोंकी पूजा हो जाती है। लिंगके मूलमें ब्रह्मा, मध्यमें विष्णु, और अग्र भागमें प्रणवरूप सदाशिव स्थित हैं।

(देवीभागवत, पांचवां स्कंध ३३ वें अध्याय, और शिवपुराण नवम खंड १५ वें अध्यायमें लिंगोत्पत्तिकी कथा प्रायः लिंगपुराणकी कथाके समान है। शिवपुराणके १७ वें अध्यायमें लिखा है कि जिस तिथिमें लिंग प्रकट हुआ, उसी तिथिका नाम शिवरात्रि है, और जिस स्थान पर लिंगस्वरूप होकर शिव प्रकट हुए, उस स्थानका नाम शिवालय हुआ)।

शिवपुराण–(२ रा खंड–५ वां अध्याय) सतीके मरने पर एक दिन शिवजी नग्न शरीर हो दारुक वनमें गए। वहां मुनियोंकी स्त्रियां महा कामिनी होकर शिवसे लिपट गईं। यह देखकर सब मुनीश्वरोंने शिवको शाप दिया, जिससे शिवका लिंग पृथ्वी पर गिर पड़ा और पृथ्वीके भीतर पातालमें चला गया। तब शिवजीने अपने रूपको प्रलयकालके रूपके समान

महा भयानक बनाया, जिससे बड़े बड़े उपद्रव होने लगे। उस समय ब्रह्मा, विष्णु, आदि सब देवताओंने आकर शिवकी स्तुति की। शिवजीने कहा कि जो तुम लोग हमारे लिंगकी पूजा करो, तो फिर हम लिंग धारण करें। जब यह बात देवताओंने स्वीकार की, तब महादेवजीने अपने लिंगको धारण कर लिया। (वामनपुराण, छठवें अध्यायमें भी यह कथा है, शिवपुराण आठवें खंडके १६ वें अध्यायमें ब्रह्माजीने कहा है कि लिंगकी पूजा सनातनसे है। कल्पभेदके अनुसार यह कथा है)

(नवां खंड--१५ वां अध्याय) लिंग और वीर अर्थात् मूर्ति दोनोंमें शिवजी सबकी पूजाके योग्य हैं।

लिंगपुराण--(पूर्वार्द्ध--७६ वां अध्याय) वृषके ऊपर आरूढ़ और चन्द्रकलासे विभूषित शिवमूर्तिको स्थापन करनेवाला पुरुष १०००० अश्वमेधके फलको पाकर शिवलोकको जाता है।

महाभारत--(अनुशासन पर्व--१६१ वां अध्याय) शिवके विग्रह अथवा लिङ्गकी पूजा करनेसे महती समृद्धि होती है।

गणेशजीकी प्राचीन कथा।

शातातप-स्मृति-(२ रा अध्याय) हाथीका वध करनेवाला मनुष्य सब कामोंमें असिद्धार्थ होता है, इसलिये उसे चाहिये कि वह मन्दिर बनवा कर गणेशजीकी प्रतिमा पधरावे और मन्त्रोंका ज्ञाता उस मन्दिरमें गणेशजीका लक्ष मन्त्र जपे, कुल्थीके शाक और फलोंसे गणेशशांति (होम) करे।

मत्स्यपुराण-(१५३ वां अध्याय) एक समय पार्वतीजीने गंधयुक्त तेलका मर्दन और चूनका उबटना लगाके अपने मैलको उतारा और मैलयुक्त उबटनेका हाथीके मुखवाला एक पुरुष बनाया। फिर खेलती हुई पार्वतीजीने उस पुत्रको गंगाजीमें डाल दिया। वहां उसका शरीर बहुत बड़ा हो गया, तब पार्वतीने उसको पुत्र कहकर पुकारा। उसके उपरांत देवताओंने उसका पूजन किया और ब्रह्माजीने उसका नाम विनायक रख कर उसको सब गणोंका अधिपति बनाया।

पद्मपुराण-(स्वर्गखंड-१३ वां अध्याय) (इसमें भी मत्स्यपुराण वाली कथा है अधिक यह है कि) जब पार्वतीने गणेशकी मूर्तिको गंगामें डाल दिया, तब उनसे कहा कि तुम इस जलमें अब डूब जाओ। परन्तु गङ्गाने कहा कि यह हमारा पुत्र है। तब फिर देवताओंने आकर गंगासे उत्पन्न होनेके कारण गांगेय कहकर उनकी पूजा की, हाथीके समान मुख होनेके कारण उनका नाम गजानन हुआ।

ब्रह्मवैवर्तपुराण—(गणेशखंड-१ ले अध्यायसे ४६ वें अध्याय तक) पार्वतीने पुत्रके लिये बडा व्रत किया। कृष्णके वरदानसे कृष्णहीके अंशसे गणेशका जन्म हुआ। शिवका वीर्य बिस्तर पर गिर गया, जिससे बालरूप गणेश प्रकट होगए। शनैश्चरके आने पर उनकी दृष्टिसे गणेशका शिर उड़ गया। विष्णुने हाथीका शिर लाकर गणेशके धडमें जोड दिया। जब गणेशने परशुरामजी को शिवके समीप जानेसे रोका, तब परशुरामजीने गणेशका एक दांत अपने परशुसे काट डाला।

शिवपुराण-(४ था खंड-१७ वां अध्याय) गिरिजाने एक वर्ष तक प्रतिमास गणेशका व्रत किया। तब बिस्तर पर शिवके वीर्य गिरने से गणेशजी बालरूपसे प्रकट हो गए।

(१९ वां अध्याय) पुत्रोत्सवमें सूर्य्यके पुत्र शनैश्चर आए और भीतर जाकर गिरिजाकी स्तुति करने लगे। गिरिजा बोली कि क्या कारण है कि तुम आधा शिर झुकाकर देखते हो तुम क्यों नहीं अच्छे प्रकारसे लड़केको देखते क्या तुमको यह हमारा आनन्द भला नहीं लगता। शनैश्चरने कहा कि मुझको ऐसा शाप हुआ है, कि जिसको तुम आंखोंसे भलीभांति देखोगे, वह जल जायगा। यह सुन पार्वती अपनी सखियों समेत बहुत हँसी, और बोली कि हे शनैश्चर! तुम हमारे पुत्रको देखो। तब शनैश्चरने बहुत धीरे दहिने नेत्रके कोनेसे बालककी ओर देखा, जिससे तुरन्त गिरिजानन्दनका शिर उड़ गया।

(२० वां अध्याय) तब विष्णुने हाथीका शिर लाकर गणेशके धड़में जोड़ दिया।

(२२ वां अध्याय) एक कल्पमें गिरिजाने अपने शरीरके मैलसे एक मूर्ति बनाई और गणपति नाम लेकर उसको जिला दिया।

(२५ वां अध्याय) गणपतिने शिवको भीतर जानेसे रोका उस समय भयङ्कर युद्ध हुआ संग्राममें विष्णुने त्रिशूलसे गणपतिका शिर काटडाला और उसके पीछे हाथीका शिर लाकर गणपतिके धडमें जोडा गया।

(२७ वां अध्याय) ब्रह्मा आदि तीनों देवताओंने गणेशजीसे कहा कि तुम्हारी पूजा हम तीनों देवताओंके समान होगी। पहले तुम्हारी पूजा हुए विना पूजाका फल व्यर्थ होगा। तुम भाद्र कृष्ण चतुर्थीको उपजे हो, इससे तुम्हारा व्रत चौथको होगा।

(२८ वां अध्याय) विश्वरूपकी सिद्धि और बुद्धि नामक कन्याओंसे गणेशका विवाह हुआ। कितने समयके पश्चात् क्षेम और लाभ दो पुत्र जन्मे।

वाराहपुराण–(२३ वां अध्याय) गणेशकी उत्पत्ति और अभिषेक चतुर्थीके दिन हुआ, इससे चतुर्थी तिथि गणेशजीको अत्यन्त प्यारी है। जो चतुर्थी व्रत करके गणेशजीकी पूजा करता है, वह सब दुःखोंसे छूट जाता है।

गणेशपुराण–(उपासना खंड–१३ वां अध्याय) ब्रह्मा, विष्णु और शिवने गणेशका तप किया, तब गणेशने ब्रह्माको सृष्टि, विष्णुको पालन और शिवको नाश करनेकी आज्ञा दी।

काशीका इतिहास।

बनारस भारतवर्षके सबसे पुराने शहरोंमेंसे एक है। बुद्धदेव, जिनका जन्म सन् ई० से ६२३ वर्ष पहले और मृत्यु ५४३ वर्ष पहले हुई थी, गयासे काशीमें आए और वर्तमान शहरसे ३ मील उत्तर सारनाथमें बहुत दिनोंतक रहकर अपने मतका उपदेश करते रहे। कई एक शतकों तक बनारस बौद्धोंका प्रधान स्थान था। स्वामी शङ्कराचार्यने जो सन ई० के नवें शतकमें थे, और भारतवर्ष भरमें उपदेश देते फिरे बौद्ध मतवालोंसे विवाद करके अपने उपदेश द्वारा बनारसमें शिवपूजाकी बड़ी उन्नति की।

सन् १०१८ ई० में ग़ज़नीके महमूदने बनारसमें आकर यहांके राजा बनारको जीतके मारडाला और शहरको बरबाद कर दिया। सन् ११९४ई०में महम्मद गोरीने बनारसको, जो फिर पूरा आवाद हो गया था, लूटकर शहरको उजाड़ कर डाला। इसके पश्चात् ४०० वर्षतक काशीमें कोई विघ्न उपस्थित नहीं हुआ। बादशाह अकबरके समय इसमें बहुत देवमंदिर बने। शाहजहांका पुत्र दारा, जो कि बनारसका सूबेदार था और जिसने उपनिषद्का अनुवाद किया था, जिस

जगह काशीमें रहता था, उस महल्लेको दारानगर कहते हैं । दाराके दुष्ट भाई औरङ्गजेबने जो सन् १६५८ ई० से १७०७ तक दिल्लीका बादशाह था, महम्मदगोरीके समान बनारसको उजाड़ किया । उसने अगणित मन्दिरोंको तोडवाडाला और कई एक मुख्य मुख्य मन्दिरोंके स्थानोंपर मन्दिरोंके असबाबोंसे मसजिदें बनवाई। औरंगजेबके मरनेपर मुसलमान बादशाह हिंदू एजेण्टों द्वारा बनारसका प्रबंध करते थे ।

मरहठोंकी बढ़तीके समयके बने हुए बहुत मन्दिर और घाट बनारसमें हैं ।

१८ वें शतकके मध्य भागमें दिल्लीके बादशाहकी ओरसे राजा बलवंतसिंह बनारसके हाकिम हुए । सन् १७७५ ई० में अवधके नवाब सुजाउद्दौलाके मरनेपर उसके पुत्र आसिफुद्दौलासे ईष्ट इण्डियन कम्पनीको बनारसका इलाका मिला । कम्पनीने राजा बलवंतसिंहके पुत्र (जो विवाहिता स्त्रीसे न थे) राजा चेतसिंहको २२ लाख रुपये सालाना कर नियत करके बनारसके इलाकेकी वहालीका अहदनामा लिख दिया ।

सन् १७७९ ई० में हिंदुस्तानके गवर्नर जनरल वारन हेष्टिंग्जने राजा चेतसिंहसे रुष्ट होकर फ्रांसकी लड़ाईके खर्चके लिये २२ लाखके अतिरिक्त ५ लाख रुपये सालाना जबरदस्ती मुकर्रर किया । फिर सन् १७८१ में १००० सवार भी तलब किया । राजाने सवार देनेसे इनकार किया, तब गवर्नर जनरल साहेबने राजासे ५ लाख पौण्ड तलब किया, और जलके पथसे स्वयं बनारसमें आकर माधोदासके बागमें डेरा डाला । जब राजा चेतसिंह उसके बुलानेपर डरकर नहीं आए, तब हेष्टिंग्जने सन् १७८१ ई० की तारीख १६ अगस्तको तिलङ्गोंकी २ कम्पनी ३ अङ्गरेजी लेफ्टिनेंटके साथ शिवालाघाटके पासवाले किलेपर, जहां राजा रहते थे, पहरा भेज दिया । उस समय अङ्गरेजी सिपाहियोंसे राजाके मोलाजिलोंकी बातकी बातमें तकरार बढ़ गई । बलवा प्रारम्भ हो गया, तिलङ्गोंके पास कार्तूस न थे २०५ अङ्गरेजी सिपाही अपने अफसरोंके साथ मारे गए । राजा चेतसिंह खिड़कीकी राहसे उतर कर नावपर सवार हो, गङ्गापार रामनगरके किलेमें चले गए और कुछ दिनों तक अपने किलेमें ठहर वहांसे ग्वालियरको भाग गए । वारन हेष्टिंग्ज बलवेके समय तो चुनारके किलेमें चला गया था, परन्तु पीछे बनारसमें आकर राजा बलवंतसिंहकी लड़कीके पुत्र राजा महीपनारायण सिंहको चेतसिंहके स्थानपर बनारसका राजा बनवाया । रामनगरके वर्तमान महाराज उन्हींके वंशधर हैं ।

सन् १७९७ ई० में अवधके नवाब आसिफुद्दौलाके मरनेपर अङ्गरेजी सरकारने वजीरअलीको अवधका नवाब बनाया । परन्तु सन् १७९८ में जब जान पड़ा कि वजीरअली आसिफुद्दौलाका असली पुत्र नहीं है, तब सरकारने सुजाउद्दौलाके छोटे पुत्र सआदत अलीखांको लखनऊकी गद्दीपर बैठाकर वजीर अलीको पेंशन नियत करके बनारसमें रक्खा । जब जान पड़ा कि वजीरअली काबुलके जमाशाहसे पत्रव्यवहार करता है और फसाद उठाया चाहता है, तब सरकारने उसको कलकत्ते जानेकी आज्ञा दी । उसने इस बातसे जल कर तारीख २४ जनवरी सन् १७९९ ई० को चेरी साहब एजेंटकी कोठी पर आक्रमण करके उसको काट डाला और दूसरे दो अङ्गरेजोंको भी मार डाला । जब अङ्गरेजी घोड़सवार पल्टन आई; तब वजीरअली बनारससे भाग गया, जो कुछ दिनोंके पीछे पकड़ कर कलकत्ते भेजा गया ।

सन १८५७ ई० की तारीख १० मईको मेरठमें बलवा आरंभ हुआ और दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, बरेली और इलाहाबादमें फैल गया। पांच या ६ दिनमें बलवेका समाचार बनारस पहुँचा। उस समय बनारसमें ३ देशी रेजीमेंट और एक यूरोपियन आर्टिलरीकी कम्पनी थी। यूरोपियन फौजमें २०० आदमीसे कमहीं थे, जिनको अपनेसे दसगुने अधिक सिपाहियोंकी खबरगीरी करनी पड़ी। तारीख ४ जूनको आजमगढ़की देशी रेजिमेंट (पल्टन) के बागी होनेका समाचार आया (आज़मगढ़ बनारससे ६० मील उत्तर है) और ऐसा भी गौगा सुन पड़ा कि आज़मगढ़के बागी बनारसकी देशी पल्टनमें मिलनेके लिये कूच कर रहे हैं। उसी दिन बनारसमें परेट पर देशी पल्टनको बुलाकर हथियार रख देनेकी आज्ञा हुई। उस समय पल्टन बागी हो गई। दो एक अंगरेजी अफ़सर मारे गये। बलवाइयोंने कई बार बलवा किया, पर कोई आदमी मारा नहीं गया। जब सितंबरमें बागियोंसे दिल्ली छीन ली गई और लखनऊसे बागियोंको भगाया गया, तब बनारसमें भी अमन चैन होगया।

जौनपुर।

बनारसके राजघाट स्टेशनसे ३९ मील (मुग़लसराय जंगशनसे ४६ मील) पश्चिमोत्तर, पश्चिमोत्तर देशके बनारस विभागमें ज़िलेका सदर स्थान गोमती नदीके बाएं या उत्तर किनारे पर सई नदीके संगमसे लगभग १५ मील ऊपर एक छोटा शहर जौनपुर है। यह २५ अंश ४१ कला ३१ विकला उत्तर अक्षांश और ८२ अंश ४३ कला ३८ विकला पूर्व देशान्तरमें स्थित है। जौनपूरके स्टेशन पर पहुंचनेसे ३ मील पहिले गोमती नदी पर लोहेका रेलवे पुल मिलता है।

इस सालकी मनुष्य-गणनाके समय जौनपुरमें ४२८१९ मनुष्य थे, (२१४९४ पुरुष और २१३२५ स्त्रियां) जिनमें २५९७८ हिन्दू, १६७७१ मुसलमान और ७० कृस्तान। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ९४ वां और पश्चिमोत्तर देशमें १७ वां शहर है।

यहां सवारीके लिये इक्के बहुत मिलते हैं और भैंसे बहुत लादे जाते हैं। यहांका तेल और अतर अच्छा होता है। रेलवे स्टेशनके पास खुली हुई सरकारी धर्मशाला है, जिसमें मेहराबदार खंभे लगे हैं।

गोमतीका पुल—एक सीधी सड़क रेलवे स्टेशनसे शहर और गोमतीके पुल होकर दक्षिण ओर गई है। स्टेशनसे ½ मील शहर और १ मील गोमतीके ऊपर बादशाह अकबरका बनवाया हुआ पत्थरका प्रसिद्ध पुल है, जिसका काम सन १५६४ ई० में आरंभ होकर सन १५६८ में समाप्त हुआ था। पहले दोनों ओर बहुत दूकानें थीं, जो सन १७७४ ई० में नदी की बाढ़से नष्ट हो गई। कहा जाता है कि ३ लाख पाउंड पुलके बनानेमें खर्च पड़ा था।

पुलके नीचे पानीमें १० पाए हैं। पुल पानीसे २७ फीट ऊपर है। पुलके ऊपरकी सड़क ३६० फीट लंबी और ३० फीट चौड़ी है। जिसके दोनों बगलों पर दशों पायोंके ऊपर बाहरसे पहलदार झंझरीदार २० कोठरियां हैं, जिनमें सड़ककी ओर चार चार खंभे लगे हैं। इन कोठरियोंमें अनेक प्रकारकी वस्तुओंकी दूकाने हैं। पानीसे बाहर पुलसे दक्षिण इसी सड़कके किनारों पर ऊपर लिखी हुई कोठरियोंके समान पांच पांच कोठरियां और उनमें दूकानें हैं। पुलके उत्तरके छोरके पास कपड़े, बरतन और मनिहारीकी दूकानें और दक्षिणके छोरसे ५०० गज आगे तक सड़कके दोनों ओर दूकानें हैं। गोमतीके दोनों किनारों पर पांच सात

देव-मन्दिर बने हैं। पुलके दक्षिण अखीरके बाजारके पास एक पत्थरका बड़ा सिंह है, जो किलेमें मिला था। इसके नीचे एक युवा हाथी है।

किला—सन् १३६० ई० के लगभग बना हुआ जौनपुरके सबसे पहिलेकी इमारत फिरोजका किला है। इसके दरवाजेका फाटक ४७ फीट ऊंचा है। भीतरीके फाटकसे २०० फीट दूरपर १३० फीट लंबी और २२ फीट चौड़ी एक मसजिद है, जिसका मीनार (लाठ) १५० फीट ऊंचा है, उसके आगे एक हौज है। किलेके नदीकी ओरका चेहरा लाठके ३०० फीट बाद है।

अटल मसजिद–पुलसे २०० गज उत्तर पोष्ट आफिस और टाउनहालसे थोड़ी दूरपर अटल मसजिदका उत्तर दरवाजा है। मसजिदका अगला भाग ७५ फीट ऊंचा है। चौकके दक्षिण–पश्चिमके कोनेके पास एक बड़ा कमरा है।

जुमा मसजिद–एक सकरी गलीके छोरके पास २० फीट ऊंचे चबूतरेपर जुमा मसजिद है, जिसका काम सन् १४३८ ई० में आरंभ होकर सन् १४७८ में समाप्त हुआ था। दक्षिण फाटकसे घुसनेपर एक मेहरावके पास ८ वीं सदीका संस्कृत लेख मिलता है। मध्य मेहरावके ऊपर तोगरा अक्षरोंमें और तीसरा लेख मेहरावके बाहरी हाशिएके चारों ओर अरबी अक्षरोंमें है। उत्तर और दक्षिणके दरवाजोंके गुंबजदार फाटक फिर बनाए गए हैं। खास मसजिद २३५ फीट लंबी और ५९ फीट चौडी ५ दरकी है। पूर्व ८० फीट ऊंची एक इमारत है। इनके अतिरिक्त जौनपुरमें दूसरी ६ पुरानी मसजिदें हैं।

जौनपुर जिला–जिलेके पश्चिमोत्तर और उत्तर अवधके प्रतापगढ़ और सुल्तानपुर जिले, पूर्वोत्तर आज़मगढ़, पूर्व ग़ाज़ीपुर, और दक्षिण–पश्चिम बनारस, मिर्ज़ापुर और इलाहाबाद ज़िले हैं। यह ज़िला गोमती नदीसे दो भागोंमें बट गया है, जो ज़िलेमें ९० मील बहती है। दूसरी वरुणा नदी ज़िलेमें बहती है।

इस वर्षकी मनुष्य–गणनाके समय जौनपुर ज़िलेमें १२६७१४३ मनुष्य थे, जिनमें ६३४९८० पुरुष और ६३२१६३ स्त्रियां। सन् १८८१ ई० में ज़िलेका क्षेत्रफल १५५४ वर्ग मील और मनुष्य–संख्या १२०९६६३ थी जिनमें १०९५९८६ हिन्दू, ११३५५३ मुसलमान और शेष १२४ दूसरे मतवाले मनुष्य थे। हिन्दू मतपर चलने वालोंमें १८४०१९ अहीर, १७२५४३ चमार, १४९४४१ ब्राह्मण, ११५१३३ राजपूत, ४७६६६ कुर्मी, २६२८७ बनिया, १५०२० कायस्थ और शेष दूसरी जातियां थीं। मुसलमानोंमें ९९८४९ सुन्नी और १३७०४ शीया थे।

जौनपुर ज़िलेके ४ कसबोंमें सन् १८८१ में ५००० से अधिक मनुष्य थे। जौनपुरमें ४२८४५, मछली शहरमें ९२००, बादशाहपुरमें ६४२३ और शाहगञ्जमें ६३१७।

जौनपुर ज़िलेके मरियाहूमें आश्विन मासमें, और करचूलीमें चैत्र महीनेमें मेला लगता है, जिसमें २० हजारसे २५ हजार तक यात्री और सौदागर आते हैं।

इतिहास।

पूर्व समयमें जौनपुर भरोंके आधीन था, जो प्राचीन निवासीकी एक जाति हैं। सन् १३९७ ई० से १४७८ तक सरकी खांदानके स्वाधीन मुसलमान बादशाहोंकी जौनपुर राजधानी था। इसके पीछेसे अकबरके जीतनेके समय तक यह पूरा स्वाधीन नहीं था।

आज़मगढ़ ।

जौनपुर कसबेसे ३० मीलसे अधिक पूर्वोत्तर बनारस विभागमें ज़िलेका सदर स्थान टोंस नदीके पास आज़मगढ़ एक कसबा है, जहां अबतक रेल नहीं है ।

यह २६ अंश ३ कला उत्तर अक्षांश और ८३ अंश १३ कला २० विकला पूर्व देशान्तरमें स्थित है ।

इस वर्षकी मनुष्य--गणनाके समय इसमें १९४४२ मनुष्य थे, जिनमें १२५५९ हिन्दू, ६८३९ मुसलमान, ४३ क्रस्तान और १ पारसी ।

यहां सरकारी आफ़िसें, जेल, पोष्ट आफिस और अस्पताल हैं ।

आज़मगढ़ जिला—जिले के उत्तर फ़ैजाबाद और गोरखपुर, पूर्व बलिया, दक्षिण ग़ाज़ी-पुर, और पश्चिम जौनपुर और सुलतांपुर जिले हैं । जिले की प्रधान नदी सरयू है ।

इस वर्ष की मनुष्य-गणनाके समय आजमगढ़ जिले में १७३३५०९ मनुष्य थे; जिनमें ८६८६८६ पुरुष और ८३४८२३ स्त्रियां । सन १८८१ ई० में जिले का क्षेत्रफल २१४७ वर्गमील और मनुष्य-संख्या १६०४६५४ थी । हिन्दूमत पर चलने वालों में २५९८१६ चमार, २५३२२९ अहीर, १२४८६७ राजपूत वा ठाकुर, १०८७६९ ब्राह्मण, ७७९४२ भर, ६५२०४ कोइरी, ५६५६६ नोनियां, ५२९४७ भूमिहार, ४६१४७ कहार, ३५५४२ कुर्मी, ३०९२६ मलाह, २९३७७ कुंभार, २७१७४ लोहार, २६९२४ तेली, २०६२७ पासी, १८५९२ कलवार, १५८१७ कायस्थ, १४२४४ धोबी, १३०२५ नाई, १०३७१ तांबोली, ९९६० बढई, ८३५३ गड़ेरिया, ७७९० सोनार, ५६७४ बनियां, और १३४९ डोम ।

जिलेके ८ कसबोंमें इस भांति ५००० से अधिक मनुष्य थे । आजमगढ़में १८५२८ (सन १८९१ में १९४४२) मऊ में १४९४५ (सन १८९१ में १५५४७) मबारकपुर में १३१५७ (सन १८९१ में १४३७२) महमदाबाद में ९१५४, दुआरी में ७५०२, कोपा-गंज म ६३०१, पलिद्पुरमें ५३४३ और सरायमीरा में ५२३८ ।

इतिहास ।

१४ वीं सदीके अंतमें जौनपुर स्वाधीन हुआ । उस शहरके सरकी बादशाह ने आज़म-गढ़ पर अधिकार करलिया । उस खान्दान की घटती होनेपर ज़िला दिल्ली में फिर मिलाया गया । सिकन्दर लोदी ने सिकन्दरपुरके किलेको बनाया, जिसके नामसे कसबेका नाम सिकन्दरपुर पडा । सन १६६५ के लगभग पडोस के बलवान जिमीदार आजमखांने आजमगढ़को बसाया ।

सन १८५७ की ३ री जून को देशी पैदलका १७ वां रेजीमेंट आजमगढ़में बाग़ी हुआ । बागी लोग अपने अफसरोंमेंसे कई एकको मारनेके उपरांत सरकारी खजानेको फैजाबादमें लेगए। युरोपियन लोग गाजीपुरको भागगए, परंतु १६ वी जूनको सरकारी सैनिक अफसर आजम-गढ़को फिरे और सेना गाजीपूरसे भेजी गई । आजमगढ़ कसबे पर फिर अधिकार कर लिया गया । १८ वी जुलाई को सैनिकों ने बागियों पर आक्रमण किया, परन्तु उनको पीछे हटना पडा । दानापुरमें बलवा होनेके पश्चात् २८वी जुलाईको संपूर्ण युरोपियन लोग गाजीपुरको चले गए । पलवारोंने तारीख ९ वीं अगस्तसे २५ वीं तक आजमगढ़ कसबे पर अपना अधिकार

रक्खा, परन्तु २६ वीं को गोरखों ने उनको निकाल बाहर किया। ३ री सितंबरको अंगरेजी सैनिक फिर आए। २० वीं को वेनीमाधव और पलवार लोग परास्त हुए और सरकारी अधिकार फिर होगया। नवम्बरमें बागी सब अतरवलियासे बाहर खेदेरे गए। सन १८५८ की जनवरीमें नैपालके जंगबहादुरके आधीन गोरखोंने बागियोंको खदेरते हुए गोरखपुरसे फैजाबादकी ओर कूच किया। फरवरीके मध्यमें लखनऊसे आते हुये बाबू कुँअरसिंहने जिलेमें प्रवेश किया। सरकारी सैनिकोंने अतरवलियामें उन पर आक्रमण किया। परन्तु वे परास्त होकर आजमगढ़ में लौट आए। कुँवरसिंहने उनपर घेरा डाला। अप्रैल को मध्यमें जब सरकारी सेना पहुंची, तब कुँवरसिंह घेरा उठाकर जिलेसे भागगए, जो शिवपुरके पास गंगासे पार होते समय गोलेसे मारे गए, और अपने घरको जाकर मरगए।

चौथा अध्याय।

चुनार, मिर्जापुर, और विंध्याचल।

चुनार।

मुग़लसराय जंगशन से २० मील पश्चिम, पश्चिमोत्तर प्रदेशके मिर्जापुर जिलेमें तहसीली का सदर स्थान गंगाके दहिने चुनार एक छोटा कसबा है, जिसको चरणारगढ़भी कहते हैं। इसका शुद्ध नाम चरणाद्रि है। यह २५ अंश ७ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ८२ अंश ५५ कला १ विकला पूर्व देशांतरमें स्थित है। चुनार क़सबा उन्नति करता हुआ देशी विद्या-विषयक समुदायका बैठक है। इसमें टेलीग्राफ आफ़िस और अस्पताल है। चुनारमें मट्टीके बरतन बहुत सुन्दर और हलके बनते हैं।

इस सालकी मनुष्य-गणनाके समय चुनारमें ११४२३ मनुष्य थे, जिनमें ८४५३ हिन्दू, २७५७ मुसलमान, २१२ कृस्तान, और १ सिक्ख।

चुनारके पहाड़से मकान बनाने योग्य बहुत पत्थर निकलता है।

चरणारगढ़का क़िला उत्तरसे दक्षिण तक लगभग ८०० गज लंबा और १३३ गजसे ३०० गज तक चौड़ा और आस पासके देशसे ८० फीटसे १७५ फीट तक ऊंचा है। इसकी दीवारोंका घेरा लगभग २४०० गज है। किला अब कैदखानेके काममें लाया जाता है। इसमें किलेकी रक्षक छोटी सेना रहती है और मेगजीन तथा अनेक तोपें हैं। बारकसे थोड़ी दूरपर शेख सुलेमानका मकबरा है, जिसके चारों ओर दूसरे बहुत मकबरे हैं। हिन्दू और मुसलमान दोनों यहां मानता करते हैं और चावल चढ़ाते हैं। भर्तृहरिके योग करनेका स्थान अब भी मेगजीनके भीतर किलेमें बना हुआ है।

गंगेश्वरनाथ महादेव, दुर्गाखोह, आचार्यकूप, भैरवजी, चक्रदेवीके स्थान इत्यादि वस्तुयें देखने योग्य हैं।

इतिहास।

उज्जैनके राजा विक्रमादित्यके भ्राता भर्तृहरि राज्यसे विरक्त होनेके उपरांत गंगाको निकटवर्ती जानकर यहां रहे थे। कहा जाता है कि बड़ा पृथ्वीराज इस किलेमें रहा था। सन

१०२९ ई० में राजा सहदेवने इस किलेको अपनी राजधानी बनाकर पहाड़की कन्दरामें 'नैनी योगिनी' की मूर्ति स्थापित की, इसलिये लोग चुनारको नैनीगढ़ भी कहते हैं। वर्तमान इमारतें पिछले मुसलमान जीतने वालोंकी बनाई हुई हैं। बहुतेरे मालिकोंके आधीन रहनेके पश्चात् किला पठान और मुग़ल खांदानोंके आधीन हुआ। लगभग १७५० ई० में बनारसके राजा बलवंतसिंहने इसको लेलिया। सन् १७६४ में यह अङ्गरेजोंके हाथमें आया।

मिर्जापुर।

चुनारसे २० मील (मुगलसरायसे ४० मील पश्चिम) पश्चिमोत्तर प्रदेशके बनारस विभागमें गङ्गाके दहिने किनारेपर जिलेका सदर स्थान मिर्जापुर एक शहर है। यह २५ अंश ९ कला ४३ विकला उत्तर अक्षांश और ८२ अंश ३८ कला १० विकला पूर्व देशांतर में है।

इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय मिर्जापुरमें ८४१३० मनुष्य थे (४१९२१ पुरुष और ४२२०९ स्त्रियां) जिनमें ७११७६ हिंदू, १२५६२ मुसलमान, २२८ जैन, १४७, कृस्तान और १७ सिक्ख। मनुष्य–संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ३४ वां और पश्चिमोत्तर प्रदेशमें ७ वां शहर है।

शहर गङ्गा और रेलवे लाइनके बीचमें है, गङ्गाके तीर पत्थरके सुन्दर घाट बने हैं। जिनका दृश्य मनोहर है। शहरमें बहुतेरे देवमन्दिर, कई एक सरोवर और बहुतेरे बड़े मकान पत्थरसे बने हैं। स्टेशनसे थोड़ी दूर जेलखानेसे दक्षिण एक उत्तम धर्मशाला है, जिसको संवत् १९४३ में भारामलने बनवाया। आंगनके चारों बगलोंपर मुंडेरेदार १८ कोठरियां हैं, जिनके आगे ओसारे लगे हैं, इसीमें मैं टिका था। धर्मशालासे थोड़ीही दूरपर गङ्गाबाईकी पक्की सराय है। शहरके पूर्वोत्तर सिविल कचहरियां हैं।

मिर्जापुर पहले रुई और गल्लेकी तिजारतके लिये प्रसिद्ध था, अब भी अनेक दूसरी तिजारतें होती हैं। पीतलके बर्तन बहुत बनते हैं। दूसरी जगहोंसे लाह लाकर चपरा तयार किया जाता है। पहाड़ीसे मकान बनाने योग्य पत्थर निकलता है, सवारीके लिये बग्गी, तांगा और एक्के मिलते हैं।

शहरसे ४ मील पश्चिम विन्ध्याचल तक पक्की सड़कके किनारे पर मीलके पत्थर लगे हैं। १ — मीलके पास सड़कके किनारे मिर्जापुरके मृत महन्त जयरामगिरका बड़ा शिवमन्दिर है; जिसके भीतर एकही हौजमें ५ शिवलिंग स्थापित हैं। मन्दिरके चारों ओर मकान और समीपकी बाटिकामें एक बङ्गला है। २ १/२ मीलके पास इसी महन्तका दूसरा एक बड़ा शिवमन्दिर है जिसके आगे दोनों बगलों पर एक एक छोटे मन्दिर और पीछे की बाटिकामें एक बङ्गला है। मन्दिरसे पश्चिम इसी महन्तका बनवाया हुआ उज्वला नदी पर सुन्दर पुल है, जिससे होकर विन्ध्याचलकी सड़क गई है। पुलके दोनों छोरोंके नीचे सीढ़ियोंके साथ कई कोठरियां हैं और ऊपर अठपहले तीन मञ्जिले पत्थरके सुन्दर दो दो बुर्ज हैं। छोरोंके बाहर सड़कके बगलों पर ओसारेके साथ कोठरियां हैं। पुलसे दक्षिण इसी नदी पर रेलवे लाइनका पुल है।

महन्तके मन्दिरसे १/४ मील उत्तर वामनजीका छोटा और पुराना मन्दिर है। दाहने हाथमें कमण्डलु और वाम हाथमें छत्र लिये वामनजी खड़े हैं, आगे गरुड़की मूर्ति है।

भादों सुदी १२ वामनजीका जन्म दिन है, उस दिन यहां वामनजीके दर्शनका मेला होता है। वामनजीके मन्दिरसे कुछ दूर पश्चिम (दुग्धेश्वर) महादेवका छोटा मन्दिर है।

मिर्ज़ापुरसे उज्वलाके पुलतक सड़कके दोनों किनारों पर इमारतोंके साथ उद्यान और स्थान स्थान पर मन्दिर और सरोवर बने हैं बांई ओर रेलवे लाइन देख पड़ती है, और दाहिनी ओर कुछ दूर पर गङ्गा है। पुलसे आगे विन्ध्याचल तक सड़कके पास कोई प्रसिद्ध वस्तु नहीं है।

मिर्ज़ापुर जिला—इसके उत्तर जौनपुर और बनारस जिले, पूर्व बिहारके शाहाबाद और छोटे नागपुरके लोहार डांगा जिले, दक्षिण सुरगुजाका करद राज्य और पश्चिम इलाहाबाद जिला और रीवां राज्य है।

इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेका क्षेत्रफल ५२२३ वर्ग-मील और इसमें ११५६२०५ मनुष्य थे, अर्थात् ५७४५६७ पुरुष और ५८१६३८ स्त्रियां।

मिर्ज़ापुर जिलेके ३ कसबोंमें इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय १०००० से अधिक मनुष्य थे, जिनमेंसे मिर्ज़ापुरमें ८४१३०, अहरौरामें ११६३१ और चुनारमें ११४२३। जिलेमें ब्राह्मण, चमार, अहीर और मल्लाह अधिक हैं।

विन्ध्याचल।

विन्ध्याचलका रेलवे स्टेशन मिर्ज़ापुरके स्टेशनसे ५ मील पश्चिम (मुग़लसरायसे ४५ मील) है। स्टेशनसे १ मील दूर मिर्ज़ापुर जिलेमें गङ्गाके दहिने किनारेपर विन्ध्याचल एक बड़ी बस्ती है। इसमें पण्डे लोगोंहीके अधिक मकानहैं। बाजारमें यात्रियोंके कामके सब सामान तैयार रहते हैं। पत्थरके सिल, चक्की, कुण्डी, मकान बनानेके सरंजाम और भगवतीका प्रसाद छोटी चुनरी, गले और बांहमें बांधनेके लिये सूतके रक्षा-बन्धन और लाइचीदाने बिकते हैं। पहाड़ियोंसे पत्थर काटकर मकानके कामोंके लिये दूसरे स्थानोंमें भेजे जाते हैं। विन्ध्याचलमें बनारसके महाराज और अमेठीके राजाके उद्यान हैं। स्टेशनके पूर्व एक पक्की धर्मशाला और पश्चिम नरहनके बाबूकी बनवाई हुई एक दूसरी धर्मशाला है, जिसमें बहुत यात्री टिकते हैं।

भगवती, जिसका नाम पुराणोंमें कौशिकी और कात्यायनी लिखा है, यहांकी प्रधान देवी हैं। इनका मन्दिर विन्ध्याचल बस्तीके भीतर पश्चिममुखका है। मन्दिरका दक्षिण हिस्सा काठके जङ्गलेसे घेरा हुआ है जिसमें सिंह पर खड़ी २ $\frac{1}{2}$ हाथ ऊंची भगवतीकी श्यामल मूर्ति है; निज मन्दिरमें ७ घण्टे हैं। मन्दिरसे लगे हुए चारों ओरके दालानोंमें पण्डित लोग पाठ कहते हैं। पश्चिमके दालानमें ४ बडे घण्टे लटके हैं, इनमें जो सबसे बड़ा है, उसको नैपालके महाराजने दिया था। (भविष्यपुराणके उत्तरार्द्धके ११७ वें अध्यायमें लिखा है कि जो पुरुष देवालयमें घण्टा, वितान, छत्र, चामर आदि चढ़ाता है, वह चक्रवर्ती होता है)।

पश्चिम दालानके आगे बलिदानका प्रांगण है, जिसके पश्चिम बगल पर एक मन्दिरमें १२ भुजी देवी और दूसरेमें खोपड़ेश्वर महादेव, दक्षिण एक मन्दिरमें महाकाली और उत्तर धर्म-ध्वजा हैं। भगवतीके मन्दिरसे दक्षिण खुलाहुआ मण्डप है।

मन्दिरसे थोड़ा उत्तर विन्ध्येश्वर महादेवका मन्दिर है, इसके समीप हनूमानकी मूर्तिके पास पण्डे लोग यात्रियोंसे यात्रा सफल कराते हैं।

भगवतीके पुजारी १६ हिस्सोंमें बंटे हैं, हरएक हिस्सेकी फेरी १६ दिनपर आती है और जो कुछ पूजा चढ़ाई जाती है, उसमेंसे यहांके नियमके अनुसार पूजा चढ़ाने वालेका पण्डाभी लेता है। वस्तीमें ५०० से अधिक ब्राह्मण हैं।

विन्ध्याचलसे उत्तर गङ्गाकी रेतीमें जमीनके बराबरके छोटे चट्टानपर बिना अर्घेके विन्ध्येश्वर नामक शिवलिंग हैं। चट्टानपर एक लेख है, जिसमेंसे "काशीनरेश संवत् १७३३ वैशाख कृष्ण ५" पढ़ा जाता है। इसके पास दूसरे चट्टानपर घिसा हुआ दूसरा लेख है। गङ्गाके बढ़नेपर यह स्थान पानीमें रहता है।

भगवती, काली और अष्टभुजी इन तीनोंके दर्शनको 'त्रिकोण-यात्रा' कहते हैं। भगवती पार्वतीके शरीरसे निकली थी, इनका नाम 'कौशिकी, कात्यायनी, चण्डिका' आदि पुराणोंमें लिखा है। काली चण्ड और मुण्डसे कौशिकीके युद्धके समय कौशिकीके ललाटसे निकली, इनका नाम चामुण्डा आदि हैं, और अष्टभुजी गोकुलमें नन्दके घर जन्मी, जिसको कंसने पटका और वह आकाशको चली गई।

विन्ध्याचलसे २ मील दक्षिण-पश्चिम पहाड़ीकी जड़के पास 'काली खोह' नामक स्थानमें कालीका एक मन्दिर है। कालीके छोटे शरीरमें बहुत बड़ा मुख है। यहां कोई कोई कालीके लिये मुर्गी छोड़ता है, जो मन्दिरके पास रहते हैं। वहां पहाड़ीपर चढ़नेके निमित्त १०८ सीढ़ियां हैं। समतल और सूखी पहाड़ीपर कालीखोहसे पश्चिमोत्तर २ मील चलनेके उपरांत हरित जङ्गलसे भरा हुआ पहाड़ीके बगलपर अष्टभुजी देवीका मन्दिर मिलता है। वहांसे विन्ध्याचल तक २ मील पूर्वकी ओर कच्ची सड़क है। आधे रास्तेमें रामेश्वर शिवका मन्दिर है, जिससे उत्तर गङ्गाके तीर रामगयामें पिण्डदान होता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा।

महाभारत-(विराट पर्व्व-६ ठां अध्याय) राजा युधिष्ठिरने दुर्गादेवीकी स्तुति करते समय कहा कि हे देवी विन्ध्य नामक पर्वत तुम्हारा सनातन स्थान है।

मत्स्यपुराण-(१५४ से १५६ वें अध्यायतक) शिवजीने पार्वतीजीको काली स्वरूपवाली कहा, इससे वह क्रोधयुक्त हो हिमालय पर्वतपर अपने पिताके उद्यानमें जाकर कठोर तप करने लगीं। ब्रह्माजीने प्रकट होकर पार्वतीसे वरमांगनेको कहा। गिरिजा बोली कि, मेरा शरीर कांचन वर्ण होजाय। तब ब्रह्माने कहा ऐसाही होगा। इसके अनन्तर पार्वती तत्कालही कांचन-वर्ण तुल्य होगई और नीली त्वचा रात्रिका स्वरूप होकर अलग होगई। तब ब्रह्माजी उस रात्रिसे बोले कि पार्वतीके क्रोधसे जो सिंह निकला है, वही तेरा वाहन होगा और तेरी ध्वजामें भी यही रहेगा, तू विन्ध्याचलमें चली जा, वहां जाकर तू देवताओंके कार्य्योंको करेगी तब कौशिकी देवी विम्ध्याचल पर्वतमें चली गई और पार्वती अपने मनोरथ सिद्ध करके शिवके समीप आई।

वामनपुराण—(५४ से ५६ वें अध्याय तक) पार्वतीका नाम पहले काली था। और रूपभी काला था. एक समय महादेवजीने पार्वतीसे 'हे काली' ऐसा उग्र वचन कहा। तब कालीने हिमालय पर्वतपर जाकर ब्रह्माके मंत्रको जपती हुई १०० वर्ष पर्य्यंत तप किया। ब्रह्माजी प्रकट हुए। काली बोली कि सुवर्णके समान मेरा वर्ण होजाय। यह वरदान दे ब्रह्मा चले गए पार्वती कृष्ण कोशको त्यागकर कमलके केसरके समान कान्तिवाली हुई।

उसी कोशसे कात्यायनी नामसे विख्यात देवी उत्पन्न हुई, जिसका नाम कौशिकी भी है। गिरिजाने कौशिकीको इन्द्रको दे दिया। इन्द्र कौशिकीको ले विध्न्य पर्वतमें गया और बोला कि हे कौशिकी। तू यहां स्थिर रह। तू विन्ध्यवासिनी नामसे विख्यात होगी। इन्द्रने सिंह-रूपी वाहन उसको अर्पण किया। पार्वती ब्रह्मासे वरदान पाकर मन्दराचलमें शिवके समीप गई। कात्यायनी देवीने बड़ा युद्ध करके शुम्भ और निशुम्भ दैत्योंको मारा और देवताओंसे कहा कि, मैं फिर नन्दके सकाशसे यशोदामें उत्पन्न होकर कंसका निरादर करूंगी।

पद्मपुराण–(स्वर्गखण्ड–१४ वां अध्याय) महादेवजी पार्वतीसे बोले कि, तुम हमारे गौर शरीरमें श्वेत चन्दनके वृक्षमें काकी सर्प्पिणीके समान शोभती हो। यह सुन पार्वतीजी क्रोध युक्त हो मन्दराचल पर्वतसे अपने पिताके उद्यानमें जाकर तप करने लगीं। ब्रह्माजी प्रकट हुए। पार्वती बोली कि अब हम कांचनके रंगकी अत्यन्त गौरी होकर अपने पतिके समीप जाऊं और हमारा नाम गौरी हो। ब्रह्माजी बोले कि, ऐसाही होगा और तुम्हारी यह नील-त्वचा निकळ जायगी। ब्रह्माके ऐसा कहतेही पार्वतीजीने अपनी नीली दीप्तिको छोड़ दिया। वह त्वचा अति भीमरूपिणी ३ नेत्रकी मूर्ति होगई। ब्रह्मा बोले कि यह सिंह, जो पार्वतीके क्रोधसे उत्पन्न हुआ है, तुम्हारा वाहन और पताका होगा। अब तुम विन्ध्याचल पर जाकर देवताओंका कार्य्य करो। यह सुनकर वह कौशिकी देवीके नामसे प्रसिद्ध होकर विन्ध्याचल को चली गई। पार्वतीजी महादेवजीके पास आई।

मार्कण्डेयपुराण–(८५ से ९१ वें अध्याय तक) पूर्व कालमें शुंभ और निशुंभ असुरोंने अपने बलसे इन्द्रका राज्य और सम्पूर्ण देवतोंका यज्ञ-भाग हरण कर लिया। तब देवता लोग हिमवान पर्वत पर जाकर विष्णुकी माया भगवतीकी स्तुति करने लगे। श्रीपार्वतीजी उनकी स्तुतिसे प्रसन्न होकर गंगा स्नानके बहानेसे देवताओंके सामने आई। उनके पीछे उनके शरीर-कोशसे शिवा प्रकट हुई। शरीरकोशसे प्रकट होनेसे वह कौशिकी कहलाती है। वह उसी हिमाचल पर्वत पर बसने लगी।

दैवयोगसे चण्ड और मुण्डने अम्बिका देवीके मनोहर रूपको देखा और अपने स्वामी शुंभ और निशुंभके पास जाकर उसके रूपका वर्णन किया। शुंभने सुग्रीव नामक दूतको देवी के लानेको भेजा। उसने जाकर देवीसे सम्पूर्ण हाल कह सुनाया। देवी बोली कि, मेरी यह प्रतिज्ञा है कि जो कोई समरमें मुझको जीत लेगा, वह मेरा पति होगा। वह दूत देवीकी बातें सुन ईर्षा-संयुक्त हो शुंभके पास गया और देवीकी सब बातें उसने विस्तारपूर्वक कह सुनाई।

शुंभने धूम्रलोचन दैत्यको ६०००० सेनाके साथ देवीको पकड़ लानेके निमित्त भेजा। वह हिमाचल पर्वत पर जाकर क्रोध कर देवीपर दौड़ा। तब अम्बिका देवीने हुंकार शब्द करके उसको भस्म कर दिया। असुरकी सेनाको देवीके वाहन सिंहने क्षणमात्रमें संहार कर डाला।

इसके अनन्तर शुंभकी आज्ञा पाकर चण्ड और मुण्ड इत्यादि दैत्य चतुरंगिणी सेना लेकर हिमाचल पर्वत पर गए। जब राक्षस अपना धनुष चढ़ाकर देवीको पकड़ने पर नियुक्त हुआ, तब देवीने शत्रुओं पर ऐसा क्रोध किया कि उस समय भगवतीका शरीर कज्जलके सदृश काला होगया। उस क्रोधसे उनके ललाटसे हाथोंमें खड्ग और पाश धारण किए हुई भयानक मुखवाली काली प्रकट हुई, जो खट्वांग धारण किए हुई, मुण्डमाला पहिने हुई और बाघकी खाल ओढे हुई थी। उसका शरीर बिना मांसका अत्यन्त भयानक था। उसके मुखमें बड़ी

भारी जीभ और कुएंके समान गहरे ३ नेत्र थे। कालीने बड़े वेगसे असुर-दलमें पहुँच सम्पूर्ण दलको भक्षण कर डाला, हाथी, घोड़े, रथ, प्यादे सबको मुखमें डालकर दांतोंसे चबा डाला और बड़े बड़े असुरोंको हथियारोंसे मार डाला। तब चण्ड और मुण्ड कालीकी ओर दौड़े, जिनको उसने तुरन्त मार डाला। असुर-सेना जहां तहां भाग गई चण्ड और मुण्डको मारनेसे कालीका नाम चामुण्डा पड़ा।

शुंभ हजारों फौज अपने साथ लेकर हिमालय पर चण्डिकाके पास पहुँचा। असुरोंकी भयानक सेना देखकर चण्डिका देवीने अपने धनुषको चढ़ाया और देवीका वाहन सिंह गर्जा दैत्योंकी सेनाने काली और सिंहको चारों ओरसे घेर लिया। उस समय देवताओंके कल्याणके लिये बड़े बड़े बीरोंको साथ लेकर ब्रह्माकी शक्ति ब्रह्माणी, महेश्वरकी शक्ति माहेश्वरी, कुमारकी शक्ति कौमारी, विष्णुकी शक्ति वैष्णवी, वाराहकी शक्ति वाराही, नरसिंहकी शक्ति नारसिंही और इन्द्रकी शक्ति इन्द्राणी असुरोंसे युद्ध करनेके लिये वहां आई। जिन देवताओंका जैसा रूप,जैसी सवारी और जैसी पोशाक थीं,वैसीही उन देवताओंकी शक्तियां भी धारण करके चण्डिका देवीके पास पहुँची। शक्तियोंके साथ महादेवजी भी आए। शक्तियां दैत्योंका नाश करने लगीं। उस समय रक्तवीज असुर लड़नेको आया। रणभूमिमें जितने रक्तबिन्दु उसके शरीरसे निकलते थे, रक्तबीजके समान पराक्रमी उतनेही असुर उत्पन्न होते थे। देवीने रक्तवीजको शूलसे मारा, जो रुधिर उसके शरीरसे निकला देवीकी आज्ञानुसार कालीने उसको अपने मुखमें लेलिया, पृथ्वीके उपर गिरने न दिया। जो असुर रुधिरसे उत्पन्न हुए थे वे सब समाप्त होगए, तब भगवतीने असल रक्तवीजको अनेक अस्त्र शस्त्रोंसे मारा, जिससे वह मरकर पृथ्वीपर गिर पड़ा।

इसके अनन्तर चण्डिकाने निशुंभको शूलसे मारडाला। शुम्भने भगवतीसे कहा कि, हे दुर्गे! तुम अपनी शक्तियोंके बलसे लड़ती हो और अपनेको महाबली समझती हो, तुम अपने बलका घमण्ड मत करो। यह सुन देवीने ब्रह्माणी आदि शक्तियोंको अपने शरीरमें मिला लिया। देवी और शुम्भसे बड़ा युद्ध होने लगा। घोर युद्धके अनंतर देवीने शुम्भको त्रिशूलसे मार डाला। उसके मरनेसे सम्पूर्ण जगत् स्थिर होगया।

देवीने देवताओंसे कहा कि २८ वीं चतुर्युगीमें वैवस्वत मन्वन्तर प्रकट होनेपर जब दूसरे शुम्भ और निशुम्भ होंगे, उस समय मैं नन्दगोपके घरमें यशोदाके गर्भसे उत्पन्न होकर उनका नाश करूंगी और विन्ध्याचल पर्वत पर निवास करूंगी, फिर पृथ्वीतलमें भयंकररूप धारण करके विप्रचित्ती-संतानके दैत्योंको मारूंगी।

श्रीमद्भागवत–(दशमस्कन्ध–चौथा अध्याय) जब कंस नन्दकी पुत्रीका चरण पकड़ कर पत्थर पर पटकने लगा, तब वह उसके हाथसे छूटकर आकाशमें चली गई। वहां प्रत्यक्ष देवीका दिव्य स्वरूप देखनेमें आया। उनकी ८ भुजाओंमें धनुष, त्रिशूल, ढाल, कृपाण, गदा, पद्म, शंख और चक्र थे। वह योगमाया बहुत स्थानोंमें दुर्गा, भद्रकाली, भगवती, भवानी, महामाया इत्यादि नामोंसे संसारमें विख्यात हुई।

(देवीभागवतके तीसरे स्कन्धके २३ वें अध्यायसे ३१ वें तक शुंभ और निशुंभके युद्धमें कौशिकी, काली और शक्तियोंकी उत्पत्तिकी कथा मार्कण्डेयपुराणकी कथाके समान है)

वाराहपुराण-(२७ वां अध्याय) अन्धकासुरके युद्धके समय योगेश्वरी, माहेश्वरी, वैष्णवी, ब्रह्माणी, कौमारी, इन्द्राणी, शिवदूती और वाराही इन मातृगणोंकी उत्पत्ति अष्टमी तिथिमें हुई, इसलिये यह तिथि मातृगणोंकी बड़ी प्यारी है। इस तिथिमें इनकी अवश्य पूजा करनी चाहिये।

(२८ वां अध्याय) संपूर्ण देवता लोग वेत्रासुरसे पीड़ित हो, शिवजीके साथ ब्रह्मलोकमें गए। उस समय ब्रह्माजी गंगाके भीतर डुब्बी लगा कर बैठे गायत्री मन्त्र जप रहे थे। देवताओंकी दीन वाणी सुन ब्रह्माजी ध्यान छोड़ विचार करने लगे कि इस समय क्या उचित है। इसी समय गायत्री कन्यारूप धारण कर आठों भुजाओंमें शंख, चक्र, गदा, पाश, खड्ग, घंटा, धनुष, वाण, लिये सिंहपर बैठी हुई प्रकट हुई, और बहुत दिनोंतक युद्ध करके उसने दैत्यों सहित वेत्रासुरको मारा। ब्रह्माने कहा यह देवी हिमाचलमें जाकर वास करें, हे देवता ! तुम सब प्रतिमासकी नौमी तिथिको इसका पूजन नियमसे करो। नौमी तिथिको भगवतीने जन्म लिया, इसीसे नौमी तिथि देवीको प्यारी हुई।

भविष्यपुराण-(उत्तरार्द्ध-५४ वां अध्याय) देवगण महिषासुरके पुत्र रक्तासुरसे पराजित होकर कटच्छत्रा पुरीमें गए, जहां कुमारी रूप भगवती चामुण्डा और नव दुर्गा सहित निवास करती थीं। भगवतीने रक्तासुर सहित सब दैत्योंको मारकर देवताओंको अभय किया। नौमी तिथिको भगवतीका विजय हुआ; इसलिये वह तिथि उनको अतिप्रिय है।

(५५ वां अध्याय) आश्विन शुक्ल नौमीको गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदिसे चामुण्डाका पूजन करे, पीछे सात, पांच अथवा एक कुमारीका भोजन करावे।

(देवीभागवत, तीसरा स्कन्ध २७ वां अध्याय) रोगरहित रूपवती और अपनेही माता पितासे उत्पन्न हो, ऐसी कन्या सर्वथा पूजनीय है। अपनेसे नीच वर्ण की कन्याकी पूजा न करे।

विष्णुपुराण-(५ वां अंश-१ ला अध्याय) भगवान, भगवती माया योगनिद्रासे बोले कि ब्राह्मण तुमको भक्ष्य, भोज्य और अनेक पकवान चढ़ावेंगे और शूद्रादिक सुरा मांस आदि तुमको देंगे।

देवीभागवत-(तीसरा स्कन्ध-२६ वां अध्याय) शरद और वसंत ऋतुमें विशेष करके नवरात्रमें पूजन करना चाहिये। इन्हीमें बहुधा लोगोंको रोग होता है, इसलिये आश्विन और चैत्रमें चण्डिकाका पूजन अवश्य करना चाहिये।

(५ वां स्कंध-२४ वां अध्याय) आश्विन और चैत्रके शुक्लपक्षमें नवरात्र होता है।

शिवपुराण-(६ वां खण्ड-५ वां अध्याय) गिरिजाने विन्ध्यवासिनी होकर दुर्ग दैत्य को मार डाला, तबसे उनका नाम दुर्गा प्रकट हुआ।

पाचवां अध्याय।

इलाहाबाद।

प्रयाग, वा इलाहाबाद।

विंध्याचलसे ४६ मील पश्चिम (मुगलसराय जंगशन् स्टेशनसे ९१ मील) नयनी जंगशन स्टेशन और नयनीसे ४ मील इलाहाबादका स्टेशन है। इलाहाबादसे ५६४ मील पूर्व कलकत्ता, ३९० मील पश्चिमोत्तर दिल्ली और ८४४ मील पश्चिम-दक्षिण बम्बई हैं। इलाहाबाद २५ अंश २६ कला उत्तर अक्षांश और ८१ अंश ५५ कला १५ विकला पूर्व देशांतरमें है। प्रयागके यात्री नयनी में रेलसे उतर कर स्टेशनसे ३ मील दूर संगम पर जाते हैं और दूसरे इलाहाबादके स्टेशन पर उतरते हैं। नयनीमें एक जेल और स्टेशनके पास एक बड़ी धर्मशाला है। इलाहाबादके स्टेशनके पास एक उत्तम दो मंजिली नई धर्मशाला बनी है, जिसमें मैं टिका था। इसमें यात्रियोंके आरामके लिये अच्छा प्रबंध किया गया है।

नयनी और इलाहाबाद स्टेशनोंके बीचमें ३२३५ फीट लम्बा यमुना पर पुल है, इसमें १६ दरवाजे हैं। यह पुल पानी और भूमिके नीचे ४२ फीट और पानीके ऊपर ६० फीट है। नीचे आदमी और गाड़ी, और ऊपर रेलगाड़ी चलती है। यह पुल ४४४६३०० रुपयोंके खर्चसे तय्यार होकर सन १८६५ ई० के १५ अगस्तको खुला।

इलाहाबाद पश्चिमोत्तर देशकी राजधानी गङ्गा और यमुनाके सङ्गम पर एक प्रसिद्ध शहर है, और भारतवर्षके अति प्राचीन तीर्थ 'प्रयाग' नामसे विख्यात है।

इस सालकी जन-संख्याके समय इलाहाबादमें १७५२४६ मनुष्य थे, जिनमें ९४७८४ पुरुष और ८०४६२ स्त्रियां थीं। इनमें ११८८१९ हिन्दू, ५०१७४ मुसलमान, ५८५८ क्रस्तानं, २१७ जैन १५४, सिक्ख और २४ पारसी थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें १३ वां और पश्चिमोत्तर प्रदेशमें तीसरा शहर है।

किलेसे २ मील पश्चिम शहर, ४ मील पश्चिम थोड़ा उत्तर इलाहाबादका रेलवे स्टेशन- और एक मीलसे कम उत्तर दारागंज है शहरसे २ मील पूर्वोत्तर कटरा, कटरासे २ मील पूर्व दक्षिण कर्नलगंज है।

इलाहाबादमें पुरानी और नई कोतवाली, सिविल कचहरियां, फौजी छावनी, लेफ्टिनेंट गवर्नरकी कोठी, पब्लिक लाइब्रेरी, एलफ्रेड पार्क, अस्पताल, सेंट्रल जेल, खुसुरू बाग़, हाई-कोर्ट, मेवोकालेज, और कई गिर्जे देखने लायक हैं। अङ्गरेजी महल्लेमें चौड़ी सड़कोंके किनारों पर वृक्ष लगे हैं। फौजी छावनीमें अङ्गरेजी, हिन्दुस्तानी और हिन्दुस्तानी सवारका एक रेजीमेंट है। रेलवेके पास हम्माम, रेलवे लाइब्रेरी थियेटर, और गेंदा खेलनेका मैदान है।

इलाहाबाद समुद्रके जलसे ३१६ फीटकी ऊंचाईपर है। वहांका समय रेलवे और मद्रासके समयसे ७ मिनट अधिक, बम्बईके समयसे ३७ मिनट अधिक और कलकत्तेके समयसे २६ मिनट कम है।

खुसुरूबाग़—बादशाह जहांगीरने अपने पुत्र सुलतान खुसुरूके स्मरणके लिये सत्रहवें शतकके आरंभमें इसको बनवाया, जो रेलवे स्टेशनसे थोड़ी दूरपर है। ६० फीट ऊंचे मेहराबी फाटकसे बाग़में प्रवेश करना होता है। भीतर बड़ा बाग़ है, जिसमें ३ मक़बरे हैं। पूर्व खुसुरूका (यह सन् १६१५ ई०में मरा) उससे पश्चिम नूरजहांका (जो लाहोरमें गाड़ी गई) और उससे पश्चिम जहांगीरकी स्त्री साहिबा बेग़मका। खुसुरूके मक़बरेमें एक तरफ खुसुरू, एक तरफ उसके भाई और मध्यमें राजपूत राजकुमारी खुसुरूकी माताकी क़बर है। खुसुरूके मक़बरेमें फारसी बैतके शिला लेख हैं। फूल पेड़के चित्र उदास पड़ गए हैं। क़बर उजले मार्बुलकी है।

जल—कलके हौज इसी बाग़में बनते हैं जिनमें पानी साफ होकर नलद्वारा शहरके हर विभागमें जायगा।

हाईकोर्ट—यह पत्थरकी दो मंजिली उत्तम इमारत है। ऊपरके कमरोंमें जजोंके इजलास हैं, जिनमें ४ युरोपियन और एक हिन्दुस्तानी जज बैठते हैं। इजलासोंमें टोपी पहन कर जाना मना है।

एल्फ्रेड पार्क—यह कालेजसे दक्षिण—पश्चिम है, जो सन् १८७० ई० में बना। इसमें उत्तम सड़कें बनी हैं, सुन्दर तरहसे फूल पौधे लगे हैं, स्थान २ पर फूल और पौधोंके गमले और बेंच रखे हुए हैं, मध्यमें एक सुन्दर बंगला है, जिसमें नियत समयपर अंगरेजी बाजा बजता है। प्रतिदिन संध्याके समय युरोपियन और हिन्दुस्तानी लोग हवा खानेके निमित्त वहां जाते हैं।

मेओकालेज—एल्फ्रेड पार्कके उत्तर और कटरेके दक्षिण यह उत्तम इमारत है। सर विलियम मेओ (जो पहले पश्चिमोत्तर देशके लेफ्टिनेंट गवर्नर थे) के नामसे इस कालेजका यह नाम पड़ा। इसके पास मेओ हाल नामक उत्तम इमारत है, जिसका टावर १४७ फीट ऊंचा बना है। पश्चिमोत्तर देश और अवधके प्रति—विभागके लोग परीक्षादेनेके लिए यहां आते हैं। पश्चिमोत्तर देश और अवधके कानूनका इमृतहान इसी जगह होता है।

त्रिवेणी—गंगा, यमुना और सरस्वती इन तीन नदियोंके संगम होनेसे इस स्थानका नाम त्रिवेणी पड़ा है।

गंगा हिमालयमें गंगोत्तरी पर्वतसे निकलकर दक्षिण और पूर्वको बहती हुई हरिद्वार फर्रूखाबाद, कन्नौज, कानपुर आदि नगरोंको पवित्र करती हुई यहां आई है; और यहांसे पूर्व-दक्षिण जाकर १५०० मील बहनेके उपरांत कई धारोंसे समुद्रमें गिरती है।

यमुना हिमालयमें यमुनोत्तरी पर्वतसे निकल गंगाके दहिने बराबर समानांतर रेखामें दक्षिण और दक्षिण—पूर्व ८६० मील बहनेके उपरांत यहां गंगामें मिल गई है। दिल्ली, वृन्दावन, मथुरा, आगरा इटावा, कालपी और हमीरपुर प्रसिद्ध नगर इसके किनारे हैं। चम्बल नदी मालवामें विंध्याचलके पर्वतसे निकलकर ५७० मील बहनेपर इटावेके पास, और बेतवा ३६० मील बहनेके उपरांत हमीरपुरके पास यमुनामें मिल गई है।

सरस्वतीका जल गुप्त है।

संगमके पास गंगाका जल श्वेत और यमुनाका जल नील अलग अलग देख पड़ते हैं। संगम कभी किलेके पास रहता है और कभी किलेसे एक मील पूर्व तक चला जाता है। संगमके पास पण्डे लोग अपनी अपनी चौकीके समीप अपने पहचानके लिए भिन्न भिन्न तरहके निशान गाड़े रहते हैं। दूरहीसे सैकड़ों निशान देख पड़ते हैं।

बहुतेरे लोग त्रिवेणी पर माघ मासमें एक महीना कल्पवास करते हैं, जिनके रहनेके लिये पण्डे लोग फूसके छप्पर और टट्टियोंसे बाड़े बनवाते हैं।

प्रयागमें मुण्डनका बड़ा माहात्म्य है, इस लिये सम्पूर्ण यात्री त्रिवेणी पर मुण्डन कराते हैं। जो स्त्री मुण्डन नहीं कराती, वह अपने सिरकी एक लट कटवा देती है। मुण्डनके लिये 'नौआ बाड़ा' एक खास स्थान बनता है, जिसके भीतर मुण्डन करानेसे प्रति मनुष्यको नाईको १ आना देना पड़ता है, परंतु ४ आनेके टिकट लेनेसे आदमी दूसरी जगह मुण्डन करा सकता है। नाई लोग मुण्डन करनेके लिये लाइसंस लेते हैं। जमा किया हुआ बाल बिकता है।

प्रयागका मेला–सम्पूर्ण माघ मासमें त्रिवेणी पर यात्रियोंकी भीड़ रहती है, परंतु अमावास्या मेला और स्नानका प्रधान दिन है। मेलेमें लग भग २५०००० मनुष्य प्रति वर्ष आते हैं। १२ वर्षपर जब वृषराशिके बृहस्पति होते हैं, तब यहां 'कुंभयोग' का बड़ा मेला होता है। उस योगके समय भारतवर्षके सब प्रदेशोंके सब सम्प्रदायवाले असंख्य यात्री प्रयागमें एकत्र होते हैं, जिनमें कितने नागा संन्यासी जो नंगे रहते हैं, देख पड़ते हैं। संवत् १९३८(सन१८८२ई०) में कुंभयोगके समय माघकी अमावास्याको त्रिवेणीपर लगभग १० लाख मनुष्य थे।

देवासुर संग्रामके स्थानसे देवगुरु बृहस्पति जी अमृतकुण्ड लेकर भागे। भागीरथी, त्रिवेणी, गोदावरी और क्षिप्राके तटपर बृहस्पतिसे दानवोंको हाथा बाहीं करते समय कुंभसे अमृत उछल पड़ा था, इसीलिये कुंभके बृहस्पति होनेपर हरिद्वारमें, वृषके बृहस्पति होनेपर प्रयागमें, सिंहके बृहस्पति होनेपर नासिकमें और वृश्चिकके बृहस्पति होनेपर उज्जैनमें कुंभयोग संघटित होता है।

झूंसी–गंगाके बाएं किनारेपर झूंसी है, जो पूर्व समयमें प्रतिष्ठानपुर नामसे विख्यात चंद्रवंशी राजाओंकी राजधानी थी। पुराने गढ़में अनेक भुवेंवरे हैं। कईमें साधु रहते हैं। शेख तकीका मजार झूंसीमें प्रसिद्ध है।

देवस्थान–निम्न लिखित देवताओंके स्थान परिक्रमामें मिलते हैं—

(१) अलोपी देवी, (२) दारागंजके एक मन्दिरमें वेणीमाधव, (३) गंगाके किनारे पर एक मन्दिरमें लिंगस्वरूप वासुकीजी जहां श्रावण महीनेमें नागपंचमीका मेला होता है, (४) शहरके पास एक मन्दिरमें लिंगस्वरूप भरद्वाज मुनि और एक भुवेंवरामें याज्ञवल्क्य मुनिकी छोटी मूर्ति, (५) यमुनाके उस पार एक मन्दिरमें सोमनाथ (६) और दारागंजके निकट गंगामें दशाश्वमेध तीर्थ हैं, जहां ब्रह्मेश्वर और शूलटंकेश्वर शिवलिंग हैं।

किला–गंगा और यमुनाके बीचमें यमुनाके बाएं किनारे पर पत्थरका दृढ़ किला खड़ा है, जिसको बादशाह अकबरने सन १५७५ ई० में बनवाया। इसकी दीवार २० से २५ फीट तक ऊंची है। दक्षिण यमुना और तीन तरफ चौड़ी खाई हैं, जो किसी समय पानीसे भर दी जा सकती हैं। प्रधान फाटक गुम्बजदार सुंदर बना है। किलेके भीतर अफसरोंके मकान, मेकजीन और बारके (फौजी मकान) हैं। मैदानमें तोपोंकी कतारें और तरह तरहके गोलोंके ढेर देख पड़ते हैं। दरबार कमरेमें खम्भोंके ८ कतार हैं, जिसके चारों ओर दोहरे खम्भोंका चौड़ा दालान है। पुराने महल अब शस्त्रागार बने हैं। जो किलेके संपूर्ण स्थानोंको देखना चाहे, उसको इलाहाबादमें आरडेनेन्स कमीसरीसे हुकुम लेना चाहिये।

किलेसे बाहर थोड़ी दूर पूर्व भूमिकी गहराईमें आदमीसे बहुत बड़े महावीरजी उतान पड़े हैं। किलेके पूर्वोत्तरके कोनेसे दारागंज तक पानीके रोकावके लिये अकबर बांध बना है।

अक्षयवट-यात्री लोग पूर्व फाटकसे किलेमें प्रवेश करते हैं, उसमें दक्षिण तरफ अक्षय-वट है। वहांके पण्डे यात्रियोंको दीपकके प्रकाशसे भीतर ले जाते हैं। कई सीढ़ियोंसे उतरने पर अँधियारा रास्ता मिलता है। ६५ फीट पूर्व दक्षिण ज़मीनके भीतर बिना पत्तोंके दो शाख वाला अक्षयवट है। रास्तेमें कई एक देवमूर्तियां और अक्षयवटके पास एक शिवलिंग है। अक्षयवटकी पूजा, परिक्रमा और अङ्कमाल यात्री लोग करते हैं।

(*३) अशोकस्तम्भ-अक्षयवटसे दक्षिण एकही पत्थरका भूमिसे ऊपर२९ ½ फीट ऊंचा बहुत चिकना अशोकस्तंभ है जिस पर सन् ई० के २४० वर्ष-पहलेके राजा अशोकका आज्ञापत्र खोदा हुआ है और दूसरे शतकके समुद्र गुप्तके विजयका लेख, सत्रहवें शतकके जहांगीरकी राजगद्दीके स्मरणका लेख और कई एक दूसरे छोटे छोटे लेख हैं। अशोकस्तंभसे उत्तर एक आठपहला गहरा कूप है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा।

शंखस्मृति-(१४ वां अध्याय) प्रयागमें पितरोंके निमित्त जो कुछ दिया जाता है, उसका फल अक्षय होता है। गंगा और यमुनाके तीरका दान अनन्त फल देता है।

महाभारत-(आदि पर्व्व-५५ वां अध्याय) प्रयागमें सोम, वरुण और प्रजापतिका जन्म हुआ था।

(वनपर्व्व-८४ वां अध्याय) जो पुरुष गंगा और यमुनाके संगममें स्नान करता है, उसको १० अश्वमेधका फल होताहै, और उसके कुलका उद्धार होजाता है। प्रयागमें देवताओंके साथ विष्णु निवास करते हैं।

(८५ वां अध्याय) जिस जगह गंगा और यमुना मिली हैं वह स्थान पृथ्वीकी जंघा है। प्रयाग पृथ्वीकी योनि है। प्रयाग, प्रतिष्ठानपुर (झूंसी) कम्बलाश्वतर तीर्थ भोगवती यह ब्रह्माकी वेदी हैं। यहां ऋषिगण ब्रह्माकी उपासना करते हैं। मुनिलोग तीनलोकके तीर्थोंमें प्रयागको अधिक कहते हैं। यहां राजा वासुकी (सर्प) का भोगवती नामक स्थान है। प्रयाग हीमें गंगाके तटपर दशाश्वमेध नामक तीर्थ है।

गंगास्नानका फल कुरुक्षेत्रके फलके समान है, पर कनखलमें विशेष और प्रयागमें बहुत अधिक है।

(८७ वां अध्याय) लोक-विख्यात गंगा और यमुनाके संगमपर पूर्व समयमें ब्रह्माने यज्ञ किया था, इसीसे इसका नाम प्रयाग हुआ। यहां तपस्वियोंसे सेवित तापसवन तीर्थ है।

(उद्योगपर्व्व-११४ वां अध्याय) गालव मुनि गरुड़को साथ ले प्रतिष्ठानपुरमें राजा ययातिके समीप आए राजाने पुत्र उत्पन्न करानेकेलिये माधवी नामक अपनी कन्या मुनिको दी।

(अनुशासनपर्व्व-२५ वां अध्याय) माघके महीनेमें ३ करोड़ १० हज़ार तीर्थ प्रयागमें एकत्र होते हैं। उस मासमें सदा संशित-व्रत होकर प्रयागमें स्नान करनेसे मनुष्य निष्पाप होकर स्वर्गलोक पाता है।

गंगा यमुनाके तीर्थमें एक मास स्नान करनेसे १० अश्वमेधका फल मिलता है।

वाल्मीकि-रामायण-(अयोध्याकाण्ड ५४ वां सर्ग) रामचन्द्र, लक्ष्मण और जानकीके संग वनवासके समय प्रयागमें गंगा-यमुनाके संगमपर भरद्वाज मुनिके आश्रममें गए।

(उत्तरकाण्ड-१०० वें सर्गसे १०३ वें सर्ग तक) कर्दम प्रजापतिके पुत्र राजा इल अहेर करते समय शिवके प्रभावसे स्त्री होगया। पश्चात् उमा देवीके अनुग्रहसे वह एक मास स्त्री और एक मास पुरुषकी दशामें रहने लगा। इलको स्त्रीत्व समयमें चंद्रमाके पुत्र बुधसे पुरूरवा नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। एक वर्ष बीतने पर शिवकी प्रसन्नतासे जब इलका स्त्रीत्व भाव छूट गया, तब वह अपनी राजधानी वाह्लिकी गद्दी पर अपने पुत्र शशबिंदुको बैठा कर मध्य देशमें प्रतिष्ठानपुर नामक अति उत्तम पुर बसाय राज्य करने लगा। काल पाकर जब राजा परलोकको गया, तब उसका पुत्र पुरूरवा, जो बुधके द्वारा उत्पन्न हुआ था, प्रतिष्ठान पुरका राजा हुआ। (६९ वां सर्ग) ययातिके पुत्र पुरूरवाने प्रतिष्ठानपुरमें राज्य किया।

देवीभागवत-(पहला स्कंध-१२वां अध्याय) वैवस्वत मनुका पुत्र राजा सुद्युम्न प्रतिष्ठानपुर में रहता था। एक दिन वह घोड़े पर चढ़ सुमेरु पर्व्वतके निकट कुमारवनमें शिकार खेलने गया। वहां पहुंचतेही राजा स्त्री होगया, और उसका घोड़ा घोड़ी होगया। राजा उसी वन-के निकट फिरता रहा। स्त्री होनेपर सुद्युम्नका नाम इला हुआ। एक दिन चंद्रमाके पुत्र बुध वहां प्राप्त हुए निदान दोनोंके प्रसंगसे पुरूरवा नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसके पीछे शिवजीके वरदानसे राजा सुद्युम्न एक मास पुरुष और एक मास स्त्री होकर रहने लगा और अपनी राजधानीको आया। पुरूरवा राज्यके योग्य होने पर राजा सुद्युम्न उसको राज्य देकर वनको चला गया।

लिंगपुराण-(पूर्वार्द्ध ६६ वां अध्याय) इलके पुत्र पुरूरवाने यमुनाके उत्तरकी ओर प्रयागके निकट अपनी राजधानी प्रतिष्ठानपुरमें रहकर राज्य किया। पुरूरवाका पुत्र आयु, आयुका पुत्र नहुष और नहुषका पुत्र ययाति हुआ।

मत्स्यपुराण-(१०३ वां अध्याय) प्रयाग प्रतिष्ठानसे लेकर वासुकीके ह्रद तक जो कम्बलाश्वतर और बहुमुलक नाम नागस्थान है, यह सब मिलकर प्रजापति क्षेत्र कहता है।

(१०५ वां अध्याय) जो पुरुष प्रयागमें अक्षयवटके निकट जाकर अपने प्राणको त्यागता है, वह शिवलोकमें प्राप्त होता है। शिवके आश्रय होकर १२ सूर्य्य सम्पूर्ण जगत्को भस्म करते हैं; परन्तु अक्षयवटकी जड़को नहीं भस्म करते। जब प्रलय कालमें सूर्य्य और चन्द्रमा; नष्ट हो जाते हैं, तब विष्णु भगवान् उस वटके समीप बारम्बार पूजन करते हुए स्थित रहते हैं।

जो मनुष्य वासुकी नागसे उत्तरकी ओर भगवती पुरीमें जाकर दशाश्वमेध तीर्थपर अभिषेक करता है, वह अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होता है।

(१०६ वां अध्याय) माघमें गंगा यमुनाके संगमपर ६० हजार तीर्थ आर ६० करोड़ नदी प्राप्त होजाती हैं।

(११० वां अध्याय) प्रयागके मण्डलका विस्तार २० कोसमें है। वहां पापकर्मोके निवारणके लिये उत्तरकी ओर प्रतिष्ठानपुर तीर्थमें ब्रह्मा स्थित हैं। विष्णु भगवान् वेणीमाधव रूप होकर और शिवजी वटरूप होकर स्थित हो रहे हैं।

अग्निपुराण-(१११ वां अध्याय) प्रयागमें ब्रह्मा, विष्णु, आदि देवता, मुनिगण, नदी, सागर, सिद्ध, गंधर्व, अप्सरा, ये सब निवास करते हैं यहांकी मृत्तिका लगानेसे समस्त पाप दूर होते हैं। गंगा यमुनाके संगमपर दान, श्राद्ध और जपादिक करनेसे अक्षय होते हैं। यहांपर

६० करोड़ और १० सहस्र तीर्थ सन्निहित हैं, इसलिये यहांपर मरनेसे मुक्तिमें संदेह नहीं रहता, विशेषकर यहांकी विशेषता माघ मासकी है।

स्कंदपुराण-(काशी खंड-७ वां अध्याय)तीर्थराज प्रयागमें जाकर यमुना गंगाके संगममें स्नान करनेसे मनुष्य पापसे छूटकर ब्रह्मलोकको प्राप्त करता है।

प्रयागके गुणको जानकर शिवशर्मा नामक ब्राह्मणने माघ मासमें निवास किया।

कूर्मपुराण—(ब्राह्मीसंहिता-पूर्वार्द्ध-३५ वां अध्याय) जिस स्थानमें ब्रह्मा रहते हैं, वही प्रयाग क्षेत्र है। प्रयागका प्रमाण ६० हजार धनुष है।

(३६ वां अध्याय) गंगाके पूर्व तीरपर त्रिभुवन-विख्यात प्रतिष्ठान नगरी है, जहां ३-रात्रि वास करनेसे अश्वमेधका फल होता है।

(उत्तरार्द्ध ३४ वां अध्याय) प्रयाग नामसे विख्यात ब्रह्माका क्षेत्र ५ योजनमें फैला है।

वाराहपुराण-(१३८ वां अध्याय) प्रयागमें त्रिकण्टकेश्वर, शूलकण्टक, सोमेश्वर आदि लिंग और वेणीमाधव नाम विष्णुभगवान्‌की मूर्ति है। त्रिवेणीक्षेत्र पृथ्वीमण्डलके सब तीर्थोंसे उत्तम और प्रयाग तीर्थराज है।

बृहन्नारदीय पुराण-(६ वां अध्याय) तीर्थोंमें अति उत्तम गंगा यमुनाके योग जलको ब्रह्मादि देवता सेवते हैं, गंगाजी विष्णुके चरणसे और यमुना सूर्य्यसे उत्पन्न हुई हैं, इससे इनका योग उत्तम है।

शिवपुराण-(८ वां खण्ड-पहला अध्याय) तीर्थराज प्रयागमें ब्रह्माका स्थापित किया हुआ ब्रह्मेश्वर शिवलिंग है।

(११ वां खण्ड-१६ वां अध्याय) ब्रह्माने कहा जो मनुष्य माघमासमें प्रयाग जाकर स्नान करता है, वह हमारे लोकमें आता है।

वामनपुराण—(२२ वां अध्याय) ब्रह्माकी ५ वेदी हैं, जिनमें उसने यज्ञ किया है। इनमेंसे मध्य वेदी प्रयाग है और दूसरी ४ वेदियोंमें पूर्व वेदी गया, दक्षिण वेदी विरजा, पश्चिम वेदी पुष्कर और उत्तर वेदी स्यमन्त-पंचक (कुरुक्षेत्र) है।

(८३ वां अध्याय) प्रह्लादने प्रयागमें जाकर निर्मल तीर्थमें स्नान करनेके उपरांत लोकोंमें विख्यात यामुन तीर्थमें वटेश्वर रुद्रको देख योगशायी माधवका दर्शन किया।

पद्मपुराण-(सृष्टिखण्ड-१८ वां अध्याय) सरस्वती ऐसा कहकर कि अब हम कल्प-वृक्षके नीचे होकर पश्चिम समुद्रको जाती हूं, प्रयागमें गुप्त होकर नीचे नीचे पश्चिम दिशाकी ओर चली और पुष्कर तीर्थमें पहुँची।

अक्षयवट अनेक शाखाओंसे युक्त है। यद्यपि प्रयागका कल्पवृक्ष वा अक्षयवट पुष्प-रहित है, तथापि पुष्पवान्‌सा दिखाई देता है।

(स्वर्गखण्ड—५२ वां अध्याय) गंगा और यमुना इन दोनों नदियोंके संगमके पास तीर्थराज है। दोनों नदियोंके बीचमें सरस्वती नदी कीलके समान गड़ी है, जिससे दोनों नदियां कीलित हैं।

(५४ वां अध्याय) ३ ½ करोड़ तीर्थोंके मुख्य राजा प्रयाग हैं। सम्पूर्ण पुरियां मकर-राशिके सूर्य्यमें माघ मासमें अपनी शुद्धताके लिये तीर्थराजमें आती हैं।

(५७ वां अध्याय) प्रयागमें माधवजी लक्ष्मीसहित सदा निवास करते हैं; और वटवृक्ष शोभित है। यह क्षेत्र ५ योजन और ६ कोणोंका है।

(५८ वां अध्याय) ६ किनारोंसे युक्त वहांका वेणीतीर्थ प्रसिद्ध है । जो परिखाके वेष्टनके आकारका १ २ योजनकी लम्बाई चौड़ाईमें है ।

ब्रह्माने अंतर्वेदीमें अश्वमेध यज्ञ किया, जिसमें ब्रह्माण्डके रहनेवाले सब आए थे।

(६८ वां अध्याय) प्रयागमें शूलटंकेश्वर और सोमेश्वरको जो स्नान कराता है, उसको उत्तम फल मिलता है।

(८२ वां अध्याय) जहां ब्रह्माजीने १०० अश्वमेध यज्ञ किए हैं, उस स्थानको प्रयाग कहते हैं। वह ब्रह्माका उत्तम क्षेत्र है, जहां स्थावर जंगमके नष्ट होजानेपर जब एकार्णव हो जाता है, तब वटवृक्षके एक पत्तेपर बाल शरीर धारण किए हुए श्रीहरि शयन करते हैं।

भरद्वाज मुनि प्रयागमें वास करके माधवजीकी आज्ञासे कश्यप आदि सप्तऋषियोंमें होगए।

प्रयागका मण्डल ५ योजनके विस्तारमें है। वासुकी-कुण्डके कम्बलाश्वतर नागोंके और बहुमूलक नागके बाहर प्रयाग नहीं है।

(८४ वां अध्याय) ३० धन्वाके विस्तारमें श्वेत और नील जलका संगम है, पिण्ड-ब्रह्माण्डमें विचरनेवाली उसीको बेणी जानना चाहिए।

बेणी ३ प्रकारकी है। जो अक्षयवटमें मिली हुई है, वह मूल बेणी और दोनों धाराओंके समीपसे सोमेश्वर तक मध्य बेणी कहाती है। इन दोनोंको मिलाकर वह त्रिबेणी 'बेणी' कहाती है। यहां मरेहुए पुरुष मुक्त हो जाते हैं। जो वहां मृतक होते हैं,उनका कभी जन्म नहीं होता।

गंगा और यमुनाने सरस्वतीसे कहा कि आजसे जो पतिव्रता युवती यात्राके अर्थ यहां आकर पीठ तक लम्बी गठिलाई हुई अपनी बेणी कटवा कर यहां देजायगी, वह सौभाग्य, पुत्र पौत्र, आयु, धन और धान्यसे युक्त होकर अन्तमें अपने पतिके साथ वैकुण्ठमें वास करेगी।

(८६ वां अध्याय) तीनों लोकोंमें प्रयागका स्नान और उससे अधिक वहांका मुण्डन दुर्लभ है। क्योंकि प्रयागमें एक बार मुण्डन करानेसे जो फल होता है, सहस्र बार स्नान करनेमें वह फल नहीं होता। सब अवस्थाकी स्त्री पुरुष आदि सभीको प्रयागमें मुण्डन कराना चाहिए। प्राणियोंके बालोंकी जड़ोंमें सब पाप रहते हैं, इसलिये प्रयागमें मुण्डन करानेसे वे नष्ट हो कर फिर नहीं जन्मते। समय अथवा असमयमें सदा प्रयागमें क्षौर कर्म कराना चाहिए। सुभगा स्त्री यदि सब मुण्डन न करावे तो दो तीन वा चार अंगुलकी बेणी, अथवा दाढ़ीके नीचे जितने केश आते हैं, उतने बाल कटवा डाले।

(८७ वां अध्याय) विधिसे वा अविधिसे, स्वभावसे वा आग्रहसे, जिस तरहसे हो-सके, इस तीर्थमें प्राणत्याग विशेषता रखता है।

(९९ वां अध्याय) चांद्र, सावन और सौर मासोंके अनुसार जैसा संभव हो, एक मास माघमें स्नान करना चाहिए। अमावास्यासे वा पूर्णिमासीसे आरंभ करके स्नान करना चाहिए। ये दोनों पक्ष चांद्र मासहीके हैं। विन्ध्याचलके दक्षिणके निवासी अमावास्यासे अमावास्या तक और उसके उत्तर वाले पूर्णिमासीसे पूर्णिमासी तक चांद्र मास मानते हैं। पौषकी शुक्ल ११ से आरंभ करके माघकी शुक्ल ११ तक सावनमासके अनुसार अथवा मकरकी संक्रांतिसे कुंभकी संक्रांति तक सौरमासके अनुसार स्नान करना चाहिए।

(१०० वां अध्याय) प्रयागमें तो माघी अमावास्याही महापुण्या है। फिर अर्द्धोदय-योगसे युक्त हो तो क्या कहना है।

(इस पुराणके इस खण्डमें ५१ वें अध्यायसे १०१ अध्याय तक प्रयाग माहात्म्यकी कथा है)

इलाहाबाद ज़िला–इसके उत्तर अवधका प्रतापगढ़ ज़िला, पूर्व जौनपुर और मिर्ज़ापुर जिले, दक्षिण रीवांका राज्य और दक्षिण पश्चिम और पश्चिम बांदा और फतहपुर जिले हैं।

जिलेका क्षेत्रफल २८३३ वर्गमील है। इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय जिलेमें १५४९४३६ मनुष्य थे, जिनमें ७८१९७९ पुरुष और ७६७४५७ स्त्रियां थीं। ब्राह्मण, चमार, अहीर, कुरमी और पासी जिलेमें अधिक बसते हैं।

इस जिलेमें १०००० से अधिक मनुष्योंकी बस्ती इलाहाबाद छोड़कर कोई नहीं है। कड़ा, फुलपुर, मऊ, भारतगंज, करारी और सिरसा बड़ी बस्ती हैं। इसी जिलेमें सिंगरोर है। पूर्व समयमें यह शृंगवेरपुर भी कहा जाता था। उसी जगह श्रीरामचंद्रका मित्र गुह नामक निषाद रहता था।

जिलेमें प्रधान नदियां गंगा, यमुना, टोंस, और बेलन हैं।

गंगा ज़िलेमें पश्चिमोत्तर कोनके पास प्रवेश करनेके उपरांत ७८ मील दक्षिण-पूर्व बहती है। यमुना दक्षिण-पश्चिम कोनके पास प्रवेश करके कुछ उत्तर-पूर्व लेकरके ६३ मील पूर्व बहने के उपरांत किलेसे पूर्व गंगामें मिल गई है। टोंस नदी जिलेके दक्षिण कैमूरपहाड़ियोंसे निकली है और उत्तर-पूर्व जाकर गंगामें गिरती है। संगमसे १९ मील नीचे इसके मुहानेसे २ या ३ मील उत्तर इस पर रेलवेका पुल है। बेलन भी कैमूर पहाड़ियोंसे निकली है। यह दक्षिण-पूर्व से जिलेमें प्रवेश करके पश्चिमको बहती हुई रीवांकी सीमा पर टोंस नदीमें गिरती है।

प्रतापगढ़, देउरिया और राजापुरकी खानोंसे (जो यमुनाके किनारे पर हैं) मकान योग्य पत्थर निकलता है।

इलाहाबाद जिलेके फूलपुर तहसीलके अंतर्गत सिकंदरा बस्ती है, जिससे लगभग एक मील पश्चिमोत्तर गज़नीके महमूदका प्रसिद्ध जनरल सैयद सलार मसूदका मकबरा है, वहां ज्येष्ठ मासमें मेला होता है, जिसमें लगभग ५० हजार मुसलमान यात्री जाते हैं।

इतिहास।

प्रयाग शहर बहुत पुराना है। सन ई० के करीब ३०० वर्ष पहले सेल्युक्सका वकील मेगेस्थनीजने इसको देखा था। सन ४१४ ई० में चीनके बौद्ध यात्री फाहियानने इस जिलेका हाल लिखा है कि यह कोसलराज्यका एक हिस्सा है। उसके लगभग २०० वर्ष पीछे चीनी यात्री हुएंत्संग लिखता है कि प्रयागमें २ बौद्धमठ और बहुतेरे हिंदूमंदिर हैं।

सन ११९४ ई० में शहाबुद्दीन गोरीने प्रयागको जीता था।

सन् १५७५ ई० में मुगल बादशाह अकबरने वर्त्तमान शहरको यहां बसाकर इसका नाम इलाहाबाद रक्खा। अकबरके पुत्र जहांगीरने किलेमें रहकर इलाहाबादकी हुकूमतकी।

जहांगीरका पुत्र खुसरू उससे बागी हुआ, परन्तु परास्त किया गया और अपने भाई खुर्रम (यह पीछे शाहजहांके नामसे राजगद्दीपर बैठा) के अधीन रक्खा गया और सन १६१५ ई० में मरनेपर खुसुरू बागमें गाड़ा गया।

सन् १७३६ ई० में मरहटोंनें इलाहाबादको ले लिया। सन् १७५० ई० में फर्रुखाबादके पठानोंने मरहटोंसे इसको जीता। पीछे इलाहाबादके शासक कईबार बदले। सन

१८०१ में अंगरेजोंने लखनऊके नवाब सआदत अलीखांसे इलाहाबादको लेकर अपने राज्यमें मिला लिया।

इलाहाबाद पश्चिमोत्तर प्रदेशके लेफ्टिनेन्ट गवर्नरकी राजधानी था, सन् १८३५ ई० में आगरा राजधानी बनाया गया, परन्तु सन् १८५८ में फिर इलाहाबाद पश्चिमोत्तर देशकी राजधानी हुआ। सन १८७७में अवधकी चीफकमिश्नरी तोड़कर इसी गवर्नमेंटके अधीन कर दी गई। अब दोनोंके मुख्य हाकिमको पश्चिमोत्तर देशका लेफ्टिनेंट गवर्नर और अवधका चीफ कमिश्नर कहते हैं और वे कुछ दिनोंतक इलाहाबादमें और कुछ दिनोंतक लखनऊमें रहते हैं।

सन् १८५७ ई० के मई मासमें यहां केवल सिपाहियोंकी छठवीं रेजीमेंट थी। ता० ९ मईको सिक्ख पल्टनके फिरोजपुर रेजीमेंटका एक हिस्सा और उसके १० दिन बाद अवध इर्रेगुलर घोड़सवारोंके दो रिसाले इसमें मिलाए गए। कई दिन बाद चुनारसे ६० गोरे बुलाए गए, उसके पीछे एक दिन पल्टनके सिपाहियोंने बलवा किया और १५ अफसरोंको मार डाला। तब सिक्ख पल्टनका कमांडर अपने अधीनके सिपाहियोंको प्रधान फाटकके पास ले गया, जिनके साथ चुनार वाले गोरे सिपाही और अंगरेजी वालंटियर तोपों सहित थे। अंगरेजोंने सिपाहियोंको डरवाकर उनके हथियार छीन लिए और वे किलेसे बाहर खदेर दिए गए।

शहरके जेलखानेके फाटकको तोड़कर कैदी बाहर निकले। उन्होंने जो अंगरेज मिले, उनको मार डाला। ता० ७ वीं जूनके सबेरे खजाना लूटा गया। छठवीं रेजीमेंटके हर सिपाही ३ वा ४ हजार रुपये लेकर अपने गृहको चले गए। उनमेंसे बहुतेरोंको मारकर बस्तीवालोंने रुपये छीनलिए। एक मुसलमान मौलवी इलाहाबादका गवर्नर बनाया गया; वह खुसुरू बागमें रहने लगा।

ता० ११ जूनको जनरल नील किलेमें पहुँचा और बारहवींको सबेरे दारागंजपर तोप छोड़ने लगा। उसकी फौजने जाकर गांवको जलाया और नावके पुलपर कब्जा करलिया। उसी दिन मेजर स्टेफेन्सन १०० सिपाहियोंके साथ किलेमें आया, तब नीलने आस पासकी बस्तियोंको लूटा और शहरमें बहुत डर उत्पन्न किया। मौलवी कानपुरको भागगया।

पश्चिमोत्तर देश।

अंगरेजोंने पहले बंगालेको जीता और जो कई एक जिले बंगालेके पश्चिमोत्तरमें थे, इसलिये वे इसको पश्चिमोत्तर देश कहने लगे।

पश्चिमोत्तर देश और अवधके उत्तर तिब्बत, उत्तर-पूर्व नैपाल राज्य, पूर्व और दक्षिण-पूर्व विहारके चंपारन, सारन और शाहाबाद जिले, दक्षिण चटिया नागपुरका हजारी बाग जिला, रीवां राज्य, बुंदेलखण्डके देशी राज्य और मध्य देशका सागर जिला, और पश्चिम ग्वालियर, धौलापुर और भरतपुर देशी राज्य, पंजाबके गुरगांव, दिल्ली करनाल और अंबाला जिले और सिरमोर और जबल राज्य हैं।

पश्चिमोत्तर देशके अंगरेजी राज्यका क्षेत्रफल (इसमें अवध नहीं है) ८३२८६ वर्गमील और जन-संख्या इस सालकी मनुष्य-गणनाके अनुसार ३४२५४२५४ है।

देशी राज्योंका क्षेत्रफल ५१०९ वर्गमील और जनसंख्या ७९२४९१ है।

पश्चिमोत्तर देश (अवधको छोड़कर) में ७ किस्मत और ३७ जिले हैं।

किस्मत.	जिलेका नाम.	जोड़.
मेरठ—	देहरादून, सहारनपुर, मुज़फ्फ़रनगर, मेरठ, बुलन्दशहर, अलीगढ़	६
रुहेलखंड—	बिजनौर, मुरादाबाद, बदाऊं, बरैली, पीलीभीत, शाहजहांपुर	६
आगरा—	मथुरा, आगरा, एटा, फर्रुखाबाद, मैनपुरी, इटावा	६
इलाहाबाद—	कानपुर, फतहपुर, हमीरपुर, बान्दा, इलाहाबाद	५
बनारस—	जौनपुर, मिरजापुर, बनारस, ग़ाज़ीपुर, बलिया, आज़मगढ़, गोरखपुर बस्ती	८
झांसी—	जालौन, झांसी, ललितपुर	३
कमाऊं—	तराई, कमाऊं, गढ़वाल	३
		३७

इस सालकी मनुष्य-गणनाके समय पश्चिमोत्तर और अवधमें १०० में हिन्दी बोलने वाले ९७ कुमावनी (कमाऊं भाषा) बोलने वाले १ $\frac{1}{2}$, गढ़वाली १ $\frac{1}{4}$ और दूसरी भाषा-वाले $\frac{1}{4}$ मनुष्य थे।

देशी राज्योंमें १०० में हिन्दी बोलने वाले ६९ $\frac{1}{2}$ और गढ़वाली बोलने वाले ३० $\frac{1}{2}$ मनुष्य थे।

पश्चिमोत्तर देशके शहर कसबे इत्यादि, जिनमें इस सालकी मनुष्य-गणनाके समय १०००० से अधिक मनुष्य थे (इनमें अवध प्रदेश नहीं है।)

नम्बर	शहर और कसबे.	जिले.	जन-संख्या.
१	बनारस	बनारस	२१९४६७
२	कानपुर	कानपुर	१८८७१२
३	इलाहाबाद	इलाहाबाद	१७५२४६
४	आगरा	आगरा	१६८६६२
५	बैरली	बरैली	१२१०३९
६	मेरठ	मेरठ	११९३९०
७	मिर्ज़ापुर	मिर्ज़ापुर	८४१३०
८	शाहजहांपुर	शाहजहांपुर	७८५२२
९	फर्रुखाबाद	फर्रुखाबाद	७८०३२
१०	मुरादाबाद	मुरादाबाद	७२९२१
११	गोरखपुर	गोरखपुर	६३६२०
१२	सहारनपुर	सहारनपुर	६३१९४
१३	अलीगढ़	अलीगढ़	६१४८५
१४	मथुरा	मथुरा	६११९५
१५	झांसी	झांसी	५३७७९
१६	गाजीपुर	गाजीपुर	४४९७०
१७	जौनपुर	जौनपुर	४२४१९

नम्बर.	शहर और कसबे.	जिले.	जनसंख्या.
१८	हाथरस	अलीगढ़	३९१८१
१९	इटावा	इटावा	३८७९३
२०	संभल	मुरादाबाद	३७२२६
२१	बदाऊं	बदाऊं	३५२३०
२२	अमरोहा	मुरादाबाद	३५२३०
२३	पीलीभीत	पीलीभीत	३३७९९
२४	वृन्दावन	मथुरा	३१६११
२५	हरिद्वार	सहारनपुर	२९१२५
२६	चंदौसी	मुरादाबाद	२८१११
२७	खुर्जा	बुलंदशहर	२६३४९
२८	देहरा	देहरादून	२५६८४
२९	बांदा	बांदा	२३०७१
३०	नगीना	बिजनौर	२२१५०
३१	फतहपुर	फतहपुर	२०१७९
३२	नानरानीपुर	झांसी	१९६७५
३३	आजमगढ़	आजमगढ़	१९४४२
३४	नजीबाबाद	बिजनौर	१९४१०
३५	देवबंद	सहारनपुर	१९२५०
३६	मैनपुरी	मैनपुरी	१८५५१
३७	कैराना	मुजफ्फरनगर	१८४२०
३८	मुजफ्फरनगर	मुजफ्फरनगर	१८१६६
३९	कन्नौज	फर्रुखाबाद	१७६४८
४०	रुड़की	सहारनपुर	१७३६७
४१	तिलहर	सहारनपुर	१७२६५
४२	बुलंदशहर	बुलंदशहर	१६९३१
४३	बलिया	बलिया	१६३७२
४४	बिजनौर	बिजनौर	१६२३६
४५	कासगंज	एटा	१६०५०
४६	सहसवान	बदाऊं	१५६०१
४७	शेरकोट	बिजनौर	१५५८९
४८	मऊ	आजमगढ़	१५५४७
४९	अतरवली	अलीगढ़	१५४०८
५०	फिरोजाबाद	आगरा	१५२७८
५१	सिकन्दराबाद	बुलंदशहर	१५२३१
५२	हापड़	मेरठ	१४९६७

नम्बर.	शहर और कसबे.	जिले.	जन-संख्या.
५३	कीरतपुर	बिजनौर	१४८२३
५४	काशीपुर	तराई	१४७१७
५५	मवारकपुर	आजमगढ़	१४३७२
५६	बस्ती	बस्ती	१३६३०
५७	अंबाला	बरैली	१३५५९
५८	जलेसर	एटा	१३४२०
५९	कोंच	जालौन	१३४०८
६०	सिकन्दराराऊ	अलीगढ़	१३०२४
६१	कालपी	जालौन	१२७१३
६२	राठ	हमीरपुर	१२३११
६३	चांदपुर	बिजनौर	१२२५६
६४	शेरपुर	गाजीपुर	१२१५६
६५	सरधना	मेरठ	१२०५९
६६	गंगोह	सहारनपुर	१२००७
६७	अहरोरा	मिर्ज़ापुर	११६३१
६८	शिकारपुर	बुलंदशहर	११५९६
६९	सहतवार	बलिया	११५१९
७०	चुनार	मिर्ज़ापुर	११४२३
७१	बरहज	गोरखपुर	११४२१
७२	ललितपुर	ललितपुर	११३४९
७३	सोरों	एटा	११२६५
७४	गहमर	गाजीपुर	१११२९
७५	रामनगर	बनारस	११०९३
७६	महडावल	बस्ती	१०९९१
७७	रेवतीपुर	गाजीपुर	१०९६१
७८	निहटोर	बिजनौर	१०८११
७९	चितफिरोजपुर	बलिया	१०७२५
८०	खेकरा	मेरठ	१०३१५
८१	सोलासराय	मुरादाबाद	१०३०४
८२	गाजियाबाद	मेरठ	११११०
८३	मङ्गलौर	सहारनपुर	१००९३

पश्चिमोत्तर देशके देशी राज्यके कसबे, जिनमें इस सनकी मनुष्य-गणनाके समय ५००० से अधिक मनुष्य थे।

नम्बर.	कसबे.	राज्य.	जन-संख्या.
१	रामपुर	रामपुर	७६७३३
२	तांडा	रामपुर	८०७२
३	शाहाबाद	रामपुर	५५९६

छठवाँ अध्याय ।

नयनी जंक्शन, रीवाँ, नागौड़, मइहर, करवी, चित्रकूट, कालिंजर, अजयगढ़, छत्तरपुर, विजार, और पन्ना ।

नयनी जंक्शन् ।

नयनी जंक्शन इलाहाबादसे ४ मील पूर्व है, जहाँसे रेलवे लाइन तीन ओर गई है ।

(१) पश्चिम-दक्षिण जबलपुर तक 'ईस्टइंडियन रेलवे' उससे आगे 'ग्रेटइंडियन पेनिनशुला रेलवे'

मील–प्रसिद्ध स्टेशन

५८ मानिकपुर जंक्शन
१०६ सतना
१२८ मइहर
१६७ कटनी जंक्शन
२२४ जबलपुर
२७६ नरसिंहपुर
३०४ गाडरवारा जंक्शन
३५७ इटारसी जंक्शन
३९८ सिउनी
४२४ हरदा
४८७ खंडवा जंक्शन
५१८ चांदनी
५३० बुरहानपुर
५६४ भुसावल जंक्शन
६०८ पाचोरा
६३६ चालीसगांव
६६२ नान्दगांव
६७८ मनमाड़ जंक्शन
७२४ नासिक
७२७ देवलाली
७६५ कसारा
८०७ कल्याण जंक्शन
८१९ थाना
८३४ दादर
८४० बंबई विक्टोरिया स्टेशन

मानिकपुर जंक्शनसे पश्चिम कुछ उत्तर 'इंडियन मिड्लेंड रेलवे' जिसका महसूल प्रति मील २ ½ पाई है ।

मील–प्रसिद्ध स्टेशन

१९ करवी
२९ तमोलिया
६२ बांदा
८५ कवराई
९५ महोवा
१०९ कुल पहाड़
११४ जयतपुर
१४१ मऊरानीपुर
१४८ रानीपुर रोड
१७४ उरछा
१८१ झांसी जंक्शन

कटनीसे पूर्व-दक्षिण 'बंगाल नागपुर रेलवे' पर जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई है ।

मील–प्रसिद्ध स्टेशन

१३४ पेड्रारोड
१९८ विलासपुर जंक्शन

इटारसी जंक्शनसे उत्तर ओर 'इंडियन मिड्लेंड रेलवे'

मील–प्रसिद्ध स्टेशन

११ हुशंगाबाद

५७ भोपाल जंक्शन
८५ सांची
९० भिलसा
१४३ बीना जंक्शन
(सागरके लिये)
१८२ ललितपुर
२३८ झांसी जंक्शन
खंडवा जंक्शनसे
अधिक उत्तर कम पश्चिम
'राजपुताना मालवा रेलवे'
जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई है ।
मील—प्रसिद्ध स्टेशन
३७ मोरतका (ओंकार नाथके पास)
७३ मऊ छावनी
८६ इन्दौर
१११ फतेहाबाद जंक्शन
(उज्जैनके पास)
१६० रतलाम जंक्शन
(डाकौरके लिये)
१८१ जावरा
२४३ नीमच
२७७ चित्तौरगढ़ जंक्शन
(उदयपुरके लिये)
जहांसे लाइन
उतरगई है ।
३७८ नसीराबाद छावनी
३९३ अजमेर जंक्शन
भुसावल जंक्शन
से पूर्व ग्रेट इंडियन पेनिनशूला रेलवे ।
मील—प्रसिद्ध स्टेशन
५६ जलंब जंक्शन
६४ सेगांव
८७ अकोला
१३६ बडनेरा जंक्शन
(अमरावतीके लिये)
१९५ वरधाजंक्शन
२४४ नागपुर
मनमाड़ जंक्शनसे दक्षिण
मनमाड़ डौंड ब्रेंच पर
मील—प्रसिद्ध स्टेशन
९५ अहमदनगर
१४६ डौंडजंक्शन
कल्याण जंक्शनसे दक्षिण-पूर्व पूनालाइन
मील—प्रसिद्ध स्टेशन
२० नेरल
८३ खिड़की
८६ पूना जंक्शन

(२) नैनी जंक्शनसे अधिक पश्चिम कम उत्तर 'इष्ट इंडियन रेलवे'
मील—प्रसिद्ध स्टेशन
४ इलाहाबाद
७७ फतहपुर
१२४ कानपुर जंक्शन
१७५ फफुण्ड
२१० इटावा
२२० यशवंतनगर
२४५ शिकोहाबाद
२५७ फिरोजाबाद
२६७ तुण्डला जंक्शन जिससे १६ मील पश्चिम आगरा है ।
२९७ हाथरस जंक्शन्
३१५ अलीगढ़ जंक्शन
३४२ खुर्जा
३५१ बुलंदशहर रोड
३६९ सिकन्दराबाद
३८१ गाजियाबाद जंक्शन
३९४ दिल्ली जंक्शन

(३) नैनी जंकूशनसे पूर्व 'इष्ट इंडियन रेवले'।

मील–प्रसिद्ध स्टेशन

४६ विंध्याचल

५१ मिर्जापुर

७१ चुनार

९१ मुगलसराय जंकूशन

१२७ दिलदारनगर जंकूशन

१४९ बक्सर

१७८ आरा

२०० कोयलवर

२१६ दानापुर

२२२ बांकीपुर

बांकीपुरसे ६ मील पश्चिमोत्तर दिघाघाट है।

बांकीपुरसे दक्षिण ८ मील पुनपुन और ५७ मील गया है।

रीवाँ।

नयनीसे ५८ मील पश्चिम-दक्षिण जबलपुरकी लाइनपर पश्चिमोत्तर देशके बान्दा जिले में मानिकपुर रेलवेका जंकूशन है।

मानिकपुरसे चालीस पचास मील दक्षिण-पूर्व मध्यभारतके बघेलखण्डमें प्रधान देशी राज्यकी राजधानी रीवां एक कसबा है, जहां रेल नहीं गई है। मानिकपुरसे ७० मील दक्षिण मइहर रेलवेका स्टेशन है, जिससे ४० मील पूर्वोत्तर रीवां राजधानी तक उत्तम सड़क गई है।

यह २४ अंश ३१ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ८१ अंश २० कला पूर्व देशांतरमें स्थित है।

सन १८९१ की जन-संख्याके समय रीवांमें २३६२६ मनुष्य थे, जिनमें १८३२० हिन्दू ४९१७ मुसलमान, ५२ जैन, ३८ सिक्ख, २९६ एनिमिष्टिक, और ३ क्रस्तान।

रीवां ३ दीवारोंसे घेरा हुआ है। भीतरीकी दीवार महाराजके महलको घेरती है। महाराजका राघवमहल देखने योग्य उत्तम है।

रीवां राज्य–राज्यके उत्तरमें पश्चिमोत्तर देशके बांदा, इलाहाबाद और मिर्ज़ापुर जिले, पूर्व मिर्ज़ापुर जिलेका भाग और छोटा नागपुरके देशी राज्य; दक्षिण मध्यदेशमें छत्तीसगढ़, मण्डला और जब्बलपुर जिले और पश्चिम बघेलखंडके माइहर, नागौड़, सोहाबल और कोठी राज्य हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय राज्यका क्षेत्रफल लगभग १०००० बर्गमील और मनुष्य-संख्या १३०५१२४ थीं। जिनमें ९७१७८८ हिन्दू, ३०२१०७ आदि निवासी, ३११०७ मुसलमान, ८६ जैन, २८ क्रस्तान और ८ सिक्ख थे। हिंदुओंमें ब्राह्मण, कुर्मी, अहीर, राजपूत, अधिक हैं। आदि निवासियोंमें कोल और गोंड़ दो जाति हैं। ब्राह्मण और राजपूत जमींदार और कुर्मी और गोंड़ जमींदार और खेतिहार हैं।

राज्यकी मालगुजारी सन १८८३-८४ ई० में ११११२५८० रुपया था, जिसमेंसे ७०६०९० रुपया जमीनसे आया था। देशके जंगल और कोयलेकी खानोंसे बहुत आमदनी है। काली भूमिमें गेहूं इत्यादिकी अच्छी फसिल होती है। लाह, करायल गोंद राज्यसे दूसरे देशोंमें जाते हैं। और बांधवगढ़का किला प्रसिद्ध है।

सन १८८३-८४ ई० में ३७१ घोड़सवार ५६४ पैदल, ६ मैदानकी तोपें और ७७ गोलंदाज थे।

सोन नदी राज्यकी दक्षिण सीमासे निकलकर राज्यमें उत्तर और पूर्वोत्तर बहनेके उपरांत मिर्ज़ापुर जिलेमें गई है । टंस नदी भी राज्यमें होकर गई है। राज्यकी पश्चिमी सीमा होकर रेलवे निकली है । सतना और दभौरा राज्यमें स्टेशन हैं । डेकानकी बड़ी सड़क रीवां और मइहर होकर गई है ।

मानिकपुर रेलवे जंक्शनसे ४८ मील दक्षिण रीवां राज्यमें सतनाका रेलवे स्टेशन है । सतनामें बघेलखंडके पोलिटिकल एजेंटका सदर स्थान है। वहां देशी रिसालेका एक हिस्सा रहता है। और रीवांके महाराजकी सुन्दर कोठी बनी है । सतनासे पूर्व रीवांको उत्तम सड़क गई है ।

इतिहास ।

सन् ५८० ई० में वाघदेव गुजरातसे आकर मोरफाके किलेका मालिक बना और पीढ़ावानकी राजाकी पुत्रीसे उसने विवाह किया। उसका पुत्र कुरून देव सन ६१५में राजा हुआ उसने राज्यको बढ़ाया और उसका नाम बघेलखंड रक्खा । कुरुनदेवने मंडलाके राजाकी पुत्रीसे विवाह करके बांधवगढ़के किलेको दहेजमें पाया और अपनी कचहरीको वहां लेगया । १९ वां राजा बीरभानुराव सन १६०१ में राजा हुए, जिनके राज्यके समय हुमायूंशाहके परिवारके लोगोंने शेरशाहके डरसे भागकर रीवां राज्यमें पनाह लिया था । सन १६१८ में विक्रमादित्यने रीवांको बसाकर अपनी राजधानी बनाया । २७ वां राजा अवधूतसिंह अपने पिताके मरनेके समय केवल ६ महीनेका था, उस समय बुंदेलोंके प्रधान हरदीशाहने रीवां राज्यपर चढ़ाई करके उसपर अधिकार करलिया । अवधूतसिंह और उसकी माता प्रतापगढ़में भाग गई । कुछ दिनोंके उपरांत दिल्लीके बादशाहकी सहायतासे हरदीशाह राज्यसे निकाल दिया गया । अवधूतसिंहके पीछे अजितसिंह और अजितसिंहके पश्चात् सन १८०९ में जयसिंह राजा हुए । सन १८१२ ई० में अंगरेजी सरकार और जयसिंहके साथ प्रथम संधि हुई और अंगरेजी प्रभाव बुंदेलखंडमें हुआ । जयसिंह देवके पश्चात् उनके पुत्र महाराज विश्वनाथसिंह राजा हुए, जिनकी मृत्यु होनेपर सन १८३४ में महाराज रघुराजसिंह के. जी. सी. एस. आई. रीवां नरेश हुए, जो बड़े विष्णुभक्त और कवि थे । सन १८४७ में महाराजने अपने राज्यसे सती होनेकी रीतिको उठा दिया । सन १८५७ के बलवेके समयके अच्छे कामोंके बदलेमें अंगरेजी सरकारने महाराजको सोहागपुर और अमर-कंटकका अधिकार औरके. जी. एस. आई. की पदवी दी और उनको १९ तोपोंकी सलामी मिलनेका अधिकार प्राप्त हुआ । सन् १८८०में महाराज रघुराजसिंहका देहांत हो गया । रीवां राज्य पोलिटिकल एजेंट और सुपरिंटेन्डेंटके प्रबंधके अधीन हुआ । राजपरिवारके १० सरदारोंकी कौन्सिलकी सहायतासे राज्यकार्य चलने लगा । सौभाग्यकी बातहै कि, इससमय महाराज रघुराजसिंहके सुयोग्यपुत्र श्रीमन्महाराजाधिराज श्री १०८ श्रीमहाराज सर वेङ्कटरमण रामानुजप्रसादसिंहजू देव बहादुर (जी. सी. एस. आई.) बड़ी योग्यतासे राजकार्य चला रहे हैं ।

नागौड़ ।

नागौड़ मध्य भारतमें बघेलखंडके अधीन एक छोटा राज्य है, जिसके पूर्वोत्तर सोहावल और रीवां राज्य, दक्षिण–पूर्व मइहर राज्य और पश्चिम पन्ना राज्य है । सन् १८८१ में राज्यका क्षेत्रफल ४५० वर्गमील और जन–संख्या ७९६१९ थी । जिनमें ६८०७० हिन्दू

मुसलमान, ६७९ जैन, ११ कृस्तान, २ सिक्ख और ७९६५ आदि निवासी थे। आदि निवासियोंमें २१२९ गोंड़ और ५८३६ कोल।

राज्यकी मालगुजारी लगभग १५०००० रुपया है, जिसमेंसे ७०००० रुपया जागीरों और परमार्थ तथा पुण्यमें खर्च पड़ता है। राज्य होकर रेल गई है।

मानिकपुरसे ४८ मील दक्षिण सतनाका स्टेशन है जिससे १७ मील दूर नागौड़ कसबा है, जिसमें पहले एक अंगरेजी छावनी थी और राजा रहते थे। वहां एक किला है। सन्‌१८७६ के लगभग नागौड़के राजाने कसबेको छोड़ दिया और वे उचहरामें रहने लगे। नागौड़की जनसंख्या घटकर सन् १८८१ ई० में ४८२८ रह गई।

इतिहास।

सन १८१८ ई० में लालशिवराजसिंहकी मृत्यु होनेपर उसके पुत्र बलभद्रसिंह उत्तराधिकारी हुए, जो सन १८३१ में अपने भाईको मारडालनेके अपराधसे पदच्युत करदिए गए, उनका पुत्र राघवेंद्र सिंह लड़का था, इसलिये राज्य थोड़े दिनोंके लिये अंगरेजी राजकाजके अधीन रहा। सन १८३८ में राघवेंद्रसिंह राज्यके अधिकारी हुए। सन् १८५७ के बलवेके समयके अच्छे कामोंके बदलेमें राजाको जब्त किया हुआ विजय राघवगढ़का राज्य मिला और ९ तोपोंकी सलामी मिलती है। सन १८७४ में राघवेंद्रसिंहकी मृत्यु होनेपर उनके पुत्र वर्तमान राजा राघवेंद्रसिंह उत्तराधिकारी हुए, जो परिहार राजपूत हैं। राजाको २ तोप और ११६ पैदल और पुलिस हैं।

मइहर।

मानिकपुर जंगशनसे ७० मील और सतनासे २२ मील दक्षिण मइहरका रेलवे स्टेशन है। मध्य भारतके बुंदेलखंड एजेंसीके अधीन देशी राज्यकी राजधानी डेकानकी बड़ी सड़कके पास मइहर छोटा कसबा है। यह २४ अंश १६ कला उत्तर अक्षांश और ८० अंश ४८ कला पूर्व देशांतरमें है।

सन १८८१ की मनुष्यगणनाके समय मइहरमें ६४८७ मनुष्य थे, जिनमें ५३४७ हिन्दू, ११२९ मुसलमान और ११ दूसरे।

मइहरमें १६ वीं सदीका बनाहुआ एक किला है, जिसमें अब राजा रहते हैं। एक झील कसबेके पश्चिमोत्तर और दूसरी दक्षिण-पश्चिम है। यहांकी प्रधान सौदागरी गल्ला, मकान बनाने योग्य लकड़ी, और जंगलकी पैदावारकी है। यहांसे बड़ी सड़क द्वारा ४० मील पूर्वोत्तर रीवां राजधानी है।

मइहर राज्य-राज्यके उत्तर नागौड़ राज्य, पूर्व रीवां राज्य, दक्षिण जबलपुरका अंगरेजी जिला और पश्चिम अजयगढ़ राज्य है।

सन् १८८१ ई० में राज्यका क्षेत्रफल लगभग ४०० वर्गमील और मालगुजारी ७०९६० रुपया थी। राज्यमें १ कसबा और १८२ गांव थे। मनुष्य संख्या ७१७०९ थी, जिसमें५९०९० हिन्दू, १०५७७ आदि निवासी, २०२९ मुसलमान, ६ जैन; ५ कृस्तान, और २ सिक्ख थे, हिन्दुओंमें कुनबी और ब्राह्मण अधिक हैं आदि निवासियोंमें कोल और गोंड़ दो जाति हैं।

इतिहास।

पहिले यह राज्य रीवांके अधीन था, परन्तु बुंदेलखण्डमें अंगरेजी पराक्रम नियत होनेके बहुतेरे वर्ष पहिले पन्नाके बुंदेला राजाके हाथमें आया था, जिसने इस राज्यको ठाकुर दुर्जन-

सिंहके पिताको दे दिया। सन १८२६ में दुर्जनसिंहके देहांत होने पर उसके पुत्रोंने राज्यके लिये झगड़ा किया, तब अंगरेजी सरकारने राज्यको विभक्त करके विशनसिंहको मइहर और प्रयागदासको विजयगढ़का राजा बनाया। सन १८५८ में बगावत करनेके अपराधमें अंगरेजी सरकारने विजयगढ़के राज्यको छीन लिया। विशनसिंहका पोता माइहरके वर्तमान नरेश योगीजाति राजा रघुवीरसिंह हैं, जिनको सन १८७७ के दिल्ली दरबारमें राजाकी पदवी मिली और तबसे तोपोंकी सलामी मिलनेकी आज्ञा हुई। राजाका सैनिक बल ७ तोपें और ८८ पैदल और पुलिस है।

करवी।

मानिकपुर जंक्शनसे १९ मील पश्चिमोत्तर करवीका स्टेशन है। करवी पश्चिमोत्तर देश के बांदा जिलेका सब डिवीजन पयस्विनी नदीके पास एक कसबा है, जिसमें सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ४१६७ मनुष्य थे। यह २५ अंश १२ कला १० विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश ५६ कला ५० विकला पूर्व देशांतरमें है।

यहां ५ मन्दिर, ५ मसजिद और स्टेशनसे १ ½ मीलके अन्तर पर एक सराय ह। एक बड़े मकानमें प्रसिद्ध नारायणरावके परिवारके लोग रहते हैं।

करवीमें गणेशबाग प्रख्यात है, जिसमें विनायक रावके (सन १८३७ ई०) बनवाए हुए एक तालाव, एक सुन्दर मन्दिर और एक कूप हैं।

इतिहास।

सन १८०५ ई० में करवीमें अंगरेजी फौजकी छावनी बनी। सन १८२९ में यह पेशवाके नायब विनायक रावके रहनेका स्थान हुई, जो प्रायः शाही हालतमें रहता था। बलवेके समय बांदाके ज्वाइंट मजिस्ट्रेटके मारे जाने पर नारायण राव ८ महीने तक इस इलाकेका स्वतंत्र मालिक रहा। बलवेके पीछे धीरे धीरे करवीकी घटती होने लगी।

राजापुर—करवीसे १८ मील पूर्वोत्तर बांदा जिलेमें यमुना नदीके दाहिने किनारे पर राजापुर तिजारती कसबा है, जिसको हिन्दीके प्रसिद्ध कवि तुलसीदासने एटा जिलेके सोंरों से आकर नियत किया; जिनका देहान्त सम्वत् १६८० (सन १६२३ ई०) में काशीके अस्सीघाटपर हुआ। राजापुरके एक मन्दिरमें तुलसीदासका चौरा है, जिसपर तुलसीकृत रामायण रक्खी है। सन १८८१ की जन-संख्याके समय राजापुरमें ७३२९ मनुष्य थे, जिनमें ६९४६ हिन्दू, ३७७ मुसलमान और ६ जैन। राजापुरमें कई एक देवमन्दिर और पुलिसका स्टेशन है। वर्षमें ४ मेला होते हैं।

चित्रकूट।

सीतापुर—करवीसे ५ मील मन्दाकिनी अर्थात् पयस्विनी नदीके बायें तट पर वान्दा जिलेमें चित्रकूटकी बस्ती सीतापुर है करवीमें सवारीके लिये बैलगाड़ी और टट्टू मिलते हैं।

सीतापुर बड़ी बस्ती है, जिसमें सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय १९७७ मनुष्य थे। इसमें पण्डा लोगहीके अधिक मकान हैं। यहां बन्दर बहुत हैं, इनके डरसे यहांके प्रायः सम्पूर्ण मकानोंके छप्परोंपर बैर आदि कांटेदार वृक्षोंके झांखर बिछाए गए हैं। कोटितीर्थ, अनुसूया आदि स्थानों पर जानेके लिये सीतापुरमें पालकी टट्टू और कुली मिलते हैं।

मन्दाकिनीके किनारे सड़कके दूसरे बगलपर बहुतेरे देवमन्दिर हैं। स्नानका प्रधान स्थान सीतापुरके पास रामघाट है, जिसके समीप एक छोटे और एक बड़े मन्दिरमें राम लक्ष्मण आदि देवताओंका दर्शन होता है।

चैत्रकी रामनौमी और कार्तिककी दिवालीको बड़े मेले और अमावास्या और ग्रहणमें छोटे मेले होते हैं। दोनों बड़े मेलोंमें प्रथम ३०००० से ४५००० तक मनुष्य आते थे, परन्तु अब १५००० से अधिक नहीं आते। चारोंओरकी पहाड़ियोंपर, मन्दाकिनीके किनारों पर और मैदानोंमें देवताओंके ३३ स्थान हैं, जिनमें कोटितीर्थ, देवांगना, हनुमानधारा, स्फटिक-शिला, अनुसूया, गुप्त गोदावरी और भरतकूप ७ प्रधान हैं।

कामदानाथ (पहाड़ी)–सीतापुरसे १ मील पर कामदानाथ पहाड़ी सुन्दर पौधे और बड़े वृक्षोंसे ढपी हुई है। पहाड़ीके चारोंओर ५ मील परिक्रमाकी पक्की सड़क है, जिसको लगभग १५० वर्ष हुए कि पन्नाके राजाने बनवाया। पहाड़ीके चारोंओर परिक्रमाके पास बहुतेरे देवस्थान और मन्दिर हैं, जिनमें रामचबूतरा, मुखारविन्द, चरणपादुका आदि स्थान मुख्य हैं। पहाड़ी पर बहुत बन्दर हैं। जिनको यात्री चने खिलाते हैं। कामदानाथ चित्रकूट में प्रधान देवता हैं। सीतापुरसे कामदानाथ तक छोटे बड़े सैकडों मन्दिर हैं, जिनमें अधिकांश पन्ना राज्यकी ओरसे बने हुए हैं।

कामदानाथके पास लक्ष्मण पहाड़ीपर लक्ष्मणजीका मन्दिर है, जहां जानेके लिये २०० से अधिक सीढ़ियां बनी हैं।

कोटि तीर्थ—एक पहाड़ी पर बहुत सीढियों द्वारा चढ़ने पर एक कुण्ड मिलता है, जिसमें यात्री स्नान करते हैं। लोग कहते हैं कि एक समय इस स्थान पर कोटि ऋषियोंने यज्ञ किया था इसलिये इसका नाम कोटितीर्थ पड़ा। यात्री स्नान दर्शन करके दो पहरके अन्दर सीतापुर लौट आते हैं।

हनुमानधारा—एक पहाड़ी पर हनुमानजीकी एक विशाल मूर्ति है, जिसकी भुजा पर ऊपरसे गिरती हुई जलकी धार पड़ रही है। यहाँ औरभी कई स्थान हैं। यात्री हनुमानधारासे भी दोपहरके अन्दर सीतापुर लौट आते हैं।

स्फटिकशिला और अनसूया–चित्रकूटसे १ मील दक्षिण मन्दाकिनीके किनारे प्रमोद-वनमें रीवांके महाराजका बनवाया हुआ लक्ष्मीनारायणका सुन्दर मन्दिर और बड़ा मकान है। उन दोनोंके चारोंओर ऊंची दीवार वाले किलेके समान बड़ा घेरा है। दीवारके पास पल्टन रहनेके लिये मकान बने हैं। घेरेके भीतर जंगल लग गयाहै।

प्रमोदवनसे १ मील दक्षिण मन्दाकिनीके बाएं किनारे पर स्फटिकशिला नामक पत्थर का बड़ा ढोका है, जिस पर चरणका चिह्न देख पड़ता है। यात्री मन्दाकिनीमें स्नान करके चरण-चिह्नका दर्शन करतेहैं। इन्द्रके पुत्र जयन्तने काक बनकर इसी स्थानपर सीताजीको चोंचसे मारा था।

स्फटिकशिलासे २ मील आगे एक नाला, ४ मील आगे दूसरा नाला और ६ मील आगे अर्थात् सीतापुरसे ८ मील पर अनसूया नामक स्थान है। यहां मन्दाकिनीके बाएं किनारे पहाड़ीके पादमूल पर एक मन्दिरमें अनसूया और दूसरे मन्दिरमें अनसूयाके पति अत्रि मुनि हैं, जिसके पास यात्रियोंके रहनेके लिये एक छोटा मकान है। यहां लंगूर बन्दर बहुत हैं। मेलेके दिनोंमें मोदी रहता है। समतल भूमि नहीं है।

२०० सीढ़ियोंके ऊपर सिद्ध बाबाकी कुटी है। सिद्ध बाबाके देहान्त हुए ३ वर्ष हुए, अब उनका चेला है। सिद्ध बाबाका सदावर्त यहां अबभी जारी है।

गुप्त गोदावरी–अनसूया स्थानसे २ मील उत्तर उसी रास्तेसे लौटकर २ मील पश्चिम जानेपर एक बस्ती मिलती है, जिसमें एक ज़मींदारका मकान, बनियेकी दूकान और टिकनेकी जगह हैं। वहांसे २ मील और आगे अर्थात् अनसूयासे ६ मीलपर गुप्त गोदावरी है।

एक अँधेरी गुफामें १५ वा १६ गज भीतर सीताकुण्ड है, जिसमें झरनेका पानी गिरता है और बैठकर स्नान करने योग्य पानी रहता है। दूसरी जगह गुफा मन्दिरके आकारका एक स्थान है। गुफाके भीतर बहुत चमगादुर रहते हैं दीपके प्रकाशसे भीतर जाना होता है।

जलकी धारें पहाड़ीसे गुफाके बाहर निकलकर पत्थरसे बाँधे हुए २ छोटे पोखरोंमें होतीहुई बाहर गिरती हैं और कुछ दूर आगे जाकर पृथ्वीमें गुप्त होजाती हैं, इसीसे इसका नाम 'गुप्तगोदावरी' पड़ा है। पोखरोंके पास २ छोटे मन्दिर हैं और दिनमें एक साधु रहता है जो दीप जलाकर यात्रियोंको गुफामें ले जाता है।

भरतकूप–गुप्त गोदावरीसे १ १/२ मील दूर चौबेपुर एक बस्ती है, जिसमें कालिंजर के राजाओंमेंसे एक चौबे राधाचरण ठाकुर रहते हैं। कालिंजरके चौबे लोगोंको अब १ १/२ लाख रुपयेके लगभगकी आमदनीका राज्य है। एजेण्टके अधीन ७ राजे हैं, जो चित्रकूट में और इसके आस पास बसे हैं। चित्रकूटके जंगल इन्हींके राज्यमें हैं। चौबेपुरमें पक्के सरोवरके ऊपर एक पंक्तिसे ११ शिवमन्दिर बने हैं, जिनके नीचे पोखरेकी ओर धर्मशाला है। पोखरेकी दूसरी ओर ठाकुरबाड़ी है। चौबेके पूर्वजने इस स्थानको बनवाकर इसका नाम कैलास रक्खा। इनकी ओरसे सदावर्त जारी है।

चौबेपुरसे ६ १/२ मील और गुप्त गोदावरीसे ८ मील खेतके मैदानमें भरतकूप है, जिससे जल भरकर स्नान किया जाता है। इसके पास एक बड़े मन्दिरमें राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न छोटे मन्दिरमें केवल भरतकी मूर्ति है।

तुलसीकृतमानसरामायण–संवत् १६३१ (सन १५७४ ई०) का बनाहुआ भाषा पद्यमें एक ग्रन्थ है, जिसमें लिखा है कि चित्रकूट पर्वतके निकट एक अनादिसिद्ध स्थल गुप्त था, जिसमें अत्रिमुनिके सेवकोंने जलके लिए कूप खोदा था। जब रामचन्द्रजीने भरतके विशेष आग्रह करनेपर भी राज्याभिषेक स्वीकार नहीं किया, तब उनके अभिषेकके अर्थ जो तीर्थोंका जल लाया गया था, वह सब उसी कूपमें डाल दिया गया। तीर्थोंके जलयोगसे वह कूप अति पवित्र होगया और तबसे उसका नाम भरतकूप हुआ।

चित्रकूटका जंगल–चित्रकूटका जंगल विख्यात है। जगह जगह घने लता वृक्षोंकी हरियाली मनोहर है। जगह जगह सिंघाड़ेका जंगल बना है, जगह जगह बन जन्तुओंके झुण्ड देख पड़ते हैं, जगह जगह पर्वतसे झरने निकले हैं और जगह जगह बस्ती है।

तमोलिया–भरतकूपसे एक ओर ६ मील सीतापुर और दूसरी ओर १ मील तमोलियाका रेलवे स्टेशन है, जिससे १० मील करवी है। दोनोंके बीचमें चित्रकूट स्टेशन है, जिससे १७ मील करवी है। दोनोंके बीचमें चित्रकूट स्टेशन भी है, परन्तु वहां यात्री नहीं उतरते, क्योंकि रास्ता जंगलका है और कोई सवारी नहीं मिलती, तमोलिया बड़ी बस्ती है, वहांसे घी और रुई दूसरी जगहमें जाती है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा।

महाभारत–(वनपर्व्व–८५ वां अध्याय) चित्रकूटमें सब पापोंकी नाश करनेवाली मन्दाकिनी नदी है, जिसमें स्नान करके पितर और देवताओंकी पूजा करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल होता है और मोक्ष मिलता है। वहांसे अत्यन्त उत्तम भर्तृहरिके स्थानको जाना चाहिए, जहां देवताओंके सेनापति स्वामिकार्तिक सदा निवास करते हैं। आगे कोटितीर्थ है, जिसमें स्नान करनेसे सहस्र गोदानका फल होता है। वहांसे जेष्ठतीर्थमें जाना चाहिए, जहां महादेवकी पूजा करनेसे पुरुष चंद्रमाके समान प्रकाशित होजाता है। उस कुएंमें चारों समुद्र बसते हैं। नियमधारी पुरुष वहां स्नान करनेसे पवित्र होकर मोक्षको प्राप्त करता है।

(अनुशासनपर्व्व–२५ वां अध्याय) चित्रकूटकी मन्दाकिनीके जलमें निराहार होकर स्नान करनेसे मनुष्यको राज्यलक्ष्मी मिलती है।

वाल्मीकिरामायण–(अयोध्याकाण्ड–५६ वां सर्ग) वनवासके समय लक्ष्मणने श्रीरामचन्द्रजीकी आज्ञासे अनेक प्रकारके वृक्षोंको काट काष्ठ लाकर चित्रकूट पर्वतपर पर्णशाला बनाई और अच्छी तरहसे उसको आच्छादन कर किंवाड़ लगाया। राम और लक्ष्मणने अयोध्यासे चलने पर पांचवें दिन पर्णशालेमें निवास किया।

(९२ वां सर्ग) चित्रकूट पर्वतसे उत्तर ओर मन्दाकिनी नदी बहती थी। पर्वतके ऊपर पर्णकुटीमें राम लक्ष्मण निवास करते थे। (९९ वां सर्ग) भरतजी अयोध्यावासियों सहित चित्रकूटमें आकर रामचंद्रसे मिले।

(११६ वें सर्ग से ११९ वें सर्ग तक) भरतजी जब अयोध्याको लौट गए, उसके पश्चात् चित्रकूटके ऋषिगण खर आदि राक्षसोंके उपद्रवसे उद्विग्न हो उस वनको छोड़ महर्षि अगस्त्यके आश्रममें चले गए। कई ऋषीश्वर रामचन्द्रके आश्रयसे रह गए,तब रामचन्द्रने सोचा कि मैंने यहांपर भरत, मातृगण और पुरवासियोंको देखा है, इसलिये सर्व कालमें मेरी चित्तवृत्ति उन्हींकी ओर लगी रहती है और इस स्थानमें भरतकी सेनाके घोड़ों और हाथियोंकी लीदसे यहांकी भूमि अत्यन्त अशुद्ध हो गई है, ऐसा विचार कर श्रीरामचन्द्र सीता और लक्ष्मण सहित वहांसे चल निकले और अत्रिमुनिके आश्रममें आकर उनको प्रणाम किया। मुनिने तीनों जनोंका विधिपूर्वक अतिथि–सत्कार किया और कहा कि हे रामचन्द्र! यह धर्मचारिणी तापसी अनसूयाने उग्र तप और नियमोंके बलसे १० वर्षकी अनावृष्टिमें ऋषियोंके भोजनके लिए फल मूल उत्पन्न किए और स्नानके निमित्त गंगा (मन्दाकिनी) नदीको यहां बहाया। इसी अनसूयाने सहस्र वर्ष पर्य्यन्त बड़ी तपस्याकी, इसीके व्रतोंसे ऋषियोंके तपके विघ्न नष्ट हुए। इसके अनन्तर अनसूयाने सीताको पतिव्रत धर्मके उपदेश और दिव्य अलंकार दिए। रामचन्द्रने उस रात्रिमें वहां निवास कर प्रातःकाल लक्ष्मण और सीता सहित अत्रि मुनिके आश्रमसे चलकर दुर्गम वनमें प्रवेश किया।

(सुन्दरकाण्ड–३८ वां सर्ग) हनुमानने लंकामें जानकीजीसे कहा कि मुझको कुछ चिह्न दो। जानकी बोलीं कि हे कपिवर! तुम रामचन्द्रसे यह चिन्हानी कहना कि चित्रकूट पर्वतके पास उपवनोंमें जलक्रीडा करके तुम मेरे गोदमें सो गए थे, उस समय एक कौआ मुझे चोंच मारने लगा, तब मैं उसको ढेलोंसे मारती भी थी तौ भी वह मुझे नोच कर उसी स्थानमें किसी जगह छिप जाता था। जब कौआसे विदीर्ण की गई मैं थकगई और आंसुओंसे

मेरा मुख भरगया, तब कौआ रूपधारी इन्द्रके पुत्र (जयन्त) की ओर तुम्हारी दृष्टि जा पड़ी । तब तुमने बड़ा क्रोधकर चटाईमेंसे एक कुशले उसको ब्रह्मास्त्रसे अभिमंत्रित कर उसपर चलाया। कुश कालाग्निके समान प्रज्वलित हो उस पक्षीके समीप दौड़ा, तब वह अपनी रक्षाके लिये भूमण्डलमें घूमकर अपने पिता इन्द्रके पास गया । इन्द्रने उसको निकाल दिया तब वह तीनों लोकोंमें भ्रमण कर फिर तुम्हारेही शरणमें आया । ब्रह्मास्त्र निष्फल नहीं होता, इसलिये तुमने उसकी दहिनी आंख फोड़कर उसको छोड़दिया और वह अपने गृह चला गया ।

शिवपुराण–(८ वां खंड, दूसरा अध्याय) विष्णुने ब्रह्मासे कहा कि चित्रकूट जो प्रसिद्ध पर्वत है, जिसके दर्शनमात्रसे पापी निष्पाप हो जाता है, जहां मंदाकिनी नदी बह रही है जिसमें स्नान करनेसे कोई पाप शेष नहीं रहता, और जहां नदी और पर्वतके बीच धनुषाकार एक नदी है, वह स्थान मुझे बहुत प्रिय है । तुम वहां जाकर एक पुरी बसाओ । तब ब्रह्माने चित्रकूटमें जाकर मत्तगयन्द नामक शिवलिंग स्थापित किया । जो मनुष्य वहां जाकर मत्तगयन्द शिवका दर्शन नहीं करता, उसकी यात्राका फल चला जाता है ।

संकर्षण पर्वतके पूर्व कोटितीर्थमें कोटेश्वर शिवलिंग हैं । चित्रकूटके दक्षिण ओरसे आगे पश्चिम ओरको तुगारण्य पर्वत है, जहां गोदावरी नदी बह रही है । वहां पशुपति शिवलिंग हैं ।

(तीसरा अध्याय) नीलकंठसे दक्षिण अत्रीश्वर शिवलिंग हैं । अत्रिने अपनी स्त्री अनसूयाके सहित चित्रकूट पर्वतके निकट अति श्रमसे तप किया है । अकाल और निर्वर्षणके समय अनसूयाके तपके प्रभावसे चित्रकूटमें गंगा स्थित होगई, जिनका नाम मंदाकिनी प्रसिद्ध हुआ ।

कालिंजर ।

तमोलियाके स्टेशनसे ८ मील पश्चिमोत्तर (मानिकपुरसे ३७ मील) बदौसाका रेलवे स्टेशन है । बदौसा बगई नदीके किनारेपर पश्चिमोत्तर देश बुंदेलखण्डके बांदा जिलेमें तहसीलीका सदर स्थान है, जहांसे घी, रुई और गल्ले दूसरे स्थानोंमें जाते हैं ।

बदौसासे १८ मील और बांदा कसबेसे ३३मील दक्षिण बदौसा तहसीलीमें समुद्रसे १२३० फीट ऊपर कालिंजरका कसबा और प्रसिद्ध पहाड़ी किला है । यह २५ अंश १ कला उत्तर अक्षांश और ८० अंश ३१ कला ३५ विकला पूर्व देशान्तरमें स्थित है ।

कालिंजर क़सबा, जो उस देशमें तरहटी कहलाता है, पहाड़ीके पादमूलके निकट है; जिसमें सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ३७०६ मनुष्य थे। निवासी खास करके ब्राह्मण और काछी हैं, परंतु मेलों और तिहवारोंके समय बनिये और अनेक भांतिके काम करनेवाले और भारतवर्षके दूर दूरसे यात्री यहां आते हैं । क़सबेमें कई एक धनी महाजन हैं । क़सबेके पूर्व दरवाजेके पास युरोपियन मुसाफिरोंके रहनेके लिये बंगला बना है । क़सबेमें बाजार, एंगलोबरनेक्यूलर स्कूल और एक छोटा अस्पताल है। पहाड़ीके पादमूलके निकट पूर्वोत्तर चट्टान में काट करके बनाहुआ और पत्थरकी सीढ़ियोंसे घेराहुआ सुरसरि गंगा नामक तालाब है । क़सबा पहले दीवारसे घेरा हुआ था, अबतक ३ फाटक खड़े हैं, जिनके नाम कामदा फाटक, रीवां फाटक और पन्ना फाटक हैं ।

क़िलेमें देवस्थान और देव मूर्त्तियां ।

क़िला–यह बुंदेलखण्डके बहुत पुराने किलोंमेंसे एक है । इसकी नेव २५ फीट मोटी है । सुरसारि गंगा तालाबके पूर्वोत्तर पहाड़ीके आधे रास्तेमें ढालपर बलखंडेश्वर महादेवका स्थान

है। पहाड़ी काटकर चक्करदार मार्ग ऊपरको बना है। उत्तरसे ७ फाटकोंसे होकर किलेमें जाना होता है। (१) आलम दरवाजा। (२) गणेश दरवाजा, (३) चंडी दरवाजा, (४) बलभद्र दरवाजा। आगे चट्टानमें काटाहुआ ४५ गज लंबा और १० गज चौड़ा भैरवकुण्ड नामक तालाब है, जिससे ३० फीट ऊपर भैरवकी बड़ी प्रतिमा चट्टानमें बनवाईहुई है। इसके नीचे चट्टान काटकर बनीहुई एक गुफा है, जिसके आगे चौकोने खंभे बने हैं। वर्षाकाल और जाड़ेकी ऋतुओंमें गुफाकी सतहपर पानी रहता है। गुफाके बाहर शिलालेख है, जिसमें वारिवर्मा देव, सुरहरि देवका पुत्र श्रीरामदेव, महिला और जाहुलका भाई और लाखनका पुत्र जस धवलके नाम हैं। अंतवालेका समय संवत् ११९३ है। लाखन और महिलाका नाम चौहान और चंदेलोंकी लड़ाइयोंका स्मरण कराता है। आगे (५ वां)हनुमान फाटक है, जिसके निकट हनुमानकुंड और किलेके इस हिस्सेमें बहुतेरी बनावट और लेख हैं। लेखोंमेंसे एकमें चंदेल राजपूत कीर्तिवर्मा मदनवर्माका नाम पढ़ा जाता है। (६ वां) लाल दरवाजा और (७ वां) फाटक सदर दरवाजा कहा जाता है।

कोटके भीतर पत्थर काटकर बनीहुई कोठरीमें पत्थरका सीतासेज है, जिसको सज्जा भी कहते हैं। दरवाजेके ऊपर चौथी सदीके अक्षरका शिलालेख है। लिखा है कि इस गुफाके पहाड़के मालिक हाराने अपने नामके स्मरणार्थ बनवाया। इसके पश्चात् पाताल गंगाका रास्ता मिलता है। उतराई खड़ी और कठिन है। पाताल गंगा लगभग ४० फीट लंबी और इससे आधी चौड़ी पहाड़में एक गुफा है। इससे आगे पांडु कुंड है, जिससे आगे एक मार्ग कोटकी भीतके साथ बुद्धि तालावको गया है। इसके बाद भगवानसेज और पानीकी अमन है। मृगधारा एक प्रसिद्ध स्थान है, जहां दो चट्टानी कोठरी एक पानीका कुण्ड और चट्टानोंमें ७ हरिन बने हैं। पुराणमें लिखा है कि ७ ऋषि थे, जो अपने गुरुके शापसे जन्मान्तरमें कालिंजरमें हरिन हुए। यात्रीगण हरिणकी प्रतिमाओंकी पूजा करते हैं। कोटितीर्थसे मृगधारामें जल आता है। किलेके मध्य भागमें पत्थरमें कोटितीर्थ एक बड़ा तालाब है। तंग सीढ़ियोंसे पानीके निकट जाना होता है। किनारे पर पत्थर महल और दूसरी पुरानी इमारतें हैं, जिनमें बहुतेरे लेख हैं।

कोटितीर्थसे आगे जानेपर परिमालका बैठक और अमनसिंहका महल मिलता है।

उतरते हुए दूसरा फाटक मिलता है, जिसके निकट दीवारमें लगीहुई जैन तीर्थकरोंकी सुन्दर प्रतिमा हैं। इसके बाएं मुसलमानोंकी एक छोटी इमारत है। इससे आगे नीलकंठके पास पहुँचनेसे प्रथम जटाशंकर, क्षीरसागर, तुंगभैरव और कई एक गुफा मिलती हैं। यहां बहुत शिलालेख हैं। एक गुफाके लेखमें है कि, चैत्र सुदी नौमी सोमवार संवत् ११९२ रलहनके पुत्र नरसिंहने वामदेवकी प्रतिमा स्थापित की। दूसरे लेखमें ज्येष्ठ सुदी नौमी संवत् ११९२ और उसके दादा दीक्षित पृथ्वीधरका नाम है। तीसरे लेखमें है कि श्रीकीर्तिवर्मा देव और सोमेश्वर (पृथ्वीराजका पिता) देव दर्शनके लिये आए। तुंगभैरवके पास लिखा है कि कार्तिक सुदी ६ शनिवार संवत्११८८ में महाश्राणिकका पुत्र सोधनका पोता और मदनवर्माका नौकर वचराजने लक्ष्मीकी मूर्तिको स्थापित किया।

इस स्थानके चारोंओर वैष्णव और शैव दोनोंकी बहुतेरी देवप्रतिमा हैं। नीलकंठ महादेवका मन्दिर एक समय सात मंजिला था, परन्तु अब केवल खंभोंपर एक मंजिलका है,

जिसमें नीलकंठ बड़ा शिवलिंग है। मन्दिरके दरवाजेके पास लेखोंसे छिपेहुए दो बडे पत्थर हैं। खंभोंके बीचकी जगहोंमें बहुतेरे यात्रियोंने अपने नाम खोदवाए हैं।

मन्दिरसे ऊपर चट्टानमें काटाहुआ एक छोटा तालाब है, इससे बाद लगभग ३० फीट ऊंची कालभैरवकी प्रतिमा मिलती है।

किलेमें मुसलमानोंके बहुतेरे मकबरे हैं, परन्तु कोई सुन्दर नहीं हैं।

इतिहास।

देशी कहावतके अनुसार चंदेल वंशके कायम करनेवाले चंद्रवर्माने ३ री अथवा ६ वीं सदीमें कालिंजरके किलेको बनवाया। किलाबंदी कुछ स्वाभाविक और कुछ बनवाई हुई है। किले बननेसे पहिले हिन्दू मन्दिरोंसे अवश्य पहाडी छिपी होगी, क्योंकि पवित्र स्थानोंपर लेखोंकी तारीखें किलेके फाटकके लेखोंसे पहिलेकी हैं। फिरिस्ता कहता है कि ७ वीं सदीमें महम्मद साहेबके समयके रहनेवाले केदारनाथने इसको बनवाया। मुसलमान इतिहास वेत्ताओंने बयान किया है कि कालिंजरका राजा ९७८ ई० के आक्रमणमें लाहौरके राजा जयपालका एक मित्र था। सन १००८ में आनंदपालने ग़जनीके महमूदके ४ थे आक्रमणको रोकनेके लिये उससे पेशावरमें युद्ध किया, तब कालिंजरका राजा भी वहां वर्त्तमान था। सन १०२१ में कालिंजरके राजा नन्दाने कन्नौजके राजाको परास्त किया। सन १०२२ में ग़जनीके महमूदने किलेपर घेरा डाला था, परन्तु राजाके साथ मेल होगया। चंदेल राजा दिल्लीके पृथ्वीराजसे परास्त होनेके पश्चात् लगभग सन ११९२ ई० में अपने राज्यशासनके बैठकको कालिंजरमें हटा ले गया। सन १२०३ में महम्मद ग़ोरीके राजप्रतिनिधि कुतुबुद्दीनने कालिंजरको ले लिया और कई मन्दिरोंके स्थानोंपर मसजिदें बनवाई, परन्तु मुसलमानोंका अधिकार वहां बहुत दिनोंतक नहीं रह सका। पीछे कई बार मुसलमानोंने कालिंजरपर चढ़ाई की।

सन १५३० से १२ वष तक समय समयपर मोगल बादशाह हुमायूं कालिंजरके किलेपर आक्रमण करता रहा। सन १२४५ में अफगान शेरशाहने कालिंजरपर आक्रमण किया, जो किलेपर धावा करते समय मारागया, परन्तु किलेको मुसलमानोंने ले लिया और शेरशाहके पुत्र जलालके सिरपर छत्र रक्खागया। सन १५७० में मजनूखांने किलेपर आक्रमण किया। अंतमें किला अकबरको मिला। कालिंजर अकबरके अधीन राजा बीरबलका जागीर बना। पीछे यह बुंदेलोंके हाथमें गया और छत्रशालके मरनेपर पन्नाके हरदेवशाहके अधिकारमें आया। पीछे ४ पुस्त तक उसी घरानेमें रहा, जिसके पीछे कालिंजर क़ायमजीको मिला। उसके पश्चात् कायमजीके प्रतिनिधि दरियावसिंहके अधिकारमें आया। पहले अंगरेजी सरकारने दरियाव सिंहके अधिकारको दृढ़ किया था, परन्तु सन १८१२ में उसके कामसे अप्रसन्न होकर एक फौज कालिंजरको भेज दी। ८ दिनके पीछे दरियावसिंहने देशके आधे हिस्सेको और किलेको देकर मेल करलिया। सन १८५७ के बलवेके समय किलेकी थोड़ी अंगरेजी सेनाने किलेपर अधिकार क़ायम रक्खा। सन १८६६ में तोड़कर किला बे काम कर दिया गया।

संक्षिप्त प्राचीन कथा।

महाभारत–(वनपर्व्व–८५ वां अध्याय) मेधाविक तीर्थके पास कालिंजर नामक पर्वत है, जहां देवह्रद तीर्थमें स्नान करनेसे सहस्र गोदानका फल होता है।

लिंगपुराण-(पूर्वार्द्ध-२४ वां अध्याय) शिवजी बोले २३ वें द्वापरमें श्वेत नामक हमारा अवतार होगा, तब हम जिस पर्वतपर कालको जीर्ण (विनष्ट) करेंगे वह कालिंजर कहलावेगा।

कूर्म्मपुराण-(ब्राह्मी संहिता-उत्तरार्द्ध, ३५ वां अध्याय) जगत्में कालिंजर नामक एक महातीर्थ है, वहां संहारकर्ता भगवान् महेश्वरने कालको जीर्ण करके फिर जिला दिया था।

शिवपुराण-(८ वां खण्ड-दूसरा अध्याय) चित्रकूटसे दक्षिण तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध कालिंजर पर्वत है, जहां बहुतोंने तप करके सिद्धि पाई है।

अजयगढ़।

कालिंजरसे १६ मील पश्चिम बुंदेलखंडके एक छोटे देशी राज्य "अजयगढ़" का किला है। राज्यके उत्तर चरखारी राज्य और बांदा जिला, दक्षिण और पूर्व पन्ना राज्य और पश्चिम छत्तरपुर राज्य है। सन १८८१ में राज्यका क्षेत्रफल ८०२ वर्गमील था। और ३२१ बस्तियों में ८१४५४ मनुष्य बसे थे। जिनमें ७८४२७ हिन्दू, २७६८ मुसलमान, २१४ जैन और ४५ दूसरे थे। पहाड़ी पर १७४४ फीट समुद्रके जलसे ऊपर पत्थरका ९ वीं सदीका बनाहुआ पुराना किला है, जिसके चारोंओरका चेहरा करीब ५० फीट ऊंचा है। पहाड़ीके उत्तरी पादमूल पर नव शहरमें राजा रहते हैं। राज्यकी मालगुजारी २२५००० रुपया और सैनिक बल १५० सवार, १००० पैदल, १६ तोप और ५० गोलंदाज हैं।

इतिहास।

राजा छत्रशालकी मृत्यु होनेके पश्चात् लगभग सन १७३४ ई० में बुंदेलखंडके बटने पर उसके लड़के जगतरायके हिस्सेमें अजयगढ़के चारोंओरका देश शामिल था, परन्तु सन १८७० में महाराष्ट्रोंने इसको छीन लिया। सन१८०३ में जब बुन्देलखंडका हिस्सा अंगरेजोंको मिला, तब अंगरेजी फौज अजयगढ़को भेजी गई, परन्तु किलेके गवर्नरने घूस लेकर लक्ष्मण दावाको किलादे दिया, जिसका कबजा अंगरेजोंने दृढ़ किया। पीछे सन १८०९ में अंगरेजोंने किलेको जीत कर पहला बुन्देला हुकूमत करनेवाला बख्तासिंहको किले और राज्यको देदिया। उसके प्रतिनिधि अबतक सवाई महाराजकी पदवीके साथ राज्य करते हैं और ७०१० रुपया खिराज देते हैं। सन्मानके लिये यहांके राजाओंको ११ तोपोंकी सलामी मिलती है।

छत्तरपुर।

अजयगढ़के दक्षिण ओर बांदासे सागर जानेवाले मार्गपर बांदासे ७० मील दक्षिण पश्चिम बुन्देलखंडमें छोटे देशी राज्यकी राजधानी छत्तरपुर है, जहां रेलवे नहीं है। यह २४ अंश ५४ कला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश ३८ कला पूर्व देशान्तरमें स्थित है।

इस सालकी जनसंख्याके समय छत्तरपुरमें १२९५७ मनुष्य थे। जिनमें १०३४८ हिन्दू, २०९५ मुसलमान, २८६ जैन, और २२८ एनिमिष्टिक।

बुन्देलखण्डकी (थोड़े दिन रहने वाली) स्वाधीनताको क़ायम करनेवाला प्रसिद्ध राजा छत्रशाल था। जिसके नामसे इस क़सबेका नाम छत्तरपुर पड़ा, जिसका ५ गुंबजवाला सुन्दर समाधि-मन्दिर यहां है और फैलेहुए छत्रशालके महलकी निशानियां हैं।

राज्य—राज्य हमीरपुर जिलेके दक्षिण है। ढासन और केन नदी सीमापर हैं। राज्यका क्षेत्रफल ११६९ वर्गमील और माल गुजारी २५०००० रुपये हैं। जनसंख्या सन १८८१ ई०

में १६४३७६ थी, जिनमें १५८१०८ हिन्दू, ५५१० मुसलमान, ७४५ जैन और ९ कृस्तान ३१५ गांवोंमें बसते थे।

राजवंश पँवार राजपूत हैं। राजा विश्वनाथसिंह बहादुर (२४ वर्ष वयके) वर्तमान नरेश हैं। इनके पूर्व पुरुषोंने महाराष्ट्रोंके लूट पाटके समय राजा छत्रशालके वंशधरोंसे इस राज्यको छीन लिया सन १८२७ में छत्तरपुरके प्रधानको राजाकी पदवी मिली। यहांके राजाका सैनिक बल ६२ सवार, ११७८ पैदल और पुलिस, ३२ तोपें और ३८ गोलन्दाज हैं। ११ तोपोंकी सलामी मिलती है।

इस राज्यमें नवगंग छावनी (जन-संख्या १०९०२) बड़ी बस्ती है।

बिजावर।

उरछा राज्यसे उत्तर बुंदेलखंडमें बिजावर एक छोटा देशी राज्य है, जिसका क्षेत्रफल ९७३ वर्गमील है। सन् १८८१ ई० में २९८गावोंमें ११३२८५ मनुष्य थे, अर्थात् १०८२४६ हिन्दू, २५०६ जैन, २४०५ मुसलमान १२३ आदि निवासी और ५ कृस्तान। राज्यकी माल-गुजारी २२५००० रुपया थी। देश पहाड़ी है। लोहावाले पत्थर बहुत होते हैं। प्रधान कसबा बिजावर छत्तरपुरसे दक्षिण ओर है।

इतिहास।

सन १८११ में अंगरेजी सरकारने बिजावरके राजा रतनसिंहके अधिकारको दृढ़ किया। सन १८५७ के बलवेंकी खैरख्वाहीके समयसे बिजावरके राजाओंको सन्मान सूचक ११ तोपोंकी सलामी मिलती है। इनको सन १८६६ में महाराजकी पदवी मिली। राजा छत्रशा-लके पुत्र जगतराज; जगतराजके पुत्र बीरसिंह देव थे। जिनके वंशधर वर्तमान बिजावर नरेश सवाई महाराज भानुप्रतापसिंह बुंदेला राजपूत हैं। इनका सैनिक बल १०० सवार, ८०० पैदल, ४ तोप और ३२ गोलंदाज हैं।

पन्ना।

बांदासे जब्बलपुर जो सडक गई है, उसके निकट (कालिंजरसे दक्षिण) बांदा कसबेसे ६२ मील दक्षिण बुंदेलखंडमें देशी राज्यकी राजधानी पन्ना एक कसबा है। यह २४ अंश ४३ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश १३ कला ५५ विकला पूर्व देशान्तरमें स्थित है,

इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय पन्नामें १४७०५ मनुष्य थे। अर्थात् ११७४१ हिन्दू २१८० मुसलमान, ५७२ एनिमिष्टिक, १५८ जैन ४२ सिक्ख और १२ कृस्तान।

पन्ना समुद्रसे ११४७फीट ऊपर प्रायः पूरे तरहसे पत्थरसे बना हुआ सुंदर कसबा है। जिसमें एक नया राजमहल और नवीन बनाहुआ बलदेवजीका मन्दिर और कई एक बड़े देवमन्दिर हैं।

पन्ना राज्य—यह मध्य भारत-बुन्देलखंड एजेंसीके पोलिटिकल सुपरिंटेंडेंटके अधीन देशी राज्य है। इसके उत्तर अंगरेजी बांदा ज़िला और चरखारी राज्यके डिविजनोंमेंसे एक पूर्व कोठी, सुहावल, नागौड़ और अजयगढ़ राज्य, दक्षिण मध्य प्रदेशमें दमोह और जबलपुर जिले और पश्चिम छत्तरपुर और अजयगढ़ राज्य हैं।

राज्यका क्षेत्रफल २५६८ वर्गमील है। विन्ध्यघाटके ऊपर ऊंची भूमि पर राज्यका अधिक भाग है। अधिक भूमि पहाड़ी और जंगली है। मालगुजारी ४५०००० रुपया है।

यह राज्य हीरेकी खानके लिये प्रसिद्ध है। चट्टानोंके प्रायः पंद्रह बीस फीट नीचे बहुमूल्य पत्थर मिलता है, जिसके लिये कई एक महीनोंके परिश्रमकी आवश्यकता है। पहिले के समान अब हीरे नहीं निकलते हैं, तौभी प्रतिवर्ष लगभग १००००० रुपयेका हीरा निकाला जाता है।

सन १८८१में राज्यमें एक कसबा, ८६७ गांव और २२७३०६ मनुष्य थे, जिनमें २०३४२५ हिन्दू १६६०९ आदि निवासी, ५९८९ मुसलमान, १२७१ जैन, ९ कृस्तान, और ३ पारसी थे। आदि निवासीमें गोंड और कोल दो जाति हैं।

इतिहास।

पन्नाके राजाका आदि पुरुष प्रसिद्ध राजा छत्रशालके पुत्रोंमेंसे एक हरदीशाह है। जब अंगरेजोंने बुन्देलखंडमें प्रवेश किया, तब राजके प्रधान राजा किशोरसिंह थे। उस समय राज्य पूरे हलचलमें था। अंगरेजी सरकारने सनदों द्वारा राजाके अधिकारको दृढ किया। सनदें सन १८०७ और १८११ में मिलीं। सन १८५७ के बलवेकी खैरख्वाहीमें राजाको २०००० रुपयेके इज्जतकी पोशाक मिली और १३ तोपोंकी सलामी मिलनेकी आज्ञा हुई। सन १८७० ई० में वर्त्तमान पन्नानरेश महाराज सर रुद्रप्रतापसिंह बहादुर के. सी. एस. आई. राजा हुए। और १८७६ में प्रिंस आफ वेल्सने इनको के. सी. एस. आई की पदवी दी। महाराज ४२ वर्षकी अवस्थाके बुन्देला राजपूत हैं इनका सैनिक बल २५० सवार, २४४० पैदल, १९ तोपें और ६० गोलंदाज हैं।

सातवाँ अध्याय।

वान्दा, महोबा, चरखारी, जयतपुर; मऊरानीपुर, उरछा, टिहरी, और झांसी।

बान्दा।

बदौसा स्टेशनसे २५ मील (मानिकपुर जंक्शनसे ६२ मील पश्चिमोत्तर) बान्दाका रेलवे स्टेशन है। बान्दा पश्चिमोत्तर देशके इलाहाबाद विभागमें जिलेका सदर स्थान केन नदीके दाहिने किनारेसे १ मील पूर्व एक कसबा है। यह २५ अंश २८ कला २० विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश २२ कला १५ विकला पूर्व देशान्तरमें स्थित है।

इस सालकी जन-संख्याके समय बान्दामें २३०७१ मनुष्य थे; अर्थात् १६५२२ हिन्दू ६२६४ मुसलमान, २११ जैन, ५५ कृस्तान, १६ सिक्ख, २ बौद्ध, और १ दूसरे।

बान्दाका नवाब सन १८५८ ई० में बलवेके अपराधसे निकाल दिया गया, तबसे इस शहरकी घटती होती जाती है। बान्दामें १६१ देवमन्दिर, ६६ मसजिद और ५ जैनमन्दिर (जिनमें कई उत्तम) हैं। जिलेकी कचहरियां, जेलखाना, अस्पताल, गिरजा और स्कूल हैं।

शहरसे १ मील फतहपुर रोडपर छावनी है। नदीके बाएं किनारे रेलवे पुलके पास भूरागढ़ नामक पुराना किला उजाड़ पड़ा है, जिसको सन १७८४ में गुमानसिंहने बनवाया था।

बान्दा जिला—इसके पूर्वोत्तर और उत्तर यमुना नदी; पश्चिम केन नदी, हमीरपुर जिला और गौरिहरका देशी राज्य; दक्षिण और दक्षिण-पूर्व पन्ना, चरखारी और रीवां देशी राज्य और पूर्व इलाहाबाद जिला है।

जिलेका क्षेत्रफल ३०६१ वर्ग मील है। इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय जिलेमें ७०५९०७ मनुष्य थे, जिनमें ३५७०८५ पुरुष और ३४७८२२ स्त्रियां थीं। जिलेमें चमार, ब्राह्मण, राजपूत और अहीर अधिक हैं (चमारकी संख्या सब जातियोंसे अधिक है इससे वह प्रथम लिखा गया)।

बान्दा जिलेके ३ कसबोंम सन १८८१ में ५००० से अधिक मनुष्य थे। बान्दामें २८९७४, राजापुरमें ७३२९ और मताउंधमें ६२५८।

महोबा।

बांदासे २० मील (मानिकपुरसे ८२ मील) पश्चिम कबराईका स्टेशन है, जहां चन्देल राजा वब्राहमका बनवाया हुआ ब्रह्मताल नामक तालाब है। अब यह थोड़ा गहरा है। इसके किनारे बहुतेरे पुराने मन्दिर और मकानोंकी निशानियां देख पड़ती हैं।

कबराईसे १३ मील और बांदासे ३३ मील (मानिकपुरसे ९५ मील) पश्चिम महोबा का स्टेशन है। महोबा हमीरपुर जिलेमें तहसीली मुकाम और पुराना कसबा है। यह २५ अंश १७ कला ४० विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश ५४ कला ४० विकला पूर्व देशान्तरमें है। बांदासे सागरको और हमीरपुरसे नवगंगको महोबा होकर सड़कें गई हैं। महोबासे ५४ मील उत्तर हमीरपुर कसबा है। महोबामें सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ७५६७ मनुष्य थे।

चन्देल राजपूत राजा चन्द्रवर्माने सन इस्वीके ८ वें शतकमें इसको बसाया और यहां महोत्सव यज्ञ किया, इससे इसका नाम महोबा पड़ा। चन्देल राजाओंकी बनवाई हुई मदन सागर नामक झीलके किनारे पर यह बसा है। इसके ३ हिस्से हैं; एक मध्य पहाड़ीके उत्तर पुराना किला, दूसरा पहाड़ीके शिरपर भीतरीका किला, और तीसरा दक्षिण ओर दरीबा।

चन्देलोंके समयकी कारीगरीको दिखलाती हुई आस पासमें बहुत पुरानी इमारतें हैं। चन्द्रवर्मा जिस स्थानपर मरा, वहां रामकुण्ड है। किले उजाड़ पड़े हैं। मदनवर्म्माका बनवाया हुआ मुम्बादेवीका मन्दिर है, जिसके दरवाजेके आगे पत्थरके स्तम्भपर मदनवर्म्माका लेख है। बनवाई हुई झीलोंमेंसे दो भर गई हैं, परन्तु ११ और बारह शतकोंके बनेहुए कीर्ति–सागर और मदन–सागर अभीतक गहरे और स्वच्छ पानीवाले हैं। किनारोंपर और टापुओंमें उजड़े पुजड़े मन्दिर, चट्टान काटकर बनीहुई बड़ी बड़ी प्रतिमाएँ और बहुतेरे पुराने मन्दिरोंकी निशानियां देख पड़ती हैं। पहाड़ियोंपर पूर्व समयके राजपूतोंके गर्मीके दिनोंमें रहनेके मकान और देवस्थान हैं। मुसलमानी अमलदारीका बनाहुआ जालनखांका मकबरा और मसजिद है।

नई बस्तीमें तहसीली, पुलिस स्टेशन, पोष्ट आफिस, अस्पताल और स्कूल हैं।

इतिहास।

चंदेलोंकी प्रधानताके समय ९ वीं सदीसे १४ वीं तक महोबा उस कुलकी राजधानी था चंदेलोंने कसबेको और इसके पड़ोसको उत्तम मकानोंसे संवारा जिनकी बहुत निशानियां अब तक हैं। २० वां प्रधान पिछला राजा परमाल सन ११८३ ई० में दिल्लीके राजा पृथ्वीराजसे

परास्त हुआ । इसके पश्चात् चंदेल राजकुमारोंने महोबाको छोड़कर कालिंजरके पहाड़ी किलेमें अपनी राजधानी बनाई । लगभग १२ वर्ष पीछे शहाबुद्दीन ग़ोरीके जनरल कुतुबुद्दीनने महोबाको जीत लिया और ५०० वर्ष मुसलमानोंके हाथमें रहा । सन १६८० में जिला छत्रशालके अधीन हुआ । उसके मरनेपर लगभग सन १७३४ में एक तिहाई राज्य पेशवाको मिला जिसका एक हिस्सा महोबा बना ।

प्रसिद्ध कवि चन्दवरदाई कृत पृथ्वीराज रायसामें लिखा है कि (बारहवें शतकमें) दिल्लीके महाराज पृथ्वीराजकी सेना मार्ग भूलकर महोबेमें पहुँची । वहां ऊदलसे घोर युद्ध हुआ । पृथ्वीराजकी सेना परास्त हुई, तब पृथ्वीराज स्वयं लड़नेको आए । उन्होंने जयचन्द राठौरकी ५०हजार सेना, लाखन, ऊदल, ब्रह्मादित्य और चन्देलोंको परास्त करके बहुतेरोंको कालिंजरके किलेमें कैद किया और अपने सामन्त पज्जूको महोबेमें छोड़ कर बहुत द्रव्य ले दिल्लीमें आए ।

चरखारी ।

बान्दासे ग्वालियर जानेवाली सड़कके पास रेलवे सड़कसे कई एक मील दक्षिण बुन्देलखंडमें एक छोटी देशी राजधानी चरखारी है । यह २५ अंश २४ कला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश ४७ कला पूर्व देशान्तरमें स्थित है । कसबेके निकट एक बड़ी झील है । एक तालाब आस पासके मैदानको पटाता है । पहाड़ीपर छोटा किला है, जिसमें जानेके लिये चट्टानमें काटकर बनी हुई सीढियों द्वारा मार्ग है । चरखारीमें १० वर्षसे प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ल प्रतिपदासे पूर्णिमां तक गोवर्द्धननाथजीका मेला होता है ।

चरखारी राज्य-अजयगढ़ राज्यके उत्तर बुन्देलखंडमें चरखारी राज्य है सन १८८१ में राज्यका क्षेत्रफल ७८७ वर्गमील और मनुष्य-संख्या १४३०१५ थी; जिनमें १३५६३५ हिन्दू, ६२७४ मुसलमान, ९४५ आदि निवासी, १०० जैन और ६२ दूसरे थे । राज्यकी वार्षिक मालगुजारी ५००००० रुपया है ।

इतिहास ।

राजा बीजी बहादुरको अंगरेजी सरकारकी अधीनता स्वीकार करनेके पश्चात् सन१८०४ ई० में सनद मिली और सन १८११ में वह दृढ़ की गई बलवेकी खैरख्वाहीमें उस समयके राजाको २०००० रुपया वार्षिक आयकी भूमि और सन्मानके लिये ११ तोपोंकी सलामी मिलनेकी आज्ञा मिली । चरखारीके वर्तमान नरेश३८ वर्षकी अवस्थाके महाराजाधिराज जयसिंह देव हैं ।

जयतपुर ।

महोबासे १४ मील पश्चिम (मानिकपुर जंकशनसे १०९ मील) कुल पहाड़का स्टेशन है, जहां तहसीली, थाना, सराय स्कूलें, कई मन्दिर, मसजिद और तालाब और एक टूटा हुआ किला है ।

कुल पहाड़से ५ मील और महोबासे १९ मील पश्चिम (मानिकपुरसे ११४ मील) हमीपुर जिलेमें जैतपुरका स्टेशन है जिससे १ मीलपर बेला तालके किनारे २ मीलकी लम्बाईमें कई टुकड़ोंमें जैतपुर बस्ती है, जिसको सन ई० के अठारवीं शताब्दीके आरम्भमें प्रसिद्ध बुन्देलाराजा छत्रशालके पुत्र जगतराजने बसाया । राजा छत्रशालने बड़े क़िलेको बनवाया एक चन्देल राजाने सन ई० की ९ वीं शताब्दीमें बेला तालको बनवाया था यह ५ मीलके घेरेमें अब बहुत कम गहरा है । इसका बान्ध सन १८६९ ई० में फट गया ।

जैतपुरमें एक सुन्दर मन्दिर और एक छोटा और एक बड़ा दो पुराने क़िले हैं ।

मऊ रानीपुर।

जैतपुरके स्टेशनसे २७ मील (मानिकपुर जंकूशनसे १४१ मील) पश्चिम मऊ रानीपुरका रेलवे स्टेशन है। मऊ रानीपुर झांसी जिलेके दक्षिणपूर्वकी तहसीलका सदर और व्यापारका स्थान एक म्युनिस्पल कसबा है।

इस सालकी जन-संख्याके समय इसमें १९६७५ मनुष्य थे, जिनमें १७४१८ हिन्दू, १८१३ मुसलमान, ४४३ जैन और १ कृस्तान थे।

मकानोंमें बहुतेरे खूबसूरत मकान हैं। एक अस्पताल, एक सराय और कई धर्मशाला हैं। बाजारके पास पुराने किलेमें सरकारी आफिस हैं।

यह पहले एक गांव था जो सन १७८५ ई० से बढ़ा है। हालमें इसकी तिजारतकी बड़ी तरक्की हुई है। खडुआ कपड़ा यहां बनकर भारतके सब प्रदेशोंमें जाता है। रानीपुर कसबा मऊ रानीपुरसे ४ मील दूर है जिसके साथ यह एक म्युनिसिपलिटी बनता है।

उरछा।

मऊ रानीपुरसे २७ मील (मानिकपुरसे १६८ मील) बड़वा सागरका स्टेशन है। उरछाके राजा उदितसिंहने सन १७०५ और १७२३ ई० के बीचमें बड़वासागर झीलको बनवाया, जिसका बान्ध ½ मील लम्बा है। नीचे ४ मील फैलीहुई भूमिपर आम और दूसरे वृक्ष लगे हैं, जिनमें बहुतेरे बहुत पुराने और बहुत बड़े हैं। झीलके किनारेपर बड़वासागर नामक बड़ी बस्ती ३ टुकड़े होकर बसी है, जिसके पश्चिमोत्तर उदितसिंहका बनवायाहुआ पुराना किला है, जिसमें अब डाक बंगला है। सन १८८१ की जनसंख्याके समय बड़वासागरमें ६३१५ मनुष्य बसे थे।

बड़वासागरसे ६ मील आगे उरछाका स्टेशन है। उरछा मध्य भारतके बुन्देलखण्डमें टिहरीकी पुरानी राजधानी वेतवा (वेत्रवती) नदीके दोनों किनारोंपर बसा है, जो प्रायः अब छोड़ दिया गया है। यह २५ अंश २१ कला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश ४२ कला पूर्व देशान्तरमें स्थित है।

सन १५३१ ई० में राजा रुद्रप्रतापने अपनी राजधानी कोरड़को छोड़ उरछाको बसाकर उसको राजधानी बनवाई। नदीके तीर राजमहल, एक किला और राजाओंकी छतरी (समाधिमन्दिर) हैं। दिल्लीका बादशाह जहांगीर जब उरछा देखनेको आया, उस समय यहांके राजा वीरसिंहदेवने उसके रहनेको एक उत्तम महल बनवाया जो अबतक स्थित है।

टिहरी वा टीकमगढ।

उरछाके रेलवे स्टेशनसे ४० मील दूर उरछा राज्यके दक्षिण-पश्चिम कोनेमें इसकी वर्तमान राजधानी टिहरी वा टीकमगढ़ है, जहां रेलवे नहीं गई है। उरछासे टिहरी तक सड़क है।

इस सालकी जन-संख्याके समय इसमें १७६१० मनुष्य थे, अर्थात् १२३६३ हिन्दू, ३६६५ मुसलमान, ९३० जैन, ६४९ एनिमिष्टिक और ३ कृस्तान।

टीकमगढ़में राजाके महलके अतिरिक्त कोई अच्छा मकान नहीं है। टीकमगढ़का किला कसबेके भीतर है।

उरछा राज्य–राज्यके पश्चिम झांसी और ललितपुर जिले, दक्षिण ललितपुर जिला और पन्ना और बिजावर देशी राज्य, पूर्व बिजावर, चरखारी और गरबली राज्य हैं ।

सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय राज्यमें ३११५१४ मनुष्य थे । जिनमें २९४७१४ हिन्दू, ९५६० मुसलमान, ७२३३ जैन, और ७ दूसरे ।

यह राज्य बुन्देलखण्डके देशी राज्योंमें सबसे पुराना और प्रतिष्ठामें बड़ा है । बुन्देलखण्डमें केवल उरछा राज्यमें टकसाल है । बगावतके समय उरछा खैरख्वाह रहा, इससे इसका खिराज माफ करदिया गया ।

राज्यका क्षेत्रफल १९३४ वर्गमील और मालगुजारी ९ लाख रुपये हैं ।

देशके अधिक हिस्से पहाड़ी, जंगली, कम उपजाऊ और कम आबादी हैं । महाराजके पूर्वजोंके बनवाए हुए कई बड़े तालाब हैं ।

इतिहास ।

सन १८१२ ई० में उरछाकी हुकूमत करने वाले राजा विक्रमादित्यसे अंगरेजी सरकारकी संधि हुई । सन १८३४ में राजाके मरनेपर दत्तक पुत्र सुजनसिंह राजा हुए । जो तुरंतही मरगए, तब उनकी विधवाने हमीरसिंहको गोद लिया । राजा हमीरसिंहके मरनेके उपरांत सन १८७४ में उनके छोटे भाई वर्तमान उरछा नरेश महाराज महीन्द्र सवाई प्रतापसिंह बहादुर उत्तराधिकारी हुए । इनको सन १८६५ में महाराजकी और सन १८८२ में सवाईकी पुश्तहानी पदवी मिली । महाराज ३२ वर्ष अवस्थाके बुन्देला राजपूत हैं उरछाके राजाओंको १५ तोपोंकी सलामी मिलती है । सैनिक बल २०० घोड़ेसवार, ४४०० पैदल, ९० तोप और १०० गोलंदाज हैं । (झांसीके इतिहासमें देखो) ।

बुन्देलखण्ड राज्य–यमुना नदी और मध्य प्रदेशके मध्यमें बुन्देलखण्ड है । इसकी पश्चिमी सीमा चम्बल नदी और पूर्वी सीमा रीवां राज्य है । इसमें कई अंगरेजी जिले और ३० के लगभग देशी राज्य हैं ।

सबसे पहिलेके निवासी गोंड खयाल किए जाते हैं । उनके बादके चंदेल राजपूत ईस्वी सनकी चौदहवीं शताब्दीके अन्तमें गढ़वा राजपूत आकर बसे, जो बुन्देला कहलाते थे । इसी कारणसे इस देशका नाम बुन्देलखण्ड पड़ा ।

सन १८८१ ई० में बुन्देलखण्डके देशी राज्योंका क्षेत्रफल १०२२७ वर्गमील और जनसंख्या १४१६५८० थी ।

बुन्देलखण्डके राज्योंमें उरछाकी आय ९००००, दतियाकी ९०००००, चर्खारीकी ५०००००, पन्नाकी ४५००००, छत्तरपुरकी २५००,०० अजयगढ़की २५०००० और बिजावरकी आय २२५००० रुपये है । दूसरे राज्य बहुत छोटे हैं ।

झांसी ।

उरछासे ७ मील (मानिकपुरसे १०१ मील पश्चिम कुछ उत्तर) झांसी जंक्शन स्टेशन है।

झांसी पश्चिमोत्तर प्रदेशमें किस्मत और जिलेका सदर स्थान बेतवा नदीसे कई मील पश्चिम पहाड़ी किलेके नीचे एक छोटा शहर है, जिसका टूटा हुआ घेरा ४ ३ मीलका है ।

दीवारकी मोटाई ६ फीटसे १२ फीट तक और ऊंचाई १८ से ३० फीटतक है। जिसमें ९ दरवाजे हैं। झांसी २५ अंश २७ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश ३७ कला पूर्व देशान्तरमें स्थित है।

इस सालकी जन-संख्याके समय झांसीमें ५३७७९ मनुष्य थे, अर्थात् ३०९८६ पुरुष और २२७९३ स्त्रियां, जिनमें ४०७१२ हिन्दू, १०२०७ मुसलमान, १५७५ कृस्तान, ९२१ बौद्ध, ३१० जैन, और ५४ पारसी थे। मनुष्य संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ७३ वां और पश्चिमोत्तर देशमें १५ वां शहर है।

शहरमें हल्दीगंज नामक नया चौक समचतुर्भुज बना है, जिसके चारों बगलोंमें एकही समान ८८ दुकानें और चारों दिशाओंमें ४ फाटक हैं। शहरमें एक ओर एकही जगह मीठे पानीके ५ कूप हैं, जिससे उस स्थानका नाम पञ्च कूंआ पड़ा है। इसके पास एक मन्दिर है, जहां मैं टिका था।

झांसीमें फौजकी बड़ी छावनी है, जिसमें ४ कम्पनी गोरी सेना और हिन्दुस्तानी रेजीमेंट है।

किला—शहरके पास मैदानमें एक पहाड़ी पर किला है, जहांसे शहर और चारों तरफके देश देख पड़ते हैं। किलेके नीचे पूर्व और उत्तर बगलमें शहर बसा है। किलेको पत्थरकी दीवार मोटाई १६ फीटसे २० फीट तक है। दक्षिण बगलको गोलोंसे बचानेके लिये एक पुस्ता बना है, जिसके पास १२ फीट गहरी और १५ फीट चौड़ी खाई है।

झांसी जिला—झांसी पश्चिमोत्तर देशमें एक कमिश्नरके आधीन एक डिवीज़न है, जिसमें जालौन, ललितपुर और झांसी ३ जिले हैं।

झांसी जिलेके उत्तर ग्वालियर और समथर और राज्य जालौन अंगरेजी जिला, पूर्व ढासन नदी, जो झांसीको हमीरपुर जिलेसे अलग करती है, दक्षिण ललितपुर जिला और उरछा राज्य और पश्चिम दतिया ग्वालियर और खनिया धाना देशी राज्य हैं। बेतवा ढासन और पाहुज ३ प्रधान नदी हैं। एक सड़क झांसीसे काल्पी होकर कानपुरको गई है।

जिलेका क्षेत्रफल १५६७ वर्गमील है। इस जिलेके ४ कसबोंमेंसे (झांसीके अतिरिक्त) मऊ रानीपुर में १९६७५, और गुरसराय, बड़ुवा सागर और भांडेरमें १०००० से कम मनुष्य हैं। इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय झांसी जिलेमें ४०९७०९ मनुष्य थे जिनमें २१४६४६ पुरुष और १९५०६३ स्त्रियां थीं।

इतिहास।

ई० सनकी १७ वीं शताब्दीके आरम्भमें बीरसिंह देव उरछा राज्यका शासन करता था। उसने अपनी राजधानीसे ८ मील पर झांसीका किला बनवाया। बीरसिंह देवने जहांगीरके कहनेसे बादशाह अकबरके प्रिय मंत्रीको मारडाला, इसलिये बादशाहने सन १६०२ ई० में सेना भेजकर देशको पैमाल और उजाड़ किया। बीरसिंह देव भाग गया, परन्तु सन १६०५ ई० में जब जहांगीर गद्दीपर बैठा, तब बीरसिंह देवका अपराध क्षमा हुआ। वह बादशाह जहांगीरका प्रिय बना रहा। सन १६२७ ई० में जहांगीरके पुत्र शाहजहांके बादशाह होनेपर बीरसिंह देव बागी हुआ। यद्यपि उसको अपने पहले राज्यपर अधिकार रखनेकी आज्ञा मिली, पर वह अपनी पहली स्वाधीनताको फिर नहीं प्राप्त करसका। पीछे उरछा राज्य कभी मुसलमानोंके हाथमें और कभी बुन्देला प्रधानोंके अधीन रहा।

सन १७३२ ई० में छत्रशालने महाराष्ट्रोंकी सहायता चाही, जो उस समय पहला पेशवा बाजीरावके अधीन मध्य देशपर चढ़ाई कर रहे थे, वे उसकी सहायताके लिये आए सन १७३४ ई० में राजा छत्रशालके मरने पर सहायताके बदलेमें राज्यका $\frac{1}{3}$ भाग महाराष्ट्रोंको दिया गया दिए हुए राज्यमें वर्तमान झांसी शामिल थी सन १७४२ में महाराष्ट्रोंने उरछा राज्य पर चढ़ाई करके उसको अपनी दूसरी मिलकियतोंमें मिला लिया ।

पेशवाके जनरल नारो शंकरने सन १७४४ ई० में यहांके किलेको दृढ़ किया और झांसी शहरको नियत करके उरछाके निवासियोंको यहां बसाया ।

पेशवाने सन १८१७ ई०में अपने हक़को ईष्ट इण्डियन कम्पनीको देदिया देशी राजाओंने अंगरेजी रक्षाके अधीन सन १८५३ ई० तक राज्य किया । उसी सनमें उनकी मिलकियतें अङ्गरेजी गवर्नमेन्टके पास चली गई । झांसी राज्य जालौन और चन्देरी जिलोंके साथ एक सुपरिण्टेडेन्सीके अधीन हुआ । राजा रावकी विधवा रानी लक्ष्मा बाईको पेंशन नियत हुई । रानी अप्रसन्न रही क्योंकि उसको गोद लेनेकी आज्ञा न मिली और पशुओंकी हिंसाकी रुकावट न हुई, इससे हिन्दुओंमें मजहबी जोश फैला ।

सन १८५७ ई० के बलवेके समय ता० ५ वीं जूनको १२ वीं देशी पैदल सेनाके कुछ सिपाहियोंने किलेको अधिकारमें करलिया, जिसमें खजाने और मेगज़ीन भी थे । बहुतेरे युरोपियन अफ़सर उसी दिन मारे गये । शेष आदमियोंने जो अपने परिवारके साथ कुल ६६ मनुष्य थे किलेमें पनाह लिया था, कई रोज बाद सबके सब छलसे मारे गए । रानीने सर्वोपरि अपना अख़तियार प्राप्त करनेको चाहा परन्तु बाग़ियोंमें झगड़ा उठा उरछाके मुखियोंने झांसी पर महासरा करके निर्दयताके साथ देशको लूटा ।

सन १८५८ ई० के मार्च महीनेमें अंगरेजोंने झांसी पर आक्रमण किया । २१ मार्च ता० ४ थी अप्रैल तक ३४३ अंगरेजी सैनिक मरे और घायल हुए, जिनमें ३६ अफ़सर थे । शहर और किलेकी रक्षाके लिये रानीके अधीन ११००० सिपाही, बाग़ी इत्यादि थे । ५ वीं अपरैलको अंगरेज़ी अफ़सर सररोज़ने किले और शहरको फिर लेलिया, परंतु किलेकी रक्षाके योग्य उसके पास सेना न थी इसलिये वह कालपीको चला गया । उसके जानेपर फिर बग़ावत हुई । कुछ दिनोंके उपरांत फिर संग्राम आरंभ हुआ । रानी पुरुषवेषसे घोड़े पर सवार हो बड़ी दिलेरीके साथ लड़ती थी । ता० १७ वा १८ जूनको उसका घोड़ा ग्वालियरके किलेके समीप एक नाला पार होते समय ठोकर खाकर गिर पड़ा । एक सवारने जो उसको स्त्री वा रानी नहीं जानता था, रानीको काट डाला उसी रातको रानीके सम्बन्धियोंने उसकी देहको जला दिया ।

सन १८६१ ई० में अंगरेजोंने झांसी और यहांके किलेको ग्वालियरके महाराजको दे दिया, परन्तु सन १८८६ ई० में इनको महाराजसे लेकर बदलेमें ग्वालियरका किला लौटा दिया।

रेलवे ।

झांसी रेलवेका बड़ा केन्द्र है । यहांसे इण्डियन मिडलैंड रेलवेकी लाइन ४ ओर गई हैं, जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ $\frac{1}{2}$ पाई है ।

(१) पूर्वोत्तर

मील	प्रसिद्ध स्टेशन
७१	उराई
९२	काल्पी
१३७	कानपुर जंक्शन

(२) दक्षिण थोड़ा पश्चिम

मील	प्रसिद्ध स्टेशन
५६	ललितपुर
९५	बीना जंक्शन

बीनासे पूर्व

मील	प्रसिद्ध स्टेशन
४६	सागर
१४८	भिलसा
१५३	सांची
१८१	भोपाल जंक्शन

भोपालसे पश्चिम

मील	प्रसिद्ध स्टेशन
२४	सिहोर छावनी
११४	उज्जैन
२२७	हुशंगाबाद
२३८	इटारसी जंकशन

(३) उत्तर थोड़ा पश्चिम

मील	प्रसिद्ध स्टेशन
१५	दतिया
६०	ग्वालियर
१०१	धौलपुर
१३५	आगरा छावनी
१३५	आगरा क़िला

(४) पूर्व कुछ दक्षिण

मील	प्रसिद्ध स्टेशन
७	उरछा
३३	रानीपुर रोड
४०	मऊ रानीपुर
७२	कुल पहाड़
८६	महोबा
९६	कबराई
११९	बान्दा
१५२	तमोलिया
१६२	करवी
१८१	मानिकपुर जंक्शन

झांसी इलाहाबादसे मानिकपुर और बान्दा होकर २४३ मील और कानपुर और काल्पी होकर २५७ मील है.

आठवाँ अध्याय।

जालौन, काल्पी, हमीरपुर, तालवेहट, ललितपुर, चंदेरी, सागर, दमोह, राजगढ़, नरसिंहगढ़, भिलसा, सांची, भूपाल, हुशंगाबाद, और इटारसी जंकशन।

जालौन।

झांसीसे ७१ मील पूर्वोत्तर कानपुर झांसी सेक्सन पर उराईका रेलवे स्टेशन है। उराई झांसी विभागके जालौन ज़िलेका सदर स्थान एक क़सबा है। पहले यह छोटा गांव था। अब इसमें ८००० से अधिक मनुष्य हैं। यहां मामूली सरकारी आफिसोंके अतिरिक्त कई एक मकबरे हैं।

उराईसे लगभग २० मील उत्तर जालौन एक क़सबा है। यह २६ अंश ८ कला ३२

विकला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश २२ कला ४२ विकला पूर्व देशांतरमें स्थित है। जहां अभी रेल नहीं गई है।

सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इसमें १००५७ मनुष्य थे, जिनमें ८६०४ हिंदू और १४५३ मुसलमान। इसमें बहुत अच्छे मकान, उजड़ा हुआ किला जो सन १८६० में नाकामकर दिया गया, तहसीली,पुलिस स्टेशन,अस्पताल और स्कूल हैं। पुराने किलेके स्थानपर ५०००० रुपयेके खरचसे एक नया बाजार बना है। यहां थोड़ी तिजारत होती है। प्रधान निवासी महाराष्ट्र ब्राह्मण हैं, जो दक्षिणी पण्डित कहे जाते हैं। इनके पुरुष पेशवाके द्विपोटीके अधीन अफसर थे।

जालौन जिला-यह झांसी डिवीज़नका उत्तरी जिला है। इसके उत्तर यमुना नदी, पश्चिम ग्वालियर और दतिया राज्य, दक्षिण समथर राज्य और वेतवा नदी और पूर्व बाओनी राज्य है जिलेकी कचहरियां उराईमें हैं।

जिलेका क्षेत्रफल १४६९ वर्ग मील है। इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमें ३९६४९१ मनुष्य थे, जिनमें २०४३०१ पुरुष और १९२१९० स्त्रियां जिलेके कोंच कसबेमें १३४०८, काल्पीमें १२७१३ और जालौन और उराईमें दश दश हजारसे कम मनुष्य थे। जिलेमें चमार, ब्राह्मण और राजपूत अधिक हैं।

काल्पी।

उराईसे २१ मील (झांसीसे ९२ मील पूर्वोत्तर) काल्पीका रेलवे स्टेशन है। काल्पी जालौन जिलेमें यमुनाके दहिने एक पुराना कसबा है। यह २६ अंश ७ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश ४७ कला १५ विकला पूर्व देशान्तरमें स्थित है।

इस सालकी जन-संख्याके समय काल्पीमें १२७१३ मनुष्य थे, जिनमें ९०८७ हिन्दू ३५७६ मुसलमान, ३९ जैन और ११ कृस्तान।

नदीके बगलमें वर्तमान काल्पीकी पश्चिमी सीमापर बहुत तबाहियां हैं जिनमें ८४ गुम्बज वाला मकबरा और १२ बड़े मकबरे प्रसिद्ध हैं। काल्पी प्रथम तबाहियोंके समीप थी, परन्तु धीरे धीरे दक्षिण-पूर्वको हटी है। यमुनाके तीर टूटा हुआ पुराना किला है।

यमुनापर रेलवेका पुल 'इण्डियन मिडलेंड रेलवे' के सम्पूर्ण पुलोंसे बड़ा और सुन्दर है। इसमें १० दरवाजे हैं, जिनमें प्रत्येक २५० फीट लम्बा है। इसके पाए ६० फीट पानीके ऊपर और १०० फीट नीचे हैं। गर्मीके दिनोंमें यमुनापर नावका भी पुल बनता है।

काल्पीका कागज और मिश्री प्रसिद्ध है।

इतिहास-संवत् १८७४ का बनाहुआ पद्यमें 'तुलसी शब्दार्थ प्रकाश' नामक एक भाषा ग्रन्थ है, जिसके द्वितीय भेदमें लिखा है कि काल्पीमें व्यासजीका अवतार हुआ।

काल्पीको वासुदेवने बसाया, जिसने सन३३०ई०से सन४००तक कम्बामें शासन किया था।

अकबरके राज्यके समय सन ई० की १६ वीं शताब्दीमें काल्पीमें ताम्बेके सिक्केकी टकसाल थी। महाराष्ट्रोंके बुन्देलखंडपर हाथ डालनेके उपरान्त उनकी गवर्नमेण्टका सदर स्थान काल्पी थी।

सन १८०३ ई० में जब बुन्देलखण्ड अंगरेजोंके हाथमें था, नाना गोविन्द रावने काल्पीको ले लिया। उसी वर्षके दिसम्बर मासमें अंगरेजोंने महासरा किया और कई घण्टोंकी

रोकावटके बाद शहर उनके अधीन हुआ; तब कालपी उस मुल्कमें मिला दी गई जो राजा हिम्मतखांको दिया गया था। उसके मरनेपर सन १८०४ ई० में यह फिर अंगरेजोंके पास आई। अंगरेजोंने इनको गोविन्दसिंहको दे दिया। जिसने सन १८०६ ई० में चन्द बस्तियोंके बदलेमें काल्पीको अंगरेजोंको दिया।

सन १८५८ई० की २२ वीं मईको अंगरेजी अफसर सर रोज़ने झांसीकी रानी, बान्दाके नवाब और राव साहेबके अधीन १२००० आदमीकी फौजको परास्त किया। रानी, नवाब और रावसाहेब ग्वालियरको भाग गए।

हमीरपुर।

काल्पीसे २८ मील दक्षिण-पूर्व ओर बांदासे ३९ मील दक्षिण यमुना और वेतवाके संगमके पास इलाहाबाद विभागमें जिलेका सदरस्थान हमीरपुर छोटा क़सबा है। यह २५ अंश ५८ कला उत्तर अक्षांश और ८० अंश ११ कला ५० विकला पूर्व देशान्तरमें है। लोग कहते आते हैं कि, करचुली राजपूत हमीरदेवने इसको बसाया, जिसको मुसलमानोंने अलवरसे खदेर दिया था। यह अकबरके समय एक जिलेकी राजधानी था। हमीरका उजड़ा पुजड़ किला मुसलमानी कबरें पुराने समयकी निशानियां हैं। यहां मामूली सरकारी इमारतोंके अतिरिक्त २ सराय और १ बंगला है और ग़ल्लेकी थोड़ी तिजारत होती है। बलवेके समय यहां बहुत युरोपियन मारेगए थे।

सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय हमीरपुरमें ७१५५ मनुष्य थे, जिनमें ५५४६ हिन्दू, १५९४ मुसलमान, और १५ कृस्तान थे।

हमीरपुर जिला—जिलेके उत्तर यमुना नदी पश्चिमोत्तर वाओनीके देशी राज्य और बेतवा नदी, पश्चिम ढासन नदी दक्षिण अलीपुर, छत्तरपुर और चरखारी राज्य और पूर्व बांदा जिला है। हमीरपुर जिलेका सदर स्थान है, परन्तु इस जिलेमें राठ सबसे बड़ा क़सबा है।

जिलेका क्षेत्रफल २२८८ वर्गमील है। इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमें ५१४१०४ मनुष्य थे। अर्थात् २६०८३५ पुरुष और २५३२६९ स्त्रियां। जिलेमें ८ क़सबे हैं, जिनमेंसे राठमें १२३११ और खरेला, महोबा, हमीरपुर, मौधा, कुल पहाड़, जैतपुर और सुमेरपुरमें दशदश हजारसे कम मनुष्य थे। जिलेमें चमार, लोधी और ब्राह्मण अधिक हैं (चमारकी संख्या अधिक है, इससे वह प्रथम लिखा गया) बीजानगरमें ५ मीलके घेरेमें एक झील है। गढौलीमें जो हमीरपुर कसबेसे ३५ मील है, वर्षभरमें दो मेला होते हैं।

इतिहास-सन १६८० में महोबाका जिला राजा छत्रशालके अधीन हुआ। उसके मरनेके उपरान्त लगभग १७३४ में राज्यका तिहाई भाग पेशवाको मिला, जिसका एक हिस्सा महोबा बना। हमीरपुरके वर्तमान जिलेका बड़ा हिस्सा राजा छत्रशालके पुत्र जगनराजको मिला, जो ७० वर्षतक उसकी संतानोंके अधीन रहा। सन १८०३ में जब अंगरेजोंने हमीरपुरका अधिकार किया, तब बुंदेलखंडके दूसरे भागोंके समान इस जिलेकी भी बुरी अवस्था थी। सन १८४२ में जमीनकी मालगुजारी घटा करके नया बंदोबस्त हुआ।

तालवेहट।

झांसीसे ३१ मील दक्षिण 'झांसी इटारसी' सक्सन पर तालवेहटका रेलवे स्टेशन है।

तालेवेहट ललितपुर जिलेमें एक खूबसूरत कसवा है इसमें उत्तम हथियार बनते हैं। सन १८८१ की जन-संख्याके समय तालवेहट में ५२९३ मनुष्य थे ।

इसके पास एक वर्गमीलसे अधिक भूमि पर बनाई हुई एक झील है । चट्टानी सरहद होकर जो पानीकी धारा बहती है, उसको एक बान्धसे रोक दिया गया है ।

उरछाके राजा बीरसिंह देवका बनवाया हुआ एक किला है, जिसको सन १८५८ ई० में अंगरेजी अफसर सर रोज़ने नाकाम कर दिया ।

ललितपुर ।

तालेवेहटसे २५ मील (झांसीसे ५६ मील दक्षिण) पश्चिमोत्तर प्रदेशके झांसी विभागमें जिलेका सदर स्थान शहजाद नदीके पश्चिम किनारेके निकट ललितपुर एक कसबा है । यह २४ अंश ४१ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश २७ कला ५० विकला पूर्व देशान्तरमें है । इस सालकी जन-संख्याके समय इसमें ११३४८ मनुष्य थे, जिनमें ८६५३ हिन्दू, १६१९ मुसलमान, १०३० जैन, २६ कृस्तान, १९ सिख और १ दूसरे ।

प्रधान सड़कोंपर पक्के मकान हैं । कसबेके मध्यमें एक नया बाजार बना है और यहां जैन और खैराती अस्पताल है । ललितपुर पहले प्रसिद्ध नहीं था पर अब बढ़ती पर है ।

ललितपुर जिला—यह झांसी डिवोजनका दक्षिणी जिला है । इसके उत्तर और पश्चिम बेतवा नदी, दक्षिण-पश्चिम नारायणी नदी, दक्षिणविन्ध्याचल घाट और मध्यदेशमें सागर जिला, दक्षिण-पूर्व और पूर्व उरछा राज्य और ढासन नदी और पूर्वोत्तर यामुनि नदी है ।

जिलेका क्षेत्रफल १९४७ वर्ग मील है । इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमें २७४०२९ मनुष्य थे । अर्थात् १४१३५४ पुरुष और १३२६७५ स्त्रियां । जिलेमें चमार लोधी, काछी, अहीर और ब्राह्मण अधिक हैं । राज्यकी प्रधान नदी बेतवा है । इस देशके प्रांतविभागमें हीन दशामें पुराने किले मिलते हैं । जिलेके दक्षिणी भागमें गोंड़ोंके बनाए हुए टूटे फूटे पुराने मन्दिर छितराए हुए हैं । जिलेके जंगलमें कई प्रकारके बाघ, सांभर, सूअर, हरिन, भेड़िया आदिका शिकार होता है ।

चन्देरी ।

ललितपुरसे १८ मील पश्चिम मध्य भारतके ग्वालियर राज्यमें जिलेका सदर स्थान चन्देरी कसबा है । इसको पूर्व समयमें चेदी और चन्देली कहते थे । यहांका सेला और पगड़ी उत्तम होती हैं । इस समय यह प्रसिद्ध नहीं है, परन्तु एक समय बहुत प्रसिद्ध और किलाबंदी कियाहुआ सुन्दर शहर था । आईन अकबरीमें लिखा है कि, चंदेरीमें १४०००पत्थरके मकान, ३८४ बाजार, ३६० कारेवान सराय, और १२००० मसजिद हैं । एक ऊंची पहाड़ीपर किला है, जिसने एक समय ८ महीनेके महासरेका बर्दाश्त किया था । तबाहियोंसे जान पड़ता है कि, पुराने शहरकी इमारतोंमेंसे कई एक उत्तम और बड़े विस्तार की थीं ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(द्रोणपर्व्व–२२ वां अध्याय) चेदीराज शिशुपालके पुत्र धृष्टकेतु कुरुक्षेत्रके संग्राममें पांडवोंकी ओरसे लड़ा था । (१२३ वां अध्याय) धृष्टकेतु को द्रोणाचार्य्यने मारा ।

श्रीमद्भागवत—(दशमस्कन्ध–५३ वां अध्याय) चन्देलीके राजा दमघोषका पुत्र

शिशुपाल था, जो रुक्मिणीसे विवाह करनेके लिये कुण्डिनपुरमें गया। वहांसे वह कृष्णचन्द्रसे पराजित होकर अपने घर लौटगया और रुक्मिणीको हरण करके श्रीकृष्णचन्द्र द्वारिकामें ले आए।

सागर।

ललितपुरसे १० मील दक्षिण जाखलोनका स्टेशन और ३५ मील दक्षिण बीना जंक्शन है। जाखलौन स्टेशनसे २ मील दक्षिण जुहाजपुरमें हिन्दुओं और जैनोंके पुराने मन्दिरोंका झुंड है और बीना स्टेशनसे कई मील दक्षिण बीना नदीपर पुल है।

बीना जंक्शनसे ४६ मील पूर्व सागर सेक्शन पर सागरका स्टेशन है। सागर मध्य प्रदेशके जबलपुर विभागमें जिलेका सदरस्थान समुद्रके जलसे १९४० फीट अपर सागर नामक उत्तम झीलके किनारे एक छोटा शहर है। यह २३ अंश ४९ कला ५० विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश ४८ कला ४५ विकला पूर्व देशान्तरमें स्थित है।

इस सालकी जन-संख्याके समय सागरमें ४४६७४ मनुष्य थे। अर्थात् २३७२५ पुरुष और २०९४९ स्त्रियां। जिनमें ३३५६२ हिन्दू ९००७ मुसलमान, १२०४ जैन, ८०४ कृस्तान ५३ एनिमिष्टिक, २७ पारसी, और १७ बौद्ध। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ९० वां और मध्य प्रदेशमें तीसरा शहर है।

सागर झील १ मील चौड़ी है, जिसके किनारोंपर स्नानके बड़े बड़े घाट हैं, जिनपर बहुतेरे देवमन्दिर बने हैं। शहरमें चौड़ी सड़कें बनी हैं।

झीलसे ½ मील पूर्व बड़ा जेलखाना है, जिसमें ५०० कैदी रह सकते हैं डिपूटी कमिश्नरकी कचहरी एक पहाड़ी पर है। सेशन कचहरी थोड़ी उत्तर है। किलेकी पश्चिम दीवारके नीचे शहरकी कोतवाली है। झीलसे करीब १ मील पूर्व टकशाल घर है, जिससे एक मील उत्तर फौजी छावनी तक सिविल स्टेशन है, जिसके दरवाजेके पास गिर्जा है। छावनीमें एक यूरोपियन रजीमेंट और देशी सवार और पैदल रहते हैं।

किला—झीलके पश्चिमोत्तर एक ऊंचाई पर ६ एकड़ भूमिपर किला है। मोटी दीवारोंमें २० फीटसे ४० फीट तक ऊंचे २० टावर हैं। अधिक हिस्सेमें महाराष्ट्रोंकी पुरानी दो मंजिली इमारते हैं। अङ्गरेजी गवर्नमेंटने एक मेगजीन (शस्त्रागार) एक बड़ी इमारत जो इस समय दवा सम्बन्धी चीजोंके काममें लाई जाती है और एक यूरोपियन गार्डके लिये बारक (सैनिक-गृह) बनवाए हैं। केवल पूर्व ओर एक फाटक है।

इसमें अब तहसीली और इंजिनियरका आफिस है।

इस किलेको सन १७८० ई० के लगभग महाराष्ट्रोंने बनवाया।

सागर जिला—मध्य देशके अंतिम पश्चिमोत्तरमें सागर जिला है। जिसके उत्तर ललितपुर जिला और मिजावर, पन्ना, चरखारी देशी राज्य, पूर्व पन्ना राज्य और दमोह जिला, दक्षिण नरसिंहपुर जिला और भोपाल राज्य और पश्चिम भोपाल और ग्वालियर राज्य हैं।

जिलेका क्षेत्रफल ४००५ वर्ग मील है। सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेमें ५६४९५० मनुष्य थे। जिलेमें ५ कसबे थे, जिनमेंसे सागरको छोड़कर गढ़कोटा, देउरी, खोराई और रेहलीमें दश दश हजारसे कम मनुष्य हैं। जिलेमें चमार, ब्राह्मण, लोधी, काछी, अधिक हैं। आदि निवासियोंमें गोंड़ और सौरा हैं।

सागर शहरसे २२ मील दक्षिण-पूर्व सागर जिलेमें रानीगिरि एक पुराना गांव है, जहां चैत्रमासमें मेला होता है, मेलेमें लगभग ७० हजार मनुष्य आते हैं।

इतिहास–कहा जाता है कि, बहुत पूर्व समयमें एक बनजारेने सागरकी झीलको बनवाया परन्तु वर्तमान शहर ई० सनके १७ वीं शतकके अंतका है। इसकी वृद्धि एक बुंदेला राजपूतसे हुई, जिसने सन १६६० ई० में एक छोटा किला बनवाया और पारकोटा नामक एक गांव बसाया जो अब नए शहरका एक महल्ला है। पश्चात् सागर राजा था छत्रशालके अधीन था, जिसको वह अपनी दूसरी मिलकियतोंके साथ अपने मित्र पेशवाके हाथमें छोड़कर मरगया। पेशवाने गोविंद पण्डितको देशका प्रबंधकर्त्ता नियत किया, जिसके वंशवाले अंत तक इन्तजाम करते रहे। सन १८१८ में अङ्गरेजोंने बाजीराव पेशवासे इसको लेलिया इसके अंतर पिंडारी प्रधान अमीरखांने और सन १८०४ ई० में सिंधियाने दो बार सागरको लूटा।

दमोह।

सागरसे जबलपुर जानेवाली सड़कपर सागरसे लगभग ५० मील पूर्व जबलपुर विभागमें जिलेका सदर स्थान दमोह एक क़सबा है। यह २३ अंश ५० कला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश २९ कला ३० विकला पूर्व देशान्तरमें स्थित है।

इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय दमोहमें ११७५३ मनुष्य थे। अर्थात् ९४१८ हिन्दू १६९९ मुसलमान, ५७९ जैन, ३९ एनिमिष्टक और १८ कृस्तान।

दमोहमें मामूली सरकारी इमारतोंके अतिरिक्त कोई दर्शनीय चीज नहीं है। पुराने देव मन्दिरोंको मुसलमानोंने नष्ट कर दिया था।

दमोह जिला–जिलेके उत्तर बुन्देलखंड, पूर्व जबलपुर, दक्षिण नरसिंहपुर, और पश्चिम सागर आदि जिले हैं।

सन १८८१ में जिलेका क्षेत्रफल २७९९ वर्गमील और मनुष्य-संख्या ३१२९५७ थीं, जिनमें ५४२१ आदि निवासी, २४२३ कबीरपंथी और १३७ सतनामी थे। जिलेमें लोधी; चमार और गोंड़ अधिक हैं। जिलेमें दमोहके अतिरिक्त हट्टा एक कसबा है।

दमोह जिलेके कुण्डलपुर और बांडकपुरमें मेले होते हैं, जिनमें बहुत बस्तुओंकी खरीद बिक्री होती है।

कुण्डलपुर–कुण्डलपुरमें जैनोंके देवता नेमीनाथका मन्दिर है। होलीके पश्चात् यहां मेला होता है और १५ दिन तक रहता है। आस पासके जैन नेमीनाथके दर्शनके लिये आते हैं।

बांडकपुर–सन १७८१ ई० में दमोहके महाराष्ट्र पण्डित नागोजी बल्लालके पिताने स्वप्न देखनेके उपरांत यहां यागेश्वर महादेवका मन्दिर बनवाया। यहां वसंतपंचमी और फाल्गुनकी शिवरात्रिको मेला होता है। यात्रीगण मन्नत करके नर्मदाका पवित्र जल महादेवपर चढ़ाते हैं। लगभग १२००० रुपये भेंटमें चढ़ते हैं जिनमेंसे $\frac{१}{४}$ पंडे लोग और $\frac{३}{४}$ मन्दिरका स्वामी लेता है। सन १८८१ में ७०००० आदमी मेलेमें आए थे।

इतिहास–महोबाके चंदेल राजपूत सागर और दमोहके वर्तमान जिलोंपर अपने कर्मचारियों द्वारा राज करते थे। ११ वीं सदीके अन्तमें चंदेल राज्यकी घटतीके समय दमोहका बड़ा भाग गोंडोंके दखलमें हुआ, जिसका सदर स्थान बुँदेलखंडके खटोलामें था। सन् १६००

ई० के लगभग बुन्देला प्रधान राजा बीरसिंह देवने उनके पराक्रमको नष्ट किया। अंतमें अंगरेजोंने सन १८१८ में महाराष्ट्रोंसे इसको ले लिया।

राजगढ़।

मध्य भारतके भोपाल एजेंसीके पोलिटिकल सुपरिंटेंडेंटके अधीन मालवामें राजगढ एक छोटा राज्य है। मुगलोंके राज्यकी घटतीके समय ऊमत राजपूतोंने उमतवार जिलेको जीता सन १४४८ ई० में उमतवारके सरदारने रावतकी पदवी पाई। सन १६८१ में वहांके प्रधानके पुत्रने, जो मन्त्री भी था, अपने पितासे राज्यको बांटलिया। जो राज्यका भाग मन्त्रीको मिला, वह नरसिंहगढ़ कहलाता है और जो प्रधानको रहगया, वह राजगढ़ है। अंतमें नरसिंह गढ़ हुलकरके और राजगढ़ सिंधियाके अधीन हुआ। राज्यकी मालगुजारी लगभग ५००००० रुपया है, जिसमेंसे ८५१७० रुपया सिंधियाको और लगभग १००० रुपया झालावारको दिया जाता है। सन १८७१ में रावत मोतीसिंह मुसलमान होगया और महम्मद अबदुल वासिदखाँ अपना नाम रक्खा। उसने सन १८७२ में अंगरेजी गवर्नमेंटसे नवाबकी खिताब पाई उसके मरनेपर सन १८८० में उसका पुत्र बख्तावर सिंह रावत हुआ। सन १८८२ में उसके मरने पर उसके पुत्र वर्तमान रावत बलबहादुर सिंह, जिनकी अवस्था ३३ वर्षकी है, उत्तराधिकारी हुए। यहांके रावतको ११ तोपोंकी सलामी मिलती है और सैनिक बल २४० सवार, ३६० पैदल, ४ मैदानकी और ८ दूसरी तोपें और १२ गोलंदाज हैं।

सन १८८१ में इस राज्यका क्षेत्रफल ६५५ वर्गमील और मनुष्य-संख्या ११७५३३ थी। जिनमें १०४१६६ हिन्दू, ५८३० मुसलमान, ३५२ जैन, ६ कृस्तान, ४ सिक्ख, और ७१७५ आदि निवासी थे। आदि निवासियोंमें ३५६८ भील, ३२०९ मीना, और ३९८ मोगिया थे।

राजगढ़ राजधानी २४ अंश कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश ४६ कला ३८ विकला पूर्व देशान्तरमें स्थित है। जन-संख्या सन १८८१ में ६८८१ थी। अर्थात् ५६१७ हिन्दू, ११३४ मुसलमान और १३० दूसरे थे।

नरसिंहगढ़।

मध्य भारत भोपाल एजेंसीके अधीन नरसिंहगढ़ एक छोटा देशी राज्य है। सन १६६७ ई० में परोसा राम अपने बाप राजगढ़के रावतका मन्त्री हुआ, जिसने नरसिंहगढ़को नियत किया। और सन १६८१ में रावतसे राज्यको बांट लिया, वही नरसिंहगढ़का राज्य हुआ। राज्यकी मालगुजारी ५००००० रुपया है, जिसमेंसे ५८००० रुपया हुलकरको दिया जाता है। सन १८७२ में नरसिंहगढ़के रावतको राजाकी पदवी मिली। नरसिंहगढ़का वर्तमान नरेश ५ वर्षकी अवस्थाका ऊमत राजपूत राजा महताब सिंह है। यहांके राजाओंको ११ तोपोंकी सलामी मिलती है और सैनिक बल ९८ सवार, ६२५ पैदल, १० तोप और २४ गोलंदाज हैं।

सन १८८१ ई० में राज्यका क्षेत्रफल ६२३ वर्गमील और मनुष्य-संख्या ११२४३७ थी, जिनमें १००९५२ हिन्दू, ४९५८ मुसलमान, ३१८ जैन, १ सिक्ख और ६१९८ आदि निवासी थे। आदि निवासियोंमें ३१०४ मीना, २८२८ भील, २५२ देशवाली और १४ मोगिया और राज्यमें १ कसबा और ४१६ गांव थे।

भोपाल शहरसे ४० मीलसे अधिक पश्चिमोत्तर नरसिंहगढ़ राजधानी है। यह २३ अंश ४२ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश ५ कला ५० बिकला पूर्व देशान्तर में

स्थित है। नरसिंहगढ़ ऊंची भूमिपर झीलके किनारे हैं। कसबेसे ऊपर पहाड़ी पर किला खड़ा है, जिसको सन १७८० में अचलसिंहने बनवाया। राजमहल किलेमें है। सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कसबेमें ११४०० मनुष्य थे, जिनमें १०३९८ हिन्दू ८८६ मुसलमान, और ११६ दूसरे।

भिलसा।

बीना जंक्शनसे २८ मील दाक्षिण (झांसीसे १२३ मील) वसोदाका स्टेशन है, जिससे करीब १५ मील पश्चिम टोंक राज्यमें सिरोंज तिजारती कसबा है, जहां माघ फागुनमें एक प्रसिद्ध मेला होता है और एक महीने तक रहता है।

बीनासे भिलसा तक देशोंमें बहुत हरिन हैं।

वसोदासे २५ मील (झांसीसे १४८ मील) दक्षिण भिलसाका स्टेशन है। भिलसा ग्वालियर राज्यमें बेतवा नदीके दहिने अर्थात् पूर्व समुद्रके जलसे १५४६ फीट ऊपर एक चट्टान पर छोटा क़सबा है। जिसमें ७००० के लगभग मनुष्य बसते हैं। बाहरी चौड़ी सडकपर अच्छे मकान बने हैं। आसपासके स्थानोंमें बहुत उत्तम तम्बाकू होती है। भिलसा-हिन्दू, मन्दिरोंकी यात्रा और बौद्ध स्तूपोंकेलिये प्रसिद्ध है। देवताओंके मन्दिर बेतवा नदीके मैदानोंमेंहैं।

किला-किलेकी दीवार पत्थरकी है। चारों बगलोंमें खाई है। किलेमें १९ ३ फीट लम्बी, जिसका सुराख १० इंचका है, एक पुरानी तोप है। कहा जाता है कि, दिल्लीके बादशाह जहांगीरकी आज्ञासे यह बनवाई गई। बादशाह अकबरने सन १५७० ई० में दिल्लीके राज्यमें भिलसाको मिलालिया था।

बौद्धस्तूप-अधिक फैलेहुए और कदाचित हिन्दूस्तानमें सबसे उत्तम बौद्धस्तूपोंके झुंड भिलसाके पड़ोस और सांचीमें हैं। एक जिलेमें उत्तरसे दक्षिण ६ मील और पूर्वसे पश्चिम करीब १० मीलके भीतर स्तूपोंके पांच वा छः झुंडोंमें २५ से अधिक और ३० से कम स्तूप हैं।

सांची।

भिलसाके स्टेशनसे ५ मील सांचीका स्टेशन है। सांचीमें ११ बौद्ध स्तूपोंका एक झुंड है, जिनमें बड़ा स्तूप प्रधान है।

बड़ा स्तूप गुम्बजके आकारका है, जिसका व्यास १०६ फीट और ऊंचाइ ४२ फीट है। सिरेपर ३४ फीट व्यासका एक चिपटा स्थान है। १४ फीट ऊंचे और १२० फीट व्यासके ढालुएं पुश्तेपर गुम्बज है। स्तूपमें भीतरी ईटें और बाहरी पत्थर लगे हैं। स्तूपके बगलोंमें गोलाकार दीवार है, जिसमें चारोंओर ४ फाटक वा तोरन हैं। सांचीके स्तूप सन ई० के २५० वर्ष पहलेसे पहली सदी तकके बने हुए होंगे।

सांचीके स्तूपोंके अतिरिक्त इससे ५ मील दूर सोनारीके पास ८ स्तूपोंका झुंड है, जिनमें से २ सम चतुर्भुज चौगानमें हैं, ३ मील अधिक अन्तर पर सधाराके पास १०१ फीट व्यासका एक स्तूप है, एक स्तूपके भीतरसे, जिसका व्यास २४ फीट है दो डिब्बोंमें सारिपुत्र और महा मोगलानकी हड्डियां निकली हैं। यह दोनों बुद्धके शिष्य थे। सारिपुत्रका देहांत बुद्धकी वर्तमानतामें होगया और मोगलायनका बुद्धके निर्वाणके पीछे।

सांचीसे ७ मील भोजपुरके पास ३७ स्तूप हैं। सबसे बडे स्तूपका व्यास ६६ फीट है।

भोजपुरसे ५ मील पश्चिम अंधारेके पास ३ छोटे उत्तम स्तूपोंका एक झुण्ड है, जो सन ई० के २२० वर्ष पहले और पहली सदीके बीचके बने हुए हैं।

सन १८८३ ई० में हिन्दुस्तानकी गवर्नमेंटकी आज्ञासे स्तूपोंके प्रधान झुण्डोंपर अधिक ध्यान दिया गया। गिरेहुए फाटक खड़े किए गए, घेरे मरम्मत हुए और जहां गिरे थे वहां फिर बनाए गए और स्तूप असली शकलमें सुधारे गए।

भोपाल।

भिलसासे ३३ मील (झांसीसे १८१ मील) दक्षिण कुछ पश्चिम भोपालका स्टेशन है। मध्य भारतके मालवा प्रदेशमें एक प्रसिद्ध झीलके उत्तर किनारेपर देशी राज्यकी राजधानी समुद्रके सतहसे १६७० फीट ऊपर भोपाल एक छोटा शहर है। यह २३ अंश १५ कला ३५ विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश २५ कला ५६ विकला पूर्व देशांतरमें स्थित है।

इस सालकी जन-संख्याके समय भोपालमें ७०३३८ मनुष्य थे। अर्थात् ३६८९१ पुरुष और ३३४४७ स्त्रियां। जिनमें ३५७८८ मुसलमान, ३२४८७ हिन्दू, ८५६ एनिमिष्टिक, ८०३ जैन, १९३ सिक्स, १८८ कृस्तान और २३ पारसी थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारत-वर्षमें ४७ वां और मध्य भारतमें तीसरा शहर है।

भोपालकी झील ४ ½ मील लम्बी और १ ½ मील चौड़ी है। शहर २ मीलकी दीवारसे घेरा हुआ है। घेरेके भीतर किला है। शहरके बाहर एक तिजारती वस्ती है और दक्षिण पश्चिम एक बड़े चट्टानपर फ़तहगढ़ नामक किला है, जिसमें भोपालकी बेगम रहती है। बेग-मके महलमें कारीगरीके बहुत काम नहीं हैं, तिसपर भी यह विशाल भवन देखने योग्य है। मृत खुदसिया बेगमकी बनवाई हुई जुमामसजिद, मृत सिकन्दर बेगमकी मोती मसजिद और टकशाल और तोपखाना, खुदसिया बेगन और सिकन्दर बेगमकी बाटिका भोपालमें देखनेकी प्रधान वस्तु हैं।

भोपाल शहर साफ़ है। सड़कोंपर रोशनी होती है। खास शहरमें सब जगह कलका पानी है। शहरके पूर्व नवाब हयातमहम्मदखांके मन्त्री छोटे खांकी बनवाई हुई २ मील लम्बी झील है। इसका बांध पक्का है। भोपालमें एक जनाना अस्पताल और एक जनाना स्कूल हैं।

भोपाल राज्यमें सिहोर-(जन-संख्या १६२३२) प्रसिद्ध स्थान है। भोपालसे पश्चिम ओर ११४ मीलकी नई रेलवेकी शाखा उज्जैनको गई है।

भोपाल राज्य-मध्य भारत-मालवाके भोपाल पोलिटिकल एजेंसीमें यह एक देशी राज्य है। सन १८८१ में इसका क्षेत्रफल ६८८३ वर्गमील और मनुष्य-संख्या ९५४९०१ थी। अर्थात् ७४७००४ हिन्दू, ८२१६४ मुसलमान, ११९४१८ आदि निवासी, ६८२२ जैन, १५५ कृस्तान, १३६ सिक्ख और २ पारसी।

इसके उत्तर और पश्चिम सिंधियाराज्य और कई छोटे राज्य, पूर्व मध्य देशमें सागर जिला और दक्षिण नर्म्मदा नदी है। बेगमके ६९४ घोड़ सवार, २२०० पैदल, १४ मैदानकी तोपें और ४३ दूसरी तोपें २९१ गोलंदाजोंके साथ हैं। भोपाल राज्यकी मालगुजारी ४० लाख रुपया है। राज्य अंगरेजी सरकारको ३०० हजार पाउंड देता है। भोपालमें अंगरेजी फौज रहती है।

सिहोर-भोपालसे २४ मील दक्षिण-पश्चिम एक नदीके दहिने किनारेपर सिहोर एक कसबा है। यहां भोपालके पोलिटिकल एजेंट रहते हैं और यह फौजी स्टेशन है।

इस सालको जन संख्याके समय सिहोरमें ११२३७ हिन्दू, ४३७१ मुसलमान, २४९ सिक्ख २४१ जैन, ६९ कृस्तान, ५४ एनिमिष्टिक और ११ पारसी, कुल १६२३२ मनुष्य थे।

इतिहास–राजा भोजने भोपालको बसाया, इसलिये पहले इसका नाम भोजपाल था। उज्जैनका सुप्रसिद्ध राजा भोज करीब १२०० वर्ष पहले था।

भोपालके नवाब खान्दानके नियत करनेवाला अफगानिस्तानका दोसत महम्मद है जो औरंगजेबके अधीन कर्मचारी था, और सन ई० के १८ वें शतकके आरंभमें उसके मरनेपर स्वाधीन बनगया। उसके वंशवाले सदा अङ्गरेजी सरकारके मित्र रहे।

सन १८१७ ई० में भोपालके नवाव और अङ्गरेजोंके बीच जो संधि हुई, उसके अनुसार नवाब ६०० घोड़े सवार और ४०० पैदलके खर्च देनलगी। थोड़ेही दिनोंके उपरान्त नवाब इत्तफाकन एक लड़केकी बन्दूकसे मारा गया उसका बालक भतीजा उसका कायममुकाम मुरतहर किया गया और नवाबकी लड़की सिकन्दर बेगमसे उसके विवाहका निश्चय हुआ। लेकिन नवाबकी विधवा खुदसिया बेगमने राज्यको अपने हाथमें रखना चाहा। इसलिये उस लडकेने गद्दी लेने और नवाबकी लड़कीसे विवाह करनेसे इनकार किया। बड़े झगड़ेके पीछे सन १८३७ ई० में नवाबका दूसरा भतीजा जहांगीर महम्मद भोपालका नवाब बनाया गया। सन१८४४ ई० में वह मरगया। उसकी विधवा सिकन्दर बेगमने सन १८६८ ई० तक भोपालका राज्य किया। वह एक लडकी शाहजहां बेगमको छोड़गई, जो गद्दी पर बैठी। इस बेगम साहिबाका पहला पात सन १८६७ ई० में सुलताना जहांबेगम नामक लड़कीको छोड़ कर मरगया था। पतिके मरने पर इसने अपनी माताकी तरह पर्दामें रहना छोड़ दिया था। बेगम साहिबाने सन १८७१ ई० में अपना दूसरा विवाह किया। तबसे राज्यके काम करने पर भी यह पर्देमें रहने लगीं। यह फिर विधवा होगई। इसकी लड़की (भविष्य बेगम) सुलताना जहांबेगमका विवाह सन १८७४ ई० में हुआ, जिसके दो लड़के और एक लड़की है।

भोपालकी वर्तमान बेगमका नाम नवाब शाहजहां बेगम जी. सी. एस. आई. सी. आई. और अवस्था ५१ वर्षकी है। बेगमको सरकारसे १९ तोपोंकी सलामी मिलती है।

हुशंगाबाद।

भोपालसे ४६ मील (झांसीसे २२७ मील दक्षिण कुछ पश्चिम) हुशंगाबादका स्टेशन है मध्य प्रदेशके नर्म्मदा विभागमें जिलेका सदर स्थान नर्म्मदा नदीके बाएं अर्थात् दक्षिण हुशंगाबाद एक कसबा है, जिसको गुजरातके बादशाह हुशंग शाहने बसाया। यह २० अंश ४५ कला३० विकला सत्तर अक्षांश और७७ अंश ४६ कला पूर्व देशान्तरमें स्थितहै।

इस सालकी जन-संख्याके समय यहां १३४९९ मनुष्य थे अर्थात् ९९०९ हिन्दू, २९७२ मुसलमान, ३४७ जैन, १९० कृस्तान, ५१ एनिमिष्टिक, और १९ पारसी।

हुशंगाबाद पहुँचनेसे पहले नर्मदा पर रेलवेका पुल मिलता है।

नर्म्मदा विभागके कमिश्नर हुशंगाबादमें रहते हैं और देशी पैदल सेनाका एक हिस्साभी रहता है।

नर्म्मदा और वर्रातवा नदियोंके संगमके समीप बिन्द्रभानु स्थान पर कार्तिकी पूर्णमासी को बड़ा मेला होता है, जिसके पास महादेवका मन्दिर है।

हुशंगाबाद जिला—मध्य देशके नर्म्मदा विभागमें हुशंगाबाद जिला है। जिसके उत्तर

नर्म्मदा नदी जो भोपाल, सिंधिया और हुलकर राज्योंसे इसको अलग करती है, पूर्व दूधी नदी नरसिंहपुर जिलेसे इसको अलग करती है, दक्षिण पश्चिमी बरार, बैतूल और चिंदवाड़ा जिले और पश्चिम निमार जिला है ।

सन १८८१ में जिलेका क्षेत्रफल ४४३७ वर्गमील और मनुष्य-संख्या ४८८७८७ थी, जिनमें ९७५३७ आदि निवासी, ३३७२ कबीरपंथी और ९ सतनामी थे। आदि निवासियोंमें ६१००९ गोंड, २८५५८ कुरकू, ६६०४ भील, ८९४ शबर, ३७५ कोल और ९७ कवारथे। हिन्दुओंमें राजपूत और ब्राह्मण अधिक हैं। जिलेमें ४ कसबे हैं। इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय हुशंगाबादमें १३४९५, हरदामें १३५५६ तथा सोहागपुर और सिउनीमें दश दश हजारसे कम मनुष्य थे ।

इतिहास–जिलेके पूर्वी भागमें ४ गोंड राजा हैं। जिलेका मध्यभाग देवगढ़के गोंड़के अधीन था और अखीर पश्चिमभागमें मकराईका गोंड़ राजा स्वाधीन था। अकबरके समयमें इंडिया एक जिलेका सदर स्थान थी। सन १७२० में भोपाल खांदानके नियत करनेवाले दोस्त महम्मदने हुशंगाबाद कसबेको लेलिया और इसके साथ बहुत देश सिउनीसे तावातक या सोहागपुर तक भी मिलादिया। सन १७९५ के पश्चात् नागपुरके राघोजी भोंसलेके सूबेदार बेनीसिंहने हुशंगाबाद कसबे और उसके किलेको छीन लिया। उसके पीछे भोंसले और भोपालसे कई बार लड़ाई हुई। सन १८६० में संपूर्ण जिलेपर अंगरेजोंका अधिकार हुआ।

इटारसी जंक्शन।

झांसीसे २३८ मील दक्षिण कुछ पश्चिम 'इटारसी जंक्शन' है, जहांसे रेलवे लाइन ३ ओर गई है।

(१) पश्चिम-दक्षिण 'ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे'

मील प्रसिद्ध स्टेशन

२१ सिउनी
४७ हरदा
११० खण्डवा जंक्शन
१५३ बुरहानपुर
१८७ भुसावल जंक्शन
३०१ मनमार जंक्शन
३४७ नासिक
४३० कल्याण जंक्शन
४६३ बंबई विक्टोरिया टरमीनस स्टेशन

खंडवा जंक्शनसे पश्चिमोत्तर 'राजपूताना मालवा रेलवे' मील–प्रसिद्ध स्टेशन

३७ मोरतक्का (ओंकार नाथके लिये)
७३ मऊ छावनी
८६ इन्दौर
१११ फतेहाबाद जंक्शन (उज्जैन के निकट)
१६० रतलाम जंक्शन
२७७ चित्तौरगढ़ जंक्शन

(२) पूर्वोत्तर जबलपुर तक 'ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे' उससे आगे 'इष्ट इंडियन रेलवे'

मील–प्रसिद्ध स्टेशन

७३ गाडरबारा जंक्शन
१०१ नरसिंहपुर
१५३ जबलपुर
२१० कटनी जंक्शन
२७१ सतना
३१९ मानिकपुर जंक्शन

३७७ नयनी जंक्शन
३८१ इलाहाबाद

(३) उत्तर कुछ पूर्व 'इंडियन मिड-लेंड रेलवे'
मील-प्रसिद्ध स्टेशन
११ हुशंगाबाद
५७ भोपाल जंक्शन
८५ सांची
९० भिलसा
१४३ बीना जंक्शन
१८२ ललितपुर
२३८ झांसी जंक्शन
३७५ कानपुर जंक्शन

नववां अध्याय।

दतिया, ग्वालियर, और धौलपुर।

दतिया।

झांसीसे १५ मील उत्तर दतियाका स्टेशन है। दतिया बुन्देलखंडमें देशी राज्यकी राजधानी चट्टानी उंचाई पर करीब ३० फीट ऊंची पत्थरकी दीवारके भीतर रेलवे स्टेशनसे २ मील दूर एक कसबा है। यह २५ अंश ४० कला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश ३० कला पूर्व देशान्तरमें स्थित है।

इस सालकी जन-संख्याके समय दतियामें २७५६६ मनुष्य थे, अर्थात १४२१३ पुरुष और १३३५३ स्त्रियां जिनमें २१९२४ हिन्दू, ४७९९ मुसलमान, ८३२ एनिमिष्टिक, १७ जैन और १ क्रस्तान थे।

राजमहल, जिसमें महाराज रहते हैं, उत्तम बाटिकाके भीतर है। बाटिकाकी दीवारमें एक उत्तम फाटक और प्रत्येक कोनेपर एक एक बुर्ज है। बाटिकाके हौजमें चार हाथी बनाए गए हैं। जिनके सुंडोंसे पानीके फौआरे निकलते हैं। नगरके भीतर दूसरा राजमहल है और तीसरा महल जो दृढ़ और सुन्दर है, नगरकी पश्चिम दीवारके बाहर स्थित है।

दतिया कसबेमें बहुतेरे सुन्दर मकान बने हैं। एक सड़क आगरासे दतिया होकर सागरको गई है।

राज्य-दतियाका राज्य ग्वालियर राज्यसे प्रायः घिरा हुआ है, केवल पूर्व झांसी जिला है. इसका क्षेत्रफल ८३७ वर्ग-मील और मालगुजारी ९ लाख रुपया है। और जन-संख्या सन १८८१ ई० में १८२५९८ थी, जिनमें १७४२०२ हिन्दू, ८३८१ मुसलमान और १५ जैन थे।

दतियासे ४ मील दूर जैन मन्दिरोंका झुंड है।

सोनागिरि-दतियासे ७ मील उत्तर (झांसीसे २२ मील) सोनागिरि स्टेशन है, जिसके पास पहाड़ी पर जैन संतोंकी बहुतेरी समाधियां हैं; जिनका जैन लोग बड़ा आदर करते हैं और वहां दर्शनको जाते हैं।

इतिहास-दतिया राज्यको सन १८०२ की बेसिनकी संधिमें पेशवाने अंगरेजोंकी प्रधानताके अधीन कर दिया। उस समय राजा परीक्षित दतियाकी हुकूमत करने वाले थे, जिनके साथ सन १८०४ में संधि हुई। सन १८१७ में पेशवाके पदच्युत होनेके पश्चात् राजा परीक्षितके साथ अङ्गरेजोंकी एक नई संधि हुई। राजा परीक्षितकी मृत्यु होनेपर उनके गोद

लिएहुए पुत्र विजय बहादुर राजा हुए जो सन १८५७ में मरगये, और उनके दत्तक पुत्र वर्तमान दतिया नरेश महाराज लोकेन्द्र भवानी सिंह बहादुर बुन्देला राजपूत जिनका जन्म सन १८४५ में हुआ था, राजा हुए। दतियाके राजाओंको अंगरेजी सरकारसे १५ तोपोंकी सलामी मिलती है और फौजी बल ७०० सवार, ३०४० पैदल, ९७ तोप और १६० गोलंदाज हैं।

ग्वालियर।

दतियासे ४५ मील (झांसीसे ६० मील उत्तर) ग्वालियरका स्टेशन है। ग्वालियर मध्य भारतमें सबसे बड़ा देशी राज्यकी राजधानी एक सुन्दर शहर है। नए शहरको लश्कर और पुरानेको पुराना ग्वालियर कहते हैं। यह २६ अंश १३ कला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश १२ कला पूर्व देशान्तरमें स्थित है।

इस सालकी जन-संख्याके समय ग्वालियरमें १०४०८३ मनुष्य थे, अर्थात् ५४५५३ पुरुष और ४९५३० स्त्रियां। जिनमें ७६८६७ हिन्दू, २३०३८ मुसलमान, २१५३ एनि-मिष्टिक, १९२३ जैन, ९९ कृस्तान, और ३ बौद्धथे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें २८ वां और मध्य भारतमें पहिला शहर है।

लश्कर शहर—रेलवे स्टेशनसे २ मील पहाड़ी किलेके पासही नीचे लश्कर नामक नया शहर है। सन १७९४—१७९५ ई० में दौलतराव सिंधियाने जब ग्वालियरका कब्जा हासिल किया, तब उसने किलेके दक्षिण मैदानमें अपना लश्करगाह बनाया, उसी जगह एक नया शहर बस गया, जिसकी उन्नति बहुत जल्दी हुई, उसीका नाम लश्कर होगया। नया शहर होनेसे पुराना शहर धीरे धीरे घटता जाता है।

स्टेशनसे थोड़ा आगे लश्करकी सड़कके किनारे हिन्दुओंके ठहरने योग्य महाराजकी बनवाई हुई पत्थरकी सुन्दर नई सराय है। शहरमें भी एक बड़ी सराय है, परन्तु उसमें सफाई नहीं रहती।

लश्करका सराफा बाजार प्रधान सड़कपर है। शहरके मध्यमें बाड़ा वा पुराना राजमहल है, जिसके आसपास प्रधान सरदार और शरीफोंके मकान हैं। विक्टोरिया कालेज; जयाजी रावका अस्पताल और सिंधियाके माताका बनवाया हुआ नया मन्दिर उत्तम इमारत है। शहरके अधिकांश मकान दो मंजिले और मुडेरेदार हैं।

गाड़ीमें बड़े बड़े बैल जोते जाते हैं, जिसपर बहुतेरे सरदार सवारी करते हैं।

शहरके पासही फूलबागमें महाराज सिंधियाका नया महल है। मैं महाराजके एक अफसर पुरुषोत्तम रावसे आज्ञा लेकर जयन्द्र भवन देखने गया। महलके एक भागका नाम जयन्द्र भवन है, जिसको महाराज जयाजी रावने बनवाया है। यह हिन्दुस्तानके बहुत उत्तम मकानोंमेंसे एक है। जयन्द्र भवन दो मंजिला है, सीढ़ियोंके बगल पर कांचका कठघरा, ऊपरके महलकी दीवारोंमें सुनहला काम और बहुत बड़े आइने, छतमें बेश कीमती बड़े बड़े झाड़ और गालीचेके फरसपर सोना चांदी जड़ी हुई कुर्सियां और दूसरे बहुत उत्तम राजसी सामान देखनेमें आए।

महलके पास महाराजकी कचहरी है। बागमें एक जगह जलका सुन्दर हौज बना है।

पुराना ग्वालियर—किलेकी पहाड़ीकी पूर्वी नेवके पास ग्वालियरका पुराना शहर है, जो घटते घटते लश्करके ‍ै रहगया है। इसके फाटकके बाहर दो ऊंची मीनारोंके साथ साथ एक पुरानी जुमा मसजिद है।

मुरार छावनी—किलेसे मुरार तक २ मीलकी सायादार सड़क है। जो नदी अब मुरार नामसे प्रसिद्ध है, उसके पास मुरार नामक एक छोटा गांव था, इस लिये इसका नाम मुरार पड़ा है। पहले बहुत बड़ी अंगरेजी सेना यहां रहती थी। अंगरेजोंने सन १८८६ ई० में महा-

राजसे झांसी लेकर उसके बदलेमें ग्वालियर और मुरार उनको देदिया। रेज़ीडेंट और ग्वालियर राज्य सम्बन्धी अंगरेजी अफसर यहां रहते हैं।

मुरारकी जन–संख्या ग्वालियरसे अलग है। इस सालकी मनुष्य–गणनाके समय मुरारमें २४५१८ मनुष्य थे। अर्थात् १७६८२ हिन्दू, ६४१६ मुसलमान, ६१ कृस्तान, १०२ जैन, १ पारसी और २५६ एनिमिष्टिक।
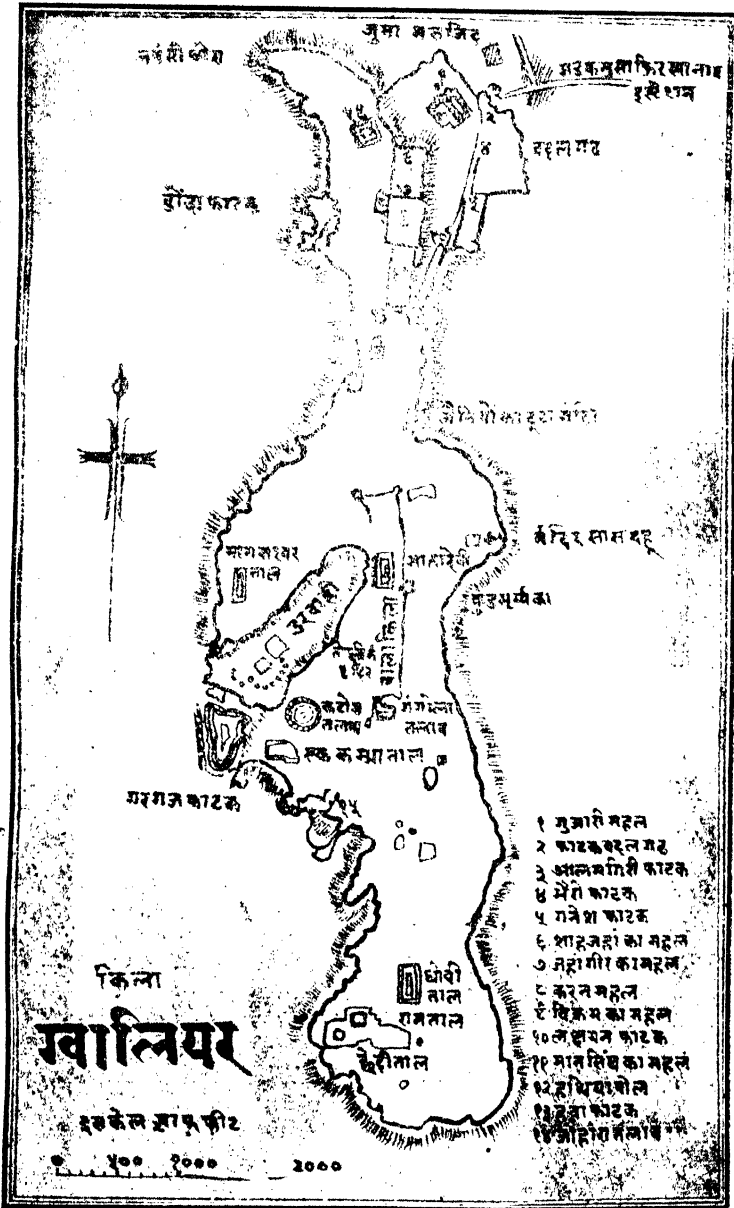
किला–ग्वालियरका किला हिन्दुस्तानके अधिक पुराने, प्रसिद्ध और दुर्गम किलोंमेंसे एक है। यह एक बहुत खड़ी पहाड़ीपर, जिसका सिर चिपटा है, स्थित है, (मत्स्यपुराणके

२७६ वें अध्यायमें है, कि धनुषदुर्ग महिदुर्ग नरदुर्ग बृक्षदुर्ग, जलदुर्ग और गिरिदुर्ग जो ६ प्रकारके किले हैं, इनमें गिरिदुर्ग सबसे उत्तम है। खाई कोटयुक्त शतघ्नी सैकड़ों मोर्चेवाला और ऊंचे द्वारवाला दुर्ग होना चाहिये) पहाड़ी शहरके उत्तर अखीरसे ३०० फीट परन्तु दरवाजेके प्रधान फाटकसे २७५ फीट ऊंची है। इसकी लंबाई उत्तरसे दक्षिण तक १ ३/४ मील और चौड़ाई केवल ६०० फीटसे २८०० फीट तक है। किलेकी दीवार ३० फीटसे ३५ फीट तक ऊंची है।

किलेका:प्रधान दरवाजा उत्तर पूर्व है, । जिसमें उत्तरसे आरंभ होकर दक्षिण तक आगे पीछे क्रमसे ६ फाटक हैं। (१) आलमगीर फाटक, इसको ग्वालियरके गवर्नर महम्मद शाहने सन १६६० ई० में बनवाया। दिल्लीके बादशाह औरंगजेबके दूसरे नाम (आलमगीरसे) इसका यह नाम पड़ा। (२) बादलगढ़ या हिंदोला फाटक, इसको मानसिंहके चाचा बादलसिंहने बनवाया। इसके बाहर हिंडोला रहता था, इससे इसका नाम हिंडोला फाटक भी है। एक लोहेके तख्तेपर लिखा है कि सैयद आलमने सन १६४८ ई० में इसको सुधारा इसके पासही दहिने ३०० फीट लम्बा और २३० फीट चौड़ा उजड़ा पुजड़ा दो मंजिला गुजारी महल है, जो मानसिंहकी रानीके रहनेके लिये बना था। (३) भैरव फाटक, सबसे पहलेके कछवा राजाओंमेंसे एकके नामसे इसका भैरव नाम पड़ा। इसके समीप एक स्थानपर लेख है, जिसमें सन १४८५ ई० मानसिंहके गद्दी होनेके एक वर्ष पहलेकी तारीख है। (४) गणेश फाटक, इसको डुंगरेलीने बनवाया, जिसने १४२४ ई०से १४५४ तक राज्य किया। बाहरी ६० फीट लम्बा ३९ फीट चौड़ा और २५ फीट गहरा नूरसागर नामक सरोवर है। यहां ग्वालिया साधुका- जिसके नामसे शहरका ग्वालियर नाम पड़ा केवल ४ पायोंपर गुम्बजदार छोट मन्दिर है, जिसके पास एक छोटी मसजिद है। (५) लक्ष्मण फाटक फाटकके पास पहुँचनेसे पहले चट्टान काटकर बना हुआ १२ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा ४ स्तंभोंके जगमोहनके साथ विष्णुका मन्दिर मिलता है, जो चतुर्भुजका मन्दिर कहलाता है। बाएँ एक लंबे शिलालेखमें संवत् ९३३ लिखा है। यहां एक सरोवरके सामने ताज निजामकी क़बर है, जो इब्राहिम लोदीकी कचहरीका एक शरीफ आदमी था और इस फाटकके आक्रमण करते समय सन १५१८ ई० में मारागया। फाटकोंके बीचमें शिव पार्वती और करीब ५० शिवलिंग चट्टान काटकर बनाए गए हैं। और सूकर भगवान्‌की घिसी हुई १५ ३/४ फीट ऊंची बहुत पुरानी मूर्ति है। (६) हथिया पवंर, यह मानसिंहके महलका एक हिस्सा है उन्हींका बनवाया हुआ है। यहां पत्थरका हाथी था, इससे इसका यह नाम पड़ा।

किलेके पश्चिमोत्तर धोंदा पंवर (फाटक) है। धोंदा नामक कछवा राजाके नामसे इसका यह नाम पड़ा है। इसमें आगे पीछे ३ फाटक हैं।

दक्षिण पश्चिमका दरवाजा गरगज पंवर कहलाता है। इसमें आगे पीछे ५ फाटक थे, जिनमेंसे ३ को जनरल व्हाइटने तोड़ दिया।

किलेके तालावों, कूंओं और हौजोंमें पानी कभी नहीं चुकता। सूर्य्यकुण्ड जो सास बहूके मंदिरसे ५०० फीट पश्चिमोत्तर है, सन२७५ और सन३००ई० के बीचमें बना, जो किलेमें सबसे पुराना है। ३५० फीट लम्बा और१८० फीट चौड़ा है। उसकी गहराई सर्वत्र बराबर नहीं है। किलेके उत्तर बगलके समीप जयंती थोड़ाके पास तिकोनिया तालाब है,जहां२ शिला लेख हैं, जिनमेंसे एक सन १४०८ ई० का और दूसरा उससे कुछ पहलेका है। किलेके उत्तर भागमें

शाहजहांके महलके आगे जौहर तालाब है। राजपूत स्त्रियोंकी जगह होनेके कारण इसका जौहर नाम पड़ा। पद्मनाथके मन्दिरके समीप २५० फीट लंबा १५० फीट चौड़ा और १५ फीटसे १८ फीट तक गहरा, जो कभी कभी सूख जाता है, सास बहू तालाब है। किलेके मध्य में २०० फीट लंबा और इतनाही चौड़ा, जिसके दक्षिण बगलके पास सर्वदा गहरा पानी रहता है, गंगोला तालाब है। किलेके दक्षिण अखीरके पास किलेके सब तालाओंसे बड़ा अर्थात् ४०० फीट लंबा और २०० फीट चौड़ा, जो कम गहरा है, धोबी तालाब है।

किलेमें ६ महल हैं, (१) गुजारी महल, जिसका वृत्तांत बादलगढ़ फाटकक साथ लिखा है, (२) मानसिंह महल (सन १४८६-१५१६ ई० मरम्मत सन १८८१ ई० में) किलेमें प्रवेश करने पर यह महल दहिने मिलता है। इसके दो मंजिल भूमिके नीचे और दो मंजिल ऊपर हैं। चमगादुरोंके कारण यह रहने योग्य नहीं है। महलके पूर्वका चेहरा ३०० फीट लंबा और १०० फीट ऊंचा है, जिसमें ५ गोलाकार टावर हैं। दक्षिणका चेहरा १६० फीट लंबा और ६० फीट ऊंचा ३ गोलाकार टावरोंके साथ है। महलके उत्तर और पश्चिमके बगल बहुत उजड़ पुजड़ गए हैं, (३) विक्रमका महल, यह मानसिंह महल और कर्ण महलके बीचमें है, (४) कर्ण महल यह लंबा तंग और दो मंजिला है। इसका एक कमरा ४३ फीट लम्बा और २८ फीट चौड़ा है। पासही दक्षिण ओर ३६ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा गुम्बजदार दूसरा कमरा (सन १५१६ ई०) है, (५) जहांगीर महल, और (६) शाहजहां महल, ये दोनों किलेके उत्तर अखीरमें हैं। ये सादे हैं, इनमें कारीगरीका काम नहीं है।

किलेके भीतर हिन्दू मन्दिर-(१) ग्वालिया मन्दिर (२) चतुर्भुज मन्दिर (ये दोनों लिखे गए हैं) (३) जयंती थोड़ा-इसका अलतमसने सन १२३२ ई० में विनाश किया (४) तेलीका मन्दिर-इसको एक धनवान तेलीने सन ई० के १० वें वा ११ वें शतकमें बनवाया। इसका सुधार सन १८८१-१८८३ ई० में हुआ। यह किलेके मध्यमें ६० फीट लंबा और इतनाही चौड़ा और ग्वालियरकी सब इमारतोंसे ऊंचा है। जगमोहन ११ फीट पूर्व निकला है। फाटक ३५ फीट ऊंचा है। इसके ऊपर मध्यमें गरुडकी मूर्ति है। यह पहले वैष्णवका मन्दिर था, परन्तु सन ई० के १५ वें शतकमें शैवका हुआ। यह बहुत दृढ़ मन्दिर संगतराशी कामसे छिपा हुआ है। इन मन्दिरोंके अतिरिक्त कम प्रसिद्ध दूसरे ४ मन्दिर हैं। सूर्य्यदेव मन्दिर, मालदेव मन्दिर, धोंदादेव मन्दिर और महादेव मन्दिर।

किलेमें जैन मन्दिर-(१) किलेके पूर्व दीवारके मध्यके पास सास बहू मन्दिर है। मन्दिरका पेशगाह बचा है, जो १०० फीट लंबा ६३ फीट चौड़ा और ७० फीट ऊंचा तीन मंजिला है। पहले यह १०० फीट ऊंचा होगा। इसका शिखर टूट गया है, दरवाजा उत्तर ओर है। बाहर दीवारमें मनुष्य, जानवर, फूलकी संगतराशी भरी है। मध्यका हाल ३० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा ४ पायोंपर है। शेष इमारतकी केवल जड़ रहगई है। यह मन्दिर जैनोंके छठें संत पद्मनाभका है। कहा जाता है कि, इसको राजा महिपालने बनवाया। इसका संस्कार सन १०९२ ई० में हुआ। पेशगाहके भीतर एक लंबा शिलालेख है, जिसकी तारीख सन १०९३ ई० के बराबर होती है। (२) छोटा सासबहू मन्दिर यह २३ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा गोलाकार १२ पायोंपर चारोंओरसे खुला हुआ है। (३) किलेके पूर्व दीवारके सामने हस्ती पंवर और सासबहू मन्दिरके बीचमें एक छोटी इमारत है। जो सन ११०८ ई० के लगभग बनी।

जैन मूर्तियां और गुफाएं–गिनतीमें इतनी और इनके समान बड़ी जैन मूर्तियां उत्तरी हिन्दुस्तानके दूसरे किसी स्थानमें नहीं हैं। वे किलेकी दीवारोंके कुछही नीचे खड़ी पहाड़ीमें चट्टान काट कर बनी हैं। बहुतेरोंके समीप सुगमतासे आदमी जा सकता है, जहां जहां चिकना और खड़ा चट्टान है प्राय: सर्वत्र छोटी गुफाएँ और ताक हैं परन्तु अधिक जाहिरा बनावट ५ प्रधान झुण्डोंमें बांटी जासकती है। पहला उरवाही झुण्ड दूसरा दक्षिण पश्चिम झुंड, तीसरा पश्चिमोत्तर झुण्ड, चौथा पूर्वोत्तर झुंड और पांचवां दक्षिण पश्चिमका झुंड, इनमेंसे पहिले और पांचवें झुंडोंकी मूर्तियां गिनतीमें अधिक और कदमें बड़ी मुसाफिरोंके देखने योग्य हैं। वे संपूर्ण सन १४४१ ई० से १४७४ तककी बनी हुई हैं। कुल मूर्तियां नंगी हैं। सन १५२७ ई० में दिल्लीके बादशाह बाबरकी आज्ञासे बहुतेरोंका अंग भंग कर दिया गया। जैन लोगोंने कई मूर्तियोंको सुधरवाया है।

उरवाही झुण्ड–यह उरवाही घाटीके दक्षिण बगलकी खड़ी पहाड़ीमें है। इसमें २२ प्रधान मूर्तियां हैं जिनमें एक ५७ फीट ऊंची है। इनके पास तोमर राजाओंके समयके ६ शिला लेख हैं, जिनमें संवत् १४९७ (सन १४४० ई०) और संवत् १५१० (सन १४५३ ई०) लिखे हुए हैं। झुंडके अखीर पश्चिम जैनोंके २२ वें संत नेमीनाथकी ३० फीट ऊंची मूर्ति है। सीढ़ियोंके टूट जानेके कारण अब वहां जाना कठिन है।

दक्षिण–पश्चिमवाला झुण्ड–यह एक तालावके पासही नीचे खड़ी पहाड़ीमें उरवाही दीवारके ठीक बाहरी ओर है। यहां ५ प्रधान मूर्तियां हैं, जिनमें नम्बर २ आठ फीट लंबी सोती हुई एक स्त्री और नम्बर ३ जैनोंके २४ वें संत महावीरकी बालमूर्ति उसके पिता माताके साथ है।

पश्चिमोत्तर झुण्ड–यह किलेके पश्चिम धोंदा फाटकके थोड़ेही उत्तर खड़ी पहाड़ीमें है। यहांकी मूर्तियां प्रसिद्ध नहीं हैं। आदिनाथके पास एक लेखमें संवत् १५२७ (सन १४७० ई०) लिखा है।

पूर्वोत्तर झुण्ड–यह पूर्व दरवाजेके बीच फाटकोंके ऊपर खड़ी पहाडीमें है। यहां संगतराशीका काम कम है और कोई लेख नहीं है। गुफाओंमेंसे एक या दो बड़ी हैं, परन्तु अब उनमें जाना बहुत कठिन है।

दक्षिण–पूर्वका झुण्ड–यह लंबी, खड़ी पहाड़ीमें गंगोला तालाबके ठीक नीचे है। यह झुंड सबसे अधिक बड़ा और सबसे अधिक प्रसिद्ध है। क्योंकि यहां १८ मूर्तियां २० फीटसे ३० फीट तक और बहुतेरी ८ फीटसे १५ फीट तक ऊंची हैं। २ मीलसे अधिक पहाड़ीके बगलमें यहांकी मूर्तियां हैं कई गुफाओंमें वैरागी रहते हैं।

ग्वालियरका राज्य–राज्यके प्रधान हिस्सेके पूर्वोत्तर और पश्चिमोत्तर चंबल नदी, जो आगरे और इटावेके अंगरेजी जिलोंसे और राजपुतानेके धौलपुर, करौली और जयपुर (देशी राज्यों) से इसको अलग करती है; पूर्व जालौन, झांसी, ललितपुर और सागर अंगरेजी जिले, दक्षिण भोपाल, टोंक, किलचीपुर और राजगढ़ देशी राज्य, और पश्चिम राजपुतानेके झालावर, टोंक और कोटा राज्य। प्रधान हिस्सेके अतिरिक्त ग्वालियर राज्यके दूसरे कई टुकड़े हैं। मध्य भारतके पश्चिमी मालवा एजेंसीके अधीन आगरा, शाहजहांपुर, उज्जैन, मंडेसर और नीमच परगने और भोपावर एजेंसीके अधीन अमझेरा, मनावर, किकथन, सागोर, बाग, बीकानेर और पिपलिया। राज्यकी सीमापर चंबल नदी और राज्यमें सिंध नामक नदी, कुआरी, आसन और संख नदी बहती हैं। सन १८८१ में राज्यका क्षेत्रफल खनिया, धाना और मकसूदनगढ़के साथ २९०४६ वर्गमील और जन–संख्या३११५८५७थी, जिनमें २७६८३८५ हिन्दू, १६७३२०

मुसलमान् , १६७५१६ आदि निवासी, १२२३० जैन, २०८ कृस्तान और १७८ सिक्ख थे। हिन्दू आदिमें ३८०१९३ ब्राह्मण, ४२२२६७ राजपूत थे । ग्वालियर राज्यकी मालगुजारी लगभग १२५००००० रुपये हैं। यह राज्य भारवर्षके सबसे बड़े देशी राज्योंमेंसे एक है ।

संपूर्ण राज्यके बड़े ऊंचे ३ हिस्से हैं, जिनमें दक्षिणी भाग सबसे ऊंचा है। पूर्वोत्तरके हिस्से साधारण रूपसे समतल हैं। ऊंचे देशोंमें अलग अलग छोटी छोटी पहाड़ियां हैं। कई भागोंमें थोड़े थोड़े और दूसरोंमें जगह जगह जंगल हैं । गल्ला, रुई, तेलहन, ऊख, नील प्रधान फसिल हैं। दक्षिणी विभाग पोस्तेके उपजके लिये प्रसिद्ध है। यहांसे पोस्ता और रूई विशेष करके दूसरे देशोंमें जाती हैं।

ग्वालियर राज्यमें उज्जैन (जन–संख्या ३४६९१) मंडेशर (२५७८५,) मुरार छावनी (२४५१८) नीमच छावनी (२१६००) साजापुर (११०४३), बार नगर (१०२६१), नरवर जिसको लोग दमयन्तीके पति राजा नलकी राजधानी कहते हैं. भिलसा और चन्देरी प्रसिद्ध बस्ती है । ग्वालियर राजधानीसे १३५ मील दक्षिण–पश्चिम ग्वालियर राज्यमें एक जिलेका सदर गूना एक कसबा है, जिसमें कार्तिक पूर्णिमाको एक मेला होता है ।

इतिहास–सूर्य्यसेन नामक एक कच्छवा प्रधान कोढ़ी था, उसने शिकार खेलते समय गोप-गिरि पहाड़ीके पास, जिसपर अब किला है, ग्वालिया साधुसे पानी लेकर पिया, जिससे वह आरोग्य होगया । उसकी कृतज्ञतामें उसने उस पहाड़ीपर एक किला बनवाया और उसका नाम ग्वालियर रक्खा । सूर्य्यसेनने सन २७५ ई० में सूर्यका मन्दिर बनवाया और सूर्य्यकुंड खोदवाया । ग्वालिया साधुने सूर्य्यसेनका नाम सोहनपाल रक्खा तबसे उस कुलके ८३ राजाओंकी पाल पदवी रही ।

कच्छवा कुलके बाद ७ परिहार राजा हुए, जिन्होंने सन ११२९ से १२३२ ई० तक राज्य किया । सन १२३२ ई० में अलतमसने सारंगदेवसे राज्य छीनलिया। सन १३९८ ई० की तैमूरकी चढ़ाई तक दिल्लीके बादशाह इसको राज्यके कैदखानेके काममें लाते थे। सन १३७५ में तोमर प्रधान बीरसिंह देवने स्वाधीन हो ग्वालियरमें तोमर वंश कायम किया । सन १४१६ और १४२१ ई० में ग्वालियरके प्रधानोंने दिल्लीके खिजरखांको कर दिया और सन १४२४ ई० में मालवाके, हुशंगशाहके ग्वालियर पर महासरा करनेपर दिल्लीके मुबारक-शाहने मालवाको स्वतंत्र किया। सन १४२६–१४२७–१४२९ और १४३२ ई० में दिल्लीके बादशाहने ग्वालियरमें जाकर बलात्कारसे कर लिया। सन १४६५ ई० में जौनपुरके बाद-शाह हुसेन सार्कीने ग्वालियरपर घेरा डालके कर देनेके लिये इसको मजबूर किया । मानसिंहने बहलोल लोदी और सिकन्दर लोदीकी हुकूमत मानली, परन्तु सिकंदर लोदीने सन १५०५ ई० में जब ग्वालियरके विरुद्ध कूच किया, तब बहुत नुकसानी सहकर उसको भागना पड़ा, तिसपर भी उसने सन १५०६ ई० में हिम्मतगढ़के किलेको ले लिया। परन्तु ग्वालियर पर चढ़ाई नहीं की। सन १५१७ में सिकन्दर लोदीने ग्वालियर जीतनेके लिये आगरेमें बड़ी तैयारीकी परन्तु बीमारीसे वह मरगया। इब्राहिम लोदीने ३०००० सवार ३०० हाथी और दूसरी सेनाओंको भेजा, जिनके पहुँचनेके कई दिन पश्चात् मानसिंह मरगया।

मानसिंह ग्वालियरके तोमर राजाओंमें सबसे बडा राजा था और परमार्थके बहुतेर काम इसने किए थे, जिनमेंसे एक ग्वालियरके पश्चिमोत्तर मोती झील नामक बड़ा तालाब है। उत्तरी भारतमें हिन्दुओंके घराऊ कारीगरीका उत्तम उदाहरण उसका महल है । मानसिंहके

देहान्तके उपरान्त उसके पुत्र विक्रमादित्यने मुसलमानोंके महासरेको एक वर्ष तक बरदाश्त किया, परन्तु अंतमें परास्त होनेपर आगरेको भेजागया ।

बाबरने रहीमदादको सेनाके साथ ग्वालियर भेजा, जिसको उसने छलसे लेलिया । सन १५४२ई० में शेरशाहने ग्वालियरके गवर्नर आबुल कासिमसे किलेको छीन लिया। सन १५४५ में शेरशाहके पुत्र सलीम अपने खजानेको चुनारसे ग्वालियरमें लाया और सन १५४३ में ग्वालियरमें मरगया । विक्रमादित्यके पुत्र राणा शाहने ग्वालियर छीन लेनेका उद्योग किया और ३दिन तक अकबरकी सेनासे बड़ा संग्राम किया, परन्तु अंतमें परास्त हो चित्तौरमें चलागया ।

सन १७६१ ई० में गोहदके जाट राणा भीमसिंहने ग्वालियरको लेलिया । भीमसिंहसे महाराष्ट्रोंने लिया । सन १७७९ ई० में अंग्रेजी अफ़सर मेजर पोफमने ग्वालियरको महाराष्ट्रोंसे छीनकर गोहदके राणाको लौटा दिया । सन १७८४ में महादजी सिंधियाने ग्वालियरको लेलिया, परन्तु सन १८०३ में अंगरेजी जनरल ह्वाइटने फिर इसको छीन लिया । सन १८०५ के सुलहनामेके अनुसार ग्वालियर सिंधियाको मिला । सिंधियाने आगरा और यमुनाके उत्तरका देश अंगरेजोंको छोड़ दिया और दिल्लीके बादशाह शाह आलमको, जो उसके अधीन था, अंगरेजोंकी रक्षामें कर दिया ।

सन १८४३ ई० में जनकोजी रावकी मृत्यु होनेपर राज्यमें बलवा हुआ । अङ्गरेजी सरकारको सेना भेजनी पड़ी । तारीख २९ दिसंबरको एकही दिन महाराजपुर और पनियारमें २ लड़ाइयां हुईं । राजद्रोही परास्त हुए । लड़के महाराजको फिर राज्यका अधिकार दिया गया । ग्वालियरकी सेना घटाकर ५००० सवार. ३००० पैदल, ३२ तोपें करदी गईं ।

सन १८५७ के बलवेके समय महाराज जयाजी राव सिंधिया २३ वर्षके नव युवक थे, उनके पास भारी सेना थी । महाराजके सुयोग्य दीवान दिनकररावने अपनी सेनाको बागी होनेसे बहुत रोका, परन्तु अंगरेजी अफसरोंको मारनेसे नहीं रोकसका । अंगरेजी ७ अफसर कई स्त्री और कई एक बालक भागकर रेजीडेंसी वा सिंधियाके महलमें जा पहुँचे, जो हिफाजतके साथ धौलपुर होकर आगरेको भेजे गए ।

कई महीनों तक ग्वालियरमें कोई बखेडा नहीं था यद्यपि देशोंमें चारोंओर बलवा फैलगया था । सन १८५८ ई० की तारीख २२ वीं मईको काल्पीमें एक प्रसिद्ध लड़ाई हुई, जिसमें बागी सब अच्छी तरह परास्त हुए । वे उसी रातको ग्वालियरकी ओर चले और तारीख ३० मई की रातको मुरारके पड़ोसमें पहुँच गए ।

तारीख १ जूनको महाराज जियाजी ६००० पैदल, १५०० के लगभग सवार, ६०० अंग रक्षक और ८ तोपोंके साथ बागियोंसे लड़नेको निकले । मुरारसे २ मील पूर्व मुठभेड़ हुई । करीब ७ बजे सबेरे बागी आगे बढे ज्योंहीं वे लोग पहुंचे, महाराज सिंधियाकी आठों तोपें खुलीं । फैर होनेसे पहलेही बागीलोग सेनाके बगलमें समीप आ गए । २००० सवारोंने बहुत तेजीके साथ पहुँचकर आठों तोपें लेलीं । उसी समय सिंधियाकी अंगरक्षक सेना छोड़कर सम्पूर्ण पैदल और घोड़सवार या तो बागियोमें मिल गए, या लड़नेसे अलग होगए । तब बागियोंने अंगरक्षक सेनापर आक्रमण किया उन्होंने बड़ी बीरताके साथ आत्मरक्षाकी, महाराज सिंधिया थोड़े लोगों सहित फिरे और भागकर आगरे पहुंच गए ।

तारीख १६ जूनको अंगरेजी सेना मुरारसे ५ मील पूर्व बहादुरपुर पहुंची उसने एका एक दुश्मनोंपर आक्रमण करके उनको भगाया । तारीख १६ और १७ जूनको अंगरेजी सेना से बागियोंकी कई लड़ाइयां हुईं, जिनमें बागियोंकी बहुत हानि हुई । अंतमें वे लोग तितर

बितर हो गए। तारीख १९ जूनको अंगरेजी अफसरोंने लश्कर और मुरारको लेलिया। तारीख २० जूनको अंगरेजी सेना चुपचाप किलेमें घुसपड़ी। वहां मुठभेड़के होनेपर सख्त लड़ाई उपरान्त किला अंगरेजोंके कब्जेमें आया और सन १८०६ ई० तक उन्होंके हाथमें रहा बलवेके पीछे महाराज जयाजीराव नए सिरेसे ग्वालियरके राजा बनाए गए।

सिंधिया राजवंश-सिंधिया जातिका महाराष्ट्र रानोजी ग्वालियर राज्यके स्थापन करनेवाला है,जो सन इस्वीके अठारहवें शतकके आरंभमें बालाजी पेशवाका पादुका वाहक था। उसका पिता विंध्याचलसे दक्षिण एक गांवका मुखिया था। रानोजी तुरतही तरक्की करके पेशवाकी अंगरक्षक सेनाका सरदार होगया। मरनेके समय ग्वालियरके एक हिस्सेकी भूमि उसके हस्तगत हुई। रानोजी की मृत्यु होनेपर उसके पुत्र महादजी सिंधिया राजा हुआ। यह बडा लड़ाका था, इसके समयमें ग्वालियर राज्यका विस्तार हुआ। इसीने सन १७८४ ई० ग्वालियरके किलेको फिर दखल किया। महादजीके बाद महाराज दौलत राव सिंधिया राजगद्दीपर बैठे। इनके राज्यके समय बहुत लड़ाइयां हुई। इन्हींने सन १८१० ई० में उज्जैनको छोड़कर ग्वालियरको अपनी राजधानी बनाया। सन१८२७ई०में दौलतराव पुत्रहीन मरगए बैजाबाई राज्य करने लगी और उसने भुगत रावको पालकर राजगद्दी दी। भुगत रावका नाम जनकोजी हुआ,जो सन१८४३ई०में निःसंतान मर गए। उनकी स्त्री तारा बाईने भगीरथ रावनामक ८ वर्षके बालकको गोद लिया। अर्थात् दत्तक पुत्र बनाया याज्ञवल्क्य स्मृतिके दूसरे अध्यायमें है कि जिस पुत्रको माता और पिता देदेवे, वह दत्तक होताहै यही भगीरथ राव महाराज जयाजी राव नामसे विख्यात हुए।सन१८८६ई०की तारीख२० वीं जूनको महाराज जयाजीका देहान्त होगया। इनके सुयोग्य पुत्र महाराजाधिराज१०८माधोजी राव सेंधिया वर्तमान ग्वालियरनरेश हैं। महाराज नाबालिग हैं; इससे राज्यशासन कौन्सिल द्वारा होता है। अंगरेजी सरकारसे ग्वालियरके राजाओंको २१ तोपोंकी सलामी मिलती है।

मध्यभारत-मध्यभारतका क्षेत्रफल ७७८०८ वर्गमील है। जन-संख्या इस सालकी मनुष्य-गणनाके समय १०३१८८१२ थी। मध्यभारतके राजा और ठाकुर गण गवर्नर जनरलके एजेंटकी निगहवानीके अधीन हैं; जो इन्दौरमें रहते हैं भोपावर, पश्चिमी मालवा भोपाल ग्वालियर,बुन्देलखंड और बघेलखंड मातहत एजेंसी हैं;जिनमें ग्वालियर बहुत प्रासिद्ध राज्य है।

मध्य भारतके देशी राज्योंके शहर और कसबे, जिनकी जन-संख्या इस सालकी मनुष्य-गणनाके समय १०००० से अधिक थीं।

नम्बर.	शहर कसबे.	राज्य.	जन-संख्या.	नम्बर.	शहर कसबे.	राज्य.	जन-संख्या.
१	ग्वालियर	ग्वालियर	१०४०८३	१३	धार	धार	१८४३०
२	इन्दौर	इन्दौर	९२३२९	१४	टीकमगढ़	उरछा	१७६१०
३	भोपाल	भोपाल	७०३३८	१५	सिहोर	भोपाल	१६२३२
४	उज्जैन	ग्वालियर	३४६९१	१६	देवास	देवास	१५०६८
५	मऊ	इन्दौर	२१७७३	१७	पन्ना	पन्ना	१४७०५
६	रतलाम	रतलाम	२९८२२	१८	महाराजनगर	चर्खारी	१३०६८
७	दतिया	दतिया	२७५६६	१९	छत्तरपुर	छत्तरपुर	१२५५७
८	मंडेशर	ग्वालियर	२५७८५	२०	रामपुर	इन्दौर	११९३५
९	मुरार	ग्वालियर	२४५१८	२१	सिरोज	टोंक	११७३७
१०	रीवां	रीवां	२३६२६	२२	साजापुर	ग्वालियर	११०४३
११	जावरा	जावरा	२१८४४	२३	नवगंग	छत्तरपुर	१०९०२
१२	नीमच	ग्वालियर	२१६००	२४	बारनार	ग्वालियर	१०२६१

धौलपुर।

ग्वालियरसे ४१ मील (झांसीसे १०४ मील उत्तर कुछ पश्चिम) धौलपुरका स्टेशन है। हेतमपुर और धौलपुर स्टेशनोंके बीचमें धौलपुरसे लगभग ५ मील चम्बल नदी पर रेलवे है, जिसकी लम्बाई २७१४ फीट और गहराई ७५ फीट है। इसके बनानेमें कम्पनीका ३२७१०३५ रुपया खर्च पड़ा है। चम्बल नदी ग्वालियर और धौलपुर राज्योंकी सीमा है, जो मालवामें विंध्याचलसे निकल ५७० मील बहनेके उपरांत इटावेके पास यमुनामें मिलगई है। पुराणोंमें इसका नाम चर्मण्वती लिखा है।

धौलपुर राजपूतानेमें चम्बल नदीके पास देशी राज्यकी राजधानी एक कसबा है, जिसमें महाराजका सुन्दर महल बना है। सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय धौलपुरमें १५८३३ मनुष्य थे, अर्थात् १०५८७ हिंदू, ५२१५ मुसलमान और ३१ दूसरे।

धौलपुरसे २ मीलके अंतर पर $\frac{१}{२}$ मील लम्बा मुचकुंद तालाब है जिसमें कई छोटे टापू हैं। जिनपर मकान बने हैं। तालाबके किनारों पर ११४ मन्दिर बने हैं, परन्तु उनमें कोई पुराना वा बहुत प्रसिद्ध नहीं है। तालाबमें बहुत घडियाल रहते हैं। कार्तिकमें शर्द पूर्णिमा नामक मेला १५ दिन रहता है, जिसमें घोड़े मवेशी इत्यादि वस्तु बिकती हैं।

धौलपुरसे ४ मील दूर लाल पत्थरका उत्तम पुल है। एक सड़क आगरेसे धौलपुर होकर बम्बई गई है।

धौलपुर राज्य—मध्य भारत राजपुतानेमें धौलपुर एजेंसीके पोलिटिकल सुपरिंटेंडेंके अधीन धौलपुर देशी राज्य है। राज्यके उत्तर आगरा जिला; दक्षिण चंबल नदी, जो ग्वालियर राज्यसे इसको अलग करती है; पश्चिम करौली और भरतपुर राज्य है। राज्यका क्षेत्रफल १२०० वर्गमील इसकी लम्बाई पूर्वोत्तरसे दक्षिण-पश्चिम तक ७२ मील और औसत चौड़ाई १६ मील है। राज्यसे ९ लाख २५ हजार रुपयेकी आय है। पहाड़ियोंका एक सिलसिला राज्यमें होकर गया है, जो समुद्रके जलसे ५६० फीटसे १०७४ फीट तक ऊंचा ६० मीलतक चला गया है। राज्यकी भूमि उपजाऊ है। चंबल नदी दक्षिण-पश्चिमसे पूर्वोत्तरको राज्यमें १०० मील बहती है जो ग्रीष्म ऋतुसे वर्षा ऋतुमें ७० फीट अधिक उठती है। बाणगंगा जयपुरमें बैरतके निकटसे निकली है और धौलपुरकी उत्तरी सीमापर, और आगरे जिलेके मध्यमें करीब४० मील दौड़ती है। पार्वती नदी करौलीसे निकलकर पूर्वोत्तर दिशामें धौलपुर राज्यको लांघती हुई बाणगंगामें गिरती है, जो सूखी ऋतुओंमें सूख जाती है। इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय धौलपुर राज्यमें २७९८८० मनुष्य थे। सन१८८१ में २४९६१७ मनुष्य थे, अर्थात् २२९०५० हिन्दू,१८०९७ मुसलमान, २४०३ जैन और२७ कृस्तान. राज्यमें४ कसबे थे। धौलपुर (जन-संख्या १५८३३), बारी (जन-संख्या११५४७-सन १८९१ में १२०९२) राजखेरा (जन-संख्या ६२४७)और पुरानी चाउनी(जन-संख्या५१२६)। राज्यमें ब्राह्मण और चमार अधिक हैं।

एक सड़क आगरेसे धौलपुर कसबा होकर बाम्बेको, दूसरी धौलपुरसे राज्यखेरा होकर आगरेको, तीसरी धौलपुरसे बारीको, और बारीसे एक ओर भरतपुरको और दूसरी ओर करौलीको, और चौथी सड़क धौलपुरसे कोलारी और बासेरी तक, और वहांसे करौली तक गई है।

इतिहास—राजा धौलन देव तोनबारने सन ई० के ११ वें शतकके आरम्भमें धौलपुरको बसाया। संन १५२६ में यह बाबरके हाथमें गया। हुमायूंने चंबल नदीकी ढाहसे बचानेके

लिये धौलपुरको उत्तर बढ़ाया। अकबरके समय यहां एक पक्की सराय बनी। सन १६५८ में धौलपुरसे ३ मील पूर्व औरंगजेबने अपने बड़े भाई दाराको परास्त किया। सन १७०७ में धौलपुरके पास औरंगजेबके पुत्र आज़म और मुअज़िम लड़े। आज़म मारागया, मुअज़िम बहादुर शाहके नामसे दिल्लीका बादशाह हुआ। उस लड़ाईके गड़बड़में राजा कल्याणसिंह भदवरियाने धौलपुरके राज्यपर अधिकारकर लिया, जिसका अधिकार सन १७६१ तक बिना रोक टोकके रहा। इसके बाद ४५ वर्षके बीचमें कई बार इसके मालिक बदले। सन १७७५ में मिरज़ा नज़ाफखांने इसको छीन लिया। उसके मरनेपर सन १७८२ में धौलपुर सिंधियाके हाथमें गया। सन १८०३ में महाराष्ट्रोंकी लडाई टूटनेपर यह अंगरेजोंके अधिकारमें था। उस वर्षके अंतमें संधिके अनुसार यह सिंधियाको दिया गया। १८०५ में दौलतराव सिंधियाके साथ नई व्यवस्था होनेपर अंगरेजोंने फिर इसको लिया, जिन्होंने १८०६ में वर्तमान महाराणाके परदादा राणा कीर्तिसिंहको सरमथुराके साथ धौलपुर, वारी और राजखेड़ाके राज्योंको दिया, और बदलेमें उनसे गोदहका राज्य लेकर सिंधियाको देदिया। कीर्तिसिंहने धौलपुर कसबेके नये भागको बनवाया। उनके उत्तराधिकारी राणा भगवतसिंहने सन १८५७ के बलवेके समय अंगरेजी गवर्नमेंटको राजभक्ति दिखलाई, इसलिए उनको के. सी. एस. आई. की पदवी मिली। सन १८७३ में राणा भगवतसिंहकी मृत्यु होनेपर उनके पोते धौलपुरके वर्तमान नरेश महाराज राणा निहालसिंह, जो सन १८६३ में जन्में थे, राजसिंहासनपर बैठे। इनकी माता पटियालेके महाराजकी बहिन हैं। धौलपुरका राजवंश जाट हैं। इनको अंगरेजी सरकारसे १५तोपोंकी सलामी मिलती है। इनका फौजी बल ६०० सवार३६५०पैदल,३२मैदानकी तोपें और १०० गोलंदाज हैं।

दशवाँ अध्याय।

आगरा।

(*४) आगरा।

धौलपुरसे ३६ मील (झांसीसे १३७ उत्तर कुछ पश्चिम) आगरेमें किलेका रेलवे स्टेशन है। आगरा पश्चिमोत्तर देशमें आगरा विभाग और जिलेका सदर स्थान, यमुनाके दहिने अर्थात् पश्चिम (२७ अंश १० कला ६ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश ५ कला ४ विकला पूर्व देशान्तरमें) एक प्रसिद्ध शहर है।

इस सालकी जन-संख्याके समय आगरेमें १६८६६२ मनुष्य थे, अर्थात् ९०९२३ पुरुष और ७७७३९ स्त्रियां। जिनमें १११२९५ हिन्दू, ४९३६९ मुसलमान, ४०१५ कृस्तान, ३२११ जैन, ४८५ सिक्ख, २५४ बौद्ध और ३३ पारसी थे। जन संख्याके अनुसार यह भारतमें १४ वां और पश्चिमोत्तर देशमें चौथा शहर है।

पुराना देशी शहर करीब ११ वर्ग-मीलमें था, जिसके आधे क्षेत्र-फलमें अबतक आदमी बसे हैं। शहरके प्रायः सब मकान पत्थरके हैं। शहरमें जलकल सर्वत्र लगी हैं। उत्तम सड़कें बनी हैं। उमदे बाग लगे हैं। एक क्लब घर; एक बहुत बड़ी रेलवे लाइब्रेरी, और कई बड़े होटल बने हैं। छावनीमें गोरोंकी एक रेजीमेंट और दो हिन्दुस्तानी पल्टन रहती

हैं। किलेके स्टेशनसे थोड़े अन्तर पर मारवाडी धर्मशाला है, जिसमें मारवाड़ियोंके अतिरिक्त दूसरा नहीं टिकनेपाता। टिकनेके लिये किराएके मकान मिलते हैं।

१ उत्तरी बुर्ज	१२ समन बुर्ज
२ फाटक पर जानेकी सीढ़ी	१३ खास महल
३ नगीना मसजिद्	१४ शीश महल
४ छोटी कचहरी	१५ कुंआ
५ खुला वरामदा	१६ जहांगीरका महल
६ तखत गाह	१७ बुरज
७ दीवान आम	१८ फाटक अमरसिंघ
८ मच्छी भवन	१९ अकबर कावीतन महल
९ मिस्टर कालविनका क़बर	२० हाथी फाटक
१० अश जानवर	२१ अमरसिंघके फाटकका कोर्ट
११ अंगूरी बाग़	

किलेसे दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम फौजी छावनी और सिविल स्टेशने हैं, जिनके पूर्व ताजमहल स्थित है। किलेसे पश्चिमोत्तर हिन्दुस्तानके सबसे बड़े जेलोंमेंसे एक सेंटल जेल है जिसकी दस्तकारी उत्तम होती है। किलेसे उत्तर यमुना नदीका पक्का घाट है, जहां

घाटिया ब्राह्मण रहते हैं । यमुनामें कछुए बहुत हैं । घाटसे दक्षिण यमुनापर रेलवेका दो मंजिला पुल है । नीचेके मंजिलमें रेलगाड़ीके और ऊपर एके, बग्घी और आदमी चलते ह । पुलके नीचे पत्थरकी १७ कोठियां और लोहेके ३ पाये हैं । घाटसे आधी मील उत्तर यमुना पर नावोंका पुल है । यमुनाके दोनों किनारों तक ६१ नावोंपर तख्ते बिछे हैं ।

आगरेमें सोने और चांदीके काम, कारचोपीके काम, पत्थरके काम, जड़ाईके काम सुन्दर होते हैं । दरी, नइचे, बालूशाही मिठाई, अत्युत्तम बनती हैं । और रूई, चीनी, तम्बाकू, निमक, इमारतके कामकी लकड़ी, गल्ले, तेलहन, नील इत्यादिकी तिजारत होती है ।

आसफ बागमें प्रति बुधवारको अंगरेजी बाजा बजता है । आगरा कालेज सन१८३५ई० में खुला जिसके शामिल एक हाईस्कूल है । इसमें करीब ७०० विद्यार्थी और २७ मास्टरमें खास कालेजमें २५० के लगभग विद्यार्थी और ११ प्रोफेसर हैं ।

किला—किलेके देखनेके लिये ब्रिगेडियर जनरलसे पास लेना होता है, जो अंगरेजीमें दरखास्त करनेपर सहजमें मिल जाता है । यमुनाके दहिने किनारेपर किला खड़ा है । शहर यमुनाके झुकाव पर है । धारा पूर्वको दौड़ती है । किला यमुनाके किनारे पर कोनेके पास है, जिसको बादशाह अकबरने सन १५६६ ई० में बनवाया । इसका घेरा १ १/२ मील लम्बा और करीब ७० फीट ऊंचा लाल पत्थरका है । और खाई ३० फीट चौड़ी और ३५ फीट गहरी है । दक्षिण अमरसिंह फाटक है । जोधपुरके राजा जैसिंहका पुत्र अमर सिंह था, जो बड़े साहस और पुरुषार्थ करनेके उपरान्त इस जगह मरगया, इसलिये इस फाटकका नाम उसके नामसे पड़ा । पश्चिम दिल्ली फाटक है, जिसके भीतर हथिया दरवाजा या भीतरीका दिल्ली फाटक है, जिसमें दो टावर खड़े हैं ।

किलेके भीतर—(१) मोती मसजिद (२) दीवान आम (३) मच्छी भवन (४) दीवान खास (५) समन बुर्ज (६) सुनहरा सायवान (७) अंगूरी बाग (८) शीशमहल (९) खास महल और (१०) जहांगीर महल मुगल बादशाहोंकी उत्तम इमारतें हैं ।

(१) मोती मसजिद—बारक होकर मोती मसजिदमें पहुंचना होता है । यह मसजिद बादशाह शाहजहांकी बनवाई हुई भारतवर्षमें सबसे उत्तम मसजिदोंमेंसे एक है । इसका काम सन १०५६ हिजरी (१६४६ ई०) में आरम्भ और सन १०६३ हिजरी (१६५३ ई०) में समाप्त हुआ । इसके बाहर लाल पत्थरके तख्ते और भीतर उजले, नीले, और भूरे मार्बुल लगे हैं । इसकी लम्बाई १४२ फीट, और ऊंचाई ५६ फीट है । पश्चिमके अतिरिक्त आंगनके ३ बगलें पर मार्बुलके मेहराबदार ओसारे और तीनोंओर मेहराबी फाटक हैं, जिनमेंसे उत्तर और दक्षिणवाले बन्द रहते हैं । आंगनके मध्यमें ३७ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा मार्बुलका हौज है । खास मसजिदके ऊपर ३ गुम्बज और आगे ३ दरवाजे हैं । चेहरेकी तमाम लंबाई में उजले मार्बुल पर पीले पत्थरके अक्षर जड़कर लख बना है । फरस पर निमाज पढनेके लिये जानिमाज (क्यारियां) बनी हैं । फाटकके ऊपर और मसजिदकी छतपर जानेके लिये तंग सीढ़ियां हैं । बलवेके समय इस मसजिदमें अस्पतालका काम होता था ।

मोती मसजिदसे दहिने फिरने पर हथियार खानाका चौक मिलता है जहां तोपोंकी कतार है । यहां करीब ५ फीट ऊंचा और भीतरीसे ४ फीट गहरा और ८ फीट व्यासका जहांगीरका हौज है, जो पूर्व समयमें जहांगीरके महलमें था ।

(२) दीवान आम—अर्थात् साधारण सभासदोंकी कचहरी, जिसको सन १६८५ ई० में

औरंगजेबने बनवाया। यह उत्तरसे दक्षिणको २०० फीट लम्बा और करीब ७० फीट चौड़ा तीन तरफसे खुलाहुआ एक उत्तम साहवान है। इसकी छतके नीचे लाल पत्थरके उत्तम दश-स्तंभोंकी तीन पांती हैं। दीवारके पास मध्यमें एक मार्बुलकी बड़ी चौकी है, जिसपर बाद-शाहका तख्त रहता था।

(३) मच्छी भवन–दीवान आमके पीछे सीढ़ियों द्वारा ऊपर शाहजहांके महलमें जाना होता है, जहां मच्छी भवन है। उत्तरबगलमें २ फाटक हैं, जिनको बादशाह अकबर चित्तौरके महलसे लाया था। पश्चिमोत्तर कोनेके पास ३ गुम्बज वाली मार्बुलकी नगीना मसजिद है, जिसको शाहजहांने शाही औरतोंके लिये बनवाया था। इसीके पास औरंगजेबने शाहजहांको नजरबंद करके रक्खा था। नीचे एक छोटे चौकमें बाजार था। जहां सौदागर लोग महलकी शरीफ स्त्रियोंको अपना माल दिखलाते थे। मच्छी भवनके तीन ओर दो मंजिले दालान हैं। यमुनाकी ओर खुला हुआ दालान और एक काले पत्थरका तख्त है और सामने एक उजला बैठक है, जिसपर कचहरीका मसखरा बैठता था। तख्तपर लम्बा दरज है। चारोंओरके लेखमें जहांगीरका व्याख्यान है, जिसमें सन १०११ हिजरी (१६०३ ई०) लिखी हुई है। दालानके दक्षिण–पश्चिमके कोनेके समीप मीनामसजिद है। उत्तर उजड़ा पुजड़ा सब्ज मार्बुलके कमरेका स्थान और हम्माम और दक्षिण दीवान खास है।

(४) दीवान खास–अर्थात् स्वकीय सभासदोंकी कचहरी। बादशाह इस दालानके तख्तपर बैठकर यमुनाके उस पारके उत्तम बाग और इमारतोंको देखता था। इसकी नक्काशी नफीस है। उजले मार्बुल पर बहुरंग बहुमूल्य पत्थरके टुकड़ोंकी पच्चीकारी करके फूल और लता बनी हैं, जिसकी मरम्मत हालमें हुई है। यह इमारत सन १०४६ हिजरी (१६३६ ई०) की बनी हुई है।

(५) समन बुर्ज–दीवान खाससे समन बुर्जको सीढ़ी गई हैं, जहां खास बादशाह रहता था। मार्बुलके फर्शमें खेलनेके लिये पत्थरके टुकड़ोंसे पचीसी बनी है। एक कमरा, एक दालान और एक हौज यहांकी प्रधान चीज हैं।

(६) सुनहरा सायवान–इसकी छतमें सोनाके मुलम्मे किएहुए तांबेके पत्तर लगे हैं, इसलिये इसका यह नाम पड़ा है। यह एक सायवान समन बुर्जसे लगा हुआ है, जिसका अगला भाग यमुनाकी ओर है यहां औरतोंके विस्तरके कमरे हैं। खास महलके दक्षिण बगलमें एक ऐसीही दूसरी इमारत है।

(७) अंगूरी बाग–सुनहरे सायवानके पीछे २८० फीटका एक उत्तम चौक है, जिसमें फूल और झाड़ बूटे लगे हैं।

(८) शीशमहल—अंगूरी बागके पूर्वोत्तरके कोनेके समीप हौजोंके साथ दो अंधेरे कमरे हैं, जिनके भीतरकी छत और दीवारोंमें असंख्य छोटे दर्पण जड़े हुए हैं। ये सन १८७५ ई० में मरम्मत हुए।

(९) खास महल–चौकके अंतमें पूर्व ओर खास महल नामक एक सुन्दर कमरा है, जिसके हिस्सेका मुलम्मा और रंग सन १८७५ ई० में मरम्मत किया गया। आगे छोटे हौजोंमें

फव्वारे हैं। दक्षिण ओर आगे बढ़ने पर ३ सुन्दर कमरे मिलते हैं जो शाहजहांके खानगी कमरे थे। दहिने एक घेरेमें २५ फीट ऊंचा देवदारु लकड़ीका बनाहुआ उत्तम नकाशी किया हुआ सोमनाथका फाटक है, जिसको महमूद गजनवी सन १०२४ ई० में सोमनाथ पट्टनसे ले गया था, और सन १८४२ ई० में अंगरेजी गवर्नमेंटने गजनीसे लाकर यहां रक्खा। यमुनाके समीप सुन्दर अठपहला एक दालान है, जिसमें शाहजहांका देहांत हुआ।

(१०) जहांगीर महल-किलेके दक्षिण-पूर्व भागमें, शाहजहांके महल और बंगाली बुर्जके बीचमें लाल पत्थरसे बनाहुआ जहांगीर महल है, जिसको जहांगीरने अकबरके मरनेके थोड़ेही पीछे बनवाया। महलके कई हिस्से दो मंजिले हैं। नीचेके दरवाजेके रास्तेसे सीधे महलमें जाना होता है नीचेके हौजोंमें पानी पहुँचानेको २१ नल हैं। दरवाजेसे एक देवढी होकर १८ फीट लंबे और इतनेही चौड़े गुंबजदार कमरेमें जाना होता है। एक रास्तेसे ७२ फीट लंबे और इतनेही चौड़े ओगनमें पहुँचते हैं, जिसके उत्तर ६२ फीट लम्बा और ३७ फीट चौड़ा खुला हुआ बड़ा कमरा है। आंगनके दक्षिण बगलमें भी इसीके समान खंभोंपर बना हुआ इससे छोटा कमरा है। आंगनके पूर्वके एक बड़े कमरेमें होकर जानेसे चौकोने स्थानके मध्यमें एक मेहरावदार राह मिलती है, जो ४ स्तंभोंपर है। कई कमरोंमें रंगाहुआ गचका काम है। यमुनाकी ओर महलकी दीवार और कोनोंके पास अनेक गुम्बजदार टावर हैं। महलके नीचे मेहरावदार बहुत कमरे हैं, जिनमें हवा बहुत कम जाती है और सर्प बहुत रहते हैं, इस-लिये इसको कमलोग देखते हैं। जहांगीरके महल और शाहजहांके महलके मध्यमें स्नानके हौज और नलोंका एक सिलसिला है।

नकशा.

ताजमहल.
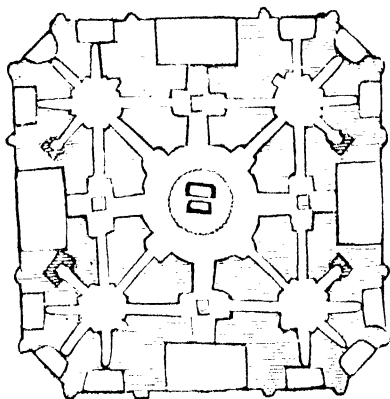
ताजमहल-ताजमहल मकबरेको ताजबीबीका रोजाभी कहते हैं। यह किलेसे १ मीलसे कुछ अधिक पूर्व यमुनाके दहिने किनारेपर है। एक अच्छी सड़क उसके पास गई है, जो सन १८३८ ई० के अकालमें बनी।

ताजमहल, आगरा।
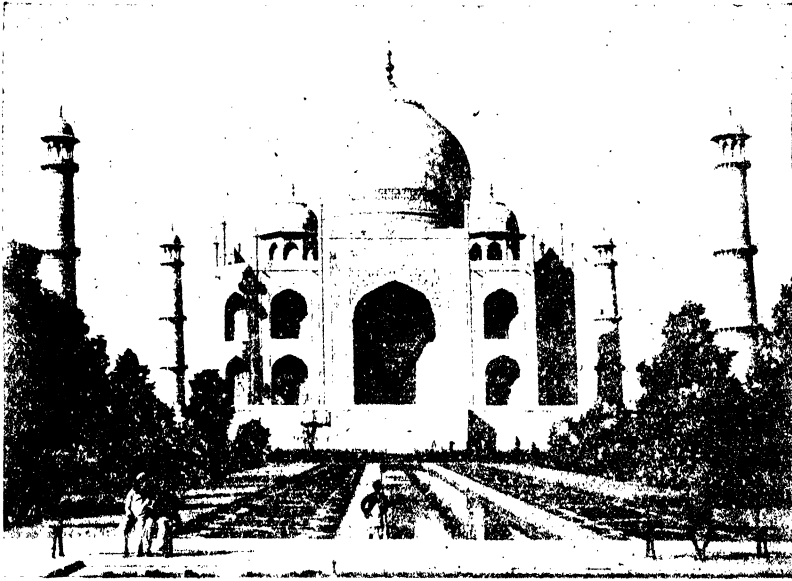
ताजमहलके समान खूबसूरत कोई दूसरी इमारत नहीं है। यह पूर्व समयकी हिन्दुस्तानी कारीगरीकी लज्जत और हुनरकी उत्तमता या ऊंचे खयालको दिखलाती है। नफीस संगतराशी इसके संपूर्ण भागोंमें पाई जाती है इसमें लाल मणि, व क्रांति, हीरे, जईद पन्ना, मूंगा, फिरोजा संग सुलेमानी, लाजवर्द, एशव, और अकीक आदि हजारों मन जवाहिरात लगे हैं। बादशाह शाहजहांने सन १०४०हिजरी (१६३० ई०) अपनी प्रिय स्त्री ममताज महल बानू बेगमकी कबरके लिये इसका काम आरंभ किया। १७ वर्षसे अधिक इसके बननेमें लगे। चन्द हिसाबोंसे ताजमहलमें १८४६५१८६ रुपये और दूसरे हिसाबोंसे ३१७४८०२६ रुपये खर्च पड़े। बहुतसे असवाबोंका और बहुतसी मेहनतका दाम नहीं दिया गया। शाहजहांके याददाश्तके अनुसार संगतराशके खर्च ३०००००० रुपये पड़े थे। इसमें चांदीके दो किंवाड़ थे, जिनको भरतपुरके राजा सूर्य्यमलने लेकर गलवा डाला।

ममताज महल प्रसिद्ध नूरजहांके भाई आसफखांकी लड़की थी। नूरजहांका पिता मिर्जा गयास एक पराशियन था। वह जीविकाके लिये तेहरानसे हिन्दुस्तानमें आया, जो पीछे इतमादुद्दौलाके नामसे विख्यात हुआ। सन १६१५ ई० ममताज महलके साथ शाहजहांका विवाह हुआ, जिससे ७ संतान हुई। ८ वीं संतान होनेके समय सन १६२९ ई० में ममताज महल मध्य भारतके बुरहानपुरमें मरगई। उसकी लाश आगरेमें लाकर ताजमहलके स्थानपर गाड़ी गई।

ताजगंज फाटकसे ताजमहलके बाहरीके घेरेमें, (जिसमें बागके घेरेका निशान अर्थात बडा फाटक है) प्रवेश करना होता है। इस घेरेके भीतर ८८० फीट लंबी और ४४० फीट चौड़ी भूमि है। बडा फाटक लाल पत्थरकी आलीशान दो मंजिली इमारत है। इसमें उजले मार्बुलमें बहुमूल्य काले पत्थर जड़कर कोरानकी एबारत बनाई गई है और इसके ऊपर उजले मार्बुलके २६ गुंबज हैं। फाटकके बाहरी एक बगलमें उत्तम कारवान सराय और दूसरे बगलमें इसीके समान उत्तम इमारत देख पड़ती है।

बड़े फाटकके भीतर बहुत बड़ा उत्तम बाग है, जिसमें ताजमहल आदि इमारतें खड़ी हैं और विविध प्रकारके उत्तम वृक्ष, मोलायम झाड़ बूटे लगे हैं। बागकी मरम्मतके लिये युरोपियन माली रहता है। बड़े फाटकसे उत्तर ताजमहलके समीप तक करीब ३०० गज लंबी पत्थरसे बनीहुई ४ सड़के हैं, जिनके बीचकी भूमिपर प्रत्येक रंगके फूल लगे हैं और स्थान स्थानपर बिगड़े हुए बहुतेरे फव्वारे हैं। मध्यमें पानीके हौजमें लाल रंगकी बहुत मछलियां हैं।

ताजमहल ३१२ फीट लंबे और इतने ही चौड़े और १८ फीट ऊंचे चबूतरेपर खड़ा है, जिसके पासही उत्तर यमुना नदी और दक्षिण बड़ा बाग है। चबूतरे पर मार्बुलका फर्श है और इसके प्रत्येक कोनेके पास १३३ फीट ऊंचे तीन मंजिले मार्बुलके मीनार हैं; जिनके ऊपर चढ़नेके लिये भीतर सीढ़ियां बनी हैं।

चबूतरेके मध्यमें बाहरसे १८६ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा दक्षिण रुखका उजला मार्बुलका ताजमहल है, जिसके चारों कोने तेंतीस तेंतीस फीट कटे हैं। इसके प्रधान गुंबजका व्यास ५८ फीट और ऊंचाई ८० फीट है, जिसके चारोंओर ४ गुंबज और १६ स्तंभ बने हैं। बाहर चारों तरफकी खड़ी दीवारोंके मध्यमें एक एक बहुत ऊंचे मेहराव हैं, जिनके दोनों बगलोंमें और कटेहुए कोनोंमें एक एक छोटे मेहराव हैं। सब मेहरावोंमें मार्बुलकी जालीदार टट्टियां हैं, जिनसे भीतरके कमरोंमें रोशनी जाती है। मेहरावोंमें बहुमूल्य नीले रंगके पत्थरके अरबी अक्षर जड़कर बड़ी इबारत बनी हैं।

ताजमहल बाहरसे एकही जान पड़ता है, परन्तु इसके भीतर पहलदार ९ कमरे हैं। अर्थात् मध्यमें एक प्रधान कमरा और चारों दिशाओंमें ४ और चारों कोनोंमें ४ दक्षिण वाले कमरेसे प्रधान कमरेमें, तथा दूसरे सातों कमरोंमें जाना होता है। प्रधान कमरेके दरवाजेके ऊपर काले मार्बुलके अरबी अक्षर बैठाकर इबारत बनी हैं। जूतेको बाहर छोड़कर भीतर प्रवेश करना होता है।

प्रधान कमरेके मध्यस्थानमें उजले मार्बुलकी जालीदार टट्टियोंके भीतर ममताज महल और बादशाह शाहजहांकी नकली कबरें हैं। कबरोंपर और उनको घेरनेवाली टट्टियोंपर प्रत्येक रंगके बहुमूल्य पत्थरके टुकड़ोंकी पच्चीकारी करके फूल और लत्तर बनी हैं। जैसे बहुमूल्य पत्थर जड़े गए हैं, वैसे ही पत्थरोंके मुनासिब जगहोंपरके बैठाव भी अच्छी तरहके हैं। टट्टियोंके भीतर पूर्व ममताज महलकी और पश्चिम शाहजहांकी कबरें हैं, जिनपर मूल्यवान पत्थर बैठाकर अरबीकी इबारत बनी हैं। ममताज महलकी कबरकी इबारतमें सन १०४० हिजरी (१६३० ई०) और शाहजहांकी कबरपर सन १०७६ हिजरी (१६६६ ई०) है चारों दिशाओंके चारो कमरोंमें मध्यवाले प्रधान कमरेकी तरफ और बाहरीकी तरफ उजले मार्बुलकी जालीदार टट्टियां हैं जिनसे मध्यवाले कमरेमें रोशनी जाती है।

प्रधान कमरेके ठीक नीचे तहखानेमें जमीनकी सतहपर ममताज महल और शाहजहां की असली कबरें हैं। नीचेवाला कमरा और दोनों कबरें सादी हैं।

ताजमहलके दहिने और बांए लाल पत्थरकी दो इमारते हैं, जो किसी दूसरे स्थानपर होतीं तो उत्तम इमारत ख्याल की जातीं। यहां ३ शिलालेख हैं, जिनमें सन १०४६ हिजरी (१६३६ ई०) सन १०४८ हिजरी (सन १६३८ ई०) और सन १०५७ हिजरी (१६४७ ई०) लिखा है। पश्चिमकी इमारत मसजिद है, जिसमें कई रंगके पत्थरके टकड़े बैठाकर निमाज पढनेके लिये ५०० से अधिक जा निमाज (क्यारियां) बनी हैं।

एतमादुद्दौलाका मकबरा–यह किलेसे करीब १ १/२ मील यमुनाके बाएं किनारेपर इष्ट इंडियन रेलवेके माल स्टेशनके पास है। नावका पुल लांघकर बाएं फिरना होता है, जहांसे करीब २०० गजके अंतर पर मकबरेका बाग है।

गयासबेग नामक एक परशियन, जो नूरजहां और आसफखांका पिता और बादशाह जहांगीरका खजान्ची था और पीछे एतमादुद्दौला करके प्रसिद्ध हुआ, उसीका यह मकबरा है।

मकबरेमें हिन्दुस्तानी शिल्पविद्याका बहुत अधिक काम है। मकबरा बाहरसे करीब ९० फीट लम्बा और इतना ही चौड़ा है, जिसके बाहर तमाम और भीतरी हिस्सोंमें मार्बुल लगा है। उसके स्थान स्थानपर बहुरंग और बहुमूल्य पत्थरके टुकडोंके जड़ावका काम है। मकबरेके चारों कोनोंपर अठपहले ४ बुर्ज हैं, जिनके चेहरे और बालकानियां मार्बुलकी हैं। प्रत्येक बुर्जपर चढ़नेके लिये बारहदरीके पाससे १३ सीढ़ियां हैं और मध्यके प्रधान कमरेके चारोंओर जालीदार टट्टियोंके ४ कमरे और चारों कोनोंके पास ४ कोठरियां हैं। बाहरके कमरों और कोठरियोंमें प्रधान कमरेके चारोंओर घूमनेके द्वार हैं। मध्यके कमरेमें तीन ओर मार्बुलकी जालीदार टट्टियां और दक्षिण दरवाजा है। मध्य कमरेमें चारों बगलोंकी मार्बुलकी दोहरी जालीदार बड़ी बड़ी टट्टियोंसे पूरा प्रकाश रहता है। इसमें एतमादुद्दौला और उसकी स्त्रीकी पीले मार्बुलसे बनीहुई २ कबरें हैं। दीवार बहुमूल्य पत्थरकी जड़ाईसे संवारी हुई है। बगलके कमरोंकी दीवारोंके नीचेके भाग मार्बुलके और ऊपरके गचके हैं। कोनोंकी कोठरियोंमेंसे ३ में ३ और एकमें दो कबरे हैं, जिनमें एक आसफखांकी, एक एतमादुद्दौलाकी कन्याकी और तीन दूसरों की।

दक्षिण कमरेकी बाहरी दीवारोंकी मोटाईमें दो जगह सोलह सोलह सीढ़ियां दो मंजिले को गई हैं। ऊपर छतके मध्यमें मार्बुलकी उत्तम बारहदरी मकान है, जिसकी छत चौड़ी ढालुआं ओरियानियोंके साथ मार्बुलके तख्तोंसे बनी है और बगलोंमें उत्तम मार्बुलकी जालीदार टट्टियां हैं। बारहदरीके भीतर एतमादुद्दौला और उसकी स्त्रीकी नकली दो कबरें हैं।

मकबरेके चारों तरफ बड़ा बाग है; जिसके चारों किनारोंपर मकबरेके सामने ४ फाटक हैं। बड़ा फाटक उजला मार्बुल जड़ाहुआ लाल पत्थरसे बना है।

रामबाग–एतमादुद्दौलाके मकबरेसे उत्तर यमुनाके तीर रामबाग है, जो बादशाही समय में देखने योग्य था; पर इस समय साधारण बागोंके समान है। यहां पृथ्वीके भीतर यमुना–स्नानके लिये एक मार्ग है।

जुमामसजिद–यह रेलवे स्टेशनके पास ऊंचे चबूतरे पर खड़ी है। दक्षिण और पूर्व बगलमें सीढ़ियां हैं। प्रधान मेहराबीके ऊपर शिलालेख है, जिससे ज्ञात होता है कि शाहजहां ने सन १६४४ ई० में अपनी लड़की जहानआराके स्मरणार्थ इसको बनवाया। इसके ३ गुम्बज लाल पत्थरके हैं, जिनमें मार्बुलकी पट्टी लगी हैं। मसजिदके बड़े फाटकको अंगरेजोंने बलवेके समय गिरादिया।

सिकंदरा–आगरेकी छावनीसे ५ १/२ मील पश्चिमोत्तर सिकंदरेके एक बड़े बागमें दिल्लीके बादशाह अकबरका चौमंजिला मकबरा है। सिकंदर लोदीके नामसे, जिसने सन १४८९ ई० से १५१७ तक राज्य किया था, इस स्थानका नाम सिकंदरा हुआ।

बागका बड़ा फाटक उजले मार्बुल जड़े हुए लाल पत्थरका है, जिसकी मेहराबीमें नीले मार्बुलके अरबी अक्षर बैठा कर इबारत बनी है। फाटकके ऊपर चारों कोनोंपर दो मंजिले ४ बुर्ज हैं। १०० वर्षसे अधिक हुए कि बुर्जोंके ऊपरी भाग टूट गए।

पत्थरकी चौड़ी सड़क फाटकसे मकबरे तक गई है। करीब ५०० फीट लम्बे और इतने ही चौड़े चबूतरेके मध्यमें मकबरा खड़ा है, जिसकी ३ मंजिलें लाल पत्थरकी और ऊपरकी चौथी मंजिल उजले मार्बुलकी हैं। अकबरके राज्यमें १४ सूबे थे, इसके स्मरणार्थ मकबरेके ऊपर १४ गुम्बज बने हैं।

नीचेकी मंजिलके चारोंओर मेहराबदार दालान हैं। दक्षिण दरवाजा है। देवढ़ीकी मह-राबी छतमें सुनहरा और नीला रंग रँगाहुआ है, जिसका एक हिस्सा मरम्मत किया गया है। वहांका अधिकारी मुसलमान देवढ़ीसे महराबदार कमरेमें मशालके साथ मुझको ले गया, जहाँ अंधेरेमें अकबरकी कबर है। भीतरकी दीवारें अब मैली हो गई हैं। बाएं सुक्र उन्निसाकी कबर पर सुन्दर अरबी लेख है। दूसरी कबर दिल्लीके पिछले बादशाह बहादुर शाहके चचाकी है। बाद उसके औरङ्गजेबकी लड़की जेब उन्निसाकी कबरहै और दरवाजेके पूर्व आराम बानूकी कबर है।

उस स्थानके ठीक ऊपर, जहां नीचे अंधेरे कमरेमें अकबर गाड़े गए थे चौथी मंजिलमें चमकीले उजले मार्बुलसे बनीहुई उनकी नकली कबर है। कबरपर कई एक रंगके बहुमूल्य पत्थरोंके टुकड़े जड़ कर फूल बूटे आदि बने हैं। कबरके पास ४ फीट ऊंचा उजले मार्बुलका सुन्दर स्तंभ है, जो एक समय सोनेसे छिपाहुआ था और उसपर कोहनूर हीरा जडा था। कबरके चारोंओर मेहराबी इमारत है, जिसके बाहरकी दीवारोंकी मार्बुलकी टट्टियोंमें उत्तम जालीदार काम है।

बादशाह अकबर सन १६०५ ई० में आगरेमें मरा और यहां गाड़ा गया।

कैलास—शहरसे ६ मील यमुनाके तटपर कैलास नामक मनोहर स्थान बना हुआ है। वहां शिवमन्दिर, बड़े दालान, घाट, बुर्ज, बाग इत्यादि बने हैं। स्थानके चारोंओर झाड़ी, जंगल और नाले उपस्थित हैं। मार्गमें रईसोंके सुन्दर बाग हैं। श्रावण मासके अन्तमें जो सोमवार पड़ता है, उससे पहिलेके सोमवारके दिन कैलासका मेला होता है। दूर दूरके मनुष्य मेलेकी शोभा देखने आते हैं और शिवका दर्शन करते हैं।

फतहपुर सिकरी—आगरेसे २२ मील, अछनेरा रेलवे स्टेशनसे १२ मील और भरतपुरसे ११ मील फतहपुर सिकरी है, जिसमें सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ६२४३ मनुष्य थे। आगरेसे सायेदार अच्छी सड़क गई है।

नीची पहाड़ियोंके सिलसिलेपर फतहपुर सिकरी है। अकबरने गुजरातके फतहके स्मरणके निमित्त सिकरी बस्तीके नामके पहिले फतहपुर जोड़दिया। यहांका काम अकबरके राज्यके समय आरंभ और समाप्त हुआ।

आगरा नामक फाटकसे प्रवेश करनेपर एक पुरानी इमारतकी निशानी देख पड़ती है, जिसमें सौदागर रहते थे। सड़क होकर आगे जानेपर नौबतखाना मिलता है जिसपर अकबरके आनेपर बाजा बजता था। आगे बाएं तरफ खजानेकी इमारतकी निशानी देख पड़ती हैं, जिसके सामने चौकोनी एक बडी इमारत है, जो टकसाल घर थी। इसके ठीक आगे दीवान आम है।

उत्तरसे दक्षिण करीब ३६६ फीट लम्बा और पूर्वसे पश्चिम १८१ फीट चौडा मेहराब दार ओसारोंसे घेराहुआ दीवान आम है जिसके आगे चौडा बरंडा है। बादशाह अकबर प्रधान कमरेमें बैठकर न्याय करते थे।

सडक आंगनसे होकर दफ्तर खानेको गई है, जो अब डांक बंगलेके काममें आता है। पीछेसे सीढ़ियां छतको गई हैं, जहांसे फतहपुर सिकरीका उत्तम दृश्य देखनेमें आता है। आगे

उत्तर रुखका अकबरका ख्वाबागाह (शयनका कमरा) है । नीचे एक कमरा है । पश्चिम एक दरवाजा है, जिससे दफ्तर खानेमें जाना होता था और इससे अफ़सर लोग और दूसरे लोग ख्वाबगाहमें प्रवेश करसकते थे । उत्तरका स्थान ख्वाबमहल बनता था ।

आँगनके पूर्वोत्तर कोनेके पास तुर्की रानीका मकान है जिसको बहुत लोग सबसे दिल चस्प बतलाते हैं । यह अब १५ फीट लम्बा और इतनाही चौडा है । इसके प्रत्येक मुरब्बा इंच जगहोंपर नकाशी हुई है । नरंडेके सतून और छत बहुत उत्तम हैं ।

पश्चिम लडकियोंका स्कूल सादी इमारत है । आगे एक खुलाहुआ चौक है, जिसके पत्थरके तख्तपर अकबरकी पचीसी है, जिसके पासही चौकके मध्यमें अकबरका पत्थरका बैठक है ।

चौकके समीपही उत्तर दीवान खास है, जो बाहरी तरफसे दो मंजिला जान पड़ता है, पर भीतर एक मंजिला है । इसमें बादशाहके बैठनेका उत्तम स्थान बना है । पूर्व और पश्चिमके मकानोंकी छतोंपर चढनेके लिये सीढ़ियां हैं । कई एक फीट पश्चिम ३ कमरे हैं, जिनमें टट्टी-दार खिडकियां बनी हैं । इसके बाद पांच मंजिल वाला पंचमहला मिलता है, जिसमें स्तंभों का कतार ऊपर एक दूसरेसे छोटा होता गया है प्रथम पांचों मंजिलोंके बगलोंमें पत्थरकी टट्टियां थीं, जो हालकी मरम्मतके समय हटाकर उनकी जगह पत्थरके कँगूरे बनाये गए हैं । सबसे नीचेकी मंजिलमें ५६ स्तंभ लगे हैं ।

पंचमहलेके दक्षिण थोड़ा पश्चिम अकबरकी एक स्त्री मिरियमका गृह है, जो एक समय भीतर और बाहर सर्वत्र रंगाहुआ था । इसकी दीवारोंमें बहुत जगह सोनेका मुलम्मा किया हुआ था, इसलिये इसको सुनहरा मकान कहते थे । पश्चिमोत्तर मिरियमका बाग और पश्चि-मोत्तरके कोनेके समीप उसका स्नानगृह था । पश्चिम बगल नगीना वा जनाना मसजिद है । बागके दक्षिण अन्तमें एक छोटा तालाब है ।

एक सड़क पश्चिमोत्तर अर्थात् फतहपुर सिकरीके उत्तर हाथी पोल (हाथी फाटक) को गई है; जहां जीवित हाथीके समान टूटेहुए २ बड़े हाथी हैं, । बांए संगीन बुर्ज है । नीचे पत्थरकी सड़क बांए कारवान सरायको गई है, जिसका चौक २७२ फीट लंबा और २४६ फीट चौड़ा है । इसके चारों तरफके मकानोंमें सौदागर टिकते थे । पहिले दक्षिण और पूर्व बगलोंके मकान तीन मंजिले थे । उत्तर अखीरके पास सरायके बाद गोलाकार ७० फीट ऊंचा हिरन मीनार खड़ा है, जिसके ऊपरकी लालटेनके प्रकाशसे बादशाह हारिन आदि शिकारको मारते थे ।

हाथी पोलकी ओर लौटनेके समय सड़कके बांए पत्थरका एक उत्तम कुंआ मिलता है, जिसके चारोंओर सीढियां और कमरे हैं ।

मिरियमके बागके दक्षिण-पश्चिम बीरबलका 'महल है, यह फतहपुर सिकरीमें सबसे उत्तम रहनेकी जगह है । उसको राजा बीरबलने अपनी पुत्रीके लिये बनवाया जो ऊंचे चबूतरे पर लाल पत्थरका दो मंजिला बना है । इसमें पंद्रह फीट लंबे और इतने ही चौडे ४ कमरे हैं । दरवाजेके दो पेशगाह जमीनकी सतहपर हैं । नीचेके महलमें भीतरी और बाहरी नकाशीका बहुत काम है । राजा बीरबल अपनी बुद्धि और विद्याके लिये प्रसिद्ध था । उसने अकबरके नवीन मतको ग्रहण किया । वह उसका प्रिय मुसाहिब था, जो सन १५८६ ई० में पेशावरके पूर्वोत्तर अपनी सेनाके सहित मारा गया । बीरबलके महलके दक्षिण १०२ घोडे और उतने ही ऊंढ रहने योग्य अस्तबल हैं ।

अस्तबलोंसे लगा हुआ दफ्तरखानेके आगे पूर्वमुखका २३२ फीट लम्बा और २१५ फीट चौडा जोधबाईका महल है। पूर्वके अतिरिक्त आंगनके तीनों बगलोंमें सायवानोंके साथ कमरे हैं। उत्तर और दक्षिणके कमरे दो मंजिले हैं। कोनोंके पास कमरोंके ऊपर गुम्बज हैं। मिरियम वागकी ओर मुख किएहुए एक छोटा कमरा है, जिसकी संपूर्ण दीवारोंमें पत्थरके सुंदर जालीदार काम हैं।

दफ्तरखानेके दक्षिण–पश्चिम दरगाह और मसजिद हैं। पूर्व फाटक–बादशाही फाटक कहलाता है, जिससे चौकमें जाना होता है। दाहिने उजले मार्बुलकी जालीदार टट्टियोंसे घेरा हुआ शेख सलीम चिस्तीकी दरगाह हैं। दरवाजेमें पीतलका काम है। भीतरी इमारतमें केवल४ फीट मार्बुल लगा है। कबरकी चांदनीमें सीप जड़ी हुई हैं। कबरपर चिस्तीके मरनेकी और दरगाहकी तय्यारीकी तारीख है, जो सन १५८० ई० के मुताविक होती है। हिन्दू और मुसलमान दोनोंकी स्त्रियां लडका पानेके लिये दरगाहमें आकर अरज करती हैं। चौकके उत्तर इसलामखांका गुम्बजदार मकबरा है। यह चिस्तीका पोता और बंगालका गवर्नर था।

पश्चिम करीब ७० फीट ऊंची खास मसजिद है। कहा जाता है कि, यह मक्केकी मसजिदकी नकलकी बनी है। इसके भीतर ऊंचे स्तंभोंसे घेरेहुए ३ मोरव्वे कमरे हैं। उत्तर और दक्षिण अखीरके पास जनाने कमरे हैं।

चौकके दक्षिण १३० फीट ऊंचा, जो नीचेसे देखनेपर बहुत सुन्दर है, विजय फाटक वा बुलंद दरवाजा है। इसके नीचेसे सिरेतक बाहर सीढियां हैं। मेहराबीके शिलालेखमें लिखा है कि, शाहनशाह ईश्वरका साया जलालुद्दीन महम्मद अकवर दक्षिणकी बादशाहत और खानदेशको जीतकर अपने राज्यके ४६ वें वर्ष (सन १६०१ ई०) फतहपुर सिकरीमें आया और यहांसे आगरा गया।

सीढ़ीके आगे कई एक स्नान घर हैं। दरगाहके उत्तर और मसजिदके बाहर अकबरके प्रिय आवुल फजल और फैजी दोनों भाइयोंके मकान हैं। अब इनमें लड़कोंके स्कूल हैं। एकमें हिंदी और उर्दू, दूसरेमें अंगरेजी और तीसरेमें फारसी और अरबी विद्या पढ़ाई जाती हैं।

बुलंद दरवाजेके पश्चिम एक बड़ा कूप है, जिसमें लड़के और सयाने ३० फीटसे ८० फीट तक ऊंची दीवारोंसे कूदते हैं। तारीख २० रमजान को, जो चिस्तीके मरनेकी तिथि है, एक मेला आरम्भ होता है और आठ दिनतक रहता है।

दफ्तरखानेके कुछ पूर्वोत्तर हकीमका मकान और एक बड़ा हम्माम है। हम्मामकी दीवारों और भीतरकी छतमें गचका काम है।

जान पड़ता है कि पानीकी कमीके बायस फतहपुर सिकरी उजड़गई। सन १८५० ई० तक यहां एक तहसीली थी। सन १८५७ ई० के बलवेके समय जुलाई और अक्टूबरके बीचमें नीमच और नसीराबादके बागी यहां दो बार रहे थे।

आगरा जिला–पश्चिमोत्तर देशके आगरा डिवीजनमें ६ जिले हैं,–मैनपुरी, इटावा, एटा, फर्रुखाबाद, मथुरा और आगरा।

आगरा जिलेके उत्तर मथुरा और एटा जिले; पूर्व मैनपुरी और इटावा जिले; दक्षिण धौलपुर और ग्वालियर राज्य, और पश्चिम भरतपुर राज्य हैं। जिलेका क्षेत्रफल १८५० वर्गमील है

जिलेके करीब मध्यमें यमुनाके पश्चिम किनारे पर आगरा शहर है। जिलेके दक्षिण–पश्चिमकी खानोंसे बहुत पत्थर निकलता है। आगरेमें उसका असबाब बनाकर यमुना द्वारा

दूसरे देशोंमें भेजा जाता है। आगरेसे सुन्दर सड़कें मथुरा, अलीगढ़, कानपुर, इंटावा, ग्वा-लियर, करौली, फतहपुर-सिकरी और भरतपुरको गई हैं। आगरे जिलेमें एक नहर है, जिसमें नाव चलती है।

ग्रामीण लोग मट्टीके मकानोंमें रहते हैं। जिलेके दक्षिण-पश्चिम भागमें पत्थरकी खानोंके पास साधारण तरहसे पत्थरके मकान हैं। गरीबलोग भी नादुरुस्त पत्थरके झोपड़ोंमें रहते हैं।

इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय आगरा जिलेमें ९९८३२८ मनुष्य थे अर्थात् ५३७१९२ पुरुष और ४६११३६ स्त्रियां। निवासी हिंदू हैं। मनुष्य-संख्यामें दशवां भाग मुसलमान और १० हजारसे अधिक जैन हैं। सब जातियोंसे चमार अधिक हैं। इनके पश्चात् ब्राह्मण, राज-पूत, तब जाट, बनियां, काछी इत्यादि जातियोंके क्रमसे नंबर हैं। आगरा जिलेमें ४ कसबे हैं। आगरा शहर (जन-संख्या सन १८९१ में १६८६६२ फिरोंजाबाद (१५२७८), फतहपुर सिकरी और पिनाहट।

बटेश्वर-आगरा शहरसे ३५ मील दक्षिण-पूर्व आगरा जिलेमें यमुनाके दहिने किनारे पर कार्तिक पूर्णिमाको बटेश्वरका प्रसिद्ध मेला होता है और दो सप्ताहके लगभग रहता है। भदावर के राजा बदनसिंहने वहां १०० से अधिक शिवमन्दिर बनवाए, तभीसे वहां मेला लगता है।

कार्तिक पूर्णिमाको यमुनामें स्नान और द्वितीयाको शिवका शृंगार होता है। मेलेमें लगभग १५०००० मनुष्य, ४००० से ७०००० तक घोड़े, लगभग २००० ऊंट और १०००० दूसरे चौपाए आते हैं। घोड़े खासकर पंजाब और अपर दो आबेसे लाए जाते हैं।

इतिहास-लोदी खांदान हिंदुस्तानके मुसलमानोंका पहला खांदान है। उस खांदानके लोग कभी कभी आगरेमें रहते थे। उससे पहले आगरा बियनाका एक जिला था। सिकंदर बिन बहलोल लोदी सन १५१७ ई० में आगरेमें मरा, परन्तु दिल्लीमें दफन किया गया। सिकंदर लोदीने सिकंदराके पास बारहदरी महल बनवाया, इसीसे उस शहरतलीका नाम सिकंदरा पड़ा। लोदी खांदानके टीलेपर नए मकान बने हैं। लोग कहते हैं कि लोदियोंके बादलगढ़ नामक महलकी वह जगह है।

यमुनाके पूर्व किनारे ताजमहलके सामने बाबरके बागका महल था, उसके पास एक मस जिदमें लेख है, जिससे जान पड़ता है कि बाबरके लड़के हुमायूंने सन १५३० ई० में उसको बनवाया।

बारकके पास कमालखांके स्थानके पीछे २२० फीट घेरेका १६ पहलवाला एक कुँआ है, जिसमेंसे एकही समयमें ५२ आदमी पानी खींच सकते हैं। ऐसे कामोंसे जान पड़ता है कि बाबर और हुमायूंके समय आगरा गवर्नमेंटका सदर स्थान था। यद्यपि हुमायूं दूसरी बार हिंदुस्तानमें लौटनेके पश्चात् दिल्लीमें रहता था, और उसी जगह मरा, शायद आगरा शहर तब यमुनाके किनारे पर था।

अकबरने आगरेका नाम अकबराबाद रक्खा था। उसने सन १५६६ ई० में आगरेका किला बनवाया और सन १५६८ ई० में फतहपुर सिकरीसे आगरेमें आया। किलेकी दीवारें और पानीके फाटकके दक्षिणका मेगजीन, जो एक समय अकबरका दर्बार गृह था केवल यही चीजें अकबरकी बनवाई हुई हैं। अकबर सन १६९५ में आगरे में मरा। जहांगीरने सन १६१८ में आगरेको परित्याग किया और नहीं लौटा। शाह जहां सन १६३२ से १६३७ तक आगरेमें रहा। उसने मोती मसजिद जुमामसजिद और ताजमहलको आगरेमें बनवाया। औरंगजेबने सन १६५८ ई० में शाहजहांको गद्दीसे उतार दिया और उसको सात वर्ष राजकैदीके समान आगरेमें रक्खा। वह सर्वदाके लिये गवर्नमेंटके सदरको दिल्लीमें लेगया।

भरतपुरके राजा सूर्य्यमलने सन १७६० ई० में जाटोंकी सेनाके साथ आकर आगरेको लेलिया और इसकी बड़ी नुकसानीकी । सन १७७० में महाराष्ट्रोंने आगरेको लिया, परन्तु सन १७७४ में निजाफखांने उनको निकाल दिया । सन १७८४ में जब महम्मद बेग आगरेका गवर्नर था, तब ग्वालियरके महादजी सिंधियाने आगरे पर कब्जा करलिया ।

सन १८०३ ई० की तारीख १७ वीं अकटूबरको अंगरेजोंने महाराष्ट्रोंसे आगरेको लेलिया । सन १८३५ ई० में पश्चिमोत्तर देशकी गवर्नमेंटका सदर मुकाम इलाहाबादसे आगरेमें आया, जो सन १८५८ की जनवरी तक रहा ।

सन १८५७ई० की ३० वीं मईको दो कम्पनी, जो आगरेसे खजाना लानेके लिये मथुरा भेजी गई थीं, बागी होकर दिल्लीको चली । दूसरे दिन उनके साथियोंके हथियार लेलिए गए । उनमेंसे बहुतेरे अपने घर चले गए । तारीख चौथीको कोटा कंटिंजेंट बागी हुई, और नीमचके बागियोंमें मिलनेके लिये गई । आगरा छावनीसे २ मील उनका खीमा था । ता० ५ वीं जुलाईको अंगरेजी अफसरने ८१६ सिपाहियोंके साथ उनपर आक्रमण किया । लड़ाई आरम्भ हुई, संध्याके ४ बजे युद्धका सरंजाम चुकजानेसे अंगरेजी सेना पीछे हटी । बागियोंने उनका पीछा किया । २० अंगरेज मारे गए । छावनी जलाई गई । दफ्तर नाश किया गया । वहां ६००० पुरुष स्त्री और बालक थे, जिनमें केवल १५०० हिन्दू और मुसलमान किलेमें बंद थे, उनमें यूरोपके कई प्रदेशोंके कई आदमी शामिल थे । किला अच्छी तरहसे हिफाजतमें रक्खा गया । अंगरेजी सेना ता० २० अगस्टको आगरेसे चली और २४ को अलीगढ़में बागियोंको परास्त कर उस जगहको ले लिया । तारीख ९ सितम्बरको पश्चिमोत्तर देशके लेफ्टिनेंट गवर्नर मिष्टर कालविन मर गए । बागीलोग दिल्लीको चले, परन्तु सितम्बर में दिल्लीके टूटनेपर बागियोंने मध्यभारतके बागियोंके साथ तारीख ६ वीं अक्टूबरको आगरेके विरुद्ध गमन किया, परन्तु उसी समय एक अंगरेजी पल्टन आगरेमें पहुँच गई, जिसको बागी लोग नहीं जानते थे । उन लोगोंने आगरेपर आक्रमण किया, लेकिन भगाए गए ।

रेलवे–रेलवे लाइन आगरेसे ३ ओर गई है । किलेके स्टेशनसे प्रसिद्ध स्टेशनोंके फासिले नीचे हैं–

(१) पश्चिम 'बॉम्बे बड़ौदा और सेन्ट्रल इंडियन रेलवे' का राजपुताना मालवा ब्रेंच, जिसके तीसरे दर्जे का महसूल प्रति मील २ पाई है ।

मील प्रसिद्ध स्टेशन–

२ आगरा छावनी ।

१७ अछनेरा जंक्शन ।

३४ भरतपूर ।

७५ हिन्डउन रोड ।

९५ बादीकुई जंक्शन ।

१५१ जयपुर ।

१८६ फलेरा जंक्शन ।

अछनेरासे उत्तर थोड़ा पश्चिम २३ मील मथुरा छावनी ।

मथुरा छावनी स्टेशनसे पूर्व कुछ उत्तर २९ मील हाथरस जंक्शन, और उत्तर वृन्दावन शाखा लाइन पर२ मील मथुरा शहरका स्टेशन और ८ मील वृन्दावन है ।

(२) पूर्व 'ईस्ट इंडियन रेलवे, जिसके तीसरे दर्जेका महसूल फी मील २ ½ पाइ है।

मील प्रसिद्ध स्टेशन।
१६ तुण्डला जंक्शन।

तुण्डलासे पूर्व-दक्षिण।

मील प्रसिद्ध स्टेशन।
१० फिरोजाबाद।
५७ इटावा।
१४३ कानपुर जंक्शन।
१९० फतहपुर।
२६३ इलाहाबाद।
२६७ नयनी जंक्शन।

तुण्डलासे पश्चिमोत्तर।

मील-प्रसिद्ध स्टेशन।
३० हाथरस जंक्शन।
४८ अलीगढ़ जंक्शन।
७५ खुर्जा।
८४ बुलन्दशहर रोड।
९२ सिकन्दराबाद।
११४ गाजियाबाद जंक्शन।
१२७ दिल्ली जंक्शन।

(३) दक्षिण कुछ पूर्व 'इंडियन मिडलेंड रेलवे'

मील-प्रसिद्ध स्टेशन।
३६ धौलपुर।
७७ ग्वालियर।
१२२ दतिया।
१३७ झांसी जंक्शन।

ग्यारहवाँ अध्याय।

मथुरा, वृन्दावन, नन्दगांव, बरसाना, गोवर्द्धन, और गोकुल।

मथुरा।

आगरेसे १७ मील पश्चिम, अछनेरा जंक्शन स्टेशन है, जहांसे सीधे रास्तेसे १० मील और केरावली और आगरा सड़क होकर १२ मील फतहपुर सिकरी है। अछनेरासे २३ मील उत्तर, कुछ पूर्व, मथुरामें छावनीका स्टेशन है। मथुरा आगरेसे रेलवे सड़कसे ४० मील है, परन्तु सीधे रास्तेसे केवल ३० मील है।

मथुरा पश्चिमोत्तर प्रदेशके आगरा विभागमें जिलेका सदर स्थान यमुनाके दहिने किनारे पर अर्थात् पश्चिम एक छोटा शहर और प्रसिद्ध तीर्थ है। शहर १ ½ मील फैला है यह २७ अंश ३० कला १३ विकला अक्षांश और ७७ अंश ४३ कला ४५ विकला पूर्व देशान्तरमें स्थित है।

इस सालकी जन-संख्याके समय मथुरामें ६११९५ मनुष्य थे, अर्थात् ३३२८४ पुरुष और २७९११ स्त्रियां। जिनमें ४८७९५ हिन्दू, १०६२२ मुसलमान, ८०६ कृस्तान, ७३७ सिक्ख, २३४ जैन, और १ पारसी थे। मनुष्यसंख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ६० वां और पश्चिमोत्तर देशमें १४ वां शहर है।

शहरमें प्रवेश करनेके समय हार्डिंग फाटक मिलता है। शहरमें प्रधान सड़कें पत्थरसे

पाटी हुई हैं। बहुतेरे मंदिर और मकान पत्थरसे बने हैं। कई एक मन्दिरोंमें पत्थरों पर नकाशी का उत्तम काम है। प्रायः सब मकान पक्के और मुड़ेरेदार हैं।

मथुरामें बड़ी बड़ी दूकानें, छापेखाने, कई स्कूल, और सफाखाने हैं। यहांके पेड़े प्रसिद्ध हैं, और सुस्वादु होते हैं।

शहरके बाद १ ¾ मील दक्षिण जेलखाना और कलक्टरका आफिस है। जेलखानेसे थोड़ीही दूर पब्लिक गार्डन है।

मथुराके पंडे चौबे हैं, जो बड़े बर्बर और चतुर होते हैं। इनका मुख्य काम दंड कुश्ती करना, भांग पीना और अच्छे पदार्थ भोजन करना है। ये लोग भोजनके सुखके समान दूसरा सुख नहीं समझते। यहांकी स्त्रियां पर्देमें नहीं रहतीं। वे घांघरा और चोली पहिनकर ऊपरसे चादर ओढ़ती हैं।

मथुरका प्रधान मेला कार्तिक शुक्ल द्वितीयाको होता है। कार्तिक शुक्ल अष्टमीको गोचारणका एक छोटा मेला, दशमीको कंसवधकी लीला, और अक्षय नवमी तथा प्रबोधिनी एकादशीको परिक्रमा होती है।

अन्नकूट—मथुराका अन्नकूट प्रसिद्ध है। कार्तिक सुदी पडिवाके सबेरे मथुराके मंदिरोंमें अन्नकूटके दर्शनकी बड़ी भीड़ होती है। मंदिरोंमें नाना प्रकारकी मिठाई, पकवान, कच्ची रसोई, व्यंजन, चटनी, आदि भोजनकी सामग्री जगमोहनमें पृथक् पृथक् पात्रोंमें रखकर भगवान्को भोग लगाई जाती हैं। पश्चात् यात्रीगण उसकी झांकी करते हैं और वहां पैसा रेजकी चढाते हैं। गोविंददेवजी, विहारीजी, गोपीनाथ, मथुरानाथ, व्रजगोविंद और राधाकृष्णके मन्दिरोंमें करीब १०० पात्रोंमें; गोवर्द्धननाथके मन्दिरमें २०० के लगभग पात्रोंमें और द्वारकाधीशके मन्दिरमें ३०० से अधिक पात्रोंमें भोगकी सामग्री रहती है। जितने पात्र तितने प्रकारकी वस्तु नहीं होती। एक वस्तु दो चार पात्रोंमें भी रक्खी जाती हैं।

शहरके भीतरके देवमन्दिर और स्थान—(१) यमुनाजी—विश्रामघाट पर एक छोटे मन्दिरमें यमुनाजीकी मूर्ति है, जिसके बाएँ यमराज हैं।

(२) गतश्रम नारायण—एक मन्दिरमें कृष्णके बाएं राधा और दहिने कुब्जाकी मूर्ति हैं। मन्दिरके पास फूलोंकी क्यारियां बनी हैं। वर्तमान मन्दिर सन १८०० ई० में बना।

(३) द्वारिकाधीश—द्वारिकाधीशका मन्दिर मथुराके सब मन्दिरोंसे विस्तारमें बड़ा है। मन्दिरके घेरेकी लम्बाई करीब १८० फीट और चौड़ाई १२० फीट है। पूर्वके बड़े फाटकसे सीढ़ियों द्वारा मन्दिरके आंगनमें जाना होता है। बड़े चौगानके मध्यमें मन्दिर है, जिसके आगे लम्बा चौड़ा सुन्दर जगमोहन बना है। चौगानके बगलों पर दोहरे तेहरे दो मंजिले मकान हैं। जँगमोहनसे द्वारिकाधीशकी मनोहर मूर्तिका दर्शन होता है, जिसके समीप कई दूसरी देवमूर्तियां ह। वल्लभ संप्रदायके रीत्यनुसार समय समयपर मन्दिरका कपाट खुलता है। पट खुलने पर दर्शकोंको भीड़ होती है। भोग, राग, आरती, दर्शनकी बड़ी धूम रहती है। भोग लगजानेके उपरांत प्रसाद बिकता है। उत्सवोंके दिनोंमें मन्दिरकी बड़ी शोभा होती है। इस मन्दिरको मथुराके धनी सेठ पारिखजीने बनवाया, जो ग्वालियर राज्यके खजानची थे। उन्होंने असंख्य धन उपार्जन किया था। जयपुरके सेठ मणिरामसे पारिखजीकी बड़ी मित्रता थी, उसने मणिरामके बड़े पुत्र सेठ लक्ष्मीचन्द्रको गोद लिया था। सन १८२५ ई० में यह मन्दिर

बनकर तय्यार हुआ। पारिखजी वल्लभसंप्रदायके शिष्य थे, इसलिये आरंभहीसे मन्दिर वल्लभ संप्रदाय वालोंके हाथमें है। मन्दिरका खर्च मथुराके सेठ घरानेके जिम्मे था, क्योंकि सेठ लक्ष्मीचंद्र पारिखजीके दत्तक पुत्र थे और पारिखजीकी संपत्तिके वही मालिक हुए थे। उस खर्चके लिये २५००० रुपये सालाना आमदनीकी जायदाद इस मन्दिरके साथ लगाई गई थी, वह सब सेठजीकी ओरसे मन्दिरके आचार्य्य गोस्वामीजोको सौंप दी गई। आज कल इसका प्रबंध मेवाड़ कांकरौलीके गोस्वामी महाराज बालकृष्ण लालजीके हाथमें है। मन्दिरके पासही पूर्व सड़कके दूसरे बगलपर मथुराके सेठका दो मंजिला मकान है, जिसके दहिने अर्थात् उत्तर भरतपुरके महाराजका एक मकान है।

(४) वाराहजीका मन्दिर–द्वारिकाधीशके मन्दिरके पीछेकी ओर वाराहजीका मन्दिर है, जिसकी परिक्रमा मन्दिरके भीतरही है। वाराहजीके मुखपर पृथ्वीका आकार बना है और आगेकी ओर गरुड़की मूर्ति है।

(५) गोविंददेवजीका मन्दिर–वाराह–मन्दिरसे कुछ दूर आगे जानेपर पत्थरसे बनाहुआ गोविंददेवजीका सुन्दर मन्दिर मिलता है। आंगनके एक बगलपर ऊंचा मुड़ेरेदार मन्दिर और तीन बगलोंपर दो मंजिले मकान हैं। मन्दिरमें नकाशीका उत्तम काम है। मन्दिरकी ओरसे सदावर्त लगा है।

(६) बिहारीजीका मन्दिर–यह मन्दिर और इसके मकान गोविन्ददेवजीके मन्दिरके समान हैं। यहाँ मार्बुलकी दो वा तीन सुन्दर मूर्तियां हैं।

(७) गोवर्द्धननाथका मन्दिर–यह द्वारिकाधीशके मन्दिरके बाद मथुराके संपूर्ण मन्दिरोंसे अधिक लम्बा चौड़ा है। इसमें दो आंगन हैं, दोनोंके बगलोंपर दो मंजिले मकान बने हैं। मन्दिरको एक गुजराती धनीने बनवाया।

(८) गोपीनाथका मन्दिर–यह मन्दिर गोविन्ददेवजीके मन्दिर और बिहारीजीके मन्दिरके समान सुन्दर और इन्हींके नकशेका है।

(९) मथुरानाथका मन्दिर–यह मन्दिर द्वारिकाधीशके मन्दिरसे दक्षिण सड़कके बगलपर है। यह भी गोविन्ददेवजीके मन्दिरके नकशेका है।

(१०) दाऊजीका मन्दिर–मथुरानाथके मन्दिरके सामने सड़कके दूसरे बगल पर एक मन्दिरमें दाऊजी (बलदेवजी) और उनकी स्त्री रेवतीकी मूर्ति है।

(११) व्रजगोविन्दका मन्दिर–(१२) गोवर्द्धननाथका दूसरा मन्दिर–(१३) राधाकृष्णका मन्दिर–ये तीनों मन्दिर गोविन्ददेवजी और बिहारीजीके मन्दिरोंके ढांचेके हैं। ब्रजगोविन्दजीका मन्दिर सन् १८६७ में और राधाकृष्णजीका १८७१ में बना।

(१४) मगनी माता–सड़कके बगलमें बहुत छोटे मन्दिरमें मगनी माताकी मूर्ति है।

मथुराकी परिक्रमामें देवमन्दिर और स्थान–मथुरा नगरके ५ कोसकी परिक्रमा विश्राम, घाटसे आरम्भ होकर करीब ६ घंटेमें फिर उसी जगह समाप्त होती है। निम्नलिखित स्थान इस क्रमसे मिलते हैं।

(१) विश्रामघाट वा विश्रांतघाट–श्रीकृष्णचन्द्रने कंसको मारकर यहां विश्राम किया इसलिये इस घाटका नाम विश्रामघाट हुआ। कार्तिक शुक्ल द्वितीयाके दिन इसी घाटपर यमुना स्नानके निमित्त प्रतिवर्ष भारतके सब प्रदेशोंसे लाखों यात्री मथुरामें आते हैं। यमुनास्नानका

माहात्म्य सब स्थानोंसे मथुरामें अधिक है। इस घाटपर ऊपरसे नीचे तक पत्थरकी सीढ़ियां हैं और ऊपर पत्थरका फरस है। घाटपर ३ या ४ घंटे हैं, जिनमेंसे एकको नैपालके महाराजने दिया था। यहां प्रतिदिन संध्या समय यमुनाजीकी आरती होती है। घाटके निकट यमुनामें कछुए बहुत हैं, जो आदमीसे नहीं डरते।

(२) बलभद्रघाट।

(३) योगघाट—यहां पीपलेश्वर महादेव हैं।

(४) प्रयागघाट—यहाँ बेनीमाधवकी मूर्ति है।

(५) रामघाट–यहां रामेश्वर महादेव हैं।

(६) श्यामघाट–यहां कनखलक्षेत्र, तिंदुकनामक तीर्थ, दाऊजीका मन्दिर और गोकुली गोस्वामी गोपाललालजीका मकान है।

(७) बंगालीघाट–यहां यमुनापर रेलवेका पुल, भरतपुरके महाराजका पड़ाव अर्थात् मकान, जिसमें किराएपर लोग टिकते हैं और बाग, गोकुली गोस्वामीका बाग और मकान और एक राजाकी धर्मशाला है।

(८)सूर्य्यघाट–यहां सूर्य्यकी मूर्ति है।

(९) ध्रुवघाट–यहां पिंडदान होता है। घाटके पास एक टीलेपर छोटे मन्दिरमें ध्रुवजी-की शुद्ध मूर्ति है। इसी स्थानपर उन्होंने तप किया था।

(१०) मोक्षतीर्थ और सप्तऋषियोंका टीला–मोक्षतीर्थसे यमुनाजी छुट जाती हैं, दहिने घूमना होता है। यहां सप्त ऋषियोंका टीला है, जहां सफेद मट्टी मिलती है, जिसको लोग यज्ञकी विभूति कहते हैं। टीलेपर साधुओंका मठ है। पूर्वकालमें सप्त ऋषियोंने यहां तप किया था।

(११) राजा बलिका टीला–इस टीलेमेंसे काले ढेले निकलते हैं, जिसको लोग विभूति कहते हैं। राजा बलिने यहां यज्ञ किया था। यहां एक कोठरीमें वामनजी, शुक्राचार्य्य और गोपालजीके सहित राजा बलिकी मूर्ति है, और दूसरी कोठरीमें खड़ाऊंपर चढ़ेहुए बाम हाथमें दंड और दहिनेमें कमंडल लियेहुए वामनजी खड़े हैं। बलिके टीलेसे आगे जानेपर स्कूलसे आगे टाउनहाल मिलता है।

(१२) रावणका टीला–कहते हैं कि रावणने यहां तप किया था।

(१३) कृष्ण और कुब्जा–रेलवे सड़कके पास छोटे टीलेपर एक मन्दिरमें कृष्ण और कुब्जाकी धातुप्रतिमा है।

(१४) रंगभूमि–यहां एक मन्दिरमें रंगेश्वर महादेव हैं। बड़े शिवलिंगके ऊपर महादेवका मुखमंडल धातुका बना है। एक टीलेपर राजा उग्रसेन, कंस, कृष्ण और बलरामकी मूर्त्तियाँ हैं इससे आगे सप्तसमुद्र नामक कूप है। जिससे आगे सफाखाना और मुनसिफी कचहरी मिलती है। थोड़ा आगे शहर छूट जाता है। बहुत आगे जानेपर रेलवेकी वृन्दावन वाली शाखा मिलती है।

(१५) गोपालजीका मन्दिर—गोपालजीके मन्दिरके पास राय पटनीमलका बनवाया हुआ पत्थरका बड़ा सरोवर है। इससे आगे जानेपर दिल्लीवाली पक्की सड़क मिलती है।

(१६) भूतेश्वर महादेव–सड़कके निकट एक मन्दिरके एकही हौजमें मंगलेश्वर शिव-लिंग और मार्बुलके भूतेश्वर शिवलिंग हैं। यहां बलभद्र–कुण्डनामक एक कुण्ड है।

(१७) पोतरा–कुण्ड–भूतेश्वरसे बहुत आगे जानेपर जन्मभूमिके पास पोतरा–कुण्ड नामक पत्थरका उत्तम सरोवर मिलता है। कृष्णचन्द्रके जन्मके समयके पोतरा अर्थात् बिछौना इसमें धोए गये, इससे इसका नाम पोतरा कुण्ड पड़ा। इसको ग्वालियरके महाराजने पत्थरसे बनवाया। इसके नीचे बहुत कोठरियां, तीन बगलोंपर पत्थरकी सीढियां, एक ओर गौघाट और ऊपर ऊंची दीवार है। सरोवरके समीप एक कोठरीमें कृष्ण, वसुदेव और देवकीकी मूर्तियां हैं।

(१८) केशवदेवजीका मन्दिर–पोतरा–कुण्डके पास केशवदेवका बड़ा मन्दिर है। यहां कृष्णजीका जन्म हुआ था। यह स्थान बहुत पुराना और मथुराके सब देवस्थानोंमें माननीय है। इस मन्दिरमें कृष्ण आदिकी मूर्तियां हैं। मन्दिरके पास कृष्णकूप और कृष्ण-कूपसे आगे जानेपर कुब्जाकूप मिलता है।

(१९) महाविद्या देवीका मन्दिर–जन्मभूमिसे बहुत दूर एक टीलेपर शिखरदार मन्दिरमें महाविद्या, महामाया और महामेधाकी मूर्तियां हैं। टीलेके एक ओरकी ५० सीढ़ि-योंसे मन्दिरके पास जाकर दूसरी ओर २५ सीढ़ियोंसे उतरना होता है। टीलेके पास कुछ झाड़ियां और बहुत बन्दर हैं।

(२०) सरस्वती–कुण्ड–महाविद्याके मन्दिरसे बहुत दूर–सरस्वती कुण्डनामक एक पक्का सरोवर है, जिसके पास मन्दिरमें सरस्वतीकी धातुमूर्ति है। आगे जानेपर कोटितीर्थ मिलता है।

(२१) चंडी देवी–सरस्वती–कुण्डसे दूर एक टीलेपर छोटे मन्दिरमें चंडीकी मूर्ति है। आगे जानेपर रेलवेकी वृन्दावन शाखा, उससे आगे वृन्दावन जानेवाली पक्की सड़क मिलती है।

(२२) गोकर्णेश्वर महादेव–पक्की सड़कके पास एक लंबा टीला है, जिसके ऊपरके मन्दिरमें ३ हाथ ऊंचे, बहुत मोटे गोकर्णेश्वर महादेव बैठे हैं, जिसके पास गौतम ऋषिकी समाधि है।

(२३) अंबऋषिका टीला–गोकर्णेश्वरसे थोड़ी दूर अंबऋषिका ऊंचा टीला है, जिसपर अब महावीरकी मूर्ति है; इसके आगे सरस्वती–संगम मिलता है।

(२४) दशाश्वमेध घाट–एक ओर थोडा घाट बँधा हुआ है। वर्षाकालमें यमुना यहां आती हैं।

(२५) चक्रतीर्थ–यहां आनेपर शहर और यमुना मिल जाती हैं। घाट पत्थरसे बना है।

(२६) कृष्णगंगा घाट–पत्थरका घाट बना है। पानीमें निकले हुए ३ पुस्ते हैं। ऊपर कृष्णेश्वर महादेव और कालिंद्रनाथ, और एक मन्दिरमें दाऊजी और रेवतीकी मूर्तियां हैं।

(२७) धारापतन घाट–पत्थरका घाट बना है।

(२८) सोमघाट–यहां सोमतीर्थ और पत्थरके घाटके ऊपर सोमेश्वर महादेव हैं।

(२९) कंसका किला–यह किला अकबरके समयमें फिरसे बना। पूर्व और उत्तर कई पुस्ते और ईटोंकी खड़ी दीवार हैं। पूर्वकी दीवार करीब२२५ फीट लम्बी और ५० फीटसे कम ऊंची है, और उत्तर अर्थात् यमुनाके ओरकी दीवार७५ फीट ऊंची होगी। पूर्व बंद किया हुआ एक फाटक और एक गुफाका द्वार है। नेवके पास ईटोंका एक पुराना कूपहै। पश्चिम और दक्षि-णकी ओर दीवार नहीं है। दोनों तरफ यह किला टीलेके समान थोड़ा ऊंचाहै। ऊपर चढ़नेपर दो चार घरकी निशानी, जिनकी, छत फूटी हुई हैं, और लाल पत्थरके पांच सात पुराने मेहराव और पत्थर ईटोंके बहुत टुकड़े वहां देख पड़ते हैं। हालमें पश्चिम ओर छोटे मन्दिरमें कालेश्वर महादेव और कालभैरवकी मूर्तियां स्थापित हुई हैं। किलेसे पूर्व एक स्कूल है। यमुना नदी यहांसे पूर्व–दक्षिणको फिरी है।

(३०) वसुदेवघाट-यह किलेके पास है ।

(३१) वैकुण्ठघाट-यह पत्थरका घाट है, जिसपर पानीमें निकले हुए पांच वा छः सुन्दर पुस्ते हैं ।

(३२) गौघाट ।

(३३) असिकुण्डा-घाट-यह पत्थरका घाट है, जिसपर पानीमें निकले हुए कई पुस्ते हैं । इस स्थानको वाराहक्षेत्र कहते हैं । यहां एक मन्दिरमें वाराहजी और गणेशजीकी मूर्ति और शिवताल कुण्ड है । असिकुण्डा घाटसे आगे जानेपर सेठजीके मकानके पीछे जनाना घाट मिलता है, जिससे आगे विश्राम घाट है ।

सतीबुर्ज-विश्रामघाटसे थोड़ा दक्षिण ५५ फीट ऊंचा सतीबुर्ज है, जिसको आंबेरके राजा भरमलकी स्त्री और भगवानदासकी माताने सन १५७० ई० में बनवाया ।

जामा मसजिद्-यह शहरके भीतर है । इसका आंगन सड़कसे १४ फीट ऊपर है । मसजिदके ५ मीनार १३२फीट ऊंचे हैं । फाटकके दोनों बगलोंमें सन १६६०-१६६१ ई० का पारसी लेख है ।

कटरा-यह केशवदेवके मन्दिरके समीप सरायके समान एक घेरा है ८०४ फीट लम्बे और ६५३ फीट चौड़े चबूतरेपर लालपत्थरकी बड़ी मसजिद है । एक जगह नागरी अक्षरमें संवत् १७१३-१७२० खुदाहुआ है ।

कटरा टीलेमें बौद्ध निशानियां हैं । एक पत्थरपर गुप्त वंशके नियत: करनेवाले श्रीगुप्तसे समुद्रगुप्त तक गुप्तकुलकी वंशावली लिखी हुई है, और शाक्यकी प्रतिमाके नीचे संवत् २८१ खुदाहुआ है ।

व्रजमंडल-मथुराके आसपास ८४ कोसका घेरा व्रजमण्डल कहलाता है । व्रजकी परिक्रमा भादों बदी ११ से आरंभ होती है । व्रजमें १२ वन, २४ उपवन, ५ पर्वत, ४ सरोवर ११ कूप, ८४ कुण्ड, २ ताल, २ राधाजीके स्थान, ७ बलदेवजी, ९ देवी और १० महादेव कहे जाते हैं, जिनमें बहुतेरे अब लुप्त होगए हैं । सावन मासमें व्रजके मन्दिरोंमें झूलनकी बड़ी तय्यारी होती है । उस समय कृष्ण आदि देवमूर्तियोंके अपूर्व शृंगार और उत्सव देखनेके लिये दूर दूरसे दर्शकगण आते हैं । और यहांके बहुतेरे पुरुष स्त्री छोटे बड़े सब अपने झूलनेके लिये वृक्षोंमें वा घरोंमें झूलन लगाते हैं । व्रजके फाग भी विख्यात हैं । लोग बरसानेमें धूमधामसे फाग खेलने जाते हैं ।

इस देशके सर्व साधारणमें मल्लाह धीमर आदि नीच जातियोंके अतिरिक्त हिन्दूमात्र मद्य मांस नहीं खाते । काली और चंडीके स्थानोंमें भी जीव बलिदान नहीं होता । मिठाई, दूध आदि पवित्र वस्तुओंसे इनकी पूजा होती है । धोबी बैलोंपर कपड़े लादते हैं । गदहे लादनेका काम कुम्हारका है ।

यहांकी भाषा भारतके सब खंडोंकी भाषाओंसे अधिक मीठी है। यहांके लोग प्राय:२मील भूमिको १ कोस कहतेहैं। पुराणमें चार हाथका धनुष और एक सहस्र धनुषका कोस लिखाहै । इस देशका कोस इसी प्रमाणकाहै । एक एक्केपर एक्केवालेके अतिरिक्त ४ आदमी चढ़ते हैं । पूरी सस्ती बिकती है । फरांस,करील, बबूल, इमली और पीपलके बहुत पेड़ हैं। बंदर बहुत रहते हैं ।

मथुरा जिला-आगरा डिवीजनके पश्चिमोत्तर मथुरा जिला है । इसके उत्तर पंजाबमें

गुरगांव जिला और पश्चिमोत्तरमें अलीगढ जिला, पूर्व अलीगढ़ और एटा जिले, दक्षिण आगरा जिला और पश्चिम भरतपूर राज्य और पंजाबका गुरगांव जिला है । जिलेका क्षेत्रफल १४५२ वर्गमील है । मथुरा जिला यमुनाके दोनों ओर है । दक्षिण-पश्चिम कोनमें पहाड़ियां हैं, जिनमेंसे कोई २०० फीटसे अधिक ऊंची नहीं हैं । जिलेकी साधारण उंचाई समुद्रके जलसे ६२० फीटसे ५६६ फीट तक है । जिलेके आधे पूर्वी भागमें माठ, महाबन और सैदाबाद तहसीलियां और पश्चिमी भागमें, जिसमें यमुना है, कोसी, छाता और मथुरा तहसीलियां हैं । हालके समय तक संपूर्ण मथुरा जिलेमें जंगल और घास लगे हुए थे । बहुतेरे गांव अबतक उपवन और कुञ्जोंसे घेरेहुए हैं । सन १८३७-३८ ई० के अकालमें सड़कोंके बननेसे देशके बहुतेरे बड़े हिस्से अब साफ होगए हैं । जिलेके प्रायः संपूर्ण जंगलमें जलावन योग्य लकड़ी है । जिलेके क्षेत्रफलके बीसवें भागमें अब उपवन है । जिलेकी पश्चिमी सीमाके भीतर बरसाने और नन्दगांवके पास पत्थरकी खानियां हैं, जहांसे पत्थर पुल और नहरोंके कामके लिये जाता है ।

औसत ५० फीट जमीनमें नीचे पानी है । जिलेके पश्चिमोत्तरमें किसी किसी जगहोंमें ५० फीटसे ६२ फीट तक नीचे पानी है । कूप बनानेमें अधिक खर्च पड़ता है । आगरा नहरसे पानीकी सिंचाई होती है । जिलेकी प्रधान फसिल तम्बाकू, ऊख, चना, कपास, बाजरा, ज्वार और गेहूं हैं ।

इस वर्षकी मनुष्यगणनाके समय मथुरा जिलेमें ७१३१२९ मनुष्य थे अर्थात् ३८२७७७ पुरुष और ३३०३५२ स्त्रियां । निवासी हिन्दू हैं । संपूर्ण मनुष्य संख्यामें लगभग १६०० जैन और बारहवें भाग मुसलमान हैं । ब्राह्मण, जाट और चमार तीन जातियां बहुत हैं । इनके पश्चात् राजपूत और बनियोंके नंबर हैं ।

मथुरा जिलेके छाता तहसीलीमें तरौली एक बस्ती है, जिसमें प्रतिसप्ताह बाजार लगता है और राधागोविंदका बडा मन्दिर है । वहां कार्तिक पूर्णिमाको मेला होता है । मथुरा जिलेमें ७ कसबे हैं । मथुरा (जन-संख्या सन १८९१ में ६११९५), वृन्दावन (जन-संख्या ३१६११), कोसी, महावन, कुरसंदा, छाता और शरीर ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—वाल्मीकि रामायण-(उत्तरकांड, ७३ वां सर्ग) एक दिन यमुनातीर-निवासी ऋषिगण रामचन्द्रकी सभामें आए । (७४ सर्ग) भार्गव मुनि कहने लगे कि, हे राजन् ! सतयुगमें मधु नामक दैत्य बड़ा वीर्यवान और धर्मनिष्ठ था । भगवान् रुद्रने अपने शूलोंमेंसे एक शूल उत्पन्न कर उसको दिया और कहा कि जबतक तुम देवताओं और विप्रोंसे वैर न करोगे, तबतक यह तुम्हारे पास रहेगा । जो तुमसे संग्राम करनेको उद्यत होगा, उसको यह भस्म कर फिर तुम्हारे हाथमें चला आवेगा । तुम्हारे वंशमें एक तुम्हारे पुत्रके लिये यह शूल रहेगा । जब तक यह उसके हाथमें रहेगा, तब तक वह सब प्राणियोंसे अवध्य होगा । ऐसा वर पाकर मधुने अपना गृह बनवाया । मधुका पुत्र लवण हुआ, जो लड़कपनसे पापकर्महीं करता आया । मधु दैत्य अपने पुत्रका दुराचार देख शोकको प्राप्त हो इस लोकको छोड़ समुद्रमें घुसगया, परंतु अपने पुत्रको शूल देकर वरका सब वृत्तांत सुना दिया था । हे रामचन्द्र ! अब लवण अपने दुराचारसे तीनों लोकोंको विशेषकर तपस्वियोंको संताप दे रहा है । (७५ सर्ग) वह प्राणीमात्रको और विशेष कर तपस्वियोंको खाता है । उसका निवास मधुवनमें है ।

रामचन्द्रने यह वृत्तांत सुन लवणके वधकी प्रतिज्ञाकी । और शत्रुघ्नको युद्धयात्रामें तत्पर देख उनसे कहा कि, मैं मधुके नगरका राजा तुमको बनाऊंगा, तुम वहां जाकर यमुनाके तीर नगर और सुन्दर देशोंको बसाओ। (७६ सर्ग) रामचन्द्रकी आज्ञासे शत्रुघ्नका अभिषेक हुआ।

(७८ सर्ग) शत्रुघ्न सेनाकी यात्रा करवा कर एक मास अयोध्यामें रहे, तदनंतर वह अकेले चले। शत्रुघ्नने बीचमें दो रात्रि टिककर तीसरे दिन वाल्मीकिके आश्रममें निवास किया। (७९ सर्ग) उसी रात्रिमें सीताके दो पुत्र उत्पन्न हुए। शत्रुघ्न प्रातःकाल पश्चिमाभिमुख चल निकले, और सप्तरात्रि मार्गमें निवास कर यमुनाके तीर पहुंच मुनियोंके आश्रममें टिके।

(८१ सर्ग) प्रातःकाल होनेपर लवण राक्षस अपने आहारके लिये नगरसे बाहर निकला इतनेमें शत्रुघ्न यमुनापार हो हाथमें धनुष ले मधुपुरके फाटकपर जाकर खड़े हो गए। मध्याह्न कालमें लवण आ पहुंचा और शत्रुघ्नसे बोला कि तुम मुहूर्तमात्र ठहरो, मैं अपना शस्त्र लाता हूं। शत्रुघ्नने कहा जो शत्रुको अवकाश देते हैं, वे मंदबुद्धिहैं। (८२ सर्ग) तब लवण क्रोध कर शत्रुघ्नसे लड़ने लगा और अंतमें शत्रुघ्नके बाणसे मारागया। उसी क्षण लवणका शूल शिवके पास चला गया।

(८३ सर्ग) शत्रुघ्न अपनी सेनाको, जिनको दूर छोड़ दिया था, वहां ले आए। उन्होंने सावन मासमें उस पुरीके बसानेका काम आरंभ किया। १२ वें वर्षमें अच्छी भांतिसे यमुनाके तीरपर अर्द्धचन्द्राकार पुरी बसगई। जिस भवनको लवणने श्वेत रँगसे रंगा था, उसको शत्रुघ्नने अनेक रंगोंसे रँगवा दिया।

(१२१ सर्ग) रामचन्द्रकी परमधाम यात्राके समय उनकी आज्ञासे दूत मधुरानगरीको (जिसको मथुरा कहते हैं) चला और मार्गमें किसी स्थानपर न टिक कर तीन रात्रि दिनमें उस नगरीमें जा पहुंचा। उसने रामचन्द्रके स्वर्ग जानेके लिये उद्योग करनेका वृत्तांत शत्रुघ्नसे कह सुनाया। शत्रुघ्नने अपने पुत्र सुबाहुको मथुरामें और शत्रुघातीको वैदिश नगरमें स्थापित करके सेना और धनको दो विभाग करके दोनोंको बांट दिया और अयोध्यामें आकर रामचन्द्रका दर्शन किया। (१२२ सर्ग) रामचन्द्रने भरत और शत्रुघ्नके सहित सशरीर वैष्णव तेजमें प्रवेश किया।

देवीभागवत-(चौथा स्कन्ध-२० वां अध्याय) यमुना नदीके किनारेपर मधुवनमें मधु दैत्यका पुत्र लवण रहता था। शत्रुघ्नजीने उसको मारकर वहां मथुरानामक पुरी बसाई, और पीछे वहांका राज्य अपने पुत्रोंको देकर आप निज धामको चले गए। जब सूर्य्य वंशका नाश हुआ, तब उस पुरीके राजा यदुवंशी हुए, जिनमें शूरसेनका पुत्र वसुदेव था।

विष्णुपुराण-(पहिला अंश, १२ वां अध्याय) जिस वनमें मधु दैत्य रहता था, उस वनका नाम मधुवन हुआ। मधुके पुत्रका नाम लवण था, जिसको शत्रुघ्नजीने मार कर उसी वनमें मथुरा नाम पुरी बसाई।

वाराहपुराण-(१४६ वां अध्याय) सूर्य्यकी पुत्री यमुना मुक्ति देनेवाली है। मथुरामें विश्रांति नामक तीर्थ तीनों लोकमें प्रसिद्ध है (देखो परिक्रमाका नंबर १) सब तीर्थोंके स्नानमें जो फल है, वह कृष्णजी की गतश्रम मूर्तिके दर्शनमात्रसे होता है (देखो शहरके भीतरके मन्दिरोंका (नंबर २) प्रयाग तीर्थमें स्नान करनेसे विष्णुलोक मिलता है (परिक्रमाका नं० ४)

कनखल तीर्थके स्नानसे स्वर्गलोक और तिंदुक तीर्थके स्नानसे विष्णुलोक मिलता है। यहां तिंदुक नामक नापित मरकर ब्राह्मण हुआ और विष्णुलोकमें गया, इसलिये इस स्थानका तिंदुक नाम पड़ा (नं० ६) सूर्य्यतीर्थमें राजा बलिने सूर्य्यकी आराधना की और सूर्य्यसे एक मणि पाया। इस तीर्थमें स्नानका बड़ा माहात्म्य है (नं० ८)। जहां ध्रुवजीने तप किया था, वह ध्रुव तीर्थ है, वहां स्नान और पिंडदानका बड़ा माहात्म्य है (नं० ९)। ऋषितीर्थ ध्रुवतीर्थके दक्षिण है; जिसमें स्नानका बड़ा माहात्म्य है। मोक्षतीर्थ ऋषितीर्थके दक्षिण है, जिसमें स्नान करनेसे मोक्ष होता है (नं० १०)। मोक्षतीर्थमें कोटितीर्थ है, जिसके स्नानसे ब्रह्मलोक मिलता है। और कोटितीर्थके समीप, वायुतीर्थ है यहां पिंडदानका बड़ा फल है। ज्येष्ठ मासमें यहां पिंडदान करनेसे गयाके समान पितरोंकी तृप्ति होती है। इस प्रकार वाराहजीने १२ तीर्थोंका वर्णन किया।

(१४७वां अध्याय) मथुरामें १२ वन हैं। पहला मधुवन,जहां भाद्र शुक्ल ११ के स्नानका माहात्म्य है। दूसरा तालवन, जहां धेनुकासुर मारा गया। ३ रा कुमुदवन–भाद्र शुक्ल ११ को इस स्थानके दर्शनसे मनुष्य रुद्रलोकको जाता है। ४ था वहुलावन–इसके दर्शनसे अग्निलोक मिलता है। ५ वां काम्यकवन–इसमें विमलकुण्ड तीर्थ है। ६ वां (यमुनाके पार) भद्र वन–इसके दर्शनसे नागलोक मिलता है। ७ वां खदिरवन–जिसके दर्शनसे विष्णुलोक मिलता है। ८ वां महावन–इसके दर्शनसे इंद्रलोक मिलता है। ९ वां लोहजंघवन यह सब पापोंके हरनेवाला है। १० वां बिल्ववन–इसके दर्शनसे ब्रह्मलोक मिलता है। ११ वां भांडीरवन–यहां वासुदेवजीके दर्शन करनेसे गर्भवास नहीं होता। १२ वां वृन्दावन–यह विष्णुका सदा प्यारा है।

(१४८ वां अध्याय) धारापतन तीर्थमें शरीर छोड़नेसे स्वर्ग मिलता है (परिक्रमा-नं० २७) यमुनेश्वरके दर्शन करनेसे और वहां शरीर छोड़नेसे विष्णुलोक मिलता है। नागतीर्थके स्नानसे स्वर्गलोक, और वहां प्राण त्यागनेसे विष्णुलोक मिलता है। कंठाभरण तीर्थमें स्नान करनेसे सूर्यलोक मिलता है। उसी भूमिमें ब्रह्मलोक नामक तीर्थ है, जिसके स्नानसे विष्णुलोक मिलता है। सोमतीर्थ यमुनाके मध्यमें है, वहां सोमको विष्णुका दर्शन हुआ था। (नं०२८) सरस्वतीपतन क्षेत्रके जलस्पर्शसे मूर्ख भी योगीराज होजाता है। (नं०२०) दशाश्वमेध तीर्थके स्नानसे अश्वमेधका फल होता है (नं० २४)। मथुराके पश्चिम ब्रह्माका निर्माण कियाहुआ मानसतीर्थ है, जिसके स्नानसे विष्णुलोक मिलता है। उसीके समीप विघ्नराज तीर्थ है, जिसके स्नानसे विघ्न नहीं होता। कोटितीर्थके स्नानसे कोटि गोदानका फल होता है(नं० २०)। कोटितीर्थसे आध कोसपर शिवक्षेत्र है, जहां बैठकर शिवजी मथुराकी रक्षा करते हैं। वहां स्नानकर शिवके दर्शन करनेसे मथुरामंडलके सब तीर्थोंका फल होता है (नं० १६)।

(१५१ वां अध्याय) मथुरामें आकर यमुनामें स्नान करके गोविंददेवजीकी पूजा करनेसे पितरोंकी उत्तम गति होती है। मथुराके पश्चिम आधे योजनपर धेनुकासुरकी भूमिमें तालवन तीर्थ है। मथुराकी पश्चिम दिशामें आधे योजनपर सूर्य्यतीर्थ है।

(१५२ वां अध्याय) मथुरामंडलका प्रमाण २० योजन है। पृथ्वीमें जितने तीर्थ और पुण्यभूमि है, वे हरिशयनके समय मथुरामंडलमें आते हैं। जो मनुष्य मथुरामें जाकर केशवका दर्शन और यमुनामें स्नान करता है वह अवश्य विष्णुलोकमें जाता है। कार्तिक

मासकी शुक्ला अष्टमीको यमुनामें स्नानकर नौमीको मथुराकी प्रदक्षिणा करनेसे उत्तम गति मिलती है ।

(१५४ वां अध्याय) मथुराकी परिक्रमा कार्तिक शुक्ल ८ से इस क्रमसे करे,–प्रथम विश्रांतितीर्थमें स्नान, तब दक्षिण कोटितीर्थमें स्नानकर–हनुमानजी, पद्मनाभ, वसुमती देवी, कंसवासनिका देवी, औग्रसेनी देवी, चर्चिका देवी आदिका दर्शन करे । फिर क्षेत्रपालका दर्शनकर, वहांसे जाकर भूतेश्वर महादेवका दर्शन करे, (नं० १६) तब मथुराकी परिक्रमा सफल होती है । आगे कृष्ण करके पूजित कुब्जीका, और बाभनी दो ब्राह्मणियोंके दर्शन करे । उससे आगे गरतेश्वर शिव हैं आगे महाविद्येश्वरी देवी है, जिसने कृष्णकी रक्षाकी थी (नं० १९) । आगे गोकर्णेश्वर कुण्डमें स्नान करके शिवजीका दर्शन करे (नं० २२) । फिर सरस्वती नदीमें स्नान तर्पण करे (नं० २०) । विघ्नराज गणेशका दर्शन करके यमुनामें आकर स्नान करे, और सोमेश्वर तीर्थमें स्नानकर सोमेश्वरका दर्शन करे (नं० २८) आगे । सरस्वती संगम तीर्थमें स्नान करे । वहांसे चल घंटाभरण तीर्थ, गरुडके सब तीर्थ, धारा लोपक तीर्थ, वैकुण्ठ तीर्थ (नं० ३१), खंड वेलक तीर्थ, मंदाकिनी-संयमन तीर्थ, असिकुण्ड तीर्थ (नं० ३३), गोपीतीर्थ, मुक्तिकेशव तीर्थ और वैलक्ष-गरुड तीर्थ; इन तीर्थोंमें क्रमसे स्नान, तर्पण दान, आदि करके अविमुक्तेशकी जो सप्त ऋषियों करके स्थापित हैं, प्रार्थना कर विश्रांति तीर्थमें स्नान तर्पणकर गतश्रम भगवान् (देखो शहरके मन्दिरोंका (नं० २) और सुमंगला देवीका दर्शन कर निज यात्रा सुफलकी प्रार्थना करे ।

(१५७ वां अध्याय) मथुरामण्डलका प्रमाण २० योजन है । इस मंडलको कमलका स्वरूप जानना चाहिये जिसके कर्णिका स्थानमें केशव भगवान् (नं० १८) स्थित हैं । मथुरा रूपी कमलके पश्चिम दलमें गोवर्द्धन निवासी भगवान् (नं० ७), उत्तर दलमें श्रीगोविन्द भगवान् (नं० ५), पूर्व दलमें विश्रांति नामक ईश्वर और दक्षिण दिशाके दलमें शूकर भगवान (शहरके मन्दिरका नं० ४) है ।

कपिल ऋषिने अपने तपके प्रभावसे वाराहजीकी मूर्तिका निर्माण किया । कपिलजीसे इन्द्रने इसको लिया । इन्द्रपुरीसे रावण लंकाको ले गया । रामचन्द्र रावणको जीतनेपर कपिल वाराहको लंकासे अयोध्यामें लाये । शत्रुघ्नने लवणासुरके वध करनेपर उस मूर्तिको अयोध्यासे लाकर मथुरामें दक्षिण दिशामें स्थापित किया ।

(१६० वां अध्याय) वाराहजीने कहा, हम मथुरामें ४ मूर्ति होकर सदा निवास करते हैं । १ वाराह (नं० ४), २ नारायण ३ वामन (नं० ११), और ४ बलभद्र । जो मनुष्य असिकुण्ड (नं० ३३) में स्नान करके चारों मूर्तियोंका दर्शन करता है, वह चारों समुद्रों सहित पृथ्वी–परिक्रमाका फल पाता है ।

(१६२ वां अध्याय) मथुरापुरीका प्रमाण चारों दिशाओंमें बीस योजन है । सब तीर्थों में प्रधान विश्रांति तीर्थ है । मथुराके क्षेत्रपाल भूतपति महादेव (नं० १६) हैं; जिनके नहीं दर्शन करनेसे तीर्थ यात्राका फल निष्फल होता है ।

(१७० वां अध्याय) मथुरामें विश्रांतितीर्थ (नं० १), सरस्वती संगम (नं० २०), असिकुण्ड (नं० ३३), कालंजर और कृष्णगंगा (नं० २६), इन पांचों तीर्थोंमें स्नान

करनेसे मनुष्यको कैसा ही पाप हो, निवृत्त हो जाता है । मथुराके सब तीर्थोंसे इनका अधिक माहात्म्य है ।

(१७१ वां अध्याय) कृष्णका पुत्र सांब कृष्ण गंगापर सूर्य्यकी आराधना करके कुष्ठरोगसे मुक्त हुआ । एक समय नारदजी द्वारकामें आकर कृष्णसे बोले कि सांबके सुन्दर रूपसे आपके अंत:पुरकी स्त्रियां मोहित हो रही हैं, इससे आपकी विमल कीर्तिमें कलंक लगता है । यह सुन कृष्णने १६ सहस्र रानियोंको बुलाकर उनके मध्यमें सांबको बैठाया । उस समय सांबका मनोहर रूप देख सब स्त्रियां मोहवश कामसे विह्वल हो गईं । तब कृष्णने सांबसे कहा हे दुष्ट ! तू आजसे कुरूप होजा । तब सांब कुष्ठरोगसे युक्त होगया । सांब नारदके उपदेशसे मथुराके वटसूर्य्य नामक स्थानमें जाकर कृष्णगंगामें स्नान कर सूर्य्यकी आराधना करने लगा । थोड़ेही दिनोंमें कृष्णगंगाके तटपर सूर्य्य भगवान्ने प्रगट हो अपने हाथसे सांबका शरीर स्पर्श किया, उसी समय सांब दिव्य शरीर होगया ।

गरुडपुराण–(प्रेतकल्प–२७ वां अध्याय) अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची-अवंतिका और द्वारिका ये सातों पुरी मोक्ष देनेवाली हैं ।

पद्मपुराण–(पातालखंड–६९ वां अध्याय) मथुरा देश, जिसका नाम मधुवन है, विष्णुको अधिक प्रिय है । माथुर मंडल सहस्रदल कमलके आकारका है । इस देशमें १२ वन प्रधान हैं । भद्रवन, श्रीवन, लोहवन, भांडीरवन, महावन, तालवन, खदिरवन, बकुलवन, कुमुद, वन, काम्यवन, मधुवन और वृन्दावन । उनमें ७ यमुनाजीके पश्चिम तटपर और ५ पूर्व ओर हैं । उनमें भी ३ वन अत्यन्त उत्तम हैं । गोकुलमें महावन, मथुरामें मधुवन और वृन्दावन इन बारहोंको छोड़कर और भी बहुत उपवन हैं ।

(७३ वां अध्याय) भगवान्ने कहा, मथुरावासी नीच लोग भी देवताओंसे धन्य हैं । भूतेश्वर देव हमारे प्रिय हैं ।

(९१ वां अध्याय) कार्तिक मासमें तुलाके सूर्य्यमें मथुरापुरीका यमुना स्नान मुक्तिदायक होता है ।

श्रीमद्भागवत–(चौथा स्कन्ध–८ वां अध्याय) ध्रुवजी नारदकी आज्ञानुसार मथुरामें आकर एकांत चित्त हो भगवान्का ध्यान करने लगे । जब उनके तपसे संपूर्ण विश्वका श्वास रुक गया, तब भगवान्ने मधुवन (नं० ९) में आकर ध्रुवको वरदान दिया कि तुमको अटल ध्रुवस्थान मिलेगा । ध्रुव भगवान्की आज्ञासे अपने घर गए ।

(९ वां स्कन्ध–४ वा अध्याय) भगवान् वासुदेवने राजा अंबरीषके भक्तिभावसे प्रसन्न हो, उसको सुदर्शन चक्र दे दिया था । राजाने एक वर्षतक अखंड एकादशी व्रत करनेका संकल्प किया और व्रतके अंतमें कार्तिक महीनेमें मथुरापुरीमें जाकर व्रतकिया । वह ब्राह्मणोंको भोजन कराकर व्रत पारण करनेको तत्पर हुआ, उसी समयमें दुर्वासा ऋषि आए और भोजन करना स्वीकार करके नित्य कर्म करनेको यमुना तटपर गए । जब ऋषिके आनेमें बिलंब हुआ, द्वादशीका केवल अर्द्ध मुहूर्त शेष रहगया तब राजाने ब्राह्मणोंकी आज्ञासे चरणामृत पीकर व्रत समाप्त किया । ऋषिने वहां आनेपर जब ध्यान करके राजाके आचरणको जान लिया, तब क्रोध कर मस्तकसे एक जटा उखाड़ एक कृत्या बनाई । वह खड्ग हाथमें ले राजाकी ओर दौड़ी विष्णुकी आज्ञासे चक्र अपने तेजसे कृत्याको भस्म करने लगा । जब दुर्वासा

ऋषिने देखा कि चक्र हमारीही ओर चला आता है, तब वह सब दिशाओंमें भागने लगे । जहां वह जाते थे, चक्र भी उनके पीछे लगा चला जाता था। (५ वां अध्याय) विष्णु भगवान्की आज्ञासे दुर्वासा ऋषि राजा अंबरीषके पास गए। जब राजाने चक्रकी स्तुति की, तब सुदर्शन चक्र शांत होगया (नं० २३) ।

शिवपुराण-(८ वां खंड-११ वां अध्याय) मथुरामें रंगेश्वर शिवलिंग हैं (देखो नं०१४) (११ वां खण्ड-१८ वां अध्याय) सूर्य्यकी संज्ञा नाम्नी स्त्रीसे श्राद्धदेव और यम दो पुत्र और यमुना नामक कन्या उपजी। संज्ञाकी छायासे सावर्णिमनु और शनिश्चर दो पुत्र और तपती नामक कन्या हुई ।

भविष्यपुराण—(पूर्वार्द्ध-४२ वां अध्याय) सूर्य्यकी पत्नी संज्ञासे यम और यमुना, और छायासे सावर्णिमनु शनिश्चर और तपती नामक कन्या उत्पन्न हुई । एक दिन यमुना और तपतीका विवाद हुआ और परस्परके शापसे दोनों नदी होगई । सूर्य्य भगवान्ने कहा कि, यमुनाका जल गंगाजलके समान और तपतीका जल नर्मदाके जलके तुल्य माना जायगा।

(उत्तरार्द्ध-१३ वां अध्याय) कार्तिक शुक्ल २ के दिन यमुनाने यमराजको भोजन कराया, उसी दिन नरकके जीव बंधनसे छुटे थे, और यमराजके नगरमें बड़ा उत्सव हुआ था, इसलिये इसका नाम यमद्वितीया हुआ । उस दिन बहिनके गृह जाकर प्रीतिसे भोजन करे और वस्त्राभूषण आदि देकर भगिनीको प्रसन्न करे ।

(५६ वां अध्याय) विष्णुने देवताओंके हितके लिये भृगु मुनिकी स्त्रीको मारडाला । भृगु ऋषिने विष्णुको शाप दिया कि तुम १० बार भूमिपर जन्म लोगे, इसी शापसे मत्स्य, कूर्म, वाराह,वामन, नृसिंह, परशुराम, रामचन्द्र, बलराम, बौद्ध, कल्कि ये विष्णुके १० अवतार हुए। (वाराहपुराणके ४ थे अध्यायमें भी विष्णुके १० अवतारोंका येही नाम हैं) ।

लिंगपुराण-(पूर्वार्द्ध २९ वां अध्याय) भृगुके शापसे विष्णुको १० अवतार लेने पड़े । (६९ वां अध्याय) भृगुके शापके छलसे श्रीकृष्णने मनुष्यशरीर धारण किया ।

मत्स्यपुराण-(४७ वां अध्याय) विष्णु भगवानने शुक्रकी माताका सिर काटदिया । शुक्रने विष्णुको शापदिया कि, तुम इस संसारमें ७ बार मनुष्यशरीर धारण करोगे । तभीसे विष्णु बार बार जन्म लेते हैं । (मत्स्य, कूर्म और वाराहके साथ १० अवतार होते हैं, ये तीनों मनुष्य नहीं हैं) ।

पद्मपुराण-(सृष्टिखंड, चौथा अध्याय) भृगुजीने विष्णुको शाप दिया कि तुमको मृत्युलोकमें १० बार जन्म लेना पड़ेगा । (१३ वां अध्याय) भृगुजीने विष्णुको शाप दिया कि तुम ७ जन्म तक मनुष्योंमें जन्म लोगे । (मत्स्य, कूर्म्म और वाराह मनुष्य नहीं हैं)।

(पातालखंड, ६८ वां अध्याय) मत्स्य, अवतार चैत्र शुक्ल १५, कूर्म अवतार ज्येष्ठ शुक्ल १२, वाराह चैत्र कृष्ण९, नृसिंह वैशाख शुक्ल१४, वामन भाद्र शुक्ल ३, परशुराम वैशाख शुक्ल३ रामचन्द्र चैत्रशुक्ल ९, कृष्ण भाद्र कृष्ण ८, बौद्ध ज्येष्ठ शुक्ल २, कल्कि अवतार ज्येष्ठ शुक्ल २ और बलरामका जन्म भाद्र कृष्ण २ को हुआ ।

महाभारत-(आदिपर्व्व, ६७ वां अध्याय) कृष्णजीने नारायणके अंशसे और बलदेवजीने शेषनागके अंशसे जन्म लिया है ।

(१९८ वां अध्याय) भगवान् हरिने अपनी शक्तिरूपी कृष्ण और शुक्ल दो वर्णोंके दो केश उखाड़ दिये, जो केश यदुवंशमें रोहिणी और देवकीके गर्भमें जाकर प्रविष्ट हुए। नारायणके शुक्ल केशसे बलराम और काले वर्णवाले दूसरे केशसे कृष्णचन्द्र उपजे।

(यह कथा देवीभागवतके ४ थे स्कंधके २२ वें अध्यायमें और विष्णुपुराणके ५ वें अंशके पहले अध्यायमें तथा आदिब्रह्मपुराणके ७४ वें अध्यायमें भी है)।

(६२५ वां अध्याय) ब्रह्माने कहा कि नर नारायण नामक दो सनातन देवताओंने देवकार्य्यके लिये मृत्युलोकमें अवतार लिया है, उनको लोग अर्जुन और वासुदेव करके जानते हैं।

(उद्योगपर्व. ४९ वां अध्याय) नर और नारायणने अर्जुन और वासुदेव रूपसे अवतार लिया है। अर्जुन नरदेव और कृष्ण नारायण हैं।

ब्रह्मवैवर्त्तपुराण—(कृष्ण-जन्म-खंड, छठवां अध्याय) कामदेव प्रद्युम्न, रति मायावती, ब्रह्मा अनिरुद्ध, भारती ऊषा, शेष बलराम, गंगा कालिन्दी, तुलसी लक्ष्मणा, सावित्री नाग्नजिती, पृथ्वी सत्यभामा, सरस्वती शैव्या, रोहिणी मित्रविंदा, सूर्य्यपत्नी रत्नमाला, स्वाहा सुशीला, दुर्गा जाम्बवती, लक्ष्मी रुक्मिणी और पार्वती यशोदाकी पुत्री होंगी।

आदिब्रह्मपुराण—(९ वें अध्यायसे १६ वें अध्यायतक) ब्रह्माका पुत्र अत्रि, अत्रिका चन्द्रमा, चन्द्रमाका बुध, बुधका पुरूरवा, पुरूरवाका आयु, आयुका पुत्र नहुष, औ नहुषका पुत्र ययाति हुआ जिसके यदु आदि ५ पुत्र हुए।

शूरकी ५ पुत्री थीं. यथा,—पृथुकीर्ति १, पृथा २, श्रुतदेवा ३, श्रुतश्रवा ४ और राजाधिदेवी ५ । शूरने पृथाको उसके मातामह राजा कुन्तिभोजको दे दिया । श्रुतश्रवाका पुत्र शिशुपाल हुआ । पृथुकीर्ति रानीका पुत्र दंतवक्र हुआ । शूरके अनाधृष्टि नामक पुत्रका निनर्तशत्रु पुत्र हुआ और देवश्रवाका शत्रुघ्न नामक पुत्र हुआ ।

वसुदेवकी पौरवी, रोहिणी, मदिरा, धारा, वैशाखी, भद्रा, सनात्री, सहदेवा, शांतिदेवा, सुदेवा, देवरक्षिता, वृकदेवी, उपदेवी और देवकी यह १४ भार्य्या थीं; जिनमें अंतवाली २ भोगपत्नी, और पौरवी और रोहिणी बड़ी पटरानी हुईं । शांतिदेवीसे २ पुत्र, सुदेवासे २ पुत्र और वृकदेवीसे १ पुत्र हुए । रोहिणीसे बलराम, सारण, दुर्दम, दमन श्वाभ्र, पिंडारक और उशीनर ८ पुत्र, और चित्रा और सुभद्रा २ पुत्री हुईं । देवकी रानीसे श्रीकृष्णजी जन्मे । बलदेवकी रेवती स्त्रीसे निशठ नामक पुत्र हुआ ।

आदि ब्रह्मपुराण–(७४ वां अध्याय) ब्रह्मा आदि सब देवताओंने क्षीरसागरके उत्तर तटपर जाकर पृथ्वीका भार उतारनेके लिये गरुडध्वज भगवान्‌की स्तुति की । भगवान्‌ने श्वेत और कृष्ण २ केशोंके अपने शरीरसे उखाड़ दिया और देवताओंसे कहा कि यह मेरे केश पृथ्वीमें अवतार लेकर पृथ्वीका भार उतारेंगे ।

जब नारदमुनिने कंससे कहा कि देवकीके आठवें गर्भमें भगवान् जन्म लेंगे, तब कंसने देवकी और वसुदेवको अपने गृहमें रोक रक्खा । (७५ वां अध्याय) जब बलदेव रोहिणीके गर्भमें प्राप्त हो चुके, तब भगवान्‌ने देवकीके गर्भमें प्रवेश किया । जिस दिन भगवान्‌ने जन्म लिया, उसी दिन गोकुलमें नन्दकी पत्नी यशोदाके गर्भमें योगनिद्रा भी उत्पन्न हुई । जब वसुदेव कृष्णको लेकर अर्द्ध रात्रिमें चले, तब योगमायाके प्रभावसे मथुराके द्वारपाल निद्रासे मोहित होगए । अति गंभीर यमुनाजी थाह हो गईं । वसुदेव पार उतरकर गोकुलमें गए, जहांयोगनिद्रासे मोहित नन्द गोपकी स्त्री यशोदाके कन्या हुई थी । वसुदेव अपने बालकको यशोदाकी शय्यापर सुला और उसकी कन्याको ले शीघ्रही लौट आए । यशोदा जागी तो पुत्र उत्पन्न हुआ देख अति प्रसन्न हुई ।

जब वसुदेव लड़कीको अपने भवनमें लाकर देवकीकी शय्यापर स्थित हो चुपके हो रहे तब रक्षा करनेवालोंने बालक उत्पन्न होनेका हाल कंसको जा सुनाया । कंसने शीघ्रही आकर कन्याको छीन शिलापर पटक दिया । कन्या कंसके हाथसे छूट अष्टभुजा होकर कंससे बोली कि मेरे फेंकनेसे क्या हुआ ? तेरे मारनेवाला तो जन्म ले चुका है । ऐसा कह देवी आकाशमें चली गई ।

(७६ वां अध्याय) कंसने पृथ्वीके सम्पूर्ण बालकोंको मारनेके लिये प्रलंब आदि दैत्योंको आज्ञा दी और वसुदेव देवकीको कैदसे छोड़दिया । (७७ वां अध्याय) पूतना राक्षसी गोकुलमें जानेपर कृष्णद्वारा मारी गई । जब यमलार्जुन वृक्षोंके गिरनेसे कृष्ण बच गये, तब नन्द आदि सब गोप उत्पातोंसे डरकर गोकुलको छोड़ वृन्दावनमें जा बसे ।

(७८ वां अध्याय) कृष्णने कालिय नागको दमन किया । (७९ वां अध्याय) बलदेवजीने धेनुक और प्रलंब असुरको मारा । कृष्णके उपदेशसे ब्रजवासियोंने इन्द्रको छोड़कर गोवर्धन पर्वतका पूजन किया । (८० वां अध्याय) इन्द्रने क्रुद्ध हो संवर्तक मेघोंको भेजा । मेघ गौओंके नाशके लिये भयानक वर्षा करने लगे । कृष्णने गोवर्धन पर्वतको उखाड़

एक हाथपर धारण करलिया। गोपगोपियोंने गौओं सहित पर्वतके नीचे निवास किया। मेघोंने ७ रात्रि तक गोपोंके नाश करनेवाली वर्षा की, पर जब श्रीकृष्णने पर्वत धारण करके पूर्ण गोकुलकी रक्षा की; तब इन्द्रने मेघोंको निवारण किया। इन्द्र ऐरावत हस्तीपर चढ़ कृष्णके समीप आया और बोला कि, हे भगवन्! आपने अच्छे विधानसे गोव्रजकी रक्षा की, इसलिये गौओंका प्रेराहुआ मैं आया हूं। मैं आपका अभिषेक करूंगा और आप उपेंद्र और गोविन्द नामोंको प्राप्त होंगे। निदान इंद्रने सुन्दर जल और ऐरावत हस्तीका घंटा लेकर पूर्ण जलकी धारासे भगवान्का अभिषेक किया और बहुत बातें करके वह स्वर्गको चला गया।

(८२ वां अध्याय) जब धेनुक प्रलंब मारेगए, कृष्णन गोवर्धन पर्वतको उठा लिया, कालिय नागको दमन किया, यमलार्जुन वृक्षको उखाड़डाला, पूतनाको मार डाला, और गाड़ा उलटदिया, तब नारदने कंसके समीप जाकर संपूर्ण वृत्तांत कहा और यह भी कहा कि, यशोदा और देवकीका गर्भ बदलदिया गया है। कंसने विचारकिया कि बलवान् होनेसे पहिले ही बलराम और कृष्णको मारडालना चाहिये।

कंसने अक्रूरसे कहा कि वसुदेवके पुत्र विष्णुके अंशसे उत्पन्न हुए हैं और मेरे नाशके लिये बढ़े हैं; तुम उन्हें यहां बुलालाओ। चतुर्दशीके दिन मेरे धनुषयज्ञमें चांडूर और मुष्टिकके संग उन दोनोंका मल्लयुद्ध होगा। कुवलयापीड हस्ती वसुदेवके दोनों पुत्रोंको मारेगा।

कंसका भेजाहुआ केशी दैत्य वृन्दावनमें आया और कृष्णके पीछे मुख फाड़कर दौड़ा। कृष्णने अपनी बाँहको उसके मुखमें डाल दिया, जिससे वह मरगया।

(८३ वां अध्याय) अक्रूर शीघ्रगामी रथमें बैठ व्रजको चले और मार्गमें चिंतवन करने लगे कि मैं धन्य हूं कि भगवानका दर्शन करूंगा। (८४ वां अध्याय) अक्रूरने व्रजमें पहुंच केशवसे संपूर्ण वृत्तांत विस्तारपूर्वक कहा। कृष्णचन्द्र बोले कि, मैं ३ रात्रिके भीतर अनुचरोंसमेत कंसको मारूंगा।

प्रभात होतेही बलदेव और कृष्ण जब अक्रूरके संग मथुरा जानेको उद्यत हुए, तब गोपी विलाप करने लगीं। बलदेव और कृष्ण व्रज भूभागको त्याग मध्याह्न समय यमुनाके किनारे पहुँचे और संध्या समय अक्रूरके सहित मथुरामें प्राप्त हुए।

बलदेव और कृष्णने मथुरामें प्रवेश किया। दोनों भाइयोंने एक धोबीको देख उससे मनोहर वस्त्रोंको मांगा, जब वह रजक प्रमादसे निंदित वचन कहन लगा, तब कृष्णने अपने हाथके प्रहारसे उसका सिर पृथ्वीमें गिरादिया। दोनों भाई वस्त्रोंको पहन प्रसन्न हो मालाकार के गृह गये। मालीने प्रसन्न हो इच्छापूर्वक विचित्र विचित्र पुष्प उन्हें दिए।

(८५ वां अध्याय) कृष्णने अनुलेपन लिए हुए, राजमार्गमें नवयौवना कुब्जाको देखा और उससे पूछा कि यह अनुलेपन किसका है। वह बोली कि हे कांत! मैं नैकवक्रा नामसे विख्यात कंसके अनुलेपन कर्म करनेमें नियुक्त हूं। यह सुन्दर अनुलेपन आपकी प्रसन्नताके लिये है। जब कुब्जाने आदरपूर्वक कृष्णको अनुलेपन दिया, तब कृष्णने कुब्जाकी ठोंढ़ी पकड़ ऊपरको उठाकर और नीचेसे पैरोंको खींच उसको उत्तम स्त्री बना दिया और उससे कहा कि, मैं फिर तेरे घर आऊंगा।

बलराम और कृष्ण धनुषशालामें गए । कृष्णने रक्षकोंसे बिना पूछे ही धनुषको उठाकर तोड़दिया । इसके उपरांत वे लोग धनुषशालासे निकल गए । इधर कंसने अक्रूरके आगमन और धनुषके टूटनेका हाल सुनकर चाणूर और मुष्टिक आदि मल्लोंको कुवलयापीड हाथीको भेजा । साधारण मंचोंपर नगरके साधारण मनुष्य, राजमंचोंपर राजागण और रंग मध्यके समीप ऊंचे मंचपर कंस बैठा । स्त्रियोंके लिये जुदे जुदे मंच बिछाए गए । जब बाजे बजने लगे, चाणूर और मुष्टिकने खड़े होकर अपनी भुजा बनाई, तब बलदेव और कृष्णने कुवलयापीड हस्तीको मार दोनों हाथोंमें हस्तीके दांतोंको लिएहुए रंगशालामें प्रवेश किया । कृष्ण चाणूरके संग और बलराम मुष्टिकके सहित युद्ध करने लगे । अंतमें जब दोनों दैत्य मारे गए, तब कृष्ण कूदकर मंचपर चढ़ गए उन्होंने कंसके सिरके बालोंको खैंच उसको नीचे पटक दिया । जब वह मरगया, तब कृष्ण उसके बालोंको पकड़ रंगसभामें खींच लाए ।

निदान बलदेव और कृष्ण वसुदेव और देवकीके समीप गए । कृष्णने कंसके पिता उग्रसेनको बंधनसे छुड़ाया और उसको राजसिंहासनपर बैठाया । बलदेव और कृष्ण अवंती पुरवासी सांदीपनि आचार्य्यके पास शास्त्र पढ़नेके लिए गए । उन्होंने ६४ दिनोंके भीतर सम्पूर्ण रहस्य और धनुर्वेद आदि पढ़लिए । आचार्य्यने अपने मृतक पुत्रको मांगा, जिसको उन्होंने यमपुरीसे लाकर गुरुको दे दिया ।

अस्ति और प्राप्ति नामक कंसकी दो स्त्रियोंने अपने पिता मगधदेशके राजा जरासन्धके समीप जाकर कंसकी मृत्युका वृत्तांत कह सुनाया । जरासन्धने २३ अक्षोहिणी सेना लेकर मथुरापुरीको घेर लिया, (८७ वां अध्याय) परन्तु अंतमें बलदेव और कृष्णसे वह परास्त हुआ फिर जरासन्ध युद्ध करने आया और फिर कृष्ण और बलरामने उसको जीता । ऐसे ही जब वह १७ बार जीतागया, तब अठारहवीं बार भी यादवोंके संग युद्ध करनेको उद्यत हुआ । जब यादवोंने उसे फिर युद्धमें परास्त किया, तब वह थोड़ी सेना लिएहुए कृष्णके संग युद्ध करने लगा । उसी समय कालयवन कोटि सहस्र म्लेच्छों और चतुरंगिनी सेनाओंसे युक्त हो मथुराके पास पहुँचा । कृष्णने विचार किया कि ऐसा दुर्गम दुर्ग बनाऊंगा, जहां स्त्री भी युद्ध कर लेगी ।

कृष्णने १२ योजन पृथ्वी द्वारिका रचनेके लिये समुद्रसे मांगी और उसपर किलेसे युक्त इन्द्रकी अमरावतीके समान पुरी बनाई। निदान वह मथुरावासियोंको वहां वसाकर मथुरामें आए।

मथुराके पास सेना एकत्र होनेके समय श्रीकृष्ण बिना शस्त्रके मथुराके बाहर निकले । कालयवन उनके पीछे दौड़ा । दोनों चलते चलते एक महान गुहामें पहुँचे, जहां राजा मुचकुंद सो रहा था । कालयवनने उसको कृष्ण जानकर एक लात मारी, जिससे राजा जाग उठा । उसके देखनेहीसे कालयवन जलकर भस्म हो गया । क्योंकि देवताओंने राजाको ऐसा वरदान दिया था कि तुमको सोते हुए जो उठावेगा, वह भस्म हो जायगा । राजा मुचकुंद नरनारायणके स्थानमें गंधमादन पर्वतपर चलागया । श्रीकृष्णने कालयवनको मार मथुरासे हस्ती, अश्व, रथ, सब लेकर द्वारिकापुरीमें उग्रसेनको अर्पण किया ।

बलदेवजी द्वारिकासे गोकुलमें आए। वरुणने वृन्दावनमें विचरते हुए बलदेवजीके उपभोगके लिये वारुणीको भेजा । (८८ वां अध्याय) बलदेवजीने मदिरापानकर गोप गोपियोंके संग आनंदसे सुन्दर गीत गाते तथा वाद्य बजाते हुए यमुना नदीको अपने समीप बुलाया । जब

यमुना नहीं आई, तब उन्होंने मदसे विह्वल हो, हलको ग्रहणकर यमुनाको खींचा। यमुना मार्गको त्याग जहां बलदेवजी थे, वहां बहने लगी और जब शरीर धारणकर कहने लगी कि मुझको छोड़ दो, तब बलदेवने पृथ्वीमें छोड़कर उसको फैला दिया। बलदेजी ब्रजमें दो मास रहकर द्वारिकामें लौट आए, उन्होंने रेवत राजाकी रेवतीनामक पुत्रीसे ब्याह किया।

(८९ वां अध्याय) विदर्भ देशके कुंडिनपुरके राजा भीष्मकका रुक्मीनामक पुत्र और रुक्मिणी पुत्री थी। रुक्मिणीने श्रीकृष्णसे विवाहकी इच्छा की, पर रुक्मीकी अनुमति न होनेसे राजाने उसका संबन्ध कृष्णके साथ स्वीकार नहीं किया। जरासंधकी प्रेरणासे शिशुपालसे उसके विवाहकी बात ठहरी। शिशुपालके साथ जरासंध आदि राजा आए। कृष्णभी बलदेव आदि यादवोंके साथ वहां आगए। विवाहसे एक दिन पहले श्रीकृष्ण भगवान् उस कन्याको हरकर बलदेव आदि बंधुओंमें आ मिले। पौंड्रक, दंतवक्र, विदूरथ, शिशुपाल, जरासंध, शाल्व आदि राजागण कृष्णको मारने दौड़े। कृष्णने चतुरंगिनी सेनाको मार रुक्मिणीसे विवाह किया।

रुक्मिणीसे कामदेवके अंशसे प्रद्युम्न जन्मा, जिसको शम्बर दैत्य हरले गया था। (९० वां अध्याय) प्रद्युम्नका पुत्र अनिरुद्ध हुआ, जिसका विवाह रुक्मीकी पोतीसे हुआ, उस समय बलदेव आदि यादव कृष्णके संग रुक्मीके नगरमें गए। वहां बलदेव और रुक्मी जुआ खेलने लगे। जब जुआमें रुक्मीने छल किया, तब बलदेवने उसको मारडाला।

(९१ वां अध्याय) कृष्ण गरुड़पर सत्यभामाके संग प्राग्ज्यौतिषपुरमें गए। उन्होंने वहां बड़ा युद्ध करके भौमासुर (नरकासुर)को चक्रसे मारा तथा नरकासुरके भवनमें सोलह सहस्र एक सौ कन्याओंको देख उनको द्वारिकामें भेज दिया।

(९२ वां अध्याय) नरकासुरके गृहसे लाई हुई स्त्रियोंसे द्वारिकामें कृष्णका विवाह हुआ।

(९३ वां अध्याय) रुक्मिणीके प्रद्युम्न आदि, सत्यभामाके भानु आदि, रोहिणीके दीप्तिमंत इत्यादि, जाम्बवतीके सांब आदि, नाग्नजितीके कई पुत्र, शैब्याके संग्रामजित् आदि पुत्र हुए और लक्ष्मणा और कालिंदीके भी अनेक पुत्र हुए। इसी प्रकार आठों रानियोंमें हजारों पुत्र जन्मे। सबसे बड़ा रुक्मिणीका पुत्र प्रद्युम्न था। प्रद्युम्नका पुत्र अनिरुद्ध और अनिरुद्धका पुत्र वज्र हुआ। अनिरुद्धने बालिकी पोती बाणासुरकी पुत्री ऊषासे ब्याह किया। उस समय कृष्ण और शिवका घोर युद्ध हुआ इत्यादि।

(९६ वां अध्याय) जब स्वयंवरमें सांबने राजा दुर्योधनकी पुत्रीको हर लिया,तब कर्ण दुर्योधन, भीष्म, द्रोण, आदिने युद्धमें जीतकर सांबको बांध लिया। बलदेवजीने हस्तिनापुरमें आकर कौरवोंसे कहा कि उग्रसेन राजाकी आज्ञा ऐसी है कि सांबको तुम लोग जल्द छोड़ दो। भीष्म, द्रोण, कर्ण, दुर्योधन आदि बोले कि ऐसा कौन यादव है, जो कुरुवंशीको आज्ञा देगा। उग्रसेनकी आज्ञासे हम सांबको नहीं छोड़ेंगे। उस समय बलदेवजीने क्रोध करके हल ग्रहणकर हस्तिनापुरको खैंचा, जब सब कौरव दुःखित हो कहने लगे कि हे राम आप क्षमा कीजिए, तब बलदेवजी शांत हुए। अब भी हस्तिनापुरका घूर्णित आकार देख पड़ता है। अनंतर कौरवोंने सांबको धन और भार्य्या सहित बलदेवको देदिया।

(९८ वां अध्याय) यादवोंके कुमारोंने पिंडारक तीर्थमें स्थित विश्वामित्र, कण्व, नारद आदि ऋषियोंके आगे जाम्बवतीके पुत्रको स्त्रीका वेष बनाकर कहा कि यह स्त्री पुत्र जनेगी या कन्या? । ऐसा कपट वचन सुन मुनिगण बोले कि यह स्त्री मूसल जनेगी। हे राज कुमारो!

जैसा होगा, वैसा तुम देखोगे। इसके पीछे सांबके मूसल पैदा हुआ । राजा उग्रसेनने मूसलको चूर्णकर समुद्रमें फेंकवा दिया । वह चूर्ण समुद्रकी लहरोंसे किनारेपर लगा और उसके शेष भाग कीलको एक मछली निगल गई । मछलीको लुब्धक पकड़ ले गया ।

श्रीकृष्णने रात दिन पृथ्वी व आकाशमें उत्पात देख यादवोंसे कहा कि उत्पातोंकी शांतिके लिये समुद्रपर चलो । सब यादव कृष्ण और राम सहित प्रभास क्षेत्रमें गए, निदान जब कुकुर अंधकवंशी और यादव प्रसन्न हो आनंदसे मदपान करने लगे, तब नाश करनेवाली कलहरूपी अग्नि उत्पन्न हुई । वज्रभूत लकड़ीको ग्रहण कर सब परस्पर लड़ मरे । प्रद्युम्न, सांब, कृतवर्म्मा, सात्यकी, अनिरुद्ध, अक्रूर आदि सब वज्ररूपी शरोंसे परस्पर युद्ध करके हत हुए । कृष्णने भी कुपित हो उनको बहुत मुक्के मारे । बलदेवजीने शेष यादवोंको मूसलसे मारा ।

जब बलदेवजीने वृक्षके नीचे आसन ग्रहण किया और उनके मुखसे एक महासर्प निकल समुद्रमें प्रवेश कर गया । तब कृष्णने दारुक सारथीसे कहा कि मैं भी इस शरीरको त्यागूंगा और संपूर्ण नगर समुद्रमें डूबेगा, इस लिये द्वारकामें रहना उचित नहीं है । तुम जाकर अर्जुनसे कहो कि अपनी शक्तिभर जनोंका पालन करें । जब दारुकने जाकर कृष्णका संदेशा कहा, तब द्वारिकावासियोंने अर्जुन और यादवोंसहित आकर कृष्णको नमस्कार किया और जैसा कृष्णने कहा, वैसाही उन्होंने किया ।

श्रीकृष्ण पैरोंको पैरोंसे मोड़कर योगमें युक्त हुए, उस समय जरानामक लुब्धक मूसलावशेष लोहेकी कीलसहित वहां आया । उसने मृगके आकारवाले पैरोंको देख उसको तोमरसे बेधा, पीछे भगवानको देख उसने कहा कि हे प्रभो ! मैंने हरिणकी शंका करके बिना जाने यह काम किया है, आप क्षमा कीजिए । जब भगवान प्रसन्न हुए, तब आकाशमार्गसे एक विमान आया, लुब्धक उसमें बैठ स्वर्गको गया । कृष्ण भगवानने मनुष्य शरीरको त्याग दिया ।

(९९ वां अध्याय) कृष्ण बलदेव तथा अन्योंके शरीरोंको देख अर्जुन मोहको प्राप्त हुए । रुक्मिणी आदि आठों रानियोंने हरिके शरीरके साथ अग्निमें प्रवेश किया । रेवती बलरामकी देह सहित सती हुई । वसुदेव की स्त्री, देवकी और रोहिणी भी अग्निमें जल गई । अर्जुनने यथा विधिसे सबका प्रेतकर्म किया । जिस दिन. कृष्ण भगवान स्वर्गको गए, उसी दिन कलियुग उत्पन्न हुआ । समुद्रने उग्रसेनके गृहको छोड कर समस्त द्वारिकाको डुबा दिया ।

अर्जुनने समुद्रके पास बहुतसे धान्य साहित सब जनोंका वास कराया । आभीरोंने सलाह की कि यह धनुष बाणवाला अर्जुन ईश्वरको मारकर स्त्रियोंको ले जाता है, सहस्रों आभीर अर्जुनके पीछे दौड़े । अर्जुन कष्टसे धनुषपर प्रत्यंचा चढाने लगे, पर चढानेसे उनका मन शिथिल होगया । फिर अर्जुनने शरोंको छोड़ा, पर वे भेदन न करसके । निदान अर्जुनके देखते देखते प्रमदोत्तमा (स्त्रियें) आभीरोंके साथ चली गई । अर्जुन रोदन करने लगे । उसी समय अर्जुनके धनुष, अस्त्र, रथ; और घोड़े चले गए ।

अर्जुनने इंद्रप्रस्थमें अनिरुद्ध वज्रको राजतिलक दे, हस्तिनापुरमें जाकर युधिष्ठिर आदि पांडवोंसे सब वृत्तांत कह सुनाया । पांडव लोग हस्तिनापुरका राजतिलक परीक्षितको देकर वनको चले गए ।

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण—(कृष्णजन्मखंड, ५४ वां अध्याय) श्रीकृष्णने वसुदेवके प्रभासके यज्ञमें राधिकाका दर्शन किया । उस समय राधिकाका वियोग १०० वर्ष पूर्ण होनेपर श्रीदामा

का शाप मोचन हुआ। फिर कृष्णचन्द्र राधिका सहित वृन्दावनमें गए और वहाँ१४वर्ष राधिका सहित रास मंडलमें रहे। कृष्ण भगवान ११ वर्ष बाल अवस्थामें नन्दके गृह, १०० वर्ष मथुरा और द्वारिकामें और १४ वर्ष अंतके रासमंडलमें रहे। इस तरहसे १२५ वर्ष पृथ्वीमें रहकर कृष्ण भगवान गोलोकमें चले गए।

श्रीमद्भागवत–(११ वां स्कन्ध–६ वां अध्याय) कृष्णजी १२५ वर्ष मृत्युलोकमें रहे।

इतिहास–मथुरा बहुत पुराना शहर है। चीनका रहनेवाला यात्री फाहियान सन ४०० ई० में मथुरा आया था। उसने कहा है कि मथुरा बौद्धोंका प्रधान स्थान है। हुएत्संग यात्री उससे२५० वर्ष बाद आया था, वह कहता है कि मथुरामें २० बौद्धमठ और ५ देवमन्दिर हैं।

सन १०१७ ई० में गजनीका महमूद मथुरामें आया। उसने यहां २० दिन रहकर शहरको जलाया और मन्दिरोंके बहुत असबाब लूट ले गया।

सन १५०० में सुलतान सिकन्दर लोदीने पूरी तरहसे मथुराको लूटा।

सन १६३६ में शाहजहांने मथुराकी देवपूजा उठा देनेके लिये एक गवर्नर नियत किया। सन १६६९–१६७०में औरंगजेबने शहरके बहुतेरे मन्दिर और स्थानोंको नष्ट किया। सन १७५६ में अहमदशाहके अधीन २५००० अफगान घोड़सवार एक तिवहारपर मथुरामें आए, उन्होंने सब यात्रियोंको बड़ी निर्दयतासे मारा और बहुतेरोंको कैदी बना लिया।

वृन्दावन।

मथुरासे ६ मील उत्तर यमुना नदीके दहिने किनारेपर वृन्दावन एक म्युनिसिपल कसबा और प्रख्यात तीर्थ–स्थान है मथुराके छावनी–स्टेशनसे८ मीलकी रेलवे शाखा वृन्दावको गई है, जिसपर छावनी स्टेशनसे २ मील उत्तर मथुरा शहरका स्टेशन है, जहां वृन्दावनके जानेवाले यात्री रेलगाड़ीमें बैठते हैं।

इस सालकी जनसंख्याके समय वृन्दावनमें ३१६११ मनुष्य थे, अर्थात् १६३६९ पुरुष और १५२४२ स्त्रियां। जिनमें ३०५२१ हिन्दू, ९७६ मुसलमान, ६५ जैन, २७ सिक्ख आर २२ कृस्तान थे।

कालीदहको यमुनाने छोड़ दिया है। नीचे लिखेहुए मन्दिरोंके अतिरिक्त वृन्दावनमें शाहजहांपुरवालेका बनवाया हुआ राधागोपालका मन्दिर, टिकारीकी रानीका बनवायाहुआ इन्द्रकिशोरका मन्दिर और दूसरे छोटे बड़े बहुत मन्दिर हैं. जो मनुष्य व्रजमें वास करना या उसीमें जन्म बिताना चाहते हैं, वे वृन्दावनहीमें निवास करते हैं। यहां कई सदावर्त लगे हैं बहुतेरे पत्थरके मकान बने हैं। वृन्दावनके पड़ोसमें महारानी अहिल्याबाईकी बनवाईहुई लाल पत्थरकी एक बावली है, जिसमें ५७ सीढियां बनी हैं।

श्रावण मासके शुक्ल पक्षके आरंभसे पूर्णिमातक मन्दिरोंमें झूलनका बड़ा उत्सव होता है, उस समय हजारों यात्री दर्शनके लिये वृन्दावनमें आते हैं। कार्त्तिक, फाल्गुन और चैत्रमें भी यात्रियोंकी भीड़ होती है।

वृन्दावनमें जिस स्थानपर बड़े बड़े मन्दिर और मकान बने हैं, वहां ५०० वर्ष पहले जंगल था। सन् ईस्वीकी सोलहवीं और सत्रहवीं सदीके बनेहुए ४ बड़े मन्दिर हैं। गोविंददेवजी, गोपीनाथ, युगलकिशोर और मदनमोहनका। नए मन्दिरोंमें रंगजीका मन्दिर, लाला बाबूका बनवाया हुआ मन्दिर, ग्वालियरके महाराजवाला मन्दिर और शाह बिहारीलालका मन्दिर अत्युत्तम दर्शनीय हैं। गोपीश्वर महादेव बहुत पुराने समयके हैं।

वृन्दावनमें गोविन्ददेवजीका मन्दिर.
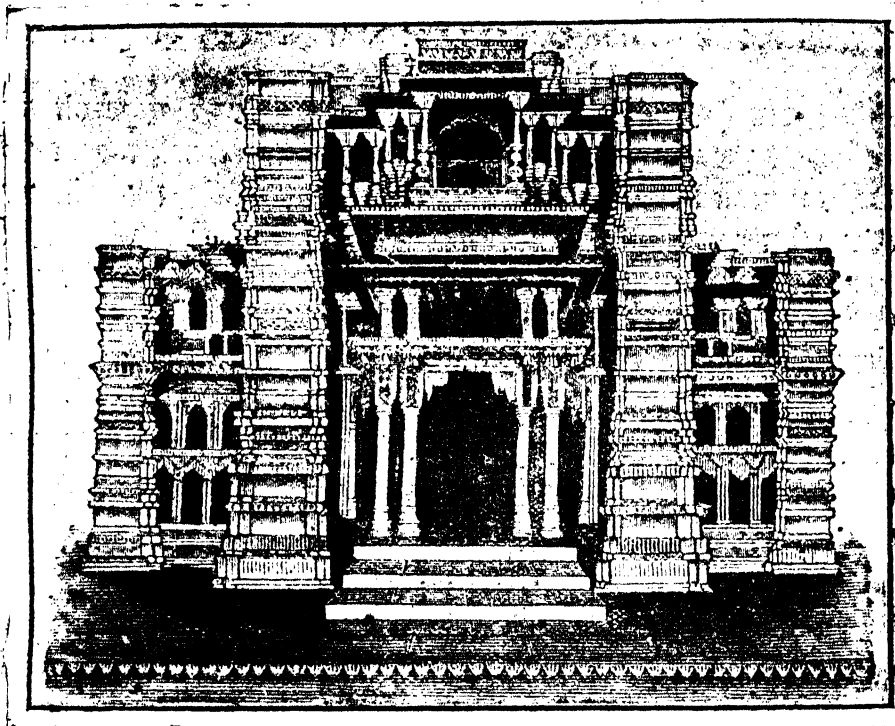
गोविंददेवजीका मंदिर–वृन्दावन कसबेमें प्रवेश करनेपर बांई ओर लाल पत्थरसे बना हुआ गोविंददेवजीका विचित्र मन्दिर देख पड़ता है। यह मन्दिर अपने ढबका एकही है, जिसकी शिल्पविद्या और बनावटको देख यूरोपियन लोग चकित हो जातेहैं। यद्यपि यह बहुत बड़ा नहीं है, तथापि इसका मेकदार प्रतिष्ठाके लायक है। बाहरी ओरसे ठीक नहीं जान-पड़ता कि किस तरहसे इसके पूरे करनेका इरादा किया गया था। इसके ऊपर ५ टावरथे, जो नष्ट हो गए हैं।

जगमोहनके पश्चिम बगलपर पूर्वमुखका निज मन्दिर है, जिसमें गोविंददेवजीकी मूर्ति थी और अब बिना प्राण प्रतिष्ठाकी देव मूर्तियोंका पूजन एक बंगाली ब्राह्मणकी ओरसे होताहै। मन्दिरके पीछे दोनों कोनोंके समीप शिखर टूटे हुए २ मन्दिर हैं।

जगमोहन लगभग १७५ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा तीन तरफ खुलाहुआ अपूर्व बनावटका है। इसका मध्यभाग पश्चिमसे पूर्वतक ११७ फीट और दक्षिणसे उत्तरतक १०५ फीट लम्बा है। जगमोहन ४ भागोंमें विभक्त है। मन्दिरके समीपके हिस्सेमें छतके नीचे उत्तर ओर दक्षिण बालाखाने हैं। इसके पूर्वका भाग बहुत ऊंचा उत्तर ओर दक्षिणको निकला हुआ है, जिसमें छतके नीचे बालाखाने हैं। इससे पूर्ववाले भागमें छतके नीचे दोमंजिले बालाखाने हैं, और इससे भी पूर्व अंतवाले भागमें पश्चिमके अतिरिक्त ३ ओर बालाखाने हैं। छतके नीचेके संपूर्ण बालाखाने इस ढबसे बनेहैं कि उनमें बैठकर बहुत आदमी जगमोहनके भीतरका उत्सव वा नाच ऊपरसे देख सकें। अङ्गरेजी सर्कारने ३८००० रुपया लगा कर, जिसमें जयपुरके महाराजाने ५००० रुपया दिया, हालमें इस मन्दिरको दुरुस्त करवाया है।

रूपस्वामीनामक एक वैष्णव जब नन्दगांवमें गौओंके लिये खिड़क बनवा रहे थे, उस समय खोदने पर एक मूर्ति मिली, जिसका नाम गोविन्ददेवजी कहा गया। वह मूर्ति पीछे वृन्दावनमें लाई गई। रूपस्वामी और सनातन स्वामी दोनों वैष्णवोंके प्रबन्धसे आंवेरके राजा मानसिंहने सन १५९० ईस्वीमें इस मन्दिरको बनवाया और इसमें गोविन्ददेवजीकी मूर्तिकी स्थापना की। पीछे दुष्ट औरङ्गजेबने इस मन्दिरके तोड़नेका हुक्म दिया, मन्दिरके ऊपरका हिस्सा तोड़ दिया गया। उस समय राजा मानसिंहके वंशके लोग गोविन्ददेवजीको आंवेरमें ले गए, सवाई जयसिंहने जब आंवेरको छोड़कर अपनी राजधानी जयपुर बनाई, तब जयपुरमें राजमहलके सामने एक उत्तम मन्दिर बनाकर उसमें गोविन्ददेवजीकी मूर्ति स्थापित की॥

वृन्दावनमें श्रीरङ्गजीका मन्दिर।
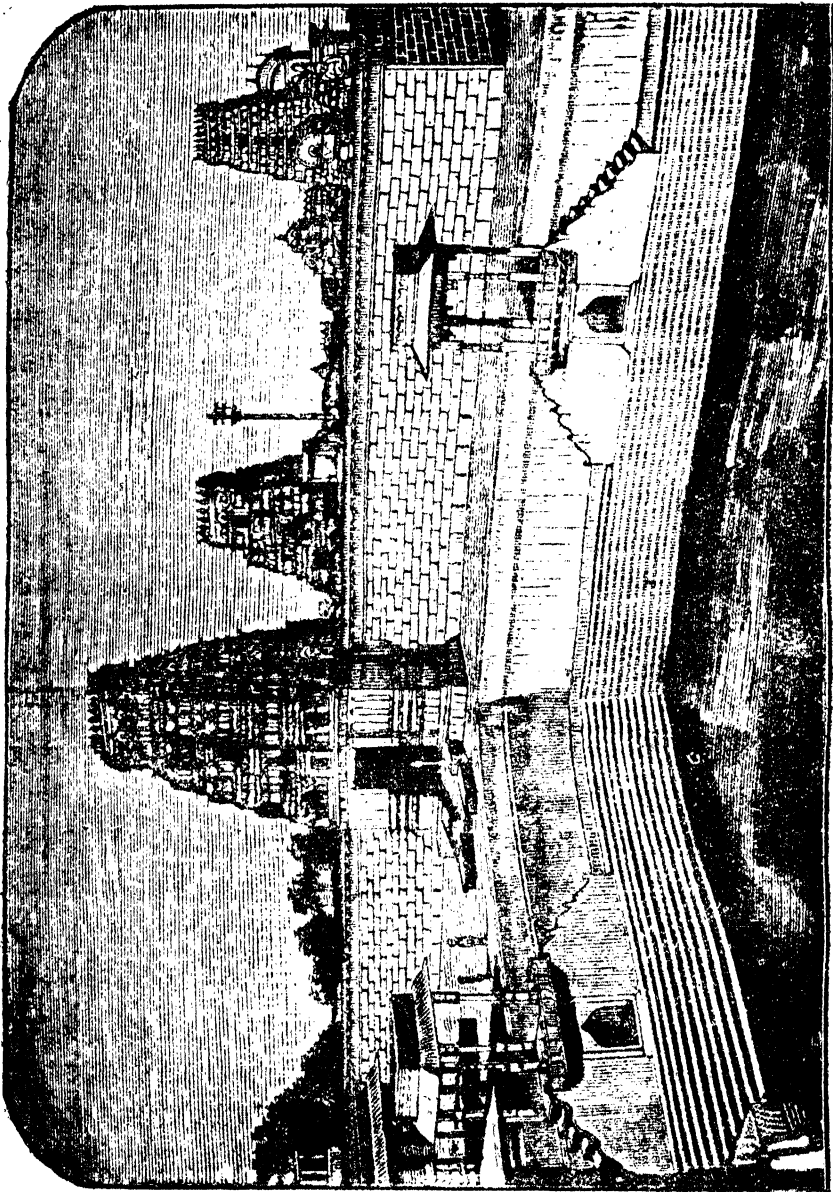
रङ्गजीका मन्दिर–यह मन्दिर द्रविड़ियन ढाचेका मथुरा और वृन्दावनके संपूर्ण मन्दिरोंसे विस्तारमें बड़ा और प्रसिद्ध है। यह पूर्वसे पश्चिमको लगभग ७७५ फीट लम्बा और उत्तरसे दक्षिण ४४० फीट चौड़ा पत्थरसे बना है। गोपुरोंमें चारोंओर मूर्तियां बनी हैं। मन्दिरसे पूर्व एक बड़ा घेरा है, जिसमें बैरागी लोगोंके रहनेके मकान हैं। और पश्चिम एक दूसरा घेरा है, जिसमें भोजन वा सदावर्त्तके समय कंगले एकत्र होते हैं तथा गाड़ी और एक्के खड़े होते हैं। प्रतिदिन लगभग १०० आदमी मन्दिरमें खिलाए जाते हैं। अनार्य लोग और नीच जातिके हिन्दू मन्दिरके कोटके भीतर नहीं जाने पाते हैं।

(नं० १) रंगजीका निज मन्दिर पत्थरकी ३ दीवारोंसे घेरा हुआ है। सबसे भीतरके घेरेके आंगनमें पूर्व मुखका छतदार मन्दिर है, जिसमें तीन देवढ़ीके भीतर रंगजीकी मनोहर मूर्ति है। जिसके समीप धातुविग्रह कई एक चल मूर्तियां हैं, जो उत्सवोंके समय फिराई जाती हैं. मन्दिरसे आगे उत्तम जगमोहन है, जिसके स्तंभोंमें पुतलियां बनाईहुई हैं और फर्शमें मार्बुलके उजले और नीले चौके लगे हैं समय समय पर मन्दिरका पट खुलता है। जगमोहनसे रंगजीकी झांकी होती है। आंगनके चारों बगलोंपर मन्दिर और मकान बने हैं, जिनके आगे दालान हैं। पूर्व और पश्चिमके दालानोंमें आठ आठ और उत्तर और दक्षिणके दालानोंमें चौवीस २ खंभे लगे हैं। प्रत्येक खंभोंमें आठ२ पुतली बनी हैं। निज मन्दिरकी परिक्रमा करते हुए इस क्रमसे देवता मिलते हैं। दक्षिण शिखरदार छोटे मन्दिरमें दाऊजी; एक मकानमें नृसिंहजी और सुदर्शन चक्र हैं, उत्तरके मकानोंमें बेणुगोपाल, सत्यनारायण, सनकादिक, राम, लक्ष्मण और जानकी, बदरीनारायण, शिखरदार छोटे मन्दिरमें रामानुजस्वामी और सेठजीके गुरु रंगाचार्य्य स्वामी हैं। जगमोहनके आगे ६० फीट ऊंचा ध्वजास्तंभ है, जिसपर तांबेका पत्तर जड़कर सोनेका मुलम्मा किया हुआ है। घेरेके पूर्वओर तिन मंजिला गोपुर है।

(नंबर २)–दूसरे घेरेमें चारों बगलोंपर अनेक मकान और मकानोंके आगे ओसारे हैं। पश्चिम–दक्षिणके कोनेके पास शिखरदार मन्दिरमें राम और लक्ष्मण और पश्चिमोत्तरके कोनेके पासवाले मन्दिरमें शयन रंगजी वा पौढ़ानाथ हैं। द्राविड़के श्रीरंगजीके मन्दिरकी रीतिसे इसमें मूर्तियां हैं। रंगजी शेषशायी भगवान शयन करते हैं। इनके पायताबे और मुकुट सोनहरे हैं। पासमें लक्ष्मी और ब्रह्मा हैं। आगे ३ उत्सव मूर्तियां हैं। मंदिरसे पूर्व ४८ स्तंभोंका दालान है। इस घेरेके पश्चिम बगल पर ९० फीट ऊंचा ७ खनका गोपुर और पूर्व बगल पर ८० फीट ऊंचा ५ खनका गोपुर है।

(३) बाहरवाले तीसरे घेरेमें चारों बगलोंपर कोठारियां और कोठरियोंके आगे ओसारे हैं। पूर्वओर मन्दिरके बाएं सरोवर, दहिने छोटा उद्यान, और दोनोंके मध्यमें गोपुरके सामने १६ स्तंभोंपर मुरब्बा मंडप है। घेरेके पूर्व बगलपर एक खनका गोपुर, पश्चिम बगलके मध्यभागमें ९३ फीट ऊंचा प्रधान फाटक और दोनों कोनोंके पास मकान हैं।

मथुराके मणिरामके पुत्र (पारिखजीके दत्तकपुत्र) सुप्रसिद्ध सेठ लक्ष्मीचन्द थे, जिनके अनुज सेठ राधाकृष्ण और सेठ गोविंददासने ४५००००० रुपयेके खर्चसे इस मन्दिरको बनवाया, जिसका काम सन् १८४५ ईसवीमें आरंभ और सन १८५१ में समाप्त हुआ। सेठोंने भोग, राग, उत्सव, मेला, आदि मन्दिर संबंधी खर्चके लिये ५३ हजार रुपये बचतका प्रबंध जो ३३ गांवोंसे आता है, करदिया। पश्चात् इन्होंने मन्दिरकी संपत्तिको अपने गुरु रंगाचार्य्य-

को दानपत्रद्वारा दे दिया । स्वामी रंगाचार्य्यने एक वसीयतनामा लिखकर मन्दिरके प्रबंधके लिये एक कमीटी नियतकर दी । कमिटी द्वारा मन्दिरका प्रबंध होता है । कमिटीके प्रधान सेठ राधाकृष्णके पुत्र सेठ लक्ष्मण दास सी० आई० ई० हैं ।

प्रतिवर्ष चैत्रमें मन्दिरके पास ब्रह्मोत्सवनामक मेला होता है, जिसको रथका मेला भी कहते हैं । चैत्र बदी २ से १२ तक रंगजीकी चल प्रतिमा प्रतिदिन भिन्न भिन्न सवारियोंपर
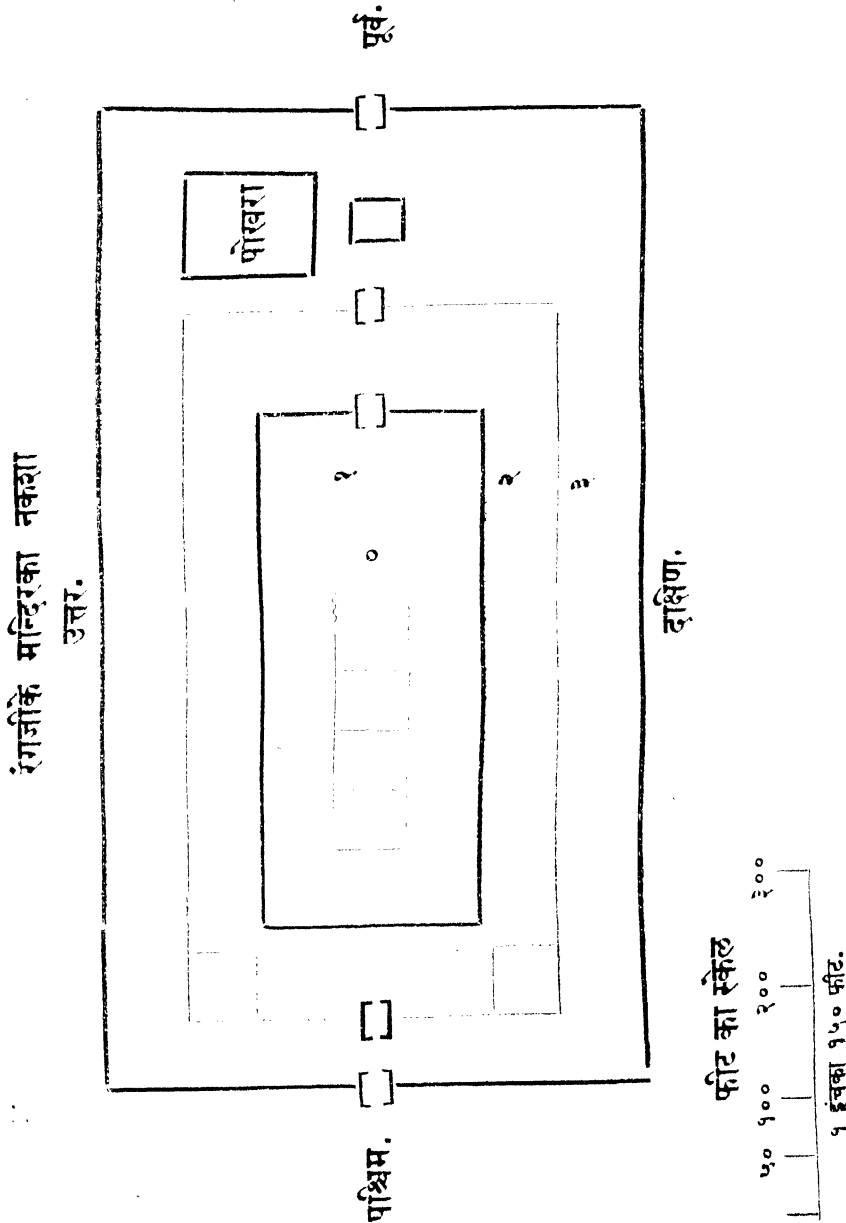
निकलती है और विश्रामवाटिकातक जाती है। सोनेका सिंह, सोनेकी सूर्य्यप्रभा, चांदीका हंस, सोनेका गरुड़, सोनेके हनुमान, चांदीका शेष, कल्पवृक्ष, पालकी, शार्दूल, रथ, घोड़ा, चंद्रप्रभा, पुष्पकविमान आदि नाना रंग, नानाभांतिकी सवारी निकलती हैं। काष्ठका सुन्दर रथ बुर्जसा ऊंचा बना है। पौष सुदी ११ से माघ बदी ५ तक रंगजीके मन्दिरमें वैकुण्ठोत्सव की बड़ी धूमधाम रहती है।

लाला बाबूका मन्दिर–रङ्गजीके मन्दिरके उत्तर बङ्गाली कायस्थ लाला बाबूका बनाया हुआ एक उत्तम मन्दिर है, जो सन १८१० ई० में बना। मन्दिर और जगमोहन पत्थरके हैं। इनके शिखर उजले मार्बुलके और फर्श उजले और नील मार्बुलके हैं। मन्दिरमें कृष्ण-चन्द्रकी श्यामल मूर्ति जामा और पगड़ी पहने हुई है, जिसके बाएं लहंगा पहने हुई राधा और दहिने ललिता खड़ी हैं। मन्दिरके आगे छोटी फुलवाड़ी और चारों तरफ दीवार हैं। यहां भोग रामकी बड़ी तय्यारी रहती है, बहुत लोग भोजन पाते हैं।

ग्वालियरके महाराजका मन्दिर–लाला बाबूके मन्दिरसे थोड़ा उत्तर २२५ फीट लम्बे और १६० फीट चौंड़े घेरेमें ग्वालियरके महाराजका उत्तम मन्दिर है, जिसको ब्रह्मचारीजीका मन्दिर भी कहते हैं। कोई कोई राधागोपालका मन्दिर कहते हैं। निज मन्दिरके ३ द्वार हैं। बी-चके द्वारसे राधागोपालकी दहिनेके द्वारसे हंसगोपाल,नारद और सनकादिककी, और मन्दिरके बाएंके द्वारसे नृत्यगोपाल और राधाकृष्णकी मनोहर मूर्तियोंकी झांकी होती है। मन्दिरके आगे लम्बा चौड़ा दोमंजिला उत्तम जगमोहन है, जिसमें ३६ जगह स्तंभ लगे हैं। किसी किसी जगह दो दो और किसी किसी जगह चार चार खंभे लगे हैं। संपूर्ण खंभोंमें मेहराब। जगमोहनका फर्श उजले और नीले मार्बुलके टुकड़ोंसे बना है, जिसपर रात्रिमें रासलीला होती है। ऊपर छतके नीचे चारों तरफ बालाखाने हैं। घेरेके चारों बगलोंपर मकान और उनके आगे दालान ह

ग्वालियरके मृत महाराज जयाजी रावने सन १८६० ई० में ४००००० रुपयेके खर्चसे ब्रह्मचारीजी द्वारा इस मन्दिरको बनवाकर मूर्तियोंकी प्राणप्रतिष्ठा करवाई। मन्दिरके आगे ब्रह्मचारीजीकी शिलामूर्ति है।

गोपेश्वर महादेव–ग्वालियरके मन्दिरसे उत्तर एक मंदिरमें लिंगस्वरूप गोपेश्वर महादेव हैं, जिनकी पूजा जल, पुष्प, बेलपत्र, आदिसे यात्रीलोग करते हैं।

वंशीवट–गोपेश्वरसे आगे जानेपर एक छोटा पुराना वटवृक्ष मिलता है, जिसके समीप एक कोठरीमें कृष्णकी मूर्ति और रासलीलाके चित्र हैं।

राम–लक्ष्मणका मन्दिर–आगे जानेपर यह मन्दिर मिलता है। मन्दिरका फर्श उजले और नीले मार्बुलका है, आंगनके तीनों बगलोंपर दोमंजिले मकान हैं। मथुराके सेठने रङ्गजीके मन्दिरसे पहिले इस मन्दिरको बनवाया।

गोपीनाथका मन्दिर–आगे जानेपर गोपीनाथका पुराना मंदिर मिलता है, जिसको कच्छवाले राय सीतलजीने (जो बादशाह अकबरके अधीन एक अफसर थे) सन १५८० ई० में बनवाया। मन्दिर सुन्दर है, परन्तु पुराना होनेसे इसके कंगूरे और जगह जगहके पत्थर गिरते जाते हैं। गोपीनाथके दहिनी ओर राधा और बाई ओर ललिताकी मूर्ति है।

इसके समीप गोपीनाथका नया मन्दिर है, जिसको सन् १८२१ ई० में एक बंगाली नन्दकुमार बोसने बनवाया। मन्दिर सुन्दर है। पूर्वोक्त पुराने मन्दिरके समान इसमें भी तीनों मूर्तियां हैं। दोनों मन्दिरोंमें बङ्गाली पुजारी और अधिकारी हैं।

शाह विहारीलालका मन्दिर—चीरहरन घाटसे पूर्व ललितनिकुंजनामक अति मनोहर राधारमणका मन्दिर है, जिसको लखनऊके शाह विहारीलालके पौत्र शाह कुन्दनलालने १०००००० रुपयेके खर्चसे बनवाया।

मन्दिर दक्षिणसे उत्तरको १०५ फीट लम्बा पूर्वमुखका है, जिसमें ४ कमरे बने हैं। दक्षिणके कमरेमें भगवानका सिंहासन और बैठकी इत्यादि शीशेकी सामग्री हैं इससे उत्तरके कमरेमें राधारमणकी सुन्दर मूर्ति है, जिसके उत्तर मुरब्बा जगमोहन बना है। जिसके चारोंओर तीन तीन दरवाजे हैं, जिनके बीचकी दीवारोंमें कई एक रंगके बहुमूल्य पत्थरके टुकड़ोंकी पच्चीकारी करके मूर्तियां बनाई गई हैं। मन्दिरकी तरफके तीनों द्वारोंके किवाड़ोंमें सुनहरे चित्र और सुनहरी ६ मूर्तियां और उत्तरवाले तीनों द्वारोंके किवाड़ोंमें सुनहरे काम और सुनहरे ६ मोर बनाए गए हैं। भीतरकी दीवार और फर्श मार्बुलके हैं। दीवारके ऊपर छतके नीचे १२ पुतली बनी हैं इससे उत्तरका चौथा कमरा तीनों कमरोंसे लम्बा है, जिसको वसंत कमरा कहते हैं। उत्सवोंके समय भगवानकी उत्सव मूर्तियां अर्थात् चल मूर्तियां इसमें बैठाई जाती हैं। इसमें कांच शीशेके उत्तम सामान भरे हैं। बड़े बड़े २१ झाड़, २०दीवालगीर, १३ बैठकी, दीवारके पास ५ बहुत बड़े और ४ इनसे छोटे आइने हैं, इनके अतिरिक्त छोटे बहुत दीवालगीर और बैठकी हैं। इसके पूर्व ५ दरवाजे हैं। सम्पूर्ण दरवाजे बन्द रहते हैं। सर्वसाधारण इसको नहीं देख सकते।

चारों कमरोंके पूर्व बगलपर बड़ा दालान है, जिसमें श्वेत मार्बुलके बड़े और मोटे १२ गोलाकार और १२ ऐठुएं नक्काशीके उत्तम स्तंभ लगे हैं। दालानकी दीवार और फर्शभी श्वेत मार्बुलसे बने हैं। दालानके उत्तर भागके फर्शपर श्वेत और नीले मार्बुलकी पच्चीकारी करके शाह विहारीलालके घरानेकी ९ मूर्तियां बनाई हुई हैं। (१) शाह विहारीलाल (२) इनके पुत्र गोविंदलाल (३) इनकी स्त्री (४) इस मन्दिरके बनानेवाले गोविंदलालके बड़े पुत्र शाह कुंदनलाल (५) कुंदनलालकी स्त्री (६) कुंदनलालके छोटे भाई फुंदनलाल (७) कुन्दनलालकी स्त्री (८) फुंदनलालके पुत्र माधवीशरण और (९ वीं) कुन्दनलालकी पुत्री। शाह विहारीलालकी संतानोंमेंसे अब कोई नहीं है। माधवीशरणकी पत्नी वर्तमान है; जो बहुधा यहांहीके मकानमें रहा करती हैं। दालानके ऊपर १७ पुतलियां और दोनों बाजुओंपर मार्बुलके बडे बड़े २ सिंह हैं। दालानके दक्षिण भागमें ५ हाथ लम्बे और ४ हाथ चौड़ी मार्बुलकी चौकी है।

दालानसे पूर्व मार्बुलका फर्श लगा है, जिसके दोनों ओर अर्थात् मन्दिरके दहिने और बाएं फव्वारेकी कल हैं। जिनके उत्तर और दक्षिण मार्बुलके छोटे छोटे एक एक मंडप हैं, जिनके पूर्व पत्थरके बनेहुए आठपहले दोमंजिले एक एक मंडप हैं। जिनके ऊपर आठ आठ पुतली बनी हैं।

चारों कमरोंके पश्चिम बगलपर पत्थरके उत्तम स्तंभ लगेहुए दोहरे दालान हैं, जिससे पश्चिम पत्थरकी सड़कें बान्धाहुआ छोटा उद्यान है। उद्यानसे पश्चिम यमुनाके किनारे तक बड़ा मकान है।

चीरहरण घाट–शाहजीके मन्दिरके पीछे यमुनाके किनारे पत्थरसे बांधा हुआ चीरहरण घाट है, जिसपर यात्रीगण स्नान करते हैं। घाटपर पाकरके वृक्षके समीप एक दूसरी तरहके कदंबका पुराना वृक्ष है, जिसकी शाखोंपर कपड़ेके कई एक टुकड़े लटकाए गए हैं।

मदनमोहनजीका मन्दिर–यह मन्दिर एक घाटके समीप दो वृक्षोंके नीचे ६५ फीट ऊंचा है। मन्दिरपर बहुतेरे सर्पोंके सिर बने हैं। मन्दिरमें अब शालग्राम और दो चरणचिह्न हैं। मदनमोहनजीकी मूर्तिको सनातन० स्वामी लाए थे, जो अब मेवाड़ प्रदेशके कांकरौलीमें हैं।

युगलकिशोरका मन्दिर–केशीघाटके समीप युगलकिशोरका मन्दिर है, जिसको सन १६२७ ई० में नंदकरण चौहानने बनवाया।

सेवाकुंज–बड़े घेरेके भीतर बहुत प्रकारकी लताओंका जंगल और तमाल आदिके बहुतेरे पुराने वृक्ष हैं। घेरेके भीतर एक छोटे मन्दिरमें श्रीकृष्ण आदिकी मूर्तियां हैं। समय समयपर मन्दिरका पट खुलता है। एक पुजारी बही लिये बैठा रहता है, जो यात्री दो चार आने देता है, उसका नाम वह अपनी बहीमें लिख लेताहै। दूसरे स्थानपर ललिताकुंडनामक बावली है, जिसमें एक ओर पानीतक सीढ़ियां हैं। इस कुंजमें सैकड़ों बन्दर रहते हैं, जिनको यात्रीगण चने वा मिठाई खिलाते हैं।

सेवाकुंजके दरवाजेसे बाहर एक मन्दिरमें बनविहारीजीकी मूर्ति है। आगे जानेपर एक मन्दिरमें दानविहारीजीका दर्शन होता है।

जयपुरके महाराजका मन्दिर– मथुरासे वृन्दावन जानेवाली पक्की सड़कके बाएं बगलपर वृन्दावन कसबेके बाहर यह बृहत् मन्दिर बनरहा है, जो तय्यार होनेपर भारतके उत्तम मन्दिरोंमेंसे एक होगा। इसका नाम जयपुरके वर्तमान महाराज सवाई माधवसिंहके नामसे माधव-विलास पड़ा है।

संक्षिप्त प्राचीनकथा–ब्रह्मवैवर्त पुराण—(कृष्णजन्मखंड, ११वां अध्याय) सत्ययुगमें केदारनामक राजा था, जो जैगीषव्य ऋषिके उपदेशसे अपने पुत्रको राज्य दे वनमें गया और बहुत कालपर्य्यंत तपस्या करके गोलोकमें चला गया। केदारकी वृन्दानामक पुत्री कमलाके अंशसे थी। उसने किसीसे विवाह नहीं किया और गृहको छोड वनमें जाकर तपस्या करने लगी। सहस्र वर्ष तपस्या करनेके उपरांत कृष्ण भगवान प्रकट हुए। वृन्दाने यही वर मांगा कि मेरे पति आप होइए। इस पर कृष्णने कहा अच्छा। तब वृन्दा ऐसा वर-दान ले कृष्णके सहित गोलोकमें गई। जिस स्थान पर वृन्दाने तप किया, वही स्थान वृन्दावन नामसे प्रसिद्ध हो गया।

पद्मपुराण—(पातालखंड, ६९ वां अध्याय) ब्रह्मांडके ऊपर अत्यन्त दुर्लभ नित्य रहने-वाला विष्णुभगवानका वृन्दावननामक स्थान है। वैकुंठ आदिक स्थान उसके अंशके अंश हैं। वही अपने अंशसे भूतलपर भी वृन्दावनहीके नामसे प्रसिद्ध है। वृन्दावन यमुनाके दक्षिण ओर है। इसमें गोपेश्वरनामक शिवलिंग स्थापित है। वृन्दावन नाशरहित गोविंददेवजीका परमप्रिय स्थान है।

(७० वां अध्याय) १६ प्रकृतियां कृष्णचन्द्रजीको अति प्रिय हैं। १ राधा २ ललिता ३ श्यामला ४ धन्या ५ हरिप्रिया ६ विशाखा ७ शैब्या ८ पद्मा ९ रूमणिका १० चारुचंद्रा-वती ११ चंद्रावली १२ चित्ररेखा १३ चंद्रा १४ मदनसुन्दरी १५ प्रिया और १६ वीं

चंद्ररेखा, इन सबोंमें वृन्दावनकी स्वामिनी राधाजी और चंद्रावली गुण, सुंदरता और रूप में समान हैं।

(७५ वां अध्याय) भगवानने कहा, वृन्दावनमें रहने वाले पशु पक्षी कीटादि सब देवता हैं। जो कोई इसमें बसते हैं, वह सब मरनेपर हमारे समीप जाते हैं। ५ योजन वर्गात्मकमें संपूर्ण वृन्दावन हमारा रूप है।

शिवपुराण-(८ वां खंड-११ वां अध्याय) मथुरा (देश) में गोपेश्वर शिवलिंग है जिसकी पूजासे गोपोंको अति सुख प्राप्त हुआ।

वाराहपुराण-(१४७ वां अध्याय) वृन्दावन विष्णुका सदा प्याराहै। जो मनुष्य वृन्दावन और गोविंदका दर्शन करतेहैं, उनकी उत्तम गति होतीहै।

(१५० वां अध्याय) वाराहजीने कहा, जहां हम (अर्थात् कृष्ण) ने गौओं और गोप बालकोंके साथ अनेक भांतिकी क्रीड़ा की है, वह वृन्दावन क्षेत्र है। जो वृन्दावनमें प्राण त्यागता है, वह विष्णुलोकमें जाता है। वृन्दावनमें जहां केशी असुर मारा गया, वहां केशीतीर्थ है, उसमें स्नान करनेसे शतवार गंगास्नान करनेका फल होता है। और वहां पिंडदान देनेसे गयाके समान पितरोंकी तृप्ति होती है। वृन्दावनमें द्वादशादित्य तीर्थ है। वहांही हमने कालिय सर्पका दमन कियाथा और सूर्य्यको स्थापित किया।

श्रीमद्भागवत—(दशमस्कन्ध-११ वां अध्याय) जब गोकुलमें बड़े उत्पात होने लगे, तब गोकुलवासी वृन्दावनमें आबसे।

(१६ वां अध्याय) वृन्दावनके कालीदहमें कालीनागके रहनेसे उसका जल खौलता था। वहां कोई वृक्ष नहीं ठहर सकता, केवल एक कदमका अविनाशी वृक्ष वहां था। एक समय गरुड़ अपने मुखमें अमृत लिए हुए उस वृक्ष पर आ बैठा, उसकी चोंच से अमृतका एक बूंद वृक्षपर गिर पड़ाथा, इसलिये उसपर कालीनागका विष प्रवेश नहीं करता। एक दिन कृष्ण जी कदमके वृक्ष पर चढ़ कालीदहमें कूद पड़े। काली नाग क्रोध करके दौड़ा। कृष्णने उसके शिरका मर्दन करके काली सर्पको कालीदहसे निकाल दिया। उसी दिनसे वहांका यमुनाजल अमृतके समान हो गया (आदि ब्रह्मपुराणके ७८ वें अध्याय में भी यह कथा है)।

(२२ वां अध्याय) कृष्णजी वंशविट जाकर ग्वाल बालोंके साथ गौ चराने लगे।

ब्रह्मवैवर्त्तपुराण—(कृष्णजन्मखंड -२७ वां अध्याय) व्रजकी गोपियोंने एक मास दुर्गाके स्तव पढ़ कर व्रत किया और व्रत समाप्तिके दिन नाना विधि और नाना रंगके वस्त्रोंको यमुना तटमें रखकर स्नानके लिये जलमें नंगी पैठीं, और जलक्रीड़ा करने लगीं। कृष्णके सखाओंने उन वस्त्रोंको लेकर दूर स्थानपर रख दिया। श्रीकृष्ण कुछ वस्त्र ग्रहण करके कदम्बके वृक्षपर चढ़ गए। गोपीगण विनयपूर्वक कृष्णसे बोलीं कि वस्त्र देदो। उस समय जब श्रीदामागोप वस्त्रोंको दिखाकर फिर भाग गया, तब राधाकी आज्ञासे गोपियां जलसे बाहर हो गोपोंके पीछे धावती हुई वस्त्रोंके समीप पहुंचीं। जब गोपोंने डरकर कृष्णके हाथमें वस्त्रोंको दे दिया, तब कृष्णने संपूर्ण वस्त्रोंको कदम्बके वृक्षकी शाखोंपर रख दिया। जब राधाने कृष्णकी स्तुति की, तब गोपियोंके वस्त्र मिल गए। वे व्रत समाप्त करके अपने अपने गृह चली गईं। (श्रीमद्भागवत-१० वें स्कंधके २२ वें अध्यायमें भी चीर हरणकी कथा है)।

नन्दगांव ।

मथुरासे २४ मील नन्दगांव एक छोटी बस्ती है । मथुरासे छातागांवतक १८ मील पक्की सड़क है । छाता मथुरा जिलेमें एक तहसीलीका सदर स्थान है, जिसमें सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ६०१४ मनुष्य थे । इसके बाजारमें पूरी मिठाई मिलती हैं । उससे आगे खदिरवन होती हुई ६ मील कच्ची सड़क है । एका सर्वत्र जाते हैं । नंदगांव एक छोटे टीलेपर बसा है । मकानोंकी छत मट्टीसे पाटी हुई हैं । यहांके मन्दिरमें कृष्ण, बलदेव और नन्द, यशोदाकी मूर्तियां हैं । टीलेके नीचे पत्थरसे बना हुआ पामरीकुण्डनामक पक्का सरोवर है । बस्तीके आसपास करीलका जंगल लगा है ।

बरसाने ।

नंदगांवसे बरसाने तक ४ मील लम्बी कच्ची सड़क है । बरसाने एक अच्छी बस्ती लंबी पहाडीके छोरके नीचे बसी है, जिसके पासही ऊपर लाडिली (राधा) जीका बड़ा मन्दिर है, जिसमें राधा और कृष्णकी मूर्तियां हैं । उससे नीचे एक मन्दिरमें नन्दजी, उससे नीचे एक मन्दिरमें वृषभानुके पिता महाभानु और महाभानुकी पत्नी, और उससे भी नीचे भूमितल पर एक मन्दिरमें राधाके पिता वृषभानु और माता कीर्तिदा और कई भ्राताओंकी मूर्तियां हैं । बरसानेमें कई पक्के मकान हैं । बस्तीसे बाहर वृषभानुकुण्डनामक पक्का सरोवर है, जिसके समीपके मकान उजड रहे हैं । बरसाने और गोवर्द्धनमें देशी लोग कृष्णका नाम छोडकर केवल राधाकी जय पुकारते हैं ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा-(ब्रह्मांडपुराण-उत्तरखंड. राधाहृदय दूसरा अध्याय) श्रीराधा सृष्टि करनेकी इच्छासे साकार होकर नारीरूपसे प्रकट हुई । पीछे उसने अपने हृदयसे सर्वान्तर्यामि एक पुरुषको उत्पन्न किया, जो अंगुलके एक पोरके बराबर कोटिसूर्य्यके तुल्य प्रकाशवान था । बालकने एकार्णव जलमें पीपलके एक पत्तेको बहता हुआ देख उस पर निवास किया । मार्कंडेय मुनिने उस बालकके मुखमें प्रवेश कर भीतर ब्रह्माण्डको देखा । उस पुरुषकी नाभिसे कमल उत्पन्न हुआ, जिसमें अनंतकोटि ब्रह्मा उपजे और सब अपने अपने ब्रह्मांडके सृष्टिकर्त्ता हुए ।

(४ था अध्याय) उस पुरुषने जब राधासे कहा कि हे ईश्वरी! तुम हमारे साथ कुलाचार (प्रसंग) करो, तब देवी बोली कि रे दुराचार! तुमने हमारे अंगसे जन्म लेकर हमसे पुंश्चली के समान वाक्य कहा, अतएव मनुष्यजन्म लेने पर पुंश्चलीभावसे तुम्हारा मनोरथ सिद्ध होगा वासुदेवने भी राधाको शाप दिया कि हे अधमे ! प्राकृत मनुष्यको तुम प्राप्त होगी अर्थात् प्राकृत मनुष्य तुम्हारा पाणिग्रहण करेगा (५ वां अध्याय) प्रलयके अंत होने पर भगवान अपने परम धाम गोलोकको गए और सहस्रों रमणीगणों सहित रम्यमाण होकर असंख्य वत्सर बिताए ।

(६वां अध्याय) यमुनाके पास गोवर्द्धन पर्वतके निकट, जहां ब्रह्मा करके स्थापित राधाकी अष्टभुजी प्रतिमा थी, उसके समीप गोकुल नगरमें ललिता आदि स्त्रियोंने जन्मग्रहण किया । गोकुलका राजा गोपोंका स्वामी महाभानुनामक गोप था, जिसके वृषभानु, रत्नभानु, सुभानु प्रतिभानु ४ पुत्र थे, ज्येष्ठ पुत्र वृषभानु राजा हुआ, जिसने कीर्तिदा नाम्नी स्त्रीसे अपना विवाह

किया। जब बहुत काल बीतनेपर भी वृषभानुको कोई पुत्र नहीं हुआ, तब उसने ऋतु मुनिसे मंत्र ग्रहण कर यमुना तीर कात्यायनीके निकट जाकर जपका अनुष्ठान किया । कात्यायनी प्रगट हुई और वृषभानुके हाथमें एक डिंब देकर अंतर्द्धान हो गई । राजा उस डिंबको ले अपने गृहमें आया। (७ वां अध्याय) जब वृषभानुने कीर्तिदाके हाथमें उस डिंबको देदिया, तब वह दो खंड हो गया; जिससे चैत्र शुक्ल नौमी को अयोनिसंभवा राधा प्रकट हुई। परमाराध्या देवी उग्र तपस्या द्वारा राधिता होकर राध्य हुइ थी, इस कारण वृषभानुने उस कन्याका नाम राधा रक्खा।

(८ वां अध्याय) एक समय सनत्कुमार गोलोकमें कृष्णके द्वारपर गए। द्वारपालने कहा कि इस समय श्रीकृष्ण राधाके साथ गोप्य स्थानमें हैं, थोड़ा विलंब कीजिए तब दर्शन होगा, महर्षिने शाप दिया कि तुम अपने स्वामी और पुरवासियों सहित पृथ्वीतलमें जाकर मनुष्य जन्म ग्रहण करो। कृष्णके निर्देशसे संपूर्ण गोलोक—वासियोंने पृथ्वीमें जाकर कुरु, वृष्णि, यदु, अंधक, दाशार्ह, भोज और बाह्लीक क्षत्रिय कुलमें जन्म लिया। दूसरे सहस्र सहस्र गोप गोपियोंने गोकुलमें जन्मग्रहण किया। गोकुलमें राधाके अंशसे वृन्दा (तुलसी) और बर्ब्बरी जन्मी; स्वयं राधाने कीर्तिदाके गृह जन्म लिया। कृष्ण अपने अंशसे कोशल राज्यमें जटिलाके गर्भसे जन्म लेकर आयान नाम से प्रसिद्ध हुए। जटिलाके तिलक और दुर्मद दो पुत्र और कुटिला, प्रभाकरी तथा यशोदा ३ पुत्री हुईं। यशोदा नंद के साथ व्याही गई।

(१३ वांअध्याय) राजा वृषभानुने राधाकी यौवन अवस्था देख कर उसके विवाहके निमित्त कोशल राज्यमें माल्यवान गोपके गृह दूत भेजा। उस समय राधा यमुनातीर जाकर कृष्णकी आराधना करने लगी। जब माधव प्रकट हुए, तब राधा बोली कि हे प्रभो ! मेरा पिता आयान से मेरा विवाह करना चाहता है, तुम अनुग्रह करके मुझसे विवाह करो। भगवान् बोले कि हे राधे ! हमारा मातुल आयान है, हम माता यशोदाके सहित उसके गृह जायंगे । जब मातुल आयानके अंकमें बैठ वृषभानुके गृह पहुंचेंगे, तब वहां हम उसको नपुंसक करदेंगे। तुमको हम एक और वरदान देते हैं कि हमारे भक्त हमारे नामके पहिले तुम्हारा नाम लेंगे और जो हमारे नामसे पीछे तुम्हारा नाम लेगा, उसको भ्रूणहत्याका पाप लगेगा (१४ वां अध्याय) वृषभानुने अपने गृहमें राधाके विवाहका महोत्सव किया। (१५ वां अध्याय) नंद निमंत्रित होकर यशोदा, कृष्ण, बलराम, उपनंद आदि गोपोंके सहित अपने श्वशुर माल्यके गृह गए। गोपराज माल्य अपने पुरसे बरातके साथ वृषभानुके नगरमें पहुंचे। आयान कृष्णको गोदमें लिए हुए रथसे उतरा। वृषभानुने आयानको कन्यादान करनेकी इच्छा की, उस समय आयानके गोदमें स्थित श्रीकृष्णने अति रोषसे उसका पुरुषत्व हर लिया, अर्थात् आयानको नपुंसक कर दिया। विवाह कालमें कृष्णने आयानको पीछे रख अपना हाथ पसार प्रतिग्रह—सूचक वाक्य कहा। इसके अनन्तर वृषभानुने बहुत वस्त्र, भूषण, रत्न, सेना और अनेकसंख्याक गर्दभ, ऊंट और महिष और एक शत ग्राम अपने जामाता आयानको यौतुकमें दिए। गोपराज माल्य वर और कन्याके साथ अपने ग्राममें आया।

(१६ वां अध्याय) कृष्णचंद्रने वेणुध्वनि करके राधाको बुलाया और निभृत निकुंजमें राधा सहित रमण करने लगे। आयानकी माता जटिलाने राधाको सर्वत्र ढूंढा; जब वह न मिली

तब उसने खोजनेके लिये आयानको भेजा। कृष्णने उस समय माया करके कालीका रूप धारण किया। जब आयाननें देखा कि राधा कालिकाको पूज रही है, तब अति प्रसन्न हो अपनी माता और गोपियोंको लाकर राधाका सुचरित्र दिखलाया।

(२४ वां अध्याय) जब सब गोकुलवासी राधाका कृष्ण सहित सर्वदा गुप्त स्थानमें सहवास और परस्पर लीलानुराग देखकर परस्पर काना कानी करके गुप्त भावसे राधाके कलंक की घोषणा करने लगे, तब राधाने श्रीकृष्णसे कहा कि हे प्रभो ! मुझसे यह कलंक सहा नहीं जाता, मैं विष खाकर प्राण त्याग करूंगी। तब कृष्ण राधाको धैर्य देकर अपनी माया विस्तार कर कपट रोगी बनके अचेत हो गए और दूसरे रूपसे कपटवैद्य बनकर नन्दके गृह गए। वैद्य-राज, नन्दसे बोले कि एकपतिवाली स्त्रीसे एकशत छिद्रवाले घड़ेमें नदीका जल मँगाओ, उस जलसे कृष्ण चैतन्य होंगे। नन्दने बहुत पतिव्रता स्त्रियोंको शत छिद्रवाले घडेको देकर यमुना जल लानेको भेजा। जब जल भरने पर कुंभका जल छिद्रोंद्वारा गिर गया, स्त्रियां लज्जायुक्त हो बालू पर घडेको रखकर भाग गई (२५ वां अध्याय) तब नन्दने कोशलके अधिकारमें राधाके श्वशुरके गृह दूत भेजा। आयानकी माता जटिला राधा आदि अपनी पुत्रियों और बहुत पतिव्रता स्त्रियोंको साथ ले नन्दके गृह आई। समस्त पतिव्रता स्त्रियां क्रमानुसार एक एक यमुनामें जाकर कुंभ पूर्ण करके चलीं, परन्तु शत छिद्रवाला कुंभ जलसे शून्य हो गया। जब सब स्त्रियां लज्जित हो भाग गई, तब वैद्यराजने कहा कि हे नन्द ! वृषभानुकी पुत्री राधा जो माल्यके पुत्रसे व्याही गई है, एक पतिकी पतिव्रता ह, वह यमुनासे जल लावेगी तभी कल्याण होगा। नन्द बोले कि हे राधे ! तुम कुम्भमें जल लाकर मुझको विपत्तिसे मुक्त करो। राधाने यमुनामें जाकर कुम्भको जलसे पूर्ण किया। कृष्णने कुम्भके छिद्रोंको अनेक रूपधरके आच्छादित कर दिया। राधाने जलपूर्ण घटको नन्दके गृह लाकर वैद्यराजको देदिया। वैद्यने इस औषधिसे कृष्णको सचेत करदिया। संपूर्ण लोग राधाको साधु साधु कहने लगे। (२६ वां) श्रीकृष्ण राधा सहित निभृत निकुञ्जमें अनुदिन विहारासक्त हो काल बिताने लगे।

देवी भागवत—(नववां स्कन्ध, पहिला अध्याय) गणेशकी माता दुर्गा, राधा, लक्ष्मी-सरस्वती और सावित्री ये ५ मूल प्रकृति हैं। ये पांचो प्रकृतिके पूर्णावतार हैं। इनके अंशसे गंगा, काली, पृथ्वी, षष्ठी, मंगला, चंडिका, तुलसी, मनसा, निद्रा, स्वधा, स्वाहा, दक्षिणा आदि स्त्रियां हैं (५० वां अध्याय) विना राधाकी पूजा किए कृष्णकी पूजाका अधिकारी कोई नहीं हो सकता।

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण–(ब्रह्मखंड,४९ वां अध्याय) एक दिन राधानाथ गोलोकके वृंदावनमें स्थित शतशृंग पर्वतके एक देशमें विरजा गोपीके साथ क्रीडा करते थे। ४ दूतियोंने इस विषय को जानकर राधिकाको खबर दी। राधा क्रोध करके उस स्थान पर गई। कृष्णचन्द्रका सहचर सुदामा राधाका आगमन जान कृष्णचन्द्रको सावधान करके गोपगणोंके साथ भाग गया। कृष्णजी राधिकाके भयसे विरजाको छोडकर अंतर्हित हो गए। विरजा राधाके भयसे नदी होकर गोलोकके चारों ओर बहने लगी। कृष्ण अपने आठों सखाओंके साथ राधाके पास आए। राधाने सुदामाको शाप दिया कि तू शीघ्र ही असुर योनि पावेगा। सुदामाने भी राधाको शाप दिया कि तू गोलोकसे भूलोकमें जाकर गोपकन्या हो १०० वर्ष कृष्णके विरहमें बितावेगी। सुदामा शंखचूड असुर हो शिवके हाथसे मरकर फिर गोलोंकमें गया। श्रीराधा

वाराहकल्पमें गोकुलके वृषभानु गोपकी कन्या हुई। १२ वर्ष बीतने पर वृषभानुने आयान गोपके साथ राधाके विवाहका सम्बन्ध किया। राधा अपनी छाया रखकर अंतर्द्धान हुई। छायाके साथ आयानका विवाह हुआ। आयान यशोदाका सहोदर भ्राता और गोलोकके कृष्णका अंश था। राधा अपने कृष्णकी गोदमें बास करती और छायारूप आयानके गृह रहती थी।

(कृष्णजन्मखंड, ५० वां अध्याय) पिता जिस प्रकारसे कन्याको प्रदान करे, विधाताने उसी तरह राधिकाको कृष्णके करमें समर्पण किया। राधा अपने गृहमें रहती थी किन्तु प्रतिदिन वृन्दावनके रासमंडलमें हरिके सहित क्रीडा करती थी।

गोवर्द्धन।

बरसानेसे १४ मील गोवर्द्धनतक और गोवर्द्धनसे १४ मील मथुरातक पक्की सड़क है। मथुरा तहसीलमें गोवर्द्धन पहाडीके छोरके समीप गोवर्द्धन गांव है, जहां मानसी गंगाके आस पास बहुतेरे पक्के मकान और देवमन्दिर बनेहैं, जिनमें हरिदेवका मन्दिर प्रधान है, जिसको आंबेरके राजा भगवानदासने सोलहवीं सदीमें बनवाया था।

मानसी गंगा बहुत बड़ा लंबा तलाब है, जिसके चारों बगलों पर नीचेसे ऊपरतक आंबेरके राजा मानसिंहकी बनवाई हुई पत्थरकी सीढियां हैं। मथुराके यात्री कार्त्तिककी अमावास्याकी रात्रिमें मानसी गंगा पर दीपदान करते हैं। यहांके समान दीपोत्सव किसी तीर्थमें नहीं होता। तालाबके चारों ओरकी सीढ़ियां नीचेसे ऊपर तक यात्रियों और दीपोंसे परिपूर्ण हो जाती हैं। बहुत लोग मानसी गंगाकी परिक्रमा करते हैं।

गोवर्द्धन पहाड़ी ४ मीलसे अधिक लंबी है, परन्तु इसकी चौंड़ाई और उंचाई बहुत कम है। औसत उंचाई चारों ओरके मैदानसे लगभग १०० फीटसे अधिक नहीं है। कार्त्तिककी अमावास्याके दिन गोवर्द्धनकी परिक्रमाकी बड़ी भीड़ रहती है। यात्रीगण गिरिराज (गोवर्द्धन) तथा राधेकी पुकार बड़े शब्दसे करते हैं। परिक्रमाकी सड़कके किनारों पर सैकड़ों कंगले बैठते हैं। भरतपुर राज्यके जाटगग जूथके जूथ परिक्रमा करते समय उन्मत्त होकर गाते बजाते हैं। मार्गमें कुसुम-सरोवर, राधाकुण्ड आदि कई सरोवर मिलते हैं।

गोवर्द्धनके समीप भरतपुरके राजाओंकी अनेक छत्तरी (समाधि मन्दिर) हैं, जिनमें बलदेवसिंह (सन १८२५ में मरे), सूर्य्यमल और सूर्य्यमलकी पत्नीकी छत्तरी उत्तम हैं। इनके अतिरिक्त रणधीरसिंह (१८२३ में मरे) आदिकी छत्तरियां हैं। कई छत्तरियोंमें नकाशीके उत्तम काम हैं। सूर्य्यमलके समाधि-मन्दिरको उसकी मृत्युके बाद तुरतही सन १७६४ में उसके पुत्र जवाहिरसिंहने बनवाया। गोवर्द्धनसे १० मील पश्चिम दीगमें भरतपुरके महाराजका किला और मकान है। यहांसे दीगको पक्की सड़क गई है।

मैं मथुरासे एक्के पर गया और पहली रात्रिमें बरसाने और दूसरी तथा तीसरी रात्रिमें गोवर्द्धनमें निवास कर मथुराको लौट आया।

संक्षिप्त प्राचीनकथा—वाराहपुराण—(१५८ अध्याय) मथुराके पश्चिम भागमें २ योजन पर गोवर्द्धन क्षेत्र है। जो पुरुष मानसी गंगामें स्नान करके गोवर्द्धन पर्वतमें हरिजीका दर्शन और अन्नकूटेश्वरका दर्शन प्रदक्षिणा करता है, वह फिर संसारमें जन्म नहीं पाता।

श्रीमद्भागवत—(दशम स्कन्ध, २४ वां अध्याय) व्रजके गोप परंपरा नियमके अनुसार इन्द्रके यज्ञके निमित्त तय्यारी करने लगे। कृष्णचन्द्रने कहा कि इन्द्रको छोड़कर गोवर्द्धन पर्वत-

की पूजा करो। सब व्रजवासियोंने उनका वचन स्वीकार किया। वह इन्द्रपूजाकी सामग्रीसे गोवर्द्धन पर्वतकी पूजा कर अपने गृहको लौट आए (२५ वां अध्याय) इन्द्रने अपनी पूजाका लोप देख व्रजवासियों पर कोप किया और प्रलय करनेवाले मेघोंको आज्ञादी कि तुम शीघ्र घोर जलधारा बरसा कर गौओं सहित व्रजका संहार करदो। मेघसमूह व्रजमें जाकर मूसलधार जल बरसाने लगे। जब गोप गोपी सब कृष्णके शरणमें गए, तब कृष्णचन्द्रने गोवर्द्धन पर्वतको एक हाथसे उखाड़ कर ऊपर उठा लिया। जब व्रजके सब लोग गौओंके साथ ७ दिन पर्य्यंत पर्वतके नीचे रहे, तब इन्द्रने कृष्णका प्रभाव देख विस्मित हो मेघोंको निवारण किया। सब गोप गोपी गौओंके साथ बाहर निकले। कृष्णने गोवर्द्धन को जहांका तहां रख दिया (२७ वां अध्याय) इन्द्रने एकान्त स्थानमें आकर कृष्णकी स्तुति कर अपना अपराध क्षमा कराया। सुरभी गौने अपने दुग्धसे और ऐरावत हस्तीने आकाशगंगाके जलसे श्रीकृष्णका अभिषेक किया। इन्द्रने देवर्षियोंके सहित कृष्णका अभिषेक कर उनका नाम गोविंद रक्खा। (यह कथा आदि ब्रह्मपुराणके ७९ वें और ८० वें अध्यायमें भी है)।

गोकुल।

मथुरासे ६ मील दक्षिण पूर्व यमुनाके बांए या पूर्व किनारे पर मथुरा जिलेमें गोकुल एक बस्ती है। मथुरासे वहां अच्छी सड़क गई है। गोकुलके मन्दिर बहुत पुराने नहीं हैं। यमुनाका घाट पत्थरसे बंधा है। ३०० वर्षके अधिकसे यह वल्लभाचार्य्यसंप्रदाय अर्थात् गोकुली गोस्वामियोंका प्रधान स्थान हुआ है। करीब सन १५२० इस्वीमें इस मतके नियत करनेवाले वल्लभ स्वामीने यहां और उत्तरी भारतमें उपदेश दिया कि जीवके मोक्षके लिये शरीरको क्लेश देनेकी आवश्यकता नहीं है। नंगे, भूंखे और एकांतमें रहनेसे ईश्वर नहीं मिलते। सुख ऐश्वर्य्यमें रहकर पूजनेसे ईश्वर मिल कसते हैं। वल्लभ स्वामी कृष्णका पूजन करते थे। इस संप्रदायके लोग प्रतिदिन ८ वार कृष्णकी बालमूर्तिकी पूजा करते हैं। इनका मत है कि जहांतक हो सके, सुखसे कृष्णका पूजन करते हुए जन्म बिताना चाहिए। इस संप्रदायके हजारों यात्री खास कर पश्चिमी हिन्दुस्तानसे यहां आते हैं। उन्होंने बहुतेरे मन्दिर बनवाये ह।

महावन–गोकुलसे लगभग १ मील दूर महावन (पुराना गोकुल) स्थित है। यह मथुरा जिलेमें एक तहसील का सदर स्थान एक छोटा कसबा और तीर्थस्थान है। सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय महावनमें ६१८२ मनुष्य थे, अर्थात् ४४७५ हिन्दू, १७०४ मुसलमान और ३ दूसरे। पहिले यहां बड़ा जंगल था। बादशाह शाहजहांने सन १६३४ ई० में यहां शिकारमें ४ बाघोंको मारा था। अब चारों ओरका देश साफ है। पुराने समय में यह गोकुल नाम से प्रसिद्ध था। यहां पुराने गढकी जगह करीब ३० एकड में देख पड़ती है, जिस पर गोकुलकी तबाही अर्थात् ईटे और मट्टीका एक टीला है।

महावन में अधिक हृदयग्राही नन्द का महल है, जिसके एक भाग पर मुसलमानों ने औरंगजेबके राज्य के समय हिन्दू और बौद्ध मन्दिरों के असबाबोंसे एक मसजिद बनवाई; जिसमें १६ स्तंभोंके ५ कतार हैं, इससे इसका नाम अस्सीखम्भा पड़ा है। नन्दके महलमें कृष्णकी बाललीला दिखाई गई हैं। पायेदार मकानमें पालना है। दीवारके समीप चांदनीके नीचे श्यामलस्वरूप कृष्णचन्द्रकी बालमूर्ति है। दधिमथनके लिये पत्थरका भांडा आर

मथानी रक्खी हैं। छत्त के ऊपर से यमुना देख पडती हैं। भादों बदी अष्टमी को कृष्णजन्म के उत्सव में यहां हजारों यात्री आते हैं।

सन १०१७ ई० में गजनी के महमूद ने महावन कसबे को लूटा था। कहा जाता है कि उस समय यहांके राजा ने अपनी स्त्री और लडकों को मार कर अपने को भी मार डाला। (गोकुल की प्राचीन कथा मथुरा की कथा में है)

महावन से ६ मील बलदेवा गांव में बलदेव जी का प्रसिद्ध मन्दिर है। मन्दिर के निकट क्षीरसागर नामक सरोवर है। यहां वर्ष में दो मेला होते हैं। सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय बलदेवा गांव में २८३५ मनुष्य थे। यहां एक गवर्न्मेन्ट स्कूल है।

बारहवां अध्याय।

राजपूताना, भरतपुर, करौली, बांदीकुंई, जंकशन, अलवर, जयपुर, और टोंक।

राजपूताना।

मथुरा की छावनी के स्टेशन से २३ मील दक्षिण, थोडा पूर्व अछनेरा में रेलवे का जंकशन है। अछनेरा से १७ मील पश्चिम भरतपुर का रेलवे स्टेशन है। अछनेरा से थोडाही पश्चिम जाने पर पश्चिमोत्तर प्रदेश छूट कर राजपूताना मिल जाता है।

राजपूताने के पश्चिम में सिंध देश, पश्चिमोत्तर में बहावलपुर का राज्य, पूर्वोत्तर में पंजाब और पश्चिमोत्तर देश, दक्षिण- पूर्व और दक्षिण ग्वालियर और दूसरे देशी राज्य ह।

अर्वली पर्वत राजपूताने को काट कर एक लाइन में करीब करीब पूर्वोत्तर और पश्चिम दक्षिण गया है। पश्चिम दक्षिण की सरहद पर आबू पर्वत है। देश के पश्चिमोत्तर का हिस्सा बालूदार है, जो उपजाऊ नहीं है। उसमें पानी कम होता है। बहुत पश्चिम और पश्चिमोत्तर बीरान बालूदार पहाडियां हैं, जिनके ऊपर के हिस्से वायु से उड़गए हैं। पूर्वोत्तर की ओर का हिस्सा उन्नति पर है। पूर्व दक्षिण के हिस्से में फैली हुई पहाडियों का सिलसिला, चट्टानी देश, उपजाऊ, खाढी और ऊंची भूमि है। पश्चिमोत्तर हिस्सेमें केवल एक लूनी नदी है: जो अज-मेरकी झीलसे निकलकर कच्छके रनमें गिरती है। दक्षिण—पूर्वके हिस्सेमें चंबल, बनारस साबर्मती और मही नदी हैं। राजपूतानेमें स्वाभाविक मीठे पानीकी झील कोई नहीं है। बनाई हुई कई झीलें हैं। सांभर इत्यादि कई लोने पानीकी झीलें हैं। पश्चिममें केवल १४ इंच वर्षा होती है। दक्षिण—पूर्वकी औसत वर्षा करीब ३४ इंच है। जयपुर—राज्यमें २४ इंच बर्षा बरसती है।

राजपूतानेके प्रायः मध्यमें अजमेर और मेरवाडा दो अंगरेजी जिले हैं। और उनके चारों ओर छोटे राज्योंको छोडकर १८ प्रसिद्ध देशी राज्य हैं।

राजपूतानेके देशी राज्योंमें (१) उदयपुर, (२) जयपुर, (३) जोधपुर, (४) बीकानेर, (५) जैसलमेर, (६) सिरोही, (७) डूंगरपुर, (८) बांसबाडा, (९) प्रताप-गढ, (१०) कोटा, (११) झालावार, (१२) बूंदी, (१३) किसुनगढ, (१४) टोंक, (१५) करौली, (१६) धौलपुर, (१७) भरतपुर, और (१८) अलवर हैं। उदयपुर,

प्रतापगढ, बांसबाड़ा और डूंगरपुरके राजा सीसोदिया राजपूत, जोधपुर, बीकानेर और किसनगढके राजा राठौर राजपूत, करौली और जैसलमेरके राजा यदुवंशी राजपूत, जयपुरके राजा कुशावह राजपूत, अलवरके राजा नरूका राजपूत, सिरोहीके राजा चौहान राजपूत, कोटा और बूंदीके राजा हारा राजपूत, झालावाडके राजा झाला राजपूत, भरतपुर और धौलपुरके राजा जाट और टोंकके नवाब मुसलमान हैं।

राजपूतानेके देशी राज्योंका क्षेत्रफल १३०२६८ वर्ग मील है मनुष्य संख्या इस सालकी मनुष्य–गणनाके समय १२०१६१०२ थी। सन १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय देशी राज्योंमें ९ लाख ६ हजार ब्राह्मण, ६ लाख ३४ हजार महाजन, ५ लाख ६७ हजार चमार, ४ लाख ८० हजार राजपूत, ४ लाख २८ हजार मीना; ४ लाख २६ हजार जाट, ४ लाख ३ हजार गूजर, और १ लाख ३१ हजार अहीर थे। (भारत–भ्रमणके आरंभमें देखो)

अधिक लोग खेतिहर हैं। शहरोंमें कोठीवाल और तिजारती महाजन हैं। पुरुषोंमें पगडी और स्त्रियोंमें घांघरे पहननेकी बडी रिवाज है। गूजर और जाटोंमें विशेष लोग खेती करते हैं। भील जंगली और पहाड़ी देशोंमें बसते हैं, अपनेही में से प्रधान बनाकर प्रायः स्वतंत्र रहते हैं, और गैर मामूली खिराज देते हैं। मनुष्य–गणनाके समय वे अपनेको गिनने नहीं देते, इसलिये केवल उनके घर गिन लिए गए थे। सन १८८१ में वे कुल करीब २७०००० थे। मीना लोगों में जो खेतिहर हैं, वे साधारण तरहसे अच्छे हैं, और जो चौकीदार हैं, वे लुटेरे करके प्रसिद्ध हैं। दक्षिण–पश्चिममें अर्वली पहाडके नोकदार हिस्सोंमें रहनेवाले मीना जातिके लोग खेती कम और लूटका काम अधिक करते हैं।

पश्चिमोत्तर हिस्सेमें वर्ष भरमें केवल एकही फसिल, और अर्बलीके दक्षिण और पूर्व सालमें दो फसिल होती हैं। मिलेट, गेहूं, जौ, हिन्दुस्तानी गल्ले, पोस्ता, तेल उत्पन्न करने वाली चीजें; ऊख, कपास, राजपूतानेकी प्रधान फसिल हैं। पश्चिमके वीरान देशमें ऊंट, मवेसी और भेड बहुत होते हैं। निमक, गल्ले, अफियून, रूई, ऊन, मवेसी और भेड़ राजपूतानेसे दूसरे प्रदेशोंमें जाते हैं।

राजपूतानेके शहर और कसबे, जिनकी जन–संख्या इस वर्षकी मनुष्यगणना के समय १०००० से अधिक थी।

नंबर.	शहर वा कसबा.	राज्य.	मनुष्य–संख्या.	नंबर.	शहर वा कसबा.	राज्य.	मनुष्य–संख्या.
१	जयपुर	जयपुर	१५८९०५	१०	करौली	करौली	२३१२४
२	भरतपुर	भरतपुर	६८०३३	११	बूंदी	बूंदी	२२५४४
३	जोधपुर	मारवाड़	६१८४९	१२	शिकारपुर	जयपुर	१९८९७
४	बीकानेर	बीकानेर	५६२५२	१३	नागौड़	मारवाड़	१७१९१
५	अलवर	अलवर	५२३५८	१४	पाली	मारवाड़	१७१५०
६	उदयपुर	मेवाड़	४६६९३	१५	फतहपुर	जयपुर	१६५८०
७	टोंक	टोंक	४६०६९	१६	किसुनगढ़	किसुनगढ़	१५४५७
८	कोटा	कोटा	३८६२४	१७	दीग	भरतपुर	१५१६६
९	छावनी	झालावार	२३३८१	१८	प्रतापगढ़	प्रतापगढ़	१४८१९

नंबर. शहर वा कसबा.	राज्य.	मनुष्य-संख्या.	नंबर. शहर वा कसबा.	राज्य.	मनुष्य-संख्या.
१९ चूरू	बीकानेर	१४०१४	३१ बिलारा	मारवाड़	११३८४
२० माधोपुर	जयपुर	१३९७२	३२ दिद्वाना	मारवाड़	११३७६
२१ हिन्दुरी	जयपुर	१२९९६	३३ पाटन	झालावार	१०७८३
२२ कचवारा	मारवाड	१२८१६	३४ रतनगढ	बीकानेर	१०५३६
२३ सुजात	मारवाड	१२६२४	३५ जैसलमेर	जैसलमेर	१०५०९
२४ नवलगढ	जयपुर	१२५६७	३६ फलोदी	मारवाड़	१०४९७
२५ सांभर	जयपुर	१२३६२	३७ उदयपुर	जयपुर	१०३४३
२६ झुंझुआ	जयपुर	१२२६७	३८ भिलवाडा	मेवाड़	१०३४३
२७ रामगढ	जयपुर	१२१९७	३९ राजगढ़	अलवर	१०३०२
२८ बारी	धौलपुर	१२०९२	४० चित्तौरगढ़	मेवाड़	१०२८६
२९ शाहपुर	शाहपुर	११७१८	४१ खंडेला	जयपुर	१००६७
३० कामा	भरतपुर	११४१७			

भरतपुर ।

अछनेराके रेलवे स्टेशन से १७ मील और आगरे के किले से ३४ मील पश्चिम राजपूताने में एक प्रसिद्ध देशी राज्य की राजधानी भरतपुर है । यह २७ अंश १३ कला ५ विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश ३२ कला २० विकला पूर्व देशांतर में स्थित है । स्टेशन के पास एक छोटी सरायं है, उसी में मैं टिका था । महाराज का कर्मचारी मुसाफिरों का नाम और धाम रात्रि में लिख लेता है ।

इस साल की जन संख्या के समय भरतपुर में ६८०३३ मनुष्य थे, अर्थात् ३७६९४ पुरुष और ३०३३९ स्त्रियां । इनमें ५०२१० हिन्दू, १६६६५ मुसलमान, ११५४ जैन और ४ कृस्तान थे । मनुष्य संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ५१ वां और राजपूताने में दूसरा शहर है ।

किले के पास दीवार के भीतर नादुरुस्त शकल का लंबा शहर है, जिसमें पत्थर की सड़क, सुन्दर बाजार, एक बडा अस्पताल, एक सेंट्रल स्कूल, एक जेल और एक बंगला है । और वर्ष में एक बडा मेला होता है ।

किले से ३ मील दक्षिण सेवर में महाराज का महल और एक सेंट्रल जेल है ।

किला—बाहर वाले किले के भीतर उत्तर पूर्व के आधे भाग में भीतर का किला है । बाहरी किले के चारों ओर कच्ची परन्तु दुर्भेद्य दीवार है, जिसके बाहर छोटी खाई है । बाहरी किले के आना फाटक और भीतर वाले किले के चौबुर्ज फाटक के बीच में सडक के समीप गंगा का मन्दिर, लक्ष्मण का मन्दिर, बाजार और नई मसजिद हैं ।

भीतरवाले किले की दीवार बडे बडे पत्थर के ढोकों से बनी है, जिसके चारों ओर पानी से भरी हुई चौडी और गहरी खाई है, जिस पर दोनों फाटकों के पास २ पुल हैं । इस किले के मध्य में ३ महल हैं,—पूर्व वाला राजा का महल, दूसरा बदनसिंह का बनवाया हुआ पुराना महल और तीसरा इससे पश्चिम कुमार महल है । इनमें राजा का

महल चौमंजिला दर्शनीय है। ऊपर की मंजिल राजसी सामान से सजी है। टोपी उतार कर उस महल में जाना होता है। किले के पश्चिमोत्तर के कोन के पास जवाहिर बुर्ज है, जिस पर चढने से सुन्दर दृश्य दृष्टिगोचर होता है। कुमार महल के पश्चिम इंसाफ की कचहरी जवाहिर आफिस और जेलखाना है।

दीग–भरतपुर से लगभग १५ मील दीगनामक कसबे में एक किला और भरतपुर के राजा सूर्य्यमल का बनवाया हुआ उत्तम राजमहल है।

इस साल की जन संख्या के समय दीग में १५१६६ मनुष्य थे, अर्थात् १२२८८हिन्दू, २६१४ मुसलमान और २६४ जैन।

कच्छ तालाब के पूर्व गोपालभवन खडा है, जिसकी छत से सुन्दर दृश्य देख पडता है। इसके पूर्वोत्तर २० फीट ऊंचा नन्दभवन एक सुन्दर कमरा, दक्षिण ८८ फीट लंबा सूर्य्य-भवन, पश्चिम हर्दीभवन और दक्षिण पूर्व कृष्ण भवन है। इसके बीच में और चारों तरफ उत्तम बाग है। बाद दूसेर बागों से लगी हुई रूपसागरनामक बडी झील है।

गोपालभवन से ½ मील दूर दीगके किलेका पश्चिमी फाटक है। किलेकी ऊंची दीवार में कुल ७२ बुर्ज हैं। पश्चिमोत्तरका बुर्ज ८० फीट ऊंचा है, जिस पर एक बहुत लम्बी तोप रक्खी हुई है। प्रथम ५० फीट चौड़ी खाई मिलती है, इसके बाद करीब ७० फीट ऊंचा एक स्वाभाविक टीला, इसके पश्चात् एक इमारत है, जो जेलखानेके काममें आती है।

सन १८०४ की तारीख १३ नवम्बरको अंगरेजी जनरल फ्रेजरने यशवंतराव हुलकरकी सेनाको परास्त किया। हुलकरकी सेनाके बचे हुए लोगोंने दीगके किलेमें पनाह ली। तारीख १ दिसम्बरको अंगरेजी अफसर लार्ड लेक सेनामें आ मिले। अंगरेजोंने बहुत लड़ाई और बड़ी हानि उठानेके उपरांत तारीख २४ दिसम्बरको दीग और इसके किलेको दुश्मनोंसे ले लिया। वे सब भरतपुर भाग गए।

भरतपुर राज्य–भरतपुर राजपूतानेके पूर्व भागमें एक देशी राज्य, पोलिटिकल एजेंटके पोलिटिकल सुपरिंटेंडेंटके अधीन है। राज्यके उत्तर गुरगांव जिला, पूर्व मथुरा और आगरा जिले, दक्षिण–पूर्व, दक्षिण और दक्षिण–पश्चिम धौलपुर, करौली और जयपुर राज्य और पश्चिम अलवर राज्य हैं। भरतपुर राज्यकी लम्बाई उत्तरसे दक्षिण तक लगभग ७७ मील और चौड़ाई ६३ मील है। इसका क्षेत्रफल १९७४ वर्गमील है। राज्यकी खानोंमेंसे मकान बनाने योग्य पत्थर निकलता है। नाव चलाने योग्य कोई नदी नहीं है। प्रधान नदी बाणगंगा है। एक टकसाल है, जहां चांदी और तांबेके सिक्के ढाले जाते हैं। राज्यसे लगभग २७००००० रुपये मालगुजारी आती है। अंगरेजी सरकारको कुछ खिराज नहीं दिया जाता। सैनिक बल१४६० सवार, ८५०० पैदल और पुलिस, २५० आरटिलरी और ३८ रसमके लिये तोपें हैं। देश ब्रज कहलाता है और यहांकी भाषा ब्रजभाषा है। राज्यके ३ कसबोंमें इस बर्षकी मनुष्य गणनाके समय१००० से अधिक मनुष्य थे। भरतपुरमें ६८०३३, दीगमें१५१६६ और कामामें ११४१७। भरतपुरसे लग भग २४ मील दक्षिण–पश्चिम वेर एक कसबा है, जिसमें बर्ष में एक बड़ा मेला होता है।

इस वर्षकी मनुष्य–गणनाके समय भरतपुर राज्यमें ६४०६२० मनुष्य थे सन १८८१ में ६४५५४० मनुष्य थे, जिनमें ५३५३६७ हिन्दू १०५६६६ मुसलमान ४४९९ जैन आर ८

दूसरे । हिंदू और जैनोंमें ८८५८४ चमार, ७०९७३ ब्राह्मण, ५३५६७ जाट, ४३८६५ गूजर, ३९३०१बनियां,१२१३९मीना,६१०७ राजपूत,५७०८धाकर,५४०९अहीर और शेष इनसे कम संख्याकी जातियां थीं । (चमारकी संख्या सबसे अधिक होनेके कारण वह प्रथम लिखी गयी)

इतिहास—चूड़ामणिनामक जाटसे भरतपुरका राजवंश नियत हुआ, जिसने दक्षिण (डेकान) को जाती हुई बादशाह औरंगजेबकी सेनाको क्लेश दिया । उसके पीछे जयपुरके राजा सवाई जयसिंहने मुगल राज्यकी घटतीके समय चूड़ामणिके भाई बदनसिंहको दीगमें जाटोंका सर्दार बनाया । सन १७३३ ई० में बदनसिंहने भरतपुरके किलेको बनवाया । बदनसिंहके मरनेपर उसका पुत्र सूर्य्यमल, राजा हुआ, जिसने भरतपुरको अपनी राजधानी बनाई । सन १७६० ईस्वीमें उसने आगरेसे गवर्नरको निकाल दिया और आगरेको अपने खास रहनेका स्थान बनाया । सन १७६३ में सूर्य्यमल मारा गया, उसके ५ पुत्रोंमेंसे ३ ने हुकूमतकी । सन १७६५ में जाट लोग आगरेसे निकाले गए ।

सन १७८२ में सिंधियाने १४ जिलोंको छोड़कर भरतपुर और राज्यको लेलिया । जब लालकोटमें सिंधियापर कठिनता पहुंची, तब उसने राजा सूर्य्यमलके पुत्र राजा रणजीत सिंहसे मेल किया । सन १७८८ में जाट लोग फतहपुर सिकरीमें गुलामकादिर द्वारा शिकश्त हुए और भरतपुर भाग आए ।

सन १८०३ ई० में अंगरेजोंके साथ राजा रणजीतसिंहकी संधि हुई, परन्तु जब रणजीतसिंहने यशवंत राव हुलकरके साथ साजिशकी, तब सन १८०५ ई० में अंगरेज सेनापति लार्ड लेकने भरतपुर पर महासरा किया, जो ४ हमलोंमें ३०० सैनिकोंके मारे जानेपर बहुत नुकसानीके साथ शिकस्त हुआ । परन्तु रणजीतसिंहने सुलहका पैगाम भेजा, जो तारीख चौथी मईको मंजूर हुआ ।

राजा रणजीतसिंहके निःसंतान मरने पर जब उसका भाई बलदेवसिंह सन १८२३ ई० में राजसिंहासन पर बैठा, तब उसके भतीजे दुर्जनसालने इस झूंठी बात पर कि राजा रणजीतसिंहने मुझे गोद लियाथा, गद्दीका दावा किया । बलदेवसिंहके कहनेसे राजपूतानेके रेजीडेंट सर डेविड अक्टरलोनीने बलदेवसिंहके लड़के बलवंतसिंहको सरकारकी ओरसे गद्दी पर बैठा दिया । सन १८२५ में बलदेवसिंह मर गया । दुर्जनसालने बलवंतसिंहके मामाको मार डाला और बलवंतसिंहको कैद कर राजगद्दी पर आप बैठा । रेजीडेंटने लड़ाईका सामान किया-परन्तु सरकारने उसकी यह तजवीज पसन्द नहीकी । इसी समय दुर्जनसालका भाई माधोसिंह उससे बिगड़ कर दीगमें सिपाह भरती करने लगा । सरकारने फसाद देख कर दुर्जनसाल को बहुत समुझाया, पर जब उसने कुछ नहीं माना, तब उन्होंने २०००० सेनाके साथ कमांडर इनचीफको दुर्जनसालको निकालनेके लिये भेजा । तारीख १० दिसम्बरको अंगरेजी सेना भरतपुर पहुंची । सन १८२६ ई० की तारीख १८ जनवरीको ६ सप्ताहके घेरेके उपरांत अंगरेजोंने सुरंगसे किलेको तोड़ कर भरतपुरको लेलिया । अंगरेजोंके १०३ सैनिक मारे गए और ४७७ घायल हुए । दुर्जनसाल पकड़ा गया । सरकारने फिर बलवंतसिंहको भरतपुरकी राजगद्दी पर बैठाया । सन १८५३ में बलवन्तसिंहके देहान्त होने पर उनके शिशु पुत्र वर्त्तमान महाराज सवाई सर यशवंतसिंह बहादुर उत्तराधिकारी हुए, जिनका जन्म सन १८५२ ई० में हुआ था । राज्यका काम पोलिटिकल एजेंट और ७ सरदारोंके कौंसिलसे होने लगा ।

सन १८५२ में वर्तमान महाराजने राज्यका भार अपने हाथमें लिया। भरतपुरके महाराज जाट हैं। इनको अंगरेजी सरकारसे १७ तोपोंकी सलामी मिलती है।

करौली।

भरतपुरसे लगभग ५० मील दक्षिण राजपूतानेके पूर्व भागमें देशी राज्यकी राजधानी करौली एक कसबा है। यह २६ अंश ३० कला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश ४ कला पूर्व देशांतरमें स्थित है। करौलीको रेल नहींगई है। वहांसे लगभग ७५ मील बराबर दूर पर नीचे लिखे हुए शहर और कसबे हैं। उत्तर कुछ पूर्व मथुरा, पूर्वोत्तर आगरा, उत्तर कुछ पश्चिम अलवर, पश्चिमोत्तर जयपुर, पश्चिम-दक्षिण टोंक और पूर्व कुछ दक्षिण ग्वालियर।

इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय करौलीमें २३१२४ मनुष्यथे,अर्थात १७४२२ हिन्दू, ५३५२ मुसल्मान, ३३६ जैन और १४ कृस्तान।

लगभग १३४८ ई० में अर्जुनदेवने करौलीको बसाया, जिसने कल्यानजीका मन्दिर बनवाया। कसबेके चारों ओर २¾ मील लंबी पत्थरकी दीवार है, जिसके बाहर उत्तर और पूर्व नाला और दक्षिण और पश्चिम खाई है। दीवारमें ६ फाटक और ११ खिडकियां बनी हैं। प्रसिद्ध निवासी ब्राह्मण और महाजन हैं। सड़क तंग और नादुरुस्त है। मृत महाराज जयसिंह पालने मुसाफिरोंके लिये बड़ी सराय बनवाई। नीचे दरजेके मकानोंकी ढालुवां छत्त पत्थरके टुकड़ोंसे बनी हैं। प्रधान बाजार पश्चिमके फाटकसे पूर्व महलकी ओर ½ मील लंबा फैला हुआ है। बहुतेरे सुन्दर मन्दिर हैं। शहरकी पूर्व दीवारसे २०० गज दूर ऊंची दीवारसे घेरा हुआ राजमहल है, जिसमें २ फाटक लगे हैं। महलके भीतर सुन्दर रंगमहल और दीवान आम है। मदनमोहनजी का मन्दिर प्रसिद्ध है, पर बहुत सुन्दर नहीं है। शिरोमनिजीका मन्दिर लाल पत्थरसे बना हुआ बहुत सुन्दर है। बागोंमें शिकारगंज, शिकारमहल और खवासमहलके बाग प्रधान हैं। यूरोपियन मुसाफिर खवासमहलकी इमारत में टिकते हैं।

चैत्रकी नवरात्रमें कैलासिनी देवीका बड़ा मेला होता है। उस समय काली शिला पर यात्रियोंका अच्छा समागम होता है।

करौली राज्य—भरतपुर और करौली एजेंसीके पोलिटिकल सुपरिंटेंडेंसके अधीन राजपूतानेमें करौली एक देशी राज्यहै,जिसके दक्षिण-पश्चिम और पश्चिम जयपुर राज्य,उत्तर भरतपुर पूर्वोत्तर धौलपुर राज्य और दक्षिणपूर्व चंबल नदी है,जो ग्वालियर राज्यसे इसको अलग करती है, राज्यका क्षेत्रफल १२०८ वर्ग मील है। प्रधान पहाड़ियां उत्तरी सीमा पर हैं, परन्तु कोई ऊंची चोटी नहीं है। सबसे ऊंची चोटी समुद्रसे १४०० फीटसे कम ऊंची है। प्रायः कुल राज्य पहाड़ी है। पहाड़ियोंसे उत्तम पत्थर निकलता है। फतहपुर सिकरीके महल और ताजमहलके हिस्से करौलीके पत्थरसे बने हैं। राज्यमें बहुतेरे गांवोंके बहुतेरे मकान और छतें पत्थरकी बनी हैं। जगह जगह जमीनके टुकड़े हैं। जंगलोंमें बाघ आदि हिंसक जंतु बहुत रहते हैं। ५ धारा वाली पंचनद नामक एक छोटी नदी करौली राज्यकी पहाड़ी से निकली है। इसकी पांचों धारा करौली कसबेसे २ मील पर इकट्ठी हो जाती हैं। सूखी ऋतुओंमें चार धारोंमें पानी रहता है। पंचनद उत्तर घूमनेके पश्चात् बाणगंगामें जा मिला है।

सैनिक बल १६० सवार, १७७० पैदल, ४० छोटी तोपें और ३२ गोलंदाज हैं, राज्य भरमें एक सेंट्रल जेल, एक स्कूल, एक पोष्टआफिस और एक टकशाल है। राज्यसे लगभग ५ लाख रुपया मालगुजारी आती है।

सन १८८१ ई० की मनुष्य–गणनाके समय करौली राज्यके १ कसबे और ८६१ गांवोंमें १४८६७० मनुष्य थे, अर्थात् १३९२३७ हिन्दू, ८८३६ मुसलमान, ५८० जैन और १७ कृस्तान। हिन्दुओंमें २७८१९ मीना, २२१७४ ब्राह्मण, १८२७८ चमार, १५११२ गूजर, ९६२७ बनियाँ और ८१८२ राजपूत थे। ब्राह्मण साधारण रीतिसे जानवरोंको लादते हैं।

इतिहास–राजकुल यदुवंशी राजपूत हैं। सन १८५२ ई० में महाराज नरसिंह पाल मरगए। उनका सीधा वारिस न होनेके कारण महाराज मदनपाल उत्तराधिकारी हुए, जिनको बलबेकी खैरखाहीमें जी. सी. एस. आई. की पदवी मिली और १५ तोपोंकी सलामीके स्थान पर १७ तोपें नियत हुई। सन १८६९ में महाराज मदनपालके मर जाने पर ३ प्रधान उत्तराधिकारी बनाए गए। सन १८८३ में रिजेंसी के कौंसिलने राज्यको ३ भागोंमें बांट दिया।

बांदीकुई जंक्शन।

भरतपुरसे ६१ मील (आगरेसे ९५ मील) पश्चिम बांदीकुई रेलवेका जंक्शन है, जहांसे 'बंबे बड़ोदा और सेंट्रल इंडिया रेलवे,' जिसकी शाखा राजपूताना मालवा रेलवे' है, ३ ओर गई है। जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मीलका २ पाई लगता है।

(१) बांदीकुईसे पश्चिम फलेरा जंक्शन है, उससे आगे यह लाइन दक्षिण–पश्चिम गई है—

मील–प्रसिद्ध स्टेशन–

५६ जयपुर।

९१ फलेरा जंक्शन।

९७ निराना।

१२२ किसुनगढ़।

१४० अजमेर जंक्शन।

फलेरा जंक्शनसे अधिक पश्चिम, कम दक्षिण–

मील–प्रसिद्ध स्टेशन–

४ सांभर।

१९ कुचामन रोड, जिससे आगे 'जोधपुर बीकानेर रेलवे' है–

९२ मर्त्ता रोड़ जंक्शन।

१२७ पीपरा रोड।

१५५ जोधपुर महल स्टेशन।

२५६ जोधपुर स्टेशन।

१७६ लूनीजंक्शन। मर्त्ता रोड जंक्शन से १०३ मील उत्तर, कुछ पश्चिम, बीकानेर और लूनी जंक्शनसे ४४ मील पूर्व–दक्षिण मारवाड़ जंक्शनका स्टेशन, और ६० मील पश्चिम पञ्चभद्राका स्टेशन है।

(२) बांदीकुई से उत्तरकी ओर

मील–प्रसिद्ध स्टेशन–

३७ अलवर।

८३ रिवाड़ी जंक्शन।

११८ चर्खी दादरी।

१३५ भिवानी।

१५७ हांसी।

१७२ हिसार।

२७० भतिंडा जंक्शन।

३२४ फिरोजपुर।

३४१ कसूर।

३५९ रायवंद जंक्शन।

रिवाड़ी जंक्शनसे। पूर्वोत्तर १९ मील फर्रुख

नगर, ३२ मील गुरगांवा और ५२ मील दिल्ली जंक्शन है। और रायबंद जंक्शनसे २४ मील उत्तर लाहौर है।

(३) बांदीकुईसे पूर्व–
मील–प्रसिद्ध स्टेशन–

६१ भरतपुर।
७८ अछनेरा जंक्शन।
९३ आगरा छावनी।
९५ आगरा किला।
अछनेरासे २३ मील उत्तर थोड़ा पश्चिम मथुरा छावनीका स्टेशन है।

भरतपुर से ६१ मील पश्चिम बांदाकुई जंक्शन, और बांदीकुई जंक्शन से ३७ मील उत्तर अलवर का स्टेशन है, जिससे १ मील दूर शहर के प्रधान फाटक तक उत्तम सडक गई है। अलवर राजपूताने में देशी राज्य की राजधानी एक छोटा शहर है, जिसमें कई उत्तम बाग, कई सराय, ५ जैनमन्दिर और कई देवमन्दिर हैं। एके और ठेलागाडी सवारी के लिये बहुत मिलती हैं।

इस साल की जन संख्या के समय अलवर में ५२३९८ मनुष्य थे, (२८४६४ पुरुष और २३९३४ स्त्रियां) जिनमें ३७१२० हिन्दू १३९२६ मुसलमान ११८६ जैन, १५७ कृस्तान, ७ सिक्ख और २ पारसी थे। मनुष्य संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ७५ वां और राजपूताने में ५ वां शहर है।

शहर ऊंची भूमि पर पहाडी किले के पादमूल के पास बसा है, जिसमें ५ प्रधान इमारतें हैं–१ महाराज का महल, २ महाराज बख्तावरसिंह का समाधि मन्दिर, ३ जगन्नाथ जी का मन्दिर, ४ कचहरी का मकान और मालगुजारी का आफिस, और ५ तरंग सुलतान का पुराना मकबरा। स्टेशन से शहर में प्रवेश करने पर दहिने अर्थात् पूर्व को जाती हुई १४० गज लम्बी एक चौंडी सडक मिलती है, जिसके दोनों बगलों पर प्रायः एकही तरह की दुकानें हैं। इनके आगे के ओसारे टीन से छाए गए हैं। सडक के पूर्व छोर पर करीब २०० गज लम्बा और इतनाही चौंडा एक चोक है, जिसके चारों बगलों पर मकानों के आगे ओसारे और चारों ओर ४ फाटक हैं। यहां चावल इत्यादि अनेक प्रकार के गल्ले बिकते हैं। चौकसे पूर्व महाराजकी बनवाई हुई पक्की मुड़ेरेदार बड़ी सरायँ है जिसके चारों बगलोंपर करीब १०० कोठरी हैं, जिनके आगे मेहराबदार ओसारे लगे हैं। ठीकेदारसे किराये पर एक कोठरी लेकर उसमें टिका था। महाराजकी शहरकी अश्वशालामें मैंने विविध प्रकार के २०० घोड़े देखे।

प्रधान फाटकसे सीधे उत्तर एक सड़क गई है, उससे आगे जाकर बाएं घूमने पर प्रधान चौकका फाटक मिलता है, जिसके पास पीतलकी ३ तीन तोपें रक्खी हैं। उससे आगे चौककी ४ सड़कोंका मेल है, जहां एक बहुत छोटा बंगला है। पूर्व और दक्षिणकी सड़कें करीब चार चार सौ गज, और पश्चिम और उत्तरकी सड़कें करीब दो दो सौ गज लम्बी हैं। संपूर्ण सड़क पत्थरके तखतोंसे पाटी हुई हैं। इनके बगलों पर हर तरहकी वस्तुओंकी दुकानें और प्रत्येक छोरोंपर एक एक फाटक हैं।

राजमहल–पश्चिमकी सड़कके पश्चिमी छोरके पास जगन्नाथजीका सुन्दर मन्दिर है, जिससे आगे जाने पर चौ मंजिला पंच मंजिला राजमहल मिल जाता है, जिसके हातेमें आफताबीनामक

एक सुन्दर इमारत है। दर्बार कमरा ७० फीट लम्बा है, जिसमें मार्बुलके सुन्दर स्तम्भ लगे हैं। सागर तालाबकी ओर उत्तम शीशमहल बना है। मलहमें एक मेहराबदार पुस्तकालय है, जिसमें हाथकी लिखी हुई बहुत पुस्तकें और किताबें रक्खी हुई हैं। तोशाखानेमें बहुमूल्य जवाहिरात रक्खे हुए हैं। महलका मुख्य फाटक पूर्व और जनाना फाटक पश्चिम अर्थात् तालाबकी ओर है। महलके उत्तर और दक्षिण सुन्दर वाटिका लगी है। हथियारखानेमें उत्तम उत्तम रत्न जड़े हुए तलवारें और दूसरे हथियार एकत्र हैं। ५० तलवारों में सोनेकी मूठ लगी हैं। बानीसिंहके हथियारोंको बड़े कदके आदमी बांध सकते हैं। उसके बख्तर, बरछीके नोक, और तलवारमें बड़े बड़े हीरे जड़े हैं। पारसका बनाहुआ सोलहवीं सदीका एक बख्तर और एक टोप है, जिसको ७ फीट ऊंचा आदमी पहन सकता है।

सागर नामक तालाब—पहाड़के पूर्व बगलके नीचे राजमहलके पश्चिम करीब १५० गज लम्बा और १०० गज चौड़ा पत्थरसे बना हुआ सागर तालाब है। चारों तरफ़ नीचेसे ऊपरतक सीढ़ियां बनी हैं। पूर्व और पश्चिम चार चार और उत्तर और दक्षिण दो दो खड़े पुश्ते हैं जिनके नीचे ओसारे बने हैं। पहाड़ीके बगल पर तालाबके पश्चिम कई कोठरियां और कई एक देवमन्दिर हैं।

बखतावरसिंहकी छत्तरी—सागर तालाबके फर्श पर बहुत सुन्दर दो मंजिली छत्तरी अर्थात् समाधि-मन्दिर है। इसके नीचे चारों ओर ओसारे और ऊपरकी मंजिलमें उत्तम मार्बुलके ९६ स्तंभ लगा हुआ मनोहर मन्दिर है। इसके भीतर बारहदरी मकान है, जिसके चारों कोनों पर चार चार, और चारों बगलों पर दो दो जगह जोड़े खंभे लगे हैं। बारहदरीके बाहरी चारों कोनोंके निकट तीन तीन जगह चार चार और चारों बगलों पर दो दो जगह जोड़े खंभे हैं। बारहदरीमें अलवरके महाराज बखतावरसिंहका सुन्दर समाधि-स्थान बना है।

किला—१२०० फीट ऊंचे गावदुमी चट्टानके सिरे पर किला है। बेडौल पत्थरकी सीढ़ियोंकी खड़ी चढ़ाई है। १५० फीटकी ऊंचाई पर एक झोपड़ी है, जहांसे खड़ी चढ़ाई आरंभ होती है। इससे आगे गाजीमर्दनामक स्थानमें दूसरा झोपड़ा है, जहांसे चलने पर ४० मिनटमें किलेका फाटक मिलता है। किलेमें १२ फिट लंबी तोप पड़ी है और छोटे छोटे दो तीन कमरे हैं। किलेमें देखने योग्य कोई वस्तु नहीं है, परन्तु ऊपरसे घाटी और पहाड़ियोंका उत्तम दृश्य देखनेमें आता है। ऊपर जानेके लिये झंपान मिल सकता है। कहा जाता है कि निकुम्भ राजपूतोंने इस किलेको बनवायाथा।

हाथी गाडी—शहरके एक मकानमें बानीसिंहकी बनवाई हुई दो मंजिली हाथी-गाडी रक्खी है, जो दशहरेके दिन काममें लाई जाती है। इस पर ५० मनुष्य बैठ सकते हैं। ४ हाथी इसको खींचते हैं।

कंपनीबाग—रेलवे स्टेशन और शहरके बीचमें महाराजका कंपनीबागनामक उत्तम उद्यान है, जिसमें जगह जगह सड़कें बनवाई गई हैं। कई नकली पहाड़ पर फूल लगाए गए हैं।

बागमें शिमला नामक मनोहर और विचित्र बंगला है, जिसमें पौधे और फूलोंकी बेल लगी हैं। करीब १५० गज लम्बी और १०० गज चौड़ी सरोवरके समान गहरी भूमि है। नीचे उतरनेको चारों बगलों पर मध्यमें सीढ़ियां हैं। चारों ओर पानीका एक एक पक्का नल

है। इस गर्तके मध्यमें लोहेका जाल तथा जालीदार टीनसे छाया हुआ फूल पौधेका एक सुन्दर बंगला है, जिसके मध्यसे चारों ओर ४ सड़क निकली हैं, जिनके छोरों पर ४ फाटक हैं। शेष जगहों पर गमलोंमें और पृथ्वी पर पौधे और फूलोंके छोटे वृक्ष लगे हैं, और गमलों में पौधे जमा कर छतकी कड़ियोंमें लटकाए गए हैं। बंगलेमें जगह जगह पुतलियोंके शरीर से जलके फव्वारे गिरते हैं और जहां तहां ऊपरसे जल टपकता है। बंगलेके बाहर चारों ओर वाटिका और जगह जगह सड़कें हैं। गहरी भूमिके ऊपर चारों ओर सड़क और उत्तर एक सूखा हौज है।

साधारण वृत्तान्त-अलवरसे २ मील दक्षिण एक टीले पर डूंगरमहलनामक तीन महला मकान है, जिसमें समय समय पर महाराज रहते हैं। शहरसे १ ½ मील दूर रेजीडेंसी है। एक अंगरेजी अफसरके अधीन महाराजकी ८०० फौज रहती है। शहरसे एक मील उत्तर जेलखाना और २ मील दक्षिण तोपखाना है। वहांसे फिरने पर एक मीलके अंतरपर प्रतापसिंहकी छत्तरी, पानीका झरना, सीताराम, शिव और कर्णके मन्दिर और प्रतापसिंहकी रानीकी (जो सती होगई थी) एक छोटी छत्तरी मिलती है। शहरसे ९ मील दक्षिण-पश्चिम एक झील है, जिससे शहरमें और इसके आस पास पानी आता है।

शहरसे १४ मील तालवृक्षका कुण्ड है। भूमिसे जल निकल कर ३ कुण्डोंमें गिरनेके उपरांत बाहर निकला करता है। वहां स्नानके लिये बहुत यात्री जाते हैं।

अलवर राज्य-अलवर राज्य राजपूताना एजेंसी और हिन्दुस्तानकी गवर्नमेंटके पोलिटिकल सुपरिंटेंडेंसके अधीन है। इसके उत्तर गुरगांव जिला, नाभा राज्यका बावल परगना और जयपुर राज्यका कोट कासिम परगना, पूर्व भरतपुर राज्य और गुरगांव जिला और दक्षिण और पश्चिम जयपुर राज्य हैं। राज्यका क्षेत्रफल ३०२४ वर्गमील है। चट्टानी पहाड़ियोंके समानांतर सिलसिले उत्तर और दक्षिण को गए हैं। पहाडियोंमें स्लेट, काला उजला और पिंक मार्बुल, लालगेरू, लोहा तांबा सीसा, सज्जी बहुत होती हैं। आधे से अधिक देश में खेती होती है। मुसलमानों में मेओ जाति अधिक है जो कहते हैं कि हम लोग राजपूत थे। इनके ग्रामदेवता वही हैं, जो हिन्दुओं के हैं। वे लोग मुसलमानों के तिहवारों के अतिरिक्त हिन्दुओं के कई तिहवार मानते हैं। लोहा, कागज, मध्यम दरजे का शीशा यहांकी प्रधान दस्तकारी हैं। राज्य में ३ अस्पताल और कई एक स्कूल हैं, जिनमें लडकियों के ४ हैं। इस वर्ष की मनुष्य-गणना के समय राज्य में ७६९०८० मनुष्य थे। अलवर राज्य में राजगढ़ बड़ी बस्ती है, जिसमें इस साल की जन संख्या के समय १०३०२ मनुष्य थे। सन १८८१ की मनुष्य गणना के समय राज्य में ६८२९२६ मनुष्य थे अर्थात् ५२६११५ हिन्दू, १५१७२७मुसलमान, ४९९४ जैन और ९० कृस्तान। हिन्दू और जैनों में ७५९६५ ब्राह्मण, ६९२०१ चमार, ५०९४२ अहीर, ४२२१२ बनिया, ३९८२६ गूजर, ३८१६४ मीना, २७७२५ जाट, २६८८९ राजपूत थे। राज्य से लगभग २६ लाख रुपया मालगुजारी आती है।

इतिहास-पहले यहां जयपुर और भरतपुर के अधीन छोटे छोटे हुकूमत करनेवाले थे। सन १७७५ ईस्वी के लगभग प्रतापसिंह वर्तमान राज्य के दक्षिणी भाग के (जो राज्य का आधा हिस्सा है) स्वतंत्र राजा बनगए। सन १७७६ ई० में उन्होंने भरतपुरवालों से अलवर और इसके किले को लेलिया। प्रतापसिंह के पश्चात् उनके गोद लिये हुए लडके बख-

तावरसिंह अलवर के राजा-हुए, जिन्होंने सन १८०३-१८०६ ई० में महाराष्ट्रों की लडाई के समय अंगरेजों से परस्पर सहायता करने की संधि की। अङ्गरेजों की सहायता से उन्होंने वर्तमान राज्य के उत्तरी भाग को पाया, जिससे राज्य की मालगुजारी ७ लाख से १० लाख होगई। बखतावरसिंह के पश्चात् बानीसिंह और बानीसिंह के पीछे सहदवनसिंह राजा हुए। जिनके पीछे सन १८७४ ई० में वर्तमान महाराज सवाई सर मङ्गलसिंह बहादुर जो०सी० एस० आई० अलवर नरेश हुए। महाराज ३२ वर्ष अवस्था के नरूका राजपूत हैं। राजकुमार जयसिंह ९ वर्ष के बालक हैं। अङ्गरेजी सर्कार की ओर से अलवर के राजाओं को १५ तोपों की सलामी मिलती है अलवर का सैनिक बल १८०० सवार, ४७५० पैदल, १० मैदान की और २९० दूसरी तोपें और ३६९ गोलन्दाज हैं।

जयपुर।

बांदीकुई जंक्शन से ५६ मील पश्चिम (आगरा से १५१ मील) जयपुर का स्टेशन है। जयपुर राजपूताने में एक प्रख्यात देशी राज्य की राजधानी भारत के अत्युत्तम शहरों में से एक और राजपूताने के संपूर्ण शहरों से उत्तम शहर है। यह २६ अंश ५० कला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश ५२ कला पूर्व देशांतर में स्थित है। स्टेशन से थोडी दूर एक धर्मशाला है। उसकी कोठरियों में जंजीर न थी. इसलिये मैं उसके निकट किराये के मकान में टिका था।

इस साल की मनुष्य गणना के समय जयपुर में १५८९०५ मनुष्य थे, अर्थात् ८४०९५ पुरुष और ७४८१० स्त्रियां। जिनमें १०९८६१ हिन्दू, ३८९५३ मुसलमान, ९७८० जैन, २४४ क्रस्तान, ६४ सिक्ख, २ पारसी, और १ अन्य थे। मनुष्य संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में सत्रहवां और राजपूताने में पहला शहर है।

दक्षिण के अतिरिक्त शहर के ३ ओर पहाडियां हैं जिन पर किले बने हैं। शहरके समीप ही पश्चिमोत्तर पहाडी के सिलसिले के अंत में नाहरगढ पहाडी किला है। सिलसिले का चेहरा दक्षिण अर्थात् शहर की ओर दुर्गम और उत्तर आम्बेर की तरफ ढालुवां है।

शहर के चारों ओर औसत २० फीट ऊंचा और ९ फीट मोटा सुन्दर शहरपनाह है; जिस पर बैठ कर गोली चलाने के लिये भंवारिया बनी हैं। शहरपनाह में ७ फाटक हैं। पूर्व सूर्य्यपोल, पश्चिम चांदपोल, उत्तर आंबेर दर्वाजा और गंगापोल और दक्षिण किसुनपोल, संगानेर दर्वाजा और घाट दर्वाजे हैं। इनके अतिरिक्त ७ खिडिकियां भी हैं। शहर की लम्बाई पूर्वसे पश्चिम तक २ मील से कुछ अधिक और चौडाई लगभग १। मील है।

यहांकी सड़कें चौड़ाई और दुरुस्तगीके लिये प्रसिद्ध हैं शहरके मध्यमें पश्चिमसे पूर्वको एक सड़क गई है, जिसको काटती हुई मध्यके समानान्तरमें दो जगह दो सड़कें दक्षिणसे उत्तर चली गई हैं। इस प्रकारसे शहरके चौकोने ६ हिस्से बन गए हैं। प्रधान सड़क दोनों बगलोंके फुटपाथके सहित पत्थरसे पाटी हुई १११ फीट चौड़ी है, दूसरे दरजेकी सड़क ५५ फीट और तीसरे दरजेवाली सड़क २७।। फीट चौड़ी है। शहरके मध्यमें प्रधान सड़क पर मानिक चौक है, जिसके दक्षिण जौहरी बाजार सड़क, उत्तर हवामहल बाजार सड़क, पूर्व रामगंज बाजारकी सड़क और पश्चिम त्रिपोलिया बाजार और चांदपोल बाजारकी सड़कें हैं।

सड़कोंके दोनों बगलोंके संपूर्ण मकान एक रूप और एकही कदके बने हैं । उन पर एकही प्रकारका चित्र रंग है । जयपुरकी गवर्नमेंटके आज्ञानुसार मकानोंके मालिकोंको इसी नियमके मकान बनाने पड़ते हैं । मकान ऐसे सुन्दर बने हैं, जिससे जयपुरके सौंदर्य्यका अनुभव होता है । भारतवर्षमें यह एकही शहर है, जिसमें एकही नकशे और एकही प्रकार के मकान बने हैं ।

जयपुर प्रसिद्ध सौदागरी शहर है । देशी दस्तकारियोंका खास करके बहुत प्रकारके जवाहिरातोंका और छापे हुए रंगदार कपड़ोंका यह प्रधान स्थान है । इसमें ७ बड़ी कोठिय जेल और टकशाल है । टकशाल में सोनेकी मुहर; रुपए और तांबेके पैसे बनते हैं । सड़कों पर गैसकी रोशनी होती है । शहरपनाहसे बाहर पोष्ट आफिस, टेलीग्राफ आफिस, और रेजी डेंसी है । शहरसे ४ मील पश्चिम एक धारा है, जो चम्बल नदीमें जाकर गिरती है । उससे नलद्वारा शहरमें जल पहुँचाया जाता है । पंपोग स्टेशन और हौजें चांदपोल फाटकके करीब सामने हैं ।

चैत्रमें रामनौमीके उत्सवका बड़ा मेला जयपुरमें होता है । उस समय जयपुरके राज-सामान देखनेमें आते हैं । मेलेमें दूर दूरसे सौदागर और देखनेवाले पहुंचते हैं ।

राजमहल—शहरके क्षेत्रफलके सातवें भागमें महाराजके महल, सुन्दर बाग और सुख बिलासकी जमीनें शहरके भीतर फैली हैं । बड़े महलका मध्यभाग अर्थात् चन्द्रमहल ७ मंजिला है । दीवानखास श्वेत मार्बुलका बना है, जो उत्तम सादेपनके लिये हिन्दुस्तानमें खयालके लायक है । बांई ओर हालके मकान हैं, जिनमें महाराजके, उनके मुसाहिबोंके और जनाने कमरे हैं । बिना महाराजका आज्ञाके महलके अंदर कोई जाने नहीं पाता ।

अबजर वेटरी (ग्रहादिदर्शन स्थान) चन्द्रमहलके पूर्व है । सवाई (दूसरे) जयसिंहने बनारस, मथुरा, दिल्ली, उज्जैन और जयपुरमें अबजरवेटरियोंको बनवाया । उन सबसे यह बड़ी है । खुला हुआ आंगन आश्चर्य यंत्रोंसे पूर्ण है । यंत्रोंका सुधार नहीं होता इनमें बहुतेरे बेकाम हैं ।

शाही अस्तबल अबजरवेटरीसे लगा हुआ है, उसके बाद शहरके प्रधान सड़कोंमें से एक के किनारे पर हवामहलनामक प्रसिद्ध इमारत है ।

महलके एक आंगनमें राज्यके छापेखानेका आफिस, घड़ीका बुर्ज और लड़ाईके सामान हैं । दीवान आमके पूर्व परेडकी भूमि है, उसके पीछे कानूनकी कचहरियां हैं । प्रधान दर्वाजेके पास राजा ईश्वरीसिंहका बनवाया हुआ ईश्वरी मीनार स्वर्गशूल है ।

मेवमन्दिर—जयपुरमें गोविन्ददेवजी, मदनमोहनजी, गोपीनाथजी, गोकुलनाथजी, राधादामोदरजी, रामचन्द्रजी, विश्वेश्वर शिव आदि देवताओंके सुन्दर मन्दिर हैं । महाराज मानसिंहने वृन्दावनमें गोविन्ददेवजीका मन्दिर सन १५९० ईस्वीमें बनवाया । जब औरंगजेब ने उसके तोड़नेका हुक्म दिया, तब मानसिंहके वंशवालेंने गोविन्ददेवजीकी मूर्तिको आंबेरमें लाकर रक्खा । सवाई जयसिंहके समय जयपुरके राजमहलके सम्मुख उत्तम मन्दिर बना-कर यह मूर्ति स्थापितकी गई । गोकुलनाथकी मूर्तिको वल्लभाचार्य्यने यमुना तीर पाया था, जिसकी स्थापना गोकुलमें की गई थी । यह मूर्ति जयपुरमें कब आई, सो जान नहीं पडता है । विश्वेश्वर शिवके उत्तम मन्दिरमें मार्बुलका बहुत काम है, आगेकी मार्बुलकी दीवारमें सुनहरा काम और उसके ४ बड़े ताकोंमें सुन्दर ४ देवमूर्तियां हैं । जगमोहनके दहिने गणेशजी,

बाएं कालभैरव और आगे नन्दीकी मूर्ति है। तीनों विशाल मूर्तियां बहुत छोटे छोटे मन्दिरोंमें स्थापित हैं।

रामनिवास बाग–जयपुरके महाराज रामसिंहके नामसे इसका नाम रामनिवास बाग है। यह भारतके सबसे उत्तम बागोंमें से एक है। बागका विस्तार ७० एकड़में है। यह ४ लाख रुपयेके खर्चसे बना है। इसमें प्रति वर्ष महाराजके ३०००० रुपये खर्च पड़ते हैं।

बागमें सावन भादों नामक मनोहर विचित्र बंगला है, जिसके भीतर सड़कोंके बगलोंमें पौधे और फूलोंके छोटे वृक्ष लगे हैं। छोटे बगलोंमें पौधे जमा कर जगह जगह लटकाए गए हैं, और स्तंभों पर जमाए गए हैं, जिन पर कलका पानी ऊपरसे टपकता है। बंगलेमें जगह जगह पत्थरके टुकड़े रखकर नकली पर्वत बने हैं, जिनमेंसे झरनाके समान कलका पानी निकलता है।

बागके पूर्व भागमें चिड़ियाखाना है, जिसमें विविध प्रकारके पक्षी और बाघ, भालू, हरिन, बंदर आदि बहुतेरे वनजंतु पाले गए हैं।

बागके पश्चिमोत्तर अर्लमेयोकी उत्तम प्रतिमा है। यह सन १८६९ से १८७२ तक हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल और वाइसरायथे, जो १८७२ की फरवरीमें एंडेमन टापूके एक खूनीके हाथसे मारे गए।

अजायबखाना–रामनिवास बागके एक भागमें एलवर्ट हाल नामक दो मंजिली इमारत है, जिसकी नीव प्रिंस आफ वेलसने सन १८७६ ई० में दी और वह सन १८८० में खुली। इसमें एक बड़ा दर्बार हाल और एक सुन्दर मिउजियम (अजायबखाना) है। दर्बार हालकी दीवारों पर भीतरी चारों ओर जयपुरके राजाओंकी क्रमसे तस्वीरें खींचीं हुई हैं। तस्वीरोंके पास उनका नाम लिखा है। अजायबखाना भारतवर्षके प्रत्येक विभागोंके हालकी मनोहर दस्तकारी और परिश्रमके कामों और पुराने समयकी प्रतिमा आदि नाना प्रकारकी चीजोंकी रिमेंसों (बचत) से भरा हुआ है। इसमें २२०० वर्षसे अधिककी एक स्त्रीकी लाश, जो ऐखभीमें मिली, रक्खी हुई है।

अन्य इमारतें–रामनिवास बागमें मेयो अस्पताल पत्थरसे बना हुआ है, जिसमें १५० रोगी रह सकते हैं। यहां घड़ीका एक बुर्ज है। रेलवे स्टेशनके मार्गमें सड़कसे थोड़ा पश्चिम एक गिर्जा है। एक नई सुन्दर इमारतमें कारीगरीका स्कूल है, जिसमें धातु, मीना, करचोबी आदिके कामोंकी शिक्षा दी जाती है। दूसरे स्थान पर संस्कृत कालिज और एक स्थान पर बालिका-विद्यालय है। महाराजका कालिज कलकत्ता-विश्वविद्यालयके अधीन कर दिया गया है। जयपुरकी शिक्षा दूसरे राज्योंकी शिक्षाकी अपेक्षा अधिक उन्नति पर है। सन १८४४ ई० में कालिज खुलनेके समय केवल ४० विद्यार्थीथे, परन्तु सन १८८९-१८९० में प्रति दिन १००० विद्यार्थियोंकी हाजिरी होतीथी।

शहरपनाहके बाहर पूर्वोत्तर एक बागमें राजाओंकी छत्तरी हैं। वहां जाने पर पहले उत्तम मार्बुलसे बनी हुई सवाई जयसिंहकी छत्तरी देख पड़ती है, जो वहांकी सब छत्तरियों से सुन्दर है। यह चौखूटे चबूतरे पर नकाशीदार २० स्तंभोंके ऊपर गुंबजदार बनी है। जयसिंहकी छत्तरीसे दक्षिण-पूर्व उनके पुत्र माधवसिंहकी छत्तरी है, जिससे पश्चिम माधवसिंहके पुत्र प्रतापसिंहकी छत्तरी है, जिसको मृत महाराज रामसिंहने अलवरके उजले मार्बुलसे बनवाया।

गलीता गद्दी-जयपुरसे १ ½ मील पूर्व आसपासके मैदानसे ३५० फीट ऊपर एक पहाड़ी पर सूर्यका मन्दिर है और चबूतरेके नीचे एक पवित्र झरनेका पानी गिरता है। इसी स्थान पर रामानुजसंप्रदायका प्रसिद्ध स्थान गलिता गद्दी है।

आम्बेर-जयपुरसे लगभग ५ मील पूर्वोत्तर पहाड़ी झीलके किनारे पर आम्बेर एक कसबा है, जो सन १७२८ ई० तक जयपुरकी राजधानीथा और उत्तम इमारतोंके लिये प्रसिद्ध हैं।

सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय आम्बेरमें ५०३६ मनुष्य थे। अब तक आम्बेरके किलेमें कैदखाना है। और राज्यका खजाना रहता है। बिना महाराजकी आज्ञाके आम्बेरके पुराने महल देखनेका अधिकार किसी को नहीं है। पुराना महल एक बडी इमारत है, जिसका काम लगभग सन १६०० ई० में राजा मानसिंहने आरम्भ किया था। पुराने महलसे ४०० फीट ऊपर पहाडी पर बड़ा किला है पहाड़ीके छोरके पास आम्बेर कसबेमें एक सुन्दर झील है।

एक बडे आंगनसे सीढियों द्वारा प्रवेश करने पर सुंदर दीवानआम मिलता है। इसमें खंभोंकी दोहरी कत्तार हैं। दीवानआमके दहिने कालीजीका एक छोटा मंदिरहै। एक ऊंचे स्थान पर सवाई जयसिंहका खास कमराहै। एक सुन्दर फाटकसे वहां जाना होताहै। ऊपर जालीदार खिड़िकियोंके साथ सुहागमन्दिरनामक छोटा मकान है। इसके बाद महलोंसे घेरा हुआ एक सब्ज और शीतल बाग है। यहां, मार्बुलका बहुत काम है। बागमें फव्वारे लगे हैं। बाएं जयमन्दिर (विजयका मन्दिर) है, जिसमें श्वेत पत्थरके चौखूंटे तख्ते जडे हुए हैं स्नानका कमरा मार्बुलका है। ऊपर यशमन्दिर हैं, जिसमें चमकीले पत्थर जड़े हुए हैं। यशमन्दिरके खंभों और मेहराबोंमें नकाशीका सुन्दर काम है। पूर्वोत्तरके कोनेके समीप बालकानी है, जहांसे आम्बेर और मैदानका सुन्दर दृश्य देखपड़ता है। दीवारके बाहर दूसरे जयसिंहसे प्रथमके राजाओंकी कई एक छत्तरी हैं। जयमन्दिरके सामने सुखनिवास है। चन्दनकी लकड़ीके दरवाजेमें हाथी-दांत जड़ा है। खीरी फाटकके रास्तेके निकट विष्णुका सुन्दर मन्दिर है, जिसके जगमोहनमें नकाशीसे कृष्ण और गोपियोंकी मूर्तियां बनी हैं। आम्बेरमें पहले बहुतेरे सुन्दर देवमन्दिर थे, परन्तु अब उनमेंसे बहुतेरे उजडे जाते हैं।

संगानेर-जयपुरसे करीब ७ मील दक्षिण-पूर्व और संगानेर रेलवे स्टेशनसे ३ मील दूर संगानेर एक प्रसिद्ध वस्ती है। जयपुरसे रेजीडेंसी और मोती डूंगरी होकर संगानेर तक गाड़ीकी सड़क है। ६६ फीट ऊंचे ऊजड़ेहुए फाटकसे होकर संगानेरमें जाना होता है। दहिने कल्यानजीका छोटा मन्दिर मिलता है। इसके पास ६ फीट ऊंचा मार्बुलका स्तंभ है। यहां ब्रह्मा, विष्णु, शिव और गणेशकी मूर्त्तियां हैं। बाएं ओर पुराने महलकी तबाहियां हैं। इससे उत्तर कुछ पूर्व ३ आंगनोंके सहित बड़ा मन्दिर है।

जयपुर राज्य-यह राज्य राजपूतानेके उत्तर भागमें है। इसके उत्तर बीकानेर, लोहारू, झझर और पटियाला, पूर्व अलवर, भरतपुर और करौली, दक्षिण ग्वालियर, बूंदी, टोंक और मेवाड़, और पश्चिम किसुनगढ़, जोधपुर और बीकानेर राज्य है। राज्यका क्षेत्रफल १४४६५ वर्गमील है। महाराजको लगभग ६१ लाख रुपया मालगुजारी आती है। पहाड़ी देश होने पर भी इसका अधिकांश भाग समतल है। राज्यमें सब नदियोंसे बड़ी बनास नदी है। बान-गंगा जयपुर राज्यमें पूर्वको बहती हुई, यमुनामें जा मिली है। साबी नदी उत्तर ओर बहती है, जो जयपुर शहरसे २४ मील उत्तरसे निकली है। निमककी सांभर झील प्रख्यात है।

खेतड़ीके पडोसमें तांबाकी खान है। अलवरकी सीमाके पास रैबालामें मोटे किसिमका भूरा मार्बुल और कोट पुतलीमें नीला मार्बुल निकलता है। राज्यमें नाहरगढ, रणथंभोर, आंबेर, अंबागढ आदि बहुतेरे पहाड़ी किले हैं। यह राज्य ११ जिलोंमें विभक्त है। जयपुर, देवास, शिकावती, तारावती, सांभर, हिंडउन, गंगापुर, माया; मालपुर, माधवपुर और कोटे कासिम।

इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय जयपुर राज्यके जयपुर शहरमें १५८९०५, शिकार में १९८९७, फतहपुरमें १६५८०, माधवपुरमें१३९७२, हिंडउनमें१२९९६,नवलगढमें १२५६७ सांभर में १२३६२, झुंझुनूमें १२२६७, रामगढ़में १२१९७, उदयपुरमें १०३६३, खंडेलामें १००६७ मनुष्य थे। दूसरे १०००० से कम मनुष्योंके २३ कसवे हैं। पाटन, लालसोत, लक्ष्मणगढ़, मालपुर, कोट पुतली, दोसा, तोडाभीम, श्रीमाधवपुर, बिसाऊ, चाकिन, बाभनियाबास, जिलू, गंगापुर, बासवा, बैरथ, मंडरा, तोड़ा, चिरवा, खेतड़ी, सिंहाना, सूर्यगढ, गिजगढ, और आंबेर।

इस वर्ष की मनुष्य गणना के समय जयपुर राज्य में २८२४४८० मनुष्य थे, सन १८८१ में २५३४३५७ मनुष्य थे, अर्थात् २३१५२१९ हिंदू, १७०९०७ मुसलमान,४७६७२ जैन, ५५२ क्रस्तान, और ७ पारसी। हिंदू और जैनों में ३५१००४ ब्राह्मण, २४२४७४ महाजन और बनिया, २२७३३१ जाट, २२१५६५ मीना, २०९०९४ चमार, १७१६३२ गूजर,१२४३ ४५ राजपूत, ५४६६५ अहीर थे।

राज्य की प्रधान फसिल अन्न, ऊख, कपास, पोस्ता, तेल के बीज और तंबाकू हैं। और प्रधान दस्तकारी मार्बुल की मूर्तियां, और पत्थर की दूसरी चीजें, सोने पर मीनाकारी का काम, ऊनी कपडे इत्यादि हैं। राज्य में बहुतेरे स्कूल हैं, जिनमें लडकियों के पढने के लिये१२स्कूलहैं।

सैनिक बल ३५७८ सवार, ९५९९ पैदल, २१६ तोपों के साथ २९ किले ६५ तोपें और ७१६ गोलंदाज हैं।

जयपुर राजधानी से २४ मील दक्षिण पूर्व चतसू बस्ती में वर्ष भर में ८ मेले होते हैं-जिनमें से बहुतेरों में बहुत लोग आते हैं। राजधानी से लगभग ४२ मील दक्षिण मट्टी की दीवार स घेरी हुई दीगी नामक बस्ती है, जिसमें कल्याण जी का प्रसिद्ध मेला वर्ष में एक बार होता है, जिसमें लगभग १५००० यात्री आते हैं! हिंडउन रोड रेलवे स्टेशन से सडक द्वारा ३५ मील और करौली राजधानी से १४ मील उत्तर जयपुर राज्य में हिंडउन कसबा है, जहां वर्ष में एक मेला होता है, जिसमें लगभग १ लाख मनुष्य आते हैं। जयपुर शहर से लगभग ४३ मील उत्तर माधवपुर कसबा है, जहां ज्येष्ठ और आश्विन मास में मेला होता है। प्रति मेलों में लगभग १२००० मनुष्य आते हैं।

इतिहास—जयपुर राजकुल कुशावह राजपूत है। (वाल्मीकि-रामायण-उत्तर कांड-१२१ वें सर्ग में लिखा है कि रामचन्द्र के पुत्र कुश के लिये विंध्यपर्वत के तट पर कुशावती और लव के लिये श्रावस्ती नगरी बसाई गई)

कुशावह वंश के सौरदेव ने ई० सन के दशवें शतक में नरवर राज्य से आकर राजपूताने के मीना लोगों को जीत धुंधर राज्य की (जो अब जयपुर का राज्य है) प्रतिष्ठा की। उस समय माडी (रामगढ़) उनकी राज धानी थी। सौरदेव के पुत्र दूला राव ने सन ९६७ ई०

में वर्तमान जयपुर से ३ मील पूर्व खो (गांव) के मीना राजा को परास्त कर वहां राजधानी नियत की । दूला राव के बाद छठवीं पुश्त में बिजुली जी राजा था, जिसके राज्य के समय आम्बेर राजधानी हुआ । आँबेर को मीना लोगों ने कायम किया था । सन ९६७ ई० तक वह शहर उन्नति पर था । सन १०३७ में राजपूतों ने उसको ले लिया । राजा पृथ्वीराज के परास्त होने पर बिजुलीजी के पिता मुसलमानों के अधीन एक सेनापति थे । बिजुली जी के पीछे ११ वीं पुश्त में भगवानदास हुए जिन्हों ने अपने भाई के पुत्र मानसिंह को गोदलिया था । मानसिंह अकबर बादशाह की सेना के सूबेदार बनाए गए । राजा मानसिंह के समय में राज्य के ऐश्वर्य की वृद्धि होने लगी और तब से आम्बेर के राजाओं ने राव की पदवी छोड़कर राजा कीं पदवी पाई । राजामानसिंहके पुत्र कुमार जगतसिंहकी अकाल मृत्यु होनेपर जगत्सिंह के पुत्र भवसिंह आंबेर के राजसिंहासन पर बैठे। राजा भवसिंह के पुत्र राजा (पहिला) जयसिंह ने औरंगजेब के अधीन दक्षिण में अपना पराक्रम दिखाया। बादशाह ने उनको मिरजा राजा की पदवी दी । राजा जयसिंह अंत में दक्षिण के संग्राम में मारे गए ।

जयसिंह के पोता सवाई (दूसरा) जयसिंह सन १६९९ में राजा हुए, जिन्हों ने सन १७२८ ई० में जयपुर शहर को नियत कर इसका नाम जयपुर रक्खा बादशाह फर्रुखशेर ने जयपुर राज्य को छीन लिया था, तब सवाई जयसिंह ने मारवाड की राज कन्या से विवाह कर उसके पिता की सहायता से अपने राज्य से मुसलमानों को भगा दिया और सांभर पर अधिकार करके मारवाड के राजा सहित उसको बांट लिया । फर्रुखशेर के पश्चात् मुगलों की दशा अधिक हीन हुई । भरतपुर के जाट स्वाधीन हो गए । उस समय सवाई जयसिंह ने उनके सर्दार को कैद करके बदनसिंहनामक एक जाट को भरतपुर का राजतिलक दे दिया । दिल्ली के बादशाह ने इस कार्य से प्रसन्न हो जयसिंह को सारमादाई राजाहाई हिन्दुस्थानकी पदवीसे सुशोभित किया । सन १७४३ में सवाई जयसिंहकी मत्यु हुई । सवाई जयसिंहके राज्यके पश्चात् क्रमसे ४ राजाओंने स्वतंत्र शासन किया । सवाई प्रतापसिंहके राज्यके समय मांचेरी (अलवर) स्वाधीन राज्य होगया और पिंडारी सरदार अमीरखांने टोंक राज्य नियत करके जयपुर राज्यका कुछ अंश अपने राज्यमें मिला लिया। सवाई जगतसिंहके राज्यके समय सन १८०३ ईस्वीमें अंगरेजोंके साथ संधि होनेपर जयपुर करद और मित्र राज्य हुआ । सवाई रामसिंहके राजसिंहासन होनेके १ वर्ष पीछे राज्यमें अशांति फैली । एसिस्टेंट गवर्नर जनरल मिष्टर बेल्क साहब जयपुरमें आए, जो अन्यायसे मारे गए । इस अपराधसे दीवान रामचन्द्रको फांसी हुई । और सिंगी युथाराम चुनारके किलेमें कैद हुआ । सवाई रामसिंहके राज्यके समय जयपुरके सौंदर्यकी वृद्धि हुई । सन १८५७ के बलवेके समय सवाई रामसिंहने अंगरेजी सर्कारकी सहायताकी, इसलिये उनकी सलामी २१ तोपोंकी होगई ।

सवाई रामसिंह सन १८८० में निस्संतान मरगए, उसके उपरांत उनके वसीयतनामेके अनुसार वर्तमान जयपुर नरेश हिजहाईनेस सवाई सर माधवसिंह बहादुर जी० सी० एस० आई जयपुरके राज सिंहासनपर बैठे, जिनका जन्म सन १८६१ ई० में हुआ था । जयपुरकी क्रमिक वंशावली नीचे है:—

नंबर
नाम
१ सौरदेव
२ दूलाराव
३ कंकुलजी
४ हनूजी
५ जनार्दनजी
६ पाजनजी
७ मलसाजी
८ बिजुलीजी
९ कल्यानजी
१० कुतुलजी
११ जैनसीजी
१२ उदयकर्णजी
१३ नरसिंहजी
१४ बनबीरजी
१५ उधारनजी
१६ चन्द्रसेनजी
१७ पृथ्वीराज
पृथ्वीराज
१८ पूरनमल
१९ भीमाजी
२० रतनजी
२१ अयस्करनजी
२२ भरमल
एक पुत्र
२३ भगवानदास
२४ मानसिंह
जगतसिंह
एक पुत्र
२५ भवसिंह
२६ जयसिंह
२७ रामसिंह
२८ किसुनसिंह
२९ सवाई जयसिंह
३० ईश्वरीसिंह
३१ माधवसिंह
३२ पृथ्वीसिंह
३३ प्रतापसिंह
३४ जगत्सिंह
३५ जयसिंह
३६ रामसिंह
३७ माधवसिंह

टोंक।

जयपुरसे करीब ६५ मील दक्षिण जयपुरसे बूंदी जानेवाली सड़क पर प्रायः दोनोंके बीचमें बनास नदीके दाहिने किनारेसे १ मील दक्षिण राजपूतानेमें देशी राज्यकी राजधानी टोंक एक छोटा शहर है। यह २६ अंश १० कला ४२ विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश ५० कला ६ विकला पूर्व देशान्तरमें स्थित है। वहां रेलकी सड़क नहीं गई है। शहर दीवार से घेरा हुआ है। घेरेके भीतर मट्टीका किला है। शहरमें नवाबका महल, इनकी कचहरियां और कई एक उद्यान देखने योग्य वस्तु हैं।

इस सालकी जन-संख्याके समय टोंकमें ४६०६९ मनुष्यथे, अर्थात् २३२८९ पुरुष और २२७८० स्त्रियां। जिनमें २२५७९ हिन्दू, २१९२१ मुसलमान, १५५६ जैन और १३ कृस्तानथे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ८६ वां और राजपूतानेमें ७ वां शहर है।

टोंक राज्य टोंक, हारावती और टोंक एजेंसीके पोलिटिकल सुपरिंटेंडेंटके अधीन राजपूतानेमें यह देशी राज्य है। राजपूतानेमें केवल यही मुसलमानी राज्य है। राज्यका क्षेत्रफल २५०९ वर्गमील है और इसकी मालगुजारी लगभग १२ लाख रुपया आती है। इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय टोंक राज्यमें ३७९३३० मनुष्य और सन १८८१ में ३३८०२९ मनुष्यथे, अर्थात् २९३७५७ हिन्दू, ३८५६१ मुसलमान, ५६९३ जैन और १८ कृस्तान। हिन्दू और जैनोंमें ३४०२९ चमार, २०१६८ ब्राह्मण, १९५०१ महाजन, १६८२५ राजपूत, १६५६८ गूजर, १५७९८ मीना, १४५५३ जाट, १०५०१ अहीरथे। मुसलमानोंमें १५५८३ पठान, १०५४९ सेख, २६९६ सैयद, ९१० मुगल और ८८२३ दूसरेथे। राज्यका सैनिक बल ५३६ सवार, २८८६ पैदल, ८ मैदानकी और ४५ दूसरी तोपें और १७५ गोलंदाज हैं।

इतिहास–बादशाह मुहम्मद गाजीके समय तालाखां बोनर देशसे आकर रुहेलखंडमें नौकरी करने लगा। उसके पुत्र हयातखांने कुछ जमीनको अपने कब्जेमें किया। हयातखांका पुत्र अमीरखां सन १७९८ ई० में जब ३० वर्षका था, तब हुलकरके अधीन एक बड़ी सेनाका कमांडर हुआ। हुलकरने सन १८०६ में टोंकका राज्य उसको देदिया। अमीरखांने सन १८०९ में ४०००० घोड़सवार लेकर नागपुरके राजा पर चढ़ाईकी; फिरते समय उसकी सेनाने देशको लूटा।

अंगरेजोंने सन १८१७ में पिंडारियोंको दबानेके लिये अमीरखांको टोंकका राज्य देकर सुलह कर लिया। अमीरखां सन १८३४ में मरगया। उसका पुत्र वजीर महम्मदखां उत्तराधिकारी हुआ। सन १८६४ में उसके मरनेके उपरांत उसका पुत्र महम्मद अलीखां टोंककी गद्दीपर बैठा, जो लावाके ठाकुरकी सहायता करनेके अपराधमें सन १८६७ में तख्तसे उतार दिया गया और उसका लड़का राजगद्दीपर बैठाया गया जो टोंकका वर्तमान नवाब सर मुहम्मद इब्राहिम अलीखां बहादुर सैलात जंग जी० सी० एस० आई० ४२ वर्षकी अवस्थाका बोनर पठान है। टोंकके नव्वाबोंको अंगरेजी सरकारकी तरफसे १७ तोपोंकी सलामी मिलती है।

तेरहवाँ अध्याय।

(राजपूतानामें) साँभर, देवयानी, बीकानेर, जोधपुर और जैसलमेर ।

साँभर ।

जयपुरसे ३५ मील (बांदीकुंई जंक्शनसे ९१ मील) पश्चिम कलेरा जंक्शन है, जिससे ४ मील पश्चिमोत्तर सांभर स्टेशन है। सांभर झीलके पास जयपुरके राज्यमें सांभर एक कसबा है।

इस सालकी मनुष्य-गणनाके समय सांभरमें ८२८० हिन्दू, ३९११ मुसलमान, १५८ जैन और १३ क्रस्तान कुल १२३६२ मनुष्य थे ।

स्टेशनसे १ मील झील तक पक्की सड़क है । चारों तरफका देश सूखा है, क्योंकि यह निमकदार चट्टानोंसे बना है । जब वर्षा चट्टानोंकी धोती है, तब निमक झीलमें चला जाता है वर्षाकालके पश्चात् यह झील पूर्वसे पश्चिम तक २१ मील लम्बी और उत्तरसे दक्षिण तक औसत ५ मील चौड़ी रहती है । किनारेसे १मील भीतर तक इसकी गहराई केवल २ फीट है । झीलके पूर्व और उत्तर किनारों पर निमकका काम होता है । प्रतिवर्ष झीलसे औसत ३०००० से ४०००० टन तक निमक निकलता है । करीब एक मन निमक इकट्ठा करने और निकालनेमें आना खर्च पड़ता है । सत्रहवीं सदीसे सन १८७० ई० तक निमकका काम जयपुर और जोधपुरके अख्तियारमें था, पश्चात् अंगरेजी गवर्नमेंटने इसका ठीका लेलिया जो दोनों राजावोंको प्रतिवर्ष सत्रह अठारह लाख रुपया देती है ।

सांभरके निकट बरहनामें दादूपन्थी सम्प्रदायका मुख्य स्थान है, जहां दादूजीका देहान्त हुआ था । इस सम्प्रदायका वृत्तांत निरानामें देखो ।

देवयानी ।

सांभर बस्तीसे २ मील देवयानी नामक स्थान है । शुक्राचार्यकी पुत्री और राजा ययातिकी स्त्री देवयानीके नामसे इस स्थानका यह नाम पड़ा है । यहां एक सरोवरके समीप कई छोटे मन्दिर हैं, जिनमें शुक्राचार्य, देवयानी आदिकी मूर्तियां स्थापित हैं ।

इसी स्थानपर वृषपर्वा दैत्यकी कन्या शर्मिष्ठाने देवयानीको कूपमें डालदिया था । राजा ययातिने उसको कूपसे निकाला, इसलिये राजाका विवाह देवयानीसे हुआ ।

यहां वैशाखकी पूर्णिमाको एक मेला होता है, जिसमें राजपूतानेके अनेक स्थानोंसे बहुत यात्री आते हैं ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा-महाभारत-(आदि पर्व ७८ वां अध्याय) शुक्राचार्यकी कन्या देवयानी और दैत्यराज वृषपर्वाकी पुत्री शर्मिष्ठा अन्य कन्याओं सहित एक वनमें जलक्रीडा कर रही थीं । इन्द्रने वायु रूप होकर उनके वस्त्रोंको एक दूसरेसे मिला दिया । शर्मिष्ठाने वस्त्रोंकी मिलावट न जानकर देवयानीका वस्त्र लेलिया । देवयानी बोली कि हे असुरपुत्री ! तुम शिष्या होकर क्यों मेरा वस्त्र ले रही हो, तुममें शिष्टाचार नहीं है । शर्मिष्ठाने देवयानीको वस्त्रके लिये बड़ी आसक्त देख उसको बहुत दुर्वचन कहा और उसको एक कूपमें डाल वह अपने गृहको चली गई ।

राजा नहुषके पुत्र राजा ययाति मृगयाके लिये उस वनमें आए थे, उन्होंने घोडोंके बहुत थक जानेपर जल ढूँढते हुए एक सूखा कूप पाया और जब देखा कि कूपमें एक कन्या रो रही है, तब उसको कूपसे निकाला । राजा ययातिने उसी क्षण अपने नगरको प्रस्थान किया देवयानीने अपने पिता के पास यह संदेसा भेजा । शुक्राचार्य वहां आए।

(८० वां अध्याय) शुक्राचार्यने वृषपर्वाके समीप जाकर उससे कहा कि मैं तुमको अब त्याग दूंगा । दैत्यराजने कहा कि आप मुझपर प्रसन्न होइए । आपके बिना मेरी कोई दूसरी गति नहीं है । शुक्रने कहा कि देवयानीको प्रसन्न करो । वृषपर्वाने देवयानीसे कहा कि जो तुम्हारी कामना हो, सो कहो उसे मैं पूर्ण करूंगा । देवयानी बोली कि मैं चाहती हूं कि सहस्र कन्या-ओंके साथ शर्मिष्ठा मेरी दासी बने । शर्मिष्ठा अपनी दासियों सहित देवयानीकी दासी बनी ।

(८१ वां अध्याय) बहुत दिनोंके पश्चात् देवयानी पूर्व कथित वनमें खेलने गई और सहस्र दासी और शर्मिष्ठाके सहित घूमने लगी । इसी समय राजा ययाति मृगयाके लिये फिर वहां आ पहुंचे और बोले कि तुम कौन हो । परस्पर बात होने पर देवयानी पूर्व वृत्तांतको जानकर राजासे बोली कि आपहीने पहिले मेरा पाणिग्रहण किया है, इससे मैं आपको अपना पति बनाऊंगी । ऐसा कह उसने शुक्राचार्यसे अपना मनोरथ कह सुनाया । शुक्रकी आज्ञासे राजा ययातिने शास्त्रोक्त बिधिके अनुसार देवयानीसे विवाह किया और शुक्रसे २००० दासी और शर्मिष्ठा सहित देवयानीको प्राप्त कर वह निज राजधानीको चले गए इत्यादि ।

(देवयानी और ययाति की यह कथा मत्स्यपुराण के २४ वें अध्याय और श्रीमद्भागवत नवम स्कन्ध के १८ वें अध्याय में भी है)

बीकानेर ।

फलेरा जंक्शन से १९ मील पश्चिमोत्तर राजपूताना मालवा बैंच का खतमी स्टेशन कुचामन रोड है, जिससे ७३ मील पश्चिम थोडा दक्षिण जोधपुर बीकानेर रेलवे पर भर्त्ता रोड जंक्शनहै । भर्त्तारोड से १०३ मील उत्तर कुछ पश्चिम बीकानेर का रेलवे स्टेशन है ।

बीकानेर राजपूताने में एक प्रसिद्ध देशी राज्य की राजधानी ऊंची पथरीली भूमि पर कँगूरेदार पत्थर की शहरपनाह के भीतर एक छोटा शहर है । यह २८ अंश उत्तर अक्षांश और ७३ अंश २२ कला पूर्व देशांतर में स्थित है शहर दीवारकी ३ ½ मील लम्बी, ६ फीट मोटी और १५ से ३० फीट तक ऊंची है । इस में ५ फाटक बने हैं और इसके ३ बगलों पर खाई हैं । शहरमें बहुतेरे सुन्दर मकान हैं, जिनके आगे नकाशीदार लाल बालूदार पत्थर के काम हैं । मकान तंग और मैली गलियों में हैं । नीचे दरजे के मकान लाल मट्टी से रंगे हुएहैं।

इस वर्षकी मनुष्य गणना के समय बीकानेर शहर में५६२५२मनुष्य थे । (२७८९६ पुरुष और २८३५६ स्त्रियां) इनमें ४१००८ हिन्दू, १०४९० मुसलमान, ४६८६ जैन,४२ सिक्ख; १७ क्रस्तान, और ९ पारसी थे । मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ६७ वां और राजपूताने में ४ था शहर है ।

बीकानेर का किला, जिसमें महाराज का महल है शहर के कोट फाटक से ३०० गज दूर है । किले के चारों ओर की खाई सिरे के पास ३० फीट चौडी और २० या २५ फीट गहरी हैं । राजा रायसिंह ने सम्वत् १६४५ (सन १५८८ ई०) में इस किले को बनवाया । बीकाराव का बनवाया हुआ छोटा किला शहर की दीवार के बाहर दक्षिण ओर ऊंची चट्टानी

भूमि पर है, जिसके भीतर बीकाराव और उनके उत्तराधिकारियों के अनेक समाधि मन्दिर हैं। महाराज के महल का घेरा १०७८ गज है, जिसमें २ फाटक लगे हैं। महाराज का महल पुरानी चाल का बहुत सुन्दर है। बीकानेरमें ४१ कूप हैं । शहर के बाहर का अर्क सागर नामक कूप राज्य के सब कूपों से उत्तम है। बीकानेर के कूपों में ३०० या ४०० फीट नीचे पानीहै । शहर में १३ मन्दिर, १४ मसजिद और ७ जैनोंके मठहैं। "डूंगरसिंह कालेज" में अंगरेजी पढाई जाती है।

शहर से ३ मील पूर्व बीकानेर का तालाब है, जिसके चारों ओर कल्यान सिंहसे रतनसिंह तक १२ राजाओं के गुंबजदार समाधि मन्दिर हैं, जिनमें से कई एक उत्तम इमारत हैं। सबों में स्तम्भ लगे हैं। तालाब से थोडी दूर एक महल है। कभी कभी राजा और उनकी स्त्रियां देवीकुंड में पूजा करने के लिये आकर इसमें टिकती हैं । देवी कुंडपर बीकानेर के राजकुमारों का मुंडन होता है ।

बीकानेर राज्य—बीकानेर राजपूताने के पोलिटिकल एजेंट और गवर्नर जनरल के एजेंटके पोलिटिकल सुपरिंटेंडेंटके अधीन राजपूतानेमें देशी राज्य है इसके पश्चिमोत्तर बहावलपुर राज्य; पूर्वोत्तर पंजाबमें सिरसा और हिसार अंगरेजी जिले, पूर्व जयपुर राज्य और दक्षिण और दक्षिण–पश्चिम जोधपुर और जैसलमेर राज्य हैं।

राज्यका आनुमानिक क्षेत्रफल २२३४४ वर्गमील है । मनुष्य–संख्या इस वर्षकी मनुष्य गणनाके समय ८३१२१० और सन ११८१ में ५०९०८१ थी, जिनमें ४३६१९० हिन्दू- ५०८७४ मुसलमान, २१९४३ जैन, और १४ कृस्तान ६ कसबे और १७३३ गांवोंमें बसे थे। हिन्दू और जैनोंमें ५५८१६ ब्राह्मण, ४९९०७ बनियां और ४१६९६ राजपूत थे। यह राज्य राजपूतानेके देशी राज्योंमें क्षेत्रफलके अनुसार दूसरा और मनुष्य–संख्याके अनुसार चौथा है। इस राज्यमें चुरू (जनसंख्या १४०१४) और रतनगढ (जनसंख्या १०५३६) बड़े कसबे और सुजनगढ भटनेर इत्यादि छोटे कसबे हैं। राज्यकी मालगुजारी लगभग१८००००० रुपया है राज्यके दक्षिण और पूर्वोत्तरके अधिक भाग मारवाड और जयपुरके उत्तर भागको शामिल करते हुए बागर नामक बड़े बालूदार देशका हिस्सा बनते हैं। पश्चिमोत्तर और उत्तरका भाग भारतवर्षके बड़े मरुस्थलके भीतर है। राज्यमें जयपुर और जोधपुरकी सीमा- ओंपर चट्टानी पहाड़ियां हैं, जो मैदानके सतहसे ५०० फीटसे अधिक ऊंची नहीं हैं। बीकानेर शहरसे दक्षिण–पश्चिम जैसलमेरकी सीमातक सख्त और पत्थरीला देश है, लेकिन देशके बड़े भागोंमें २० फीटसे १०० फीट तक ऊंची बालूकी पहाड़ियां हैं। बस्ती दूरदूरपर हैं। यद्यपि घास और जंगली झाड़ियां जगह जगह बहुत हैं, परन्तु देशका आकार उदास और उजाड़ है। चंद कसबोंके निकट वृक्ष बेरके लगाए गएहैं। वर्षाकालमें देश घासोंसे हरा भरा हो जाता है।

बीकानेर राज्यमें कोई नदी या धारा नहीं है। वर्षाके समय कभी कभी शेखावाटीसे राज्यकी पूर्वी सीमा पर एक नाला बहता है, जो तुरंतही बालूमें गुप्तहो जाता है। बीकानेर राजधानीसे लगभग २० मील दक्षिण-पश्चिम मीठे पानीकी गजनर नामक झील है, जहां मैदानमें मनोहर महल और बाग बने हैं। झीलके चारों ओर जंगल है। उससे १२ मील आगे जैसलमेरकी ओर एक पवित्र स्थान पर मीठे पानीकी झील है, जिसके किनारे पर कई घाट बने हैं। सुजनगढ़ जिलेमें ६ मील लंबी २ मील चौड़ी और बहुत कम गहरी, जो

गर्मीके पहिलेही सूख जाती है, निमककी झील है। निमककी दूसरी झील बीकानेरसे करीब ४० मील पूर्वोत्तर है। इन झीलोंका निमक अच्छा नहीं होता। सांभर निमकसे इसका मूल्य आधा है। शहरके प्रायः सब कूप ३०० फीटसे अधिक गहरे हैं, परंतु १० वा १२ मील उत्तर या पूर्वोत्तर सतहसे २० फीटके भीतर पानी मिलता है। देशके लोग वर्षाके पानी पर अधिक भरोसा रखते हैं। पोखरों और कुण्डोंमें वे वर्षाका पानी रखते हैं। बीकानेर और नागौड़के रास्तेमें नोखाके पास ४०० फीट गहरा ३ $\frac{1}{2}$ फीट व्यासका एक कूप है। गर्म ऋतुओंमें पानीकी बड़ी तंगी हो जाती है। सर्दीके दिनोंमें अधिक सर्दी होती है। गरमीमें बड़ी गरमी पड़ती है। बहुधा बालूका भारी तूफान हुआ करता है। राज्यके बहुतेरे भागोंमें, खासकर बीकानेर शहर और सुजनगढ़ कसबेके पड़ोसमें चूना बहुत होता है। ३० मील पूर्वोत्तर खारीमें और बीकानेरके पश्चिम खानसे लाल बालूदार पत्थर निकलता है। ३० मील दक्षिण-पश्चिम बहुत सज्जी निकाली जाती है, जो साबुन और कपड़े रंगनेके काममें आती है। शहरसे ७० मील पूर्व सुजनगढ़ जिलेमें बिडासरके निकट पहले एक पहाड़ीसे तांबा निकाला जाताथा, परंतु बहुतेरे बर्षोंसे खानमें काम नहीं होता है। राज्यका मुख्य फसिल बाजड़ा और मोठ है। तरबूजा और ककड़ीभी होती है। यहांके पालतू पशु भारतवर्षके दूसरे भागोंके पशुओंसे अधिक अच्छे होते हैं, मवेसी और भैंसे प्रसिद्ध हैं और घोड़े मजबूत होते हैं। निवासियोंका प्रधान धन जानवरोंके झुंड हैं। प्रधान दस्तकारी ऊनी बनावट और कंबल हैं। ऊन, सोडा, सज्जी, गल्ला, चमड़ेकी मसक हाथीदांतकी चूड़ी आदि चीजें दूसरे देशोंमें भेजी जाती हैं और राजपूतानेमें अधिक खर्च होती हैं।

इतिहास–बीकानेरका राजकुल राठौर राजपूत है। जोधपुरके बसानेवाले जोधरावका छठवें पुत्र बीकारावने, जिसका जन्म सन १४३९ ई० में था, बीकानेरको बसाकर अपनी राजधानी बनाई। सन १८०८ ई० में बीकानेरके महाराज सूरतसिंहसे अंगरेजी गवर्नमेंटका प्रथम संबंध हुआ। सन १८१८ में जब पिंडारी देशको लूटतेथे, तब अंगरेजी फौजोंने राज-विद्रोहियोंको हटाया। अंगरेजोंने ११ किलोंको छीनकर महाराजको देदिया। महाराज सूरतसिंह सन १८१८ में मर गए और रतनसिंह उत्तराधिकार हुए। सन १८४५ और १८४८ की सिक्खोंकी दोनों लड़ाइयोंमें महाराजने अंगरेजोंकी सहायताकी और सन १८५७ के बलवेके समय महाराज सरदारसिंहने फौज द्वारा अंगरेजी गवर्नमेंटकी सहायताकी, इसके बदलेमें महाराजको ४१ गांव मिले। बीकानेरके वर्तमान महाराज गंगासिंह बहादुर ११ वर्ष अवस्थाके दत्तक पुत्र हैं। यहांके राजाओंको अंगरेजीगवर्नमेंटकी ओरसे १७ तोपोंकी सलामी मिलती है। राज्यका फौजी बल ९६० सवार, १७०० पैदल, २४ मैदानकी और ५६ दूसरी तोपें और १८० गोलंदाज हैं।

जोधपुर।

भर्ता रोड जंकूशनसे पश्चिम दक्षिण ६३ मील जोधपुर महलका स्टेशन और ६४ मील जोधपुर का स्टेशन है।

जोधपुर राजपूतानेके मारवाड़ प्रदेशके देशी राज्यकी प्रसिद्ध राजधानी (२३ अंश १७ कला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश ४ कला पूर्व देशांतर में) एक छोटा शहर है। यहां चीफ और पोलिटिकल एजेंट रहते हैं।

इस सालकी जन-संख्याके समय जोधपुरमें ६१८४९ मनुष्यथे, अर्थात् ३१७०६ पुरुष और ३०१४३ स्त्रियां। जिनमें ४३००८ हिन्दू, १३६७६ मुसलमान, ५०४० जैन, ११३ क्रुस्तान, ९ यहूदी और ३ बौद्धथे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ५८ वां और राजपूतानेमें तीसरा शहर है।

बालूदार पत्थरकी पहाडियोंका सिलसिला पूर्व और पश्चिमको गया है, जिसके दक्षिण छोरके नीचे ६ मीलकी दृढ़ दीवारसे घेरा हुआ जोधपुर शहर है, जिसमें ७ फाटक हैं। शहरमें अनेक उत्तम मकान, मन्दिर और तालाब पत्थरसे बने हैं। एक पुराने महलमें अब दर्बारसिंह का स्कूल है। धानमंडी में एक मन्दिर है। जोधपुरमें २ स्कूल हैं। एकमें ठाकुरोंके लड़के और दूसरेमें अन्य लडके पढते हैं। नया बना हुआ १ बड़ा जेल है, जिसमें ३ महीनेसे अधिक मैयाद वाले संपूर्ण कैदी भेजे जाते हैं।

किलेके चारों तरफ शहर है। शहर और मैदानसे ३०० फीट ऊपर पहाडी पर किला है। दृढ दीवार पहाडीके सिरको घेरती है, जिसमें बहुतेरे गोलाकार बुर्ज्ज पुश्तेहैं। पहाडीके उत्तर किनारेके निकट १२० फीट खडी उँचाई पर किलेके भीतर महाराजका उत्तम महल है। पहाडीके सिरके पास पुराने महल हैं, जहां आंगनोंके भीतर आंगन हैं, जिनके बगलोंमें सुन्दर संगतरासी की खिडकियां हैं।

जोधपुरमें प्रधान तालाब ये हैं,—(१) शहरके पश्चिमोत्तर भागमें चट्टान काटकर पद्मसागर नामक छोटा तालाब बना है। (२) उसी ओर पश्चिम दरवाजेके कदमके पास किलेमें रानीसागर तालाब है। (३) पूर्व ओर पत्थरका सुन्दर गुलाबसागर है। (४) शहरके दक्षिण बाईजीका तालाब फैला है. परंतु इसमें सर्वदा जल नहीं रहता। (५) पूर्वोत्तर हालका बना हुआ सरदार सागर है (६) एक मील पश्चिम एक झीलहै. जो अखैरा जीका तालाब कहलाताहै। (७) शहरसे ३ मील उत्तर एक सुन्दर तालाब है, जिसके बांध पर एक महल और नीचे एक बाग है, जहां गर्मीके दिनोंमें महाराज टिकते हैं। वहांसे शहर तक नहर गई है। पहले जोधपुरमें पानी बहुत कम था; स्त्रियों को पानीके लिये मांडोर जाना पड़ताथा, परंतु अब नल द्वारा पानी पहुंचाया जाता है।

शहरके दक्षिण पूर्व रायका बाग महल है, जहां चीफ रहताहै। उसके समीप कचहरी का बहुत बडा मकान है। जोधपुर में चैत्रमें एक बडा मजहबी मेला होता है। शहरके पूर्वोत्तर कोनके बाहर करीब ½ मीलके अंतर पर पत्थर की दीवारके भीतर ८०० मकानों की शहरतली है।

मांडोर–जोधपुरसे करीब ३ मील उत्तर मांडोर है, जो जोधपुरके बसनेसे पहले मारवाड की राजधानी था। वहां पहलेके राजाओंकी छत्तरी (समाधि-मन्दिर) हैं, जिनमें कई एक सुन्दर हैं। अजितसिंहकी छत्तरी सन १७२४ की बनी हुई सब छतरियोंसे बड़ी और उत्तम है। वहां से थोडी दूर सर्व देवालय है, जिसको लोग ३० कोटि देवताओंका मन्दिर कहतेहैं। उसके पास अजितसिंहके बादके राजा अभयसिंहका (जो सन १७२४ में राजा हुए थे) महल हीन दशामें पडा है। उसमें बहुत चमगादुर रहते हैं।

जोधपुर राज्य-यह पश्चिमी राजपूतानेके राज्योंकी एजेंसीके अधीन राजपूतानेमें प्रसिद्ध देशी राज्य है। इसके उत्तर बीकानेर राज्य और जयपुरका शेखावाटी जिला, पूर्व जयपुर और

किसुनगढ राज्य, पूर्वोत्तर अजमेर और मेरवाड़ा अंगरेजी जिले, दक्षिण पूर्व मेवाड; दक्षिण सिरोही राज्य और पालनपुर, पश्चिम कच्छ कारन और सिंध प्रदेशमें थर और पारकर जिला और पश्चिमोत्तर जैसलमेर देशी राज्य है । इसकी सबसे अधिक लंबाई पूर्वोत्तरसे दक्षिण पश्चिम तक लगभग २९० मील और सबसे अधिक चौडाई १३० मील है । इसका क्षेत्रफल राजपूतानेके राज्योंसे सबसे बडा अर्थात् ३७००० वर्गमील है । राज्यसे ४१ लाख ५० हजार रुपया मालगुजारी आती है ।

सागरमती नदी अजमेरमें झीलसे निकलती है । सरस्वती नदी पुष्कर झीलसे निकलती है । गोविंदगढके पास दोनोंके संगम होनेके उपरान्त इनका लूनी नाम पड़ता है, जो गोविंदगढसे मारवाड़ राज्यके दक्षिण-पश्चिम भागमें होकर बहती है और अंतमें कच्छके रनके सिरके पास दलदल भूमिमें गुप्त होजाती है । इसकी बहुत सहायक नदिया हैं, जो खासकर अर्बली पहाड़ियोंसे निकली हैं । मारवाड़के जिलोंमें नदीके विस्तरमें कूएं खने जाते हैं, जिनसे बहुतेरे गेहूं और जवकी भूमि पटाई जाती हैं । सूखी ऋतुओंमें नदीके विस्तरमें खरबूजे और सिंगहाडे बहुत उत्पन्न होते हैं ।

जयपुर और जोधपुरकी सीमाओं पर प्रसिद्ध सांभर झील है । इसके बाद एक जोधपुर के उत्तर डिडवानामें और दूसरी पंचभद्रामें झील हैं, जिनसे सन १८७७ ई० में १४५०००० मन निमक निकला था । साकोर जिलेमें एक बडी झील है, जो बर्षाकालमें ४० या ५० मील क्षेत्रफलको छिपाती है । झील सूखनेपर उसके विस्तरमें गेहूं और चनेकी अच्छी फसिल होती है राज्यके लगभग ७० गांवोंमें निमक पैदा होता है ।

राज्यका बड़ा हिस्सा बीरान है । बहुत रेगिस्तान और स्थान स्थान पर पहाड़ियां हैं । दक्षिण-पूर्व सीमाओंके भीतरका हिस्सा अर्बली पहाडियां हैं । जोधपुर शहरके उत्तर थल नामक बालूका बड़ा मैदान है, जिसमें पानी बहुत कम है । भूमिके सतहसे २०० से ३०० फीट तक नीचे पानी है । जोधपुरमें बहुधा वार्षिक औसत १४ ईंचसे अधिक बर्षा नहीं होती है । सन १८८१में बहुत अधिक वर्षा थी;तब शहरमें२२ ईंच बर्षा हुई थी । उत्तर मकरानामें खानसे मार्बुल बहुत निकलताहै और दक्षिण-पूर्वकी सीमापर धनीराओंके निकट उससे कम । कपूरीमें सज्जी बहुत होती है, जिसको मुलतानी मट्टी भी कहते हैं । इससे देशी लोग बाल साफ करते हैं । बर्षाकालकी प्रधान फसिल बाजड़ा, ज्वार, मोठ इत्यादि हैं । राज्यके उपजाऊ हिस्सेमें गेहूं और जव अधिक उत्पन्न होते हैं ।

इस वर्षकी मनुष्य--गणनाके समय जोधपुर राज्यमें २५२४०३० मनुष्य थे, और सन १८८१ में ३७८५ कसबे और गांवों में १७५०४०३ (प्रति वर्गमीलमें औसत ४७) मनुष्य थे । अर्थात् १४२१८९१ हिन्दू, १७२४०४ जैन, १६५८०२ मुसलमान, २०७ कृस्तान और ९९ दूसरे ।

जोधपुरके बालूदार हिस्सेमें और मलानीमें ठाकुरोंके मकानोंको छोड़कर अधिक मकान गोलाकार झोंपड़ी हैं । जंगली जानवरों और चोरोंके भयसे बहुतेरी बस्ती मजबूत घेरेसे घेरी हुई हैं । जोधपुर राज्यको मारवाड़ अर्थात् मौतका स्थान कहते हैं । यहांके मारवाडी ब्योहार और ब्यापार करने में प्रसिद्ध हैं, जो भारतवर्षके सब विभागोंमें पाए जाते हैं । इनकी पगडी अजब तरहकी होती है । इस देशमें पगड़ी, रेशमी सूत, चमड़ेके बक्स और पीतलके बरतन

बनते हैं, निमक, मवेसी, घोड़ा, कपास, ऊन, रँगाहुआ कपड़ा, चमडा और अनार यहांसे दूसरे देशोंमें जाते हैं। मकरानासे मार्बुल और मार्बुलकी दस्तकारियां और बहुतेरी स्थानोंसे पत्थर अन्यदेशोंमें भेजे जाते हैं। गुड़, चावल, अफीम, मसाला, गोंद, सोहागा, नारियल, रेशम, चंदनकी लकडी और गल्ले दूसेर देशोंसे आते हैं।

जोधपुर राज्यमें नागौड सबसे बडा कसबा है, जिसमें इस बर्ष की मनुष्य-गणनाके समय १०३४० हिन्दू, ५१०२ मुसलमान और १७४९ जैन कुल १७१९१ मनुष्य थे। इसके अतिरिक्त पालीमें १७१५०, कचवारामें १२८१६, सुजातमें १२६२४, बिलारामें ११३८४, डिडवानामें ११३७६ और फतोदीमें १०४९७ मनुष्य थे।

तिलवाडामें चैत्र मासमें मेला होता है और १५ दिन तक रहता है। मुंडवामें पौष मास में मेला होता है, जिसमें ३०००० से ४०००० तक मनुष्य इकट्ठे होते हैं। जोधपुर शहरसे ६२ मील दाक्षिण पश्चिम लूनीके दहीने किनारेपर बालोत्रा (जन-संख्या सन १८८१ में ७२७५) एक कसबा है, जिसमें प्रतिवर्ष चैत्र मासमें मेला होता है और १५ दिन रहता है। मेलेमें ३०००० से अधिक मनुष्य आते हैं। परवस्तरमें भादौमें मेला होता है, जिसमें बैलकी सौदागरीके निमित्त खासकर जाट लोग आते हैं। बिलारा और वरपनामेंभी मेला होता है।

जोधपुरके स्टेशनसे २० मील दक्षिण लूनी नदीके पास लूनी जंकशन है, और लूनीसे६० मील पश्चिम पंचभद्राके पास निमकका कारखाना है जहां लूनीसे रेलवेकी शाखा गई है।

इतिहास—जोधपुरका राजकुल राठौर राजपूत हैं। यहांके राजा अपनेको सूर्यवंशी रामचन्द्रके वंशधर कहते हैं। सन ११९४ ईस्वीमें कन्नौजके पिछले राठौर राजाके पोता शिवाजी मारवाड़में आए। शिवाजीसे १० वीं पुस्तके राबचन्दाके समय तक राठौर लोग मारवाड़की राजधानी मांडोरको दखल नहीं करसके। लगभग सन १३८२ के राबचन्दाके समयसे मारवाड़पर राठौरोंका सच्चा अधिकार कहा जा सकता है। राबचन्दाके उत्तराधिकारी प्रसिद्ध वीर राव रीडमल हुए, जिनके पश्चात् उनके पुत्र जोधरावने सन १४५९ ई० में जोधपुर शहरको बसाया और उसको अपनी राजधानी बनाया। सन १५४४ ई०में अफगानी शेरशाह ८०००० आदमियोंकी एक सेना मारवाड़में लाया, परन्तु उसकी छोटी जीत हुई।

सन १५६१ में बादशाह अकबरने मारवाड़पर आक्रमण किया। संग्रामके अंतमें राजाने अधीनता स्वीकार करली राजाके देहांत होनेपर उनके पुत्र उदयसिंह उत्तराधिकारी हुए। उदयसिंहके पुत्र राजा सूरसिंह और सूरसिंहके पुत्र यशवंतसिंह हुए। जब शाहजहांके चारों पुत्रोंमें झगड़ा हुआ, तब यशवंतसिंह औरंगजेबके विरुद्ध फौजके कमांडर बनाए गए और परास्त हुए। पीछे यशवंतसिंहने औरंगजेबसे सुलह करली। उसके पीछे वह अजितसिंह दत्तक पुत्रको छोड़कर सिंध नदीके उसपार मरगए। औरंगजेबने मारवाड़पर आक्रमण करके जोधपुर और दूसरे बड़े कसबोंको लूटा। अजितसिंहको उनके पुत्र बख्तसिंहने मारडाला।

सिंधियांने मारवाडपर ६००००० रुपया राज्यकर नियत किया और अजमेर शहर और किलेको ले लिया। सन १८०३ ई० की महाराष्ट्रोंकी लड़ाईके आरम्भमें शरीफोंने जोधपुरके प्रधान होनेके लिये मानसिंहको चुना। मानसिंहने हुलकरकी सहायताकी इसलिये सन १८०४में संधि तोड़दी गई। सन १८१७ ई०में राजा मानसिंहके एकलौता लड़के छतरसिंह राजप्रतिनिधि हुए। पिंडारियोंकी लड़ाई आरम्भ होनेपर अंगरेजी गवर्नमेण्टके साथ जोधपुरका प्रबंध आरम्भ

हुआ । सन १८१८ ई० की संधिसे अंगरेजी गवर्नमेण्टकी रक्षामें जोधपुर हुआ । जोधपुरसे जो खिराज सिंधियाको दिया जाता था, वह अंगरेजी गवर्नमेण्टको दिया जाने लगा । संधिके पश्चात् छत्तरसिंह मरगए, जिसके पीछे उनके पिता मानसिंह जो पहिले उन्मत्ततामें थे, राजा हुए । मानसिंहके कुशाशनके कारण अंगरेजी गवर्नमेण्टने सन १८३९ ई०में जोधपुरमें ५ महीनेतक एक फौज रक्खी थी । मानसिंहने अपनी चाल सुधारनेका एकरार किया । ४ वर्ष पश्चात् जब वह निस्संतान मरगए, तब राज्यके सरदारों और विधवाओंने अजितसिंहकी संतान अहमदनगरके प्रधान तख्तसिंहको राजा पसंद किया और तख्तसिंह और उनके पुत्र यशवंत-सिंहको जोधपुरमें बुलाया । तख्तसिंह जोधपुरके राजसिंहासनपर बैठाए गए । सन१८७३ई०में महाराज तख्तसिंहका देहान्त हुआ और उनके पुत्र जोधपुरके वर्तमान नरेश महाराज सर यशवंतसिंह बहादुर जी० सी० एस आई० जिनका जन्म सन १८३७ ई० में हुआ था, राजसिंहासनपर बैठे, जिनके सुयोग्य भ्राता कर्नेल सर प्रतापसिंह और पुत्र युवराज सरदारसिंह हैं । जोधपुरके राजाओंको अंगरेजी गवर्नमेण्टकी ओरसे १९ तोपोंकी सलामी मिलती है ।

जैसलमेर ।

जोधपुरसे १४० मीलसे अधिक पश्चिमोत्तर राजपूतानेके पश्चिम विभागमें समुद्रके जलसे लगभग ८०० फीट ऊपर सख्त चट्टान पर देशी राज्यकी राजधानी जैसलमेर एक कसबा है । यह२६ अंश ५५ कला उत्तर अक्षांश और ७० अंश५७ कला पूर्व देशान्तरमें स्थितहै ।

इस वर्षकी मनुष्य--गणनाके समय इसमें १०५०९ मनुष्य थे, अर्थात् ८२१८ हिन्दू, १८४१ मुसलमान और ४५० जैन ।

क़सबेके मकान खास करके पीले पत्थरके हैं । कई धनी सौदागरोंके मकान सुन्दर हैं । कसबेके पास लगभग १०५० फीट लंबी और २५० फीट ऊंची पहाड़ी पर किला है, जिसकी दृढ़ दीवार २५ फीट ऊंची है । महारावलका महल किलेके प्रधान दर्वाजे पर पीले पत्थरका बना हुआ है । किलेमें कई एक सुन्दर जैन मन्दिर हैं । सबसे पुराना मन्दिर जो है, वह सन १३७१ में बना था ।

राजधानीसे १० मील दूर वर्षमें एक बार एक बड़ा मेला होता है ।

जैसलमेर राज्य--राज्यकी सबसे अधिक लंबाई पूर्वसे पश्चिम तक १७२ मील और सबसे अधिक चौड़ाई उत्तरसे दक्षिण तक १३६ मील है इसके उत्तर बहावलपुर राज्य, पूर्व बीकानेर और जोधपुर राज्य, दक्षिण जोधपुर राज्य और सिंध प्रदेश, और पश्चिम खैरपुर और सिंध हैं । राज्यका क्षेत्रफल १६४४७ वर्गमील है ।

राज्य प्रायः बालूदार उजाड़ है । राजधानीके पडोसमें लगभग ४० मीलके घेरेके भीतर पथरीली भूमि है और चौड़े सिरवाले बालूदार पत्थरके चट्टान हैं । राजधानीसे ३२ मील दक्षिण-पूर्व चोरियामें ४९० फीट गहरा एक कूप है । लोग बर्षाका पानी पीते हैं । कम बर्षा होने पर गांवोंके पानीके कुण्ड सूख जाते हैं। इस राज्यमें सर्वदा बहनेवाली कोई धारा नहीं है । केवल ककनी नामक एक छोटी नदी है । कभी कभी वर्षा बहुत कम होती है । सन १८७५ ई० में केवल दो दिन वर्षा हुई । जैसलमेरका पानी पवन सूखा है । राज्यमें केवल बर्साती फसिल बाजरा, ज्वार, तिल इत्यादि होती है । गेहूं जव आदि बहुत कम होते हैं । बर्सातके आरंभमें बालूकी पहाडियां ऊंटोंसे जोती जाती हैं और जमीनमें अधिक नीचे बीज बोए जातेहैं ।

सन १८८१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय इस राज्यमें एक कसबे और ४१३ गांवोंमें १०८१४३ मनुष्य (प्रति वर्गमीलमें औसत ६ से) थे। इनमें ५७४८४ हिन्दू, और २८०३२ मुसलमान, १६७१ जैन, २०९५५ दूसरे और १ कृस्तान थे । हिन्दू और जैनोंमें २६६२३ राजपूत, ७९८१ महाजन, ६०५५ ब्राह्मण, और ४०३ जाट थे।

राज्यकी मालगुजारी लगभग १५८००० रुपया है। बस्ती दूर दूर पर हैं, जिनमें गोल छप्पर वाले अधिकांश मकान हैं । बहुत जगहोंमें खारा जल है । कुंओंकी औसत गहराई २५० फीट है । ऊंट, मवेसी, भेड और बकरोंके झुंड पाले जाते हैं । ऊन, घी, ऊंट मवेसी और भेंडकी तिजारत होती है। राज्यमें बनाई हुई सड़क नहीं है। स्थानांतर गमनकी प्रधान सवारी ऊंट हैं । महारावलको ४०० पैदलकी एक सेना है, जिनमेंसे बहुतेरे ऊंटके सवार हैं और जागीरदारोंके सवारोंके साथ कुल ५०० घोड़ सवार हैं। इनके अतिरिक्त इनको १२ तोपें और २० गोलंदाज हैं।

इतिहास—जैसलमेरका राजकुल यदुवंशी राजपूत है, जिसके नियत करनेवाले देवराजका जन्म सन ८३६ ई० में हुआ था । देवराजसे पीछेके छठवें राजा रावल जैसलने सन ११५६ ई० में जैसलमेरको बसाया और वहां किला बनाया । सन १२९४ में अलाउद्दीनने राजधानी और किलेको छीन लिया था । १७ वीं सदीमें सबलसिंहने शाहजहांकी अधीनता स्वीकार करली । सन १७६२ में रावल मूलराज जैसलमेरके राजा हुए । उस समय राज्यका सौभाग्य बहुत जल्दी घट गया था । बाहरवाले देशोंमेंसे बहुतेरे जो उत्तर सतलजतक और पश्चिम सिंध तक फैले थे, छीन लिए गए थे । सन १८१८ में अंगरेजोंसे मूलराजके साथ संधि हुई । सन १८२० ईसवीमें मूलराजके मरनेके पश्चात् उनके पोते गजसिंहके उत्तराधिकारी हुए, जिनका देहांत सन १८४६ में हुआ । उनकी विधवाने गजसिंहके भतीजे रणजीतसिंहको गोद लिया । सन १८६४ इसवीमें महारावल रणजीतसिंहके मरनेपर उनके छोटे भाई महारावल बैरीशालसिंह राजसिंहासन पर बैठे । मृत महारावल बैरीशालसिंह बहादुरके शिशुपुत्र महारावल शालिवाहन बहादुर जैसलमेरके वर्तमान नरेश हैं । यहांके महारावलोंको अंगरेजी सरकारकी ओरसे १५ तोपोंकी सलामी मिलतीहै।

चौदहवाँ अध्याय।

(राजपूतानेमें) निराना, किसुनगढ, अजमेर और बियावर ।

निराना।

फलेरा जंक्शनसे ६ मील पश्चिम (बांदीकुई जंक्शनसे ९७ मील) निराना का स्टेशन है, जिसके समीप निराना वस्तीमें एक बडा तालाब और दादूपंथी संप्रदायका स्थान है।

दादूजी और उनके चेलोंने अपने मत और शिक्षाको बहुत करके पद्यभाषामें लिखा है । इस संप्रदायके बहुत लोग जयपुर आदि राज्योंकी फौजोंमें काम करते हैं । करीब ३५० वर्ष हुए, गुजरातके अहमदाबादमें नागर ब्राह्मण विनोदीरामके गृह दादूजीका जन्म हुआ । १२ वर्षकी अवस्थामें वह संन्यास ग्रहण कर राजपूतानेमें आकर आम्बेर, सिकरी; निराना आदि नगरोंमें बिराजे । उनका बडा प्रताप फैला । सांभरके निकट बरहनामें उनका देहांत हुआ।

दादूजीके शिष्योंमें सुन्दर स्वामी बहुत प्रसिद्ध हैं । उनका बनाया हुआ शाक्य ग्रंथ, ज्ञानसमुद्र और सुन्दरविलास प्रचलित है । सुन्दरदासके शिष्य नारायणदास, उनके शिष्य रामदास रामदासके दयाराम, दयारामके संतोषदास, संतोषदास के लालदास लालदास के बालकृष्णजी बालकृष्णजीके लक्ष्मीराम और लक्ष्मीरामके शिष्य क्षेमदासथे । क्षेमदासके शिष्य महंत गंगाराम मारवाडके फतहपुर रामगढमें हैं । इस पंथ वाले लोग सिरको मुंडवातेहैं और अपने धर्मका उपदेश करते हैं ।

किसुनगढ ।

निरानासे २५ मील (फलेरा जंक्शन से ३१ मील) पश्चिम-दक्षिण किसुनगढ का स्टेशन है । स्टेशनसे थोडी दूर राजपूतानेमें देशी राज्यकी राजधानी किसुनगढ एक कसबा है । यह २६ अंश३५कला उत्तर अक्षांश और७४अंश ५५ कला पूर्व देशान्तरमें स्थित है ।

इस सालकी मनुष्य गणनाके समय किसुनगढमें १२४५७ मनुष्यथे, अर्थात् १०५०४ हिन्दू ६३६८ मुसलमान, १५६२ जैन, १८ कृस्तान और ५ पारसी ।

किसुनगढका कसबा और किला एक छोटी झीलके किनारों पर है, जिसके मध्यमें महाराजका ग्रीष्म-भवन बना है । राजमहलके नीचे झीलके पास फूलमहल नामक महाराजके बागका मकान है, जिसमें यूरोपियन मोसाफिर टिकते हैं । कसबेमें ब्रजराजजी, मोहनलालजी मदनमोहनजी, नरसिंहजी और चिन्तामणिजीके सुन्दर मन्दिर, कोठी वालोंके मकान, एक पोष्ट आफिस और एक धर्मशाला है ।

किसुनगढ़से लगभग १२ मील दूर सलीमाबादमें एक मन्दिर है, जहां चारों ओरके जिलोंसे यात्री जाते ह ।

किसुनगढ़ राज्य-राजपूतानेके पूर्वी राज्योंके एजेंसीके पोलिटिकल सुपरिंटेंडेंसके अधीन यह देशी राज्य है । राज्यके उत्तरी भाग होकर रेल गई है ।

इस बर्षकी मनुष्य-गणनाके समय राज्यका क्षेत्रफल ८११ बर्गमील, मनुष्य-संख्या १२५५१६ और मालगुजारी३५७००० रुपया थी । सन १८८१ ई०में इस राज्यमें ११२६६३ मनुष्य थे, अर्थात् ९७८४६ हिन्दू, ८४९२ मुसलमान, और ६२९५ जैन । हिन्दू और जैनोंमें १४१५४ ब्राह्मण, १०५९९ महाजन, १०४५८ जाट, ८०५४ राजपूत, ७२०१ गूजर और ७१३७ बलाई थे ।

राज्यका सैनिक बल ६५० सवार, ३५०० पैदल, ३६ तोप और १०० गोलंदाज हैं ।

इतिहास-राजकुल राठौर राजपूत हैं । जोधपुरके राजा उदयसिंहके दूसरे पुत्र किसुनसिंहने इस देशको जीता । सन १५९४ में अकबरके अधीन वह इस देश पर हुकूमत करने वाले हुए । सन १६१३ में किसुनसिंह भटी बंशके गोबिन्ददासको मार कर किसुनगढ़के राजा बन गए । किसुनसिंहके सहस्रमल, जगमल, और भरमल ३ पुत्रथे ।

सन १८१८ ई० में अंगरेजी गवर्नमेंटसे किसुनगढ़के साथ सन्धि हुई । महाराज कल्यानसिंह, जो उन्मत्त ख्याल किए जातेथे, अपने पुत्र मखदूम सिंहको राज्य देकर आप राज्यसे अलगहो गए । मखदूमसिंहने महाराजाधिराज पृथ्वीसिंहको गोदलिया, जो सन १८४० में उनके उत्तराधिकारी हुए । महाराजाधिराज पृथ्वीसिंह सन १८७९ में ३ पुत्रोंको छोड़ कर मरगए । उनके बड़े पुत्र किसुनगढ़के वर्तमान नरेश महाराजाधिराज शार्दूलसिंह बहादुर, जिनका

जन्म सन १८५४ में हुआथा, उत्तराधिकारी हुए। इनके पुत्र राजकुमार मदनसिंह ७ वर्षके हैं। यहाँके राजाओंको अंगरेजी गवर्नमेंटकी ओरसे १५ तोपोंकी सलामी मिलती है।

अजमेर।

किसुनगढ़से १८ मील (फलेरा जंक्शनसे ४९ मील दक्षिण-पश्चिम) अजमेर जंक्शन स्टेशन है। राजपूतानेके मध्य भागमें (२६ अंश २७ कला १० विकला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश ४३ कला ५८ विकला पूर्व देशान्तरमें) अजमेर एक प्रसिद्ध शहर अंगरेजी राज्यमें है।

अजमेर शहरके प्रायः चारों तरफ पहाड़ियां हैं। तारागढ़ पहाड़ीके पांवके पास समुद्रके जलसे ३००० फीट ऊपर अजमेर शहर है। शहरके चारों ओर पत्थरकी पुरानी दीवार है, जिसमें दिल्ली दर्वाजा, आगरा दर्वाजा, मदार दर्वाजा, उस्री दर्वाजा और त्रिपली दर्वाजा नामक ५ फाटक हैं।

इस सालकी जन-संख्याके समय अजमेरमें ६८८४३ मनुष्यथे, अर्थात् १७९८५ पुरुष और ३०८५८ स्त्रियां। जिनमें ३७८२६ हिन्दू, २६४३३ मुसलमान, २७७० जैन, १४९७ कृस्तान, १५९ सिख, १४७ पारसी और ११ यहूदीथे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारत-वर्षमें ५० वां शहर है।

स्टेशनसे थोड़ी दूर एक धर्मशाला है। टिकनेके लिये किराए पर मकान मिलते हैं। शहरमें बहुतेरे पत्थरके सुन्दर मकान और सेठोंकी कई एक प्रसिद्ध कोठियां हैं। जलकल सर्वत्र लगी है। नई झीलसे और दो पक्के नालों द्वारा आनासागरसे पानी आता है, जो ज़मीनमें बने हैं और जगह जगह खुले हुए हैं। एक नालेसे शहरमें और दूसरेसे बाहर पानी जाता है। झालरा और दीगी नामक दो स्वाभाविक झरनोंसे भी पानी आता है। शहरपनाहके भीतर कोई अच्छे कूप नहीं हैं।

आनासागर–शहरके उत्तर आनासागर झील है, जिसको सन ईस्वीकी ग्यारहवीं सदीमें विशालदेवके पोते राजा आनाने बनवाया। झीलसे सागरमती, जो सरस्वतीसे मिलनेके पश्चात् लूनी नदी कहलाती है; निकली है। झील उत्तर अधिक फैली है। दक्षिण बांधके नीचे बाग है। झीलके निकट बादशाह जहांगीरका बनवाया हुआ दौलतबाग नामक एक बड़ा बाग सुन्दर वृक्षोंसे भरा है और झीलके किनारे पर मार्बुलके मकानोंका सिलसिला है; जो बहुत दिनों तक अजमेरमें आम आफिसथा, परन्तु अब इसका प्रधान मकान कमिश्नरकी कोठी है। सबसे सुन्दर मकान, जिसमें बादशाह बहुधा आराम करताथा, बहुत खर्चसे सुधारा गया है।

अकबरका महल–अकबरने शहरपनाहके बाहर एक किलाबन्दी महल बनवाया, जिसमें जहांगीर और शाहजहां आकर रहतेथे। वह रेलवे स्टेशनसे थोड़ीदूर है, जो पहले अंगरेजी शस्त्रागारथा, अब तहसीली है।

ख्वाजाकी दरगाह–शहरके पश्चिम बगलमें ख्वाजे मुईनउद्दीन चिश्तीकी प्रसिद्ध दरगाह है, जिसको वहांके हिन्दू और मुसलमान दोनों मानते हैं। दरगाहके एक मुसलमानने सबेरे धर्मशालेमें जाकर मुझको ख्वाजा साहबका प्रसाद पुष्प दिया, मैं दरगाहमें गया। ऊंचे फाटकके रास्तेसे आंगनमें जाना होता है, जहां लोहेका एक बड़ा और एक छोटा डेग रक्खा है। धनी

यात्री सालाना मेलेके समय जो ६ दिन रहताहै, डेगका तबाजा करतेहैं। भोजनकी सामग्रीसे साधारण तरहसे बडा डेग भरनेमें लगभग २०० रुपये और छोटा डेग भरनेमें १०० रुपये खर्च पडतेहैं। तिहवारके समय २००००के लगभग यात्री आते हैं। श्वेत मार्बुलसे बना हुआ मुरब्बा और गुम्बजदार चिश्तीका मकबरा है, जिसमें २ दर्वाजे हैं। सदर दर्वाजे पर चांदीकी मेहराबी लगीहै। आगेकी दीवारमें सुनहरा काम है। मकबरेमें ख्वाजे मुईनउद्दीन चिश्ती,उसकी २ स्त्री और कन्या, हाफिज जमाल और चिमनी बेगम, तथा बादशाह शाहजहांकी एक पुत्रीकी कबर है। हिन्दू और मुसलमान जूता बाहर निकाल कर मकबरेमें जाते हैं। क्रिश्चियन लोग मकबरेसे २० गजके भीतर नहीं जाने पाते हैं। दरगाहके घेरेके दक्षिण एक गहरा तालाब है।

चिश्तीकी दरगाहके पश्चिम बादशाह शाहजहांकी बनवाई हुई खूबसूरत मसजिद है। यह श्वेत मार्बुलसे बनी हुई लगभग १०० फीट लम्बी है। इसमें ११ मेहराबी हैं। तमाम लम्बाईमें खोदा हुआ पारसी लेख है। घेरेमें प्रवेश करनेके समय दहिने अकबरकी बनवाई हुई एक मसजिद मिलती है।

मुईनउद्दीन चिश्तीका जन्म मध्य एशियाके साजिहां नामक स्थानमें एक दरिद्र मुसलमान फकीरके घर सन ५३७ हिजरी (सन ११४२ ई०) में हुआ। जब वह १५ वर्षका था, तब उसका पिता एक छोटा बाग और पनचक्की यही जायदाद छोड कर मरगया। मुईनउद्दीनकी एक सिद्ध फकीरसे भेंट हुई। इसके उपरांत उसने फकीर होकर समरकंद, बोखारा,खोरासान, इस्तराबाद, इंपहान, बोगदाद इत्यादि मध्य एशियाके प्रसिद्ध स्थानोंमें २० वर्ष पर्यन्त भ्रमण किया। जब उन जगहोंके फकीरों और दरवेशोंके संगसे उसको बहुत ज्ञान लाभ हुआ, तब वह ख्वाजा (पवित्र) करके विख्यात होगया। मुईनउद्दीन कुछ दिन बोगदादमें रहकर अपने गुरु सहित मक्का गया, वहां कुछ दिन रहकर उसने मदीनाकी यात्राकी और उसके उपरांत अनेक देशोंमें पर्यटन करता हुआ कुछ काल हिरातमें निवास किया।

ख्वाजा साहबने ५२ वर्षकी अवस्थामें अजमेर आकर, जिस स्थानमें दरगाहकी स्वांगारा मसजिद है, विश्राम लिया। वहांसे आनासागरके किनारेकी पहाडी पर जाकर वह रहने लगा। पीछे लोगोंकी प्रार्थनासे ख्वाजाने उस स्थान पर, जहां वर्त्तमान दरगाह है, अपना निवास स्थान बनाया। उसने दो विवाह किएथे। प्रथम स्त्रीके वंश वाले अब तक ख्वाजे साहबकी दरगाहके अधिकारी हैं। ख्वाजा मुईनउद्दीन सन ६३३ हिजरी (१२३५ ई०) में ९६ वर्ष की अवस्थामें अजमेरमें मर गया। उसकी कबर इसी जगह दी गई।

ख्वाजा साहबकी दरगाह भारतवर्षके मुसलमानी धर्म स्थानोंमें प्रधान है। अकबरने मन्नत किया कि अगर एक पुत्र पैदा होगा तो मैं पांवप्यादे मकबरेमें आऊंगा। सन१५७० में उसका बडा पुत्र पैदा हुआ, बादशाह अजमेरको पैदल आया। बादशाह अकबर सालमें एक बार इस स्थान पर आता था। उसने फतहपुर सिकरीसे अजमेर तक सडकके प्रत्येक कोस पर एक खंभा बनवाया था, जिनमेंसे कई एक रेलवेसे अब तक देख पडते हैं।

ढाई दिनका झोंपडा–यह शहरके फाटकके ठीक बाहर है। ढाई दिनका झोपडा ऐसे नाम पडनेका कारण अनेक लोग अनेक तरहसे कहते हैं, जिनमें एक यह है कि सन ईस्वीकी तेरहवीं सदीके आरंभमें अल्तमसने यहांके जैनमन्दिरोंको ढाई दिनमें तोडवा कर उसके असबाबोंसे यह मसजिद बनवाई। दूसरे ऐसा कहते हैं कि प्रथम जैनमन्दिर बना, परंतु कुतुबुद्दीनने ढाई दिनमें उसको मुसलमानी पूजाका स्थान बना लिया, इसलिये इसका नाम ढाई दिनका झोंपडा पडा।

यह मसजिद तीन ओरसे खुली हुई है। इसमें १८ खंभोंके ४ कतार हैं। खंभोंकी दुरुस्तगी पूरी है। प्रति खंभोंकी नकाशी भिन्न भिन्न तरहकी है। मसजिद्के पास पुरानी जैनमूर्तियां बहुत पडी हैं।

चौहान राजा वीसलदेव अर्थात् विग्रहराजके बनाए हुए(विक्रमी संवत् १२१०का) हरकेलि नामक नाटकका कुछ हिस्सा शिलेके तख्तोंपर खोदा हुआ, इस मसजिदमें रक्षित है। लेख वर्त्तमान देवनगारीसे बहुत मिलता है।

सीसेकी खान–उसी दर्वाजेके बाहर तारागढ़के नीचे सीसा (धातु) की खान है, जिसमेंसे पहले सीसा निकलता था। इस अंधेरी खानमें रोशनी लेकर जाना होता है।

पुराना अजमेर–तारागढ़के पश्चिमकी घाटीमें पुराना अजमेर है, जो पहले चौहान राजाओंकी राजधानी था। दो एक टूटे हुए मकानोंके अतिरिक्त यहां अब कुछ पुराना चिह्न नहीं है। वर्तमान अजमेर शहर मुगलोंके राज्यके मध्यभागका बना है।

तारागढ़–यह पहाड़ी यहांकी सब पहाड़ियोंसे ऊंची अर्थात् अपने पासकी घाटीसे १३०० फीटसे अधिक ऊंची है। दो मील ऊपर चढनेके उपरांत आदमी तारागढके शिरेपर पहुँचते हैं। घोड़े वा झंपानकी सवारी जाती है। चौहान राजाओंके समय तारागढ उनका पहाडी किला था। ऊपरके भागमें एक फाटकके अतिरिक्त पुराने किलेका कुछ पुराना चिह्न नहीं है। पहाडी अत्यंत स्वास्थ्यकर है, इसलिये रोगग्रस्त अंगरेजोंके रहनेके लिये ऊपर मकान बने हैं। तारागढ़के ऊपरके भागमें मीरनहुसेनकी दरगाह है, जिसके खर्चके निमित्त ४००० रुपये वार्षिक आयकी भूमि है।

राजकुमार कालेज–राजकुमारोंके पढनेके लिये मेयो कालेज है, जिसमें ८ वर्षसे १८ वर्षके बीचकी अवस्थाके लडके पढते हैं। मध्यकी इमारतमें श्वेत मार्बुलका सुन्दर काम है। दूसरी इमारतोंमें राजकुमार और उनके नौकर रहते हैं, इस कालेजके अलावे अजमेरमें अजमेर कालेज है।

आर्य्यसमाज–अजमेरमें आर्य्यसमाजकी एक सभा है स्वामी दयानन्द सरस्वतीका देहांत सन १८८३ की तारीख ३० अकटूबरको अजमेरहीमें हुआ। इन्हींसे आर्य्यसमाजकी सृष्टि हुई है।

अजमेर प्रदेश–यह देश राजपूतानेके मध्यमें देशी राज्योंसे घेरा हुआ चीफ कमिश्नरके अधीन अंगरेजी राज्य है, जिसमें अजमेर और मेरवाडा दो भाग हैं। अजमेर प्रदेशके उत्तर किसुनगढ़ और जोधपुर राज्य, दक्षिण उदयपुर राज्य और पूर्व किसुनगढ़ और जयपुर राज्य है। इसका क्षेत्रफल २७११ वर्गमील है।

अजमेर प्रदेशमें प्रधान नदी बनास है, जो उदयपुरसे ४० मील पश्चिमोत्तर अर्बला पहाडियोंसे निकली है, और देवली छावनीके पास इस जिलेमें प्रवेश करती है। दूसरी खारी, दाई, सागरमती और सरस्वती ४ छोटी नदियां हैं। ४ छोटे स्वाभाविक जलाशय पहाडियोंके दबावमें हैं जिनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध पुष्करकी पवित्र झील है। तारागढ पहाडीमें सीसे, तांबे और लोहे होते हैं। जिलेमें पत्थर बहुत निकलता है। श्रीनगर और सिलोरामें पत्थरकी उत्तम खान हैं। अतीतमंद, खेताखेरा और देवगढमें भी पत्थर निकलता है।

यहां चीनी कपडा दूसरे देशोंसे आते हैं। रूई और यहांसे गल्ला, दाना, दूसरे देशोंमें जाते हैं। रेल बननेके पहले ऊंट और बैलोंसे सौदागरी होती थी।

इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय अजमेर प्रदेशमें ५४२३५८ मनुष्य थे अर्थात् ४३७९८८ हिन्दू, ७४२६५ मुसलमान, २६९३९ जैन, २६८२ कृस्तान, २१३ सिक्ख १९८ पारसी, ७१ यहूदी और २ अन्य इनमें सैकडे पीछे ५६ है हिन्दी भाषावाले ४२ है मारवाडी भाषावाले और १ है अन्य भाषा बोलने वाले हैं ।

अजमेर प्रदेशके शहर और कसबे जिनमें इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय ५००० से अधिक मनुष्य थे ये हैं,—अजमेर विभागमें अजमेर (जनसंख्या ६८८४३,) नसीराबाद (२१७१०) और केकडी (७१००) और मेरवाडा विभागमें बियावर (जनसंख्या२०९७८) ।

इतिहास-कहावतके अनुसार संवत् २०२ (सन १४५ ई०) में चौहान राजपूत राजा अजपालने तारागढकी पहाडीके पडोसमें अजयमेरु नामक किला बनवाया और उनका नामगढ बिटली रक्खा। उसने पहाडीके नीचे इंद्रकोट नामक घाटीमें एक शहरको बसाकर अपने नामसे उसका नाम अजमेर रक्खा । राजा अजपाल अपनी अंत अवस्थामें विरक्त होकर अपनी राजधानीसे १० मील दूर चला गया, जहां अजपालका मन्दिर अबतक उसके मरनेके स्थानको स्मरण कराता है ।

ठीक इतिहासका आरंभ अजमेरकी हुकूमत करने वाले दोलाराव चौहानसे ज्ञात होता है । वह सन ६८५ ई० में अरबके महम्मद कासिमके आक्रमणको रोकनेके लिये हिन्दुओंमें शामिल हुआ और परास्त होकर दुश्मनोंके हाथसे मारा गया । उसके उत्तराधिकारी मानिकरायने सांभरको नियत किया । (मानिकरायसे विशालदेव तक ११ राजाओंमेंसे ६ का नाम नहीं मिलता) हर्षराजने सुबुकतगीसे एक बड़ा संग्राम करके मुसलमानोंको अजमेरसे निकाल दिया और अरिमर्दनकी पदवी प्राप्त की । उससे पहले कुजगनदेवने सुबुकतगीसे १२०० घोड़े छीनकर सुलतानग्रहकी पदवी ली थी । बीर बिलनदेव गजनीके महमूदसे लड़नेके समय मारा गया । सन १०२४ में महमूद अजमेर होकर सोमनाथ गया । उसने अजमेरको लूटा, परन्तु तारागढ़के किलेमें अजमेरके लोग बच गए । उसके थोड़ेही पीछे विशालदेव अजमेरकी हुकूमत करने वाला हुआ । उसने विशालसागर नामक तालाब बनवाया, तोमरोंसे दिल्लीको जीता और मेरवाड़ाकी पहाड़ी कोमोंको दबाया । विशालदेवके पोते आनाने आनासागर झीलको बनवाया आनासे तीसरी पीढ़ीमें सोमेश्वर हुआ, जिसने दिल्लीके तोमर राजा अनंतपालकी पुत्रीसे विवाह किया, जिसका पुत्र सुविख्यात पृथ्वीराज (जिसको अनंगपालने गोद लिया था) । दिल्लीके राजसिंहासनपर बैठा, जो सन ११९३ ई० में शहाबुद्दीन महम्मदगोरीसे परास्त होकर मारा गया । उसका पुत्र रणसिंह भी उसी युद्धमें मरा । मुसलमानोंने अजमेरको लेलिया, रोकने वालोंको मारा, शेष लोगोंको दास बना कर रक्खा और अजमेरको अपने अधीन करके पृथ्वीराजके एक संबंधीको दे दिया, परन्तु पीछे जब उस राजाने मुसलमानोंकी अधीनता स्वीकार नहीं की, तब महम्मद गोरीके जनरल कुतुबुद्दीनने दिल्लीसे आकर अजमेरको अपने अधिकारमें कर लिया। उस समय अजमेरका राजा निराश होकर किलेमें अपनी स्त्रियोंके साथ अग्निमें जल गया । सन १२१० ई० में कुतुबुद्दीनके मरने पर राठौर और चौहानोंने रात्रिमें किले पर चढ़ाई करके मुसलमानी सेनाको मार डाला । किलेके सेनापति सैयद हुसेनकी कबर अब तक तारागढ़ में है । जब मुगलोंने दिल्लीको लूटा और तुगलक घराना नष्ट होगया, तब मेवाड़के राणा कुम्भने अजमेरको छीन लिया, परन्तु तुरन्तही वह मारा गया । सन १४६९ में मालवाके

मुसलमान बादशाहने अजमेरको लेलिया। सन १५३१ तक यह देश मालवाके प्रिंसोंके अधिकार में रहा, पश्चात् मारवाड़के राठौर राजा मालदेवने अजमेर पर अधिकार किया। उसने तारागढ़ किलेको दृढ बनाया। सन १५५६ में अकबरने इसको जीत लिया सन १७२० में अजितसिंह राठौरने मुगलोंसे अजमेरको छीन लिया। महम्मदशाहने इसको फिर लेकर अभयसिंहको दिया अभयसिंहके लड़के रामसिंहने जयआपा सिंधियाके आधीन महाराष्ट्रोंको बुलाया, परन्तु रामसिंह मारा गया। सन १७५६ में रामसिंहके भाई विजयसिंहको अजमेर दिया गया। सन १७८७ में राठौरोंने अजमेरको फिर लेलिया, परन्तु पाटनमें परास्त होनेके पश्चात् इसको फिर सिंधियाको दिया। सन १८१८ में दौलतराव सिंधियाने अंगरेजी गवर्नमेंटको अजमेर देदिया। अजमेरके चौहान राजवंश इस भांति हैं।
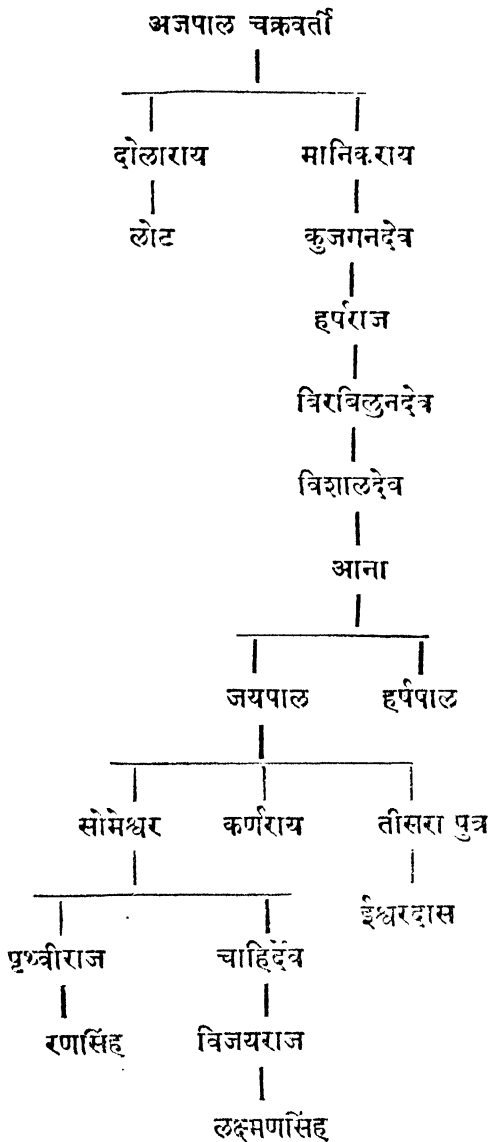
रेलवे–' बँबे बड़ोदा और सेंट्रल इंडिया रेलवे 'का सदर मुकाम अजमेर है । रेलवे स्टेशनके समीप बहुत फैला हुआ रेलवेका काम है, जिसमें थोड़े यूरोपियनोंके मातहत हजारहों देशी लोग काम कर रहे हैं । रेलवे लाइनोंके दूसरे पार सिविल स्टेशन फैला है, जिसमें प्रायः सब रेलवे अफसर रहते हैं । अजमेरसे रेलवे लाइन ३ ओर गई हैं । तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई लगता है ।

(१) अजमेरसे चित्तौरगढ़ तक दक्षिण, उससे आगे दक्षिण-पूर्वको लाइन गई है

मील-प्रसिद्ध स्टेशन

१५ नसीराबाद छावनी
११६ चित्तौरगढ़
१५० नीमच छावनी
१८१मंदसोरवा मंडेशर
२१२ जावरा
२३३ रतलाम जंक्शन
२८२ फतेहाबाद जंक्शन जिससे १४ मील पूर्वोत्तर उज्जैन है
३०७ इंदौर
३२० मऊ छावनी
३५६ मोरतका (ओंकार-नाथके निकट)
३९३ खंडवा जंक्शन

रतलाम जंक्शन से पश्चिम कुछ दक्षिण

मील-प्रसिद्ध स्टेशन

७१ दोहद
११६ गोधड़ा
१५०डांकौर तीर्थ
१६९ आनंद जंक्शन

(२) अजमेरसे पालनपुर तक पश्चिम-दक्षिण, उससे आगे दक्षिणको लाइन गई है ।

मील-प्रसिद्ध स्टेशन

३३ बियावर
५४ हरिपुर
८७ मारवाड़ जंक्शन
१९० आबू रोड
२२२ पालनपुर
२४१ सिद्धपुर
२६२ महसाना जंक्शन
३०५ अहमदाबाद जंक्शन

मारवाड़ जंक्शन से उत्तर कुछ पश्चिम

मील-प्रसिद्ध स्टेशन

४४ लूनी जंक्शन
६४ जोधपुर
६५ जोधपुर महल

(३) अजमेरसे फलेरा तक पूर्वोत्तर उससे आगे पूर्वको लाइन गई है

मील-प्रसिद्ध स्टेशन

१८ किसुनगढ़
४९ फलेरा जंक्शन
८४ जयपुर
१४० बाँदीकुई जंक्शन
२०१ भरतपुर
२१८अछनेरा जंक्शन
२३३ आगरा छावनी
२३५ आगरा किला

बियावर।

अजमेरसे ३३ मील दक्षिण-पश्चिम बियावर स्टेशन है। बियावर अजमेरके मेरवाड़ा विभागमें पत्थरकी शहरपनाहके भीतर व्यापारका कसबा और एसिस्टेंट कमिशनरका सदर स्थान है। कसबेमें कई मील (कल कारखाने,) चौंडी सडक, पोष्ट आफिस और अस्पताल हैं यहां लोहेके कामकी दस्तकारी और पोस्तकी सौदागरी होती है।

इस सालकी मनुष्य-गणनाके समय इसमें २०९७८ मनुष्य थे अर्थात् १४५७२ हिंदू ३६४१ मुसलमान, २४८४ जैन; २४६ क्रस्तान, २४ सिक्ख, १० पारसी, और १ अन्य।

सन १८३५ में मेरवाड़ाके कमिश्नर कर्नल डिक्सनने इसको बसाया। इसकी उन्नति बहुत जल्दी हुई है।

पंदरहवां अध्याय।

(राजपूतानेमें) पुष्कर।

पुष्कर।

अजमेर शहरसे ७ मील दूर २६ अंश ३० कला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश ३६ कला पूर्व देशांतरमें छोटी पहाड़ियोंके बीचमें भारतवर्षमें ब्रह्माका एक मात्र तीर्थ और संपूर्ण तीर्थोंका गुरु पुष्करराज है। अजमेरके आनासागरके पश्चिम किनारे होकर सड़क गई है। सरकारने सम्वत् १९२३-२४ के अकालमें आनासागरके दक्षिणकी पहाडी होकर पुष्कर तक एक्के और बैलगाड़ी जाने योग्य पहाड़ी सडक निकलवा दी। आनासागर और पुष्करके बीचमें अजमेरसे ३ मील पर नासिर गांव है।

पुष्कर करीब ४००० मनुष्योंकी सुन्दर बस्ती है, जिसके सीमाके भीतर कोई मनुष्य जीवहिंसा नहीं कर सकता। इसके निकट भारतके संपूर्ण तालावों से अधिक पवित्र ज्येष्ठ पुष्कर-नामक तालाव है। पुष्करके बहुतेरे पुराने मन्दिरोंको औरंगजेबने बिनाश करदिया। पुष्कर-तालाबके किनारों पर बहुतेरे उत्तम घाट, राजपूतानेके बहुत राजाओंके बनवाए हुए अनेक मकान, धर्मशालाएं और मन्दिर बने हैं। पूर्व समय में असंख्य यात्री यहां आते थे। अबतक भी कार्तिकके अंतमें लगभग १००००० यात्री पुष्करमें एकत्र होते हैं। मेलेमें बहुत घोडे, ऊंट और बैल बिकते हैं। और अनेक भांतिकी वस्तुओंका ब्यापार होता है कार्तिक शुक्ल ११ से पूर्णिमा तक ५ दिन पुष्कर स्नानका बडा माहात्म्य है।

ज्येष्ठ पुष्करकी परिक्रमाके अतिरिक्त पुष्कर तीर्थकी कई परिक्रमा हैं। पहली ३ कोस-की, दूसरी ५ कोसकी, तीसरी १२ कोसकी और चौथी २४ कोसकी, जिनमें बहुतेरे देव, ऋषियोंके पुराने स्थान मिलते हैं।

पुष्कर तालाब-पुष्कर बस्तीके निकट १ ½ कोसके घेरेमें कमल आदि नाना जल उद्भिजसे पूर्ण ज्येष्ठ पुष्कर है जिससे सरस्वती नदी निकली है, जो सागरमतीमें मिलनेके पश्चात् लूनी नदी कहलाती है और कच्छके रनमें जाकर बालूमें गुप्त होजाती है। पुष्करके किनारे पर गौघाट, ब्रह्माघाट, कपालमोचनघाट, यज्ञघाट, बदरीघाट, रामघाट और कोटिती-

थेघाट पत्थरके बने हैं। तालाबके किनारों पर और इसके आस पास बहुत पक्के मकान और देवमन्दिर बने हैं। बहुत काल हुए परिहार राजपूत मांदरका राजा नहरराय मृगया करता हुआ पुष्कर झीलके किनारे पहुंचा उसने पानी पीनेके लिये इसमें हाथ डाला पुष्करके जल-स्पर्शसे जब उसका चर्म रोग छूट गया, तब उसने इसका घाट बनवा दिया। यात्रीगण ज्येष्ठ पुष्करकी परिक्रमा करते हैं।

ज्येष्ट पुष्करसे करीब २ मील दूर मध्यम पुष्कर और कनिष्ठ पुष्कर है। उसीके समीप शुद्ध वापी नामसे प्रसिद्ध गयाकुंड है और उससे ५ कोस दूर प्राची सरस्वती और नंदा दोनों नदियोंका संगम है।

देवमन्दिर–पुष्करमें ५ मन्दिर प्रधान हैं ब्रह्मा, बद्रीनारायण, बाराहजी आत्मेश्वर महादेव और सावीत्रीके। (१) ब्रह्माका मन्दिर—यह मन्दिर पुष्करके सब मन्दिरोंमें प्रधान और सबसे बडा है। महाराज सिंधियाके दीवान गोकुलपर्कने वर्तमान मन्दिरको बनवाया। इसमें ब्रह्मा-की चतुर्मुख मूर्तिके बाएं गायत्री देवी और दहिने सावित्री प्रतिष्ठित हैं। जगमोहनमें सनका-दिक चारों भ्राताओंकी मूर्तियां और एक छोटे मन्दिरमें नारदकी मूर्ति है। एक दूसरे छोटे मन्दिरमें मार्बुलके हाथियों पर इन्द्र और कुबेर बैठे हैं (२) बद्री नारायणका मन्दिर— (३) बाराहजीका मन्दिर—पुराने मन्दिरको जहांगीरने तोड दियाथा, वर्तमान मन्दिर जोधपुरके भक्तसिंहका बनवाया हुआ है। (४) आत्मेश्वर वा कपालेश्वर महादेवका मंदिर—इसको महाराष्ट्र सूबेदार गोमारावने बनवाया। गुफाके समान थोडे रास्ते होकर मन्दिरमें जाना होता है। इनके अतिरिक्त पुष्करके किनारे पर विशालदेव, अमरराज, मानसिंह, अहिल्याबाई, भरतपुरके राजा जवाहरमल और मारवाडके राजा विजयसिंहके बनवाए हुए अनेक मन्दिर और मकान हैं।

ज्येष्ठ पुष्करकी परिक्रमामें एक पहाडीके नीचे नागकुण्ड, चक्रकुण्ड और गंगाकुण्ड नामक छोटे छोटे जलके कुण्ड मिलते हैं और एक ऊंची पहाडी पर सावित्री का मन्दिर है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–व्यास स्मृति—(चौथा अध्याय) कार्तिककी पूर्णिमाको ज्येष्ठ पुष्करमें स्नान करनेसे बडा फल प्राप्त होता है। मनुष्य पुष्कर तीर्थ को करके सब पापोंसे छूट जाते हैं।

शंख स्मृति–(१४ वां अध्याय) पुष्करमें पितरोंके निमित्त जो कुछ दिया जाता है, उसका फल अक्षय होता है।

महाभारत– (वन पर्व–८२ वां अध्याय) तीनों लोकोंमें विख्यात मृत्युलोकमें देवताओंका तीर्थ पुष्कर है, जिसमें तीनों संध्याओंके समय १० करोड तीर्थ एकत्र होते हैं। वहां सूर्य्य, वसु, रुद्र, साध्य, मरुत, गंधर्व इत्यादि सदाही निवास करते हैं। उस तीर्थमें सब लोकोंके पितामह परम प्रीतिके सहित सदा बसते हैं। ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र कोई हो, उस तीर्थमें स्नान करके फिर गर्भमें नहीं आता। विशेष करके जो कार्तिककी पूर्णिमासीको पुष्करमें स्नान करता है, उसको अक्षय ब्रह्मलोक प्राप्त होता है। जैसे सब देवताओंमें पहले विष्णु हैं, वैसेही सब तीर्थोंमें आदि पुष्कर है। जो पवित्र और जितेंद्रिय होकर १२ वर्ष पुष्करमें निवास करताहै, वह सायुज्य मोक्ष पाता है। कार्तिककी पूर्णमासीमें पुष्कर स्नान करनेसे १०० वर्ष पर्य्यन्त अग्निहोत्र करनेके तुल्य फल प्राप्त होता है। पुष्करमें ३ शिखर और पुष्करादि ३

झरने सिद्ध हैं इत्यादि । (८९ वां अध्याय) जो मनस्वी पुरुष मनसे भी पुष्कर जानेकी इच्छा करता है, उसके सब पाप नाश हो जाते हैं और उसको स्वर्गका आनंद मिलता है ।

(शल्य पर्व्व–३८ वां अध्याय) ब्रह्माने जब पुष्कर क्षेत्रमें महायज्ञ किया, तब उसको देख कर देवता लोग भी घबड़ा गए थे और आश्चर्य्य करते थे । उस समय जब ऋषियोंने कहाकि यह यज्ञ अच्छा नहीं हुआ, क्योंकि सरस्वती नदी तो यहां है नहीं, तब ब्रह्माने सुप्रभा नामक सरस्वतीको बुलाया ।

जगतमें ७ सरस्वती हैं, पुष्करमें सुप्रभा १, नैमिषारण्यमें कांचनाक्षी २, गयामें विशाला ३, अयोध्यामें मनोरमा ४, कुरुक्षेत्रमें ओघवती ५, गंगाद्वारमें सुरेणु ६ और हिमालयमें विमलोदका ७ ।

शांति पर्व्व--२९८ वां अध्याय,) पवित्र पुष्कर क्षेत्रमें तपस्या आदि कर्मोंसे शरीरको शोधन करना उचित है । (अनुशासन पर्व्व--१२५ वां अध्याय) कुरुक्षेत्र, गया, गंगा, प्रभास और पुष्कर (पंचतीर्थी) के मनही मन ध्यान करके जलसे स्नान करने पर पुरुष सब पापों से छूट जाता है । (१३० वां अध्याय ज्येष्ठ पुष्करमें गोदानका बडा माहात्म्य है । पुष्कर तीर्थमें वेद जानने वाले ब्राह्मणको कपिला गौ दान करना मनुष्यको उचित है । जो लोग पुष्करमें कपिला गौ दान करते हैं, उन्हें वृषभके सहित १०० गौदान करनेका फल मिलता है और ब्रह्महत्याके समान भी पाप छूटजाता है, इसलिये वहां जाकर शुक्ल पक्षमें कपिला गौ अवश्य दान करना चाहिए ।

वामनपुराण—(२२ वां अध्याय) ब्रह्माजी की ५ वेदी हैं, जिनमें उन्होंने यज्ञ किया है,—मध्य-वेदी प्रयाग, पूर्व-वेदी गया दक्षिण-वेदी विरुजा, पश्चिम-वेदी पुष्कर और उत्तर वेदी स्यमंतपंचक (कुरूक्षेत्र) । (६५ वां अध्याय) कार्तिकी पूर्णिमा पुष्करजीमें बहुत पुण्य देनेवाली है ।

ब्रह्मवैवर्तपुराण—(प्रकृतिखंड–५६ वां अध्याय) पुष्करके समान तीर्थ नहीं है (गणेशखंड–तीसरा अध्याय) तीर्थोंमें पुष्कर श्रेष्ठ है ।

गरुड़पुराण—(पूर्वार्द्ध ६६ वां अध्याय) पुष्कर तीर्थ सम्पूर्ण पापोंका नाश करने वाला और मुक्ति देने वाला है ।

वाराहपुराण–(१५७ वां अध्याय) ज्येष्ठमें पुष्करके स्नानसे बड़ा फल प्राप्त होता है ।

भविष्यपुराण–पूर्वार्द्ध-१६ वां अध्याय) संपूर्ण जगत ब्रह्ममय और ब्रह्मामें स्थित है, इसलिये ब्रह्माजी सबके पूज्य हैं । जो ब्रह्माजीको भक्तिसे नहीं पूजता, वह राज्य, स्वर्ग और मोक्ष कभी नहीं पाता; इस कारण ब्रह्माजीकी सदा पूजा करनी चाहिए । ब्रह्माजीके दर्शनसे उनका स्पर्श करना उत्तम है ।

(उत्तरार्द्ध–८९ वां अध्याय) वैशाख, कार्तिक और माघकी पूर्णिमा स्नान दानके लिये अति श्रेष्ठ हैं । बैशाखीको गंगामें, कार्तिकीको पुष्करमें और माघीको काशीमें स्नान करना चाहिए ।

पद्मपुराण–(सृष्टि खंड--१५ वां अध्याय) ब्रह्माजीने विचार कियाकि हम सबसे आदि देव हैं, इससे जहांकि हम प्रथम विष्णुकी नाभिसे उपजे हुए कमल पर उत्पन्न हुएथे, वहां अपने यज्ञ करनेके लिये एक अपूर्व तीर्थ बनावें । सो बनाना भी नहीं है, क्योंकि वह

स्थानतो हुई है। इसके उपरांत ब्रह्माजी पृथ्वी पर पुष्कर तीर्थमें आए और सहस्र वर्ष पर्यंत वहां रहे। उसके पीछे ब्रह्माजीने अपने हाथका कमल वहीं फेंक दिया, उस पुष्पकी धमकसे सब पृथ्वी कांप उठी, समुद्रमें लहरें बड़े बेगसे उठने लगीं, यहांतक कि उस शब्दसे तीनों लोकके चराचर मूक, बधिर और अंधे होकर व्याकुल होगए। देवताओंने जब बहुत काल तक ब्रह्माकी आराधना की, तब ब्रह्माजीने प्रकट होकर उनसे कहाकि वज्रनाभ नामक असुर बालकों को मारने वाला था, वह तुम लोगोंका आना सुन इन्द्रादि सब देवताओंके मारनेके लिये उठ खड़ा हुआ था, इसलिये हमने जोरसे पृथ्वी पर कमल पटक दिया, जिससे वह मर गया। हमने इस स्थान पर पुष्कर अर्थात् कमल हाथसे फेंका है, इसलिये यह स्थान पृथ्वी पर पुष्कर नामसे प्रसिद्ध होगा।

चन्द्र नदीके उत्तर सरस्वतीके पश्चिम नन्दन स्थानके पूर्व और कान्य पुष्करके दक्षिण जितनी भूमि है, ब्रह्माजीने उसमें यज्ञकी वेदी बनाई, उसमें प्रथम ज्येष्ठ–पुष्कर नामसे प्रसिद्ध तीर्थ बनाया जिसके देवता ब्रह्मा हैं, दूसरा मध्यम पुष्कर बनाया, जिसके देवता विष्णु हैं और तीसरा कनिष्ठ पुष्कर तीर्थ बनाया; जिसके देवता रुद्र हैं। जो मनुष्य पुष्कर तीर्थके जलमें डूब कर प्राण छोड़ते हैं, उनको अक्षय ब्रह्मलोक मिलता है।

(१६ वां अध्याय) सब ऋषियोंने पुष्कर में आकर जब पुराण, वेद, स्मृति और संहिता पढी, तब ब्रह्माके मुखसे बाराहजी उत्पन्न हुए बाराहजीके मुखसे प्रथम सब वेद, वेदांग उत्पन्न हुए और दांतोंसे यज्ञ करनेके लिये स्तंभ प्रकट हुए। इसी प्रकार हाथ आदि अंगोंसे यज्ञकी बहुत सामग्री उत्पन्न हुई। बाराहजीके दांतके अग्रभाग पर्वतके शृंगोंके समान ऊंचे थे जिस पर रखकर उन्होंने ब्रह्माके हितके लिये प्रलयके जलके भीतरसे पृथ्वीको लाकर जहां पुष्कर तीर्थ बना है वहां उसको स्थापन किया और आप अन्तर्द्धान होगए।

ब्रह्माके यज्ञमें देव, नाग, मनुष्य, गंधर्व आदि सब आए। यज्ञ आरंभ हुआ। अध्वर्य्युने ग्रंथिबंधन होनेके लिये सावित्रीको बुलाया, पर वह स्त्रियोंके कार्य्य करनेमें लगी थी इसलिये न आई और बोली कि हमको अभी गृहकार्य्य करना है और लक्ष्मी, गंगा, इन्द्राणी, गौरी, अरुंधती आदि अबतक नहीं आई हैं। जब तक सब हमारी सखियां न आवेंगीतब तक मैं अकेली न आऊंगी। ब्रह्माजीसे कहोकि वह एक मुहूर्त विलंब करें, हम इन सबोंके साथ बहुत शीघ्र आवेंगी। अध्वर्य्युओंने आकर यह वृत्तांत ब्रह्मासे कहा और यहभी कहा कि काल बीता जाता है। यह सुनि ब्रह्माजी क्रुद्ध होकर इन्द्रसे बोले कि तुम हमारे लिये कोई दूसरी स्त्री लाओ, जिससे यज्ञ हो। इन्द्र अति वेगसे जाकर पृथ्वी पर ढूंढने लगे। उन्होंने लक्ष्मीके समान रूपवती गोरस वेचती हुई अहीरकी एक कन्याको देखा, जिसके समान देवता, नाग, गन्धर्व आदि किसीकी स्त्री नहीं थी,। इन्द्रने ब्रह्माकी पत्नी होनेके लिये कन्यासे कहा। वह बोली कि मेरे पितासे मांग कर मुझे लेचलो मैं ऐसे न चलूंगी, परंतु इन्द्रने बलसे उसको लाकर ब्रह्माके आगे खडी कर दिया। जब ब्रह्माजीने उसका नाम गायत्री कह कर गांधर्व विवाहकी रीति से उसके संग विवाह कर लिया, तब ब्राह्मणोंने उसको पत्निशालामें बैठाया।

(१७) वां अध्याय) गायत्री आकर ब्रह्माके समीप बैठ गई। देवताओंके सहस्र वर्ष पर्य्यन्त वह यज्ञ होता रहा। एक समय महादेवजी पंच सूत्र धारण किए और एक बडी भारी मनुष्यकी खोपडी हाथमें लिए हुए भिक्षामांगनेके लिये यज्ञ शालामें आए और ऋत्विज आदिकोंके निकट बैठ गए। ब्राह्मणोंने उन्हें बहुत दुत्कारा और खदेरा पर वह वहांसे

न उठे। उन्होंने कहा अन्न भोजन करलो और यहांसे चले जाओ, तब महादेवजी अच्छा कह कर मुर्देकी खोपडी आगे धर कर बैठ गए और भोजन करनेके उपरांत जूठी खोपडीको छोडकर पुष्करमें स्नान करनेके लिये चले गए। एक ब्राह्मणने जब अपवित्र खोपडीको उठा कर सभासे बाहर फेंक दिया, तब जहां वह कपाल धरा था वहां दूसरा कपाल दिखाई दिया, इस प्रकार दूसरा, तीसरा, चौथा यहां तक हजारहवां तक फेंका, परंतु कपालोंका अंत नहीं मिला कि कितने हैं। जब सब देवताओंने पुष्करमें जाकर महादेवजीकी बडी स्तुतिकी तब शंकरजी संतुष्ट होकर बोले कि अब हमने अपना कपाल उठा लिया, तुम लोग यज्ञ कर्म करो।

जब सावित्री सब देवताओंकी स्त्रियोंके संग यज्ञमें आई, तब इन्द्र बहुत डरे और ब्रह्माजीने नीचा मुख कर लिया। विष्णु और रुद्र बहुत लज्जित हुए। सावित्री यज्ञको देख क्रोध से युक्त हो ब्रह्मासे बोली कि तुमने बडी लज्जाका काम किया कि सब लोगोंके आगे हमको नीचे डाल कर दासीको बैठा लिया। इसके अनन्तर उसने ब्रह्माको शाप दिया कि ब्राह्मण समूहोंमें और सब तीर्थोंमें कोई ब्राह्मण आजसे मृत्युलोकमें तुम्हारी पूजा न करेंगे, केवल कार्तिककी पूर्णिमाको तुम्हारी पूजा होगी। इसके उपरांत सावित्रीने इन्द्र, विष्णु, रुद्र, अग्नि और ब्राह्मणोंको भी भिन्न भिन्न प्रकारके शाप दिए।

गायत्री सभासे निकल ज्येष्ठ-पुष्करके बाहर खडी हुई और विष्णुसे ऐसा कह कर कि हम वहां यज्ञ करेंगी, जहां तुम लोगोंका शब्द नहीं सुन पडेगा, पर्वतके ऊपर चढ गई। विष्णुने वहां जाकर सावित्रीकी बडी स्तुतिकी, तब उन्होंने प्रसन्न होकर विष्णुसे कहाकि तुम अब जाकर ब्रह्माका यज्ञ पूर्ण कराओ, हमभी तुम्हारे कहनेसे कुरुक्षेत्र, प्रयाग आदि तीर्थोंमें अपने पति ब्रह्माके समीप सदा निवास करेंगी। इसके पीछे यज्ञ होने लगा।

गायत्रीने कहाकि जो मनुष्य कार्तिककी पूर्णिमाको सावित्री और गायत्री सहित ब्रह्माकी मूर्तिका पूजन करेगा और मूर्तियोंको रथ पर चढा कर सब नगरोंमें फिरावेगा, वह ब्रह्मलोकमें निवास करेगा इत्यादि।

(१८ वां अध्याय) ब्राह्मणोंने जब सुना कि यहां एक प्राची सरस्वती तीर्थ है, तब वहां जाकर देखाकि पुष्कर तीर्थ में पांच सोतोंसे प्राची सरस्वती बहती है, जिनके नाम सुप्रभा, कांचना, प्राची, नन्दा और विशालिका हैं। वह ब्रह्माकी आज्ञासे वहां आकर बही थी। यह नदी पुष्करमें पूर्व ओरको बहती है, इससे ऋषियोंने इसका नाम प्राची-सरस्वती रक्खा है। ब्रह्माजीने सबसे अधिक पुष्कर तीर्थमें सरस्वती नदीका माहात्म्य कहाहै। कार्तिकी पूर्णिमाको मध्यम कुंडमें स्नान करके कुछभी ब्राह्मणोंको देनेसे अश्वमेध यज्ञका फल होता है। कनिष्ठ कुंडमें स्नान करके ब्राह्मणोंको एक रेशमी वस्त्र देनेसे मरणांतमें अग्निलोक मिलता है। पुष्कर तीर्थमें पर्वतके ३ शृंग हैं, जिनके जल बहनेसे ३ कुंड हुए हैं, जो ज्येष्ठ पुष्कर, मध्यम पुष्कर और कनिष्ठ पुष्कर नामोंसे प्रसिद्ध-हैं। सरस्वती पुष्करारण्यमें जाकर फिर अंतर्द्धान होकर पश्चिम दिशाको चली है और आगे खर्जूरी वनमें जाकर नन्दा नामक सरस्वती कहाई है।

(१९ वां अध्याय) पुष्करमें विष्णुकी मूर्ति आदि बाराह नामसे प्रसिद्धहै, जितने नीच-वर्ण इस तीर्थमें स्नान करते हैं, वे सब मरनेके उपरांत ब्राह्मण कुलमें जन्म पाते हैं। जैसे सब देवताओंमें प्रथम ब्रह्माजी गिने जाते हैं, ऐसेही सब तीर्थोंमें पुष्कर तीर्थ आदि है। यज्ञ पर्वतके

समीप अगस्त्यजीका आश्रम है । ब्रह्माजीने कहा कि जो कोई पुष्कर तीर्थकी यात्रा करके अगस्त्य कुंडमें स्नान नहीं करेंगे, उनकी यात्रा सफल नहीं होगी । जो कोई यज्ञ पर्वतपर चढ़-कर गंगाजीके निकलनेका स्थान देखेगा, जहांसे उत्तरको मुख करके वह पुष्करकी ओर बहती हैं, वह कृतार्थ हो जायगा ।

(स्वर्ग खंड दूसरा अध्याय) महापद्म, शंख कुलिक आदि नाग कश्यपजीके संतान हुए जो मनुष्योंको देखते ही क्षणमात्रमें भक्षण कर लेते थे । जब सब लोग व्याकुल होकर ब्रह्माकी शरणमें गए, तब ब्रह्माने नागोंको शाप दिया कि वैवस्वत मन्वंतरमें सोम वंशी राजा जनमेजय होगा, वह सर्प यज्ञ करके प्रज्वलित अग्निमें तुम लोगोंको भस्म कर डालेगा और विनताकी आज्ञासे गरुड तुम लोगोंको भक्षण किया करेगा । इसके उपरांत जब नागोंने ब्रह्माकी स्तुति की, तब वह बोले कि जरत्कारु नामक ब्राह्मण अग्निसे तुम लोगोंकी रक्षा करेगा । कुछ दिनोंके उपरांत पुष्करमें जहां ब्रह्मा यज्ञ कर रहे थे, यज्ञ पर्वतकी दीवारमें नाग लोग जा बैठे । उनको थकेहुए देख जलकी बडी धारा उत्तरको निकली, उसीसे वहां नाग तीर्थ उत्पन्न हुआ, जिसको नाग कुंडभी कहते हैं । यह तीर्थ सर्पोंके भयको नाश करता है । जो मनुष्य श्रावण शुक्ल पंचमीको नागकुंडमें स्नान करते हैं, उनको सर्पोंका भय नहीं होता । ब्रह्माने नागोंसे कहा कि, जो कोई इस तीर्थमें तुमको दुग्ध चढ़ावे, उसको तुम कभी मत काटो ।

(तीसरा अध्याय) एक समय दक्षिण देशके करोडों ब्राह्मण जब स्नानके लिये पुष्करमें आए, तब पुष्कर तीर्थ स्वर्गको चला गया । सब लोगोंने कहा कि दक्षिणी ब्राह्मण अपवित्र होते हैं, इसीसे उनके आनेपर पुष्कर स्वर्गको चला गया है, अब कार्तिकी पूर्णिमा-सीको पुष्कर फिर अपने आप यहां आवेगा । यह तीर्थ सदा पुण्य दायक है, पर कार्तिककीको विशेष करके अति पुण्यदायक होता है, क्योंकि जब दक्षिणी-ब्राह्मणोंको देख यह तीर्थ आकाशको चला गया था, तो सरस्वती नदीने उदुम्बर वनसे आकर अपने जलसे पुष्करको फिर भरा है, जो दक्षिण ओर पर्वतपर अबभी शोभित होती है ।

(चौथा अध्याय) पुष्करमें यज्ञ पर्वतकी मर्य्यादाके २ पर्वत विख्यात हैं । दोनोंके मध्यमें ज्येष्ठ मध्यम और कनिष्ठ नामोंसे प्रसिद्ध ३ कुण्ड हैं । राम लक्ष्मण और जानकीने पुष्करमें जाकर विधिपूर्वक स्नान किया था ।

अग्निपुराण-(१०८ वां अध्याय) पुष्कर क्षेत्रमें दशकोटि हजार तीर्थ तीनों काल अर्थात् प्रातः, मध्याह्न और संध्यामें प्राप्त होते हैं । ब्रह्माके सहित संपूर्ण देवता और ऋषिगण पुष्करमें स्नान और पितरोंका अर्चन करके सिद्धिको प्राप्त हुए हैं । उस तीर्थमें कार्तिक मासमें अन्नदान करनेसे मनुष्योंको ब्रह्मलोक मिलता है । पुष्कर क्षेत्रका तप, दान और ध्यान दुर्लभ-है । उसमें निवास, श्राद्ध और जप करनेसे १०० पुस्तका उद्धार हो जाता है । पुष्कर क्षेत्रमें असंख्य तीर्थ और पवित्र नदियाँ सर्वदा निवास करती हैं ।

कूर्मपुराण-(उपरि भाग-३४ वां अध्याय) संपूर्ण पापोंको नाश करने वाला, लोक-विख्यात ब्रह्माका पुष्कर तीर्थ है, जिस स्थानपर किसी प्रकारसे मृत्यु होनेपर ब्रह्मलोक प्राप्त होता है । मनुष्य मनमें पुष्करका स्मरण करनेसे संपूर्ण पापोंसे विमुक्त होकर अंतमें इन्द्रके साथ आनन्द करता है संपूर्ण देवता, यक्ष, सिद्ध आदि पुष्कर में आकरके ब्रह्माकी सेवा करते हैं । जो मनुष्य पुष्करमें स्नान करके ब्रह्माका पूजन करते हैं, वे संपूर्ण पापोंसे विमुक्त होकर ब्रह्मलोकमें निवास करते हैं ।

सोलहवाँ अध्याय।

(राजपूतानेमें) नसीराबाद, चित्तौरगढ़, उदयपुर और श्रीनाथद्वारा।

नसीराबाद।

अजमेरसे १५ मील दक्षिण नसीराबादका रेलवे स्टेशन है। नसीराबाद अजमेरके मेरवाड़ा जिलेमें फौजी छावनी है, जिसको सन १८१८ ई० में सर अक्टरलोनीने नियत किया। छावनी एक मील फैली हुई है, जिसकी सीमा पर देशी कसबा है। छावनी में यूरोपियन पैदलका एक रेजीमेंट, देशी पैदलका एक रेजीमेंट और देशी सवारकी सेनाका एक भाग है।

उस सालकी जन-संख्याके समय नसीराबाद और छावनीमें २१७१० मनुष्य थे, अर्थात् १५१९८ हिन्दू, ५४७२ मुसलमान, ५६४ कृस्तान, ३६७ जैन, ६० यहूदी ३३ पारसी, और १६ सिक्ख। सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २१३२० मनुष्य थे, अर्थात् १८४८२ कसबेमें और २८३८ छावनीमें।

सन १८५७ मई की तारीख २८ को नसीराबादकी सेना बागी हुई, परन्तु लोगोंसे सहायता न पानेके कारण उसने दिल्लीकी यात्राकी।

चित्तौर।

नसीराबादसे १०१ मील (अजमेरसे ११६ मील) दक्षिण चित्तौरका स्टेशन है। चित्तौर राजपूतानेके मेवाड़ प्रदेशके उदयपुर राज्यमें पहाड़ी किलेके नीचे दीवारोंसे घिरा हुआ एक कसबा है। जब चित्तौर मेवाड़की राजधानी था, उस समय शहर किलेमें था। नीचे केवल बाहरीका बाजार था। यह २४ अंश ५२ कला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश ४१ कला पूर्व देशान्तरमें स्थित है।

इस वर्षकी मनुष्य-गणनाके समय चित्तौरमें १०२८६ मनुष्य थे, अर्थात् ७३३० हिन्दू, १९४२ मुसलमान, ७७१ जैन २२९ एनिमिष्टिक, १३ कृस्तान और १ पारसी।

किला—किला देखनेके लिये उदयपुरके महाराजके कर्मचारीसे चित्तौरमें पास लेना चाहिए। रेलवे स्टेशनसे पूर्व चित्तौरका विख्यात किला उजाड़ हो रहा है। कहावतके अनुसार सन ७२८ ई० में बाप्पा रावलने किसीसे किलेको छीन लिया, तबसे सन १५६८ तक यह मेवाड़की राजधानी था।

सड़क गंभारी नदीके पत्थरके पुलसे होकर किलेमें गई है। पुलमें १० मेहरावी हैं। कहा जाता है कि राणा लक्ष्मणसिंहके पुत्र श्रीसिंहने इसको बनवाया था।

जिस पहाड़ी पर किला है, वह आस पासके देशसे औसत ४५० फीट ऊंची और ३ $\frac{१}{२}$ मील लंबी है, जिसका सिर उजड़े पुजड़े बहुतेरे महल और मन्दिरोंसे भरा है। पहाड़ीके ढालुएं बगलों पर सघन जंगल लगे हैं। किलेके आधे दक्षिण भागमें ५ बडे तालाब हैं। अखीर दक्षिणके पास चितोरिया नामक गोलाकार छोटी पहाड़ी है। किलेके भीतर छोटे बड़े ३२ सरोवर हैं। यद्यपि दीवारोंके भीतरकी बहुत भूमि चट्टानी है, तथापि उत्तरी आधे-भागके अधिक स्थानोंमें ज्वारकी खेती होती है। चढ़ावकी सड़क किलेके सिरे तक १ मील

लंबी है, जिस पर जगह जगह पदलपोल, भैरवपोल, हनुमानपोल, गणेशपोल, जोरलापोल, लक्ष्मणपोल और रामपोल नामक ७ फाटक हैं, जिनके पास चित्तौरके मृत बीरोंके स्मारक–चिह्नके निमित्त छत्तरियां बनी हैं। पुराने शहरके सब स्थान उजड़ रहे हैं। दर्शनीय चीजोंमें से कीर्त्तना और जयस्तंभ नामक २ बुर्ज हैं। किलेका क्षेत्रफल ६९३ एकड़ है। इसकी सबसे अधिक लम्बाई (एक दीवारसे दूसरी दीवार तक) ५७३५ गज अर्थात् ३ ¼ मील और सबसे अधिक चौड़ाई ८३६ गज है। किलेकी दीवारोंकी लंबाई १२११३ गज अर्थात ७ मील से कुछ कम है।

पूर्व शहर पनाहके समीप ७५ फीट ऊंचा, जिसका व्यास नीचे ३० फीट और सिरके पास १५ फीट है, चौकोना स्तंभ है, जिसको लोग पुराना कीर्तना कहते हैं, जो कीर्तिस्तंभका अपभ्रंश है। इस टावर अर्थात् स्तंभमें नीचेसे ऊपर तक संगतराशी का काम और इसमें सैकडों मूर्तियां बनाई हुई हैं। कीर्तनास्तंभ ७ मंजिलका है। इसके भीतर तंग सीढियां हैं। सबसे ऊपरका मंजिल खुला हुआ है, जिस पर बिजुलीसे नुकसानी पहुंची है और घास तथा पौधे जम गए हैं। लोग कहते हैं कि एक जैन महाजनने इसको बनवाया, दूसरोंका कथन हैकि खतनी रानी नामक एक स्त्रीका यह बनवाया हुआ है। यह स्तंभ १० वीं सदी का बना हुआ जान पडता है। यहां बहुतेरे जैन लेख हैं। दक्षिण ओर आगेकी भूमि पर कीर्तनासे पीछेका बना हुआ एक मन्दिर है।

कीर्तनासे दूर दूसरे स्थानपर श्वेत पत्थरसे बना हुआ १२२ फीट ऊंचा जयस्तंभ है, इसके प्रत्येक बगलकी चौड़ाई नेवके पास ३५ फीट और गुम्बजके नीचे १७ ½ फीट है। चित्तौरके सुप्रसिद्ध राणा कुम्भने सन १४३९ ईसवीमें मालवाके बादशाह महमूदको जीतकर उस विजयके स्मारक चिह्नके निमित्त सन १४४२ से १४४९ ई० तक इसको बनवाया। यह ९ मंजिला है, इसके भीतरकी सीढियां कीर्तनाकी सीढियोंसे अधिक चौडी हैं भीतर नकाशीमें हिन्दुओंके देवताओंकी मूर्तियां बनी हैं, नीचे उनके नाम लिखे हुए हैं। ऊपरवाले २ मंजिल चारों ओरसे खुले हुए हैं और नीचेके मंजिलोंसे अच्छे हैं। जयस्तंभमें नीचेसे ऊपर तक संगतराशीका काम है। पहले गुम्बजकी बिजलीसे नुकसानी पहुँची थी, परन्तु महाराणा स्वरूपसिंहने नया गुम्बज बनवा दिया। ऊपरके मंजिलमें बड़े लेखोंकी २ तख्ती हैं। सडकके पास नीचेके चबूतरेके कोनेके समीप एक चौगोसे स्तंभपर सन १४६८ ईसवीका सती सम्बन्धी लेख है।

सूर्य फाटकके समीप २ बडे तालाब हैं, जिनके पास राणा कुम्भका महल स्थित है। आगेके आंगनके चारों ओर पहेरदारोंके लिये कोठरियां और प्रवेश करनेके स्थान पर मेहराबदार फाटक है। रतनसिंहका महल तेरहवीं सदीका हिन्दू कारीगरीका उत्तम उदाहरण है। उसकी पत्नी रानी पद्मिनीका सुन्दर महल तालाबकी ओर मुख करके खडा है। बादशाह अकबर इन महलोंमें से एकके फाटकोंको लेगया, जो अब आगरेके किलेमें हैं।

राणा कुम्भका बनवाया हुआ ऊंचा शिखरदार देवीका मन्दिर है, जिसके निकट उसकी पत्नी मीराबाईका बनवाया हुआ उसी ढाचेका रणछोरजी (कृष्ण) का मन्दिर है। चित्तौरमें सबसे ऊंचा एक स्थान है, जहांसे उत्तम दृश्य देख पडता है। एक स्थान पर गोमुखी झरना है। दक्षिण पश्चिम राणा मुकुलजीका बनवाया हुआ पत्थरका नक्काशीदार मन्दिर है।

इतिहास—सन १४४ ईस्वीमें सूर्य्यवंशी कनकसेन राजा हुआ, जिसके कुलमें चित्तौर राजवंश है। डुंगरपुर. बांसवाढा और प्रतापगढके राजा लोग इसकी शाखा हैं।

ऐसा प्रसिद्ध है कि एक समय मेवाड़के राजाकी गर्भवती पत्नी तीर्थयात्राको गई थी, पीछे किसीने राजाको छलसे मार डाला। जब लौटते समय मालिया पहाड़की गुफामें रानीके पुत्र उत्पन्न हुआ, तब वह कमलावती ब्राह्मणीको अपना पुत्र सौंप कर सती हो गई। कमलावतीने गुफामें अर्थात् गुहामें उत्पन्न होनेके कारण उस पुत्रका नाम गोह रक्खा, जिससे गोह घराना अर्थात् गिह्लोटवंश चला। गोह भीलोंके लड़कोंके साथ खेलता और शिकार करता था। भीलोंने शिकारके समय गोहको अपना राजा पसंद किया। एक भीलने अपनी अंगुली काट उसके रुधिरसे गोहयो राज तिलक कर दिया। गोहकी आठवीं पीढ़ीमें नागदत्त हुआ, जिसको भीलोंने मार डाला, परन्तु कमलावतीके वंशके लोगोंने नागदत्तके पुत्र वाप्पा रावलको बचा लिया।

वाप्पा रावलने सन ७२८ ई० में चित्तौरमें अपना अधिकार करके खुरासान, तुर्किस्तान आदि देशोंके मुसलमानोंको जीता और बहुत राजकुमारियोंसे विवाह कर अपने वंशका विस्तार किया। वाप्पा रावलके पीछे गिह्लोट वंशी १८ राजाओंने ४०० वर्ष तक क्रमसे चित्तौरके राजसिंहासन पर बैठ कर राज्य किया। अठारहवें राजाके २ पुत्र थे, जिनमें बडा समरसिंह और छोटा सूर्य्यमल था।

समरसिंहने दिल्लीके राजा पृथ्वीराजकी बहन पृथा और कर्म देवीसे विवाह किया। वह सन ११९३ ईस्वीमें महम्मद गोरीके संग्राममें दृपद्वती नदीके तीरपर अपने शाले पृथ्वीराजके साथ मारा गया। समरसिंहका बड़ा पुत्र कल्यान अपने पिताके साथ मरा। कुम्भकर्ण बीदर चला गया। तीसरा पुत्र कमाऊंमें गया, जिसके वंशधरोंने गोरखामें जाकर नैपाल राज्यको स्थापन किया। पृथादेवी सती हो गई। कर्मदेवी अपने बालक पुत्र कर्णको राजसिंहासनपर बैठाकर उसकी रक्षा करने लगी। कुछ दिनोंके पीछे उसने कुतुबुद्दीनकी सेनाको परास्तकर क्षत्री नारीका प्रभाव दिखा दिया।

कर्णके देहांत होनेपर उसका पुत्र माहुप राजसिंहासनके योग्य नहीं था, इसलिये झालोरके सरदार कर्णके जामाताने अपने पुत्रको सिंहासनपर बैठानेकी इच्छाकी, परन्तु चित्तौरके सरदारोंने सूर्य्यमलके पोते राहुपको राजसिंहासनपर बैठा दिया। राहुपसे गिह्लोट वंश सिसोदिया वंश कहाने लगा। सन १२०१ में राहुपने राणाकी पदवी ली तबसे इस कुलके राजागण तबसे राणा कहलाने लगे। राहुपके पश्चात् क्रमसे ९ राजा चित्तौरके सिंहासनपर बैठे। नवें राजाका पुत्र राणा लक्ष्मणसिंह लड़का था, इसलिये उसका चचा भीमसिंह राजकाज करने लगा। भीमसिंहने सिंहलके चौहान राजा हमीरशंकरकी कन्या पद्मिनीसे विवाह किया।

सन १३०३ ई० में बादशाह अलाउद्दीनने चित्तौरपर आक्रमण किया। राजपूतोंने लड़ाईमें परास्त होनेपर किलेका द्वार बन्द कर दिया। पद्मिनी आदि संपूर्ण रनिवास दूसरी १३०० स्त्रियोंके सहित चितापर जल गई। तब राजपूत लोग किवाड़ खोल शत्रुओंसे लडकर मार गए। राणा लक्ष्मण सिंह और उसके पुत्र श्रीसिंहभी उसी संग्राममें मरे। बचे हुए राजपूत अर्बली पर्वतकी ओर चले गए। अलाउद्दीन विजय प्राप्त कर झालौरके सरदार मालदेवको चित्तौरका शासक नियत कर अपनी राजधानीको चला गया।

राणा लक्ष्मणसिंहका पुत्र अजयसिंह उस समय दूसरे स्थानपर था अजयसिंहके ज्येष्ठ भ्राता अरिसिंहका पुत्र हमीर अपने ननिहालमें रहता था, जिसने अजयसिंहके शत्रु एक भील

राजाका शिर काट कर उसके निकट रख दिया। अजयसिंहने प्रसन्न होकर उस मुंडके रक्तसे हमीरके ललाटमें राजतिलक दे दिया राणा हमीरने एक बडे संग्राममें मुसलमानोंको परास्त करके चित्तौर पर अधिकार कर लिया। हमीरकी मृत्युके पश्चात् उसका पुत्र क्षेत्रसिंह चित्तौरका राणा हुआ।

अजयसिंहके आजिम और सुजनसिंह दो पुत्र थे। आजिमकी अकालमृत्यु हुई। जब हमीरको राजतिलक मिला, तब सुजनसिंह दक्षिणमें जाकर रहने लगा, जिसके वंशमें महाराष्ट्र प्रधान सुविख्यात शिवाजीका जन्म हुआ।

हमीरका पुत्र क्षेत्रसिंह शत्रुके हाथसे मारा गया, उसका पुत्र राणा लाक्ष चित्तौरके सिंहासनपर बैठा। लाक्षकी प्रथम पत्नीसे चन्द और रघुदेव और दूसरी पत्नीसे, जो मारवाड़के राजा रणमलकी हंसा नामक बहन थी, मुकुलजी नामक पुत्र हुए। राणा लाक्षके मरनेके उपरांत उसकी प्रतिज्ञानुसार मुकुलजीने राजसिंहासन पाया। चन्द अपने छोटा भ्राता मुकुलजीके शुभ कामनार्थ राज काज करने लगा। राणा मुकुलजीके राज्यके समय तैमूर भारतवर्षमें प्रथम आया जिसके समय मुसलमानोंसे राणाका एक संग्राम हुआ। यद्यपि मुसलमान पराजित हुए परन्तु मुकुलजी मारे गए।

राणा मुकुलके मरनेपर कुम्भ चित्तौरका राजा हुआ, जिसका राज्य सन १४६८ ईसवी तक था। उसने मालवाके राजा महमूद और गुजरातके राजा कुतुबशाहको परास्त किया और विजयके उपरांत चित्तौरमें जयस्तंभ बनवाया। उस समय मेवाड़ और मारवाड़ राज्योंमें परस्पर मित्रता थी, इसलिये राणा कुम्भके राज्यके समय चित्तौरकी बड़ी उन्नति हुई। मेवाड़ राज्यमें छोटे बडे ८४ किले हैं, जिनमें कुंभमेरू प्रधान है। राणा कुंभका विवाह मारवाडके मैरताके रहने वाला राठौर सर्दार जयमल की पुत्री मीराबाईसे हुआ।

मीराबाईका जन्म संवत् १४७५ (सन १४१८ ई०) में हुआ था। वह बचपनहीसे गिरिधरलाल (कृष्ण) की मूर्तिकी सेवा अर्चना करतीथी। मीराबाईको ऐसी अनन्य भक्ति थीकि अपने पतिके गृह जाने पर न तो वह किसीका सिखापन मानती और न कुलदेवताकी पूजा करती, इससे राणाने अप्रसन्न हो मीराको भूतगृहमें पहुंचवा दिया। मीराबाईने जो कुछ धन संपत्ति अपने पिताके गृहसे लाई थी, उससे उसी भूतमहलमें एक मन्दिर बनवा कर गिरिधरलालजीको पधरवाया वह संतोंकी जमात जोड नित्य नृत्य, गीत, उत्सव, पूजन और कीर्तन कर काल बिताने लगी। वह स्वयं तम्बूरा ले नवीन सरस पद रचना कर भगवानके सन्मुख गान किया करतीथीं। नित्य दूर दूरसे साधु महात्माओंकी जमात आती। मीरा उनकी सेवा टहल बड़े आदर भक्तिसे किया करती, परंतु मीराबाईके ऐसे चरित्रसे उसके कुटुंब वाले बहुत अप्रसन्न होतेथे। राणा कुंभने झालोरके सर्दारकी कन्या छीन कर अपना दूसरा विवाह किया और वह कुंभमेरु (कमलमियर) किलेमें अपनी दूसरी पत्नीके साथ रहने लगे। मीराबाई गृहसे निकल वृन्दावनके तुलसीवनमें जा वसी। कुछ दिनोंके पीछे वह गोकुल गई और कुछ कालके उपरांत साधु समाजके साथ द्वारिकामें जाकर रहने लगी। कुछ समयके पश्चात् राणाने मीराबाईको लिवा लानेके लिये अपने पुरोहितको द्वारिकामें भेजा। पुरोहितने द्वारिकामें पहुंच मीरासे राणाका संदेशा कह सुनाया और कहा की जब तक तुम नहीं चलोगी, मैं अन्न जल ग्रहण नहीं करूंगा। उस समय मीराबाई अति घबड़ा कर श्रीरण-

छोड़जीके शरणमें पहुंच, गद्गद हो, पाँवमें घुंघरू बांध, हाथोंमें करताल ले, ईश्वरभक्तिमें लवलीनहो सुन्दर पद गाती गाती ईश्वरमें लीन होगई। अब तक मेवाड़ प्रदेशमें रणछोड़जीके सहित मीराबाईकी पूजा होती है। मीराबाईके बनाए हुए पद पश्चिमी भारतमें प्रसिद्ध हैं।

राणाकुम्भके ३ पुत्रथे,—ऊदो, रायमल और सूर्य्यमल। ऊदो अपने पिता राणाकुम्भको मार राज सिंहासन पर बैठा, उसके इस दुष्कर्मसे राजपूत सर्दारोंने धीरे धीरे उसका संग त्याग दिया। रायमल उसको दंड देनेके लिये उद्यत हुआ, ऊदोने शत्रु दमनके लिये राठौर राजाको अजमेर और सांभरका राज्य छोड़ दिया और आबूका राज्य एक सर्दारको दे दिया। उसके उपरांत उसने अपनी सहायताके लिये दिल्लीके बादशाहको अपनी कन्या देनेको कहा; किन्तु दिल्लीके दरबार गृहसे ज्योंही वह बाहर हुआ कि बिजुलीके गिरनेसे मर गया। दिल्लीके बादशाहने ऊदोके पुत्र जयमल और सिंहेसमलको साथले रायमलसे युद्ध किया, परन्तु वह परास्तहो अपने गृहको लौट गया।

ऊदोकी मृत्युके पश्चात् राणा कुम्भका दूसरा पुत्र रायमल राज सिंहासन पर बैठा। रायमलके ३ पुत्रथे,—संग, पृथ्वीराज और जयमल। संग और पृथ्वीराज सहोदर और जयमल वैमात्रिक भ्राताथे। रायमलके जीवन कालहीमें तीनों भाइयोंमें विवाद उठा। पहले संग और पृथ्वीराज लड़े। एक आंख फूट जाने पर संगने भाग कर शिवाती नगरके राजपूतोंका आश्रय लिया, परंतु परास्त होकर उसको वहांसे भी भागना पड़ा पृथ्वीराज संगकी खोजमें लगा। संग भिक्षुक वेषसे रहने लगा। करीमचन्द नामक एक सर्दारने संगमें राजलक्षण देख अपनी पुत्रीसे उसका विवाह कर दिया और उसको अपने घर रक्खा।

रायमलने जब यह वृत्तांत सुना, तब पृथ्वीराजको अपने राज्यसे निकाल दिया। पृथ्वीराज केवल ५ सवारों सहित गड़वारके अंतर वाली नामक स्थानमें चला गया। राणा कुंभके मरने पर एक मीना सर्दार गड़वार पर अपना अधिकार कर उसकी राजधानी नादोलमें रहताथा। पृथ्वीराजने वहां जाकर संग्राममें मीना सर्दारको मार गड़वार पर अपना अधिकार कर लिया।

उस समय प्राचीन तक्षशिला अर्थात् तोड़ातंक मुसलमानोंके अधिकार में हुआ। तोडातंकके राजा राय सुरत्तनकी पुत्री तारा अपने पिताके सहित घोड़े पर चढ़ मुसलमानोंके साथ लड़नेके कारण राजपूत देशमें विख्यात हो गई थी। जयमल उससे विवाह करनेके लिये उसके समीप गया। ताराने कहा कि तोड़ातंक पर अधिकार करो, तब तुम मुझसे व्याह कर सकते हो। जयमलने बलसे ताराको ले जाना चाहा, परन्तु उसके पिता सुरत्तन द्वारा मारा गया।

पृथ्वीराज गड़वारका उद्धार कर फिर अपने पिताका प्रिय हुआ और जयमलके मारे जाने पर तोड़ातंकके उद्धारका संकल्प किया। तारा भी अश्वारूढ हो पृथ्वीराजके पीछे चली। दोनोंने मुसलमानोंको परास्त कर तोड़ातंकका उद्धार किया। पृथ्वीराजका विवाह तारासे हुआ। उसके पश्चात् सूर्य्यमलसे पृथ्वीराजके कई युद्ध हुए, अंतमें सूर्य्यमल परास्त हुआ और देवलियामें जाकर उसने राज्य कायम किया। प्रतापगढ़के वर्तमान राजकुल उसीके वंशधर हैं।

पृथ्वीराजका बहनका व्याह सिरोहीके राजा पातूरावसे हुआ । पातूराव पृथ्वीराजकी बहनको दुख देता था, इसीलये वह अपनी सेना ले पातूरावको मारनेके लिये जा पहुंचा परन्तु पीछे अपनी बहन और बहनोईके क्षमा मांगने पर पृथ्वीराज शत्रुता छोड़ कुछ दिन सिरोहीमें रह गया । पातूरावने भोजनमें बिष देकर पृथ्वीराजको मार डाला, ताराबाई सती हो गई ।

राणा रायमलकी मृत्यु होने पर सन १५०९ ई० में उसका ज्येष्ठ पुत्र संग संग्रामसिंहके नामसे चित्तौरके सिंहासन पर बैठा । इसने दिल्लीके बादशाह और मालवाके राजा गयासुद्दीनको युद्धक्षेत्रमें १८ बार परास्त किया था, परन्तु सन १५२८ ई० में फतहपुर सीकरीके संग्राममें शिलादित्यके विश्वासघातसे मुगल बादशाह बाबरसे परास्त हुआ । उस समय संग्राम सिंहने प्रतिज्ञा की जब तक मुगलोंसे बदला न लेंगे, तब तक चित्तौर न जावेंगे । उस कालसे वह बनही में रहने लगा और कुछ कालके उपरांत बुशारा नामक स्थानमें मर गया ।

राणा संग्रामसिंह अर्थात् राणा संगके मरने पर उसकी स्त्रियोंमें राजसिंहासनके लिये बिवाद हुआ । अंतमें संग्रामसिंहके ७ पुत्रोंमेंसे तीसरा पुत्र रतनसिंह चितौरके सिंहासन पर बैठा जिसने केवल ५ वर्ष राज्य किया । उसने आम्बेरके पृथ्वीराजकी कन्यासे गुप्त विवाह किया था । बूंदी राज्यके सूर्य्यमल सहित उस कन्याका पुनः विवाह हुआ । राणा रतन दंड देनेके लिये अहेरके बहानेसे सूर्य्यमलको बनमें ले गया, वहां दोनों परस्पर लड़कर मरगए।

राणा रतनके पश्चात् उसका भाई विक्रमजीत सन १५३४ में चित्तौरका राणा हुआ । वह वहांके सर्दारोंसे अन्याय करने लगा । यहां तक कि उसने राणा संगको आश्रय देने वाले करीमचंदको एक दिन अपने हाथसे पीटा, उसी समय मालवाके मुसलमान राजाने अपना बदला लेनेके लिये चित्तौरपर आक्रमण किया । सर्दार गण विक्रमजीतको युद्धस्थलमें छोड़ कर चित्तौरकी रक्षा करने लगे । मुसलमानी सेना विक्रमको परास्त करके किलेकी ओर दौड़ी उस समय राठौर राजकी कन्या चित्तौरकी जौहरबाईने मुसलमानोंके दलमें प्रवेश कर शत्रुओंको मार बीरनारीका प्रभाव दिखाया था । सूर्य्यमलके बंशधर प्रतापगढ़के राजा बाघाजी चित्तौरकी रक्षाके लिये आया था । उसने बूंदीके राजा सुरतनके हाथ राणा संगके शिशु पुत्र उदयसिंहको सौंप सरदारों सहित मुसलमानोंसे लड़कर अपने जीवनको विसर्जन किया । चित्तौर मालवाके राजाके हाथमें गया । उस समय उदयसिंहकी माताने दिल्लीके बादशाह हुमायूंसे सहायताके लिये प्रार्थना की । बादशाहने मालवाके राजासे चित्तौरको छीनकर राजपूतोंको लौटा दिया ।

विक्रमजीत फिर सिंहासन पर बैठ सरदारोंसे अत्याचार करने लगा । उसके उपरांत सरदारोंने पृथ्वीराजकी उपपत्नीके पुत्र बनबीरको चित्तौरके सिंहासन पर बैठाया । बनबीरने सिंहासन पर बैठतेही अपने हाथसे विक्रमजीतको मार डाला । चित्तौरमें हाहाकार पड गया । उदयसिंहकी धाय पन्नाने उदयसिंहको एक टोकरीमें रक्खकर पत्र पल्लवसे ढांप एक नाई द्वारा पुरसे बाहर कर दिया और अपने छोटे बालकको उदयसिंहके बिछौने पर सोला रक्खा। बनबीरने उदयसिंहके घर पहुंच उस बालकको उदयसिंह जान कर उसकी छातीमें छूरी मारी।

लडका रोदन करके मर गया। पन्नाने उदयसिंहकी प्राणरक्षाके लिये अपने लडकेके मरनेका शोक प्रकाश नहीं किया।

पन्ना उदयसिंहको लेकर वहांसे भागी और कमलमियरके सरदार आशाशाहके पास पहुंची। आशाशाहने अपने भाईका पुत्र कहकर उदयसिंहको कमलमियरके किलेमें रक्खा। पीछे यह वृत्तांत प्रकाश होने पर मेवाडके सरदार लोग कमलमियरमें पहुंचे। संगरूके सरदार अखिलरावकी कन्यासे उदयसिंहका व्याह हुआ। सरदारोंने एकत्र होकर इनको सिंहासन पर बैठानेके लिये चित्तौर पर आक्रमण किया। वनबीर दक्षिणको भाग गया, उसीके वंशसे नागपुरके भोंसला बंशकी सृष्टि हुई।

संवत्१५९७ (सन १५४१ ई०) में उदयसिंह चित्तौरके सिंहासन पर बैठा। उसके पीछे बादशाह अकबरने चित्तौर पर आक्रमण किया। उस लडाई में अकबरके हाथ उदयसिंह-कैद हुये उदयसिंहकी उपपत्नी बीरा मेवाडके सरदारोंको धिक्कारदे बहुतेरे शत्रुओंको मार उदय-सिंहको छीन लाई। उदयसिंह अपने सरदारोंकी निन्दा और पत्नीकी प्रशंसा करने लगे, इससे सरदारोंने लज्जित हो बीराको मार डाला।

अकबर की दूसरी चढाईके समय सन १५३८ में उदयसिंह चित्तौरसे भाग गए, परन्तु प्रतिष्ठित राजपूत लोग चित्तौरकी रक्षाके लिये टिड्डियोंकी भांति युद्धस्थलमें आपहुंचे, जिनमें बिदनोरके राजा रायसिंह, चंदावत वंश से उत्पन्न जयमल और कैलवारके राजा फताजी थे। जब फताजीका पिता मारा गया, तब उनकी माता कमलावतीने अपने पुत्र फताजी, फताकी स्त्री और अपनी युवती कन्याको युद्धके सामानसे सजकर उनको साथले युद्ध यात्रा की यह देख अन्य राजपूतोंकी स्त्रियां भी उनके पीछे लगीं। फताजीकी माता, बहन और स्त्रीने बहुतेरे शत्रुओंको मारनेके उपरांत जब अपनी रक्षाका दूसरा उपाय नहीं देखा, तब अपनी अपनी तलवारसे अपनेको मार युद्धभूमिमें मर गईं। उस समय राजपूतोंकी ८००० स्त्रियां अग्निमें जल गईं। राजपूत लोग बडी लडाईके बाद मुसलमानोंके हाथ मारे गए। अकबरने अपने हाथकी गोली से जयमलको मारा। चित्तौर अकबरके अधिकारमें हुआ। इसी युद्धमें मरे हुए राजपूतोंका भूषण चित्तौरका रत्न एकत्र होने पर ७४॥ मन हुआ था, तभीसे सब लोग उतने रत्न चोरीके तिलाकका चिह्न लिफाफे पर ७४॥ का अंक लिखते हैं। अकबर चित्तौरसे अनेक वस्तु और दो फाटक आगरेमें लेगया, जो किले में अब तक मच्छीभवनके पास हैं। उसने पत्थरके दो हाथियों पर जयमल और फताजीकी प्रतिमा बनवा कर आगरेके किलेमें रक्खा, जिनके अंग भंग हो गए हैं। अब वे दिल्लीके जादूघरके द्वार पर रक्खी हुईहैं।

उदयसिंहने चित्तौरसे भागनेके उपरांत मेवाडकी वर्तमान राजधानी उदयपुरको बसाया। उदयपुरके वर्तमान राणा उदयसिंहहीके वंशधर हैं (आगेका इतिहास उदयपुरमें देखो)।

चित्तौरके योद्धाओं में बाप्पारावल, समरसिंह, हमीर, चंद, राणा कुम्भ पृथ्वीराज और संग (संग्रामसिंह) बहुत प्रसिद्ध हुए। चित्तौर राजवंश नीचे लिखे हुए क्रमसे हैं।
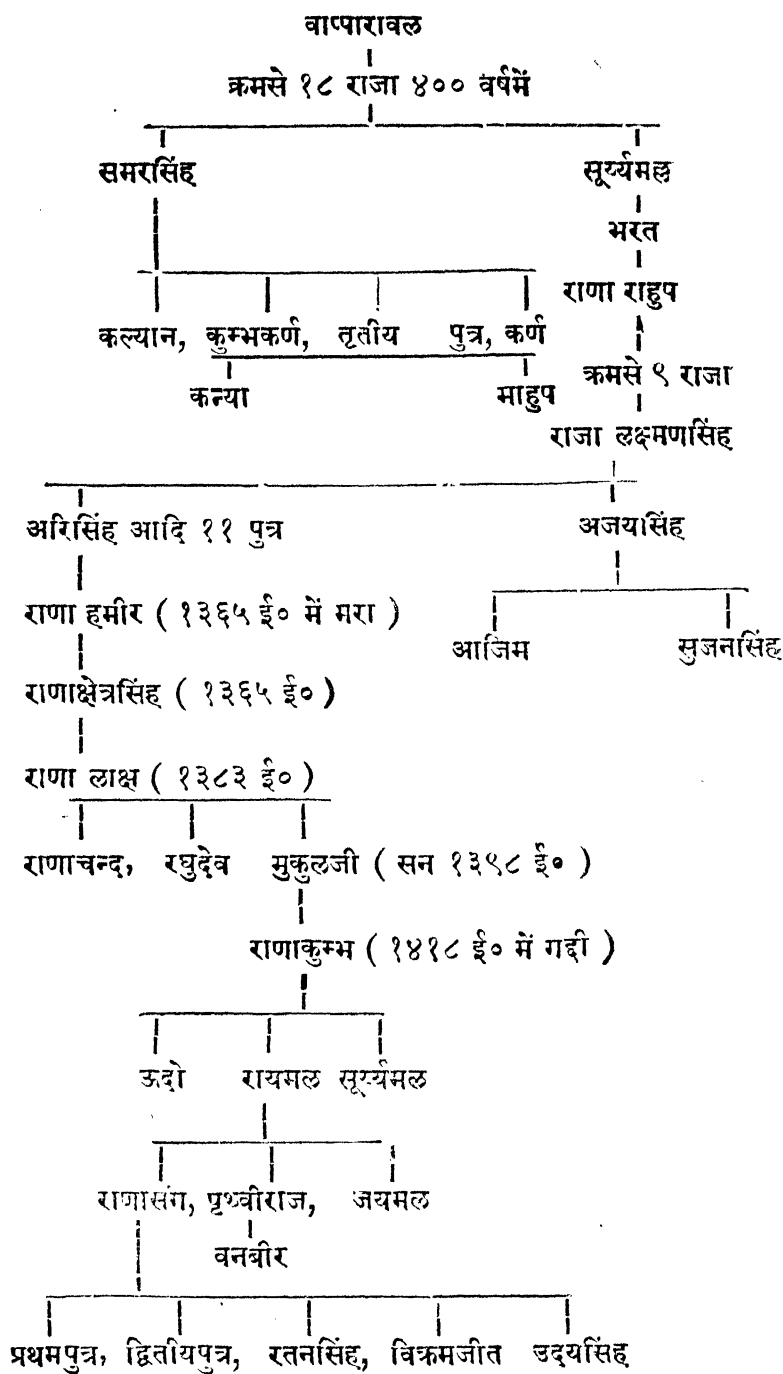
उदयपुर ।

चित्तौरके स्टेशनसे पश्चिम घोडा दक्षिण उदयपुरके समीप दीवारी तक ६३ मीलकी रेलवे लाइनका काम जारी है । चित्तौरसे एक पहाडी सडक उदयपुरको गई है । राजपूताने प्रदेशके दक्षिण हिस्सेमें समुद्रके जलसे२०६४फीट ऊपर अर्बली पर्वतके पूर्व मेवाडके देशी राज्य-

की राजधानी उदयपुर एक सुन्दर छोटा शहर है। यह २४ अंश ३५ कला १९ विकला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश ४३ कला २३ विकला पूर्व देशांतरमें स्थित है।

इस सालकी जन-संख्याके समय उदयपुरमें ४६६९३ मनुष्यथे, अर्थात् २४८७३ पुरुष और २१८२० स्त्रियां। जिनमें २८३१७ हिन्दू, ९४२३ मुसलमान, ६३२६ जैन, २५२७ एनिमिष्टिक, ९४ कृस्तान और ६ पारसीथे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतमें ८३ वां और राजपूतानेमें ६ वां शहर है।

शहरके चारोंओर दीवार है, जिसके भीतर दक्षिण ओर कई बाटिका लगी हैं। शहरके पश्चिम ओर एक झील, उत्तर और पूर्व ओर खाई है (खाईमें झीलसे पानी आता है) और दक्षिणओर एकलिंगगढ़की पहाड़ी शहरकी किलाबन्दी करती है। शहरके ४ फाटक प्रधान हैं,—उत्तर हाथीपोल, दक्षिण खेरवारा, पूर्व सूर्य्यपोल, (एक ओर दिल्ली फाटक) और झीलकी ओर पश्चिम ३ मेहराबोंवाला त्रिपोलिया नामक पानीका फाटक है। शहरसे बाहर किलोंकी जंजीर है।

शहरमें कई देवमन्दिरहैं, जिनमें जगदीशका मन्दिर सबसे बड़ा और सुन्दर है और स्त्रियोंका एक अस्पताल और नया विक्टोरिया हाल है, जो जुबलीके समयमें बना। इसमें ३ कमरे हैं, जिनमें एक मेवाड़की पैदावारका अजायबखाना, दूसरा लाइब्रेरी और तीसरा विद्यालय है। उदयपुरमें थोड़ी तिजारत होती है।

हाथीपोलसे प्रधान बाजार होकर महलको जाना चाहिए, दिल्ली फाटक अथवा सूर्य्यपोलसे बाजारोंको होते हुए गुलाब बागको जाना चाहिए, जहां तालाब, सड़क और बाग देखने लायक हैं। गुलाब बाग होकर दूध तालाबको जाना चाहिए, जो पिछौला झीलकी एक शाखा है।

शहरके पश्चिम २ $\frac{1}{2}$ मील लम्बी और १ $\frac{1}{4}$ मील चौड़ी पिछौला झील है, जिसके मध्यमें जगनिवास और जगमन्दिर नामक दो महल हैं, जिनको १७ वीं सदीके मध्य भागमें राणा जगत्‌सिंहने बनवाया। जगनिवास ४ एकड़ भूमिपर मार्बुलसे बना हुआ है। जगह जगह दीवारोंपर पच्चीकारीके काम बनेहैं और फूलबाग, हम्माम, झरने, नारंगीकी कुंजें इत्यादि हैं। शाहजहांने अपने पिता जहांगीरसे बागी होकर कुछ दिन जगमन्दिरमें निवास किया था। वहां पत्थरका एक स्थान शाहजहांके यादगारके लिये है। झीलमें महाराणाकी कई नौका रहती हैं।

झीलके किनारेपर शाही महल है। झीलके पासका हिस्सा नया है। यह महल जमीनसे १०० फीट ऊंचा चौकोने शकलका ग्रेनाइट पत्थर और मार्बुलसे बना है। इसके बगलोंपर अठपहले गुम्बजदार टावरहैं। पूर्वओर संपूर्ण लम्बाईमें महलके अगवासकी प्रधान अटारी है, जिसके नीचे मेहराबोंकी ३ पंक्तियां हैं। मेहराबी दीवारकी ऊंचाई ५० फीटहै। गणेश-द्वारसे महलमें प्रवेश करना होताह। भीतर बाड़ीमहल, शीशमहल, (जिसमें शीशेके काम-हैं) और शंभुनिवास है, झीलसे ३ मील पूर्व महासती स्थानमें मृत महाराणा जलाए जाते हैं यहां ऊंची दीवारके घेरमें उन लोगोंका छतरियां बनीहैं, उत्तम वृक्ष लगे हैं और उन लोगोंके साथ जलीहुई सतियोंकी मूर्त्तियां हैं। इनमें दूसरे संग्रामसिंहकी छतरी बड़ी और खूबसूरत है। उदयसिंहके पोते अमरसिंहकी भी छतरी अच्छी है।

उदयपुर–राज्य–यह मेवाड़ एजेंसीके पोलिटिकल सुपरिन्टेंडेंटके आधीन राजपूतानेमें एक प्रसिद्ध देशी राज्य है। इसके उत्तर अजमेर और मेरवाड़ाका अंगरेजी देश, पूर्व बूंदी, कोटा, सिंधिया राज्यके नीमच जिले, टोंक राज्यका निंबहेरा जिला और प्रतापगढ़ राज्य, दक्षिण बांसवाडा, डूंगरपुर और प्रतापगढ राज्य दक्षिण-पश्चिम गुजरात प्रदेशमें महिकंठा राज्य और पश्चिम अरवली पहाड़ियां हैं, जो मारवाड़ और सिरोही राज्योंसे इसको अलग करती हैं। राज्यकी सबसे अधिक लम्बाई उत्तरसे दक्षिणतक १४८ मील और सबसे अधिक चौड़ाई पूर्वसे पश्चिमतक १६३ मील और इसका क्षेत्रफल १२६७० वर्गमील है। राज्यसे लगभग ३८ लाख रुपये मालगुजारी आती है।

राज्यके उत्तरी और पूर्वी भागमें खुलाहुआ नीचा ऊंचा देश है। दक्षिण और पश्चिमका देश चट्टानी पहाड़ियों और घने जंगलोंसे छिपा हुआ है। राज्यके पूर्वी भागमें लोहाकी छोटी खान है। उदयपुर शहरसे २४ मील दक्षिण जावरमें टीन और जस्ते पहिले निकाले जाते थे, परन्तु अब खानोंमें काम नहीं होता है, तांबे और सीसे भी कई जगहोंमें मिलते हैं। भिलवाडा देशमें बहुमूल्य पत्थरोंमेंसे रक्तमणि निकलती है। राज्यकी प्रधान नदी बनारस है। राजधानी के दक्षिण और पश्चिममें अनेक धारा निकलती हैं, जिनमें बहुतेरी महिकठां होकर दक्षिण जानेके उपरांत साबरमती नदीमें गिरती हैं।

राज्यमें बहुतेरी झील और बहुतेरे सरोवर हैं। इनमें कई एक झील बहुत बड़ी हैं जिनमें सबसे उत्तम ढेबर झील है, जिसको जयसमुद्र भी कहते हैं। उसके पश्चात् राजनगर, जिसको राजसमुद्र भी कहते हैं, और उदयसागर है। ढेबर झील उदयपुर शहरसे लगभग २० मील दक्षिण-पूर्व है। यह कदाचित् पृथ्वीमें बनवाई जितनी झील हैं, उन सबसे बड़ीहै। झील लगभग ९ मील लम्बी, ५ मील चौडी और २१ वर्गमीलके बीचमें फैली हुई है। इसका पक्का बांध १००० फीट लम्बा और ९५ फीट ऊंचा है, जिसकी चौड़ाई नेवपर ५० फीट और सिरे पर १५ फीट है। दूसरी राजसमुद्र झील ३ मील लम्बी और १ $\frac{३}{४}$ मील चौड़ी राजधानीसे २५ मील उत्तर कांकरौलीके पास है, जिसके बननेमें ७ वर्ष लगे थे और कहा जाता है कि इसके बनवानेमें ९६००००० रुपये खरच पडे। इसके पानीके रोकावके लिये २ मील लम्बा पक्का बांध बना है, जो बहुतेरे स्थानोंमें ४० फीट ऊंचा है। झीलके दक्षिण किनारे पर द्वारिकाधीशका मन्दिर है। कांकरौलीमें श्रीनाथद्वाराके गोस्वामीका मकान है। तीसरी उदयसागर झील राजधानीसे ५ मील पूर्व २ मील लम्बी और १ $\frac{१}{४}$ मील चौड़ी है।

इस बर्षकी मनुष्य–गणनाके समय उदयपुर राज्यमें १८३२४२० मनुष्य थोसन १८८१ में ७ कसबे और ५७१५ गांवोंमें १४९४२२० मनुष्य थे, अर्थात् १३२१५२१ हिन्दू, ७८१७१ जैन, ५१०७६ भील ४३३२२ मुसलमान और १३० कृस्तान। हिन्दू और जैनोंमें १२७०८६ राजपूत, ११४०७३ ब्राह्मण, १०४८७७ महाजन, ७०६१० जाट थे। राजपूतोंमें ५८७५१ सीसोदिये राजपूतथे। आदि निवासी पहाडियों पर हैं, अर्थात् पश्चिमोत्तर मेयर, दक्षिण भील और पूर्वोत्तर मीना जाति।

उदयपुर राज्यमें भिलवाडा (जन-संख्या सन १८९१ में १०३४३,) चित्तौडगढ (जन-संख्या सन १८९१ में १०२८६), नाथद्वारा और कांकरौली प्रसिद्ध वस्ती हैं।

मैदानमें बर्सातमें कपास, तेलके बीज, ज्वार, बाजरा और मकई, जाडेकी ऋतुमें गेहूं, ऊख, पोस्त और तंबाकू बोएजाते हैं।

एक सडक नसीराबादसे उदयपुर राज्य होकर नीमच छावनीको गई है। एक पक्की सडक राजधानीसे निवहेरामें जाकर नसीराबाद वाली सडकमें मिली है। एक सडक राजधानीसे दूसरी घाटीतक बनाई गई है, जो राजनगर होकर ४० मील और अरवली रेंज होकर ७५ मील है। इस रास्तेके बननेसे पहिले अरवली पहाडियां गाडियोंके लिये अगमथीं। एक पक्की सडक उदयपुरसे मेवाड भील सेनाके सदर स्थान खरवारा छावनीको गई है। रेलवे शाखा राज्यके पश्चिमी भाग होकर जाती है।

राज्यका फौजी बल ६२४० सवार, १५१०० पैदल, किले की सब पुरानी तोपोंके साथ ४६४ तोपें और १३३८ गोलंदाज हैं।

उदयपुर राजधानीसे ८० मील पूर्व कनेरा गांव है, जहां कंदराके नीचे शुकदेवजीका मन्दिर है, जिसके निकटके एक छोटे कुण्डसे कुछ गरम पानी पतली धारसे बहता है। यहां वर्षमें एक मेला होताहै।

उदयपुर राज्यकी पश्चिमी सीमाके निकट सद्री घाटी में रामपुरा एक बस्ती है, जिसमें जैन तीर्थंकर पारसनाथके पत्थरके २ सुन्दर मन्दिर बने हैं, जिनको लोग कहते हैं कि राणा कुम्भके राज्यके समय सन १४४० ई० में धर्मसेठने ७५ लाख रुपयेके खर्चसे बनवाया।

छोटा मन्दिर लम्बा चौकोना है, जिसमें एक फाटक है, बड़े मन्दिरके बाहरका घेरा २६० फीट लम्बा और २४४ फीट चौड़ा है। चारों बगलोंमें ४६ कोठरियां हैं। प्रत्येक कोठरीमें पारसनाथकी प्रतिमा हैं। घेरेका दरवाजा पश्चिम बगलमें है, जिसके भीतर तीन मंजिला गुम्बज है। आंगनके मध्यमें लगभग ४२० स्तंभ लगा हुआ मंडप है, जिसके हर कोनेके स्थानमें पारसनाथकी प्रतिमा है। मंडपके मध्यमें सुन्दर नकाशी किया हुआ प्रधान मन्दिर है, इसमें ४ दरवाजे हैं, प्रत्येक दरवाजेके सामने मनुष्यके समान बड़ी श्वेत मार्बुलकी पारसनाथकी एक मूर्ति है। चैत्र और आश्विन मासमें यहां मेला होता है और १० हजारसे अधिक यात्री आते हैं।

एकलिंगजीका मन्दिर—उदयपुर राजधानीसे १२ मील उत्तर एक घाटीमें श्वेत मार्बुलका बना हुआ एकलिंगजीका विशाल मन्दिर है। शिवलिंगके चारोंओर एक एक मुख है। मन्दिरके पश्चिम प्रधान दरवाजेके निकट बैलके समान बडा एक पीतलका नन्दी और चांदी जड़ा हुआ दूसरा एक नन्दी है। आस पास कई दूसरी देवमूर्तियां हैं। मन्दिरके आगे सुन्दर आंगन है। एकलिंगजी मेवाड़के राणाओंके इष्टदेव हैं। इनके शृंगारके सामान और भूषण कई लाख रुपयेके खर्चसे बने हैं। राणाओंकी दी हुई भूमिके अतिरिक्त राज्यसे २४ गांव एकलिंगजीको अर्पण किए गए हैं। एकलिंग शिवकी पूजाका अधिकार राणाओंको और रावलजी (पुजारी) को है। मन्दिरके पास बस्ती है।

लोग कहते हैं कि एकलिंगजीके मन्दिरकी स्थापना मेवाड़ राज्यके आदिपुरुष बाप्पा रावलके समयसे है। पहली मूर्ति लिंगकार थी, जो डूंगरपुर राज्यकी ओरसे इन्द्रसागरमें पधरा दी गई और वर्तमान चतुर्मुखी मूर्ति स्थापित हुई। १५ वीं सदीमें चित्तौरके महाराणा कुम्भने एकलिंगजीके मन्दिरका जीर्णोद्धार करवाया।

पहाड़ियोंके मध्यमें एकलिंगजीके मन्दिरसे तीन चार सौ गज दूर और १०० फीटकी ऊंचाईपर एक सुन्दर झील है, जिसके पास बहुतेरे मन्दिर बने हैं।

इतिहास–उदयपुरके राणा सूर्य्यवंशी सिसोदिया राजपूत हैं और भारतवर्षमें सबसे बड़े दर्जेके राजपूत कहे जाते हैं। उदयपुरके राणाओंके समान भारतवर्षके किसी राजाने मुसलमानोंके आक्रमणकी रुकावट दिलेरीसे या बहुत दिनों तक नहीं की।

सन १५६८ ई० में जब अकबरने चित्तौरको लेलिया, तब उदयसिंहने चित्तौरसे भाग कर उससे ६० मील पश्चिम-दक्षिण पहाडियोंके बीच उदयपुरको बसाया, जहां उन्होंने पहलेहीसे एक झील बना रक्खीथी, जो उदयसागर करके प्रसिद्ध है।

सन १५७२ ई० में राणा उदयसिंहके मरने पर उनके सुप्रसिद्ध पुत्र राणा प्रतापसिंह उत्तराधिकारी हुए, जो बार बार परास्त होने परभी शत्रुओंकी आधीनताका अनादर करते रहे। सन १५७७ में बादशाह अकबरके सेनापति महब्बतखांने उदयपुर पर अधिकार कर लिया, राणा प्रतापसिंह उजाड देशमें भाग गए, उसके पश्चात् राणा प्रतापसिंहने कुछ रुपया जमा करनेके उपरांत इधर उधर फिरते हुए अपने पक्षपातियोंको इकट्ठा किया और सन १५८६ में अचानक आकर राजकीय सेनाओं को काट डाला। उन्होंने थोडे परिश्रममें शीघ्र ही संपूर्ण मेवाडको लेलिया और अपनी मृत्युके समय तक निर्विघ्न अपने आधीन रक्खा। सन १५९७ में प्रतापसिंहके देहांत होने पर उनके प्रतापशाली पुत्र राणा अमरसिंह उत्तराधिकारी हुए, जिन्होंने जहांगीरकी सेनाको दो बार परास्त किया, परंतु सन १६१३ में वह परास्त होकर जहांगीरके आधीन हुए। राणा अमरसिंहका अहंकारी आत्मा पराधीनताको नहीं सह सका। राणा सन १६१६ में अपने पुत्र कर्णको राज्यभार सौंप कर एकांत बास करने लगे और सन १६२१ में मृत्युको प्राप्त हुए। राणा कर्णसिंहने ७ वर्ष राज्य किया उनकी मृत्यु होनेपर उनके पुत्र राणा जगतसिंह राजसिंहासन पर बैठे, इन्हींके राज्यके समय पिछौला तालाब में जगमन्दिर और जगनिवासके महल बने। राणा जगतसिंहके देहांत होने पर सन १६५४ में उनके पुत्र सुप्रसिद्ध वीर राणा राजसिंह उत्तराधिकारी हुए, जिन्होंने सन १६६१ के अकालमें कांकरौलीके तालावका काम आरंभ किया, जो उनके नामसे राजसमुद्र नामसे प्रसिद्ध है। सन १६८१ में राजसिंहकी मृत्यु होने पर उनके पुत्र राणा जयसिंहको राजतिलक मिला, जिन्होंने २० वर्ष पर्यंत निर्विघ्न राज्य किया और मगरेमें जयसमुद्र नामक बहुत बड़ा तालाव बनवाया। सन १७०० ई० में जयसिंहकी मृत्यु होनेपर उनके पुत्र दूसरे अमरसिंह उत्तराधिकारी हुए। सन १७१६ में राणा अमरसिंहके देहांत होने पर राणा संग्रामसिंह उत्तराधिकारी हुए, जिनके समयमें मुगल बादशाहका बल जल्दीसे घटा और महाराष्ट्रों ने मध्य भारत में लूट पाट आरंभ किया। संग्रामसिंहके उत्तराधिकारी राणा जगतसिंह हुए। सन १७३६ में बाजीराव पेशवाने राणाके साथ संधि की, जिसके अनुसार राणा १६०००० रुपया चौथ देने के लिये लाचार हुए। सन १७५२ में राणा जगतसिंहके मरने पर उनके पुत्र प्रतापसिंह राज्याधिकारी हुए, जिनके ३ वर्षकी हुकूमतमें महाराष्ट्रोंने मेवाड को लूटा। प्रतापसिंह के पुत्र राणा राजसिंहने ७ वर्ष हुकूमत किया। उनकी मृत्यु होने पर उनके चचा राणा उरसीसिंह सन १७६२ में उत्तराधिकारी हुए। उरसीसिंहके मारे जाने पर उनके पुत्र राणा हमीर गद्दी पर बैठे। सन १७७८ में राणा हमीरकी मृत्यु होने पर उनके भाई राणा भीमसिंहको राज्य

मिला। उनके राज्यके समय सन १८१७ तक सिंधिया, होलकर और पिंडारिये समय समयपर मेवाडमें लूटपाट करते रहे। सन १८१७ में अंगरेजी गवर्नमेंटके साथ उदयपुरकी संधि हुई।

सन १८२८ में महाराणा भीमसिंहके देहांत होनेपर उनके एकलौते पुत्र महाराणा युवनासिंहको राजतिलक मिला। जब युवनसिंह सन १८३८ में निः पुत्र मर गए, तब उस कुलके समीपी वारिस वगोरके प्रधान सरदार सिंह उदयपुरके सिंहासन पर बैठे। सन१८४२ में उनकी मृत्यु होने पर उनके छोटे भाई महाराणा स्वरूपसिंह राज्याधिकारी हुए, जिनकी मृत्युके पश्चात् सन १८६१ में उनके भतीजे और गोद लिए हुए पुत्र शंभुसिंह उत्तराधिकारी हुए। महाराणा शंभुसिंहके मरने पर सन १८७४ में उनके चचेरे भाई महाराणा सज्जनसिंह जी० सी०एस० आई उदयपुरके सिंहासन पर बैठे जिन्होंने दो तीन बागोंको मिलाकर, सज्जन विलास, बाग बनवाया। महाराणा सज्जनसिंह सन १८८४ में२४वर्षकी अवस्थामें मृत्युको प्राप्त हुए, जिनके उत्तराधिकारी उदयपुरके वर्तमान नरेश महाराणा समर फतहसिंह बहादुर जी० सी० एस० आई० ४२ बर्षकी अवस्थाके हैं उदयपुरके महाराणाओंको अंगरेजी गर्वनमेंटकी ओरसे २१ तोपोंकी सलामी मिलती है।

श्रीनाथद्वारा।

उदयपुर शहरसे २२ मील उत्तर कुछ पूर्व नई रेलवे सड़कसे पश्चिम बनास नदीके दहिने किनारे पर श्रीनाथद्वारा एक कसबा और वल्लभ-संप्रदायके वैष्णवोंका प्रधान तीर्थस्थान है। पूर्व दिशामें पहाड़ियोंकी पीठसे जहां चौपाए चरते हैं, पश्चिम बनासके तीर तक पवित्र स्थान है, इसमें कोई मनुष्य जीवहिंसा नहीं कर सकता।

सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय श्रीनाथद्वारा कसबे में ८४५८ मनुष्य थे, अर्थात् ७९०६ हिन्दू और ५५२ मुसलमान।

यहां श्रीनाथजीका उत्तम मन्दिर बना हुआ है। और नित्य राग भोगकी बडी तय्यारी रहती है। मन्दिर वल्लभसंप्रदायके गोस्वामियोंके अधिकारमें है, जिनके शिष्य धनी महाजन लोग अधिक होते हैं, जो अपने व्यापारसे कुछ अंश निकाल कर भारतवर्षके प्रत्येक विभागोंसे यहां बहुत रुपये भेजते हैं। श्रीनाथद्वारेमें बहुतेरे यात्री आते हैं। कार्तिक शुक्ल १ को यहांके अन्नकूटकी तय्यारी देखने योग्य होती है। यहांके वर्तमान गोस्वामी श्रीबालकृष्णलालजी हैं।

मदरास हाते-तैलंग देशके कांकरवल्ली गांवमें भारद्वाज गोत्र तैलंग ब्राह्मण लक्ष्मण भट्टजी रहते थे। उन्होंने एक समय काशी-यात्राकी। बिहार प्रदेशके चम्पारण्य (चम्पारन) में चौरा गांवके निकट उनकी पत्नी इल्लमगारूके गर्भसे सम्बत १५३५ (सन १४७८ ई०) बैशाख बदी ११ को श्रीबल्लभाचार्य्यजीका जन्म हुआ। इनके बड़े भाईका नाम रामकृष्ण भट्ट और छोटेका रामचन्द्र भट्ट था। बल्लभाचार्य्यजीने काशीके पंडित माधवानंद तीर्थ, त्रिदंडीसे विद्याध्ययन किया। आचार्य्यजी सम्वत १५४८ में दिग्विजयको चले और पंडरपुर, त्र्यम्बक, उज्जैन होते हुए ब्रजमें आये इसके पश्चात् वह कई महीने तक ब्रजमें रह कर सोरों अयोध्या और नैमिषारण्य होकर काशीजी पहुंचे और वहांसे गया और जगन्नाथजी होते हुए फिर दक्षिण चले गए। इसप्रकारसे संबत १५५४ (सन १४९७ई०) में उन्होंने अपना पहला दिग्विजय समाप्त

किया और दूसरे दिग्विजयमें व्रजके गोबर्द्धन पर्वत पर श्रीनाथजीका स्वरूप प्रगट करके उनको स्थापित किया । श्रीवल्लभाचार्य्यजीने ३ बार पर्य्यटन करके सारे भारतवर्षमें वैष्णव मत फैला कर संबत १५८७ (सन १५३० ई०) के अषाढ सुदी २ को काशीजी में अपने शरीरका विसर्जन किया । इनके बड़े पुत्र श्रीगोपीनाथजी और छोटे पुत्र श्रीविट्ठलनाथजी थे । गोपीनाथजीके पुत्र पुरुषोत्तमजीसे आगे वंश नहीं बढा, परन्तु विट्ठलजीके ७ पुत्र थे, जिनमेंसे बड़े गिरधरजी और छोटे यदुनाथजीका वंश अब तक वर्तमान है ।

श्रीनाथजीकी मूर्ति पहले व्रजके गोकुलमें थी । लगभग सन १६७१ ई० में जब औरंगजेबने श्रीनाथजीके मन्दिरको तोडनेकी इच्छाकी, तब उदयपुरके महाराणा राजसिंहने श्रीनाथजीकी मूर्तिको अपने राज्यमें लाकर इस स्थान पर स्थापित किया और यहां कसबा बस गया ।

सत्रहवां अध्याय ।

(राजपूतानेमें) कोटा, बूंदी, (मध्य भारतमें) नीमच छावनी (राजपूतानेमें) झालरापाटन, प्रतापगढ़, बांसवाडा डूंगरपुर, (मध्यभारत–मालवामें) जावरा और रतलाम ।

कोटा ।

चित्तौरके रेलवे स्टेशनसे लगभग ७० मील पूर्व नसीराबादसे सागर जानेवाली सड़कके निकट चंबल नदीके बाएं किनारेपर राजपूतानेमें देशी राज्यकी राजधानी कोटा एक कसबा है, जो २५ अंश १० कला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश ५२ कला पूर्व देशांतरमें स्थित है ।

सन १८९१ की जन-संख्याके समय कोटामें ३८६२४ मनुष्यथे; अर्थात् २०००५ पुरुष और १८६१९ स्त्रियां । जिनमें २८१२३ हिन्दू, ९८०६ मुसलमान ४६४ जैन, १७८ सिक्ख और ५३ कृस्तानथे । कसबेमें कई एक मसजिद, १ अस्पताल, १ जेल, १ स्कूल और कसबेके पूर्व किशोरसागर नामक बनाई हुई एक झील है जिससे सिंचावका काम होता है । कोटा कसबेमें सैकड़ों देवमन्दिर हैं, जिनमें मथुरियाजीके कई एक मन्दिर प्रधान हैं । इनके खर्चके लिये कोटाके महारावकी ओरसे बड़ी जागीर लगी है । मन्दिरोंमें भगवानके भोगरागकी भारी तैयारी रहती है ।

कोटा राज्य–यह राज्य राजपूतानेमें कोटा एजेंसीके पोलिटिकल सुपरिंटेंडेंटके आधीन है । इसके उत्तर और पश्चिमोत्तर चंबल नदी, जो बूंदी राज्यसे इसको अलग करती है; पूर्व ग्वालियर राज्य, टोंकका छपरा जिला और झालावार राज्यका हिस्सा; दक्षिण मकंदरा पहाड़ियां और झालावार राज्य और पश्चिम उदयपुर राज्य है । राज्यका क्षेत्रफल ३७९७ वर्गमील है । इसकी मालगुजारी सन १८८१—८२ ई० में २९४१९७० रुपयाथी ।

कोटाकी दक्षिण सीमा पर पहाड़ियोंकी पंक्ति है, जो झालावार राज्यसे इसको अलग करती है । कोटाका राज्य बूंदी राज्यकी शाखा है । दोनों राज्य मिलकर हाड़ावती कहलाता है, क्योंकि दोनोंके राजा हाड़ा राजपूत हैं ।

सन १८९१ की जन-संख्याके समय कोटा राज्यमें ५२६२६० मनुष्य और सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ५१७२७५ मनुष्यथे, अर्थात् ४७९६३४ हिन्दू, ३२८६६ मुसलमान, ४७५० जैन, और २५ क्रस्तान। हिन्दू और जैनोंमें ४८८८२ चमार, ४६९२५ मीना, ४३४६९ धाकर, ४३४५८ ब्राह्मण, ३३४८८ गूजर, २०७१७ बनिया, १६७७३ बलाई; १५२५५ राजपूत, ८८०१ भीलथे।

कोटाके महारावको १५००० पर्यंत सेना रखनेका अधिकार है। इनके २ मैदानकी और ९० दूसरी तोपे ह।

इतिहास—सन १६२५ के लगभग बूंदीके राव रतनके दूसरे पुत्र माधवसिंहको कोटा राज्य देदिया गया। माधवरावने राजाकी पदवी लेकर कई बर्षों तक राज्य किया। उनके सबसे बड़े पुत्र मकुन्दसिंह उत्तराधिकारी हुए, जो अपने ४ भाइयोंके साथ शाहजादे आलमगीरसे उज्जैनमें लड़े। उनके छोटे भाई किशोरसिंहके अतिरिक्त सबके सब मारे गए। मुकुन्दसिंहके पुत्र राजा जगतसिंह राजा हुए। १८ वीं सदीके आरंभमें जब घराऊ झगड़ोंसे राज्य कमजोर हो चुका था, जयपुरके राजा और महाराष्ट्रोंने इसपर आक्रमण किया और कोटाके राजासे खिराज देनेको कबूल करवाया। १९ वें शतकके प्रारंभमें केवल दीवान जालिमसिंह की चतुरतासे कोटा तबाहीसे बच गया, जिसके हाथमें महाराव उमेदसिंहने राज्य भार देदिया था। जालिमसिंहने ४५ वर्षमें कोटाको राजपूतानेमें सबसे अधिक उन्नति वाले और बली राज्योंमेंसे एकके मरतबेको बना दिया। उसने अंगरेजी सरकारसे मिलकर पिंडारियोंको दबाया। सन १८१७ में अँगरेजी गवर्नमेंटके साथ जालिमसिंहसे संधि हुई। जालिमसिंहकी मृत्युके पश्चात् उसका पुत्र राज्य करनेके योग्य नहा था, इसलिये सन १८३८ में कोटाके प्रधान अर्थात् महारावकी अनुमतिसे जालिमसिंहके संतानोंके लिये झालावार राज्य अलग कर दिया गया। सन १८५७ के बलवेमें झालावार और कोटाकी फौज बागी हुई जिन्होंने, पोलिटिकल एजेंट और उसके २ लड़कोंको मार दिया। महारावने उनके बचानेमें सहायता नहीं की इसलिये उनकी सलामी १७ तोपोंसे १३ तोपोंकी करदी गई। सन १८६६ में महाराव दूसरे छत्रशालसिंह अपने पिताके स्थान पर कोटाके राजसिंहासन पर बैठे, जिन्होंने अपनी १७ तोपोंकी सलामी फिर पाई। इनकी मृत्यु होनेके पश्चात् कोटाके वर्तमान नरेश महाराव उमेदसिंह बहादुर जिनकी अवस्था १८ वर्षकी है, कोटाकी गद्दी पर बैठे। राजकुल हाड़ाचौहान राजपूत है।

कोटाके नरेश इस क्रमसे हैं—राव माधवसिंह सन १५८९ ई०, राव मकुन्दसिंह सन १६३० ई०, राव जगतसिंह सन १६५७ ई०, राव केशवसिंह सन १६७९ ई०, राव रामसिंह सन १६८५ ई०, राव भीमसिंह सन १७०७ ई०, महाराव अर्जुनसिंह सन १७१९ ई०, महाराव दुर्जनशाल, महाराव अजितसिंह (विष्णुसिंहके पोते); महाराव क्षत्रसाल, महाराव गुमानसिंह सन १७६५ ई० में अपने भाई छत्रसालकी गद्दीपर बैठे, महाराव उमेदसिंह सन १७७० और महाराव किशोरसिंह सन १८१९ ई०। (इनके पश्चात् दूसरे)।

बूंदी।

कोटासे २० मील पश्चिमोत्तर पहाड़ियोंके तंग स्थानमें राजपूतानेमें देशी राज्यकी राजधानी बूंदी एक सुन्दर कसबा है।

सन १८९१ की जन–संख्याके समय बूंदीमें २२५४४ मनुष्य थे; अर्थात् १७००९ हिन्दू ४५७५ मुसलमान, ९५७ जैन और ३ पारसी थे।

पहाडीके खड़े बगलपर राजमहल बना हुआ है। नीची ऊंची भूमिपर सड़क और मकान बने हैं। महलके नीचे अस्तबलके आंगन और दूसरे आफिसोंकी बड़ी पंक्ति है, जिससे ऊपर राजसम्बन्धी मकान हैं। इनसे ऊपर कचहरीकी खानगी कोठरियां हैं, जिससे ऊपर पहाडीपर किला है।

कसबा शहरपनाहसे घेरा हुआ है, जिसमें ४ फाटक हैं। पश्चिममें महल फाटक, दक्षिणमें चौगानफाटक, पूर्वमें मीनाफाटक और पूर्वोत्तर जाटसागर फाटक। लगभग ५० फीट चौड़ी सडक कसबेकी कुल लम्बाई होकर महलसे मीनाफाटक, तक गई है दूसरी सड़कें तंग और नादुरुस्त हैं।

किलेकी पहाड़ीपर एक बड़ा मन्दिर, दक्षिणकी शहरतलीमें एक दूसरा मन्दिर, कसबेमें १२ जैनमन्दिर और लगभग ४१५ छोटे मन्दिर हैं। किलेकी पहाड़ीके एक शिखरपर एक छत्तरी है, जिसके उत्तर फूलबाग, इससे दक्षिण कसबेसे लगभग २ मील दूर नया बाग है। जाटसागरके उत्तर किनारेपर कई एक सुन्दर बाग हैं बूँदीमें एक खैराती अस्पताल, एक अंगरेजी स्कूल, एक पोष्टआफिस और एक टकशाल है, जहां सोना, चांदी और तांबेके सिक्के ढाले जाते हैं।

बूंदी राज्य–यह राज्य राजपूतानेमें हाड़ावती और टोंक एजंसीके पोलिटिकल सुपरिंटेंडेंटके अधीन है। इसके उत्तर जयपुर और टोंक राज्य, पूर्व और दक्षिण कोटा राज्य और पश्चिम उदयपुर राज्य है। राज्यका क्षेत्रफल २३०० वर्गमील है। इसकी लम्बाई लगभग ७० मील और चौडाई ४३ मील है। संपूर्ण लम्बाईमें पहाडियोंके दो कत्तार हैं। राज्यमें विशेषकरके शालवृक्षका बडा जंगल है। प्रधान सडक देवली छावनीसे इस राज्यमें होकर कोटा और झालावारकी ओर गई है। एक सड़क राज्यके उत्तर–पूर्व कोनेसे होकर टोंकसे देवली तक गई है। राज्यकी अंदाजन मालगुजारी १०००००० रुपया है।

सन १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय राज्यमें २९५६२५ मनुष्य और सन१८८१ की जन–संख्याके समय राज्यके ८४२ गांवमें २५४७०१ मनुष्य अर्थात् २४२१०७ हिन्दू, ९४७७ मुसलमान, ३१०१ जैन, ९ सिक्ख और ७ क्रस्तान थे। हिन्दू और जैनोंमें ५५९८२ मीना, ३०३७७ गूजर, २३०२५ ब्राह्मण, १९२७८ चमार, १५४०६ बनियाँ, ९२७४ राजपूत, ७३०१ धाकर, ६५५४ भील थे।

राज्यके सैनिक बल ५९० सवार, २२८२पैदल, १८ मैदानकी और ७० दूसरी तोपें हैं।

इतिहास–बूंदी राजवंश चौहान राजपूतोंकी हाड़ा जाती है जिन्होंने बहुत सदियों तक इस देशपर अधिकार रक्खा, इससे यह देश हाड़ावती कहलाता है। बूंदीके नरेशोंको महाराव राजाकी पदवी है।

बंगदेवके पुत्र राव देवसिंहने बूंदीमें अपना राज्य स्थापन किया और अपने पुत्र हरराजसिंह (सन १२४१ ई०) को बूंदीका राज्य देकर वह चले गए। हरराजसिंहने कुछ दिनोंतक राज्य किया। उनके भाई समरसिंहने भीलोंको जीता था। समरसिंहके पश्चात् क्रमसे ये राजा हुए–राव रनपालसिंह (सन १२७५ई०), राव हमीर (सन १२८६ई०), राव वीरसिंह

(सन १३३६ ई०), राव बैरीसाल वा बीरूजी (सन १३९३ ई०), राव सुभांडदेव (सन १४४० ई०)। सुभांडदेवके भाई समरकंदी और अमरकंदीने उनको राजगद्दीसे उतार कर १२ वर्ष राज्य किया। उसके पश्चात् राव नारायणदासने अपने पिताका राज्य अपने चचाओंसे छीन लिया। राव राजा सुरतनजी (सन १५३१ ई०) पागल थे, इसलिये सरदारोंने उनको राज्यसे अलग करके नारायणदासके पुत्र अर्जुनरावको राजा बनवाया। यह थोडेही दिन राज्य करनेके पश्चात् चित्तौरके संग्राममें मारे गए। राव राजा सुरजन (सन १५५४ ई०)—उन्होंने बादशाह अकबरसे चुनार और काशी पाया। राव राजा भोज (सन १५८५ ई०)–राव रतनजी (सन १६०७ ई०)–इनके पुत्र कुंवर माधवसिंहने बादशाह जहांगीरसे कोटा पाया और कुंवर गोपीनाथ युवराज हुए। कुंवर गोपीनाथ (सन १६१४ ई०) का देहांत हो गया इसलिये उनके पुत्र रावराजा शत्रुशाल राव रतनजीके गोद बैठे (सन १६३१ ई०) और माधवसिंह कोटाके राजा हुए। रावराजा शत्रुशाल उज्जैनकी लड़ाईमें मारे गए। राव राजा भावसिंह (सन १६५८ ई०)–उन्होंने औरंगजेबसे औरंगाबादकी सूबेदारी पायी। राव राजा अनरुद्धसिंह (सन १६८१ ई०)–यह भावसिंहके छोटे भाईके पौत्र थे। रावराजा बुधसिंह (सन १६९५ ई०)–इन्होंने बहादुरशाहकी सहायता की, परन्तु जयपुरवालोंने इनको राजगद्दीसे उतार दिया। महाराव राजा उमेदसिंह (सन १७४८ ई०)–उन्होंने हुलकरकी सहायतासे बूंदीको लेलिया और फिर बिरक्त होकर राज्य छोड दिया। महाराव राजा अजित-सिंह (सन १७७० ई०)। महारावराजा विष्णुसिंह (सन १७७३ ई०)–उन्होंने सन १८१७ ई० में अंगरेजी सरकारसे अहदनामा किया। उनके ४ पुत्र थे। ३ पुत्रोंकी मृत्यु हो जानेपर सबसे छोटे पुत्र १० वर्षकी अवस्थावाले महाराव राजा रामसिंह सन १८२१ ई० में बूंदीके राजसिंहासन पर बैठे, जिनको सन १८८७ के दिल्ली दरबारमें जी० सी० एस० आई० की और २ वर्ष पश्चात् सी० आई० ई० की पदवी मिली थी। महाराव राजा राम-सिंहके देहांत होनेपर, जिनका जन्म सन १८०९ ई० में हुआ था, सन १८८९ ई० में उनके पुत्र वर्तमान बूंदीनरेश महाराव राजा रघुबीरसिंहजीको राज्यसिंहासन मिला, जिनकी अवस्था २२ वर्षकी है, इनके अनुज महाराज रंगराजसिंह और महाराज रघुराजसिंह हैं। यहांके नरेशोंको अंगरेजी गवर्नमेंटकी ओरसे १७ तोपोंकी सलामी मिलती है।

नीमच छावनी।

चित्तौरसे ३४ मील दक्षिण (अजमेरसे १५० मील) नीमचका रेलवे स्टेशन है। राजपूताने और मध्य भारतकी सीमाके निकट मालवाकी पश्चिमोत्तर सीमा पर मध्य भारत ग्वालियरके राज्यमें नीमच एक कसबा और अंगरेजी फौजी छावनी है, यहांका छोटा किला इस समय शस्त्रागारके काममें आता है। यहांकी आब हवा रमणीय है।

नीमच कसबा ग्वालियर राज्यके एक जिलेका एक सदर स्थान है। कसबेकी दीवारोंके निकट तक छावनीकी सीमा है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कसबे और छावनीमें २१६०० मनुष्य थे, अर्थात् १४१६७ हिन्दू, ५४३२ मुसलमान, ७३४ जैन, ५८७ एनिमिष्टिक, ५४३ क्रस्तान, ११९ पारसी, १६ यहूदी और २ सिक्स। सन १८८१ की जन-संख्याके समय कसबेमें ५१६१ और छावनीमें १३०६९ मनुष्य थे।

सन १८९७ के बलवेमें देशी बंगाल सेनाका एक भाग नीमचसे दिल्लीको चला । अंगरजी अफसर किलेमें थे । मंदसोरकी सेनाने बागी होकर किलेको घेरा दिया । किलेवाले अपना बचाव कर रहे थे, उसी समय उनकी रक्षाके लिये अंगरेजी सेना आ पहुंची ।

झालरापाटन ।

नीमचके रेलवे स्टेशनसे ८० मील पूर्व और कोटा राजधानीसे ५२ मील दक्षिण कुछ पूर्व राजपूतानेमें (२४ अंश ३२ कला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश १२ कला पूर्व देशांतरमें) झालावार राज्यकी राजधानी झालरापाटन है, जिसको पाटन भी कहते हैं । वहां अभी रेल नहीं गई है । नीमचसे पाटन तक अच्छी सडक गई है । सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पाटनमें १०७८३ मनुष्य थे, अर्थात् ७८२० हिन्दू, २१८५ मुसलमान, ७७७जैन और एक सिक्ख । एक झीलके बगलमें झालरापाटन कसबा है । झीलकी ओर छोड करके कसबे के ३ ओर दीवार और खाई है । शहरकी दीवार और पहाडियोंके मध्यमें कई एक उद्यान लगे हैं । कसबेमें बहुतेरे कोठीवाल लोग रहते हैं और एक टकशाल एक सराय और द्वारिकानाथका सुन्दर मन्दिर है । कसबेसे चार पांच सौ गज दक्षिण चन्द्रप्रभा नदी बहतीहै, जो पश्चिमसे आकर पूर्वोत्तरको दौडती हुई कालीसिंध नदीमें जामिली है । कसबेसे १५० फीट ऊपर एक पहाडी पर छोटा किला है ।

झालरापाटनसे ४ मील उत्तर छावनी तक पक्की सडक बनी है, जहां महाराज का महल है ।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय छावनीमें २३३८१ मनुष्य थे अर्थात्१५४५९ हिन्दू, ७३७५ मुसलमान, ४१२ जैन, ११७ सिक्ख और १८ कृस्तान ।

महाराज राणाके महलके चारोंओर प्रत्येक बगलमें ७३५ फीट लंबी दीवारहै, जिसके पूर्व बगलके मध्यमें प्रधान दरवाजा और चारों कोनोंपर ४ बुर्ज हैं । झालरापाटन, राज्यके परगनाका सदर स्थान और छावनी झालावार कोर्टका सदर है । यहां एक सराय, महाराजकी कचहरियां और दूसरे अनेक आफिस हैं । महलसे १ मील दक्षिण-पश्चिम एक जलाशयके निकट कई एक उद्यान लगेहैं ।

झालारापाटनसे ८० मील पूर्व कुछ उत्तर 'गूना, और ५२ मील उत्तर कुछ पूर्व'बारा' है ।

झालावार-राज्य- मध्य भारत राजपूताना, हाडावती और टोंक एजेंसीके पोलिटिकल सुपरिंटेंडेंटके आधीन राजपूतानेमें एक देशी राज्य झालावार है । यह राज्य अलग अलग ३ स्थानोंमें है । सबसे बडे टुकडेके (जिसमें झालरापाटन राजधानी है) उत्तर कोटा राज्य, पूर्व ग्वालियर राज्य; दक्षिण राजगढका छोटा राज्य, सिंधिया और हुलकरके बाहरीके राज्यों के हिस्से, देवास राज्यका एक जिला और जावरा राज्य और पश्चिम सिंधिया और हुलकरके अलगके राज्यके जिले हैं । राज्यका क्षेत्रफल २६९४ वर्गमील है । सन १८८२-८३ ई० में राज्यसे १५२५२६० रुपया मालगुजारी आई थी । राज्यके शाहाबाद जिलेमें लोहा और लाल और पीली मट्टी, जो कपडा रँगनेके काममें आती है, पाई जाती है । राज्यका अधिक भाग पहाडी और शेष भाग उपजाऊ है । लगभग ⅓ राज्य खेतीके योग्य है । दक्षिण भागमें पोस्ता अधिक होता है । कूएसे बहुत खेत पटाए जाते हैं ।

सन १८९१ की जन-संख्याके समय झालावार राज्यमें ३४३३१० मनुष्य और सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ३४०४८८ मनुष्य थे, अर्थात् ३१९६१२ हिन्दू, २०८५३ मुसलमान और १३ कृस्तान। हिन्दुओंमें २७३१३ चमार, १८५९१ गूजर, १८४९८ ब्राह्मण, १७७८७ बलाई, १६४५९ भील, १६०८४ मीना, १३४७० बनिया, ११२६३ धाकर, १००७७ काछी, ९४९१ राजपूत (जिसमें झाला और राठौर अधिक हैं) थे।

राज्यका सैनिक बल ४२५ सवार, ३२६६ पैदल, २० मैदानकी ओर ७५ दूसरी तोपें और २४७ गोलंदाज हैं।

इतिहास–झालावारका राजवंश झाला राजपूत है। महाराजके पुरुषे काठियावाड़के झालावार जिलेमें हलावाड़के छोटे प्रधान थे। लगभग सन १७०९ ई० में भावसिंहका पुत्र माधोसिंह कोटामें आया। कोटाके प्रधानने माधोसिंहकी बहिनसे अपने पुत्रका विवाह कर दिया और उसको नंदाकी मिलाकियत और फौजदारका काम दे दिया। माधोसिंहके पीछे उसका पुत्र मदनसिंह, मदनसिंहके पीछे हिम्मतसिंह हिम्मतसिंहके पीछे उसका भतीजा जालिमसिंह, जो उस समय केवल १८ वर्षका था, फौजदार हुआ। जालिमसिंहने ३ वर्ष पीछे जयपुरकी फौजको कोटाको जीतकर बचाया। उसके उपरांत कुछ दिनोंके बाद जब कोटाके राजाने जालिमसिंहको निकाल दिया, तब वह उदयपुर चला गया,परन्तु कोटाके राजाने अपने मरनेके समय जालिमसिंहको बुलाकर अपने पुत्र उमेदसिंह और अपने देशको उसको सौंप दिया। उस समयसे जालिमसिंह कोटाके असली हुकूमत करने वाला हुआ। सन १७९६ ई० में जालिमसिंहने झालरापाटनके वर्तमान कसबेको बसाया और उससे ४ मील उत्तर छावनी बनाई।

जालिमसिंहकी मृत्यु होने पर सन १८३८ ई० में कोटाके महारावकी अनुमतिसे जालिमसिंहकी संतानोंके लिये कोटा राज्यसे झालावार राज्य अलग कर दिया गया। मदनसिंहने महाराज राणाकी पदवी प्राप्तकी। उनके उत्तराधिकारी महाराज राणा पृथ्वीसिंह हुए पृथ्वीसिंह की मृत्यु होने पर सन १८७६ में उनके गोद लिए हुए पुत्र बखतसिंह, जो ११ वर्षकेथे उत्तराधिकारी हुए। सन १८८४ में बखतसिंहको राज्यका अधिकार मिला और उनका नाम महाराज राणा जालिमसिंह पड़ा। यहांके महाराज राणाओंको अंगरेजी सरकारकी ओरसे १५ तोपोंकी सलामी मिलती है।

प्रतापगढ़।

नीमचके रेलवे स्टेशनसे ३१ मील दक्षिण,मंडेसरका रेलवे स्टेशन है, जिसको मंदसोर भी कहते हैं। मंडेसर मध्य भारतके ग्वालियर राज्यमें चंबल नदीकी एक शाखापर सुन्दर कसबा है, जिसमें सन १९८९१ की जन-संख्याके समय २५७८५ मनुष्य थे।

मंडेसरसे १९ मील पश्चिम (२४ अंश २२ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश ५२ कला १५ विकला पूर्व देशांतरमें) राजपूतानेके एक देशी राज्यकी राजधानी प्रतापगढ़ है, वहां अभी रेल नहीं गई है।

सन १८९१ वर्षकी जन-संख्याके समय प्रतापगढ़में १४८१९ मनुष्य थे, अर्थात् ८४२८ हिन्दू, ३५९४ जन २६२६ मुसलमान, १६७ एनिमिष्टिक और ४ पारसी।

प्रतापगढ कसबेको महारावल प्रतापसिंहने १८ वें शतकके आरंभमें नियत किया। शालमसिंहने सन १७५८ में राजसिंहासन पर बैठनेके पश्चात् शहरपनाह बनाया, जिसमें ८ फाटक बने हुए हैं। दक्षिण-पश्चिमके छोटे किलेमें महारावलके परिवारके लोग रहते हैं, कसबेके मध्यमें महल है। वर्तमान महारावलने कसबेसे लगभग १ मील पूर्व नया महल बनवाया है। प्रतापगढ़में ३ वैष्णवमन्दिर और ४ जैनमन्दिर हैं। प्रतापगढ़ मीनाकारीके कामके लिये प्रसिद्ध है।

राज्यकी पुरानी राजधानी देवलिया अब प्रायः छोड़ दी गई है, जो प्रतापगढ़से ७ ½ मील पश्चिम है।

प्रतापगढ़ राज्य–मेवाड़ एजेंसीके पोलिटिकल सुपरिंटेंडेंसके आधीन राजपूतानेमें यह एक देशी राज्य है इसके पश्चिमोत्तर और उत्तर मेवाड़ राज्य, पूर्वोत्तर और पूर्व नीमच और मन्दसोर सिंधियाके जिले और जावरा, पिपलोद और रतलामके देशी राज्य और दक्षिण-पश्चिम बांसवाड़ा राज्य है। राज्यका क्षेत्रफल १४६० वर्गमील है। इससे लगभग ६ लाख रुपया मालगुजारी आती है।

राज्यके पश्चिमोत्तर भागमें पहाड़ियाँ हैं, जिन पर प्रायः सब भील बसते हैं। बनाई हुई सड़क राज्यमें नहीं है, परन्तु दिहाती सड़क ३२ मील उत्तर नीमच तक, १९ मील पूर्व मंडेसर तक और ३५ मील दक्षिण पूर्व जावरा तक हैं। गाड़ीकी सड़क कानगढ़ घाट होकर बांसवारा तक है।

सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस राज्यमें ७९५६८ मनुष्य थे; अर्थात् ७५०५० हिंदू, ४२४३ मुसलमान, २७० भील, और ५ दूसरे। राज्यका सैनिक बल २७५ सवार, ९५० पैदल, १२ तोप और ४० गोलंदाज हैं।

इतिहास–सुप्रसिद्ध राणा कुंभने सन १४१८ ई० से १४६८ तक चित्तौरगढ़का राज्य किया। उनके ऊदो, रायमल और सूर्यमल ३ पुत्र थे। सूर्यमलने रायमलके पुत्र पृथ्वीराजसे परास्त होनेके उपरांत चित्तौरगढ़से भागकर देवलियामें जाकर वहां राज्य नियत किया, जिनके वंशधर प्रतापगढ़के महारावल हैं। अठारहवीं सदीके आरंभमें देवलियाके महारावल प्रतापसिंहने प्रतापगढ़को बसाया मालवामें महाराष्ट्रोंके बल बढ़नेके समयसे प्रतापगढ़के प्रधान हुलकरको कर देते थे। सन १८१८ में प्रतापगढ अंगरेजी गवर्नमेंटकी रक्षामें हुआ। महारावल दलपतिसिंह, जो सन १८४४ ई० में प्रतापगढके सिंहासन पर बैठे, प्रतापगढके महारावलके पोते थे, जिनको प्रथम डूँगरगढके यशवंतसिंहने गोद लियाथा और यशवंतसिंहके गद्दीसे उतार दिये जानेपर वह डूंगरगढ राज्यके उत्तराधिकारी हुए थे। पीछे दलपतसिंहने प्रतापगढके राजसिंहासन मिलने पर डूंगरगढको छोड दिया। उनकी मृत्यु होनेके पश्चात् सन १८६४में उनके पुत्र उत्तराधिकारी हुए प्रतापगढके वर्तमान नरेश महारावल रघुनाथसिंह बहादुर लगभग ३३ वर्षकी अवस्थाके सीसोदिया राजपूत हैं। प्रतापगढके महारावलोंको अंगरेजी गवर्नमेंटकी ओर से १५ तोपोंकी सलामी मिलती है।

बांसवाड़ा।

प्रतापगढसे चालीस पचास मील दक्षिण-पश्चिम और रतलामके स्टेशनसे लगभग ५० मील पश्चिम राजपूतानेमें देशी राज्यकी राजधानी बांसवाड़ा है। वह २३ अंश ३० कला उत्तर

अक्षांश और ७४ अंश २४ कला पूर्व देशांतरमें स्थित है। वहां रेल अभी नहीं गई है। राजधानीके चारोंओर दीवार है, जिसमें सन १८८१ की जन-संख्याके समय ७९०८ मनुष्य थे। महारावलका महल शहरके दक्षिण ऊंची भूमिपर दीवारके भीतर, जिसमें ३ फाटक हैं, खड़ा है। राजधानीके दक्षिण नीची पहाड़ी पर वर्तमान महारावलका बनवाया हुआ शाहीविलास नामक दो मंजिला भवन स्थित है। पूर्व ओर बाई ताल है। लगभग ॥— मील दूर एक उद्यानमें बांसवाड़ाके प्रधानोंकी छतरियां हैं। राजधानीमें कार्तिक महीनेमें एक मेला होता है, जो दो सप्ताह तक रहता है।

बाँसवाडा राज्य–मेवाड़ पोलिटिकल एजेंसीके आधीन राजपूतानेमें बांसवाड़ा एक देशी राज्य है। इसके उत्तर और पश्चिमोत्तर डूंगरपुर और मेवाड़ राज्य, पूर्वोत्तर और पूर्व प्रतापगढ़ राज्य. दक्षिण मध्यभारत एजेंसीके छोटे राज्य और पश्चिम बंबई हातेके रेवाकंटा राज्य है राज्यकी लंबाई उत्तरसे दक्षिण तक ४५ मील और चौडाई पूर्वसे पश्चिम तक ३३ मील और इसका क्षेत्रफल लगभग १३०० वर्गमील है। राज्यसे लगभग २८००००रुपया मालगुजारी आती है। उत्तर और पूर्वकी सीमा पर माही नदी बहती हैं, जिसके दोनों किनारे चालिस पचास फीट ऊंचे हैं। वर्षाकालके अतिरिक्त इसको सर्वदा आदमी हेल जाते हैं। बनाई हुई कोई सड़क इस राज्यमें नहीं है। राज्यका पश्चिमी भाग खेतीके योग्य मैदान है। शेष भाग में पहाड़ियाँ और जंगल हैं, जिनमें भील लोग रहते हैं। सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस राज्यमें १७५१४५ मनुष्य थे।

राज्यका सैनिक बल ६० सवार, ५०० पैदल,३ तोप और २० गोलंदाज हैं।

इतिहास–बाँसवाड़ाके महारावल डूंगरपुरकी शाखा सीसोदिया राजपूत हैं। १६ वीं सदीमें डूंगरपुर और बांसवाड़ा दोनों राज्योंकी भूमि एक सीसोदिया प्रधानके आधीन थी। प्रधान उदयसिंहके मरनेपर सन १५२८ ई० में २ लडकोंमें राज्य बट गया, एक डूंगरपुरका और दूसरा बांसवाड़ाका प्रधान हुआ। दोनों राज्योंकी सीमा माही नदी है। १८ वीं सदी के आरंभमें बांसवाड़ा राज्य थोडा बहुत महाराष्ट्रोंके आधीन हुआ, सन १८१८ में अंगरेजी गवर्नमेंटके साथ बांसवाड़ासे संधि हुई। यहांके महारावलोंको १५ तोपोंकी सलामी मिलती है बाँसवाड़ाके वर्तमान नरेश महारावल श्रीलक्ष्मणसिंह बहादुर ५७ वर्षकी अवस्थाके हैं।

डूंगरपुर।

बाँसवाड़ासे लगभग ४५ मील पश्चिमोत्तर नीमचसे डीसातक जो सड़क गई है, उसके पास नीमचसे १३९ मील दक्षिण पश्चिम राजपूतानेमें देशी राज्यकी राजधानी डूंगरपुर है, जहां रेल नहीं गई है। यह २३ अंश ५२ कला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश ४९ कला पूर्व देशांतर में स्थित है।

पहाड़ीके बगलपर महारावलका महल और पादमूलके पास एक झील है। राजधानीमें एक जेल है और प्रतिवर्ष एक मेला होताहै. जो १५ दिन तक रहता है।

डूंगरपुर राज्य–राजपूतानेके पोलिटिकल सुपरिंटेंडेंटके आधीन राजपूतानेमें यह देशी राज्य है, जिसकी लम्बाई पूर्वसे पश्चिम तक ४० मील और चौड़ाई उत्तरसे दक्षिण तक ३५

मील है । राज्यके उत्तर उदयपुर राज्य; पूर्व उदयपुर राज्य और माही नदी, जो बांसवाड़ाके राज्यसे इसको अलग करती है और दक्षिण और पश्चिम गुजरातमें रेवाकंठा और माहीकंटा एजेंसियां हैं । राज्यका क्षेत्रफल १००० वर्गमील है । सन १८८२—८३ ई० में राज्यसे २०९३१० रुपया मालगुजारी आईथी । राज्यमें पत्थरीली पहाड़ियां बहुत हैं, जिनपर छोटे वृक्षोंके जंगल हैं । राजधानीसे लगभग ६ मील दक्षिण मकान बनाने योग्य पत्थर निकलता है और ६ मील पूर्व कुछ सब्ज भूरे रंगका पत्थर होता है, जिससे देव मूर्तियां, मनुष्य और जानवरोंकी प्रतिमा और प्याले डूंगरपुर और दूसरे स्थानोंमें बनाए जाते हैं । राज्यमें माही और सोम नदी बहती हैं, जो बाणेश्वरके मन्दिरके निकट मिल गई हैं । वहां प्रतिवर्ष एक बड़ा मेला होता है, जो १५ दिन रहता है । माहीका बिस्तर तीन चारसौ फीट चौड़ा पत्थरीला है । सोम नदीका जल जगह जगह पृथ्वीमें अदृश्यहो कर फिर आगे जाकर निकल जाता है ।

सन १८८१ ई० की मनुष्य-गणनाके समय इस राज्यमें १५३३८१ मनुष्यथे; अर्थात् ७५२६० हिन्दू, ६६९५२ भील, ७५६० जैन और ३६०९ मुसलमान ।

राज्यका सैनिक बल ४०० सवार, १००० पैदल, और ४ तोप हैं ।

इतिहास—डूंगरपुर राजवंश सीसोदिया राजपूत है । चित्तौरके सुप्रसिद्ध समरसिंह सन ११९३ ई० में दिल्लीके पृथ्वीराजके साथ महम्मदगोरीके संग्राममें मारे गए । उनका बच्चा पुत्र कर्ण चित्तौरके सिंहासन पर बैठा । कर्णके देहांत होनेपर समरसिंहके भाई सूर्यमलका पोता राहुप चित्तौरकी गद्दीपर बैठा और कर्णका पुत्र माहुप मगेरकी ओर चला गया और डूंगरपुर में राज्य करने लगा । सन १५२८ ई० में डूंगरपुरके उदयसिंहके देहांत होनेपर राज्य बट गया । उनका एक पुत्र डूंगरपुरका और दूसरा बांसवाड़ाका प्रधान हुआ । मुगल राज्यकी घटतीके समय डूंगरपुर महाराष्ट्रोंके आधीन हुआ था । सन १८१८ ई० में अंगरेजी गवर्नमेंटके साथ डूंगरपुरसे संधि हुई । सन १८२५ में अंगरेजी गवर्नमेंटने महारावल यशवंतसिंहको राज्यके अयोग्य समझ गद्दीसे उतार दिया । उनका गोद लिया हुआ पुत्र प्रतापगढ़ राजबंशका दलपत सिंह राज्याधिकारी बनाया गया, परंतु सन१८४४ में, जब दलपतिसिंहको प्रतापगढ़का राज्यसिंहासन मिल गया, तब उसने डूंगरपुरके महारावल उदयसिंह बहादुरको, जो नाबालिगथे, गोद लिया । वह डूंगरपुरके राज्यसिंहासन पर बैठाए गए । यहांके महारावलोंको अंगरेजी गवर्नमेंटकी ओरसे १५ तोपोंकी सलामी मिलती है ।

जावरा ।

मंडेसरसे ३१ मील दाक्षिण (अजमेरसे २१२ मील) जावराका रेलवे स्टेशन है, जिसके पास पिरिया नामक एक छोटी नदीके निकट मध्यभारतके पश्चिमी मालवामें मुसलमानी देशी राज्यकी राजधानी जावरा एक कसबा है । यह २३ अंश ३७ कला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश ८ कला पूर्व देशांतरमें स्थितहै ।

सन १८९१ की जन-संख्याके समय जावरामें २१८४४ मनुष्य थे, अर्थात् ९८९६ मुसलमान, ९३५० हिन्दू , १४०५ जैन, ११६७ एनिमिष्टिक, १९ पारसी और ७ कृस्तान ।

जावरामें पहले एक ठाकुर रहताथा, जिसके परिवारके लोग पेंशन पाते एहु अबतक यहां रहते हैं । कसबा पत्थरकी दीवारसे घेरा हुआ है जो अबतक पूरी नहीं हुई है । कर्नल बूर्थवी-

कने यहांकी सड़कोंको संवारा और एक पत्थरका सुन्दर पुल बनवाया। यहां सौदागरी अच्छी होती है और अफीम तौलनेकी कोठी, पोष्टआफिस, स्कूल और अस्पताल हैं। यहांसे ३२ मील उत्तर प्रतापगढ़को एक सड़क गई है।

जावरा राज्य—मध्य भारत-पश्चिमी मालवा एजेंसीके आधीन यह एक देशी राज्य है। इसका क्षेत्रफल ८७२ वर्गमील है। इस राज्यसे सन १८८१ में ७९९३०० रुपया मालगुजारी आई थी। सन१८८१ की मनुष्य-गणनाके समय राज्यमें१०८४३४मनुष्य थे, अर्थात्८७८३३ हिन्दू, १३३१८ मुसलमान, ५२५८ आदि निवासी, २०-१० जैन, १२ पारसी,और ३ कृस्तान।

राज्यका सैनिक बल १२१ सवार, २०० नियमसील पैदल और २०० अनियमिक, १५ तोप, ६९ गोलंदाज और ४९७ पुलिस हैं।

इतिहास—हुलकरने इसको अपनी मदद देनेवाली सेनाओंकी परवरिशके लिये अमीरखां पठानको दिया। सन १८१८ ई० की मदींदपुरकी लड़ाईमें अमीरखांका रिस्तामंद गफ़ूरखां था। अंगरेजी गवर्नमेण्टने उसको जावरा राज्यपर अधिकार दे दिया। बलवेकी खैरख्वाहीके बदलेमें अंगरेजी गवर्नमेंटने जावराके नवाबकी सलामी बढ़ाकर १३ तोपोंकी कर दी। यहांके वर्तमान नव्वाब महम्मद इस्माइलखां बहादुर फिरोजजंग ३५ वर्षकी अवस्थाके हैं।

रतलाम।

जावरासे २१ मील (अजमेरसे २३३ मील दक्षिण कुछ पश्चिम) रतलामका स्टेशन है। मध्य भारतके पश्चिमी मालवामें एक देशी राज्यकी राजधानी रतलाम कसबा २३ अंश २१ कला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश ७ कला पूर्व देशान्तरमें स्थित हैं।

रतलामसे रेलवेकी नई लाईन पश्चिम कुछ दक्षिण आनन्द जंकशनको गई है। रतलामसे ७१मील दोहद; ११६ मील गोधड़ा, १५० मील डांकउर और१६९ मील आनन्द जंक्शन है।

सन १८९१ की जन-संख्याके समय रतलाममें २९८२२ मनुष्य थे अर्थात् १५३२२ पुरुष और १४५०० स्त्रियां, जिनमें १६७७५ हिन्दू, ७४०५ मुसलमान, ४३४१ जैन, १२२७ एनिमिष्टिक, ६१ कृस्तान, ९ पारसी और ४ सिक्ख थे।

दीवारोंके भीतर उत्तम राजमहल बना है। मुन्शी शहमतअलीका बनवाया हुआ एक चौक है, जिसके बाद चांदनी चौकमें सराफ लोग रहते हैं। त्रिपोलिया फाटकके बाहर अमृतसागर तालाब है, जो वर्षाकालमें फैल जाता है। शहरमें एक कालेज है, जिसमें करीब ५०० विद्यार्थी पढ़ते हैं। शहरके बाहर राजाका विला (मुफसिलकी कोठी) और बाग है। रतलाम अफीम और गल्लेके व्योपारका बड़ा केन्द्र है। मालवेके अफीमकी तिजारतके प्रसिद्ध स्थानोंमेंसे यह एक है।

रतलाम राज्य—यह मध्य भारतके पश्चिमी मालवा एजेंसीके आधीन एक देशी राज्य है राज्यका क्षेत्रफल ७२९ वर्गमील है। इससे लगभग १३ लाख रुपया मालगुजारी आती है। सन १८८१ ई० में राज्यमें ८७३१४ मनुष्य थे (४५७७९ पुरुष और ४१५३५ स्त्रियां)। इनमें ५४०३४ हिन्दू, ९९१३ मुसलमान, ६०३८ जैन, १९ कृस्तान, १३ पारसी और१७२९७ आदि निवासी थे। आदि निवासीमें १६८१० भील, ४१७ मुगिया, ४८ म्हेयर और २२ मीना थे। राज्यका फौजी बल सन १८८२ में १३६ सवार, १९८ पैदल, ५ मैदानकी तोपें १२ गोलंदाज और ४६१ पुलिसवाले थे।

इतिहास–मारवाड़के राठौर राजा मालदेवके पुत्र उदयसिंहके ७ पुत्र थे। सातवें पुत्र दलपतिसिंहका महेशदास नामक पुत्र था, जिसका पुत्र रतनसिंह हुआ, जिसको सन ईसवीकी सत्रहवीं सदीमें दिल्लीके बादशाह शाहजहांने मालवामें राज्य दिया।

रतनसिंहने इस कसबेको कायम किया, इससे इसका नाम रतलाम हुआ। फतेहाबादके संग्राममें रतनसिंह था जब शाहजहांके चारों पुत्रोंमें झगड़ा हुआ, तब जोधपुरके यशवंतसिंह राठौर ३०००० राजपूतोंके साथ औरंगजेब और मुरादसे लड़ा जिनके साथ संपूर्ण मुगल फौज थी वर्तमान रतलामनरेश हैं, सर रणजीतसिंह के० सी० एस० आई रतनसिंहकी बारहवीं पुस्तमें जिनकी अवस्था इस समय ३० वर्षकी है।

अठारहवाँ अध्याय।

(मध्यभारतके मालवामें) उज्जैन।

उज्जैन।

रतलामसे ४९ मील (अजमेरसे २८२ मील दक्षिण कुछ पूर्व) फतेहाबाद जंक्शन है, जिससे १४ मील पूर्वोत्तर उज्जैनको रेलवे शाखा गई है। उज्जैनसे पूर्व भोपाल तक रेलवे बनरही है, जिस पर उज्जैनसे ९० मील सिहोर छावनी और ११४ मील भोपाल है।

मध्यभारतके मालवा प्रदेशके सिंधिया राज्यमें शिप्रा नदीके दहिने किनारे पर (२३ अंश ११ कला १० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश ५१ कला ४५ विकला पूर्व देशांतर में) उज्जैन एक छोटा शहर है, जिसको अवंतिकापुरी भी कहते हैं, जो पवित्र सप्त पुरियोंमेंसे एक है।

सन १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय उज्जैनमें ३४६९१ मनुष्य थे, अर्थात १८२९२ पुरुष और १६३९९ स्त्रियां, जिनमें २३३२९ हिन्दू, ९४७६ मुसलमान, ९२४ जैन, ९१८ एनिमिष्टिक, ३२ कृस्तान, ७ पारसी और ५ सिक्ख थे।

रेलवे स्टेशनसे १ मील दूर ६ मीलके घेरेमें नया शहर है। पुराना उज्जैनकी तबाहियां शहरसे करीब १ मील उत्तर है। शहरकी सड़कोंके बगलों पर दो मंजिले मकान बने हैं। सड़कें पत्थरके बड़े बड़े ढोकोंसे पाटी हुई हैं, जिनपर गाड़ियोंके पहिये ठोकर खाते हैं। सड़कोंके बीचमें मोरी हैं। प्रधान सडकके ढोके निकाल कर अब कंकड बिछाया गया है। सवारीके लिये बैलगाड़ी और तांगा मिलते हैं। सन १८८० ई० में, जब मैं पहली बार उज्जैन गया था, तब किसी जगह कंकडकी सड़क न थी।

उज्जैनमें महाराज सिंधियाकी इंसाफकी कचहरी दो मंजिला बनी है और बहुतेरे देव-मन्दिर और कई एक अप्रसिद्ध मसजिद हैं। शहरकी दक्षिण सीमाके पास जयपुरके राजा जय-सिंहकी बनवाईहुई अवजर बेटरी अर्थात् ग्रहादि दर्शन स्थान है, जिसके यंत्र नाकाम पड़े हैं।

उज्जैनमें ७ सागर (सात तालाब) प्रसिद्ध हैं १ विष्णुसागर, २ रुद्रसागर, ३ गोवर्द्धन सागर ४ पुरुषोत्तम सागर ५ क्षीर सागर, ६ पुष्करसागर और ७ वां रतनागर सागर इनमें कई बे मरम्मत हैं।

जैसे इंदौर बढ़ता जाता है वैसे उज्जैन शहरकी घटती होती जाती है। यद्यपि शहर बहुत घट गया है। तौ भी इसमें बड़ी तिजारत होती है। यहांसे बहुत अफीम दूसरे देशोंमें

भेजी जाती है। यहांके हिन्दू, मुसलमान छोटे बड़े सब पगडी पहनते हैं। मुसलमानोंमें छोटे घरेके जामा पहननेकी चाल है। स्त्रियोंमें घाघडी पहननेकी अधिक रीति है। वे पर्देमें नहीं रहती है। ब्राह्मण क्रियावान होते हैं। वे प्रायः सबलोग पाक बनानेके समय वा भोजनके समय रेशमी वा ऊनी वस्त्र पहनते हैं। निमंत्रणके समय स्त्री और पुरुष दोनों एकही साथ पंक्तीमें बैठकर भोजन करते हैं। धीमड़ आदि कई नीच जातियोंके अतिरिक्त हिन्दू मात्र मद्य मांस नहीं खाते।

कार्तिककी पूर्णिमाको उज्जैनका मेला होता है। १२ वर्षपर जब वृश्चिक राशिके बृहस्पति होते हैं तब उज्जैनमें कुम्भ योगका बडा मेला होता है, जो संवत् १९४४ में हुआ था। उस समय भारतवर्षके सम्पूर्ण प्रदेशोंसे सब संप्रदायवाले कई लाख साधु और गृहस्थ शिप्रामें स्नान करनेके लिये वहां एकत्र होते हैं, जिनमें कितने नागा संन्यासी, जो नंगे रहते हैं, देखनेमें आते हैं। (कुम्भयोगका वृत्तांत पांचवें अध्यायमें देखो)

शिप्रा नदी—उज्जैनके समीप शिप्रा नदीके कई घाट पत्थरसे बने हैं। यात्रीगण रामघाट पर स्नान और तीर्थ भेंट करते हैं। घाटके पास कई देवमन्दिर हैं। शिप्रा नदी १२० मील बहनेके उपरांत चंबल नदीमें गिरती है।

हरसिद्धीदेवी—घाटसे थोडीही दूरपर एक मन्दिरमें लिंगाकार अगस्त्यमुनि हैं, जिनके पास विक्रमादित्यकी कुलदेवी हरसिद्धी देवीका शिखरदार विशाल मन्दिर है। मन्दिरके आगे एक दीपशिखर (दीप रखनेका बुर्ज) बना है, जिसमें चारोंओर नीचेसे ऊपरतक दीप रखनेको हजारों स्थान बने हैं, जिनपर उत्सवोंके समय दीप जलाए जाते हैं।

नवदुर्गाओंमेंसे एकका नाम हरसिद्धी है भविष्यपुराण उत्तरार्द्ध—५४ वें अध्यायमें नवदुर्गाओंके नाम ये हैं—महालक्ष्मी, नन्दा, क्षेमकरी, शिवदूती, महारुण्डा, भ्रामरी, चन्द्रमंगला, रेवती और हरसिद्धी।

महाकालेश्वर शिव—सुप्रसिद्ध १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे एक और उज्जैनके प्रधान देवता महाकालेश्वर शिव हैं। एक पक्के सरोवरके वगलपर महाकालेश्वरका शिखरदार विशाल मन्दिर है। तालाबके वगलोंमें पत्थरकी सीढियां, तीन बगलोंपर पक्के मकान और एक ओर मन्दिरका दालान और दूसरे कई मन्दिर हैं।

महाकालेश्वरका मन्दिर पंच मंजिला है, नीचेके मंजिलमें जो भूमिके सतहसे नीचे है बडे आकारका महाकालेश्वर शिवलिंग है। मन्दिरका जगमोहन अर्थात् बड़ा दालान सरोवर के बगलमें है। मन्दिर दालानके पीछे है परन्तु उसका दरवाजा दालानमें नहीं है। दालानके एक बगलसे गुफाके समान अंधेरे रास्तेसे मन्दिरमें जाना होता है। मन्दिर और रास्तेमें दिन रात दीप जलते हैं। महाकालेश्वरके समीप पार्वतीजी और गणेशजीकी मूर्तियां हैं। महाकालेश्वरका भांति भांतिका शृङ्गार दिन रातमें अनेक बार होता है और बहुत प्रकारकी सामग्री समय समय पर भोग लगाई जाती है। कहते हैं कि भोग रागके लिये प्रति दिन ग्वालियरके महाराज ११ रुपये, इंदौरके महाराज ५ रुपये और दूसरे अनेक धनी लोगभी कुछ कुछ देते हैं।

यात्री लोग मेवा, मिठाई, बेलपत्र आदि शिवपर चढाते हैं और शिवका प्रसाद खाते हैं तथा उसको अपने गृह लेजाते हैं। पहलेका चढा हुआ बिल्वपत्र भी धोकर पुनःचढानेकी यहां रीति है। बहुतेरे लोग अर्घे और शिवलिंगको दबा दबा कर सेवा करतेहैं। (शिवपुराण

१० वें खंडके ५ वें अध्यायमें है कि प्रसादके अतिरिक्त शिवका नैवेद्य खानेसे दुःख होता है और पाद्मपुराणपातालखंड-उत्तरार्द्धके ११ वें अध्यायमें लिखा है कि बाणकुण्डसे उत्पन्न, अपने आप उत्पन्न, चन्द्रकांत मणि की मूर्ति, मन में स्थित मूर्ति, इन शिवमूर्तियोंका नैवेद्य चान्द्रायणव्रतके समान होता है। लिंगपुराणके ९२ वें अध्यायमें है कि बिल्वपत्रको, त्याग कभी न करे अर्थात् नया बिल्वपत्र न मिले तो पूर्व दिनका चढ़ा हुआ बिल्वपत्र जलसे धोकर लिंगपर चढ़ावे)

मन्दिरके ऊपर दूसरे मंजिलमें, जिसका तल सरोवरके ऊपरके फर्शपर है, ओंकारेश्वर नामक शिवलिंग हैं। महाकालेश्वरके मन्दिरके पीछे इस मन्दिरका द्वार है। फर्शकी एक झंझा-रीसे नीचेका तह, जहां महाकालेश्वर हैं, देख पड़ता है।

शहरके अन्य देवता–(१) एक मन्दिरमें नागचन्द्रेश्वर हैं। (२) क्षीरसागर ताला-बके किनारे एक मन्दिरमें ब्रह्मा और लक्ष्मीके साथ क्षीरशायी भगवान्‌की मार्बुलकी चतुर्भुज मनोहर मूर्ति है। (३) एक मन्दिरमें राम, लक्ष्मण, जानकी और हनुमानकी मूर्तियां हैं। लोग कहते हैं कि यह मूर्तियां विष्णुसागरमें मिली थीं। (४) सराफा महल्लेमें ग्वालियरकी महारानी बैजाबाईका बनवाया हुआ गोपालमन्दिर है, जिसके नीचेका भाग नीले मार्बुलका और शिखर श्वेत मार्बुलका है। इसके किंवाड़ और सिंहासनपर चांदीका पत्र जड़ा है। मन्दिरमें सदावर्त जारी है। (५) क्षिप्रा नदीके प्रयाग घाटके पास एक मन्दिरमें रण-मुक्तेश्वर महादेव हैं।

चौबीस खम्भोंका दर्वाजा–शहरके भीतर एक बहुत पुराना फाटक है, जिसको लोग विक्रमादित्य किलेका हिस्सा कहते हैं। फाटकके भीतर दोनों बगलोंपर २४ खम्भे लगे हुए हैं और बाहर दोनों बाजुओंपर देवीकी घिसी हुई २ पुरानी मूर्तियां हैं, जिनको लोग पूजते हैं। नवरात्रके समय ग्वालियरके महाराजकी ओरसे यहां देवीकी पूजा और बलिदान होते हैं।

सिद्धवट–शहरसे ३ मील दूर क्षिप्रा नदीके किनारेपर एक छोटा पुराना वटवृक्ष है। कार्तिक सुदी १४ को यहां मेला होता है। यात्रीगण क्षिप्रामें स्नान करके सिद्धवटकी पूजा करते हैं। इसके समीप एक बडी धर्मशाला है।

सिद्धवटसे लौटनेपर थोड़े आगे कालभैरवका मन्दिर मिलता है।

सांदीपनि मुनिका स्थान–शहरसे २ मील दूर गोमती-गंगा नामक पक्के तालाबके समीप सांदीपनि मुनिका स्थान है। यहां छोटे छोटे मन्दिरोंमें सांदीपनि मुनि और कृष्ण, बलदेव, सुदामा आदि विद्यार्थियोंकी मूर्तियां हैं। श्रीकृष्ण और बलरामने मथुरासे आकर इसी स्थानपर सांदीपनि मुनिसे विद्या पढ़ीथी। इस स्थानसे कुछ दूरपर विष्णुसागर तालाबके समीप एक मन्दिरमें जनार्दन भगवान् और दूसरेमें राम, लक्ष्मण और जानकीजीकी मूर्तियां हैं।

राजा भरतरीकी गुफा–शहरसे १ ½ मील उत्तर एक भुवेवरा है, जिसको लोग भरतरी (भर्तृहरि) की गुफा कहते हैं। भुवेवरेमें कई कोठरियां हैं। पुजारी दीपके प्रकाशसे भुवेवर में दर्शन कराता है। प्रथमकी कोठरीमें राजा विक्रमादित्यके अनुज भरतरीका योगासन (गद्दी) और उससे भीतरकी कोठरीमें भरतरी और गुरु गोरखनाथकी छोटी छोटी मूर्तियां हैं।

सवाई जयसिंहकी आज्ञानुसार सूरतिनामक कवीश्वरने वैतालपचीसीको संस्कृतसे व्रज-भाषामें अनुवाद किया, जो अब खड़ी बोलीमें छपी है। उसमें लिखा है कि धारानगर (धार) के राजा गंधर्वसेनकी ४ रानियांथीं। उनके ६ पुत्र हुए। राजाके मरनेपर उसका बड़ा पुत्र शंख राजा हुआ। कितने दिनोंके पश्चात् शंखके छोटे भाई विक्रम शंखको मार कर आप राजा हुए, जिन्होंने अचल राज्य करके संवत् बांधा। कितने दिनोंके पीछे राजा विक्रम अपने छोटे भाई भर्तृहरिको राज्य सौंप योगी बन देश देश और वन वनमें भ्रमण करने लगे। एक ब्राह्मण उस नगरमें तपस्या करता था। एक दिन देवताने प्रसन्नहो, उसे अमृतफल दिया। ब्राह्मणने उस फलको राजा भर्तृहरिको देकर उसके बदलेमें द्रव्य मांगा। राजाने ब्राह्मणको लाख रुपयेदे महलमें आकर अपनी प्रिय रानीको वह फल दे दिया और कहा कि, तुम इसे खा-लो, जिससे अमर होगी। रानीने उस फलको अपने मित्र कोतवालको, कोतवालने अपनी प्यारी एक वेश्याको, और वेश्याने उस फलको राजाको दिया। राजा फलको देख संसारसे उदासहो कहने लगा कि, तपस्या करना उत्तम काम है। उसने फलको लेजाकर रानीको दिखा-या। रानी देखतेही भौचकसी रह गई। राजाने बाहर आ उस फलको धुलवाकर खाया और राजपाट छोड़ योगीबन बिन कहे सुने अकेले वनको सिधारा। राजा भर्तृहरिके जानेके समा-चार सुनतेही राजा विक्रम अपनी राजधानीमें आए।

भरतरीचरित्र पद्य भाषाकी एक छोटी पुस्तक है, उसमें लिखा है कि राजा इंद्रका पौत्र, गंधर्वसेनका पुत्र और विक्रमादित्यका भ्राता राजा भरतरीथा। जब वह ४ वर्षका था, तब उसकी माता मरगई। भरतरीने ९ वर्षकी अवस्थामें अनूपदेशकी स्त्रीसे, १० वर्षकी अवस्था में चंपा देशी स्त्रीसे, ११ वर्षकी अवस्थामें पिंगल देशी स्त्रीसे और १२ वर्षकी अवस्थामें श्या-म देशी स्त्रीसे विवाह किया। १३ वर्षके होनेपर वह तीर कमान बांधने लगा। एक दिन राजा भरतरी शिकारको गया। वहां वह एक मृगको मार अपने गृहको ले चला। जंगलके बीच एक सिद्ध गोरखनाथजी उसको मिले। राजा उस योगीको देख उसके चरण छूनेको चला। गोरखनाथजी बोले कि तुमको दोष लगा है, तुम हमारा चरण मत छूओ, क्योंकि उजाड़का तापस जो यह मृग है, उसको बिना अपराध तुमने मारा है। राजाने योगीसे कहा कि हे बाबा, जो तुम सिद्ध योगीहो, तो मृगको जिला क्यों नहीं देते। यह सुन सिद्ध गोरखनाथने भगवा-नका ध्यान करके चुटकीकी विभूतिसे मृगको मारा, जिससे वह उठ कर खड़ा हो गया और नाचता हुआ अपनी मृगीके पास चला गया। यह देख राजाको ज्ञान हुआ, वह गोरखनाथसे बोला कि आप मुझको अपना चेला बनाइए। प्रथमतो गोरखनाथने राजाको योगी होनेसे मना किया, परंतु जब उसने हठ किया, तब बोले कि, जो तुम्हारी योगकी इच्छा है तो पहले अपने महलसे भिक्षा मांग लाओ और अपनी स्त्रीको माता कह आओ। वह तुमको पुत्र कहकर भिक्षादे। राजाने अपने अंगका जामा फाड़ कर गलेकी गुदड़ी बनाई और सिरका चीरा फाड़ कर सिरकी सेली बनाई। वह हाथमें खप्पर, कांधेपर कांवर और मुखपर भस्म लगाकर योगीहो बनको चला और बनसे अपनी नगरीमें आकर खिड़कीकी राहसे बोला, कि हे माता भिक्षा लाओ। रानी श्यामदेने योगीका शब्द सुन रत्नआदि पदार्थोंसे भराहुआ थाल चंपा नामक बांदीसे योगीके पास भेजा। बांदी रत्नोंको अपने गृह रख चनेसे थाल भर योगीको देने गई। योगी बोला कि बांदीके हाथकी भिक्षा मैं नहीं लेता तुम भोली माताको भेज दो, उससे मैं भिक्षा लूंगा। तब

बांदी क्रोधकर लाठीले योगीको मारनेको दौड़ी । योगी बोला कि एक दिन वह था कि जब मैंने तुझको मोल खरीदा, अब योगी होनेपर मुझको मारने दौडतीहै । यह सुन बांदी राजाको पहचान पछाड खाकर गिरपडी और रोती पीटती रानीके पास आकर बोली कि योगीवेषसे राजा द्वारपर खड़े हैं । रानी शृङ्गार करके थारमें मोती, हीरा, लाल आदि रत्न लेकर द्वारपर आई और बोली कि हे योगी भिक्षा ले जाओ । योगीने कहा कि मोती मूंगा मैं क्या करूंगा हे माता! भिक्षा ले आओ और मुझको पुत्र कहके भिक्षा दे दो, जिससे मेरा योग अमर हो जाय । इतना सुन रानीने पर्दा उठाकर देखा कि राजा योगीवेपसे खड़े हैं । यह देख वह पछाड खाकर गिर पड़ी । इसके उपरांत रानीने पटुका पकड़ कर राजाको बहुत समझाया; पर राजाने कुछ न सुना । उसने कहा कि हमने गोरखके वचनसे राज्य, नगर और १६०० रानियोंको त्याग दिया । तब रानी बोली कि मुझको भी अपने साथ ले चलिए । जब राजाने इस बातको स्वीकार नहीं किया, तब रानीने कहा कि मेरे साथ चौसर खेलिए, मैं हारूंगी तो तुम्हारे संग चलूंगी और जीतूंगी तब तुमको जाने न दूंगी । राजा बोले ऐसा नहीं, जो तुम बाजी जीतोगी तो १० दिन हम यहां रहेंगे और जो हम जीतेंगे, तो तुमको साथ न ले जायेंगे इसी बातपर चौसर होने लगी । १६ और ७ दांव नियत हुए । रानीके पासा फेंकनेपर काने तीन पड़ गए । पीछे जब राजाने पासा फेंका, तब १६ और ७ पड़े । राजा जब बाजी जीत उठ चले, तब रानी बोली कि हे कंत ! भोजन तय्यार है खालो । राजाने छोटा खप्पर निकाल कर कहा कि हे माता ! इसमें लावो । रानी बोली कि, हे महाराज ! तुम छोटे गुरुके बालक हो, इससे छोटा वर्तन लाए हो । ऐसा कह उसने १६०० थार भोजनकी सामग्री उस खप्परमें परोसी, परन्तु वह भरा नहीं । तब रानीने हार मानकर राजाको असीस दी और बोली कि हे पुत्र ! तुम पूरे गुरुके बालक हो, यह भिक्षा लो । राजा भरतरी भिक्षा ले वहांसे चलदिए ।

सिंहासनबत्तीसी गद्य भाषाकी पुस्तक है, जिसकी पहली कहानीमें लिखा है कि शाम स्वयंवर नामक ब्राह्मण अम्बावती नगरीका राजा था, जो बडा प्रतापी होनेपर गंधर्बसेन नामसे विख्यात हुआ। राजाकी चार रानी चार वर्णकी पुत्री थीं । ब्राह्मणी स्त्रीसे १ पुत्र,क्षत्राणीसे शंख विक्रम और भरतरी नामक ३ पुत्र, वैश्यानीसे चन्द्रनामक एक पुत्र और शूद्राणीसे धन्वंतरि नामक पुत्र हुए । ब्राह्मणीका पुत्र राजाका दीवान बना, पर जब उससे कुछ तकसीर हुई, तब राजाने उसको कामसे खारिज कर दिया । वह अम्बावतीसे धारापुरमें (जिसको अब धार कहते हैं) आया कितने दिनोंके पश्चात् उसने धारापुरके राजाको, जो भोजके पुरुषे थे, मार उसका राज्य ले उज्जैनको अपनी राजधानी बनाई । थोड़े दिनोंके पीछे अपने भाई ब्राह्मणीके पुत्रकी मृत्यु होनेपर शंख आकर उज्जैनका राज्य करने लगा । उसके पीछे विक्रम शंखको मार कर उज्जैनके राजसिंहासन पर बैठा और न्यायसे राज्य करने लगा । सिंहासनबत्तीसीके अंतमें लिखा है कि विक्रमादित्यके देहांत होने पर उसके पुत्र जैतपालको राजातिलक हुआ । वह अपने पिताकी आज्ञानुसार उज्जैन और धारा नगरीको छोड अम्बावतीमें जाकर राज्य करने लगा, उज्जैन और धारा नगरी उजड कर अम्बावती नगरी, बसने लगी ।

सिंहासनबत्तीसीके आरंभमें राजा भोजके उज्जैनमें राज्य करनेकी और उसको वहां विक्रमादित्यके सिंहासन पानेकी कथा है ।

इतिहास—उज्जैन एक समय मालवाकी राजधानी था। कहा जाता है कि, जब राजा अशोकका पिता पाटलीपुत्र (पटना) में राज्य करता था, उस समय ईसासे करीब २६३ वर्ष पहले अशोक उज्जैनका सूबेदार था।

उज्जैन सुप्रसिद्ध विक्रमादित्यकी राजधानी था, जिसके नामका संवत, जो उत्तरी भारतमें प्रचलित है, इशासे ५७ वर्ष पहले आरंभ हुआ था। विक्रमादित्यने सिदियन लोगोंको भगाकर संपूर्ण उत्तरी भारतमें राज्य किया। कवि कालिदासने अपनी ज्योतिर्विदाभरण पुस्तकके २२ वें अध्यायमें, जिसको उसने गत कलियुग संवत् ३०६८ तथा विक्रम संवत् २४ में बना हुआ लिखा है, कहा है कि विक्रमादित्यकी सभामें शंकु, वररुचि, मणि, अंशुदत्त, जिष्णु, त्रिलोचन, हरि, घटखर्पर, और अमरसिंह आदि कवि, सत्य, वराहमिहिर, श्रुतसेन, बादरायण, मणित्थ, और कुमारसिंह आदि ज्योतिषी और धन्वन्तरी,क्षपणक,अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और बररुचि ये ९ नवरत्न गिने जाते थे। विक्रमादित्यने ९५ शक राजाओंको मार अपना शक, अर्थात् संवत् चलाया।

लगभग ७०० ई० में राजा भोज उज्जैनमें राज्य करता था।

अलाउद्दीन खिलजीने, जिसने सन १२९५ से १३१७ ई० तक दिल्लीमें राज्य कियाथा, उज्जैन और समस्त मालवा देशको जीता। अफगान दिलावर खां गोरी, जो सूबेदार था, सन १३८७ ई० में वहांका स्वाधीन राजा हुआ। उसने मांडूको राजधानी बनाया और सन १४०५ ई०तक राज्य किया। गुजरातके राजा बहादुरशाहने सन १५३१ में और बादशाह अकबर ने सन १५७१ ई० में मालवाको जीता। औरंगजेब और मुराद और उनके भाई दाराके साथ सन १६५८ ई० में उज्जैनके पास लडाई हुई। यशवंतराव हुलकरने सन १७९२ में उज्जैनको लेलिया और उसके हिस्सेको जलाया, तब यह सिंधियाके हाथमें आकर उसकी राजधानी हुआ। पीछे सन १८१० ई०में दौलतराव सिंधियाने उज्जैनको छोड कर ग्वालियरको अपनी राजधानी बनाया।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(वनपर्व, ८२ वां अध्याय) एक महाकाल तीर्थ है। वहां कोटितीर्थोंका स्पर्श होनेसे अश्वमेधका फल मिलता है।

(उद्योगपर्व, १९ वां अध्याय) अवंतीके राजा विन्द और अनुविन्द २ अक्षौहिणी सेना और अनेक दक्षिणी राजाओंके सहित कुरुक्षेत्रके संग्राममें राजा दुर्योधनकी ओर आए। (द्रोणपर्व ९७ वां अध्याय) अर्जुनने अवंतीराजा विन्द और अनुविन्दको मार डाला।

आदिब्रह्मपुराण—(४२ वां अध्याय) पृथ्वीकी सब नगरियोंमें उत्तम अवंती नामक नगरी है, जिसमें महाकाल नामसे विख्यात सदाशिव स्थित हैं। वहां क्षिप्रा नामक नदी बहती है और विष्णु कई एक रूपसे स्थित हैं जिनके दर्शनसे पूर्वोदित फल प्राप्त होता है। इन्द्रादि देवता और मातृगण भी वहां स्थित हैं। उसी नगरीमें इन्द्रद्युम्न नामक राजा हुआ।

अग्निपुराण—(१०८ वां अध्याय) अवंती पुरी पापका नाश करने वाली और भुक्ति मुक्ति देनेवाली है।

गरुडपुराण—(पूर्वार्द्ध, ६६ वां अध्याय) महाकाल तीर्थ संपूर्ण पापोंका नाशक और मुक्ति भुक्ति देनेवाला है। (प्रेतकल्प, २७ वां अध्याय) अयोध्या, मथुरा,माया,काशी, कांची, अवंतिका और द्वारिका ये सातो पुरियां मोक्ष देनेवाली हैं।

शिवपुराण–(ज्ञानसंहिता, ३८ वां अध्याय) शिवके १२ ज्योतिर्लिंग हैं–(१) सौराष्ट्र देशमें सोमनाथ, (२) श्रीशैल पर मल्लिकार्जुन, (३) उज्जैनमें महाकाल, (४) ओंकारमें अमरेश्वर, (५) हिमालयमें केदार, (६) डांकिनीमें भीमशंकर, (७) वाराणसीमें विश्वेश्वर, (८) गोदावरीके तटमें त्र्यंबक, (९) चिताभूमिमें वैद्यनाथ, (१०) दारुकवनमें नागेश, (११) सेतुबंधमें रामेश्वर और (१२) शिवालयमें घुश्मेश्वर स्थित हैं। इन लिंगोंके दर्शन करनेसे शिवलोक प्राप्त होता है। इनकी पूजा करनेका अधिकार चारों वर्णोंको है। इनके नैवेद्य भोजन करनेसे संपूर्ण पाप विनाश होता है। इनका नैवेद्य अवश्य खाना चाहिए। नीच जातिमें उत्पन्न मनुष्यभी ज्योतिर्लिंगके दर्शन करनेसे दूसरे जन्ममें शास्त्रज्ञ ब्राह्मण होता है और उस जन्मके पश्चात् मुक्ति लाभ करता है।

(४६ वां अध्याय) पापके नाशनेवाली और मुक्तिको देनेवाली अवंतीनामक नगरी है, जहां पवित्र क्षिप्रा नदी बहती है। उसमें वेदपारग एक शिव–भक्त ब्राह्मण बसता था। उसके ४ पुत्र भी बड़े शिवभक्त थे। उसी समय रत्नमाल गिरिपर दूषणनामक असुर हुआ। वह ब्रह्माके वरदानसे बलवान होकर सबको दुःख देने लगा। उसके भयसे संपूर्ण तीर्थ, वन और पर्वतोंके मुनिगण भाग गए। दूषण शिवभक्तोंका विनाश करनेके निमित्त अपनी सेना सहित उज्जैनमें गया और चारोंओरसे नगरीको घेरकर शिवभक्तोंके निकट पहुँचा, परन्तु शिवभक्त ब्राह्मण ऐसे शिवकी पूजामें लवलीन थे कि उसके ललकारनेपर कुछ भी ध्यान नहीं देते थे। उस समय शिवकी कृपासे उस स्थानपर गर्त्त (गड्ढा) हो गया और उससे शिवजीने प्रकट होकर दैत्योंका विनाश किया। शिवभक्तोंने शिवजीसे विनय किया कि आप यहां स्थित होवें और आपने जगत्के कालरूप दूषण दैत्यको मारा इसलिये आपका नाम महाकालेश्वर होवे। शिवजी उसी गर्त्तमें ज्योतिर्लिंग होकर स्थित हुए। महाकालेश्वरकी पूजा करनेसे स्वप्नमें भी दुःख नहीं रहता और मनोवांछित फल मिलता है।

वामनपुराण–(८३ वां अध्याय) प्रह्लादने अवंती नगरीमें शिप्रा नदीके जलमें स्नान करके विष्णु और महाकाल शिवका दर्शन किया।

स्कन्दपुराण–(ब्रह्मोत्तर खण्ड, ५ वां अध्याय) उज्जैन नगरीमें चन्द्रसेननामक राजा था वह सदा उस नगरीमें ज्योतिर्लिंग महाकाल शिवकी पूजा परमभक्तिसे किया करता। इत्यादि।

(काशीखण्ड–७ वां अध्याय) शिवशर्मा ब्राह्मण महाकालपुरीमें पहुंचा जहां कलिकालकी महिमा नहीं व्यापी थी।

मत्स्यपुराण–(१७८ वां अध्याय) शिव और अंधकका युद्ध अवंती नगरीके समीप महाकाल वनमें हुआ था।

विष्णुपुराण–(५ वां अंश, २१ वां अध्याय) कृष्ण और बलदेव दोनों भाई अवंतिकापुरीके वासी सांदीपननामक गुरुसे विद्या पढने गए। ६५ वें दिन सब विद्या पढ, जब वे गृहको चलने लगे, तब मुनिसे बोले कि, हमसे गुरुदक्षिणा मांगो। मुनिने कहा कि प्रभासक्षेत्रमें समुद्रकी लहरोंसे डूबकर मरेहुए मेरे पुत्रको गुरुदक्षिणामें दो। दोनों भ्राताओंने यमलोकसे गुरुपुत्रको लाकर मुनिको दे दिया।

(श्रीमद्भागवत दशमस्कंध–४५ वें अध्यायमें भी यह कथा है। आदि ब्रह्मपुराण ८६ वें अध्याय और ब्रह्मवैवर्त्तपुराण कृष्णजन्मखण्ड ५४ वें अध्यायमें भी लिखा है कि कृष्ण और बलदेवजीने अवंतिका नगरीमें जाकर सांदीपन मुनिसे विद्या ग्रहण की)।

भविष्यपुराण-(१४१ वां अध्याय) उज्जैनमें विक्रमादित्य नामक राजा होगा, जो करोड़ों म्लेच्छोंको मार धर्म स्थापन कर १३५ वर्ष राज्य करेगा। इसके अनंतर बडा प्रतापी शालिवाहन राजा १०० वर्ष पर्य्यन्त राज्य करेगा।

सौरपुराण-(६७ वां अध्याय) जो मनुष्य उज्जैन तीर्थमें महाकालेश्वर शिवलिंगका दर्शन करते हैं। वे सब पापोंसे विमुक्त होकर परमधाममें जाते हैं। महाकालेश्वर दिव्य लिंग हैं। उनके स्पर्श करनेसे मनुष्य शिवलोकमें गमन करता है। वहां शक्तिभेदनामक एक तीर्थ है, जिसमें स्नान करके भद्रवटके दर्शन करनेसे मनुष्य संपूर्ण पापोंसे विमुक्त होकर स्कंदलोकमें जाता है। उज्जैनमें चारोंओर सहस्रों तीर्थ विद्यमान हैं, जिनका संपूर्ण माहात्म्य स्कंदजीने स्कंदपुराणमें कहा है।

उन्नीसवाँ अध्याय।

(मध्य भारतके मालवामें) इंदौर, देवास, मऊछावनी, मांडू और धार।

इंदौर।

फतेहाबाद जंक्शनसे २५ मील दक्षिण-पूर्व और उज्जैनसे (रेलवे द्वारा) ३९ मील दक्षिण इन्दौरका स्टेशन है। इन्दौर मध्यभारतके मालवा प्रदेशमें कटकी नदीके बांयें किनारेपर समुद्रके जलसे १७८६ फीट ऊपर एक देशी राज्यकी राजधानी छोटा शहर है, जो २२ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश ५४ कला पूर्व देशांतरमें स्थित है।

सन १८९१ की जन-संख्याके समय इन्दोरमें ९२३२९ मनुष्य थे, अर्थात् ५२४२७ पुरुष और ३९९०२ स्त्रियां। इनमें ६७०३३ हिन्दू, १९९८१ मुसलमान, २६७६ जैन, १८१३ एनिमिष्टिक, ४१५ कृस्तान, २१६ सिक्ख, १५४ पारसी, और १ जू थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतमें २९ वां और मध्यभारतमें दूसरा शहर है।

इंदौर शहरको मल्हाररावके मरनेके पीछे अहिल्याबाईने सन १७७० में बसाया। पहली राजधानी १८ मील दक्षिण-पूर्व थी, जो अब एक गांव बन गई है। सन १८१८ में हुल्करकी कचहरी वहांसे इंदौरमें आई।

इंदौर ऊंचे और स्वास्थ्यकर स्थान पर है। प्रधान सड़कोंपर रोशनी होती है। शहरमें पानीका नल, खैराती अस्पताल और कोढ़ीखाना है। इंदौरमें राजमहल गोपालमन्दिर, टकशालघर, बडा स्कूल, बाजार, अस्पताल, रूईकी मिल और लालबाग देखने योग्य है। महाराज कालिजमें दक्षिणी ब्राह्मण पढ़ते हैं। शहरके पास रेलवेके दूसरे बगलमें अंगरेजी रेजीडेंसी है, जिसमें मध्यभारतके लिये गवर्नर जनरलके एजेंट रहते हैं। गवर्नर जनरलकी देशी फौजकी बारक और राजकुमार-कालिज रेजीडेंसीकी सीमाके भीतर हैं। एतवारी सडकपर एतवारके दिन बाजार लगता, है, इसके अंतमें पुराना जेल है। शहरके बीच एक छोटी नदी है। रेलवे स्टेशन और शहरके बीचमें सडकके बगलपर छोटा मुसाफिरखाना है, जिसमें मैं टिका था। इन्दौरसे ४ मीलपर गुलाबबागमें महाराजकी बहुत सुन्दर नई कोठी है।

राजमहल-रेलवे स्टेशनसे १ मील महाराज हुलकरके उत्तम महल हैं। आसमानी रंगसे रंगा-हुआ दो मंजिलेसे चौ मंजलेतक मोतीभवन है, जिसके फाटककी ७ मंजली इमारत शहरके प्रत्येक

भागसे देख पडती है इसके समीप गुलाबी रँगसे रंगाहुआ इन्द्रभवन नामक नया महल है, जो मोतीभवनसे अधिक सुन्दर और विस्तारमें उससे बड़ा है ।

राजमहलसे दक्षिण महाराजकी माता कृष्णाबाईका बनवाया हुआ बहुत सुन्दर गोपाल-मन्दिर, पश्चिम सराफेकी सड़क और पासही हल्दी बाजार है ।

लालबाग–शहरसे २ मील दूर भारतवर्षके बड़े बागोंमेंसे एक लालबाग है, जिसमें एक जगह फूल पौधोंके हजारों गमले सजे हुए हैं और बहुतेरे लटकाए हुए हैं तथा पत्थरकी अनेक पुतलियोंके शरीरसे दमकलेका पानी झरता है, बागमें सुन्दर रीतिसे सड़कें बनी हैं, वृक्ष लगे हैं और एक नालके किनारे पर महाराजकी बड़ी कोठी है, जिसमें कभी कभी महाराजके मेहमान टिकते हैं ।

बागके पास छोटी पशुशाला है, जिसमें कई एक बाघ देख पडे ।

इन्दौरराज्य–यह मध्यभारतके मालवामें मध्यभारतके लिये गवर्नर जनरलके एजेंटके अधीन एक बड़ा देशी राज्य है । इन्दौरके राज्यका क्षेत्रफल ८४०० वर्गमील है । सन १८८१ ८२ में इसकी मालगुजारी ७०७४ ४०० रुपये थी ।

यह राज्य अलग अलग कई टुकडोंमें विभक्त है । जिस देशमें मऊ छावनी है, उसके उत्तर ग्वालियर राज्यका हिस्सा, पूर्व देवास और धार राज्य और निमार अंगरेजी जिला, दक्षिण बम्बई हातेमें खानदेश जिला और पश्चिम बडवनी और धार राज्य हैं । इस भागकी लम्बाई उत्तरसे दक्षिण तक १२० मील और चौंडाई ८२ मील है । इसके बीच होकर नर्मदा नदी बहती है । दूसरे बडे हिस्सेमें, जो इन्दौरके उत्तर है, रामपुरा, भानपुरा और चन्दवाड़ा कसबे हैं, तीसरे हिस्सेमें महीदपुर कसबा है ।

राज्यके उत्तरी भागमें चम्बल नदी और उसकी सहायक नदियां और दक्षिण भागमें नर्मदा नदी बहती हैं । इन्दौर राज्यकी भूमि उपजाऊ है । काली मट्टीमें कपास बहुत उत्पन्न होती है । गल्ला पोस्ता, कपास, तेलहन, ऊख और तम्बाकू राज्यकी प्रधान फसिल हैं ।

सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इन्दौर राज्यके ३७३४ कसबे और गांवोंमें १०५४२३७ मनुष्यथे, अर्थात् ५५९६१६ पुरुष और ४९४६२१ स्त्रियां । जिनमें ८९२६७५ हिन्दू, ८६३९० आदि निवासी, ७२७४७ मुसलमान १६४५ जैन, ६०१ सिक्ख, १२७ पारसी और ५२ कृस्तान थे । हिन्दू जैन और सिक्ख मतपर चलनेवालोंमें ९३७६० राजपूत ७८७५० ब्राह्मण,४५९४० बनिया, ४३७९५ चमार, ३६०५३ गूजर. २५४५१ कुनबी थे । आदि निवासियोंमें ५५५८२ भील, ७३१२ गोड थे ।

राज्यका सैनिक बल २१०० नियमशील और १२०० अनियमित सवार, ३१०० नियमशील और २१५० अनियमित पैदल, २४ तोपें और ३४० गोलंदाज हैं । नियमशील फौज पश्चिमोत्तर और अवधके अंगरेजी देशोंसे भरती की जाती है । पंजाबके सिक्खोंकी कम्पनीभी रहती है ।

सन १८८१-८२ में राज्यके १०७ स्कूलोंमें ४९४२ विद्यार्थी पढतेथे । लड़कियोंके पढ़ने के लिये ३ स्कूलथे, जिनमेंसे २ राजधानीमें थे । इन्दौर, मांडेसर और रामपुरामें जिलेकी कचहरियां और जेलखाने हैं ।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इन्दौर राज्यके इन्दौर शहरमें ९२३२९, मऊमें ३२७७३ और रामपुरामें ११९३५ मनुष्यथे । इस राज्यमें मांडू और मण्डलेश्वरभी प्रसिद्ध बस्ती हैं ।

इतिहास–हुलकर वंश महाराष्ट्र है । पूनासे २० कोस दक्षिण नीरा नदीके तीर पर होल नामक गांवमें कुंदजी नामक भेड़िहरथे । महाराष्ट्र भाषामें 'कर' शब्दका अर्थ'अधिवासी' अर्थात रहने वाला है । कुंदजीके पूर्वज होल नामक गांवमें रहतेथे इसलिये वे हुलकर कहलाए ।

सन १६९३ इस्वीमें कुंदजीके पुत्र मल्हाररावका जन्म हुआ । वह जब चारही पांच वर्ष के थे, तब कुंदजीका देहांत हो गया । उनके मरतेही उनकी स्त्री अपने पुत्रको लेकर खानदेशके टालांदा गांवमें अपने भाई नारायणजीके गृह चली गई। नारायणजी किसी महाराष्ट्र सर्दारके घर कुछ सवारों के नायक थे । कुछ दिनोंके उपरांत नारायणजीने मल्हाररावको होनहार देख पशु चरानेके कामसे निवृत्त कर अपने साथ सवारोंमें भरती कर लिया और पश्चात् मल्हाररावसे अपनी कन्याका विवाह करके अपने धन संपत्तिका स्वामी भी उन्हें बना दिया ।

सन १७२४ ई० में मल्हारराव बाजीराव पेशवाकी सेना में ५०० घोड सवारोंके अफसर हुए । पेशवाने सन १७२८ ई० में नर्म्मदाके उत्तर तटके १२ गांव मल्हाररावको दे दिए और फिर सन १७६१ ई० में और ७० गांव दिए । उस समय मालवामें महाराष्ट्रों और मुसलमानोंमें लडाई चलती थी । उस युद्धमें मल्हाररावने ऐसा पराक्रम दिखाया कि पेशवाने उनको मालवा देशका पूर्ण अधिकार देदिया और मुसलमानों पर विजय पानेके उपरांत इन्दौरका राज्य उनको जागीरमें प्रदान किया । सन १७३५ में मल्हारराव नर्मदाके उत्तर महाराष्ट्र फौजोंके कमांडर नियत हुए ।

मल्हाररावके एकमात्र पुत्र खंडेरावथे, जिनका विवाह सिंधिया वंशमें जन्मी हुई अहिल्याबाईसे हुआ, जिसके गर्भसे मालीराव पुत्र और मच्छा बाई कन्या उत्पन्न हुई । खंडेराव सन १७५४ ई० में भरतपुर और दीगके बीच कुंभेरीदुर्गमें जाटोंके हाथसे मारे गए, उस समय अहिल्याबाईकी अवस्था १८ वर्षकी थी । सन १७६५ में मल्हाररावका देहांत हो गया । वह-मरते समय ७५ लाख रुपए मालगुजारीका राज्य और १५ किरोड़ रुपए नकद छोड़ गए ।

मल्हाररावके मरने पर उनके पोते मालीराव राजा हुए, परंतु ९ महीनेके पश्चात् उन्माद रोगसे वे मर गए; उसके पीछे उनकी माता भारत-प्रख्यात अहिल्याबाईने संपूर्ण राज्यका भार अपने शिर लिया और तुकोजी रावको अपना सेनापति बनाया ।

हुलकर वंशकी पुरानी राजधानी नर्म्मदाके किनारे निमारके अंतर्गत महेश्वरमें थी, जहाँ अहिल्याबाईकी छत्तरी है । अहिल्याबाईने १७७० में इन्दौर बसाया, पर सन १८१८ तक प्रधान कचहरी महेश्वरमें थी ।

अहिल्याबाई खुली कचहरीमें बडी चातुरीसे न्यायका काम करती थी । जो समय बंचता उसको वह पूजा, धर्म और दानमें बिताती थी । वह जैसीही शांत और दयाशीला थी, वैसीही राजनीतिमें कुशल थी । अहिल्याबाई स्वयं तीर्थोंमें जाकर दर्शन पूजन और दान किया करतीथी । उसके बनाएहुए देवमन्दिर धर्मशाला आदि पारमार्थिक काम बदरीनाथसे कन्याकुमारीतक और सोमनाथसे जगन्नाथजीतक भारतमें छितराए हुए हैं । अहिल्याबाई ३० वर्ष राज्य करनेके उपरांत सन १७९५ ई० में परमधामको गई ।

अहिल्याबाई की मृत्युके पश्चात् तुकोजी सेनापतिके पुत्र यशवन्तराव इन्दौरके राजासिंहासन पर बैठे, जिन्होंने अंगरेजी अफसर लार्डलेकसे परास्त होनेके उपरांत बुन्देलखंड अंगरेजों को छोड दिया ।

यशवन्तरावके मरनेपर सन १८११ ईस्वीमें उनकी माता तुलसीबाईने मल्हारराव नामक लडकेको गोद लेकर राजसिंहासन पर बैठाया । मल्हारराव सन १८१८ में हमीदपुरके संग्राममें अंगरेजोंसे परास्त हुए । उन्होंने अंगरेजी गवर्नमेंटसे संधि करके राजपूतानेकी संपूर्ण दावा ओर बहुतेरे राज्य छोड दिए ।

मल्हारराव जब बिनापुत्रके मर गए, तब उनकी माताने मार्तंडराव लडकेको गोद लिया उस समय मल्हाररावके चचेरे भ्राता हरिराव अंगरेजोंकी सहायतासे मार्तंडरावको निकालकर इन्दौरके राजा हुए ।

हरिराव सन १८४३ में जब मरगए, तब उनके पालकपुत्र खंडेराव हुलकर राज्यके सिंहासनपर बैठे । खंडेरावका देहांत सन १८४४ में होगया, उसके पश्चात् उनके पालकपुत्र तुकोजीराव राजा हुए, जो सन १८५२ में बालिग हुए और १७ जून सन १८८६ में स्वर्गको गए ।

सन १८८६ की १२ जुलाईको इन्दौरके वर्तमान नरेश महाराज सर शिवाजी राव हुलकर बहादुर जी० सी० एस० आईको राजसिंहासन मिला, जिनकी अवस्था इस समय ३१ वर्षकी है ।

इन्दौरके राजाओंको अंगरेजी सर्कार की ओरसे सन्मानके लिये २१ तोपोंकी सलामी मिलती है ।

देवास ।

इन्दौर शहरसे लगभग२० मील पूर्वोत्तर मध्यभारतके मालवामें देशी राज्यको राजधानी दवास एक कसबा है ।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इसमें १५०६८ मनुष्य थे, अर्थात् १०२९४ हिन्दू, ३६८५ मुसलमान, ७८६ एनिमिष्टिक, २९९ जैन और ४ सिक्ख ।

देवास राज्यके दोनों राजा कसबेके भिन्न भिन्न महल्लेंमें रहते हैं । कसबेमें एक अस्पताल एक बंगला और एक पोष्टआफिस है ।

कसबेके पश्चिमोत्तर ३०० फीट ऊंची एक छोटी गावदुमी पहाडी पर चामुण्डा देवीका मन्दिर है । खडी पहाडीके बगलमें काटकर गुफा-मन्दिर बना है, जिसमें देवी की बडी प्रतिमा है । उससे नीचे पहाड़ीके किनारे पर एक चौकोना तालाव और महादेवका छोटा मन्दिर है । बहुत लोग देवीके दर्शनके लिये पहाड़ी पर जाते हैं ।

देवास राज्य–यह मध्यभारतके मैनपुर एर्जेसीके आधीन एक छोटा देशी राज्य है । राज्यकी प्रधान पैदावार गल्ला, अफीम, ऊख और कपास है । इस राज्यमें अलग अलग दो राजा हैं, बड़े राजा किशनजी राव, जिनको बाबा साहिब कहतेहैं; और छोटे राजा नारायणराव हैं, जिनको दादा साहिब कहते हैं । दोनों राजा पवार राजपूत एकही कुलके हैं । दोनों राजाओंके राज्य (अर्थात् देवास राज्य) का क्षेत्रफल २८९ वर्गमील है । मनुष्य-संख्या सन १८८१ में १४२१६२ थी, अर्थात् ७५६४७ पुरुष और ६६५१५ स्त्रियां । जिनमें १२३३८७

हिन्दू, १३९०४ मुसलमान, ४७०९ आदि निवासी, १५८ जैन और ४ पारसी थे। हिन्दू और जैनों में १३५०० राजपूत, ५४९५ ब्राह्मण थे।

बडेराजा का सैनिक बल ८७ सवार, लगभग ५०० पैदल और पुलिस और १० तोप छोटे राजाका १२३ सवार और लगभग ५०० पैदल और पुलिस हैं।

इतिहास—बाजीराव पेशवाने कालूजीके पूर्व पुरुषेको यह राज्य देदिया था। कालूजीके दो लड़के तुकोजी और जीवाजीने झगड़ा करके राज्यको बांट लिया। सन १८१८ में अंग्रेजी गवर्नमेटने दोनों राज्योंको संधिद्वारा अपनी रक्षामें लेलिया। दोनों राजाओंको १५ तोपोंकी सलामी मिलती है।

मऊ छावनी।

इन्दौरसे १३ मील दक्षिण (अजमेरसे ३२० मील) मऊका स्टेशन है। मऊ इन्दौरके राज्यमें औवल दर्जेके जिलेका सदर स्थान समुद्रके जलसे १९१९ फीट ऊपर एक कसबा है, जिससे १ मील—पूर्व बंबई—फौजके एक डिबीजनका सदर स्थान मऊकी अंगरेजी छावनी है।

सन १८९१ की मनुष्य—गणनाके समय मऊ और छावनीमें ३१७७३ मनुष्य थे, अर्थात् १८३०० पुरुष और १३४७३ स्त्रियां। जिनमें १९९१० हिन्दू, ८२३३ मुसलमान, २९१५ क्रुस्तान ४१९ पारसी, १९२ जैन, ५३ यहूदी और ५१ सिक्ख थे।

मऊ में अंगरेजी और देशी फौजोंके लिये प्रसिद्ध छावनी है। सन १८१८ ई० के मंद-सोरके सुलहनामेके मुताबिक यहां सेना रहती है।

मांडू।

मऊ छावनीके स्टेशनसे ३० मील दक्षिण—पश्चिम मालवाकी पुरानी राजधानी मांडू ८ बर्गमील भूमि पर उजड़ा हुआ पड़ा है, जो सन ३१३ ईस्वीमें कायम हुआ था। वहां रेलकी सड़क नहीं गई है। जंगली देश देखनेमें अच्छा है।

मांडूकी बस्तुओंमें जामामसजिद प्रधान है, जिसको वहांकी दूसरी इमारतोंसे कम नुकसानी पहुंची है,। किला, पानीमहल, मालवाके राजा हुशंगगोरीका बड़ा मकबरा, जो मार्बुलका है और मालवाके राजा बाजबहादुरका महल, जो एक समय उत्तम इमारत था, यह सब अब भी हीन दशामें वर्तमान हैं। किलेबंदियोंको हुशंगगोरीने बनवाया, जिसने पंद्रहवीं सदीके आरंभमें राज्य किया था।

सन १५२६ ई० में गुजरातके बहादुरशाहने मांडूगढ़को लेकर अपने राज्यमें मिला लिया सन १५७० में बादशाह अकबरने उसको जीता।

धाड़।

मऊसे बड़ोदा जाने वाली सड़क पर मऊसे ३३ मील पश्चिम और मांडूसे १० मील उत्तर मध्य—भारतके मालवा प्रदेशमें देशी राज्यकी राजधानी धाड़ है, जिसको पूर्व समयमें धारापुर और धारानगर लोग कहते थे। मांडूसे धाड़तक पक्की सड़क है।

सन १८९१ की मनुष्य—गणनाके समय धाड़में १८४३० मनुष्य थे, अर्थात् १३९४८ हिन्दू, ३३९३ मुसलमान, ६१५ जैन, ४६० एनिमिष्टिक, ९ पारसी, ४ सिक्ख और १ क्रुस्तान।

धाड़का वर्तमान कसबा मट्टीकी दीवारसे घेरा हुआ १ $\frac{1}{2}$ मील लम्बा और $\frac{1}{2}$ मील चौड़ा है, जिसमें बहुत सुन्दर मकान बने हैं। धाड़में २ छोटे और ८ बड़े तालाब, लाल पत्थरकी

बनी हुई २ बड़ी पुरानी मसजिद और कसबेसे बाहर मैदानसे ४० फीट ऊपर लाल पत्थरसे बना हुआ क़िला है, जिसकी दीवार २४ गोलाकार और २ चौकोने टावरोंके साथ ३० फीटसे ३५ फीट तक ऊंची है । किलेका फाटक पश्चिम बगल पर है । धाड़-नरेशका महल किलेमें है ।

धाड़ राज्य-मध्यभारतमें भोपावर एजेंसीके अधीन यह देशी राज्य है । इसके उत्तर रतलाम राज्य, पूर्व बाड़नगर और सिंधियाके राज्यमें उज्जैन और दिकथन और इन्दौर राज्य, दक्षिण नर्मदा नदी और पश्चिम झबुआका राज्य और सिंधिया राज्यका जिला है । राज्यके दक्षिणी भागके आर पार विंध्य पर्वत गया है, जिसकी उंचाई नर्मदा घाटीसे १६०० से १७०० फीट तक है ।

धाड़ राज्यका क्षेत्रफल सन१८८१ई०में१७४०वर्गमील और मनुष्य संख्या१४९२४४ थी, जिनमें ११५०५१ हिन्दू, १८७९८ आदि निवासी१२२६९ मुसलमान,३०८७ जैन,२७ कृस्तान और १२ पारसी थे । प्रधान जाति राजपूत, कुनबी, महाराष्ट्र, भील और भिलाला हैं । राज्यसे लगभग ७३५००० रुपये मालगुजारी आती है ।

सैनिक बल २७५ सवार, लगभग ८०० पैदल और पुलिस, २ तोपें और २१ गोलन्दाज हैं । यहांके राजाओंको १५ तोपोंकी सलामी मिलती है ।

इतिहास-धाडके वर्तमान नरेश प्रमार (पंवार) राजपूत हैं, जो अपनेको सुप्रसिद्ध उज्जैनके विक्रमादित्यके वंशधर कहते हैं । प्रमारोंमें विक्रमादित्य और राजा भोजका नाम बहुत प्रसिद्ध है । धाड़ अर्थात् धारानगरी विक्रमादित्यके राज्यमें एक प्रसिद्ध नगरी थी । (उज्जैनके वृत्तांतमें देखो) ऐसा कहा जाता है कि राजा भोजने अपनी राजधानी उज्जैनसे धाड़में कायमकी थी । लगभग सन ५०० ई० में प्रमारोंका बल घट गया । दूसरे राजपूत घरानेकी उठती होनेपर बहुतेरे पंवार पूनामें चले गए ।

सन १३९८ में दिल्लीका गवर्नर दिलावरखां आया, जिसने धाड़के बड़े बड़े हिन्दू-मन्दिरोंकी सामग्रीसे मसजिदें बनवाईं । उसका पुत्र अपने बापकी जगह राजप्रतिनिधि होने पर अपनी राजधानीको धाड़से मांडूमें ले गया । सन १५६७ से महाराष्ट्रोंके रोब दाब होनेके समयतक धाड़ मुगल बादशाहतके अधीन था ।

पंवार राजपूत जो दक्षिणमें जाकर बसे थे, उन्होंने महाराष्ट्र-प्रधान शिवाजी और उनके उत्तराधिकारियोंकी सहायता की । सन १७४९ ई० में बाजीराव पेशवाने आनन्दराव पंवारको धाड़ दे दिया । वर्तमान धाढ़नरेश उन्हींके वंशधर हैं । मालवामें अंगरेजी विजयके पहिले २० वर्षके दर्मियान धाड़ राज्यमें सिंधिया और हुलकर लूटपाट करते रहे । दूसरे आनंदरावकी विधवा मीनाबाईके साहससे राज्य बरबादीसे बचाया गया । सन १८१९ ई० में यह राज्य अंगरेजी रक्षामें आया । मीनाबाईने रामचन्द्र पंवारको गोदलिया था । रामचन्द्रके मरनेके उपरांत उनके गोद लिएहुये पुत्र यशवंत राव उत्तराधिकारी हुए । सन १८५७ में यशवंतरावकी मृत्यु होनेपर उनके वैमात्रिक भ्राता वर्तमान धाड़नरेश महाराज सर आनन्दराव पंवार के० सी० एस० आई०, जिनकी अवस्था लगभग ४७ वर्षकी है, उत्तराधिकारी हुए । सन १८५७ के बगावतके कारण अंगरेजी गवर्नमेंटने राज्यको छीन लिया था, परन्तु पीछे वर्तमान महाराजको बैरसिया जिलेके अतिरिक्त संपूर्ण राज्य लौटा दिया ।

' गोपीचन्द भरतरी ' नामक पद्यमें भाषाकी छोटी पुस्तक है, उसमें लिखा है कि गोपीचन्द नामक राजा धारानगरमें धर्मसे राज्य करता था, जिसकी १६०० स्त्रियां थीं। एक समय गोपीचन्दकी माता मैनावतीने कहा कि हे पुत्र ! काल सबको मार डालता है, वह तेरे शिरपर गाँज रहा है, तू शीघ्र बैराग ले। राजाने मातासे पूछा कि मैं कैसे योगी बनूं और किसको गुरू बानऊं। मैनावतीने कहा कि हे पुत्र ! तेरे मामा (भरतरी) के गुरू (गोरखनाथ) गुफामें रहते हैं, उनकी सेवा करनेसे तू अमर हो जायगा। राजा गोपीचन्द अंगमें विभूति लगाकर राज्यको छोड़ वनमें चला गया। रनिवासमें रोदन पड़ गया। सरदार सब रोने लगे। गोपीचन्दकी राजा भरतरीसे भेंट हुई। भरतरी गोपीचन्दको गोरखनाथके पास गुफामें ले गए। गोरखनाथने वरदान दिया कि गोपीचन्द तू अमर हो जायगा। उसके उपरांत गोपीचन्दने गुरू गोरखनाथसे कहा कि आपकी आज्ञा हो तो अलख जगाकर अपने महलसे भिक्षा मांग लाऊं। अब मैं अपनी १६०० स्त्रियोंको माताके समान जानता हूं। गोपीचन्दने गुरूकी आज्ञा पाकर अंगमें विभूति लगा कांधेपर झोली रख, धारा नगरकी देवढीपर पहुंचकर अलख जगाया बांदी भिक्षा लेकर आई। योगी बोला कि महलमें १६०० रानी मेरी माता हैं उनसे तू भिक्षा भेज लौंडीने जाकर रानीसे कहा कि राजकुमार ड्योढीपर खड़े भिक्षा मांगते हैं। रानी रतनकुँवरि योगीके पास गई। योगी कानोंमें मुद्रा, गलेमें शेली, अंगमें विभूति लगाए था। वह बोला कि मैंने माताका वचन मान सबका मोह त्याग दिया, अब मैं तुम्हारा पुत्रहूं, तुम मेरी माता हो। रानीने राजा गोपीचन्दको कई प्रकारसे समझाया, परन्तु उसने कुछ नहीं माना। गोपीचन्दने रानीसे कहा कि राज्यके समय तुम मेरी पत्नीथीं और अब योगके समय तुम मेरी माताहो, तुम मुझको पुत्र कहकर सम्बोधन करो, तब मेरा योग सफल होगा। इसके अनन्तर गोपीचन्द वहांसे चलकर माता मैनावतीके समीप गया और उनकी आशीश ले विदा हुआ, इत्यादि।

बीसवां अध्याय।

(मध्यदेशमें) ओंकारनाथ।

ओंकारनाथ।

मऊ छावनीसे ३६ मील दक्षिण, थोड़ा पश्चिम (अजमेरसे ३५६ मील) नर्म्मदाके किनारे पर मोरतका नामक रेलका स्टेशन है। मऊसे ३ मील आगे पातालपानीका स्टेशन मिलता है। वहां दहिनी ओर बड़ा झरना देख पड़ता है और वहांसे पहाड़की चढ़ाई उतराई आरंभ होती है, जो १२ मील आगे चोरला स्टेशन तक रहती है। पातालपानीसे कलाकंद स्टेशन तक ६ मीलके भीतर गाड़ी जानेके लिये पहाड़ फोड़ कर ३ जगह सुरंगी रास्ता बना है। कलाकंदसे गाड़ीके आगे पीछे २ एंजिन जोड़े जाते हैं। नर्म्मदाके पुलको लांघ कर गाड़ी मोरतका स्टेशन पर पहुंचती है। पुलके ऊपर रेलकी लाईन है, जिसके नीचे गाड़ीकी सडक है।

मोरतकासे ७ मील मध्यदेशके निमार जिलेमें नर्म्मदाके किनारे पर मान्धाता नामक टापूमें ओंकारनाथ शिवका मन्दिर है। मोरतकासे टापू तक बैलगाड़ीकी सुन्दर सड़क है। मार्गमें दो जगह पक्की बावली मिलती हैं। अमरेश्वरके पास नाव पर चढ़ नर्म्मदा नदी पार

होकर टापूमें जाना होता है नर्म्मदामें नावकाभी रास्ता है, परंतु स्टेशनसे नाव द्वारा ओंकार-नाथके पास जानेमें पानीका चढ़ाव मिलता है ।

टापूके पास नर्म्मदा नदी गंभीर भावसे पश्चिमको बहती है । खड़ी पहाड़ियोंके बीच नदी बहुत गहरी है, जिसमें मछलियां और घड़ियाल बहुत रहते हैं ।

नर्म्मदाके दहिने अर्थात् उत्तर किनारे पर मान्धाता टापू है । स्कंदपुराणके नर्म्मदाखंडमें लिखा है कि सूर्य्यबंशी राजा मान्धाताने वहां शिवका पूजन कियाथा, इसलिये उसका नाम मान्धाता टापू पड़ा । टापूका क्षेत्रफल १ वर्गमीलसे कुछ कम है। नर्म्मदाकी उत्तर शाखा कावेरी नदी कहलाती है, जिसके होनेसे यह टापू बना है। यह शाखा ओंकारपुरीसे एक मील पूर्व नर्म्मदासे निकलकर टापूकी उत्तरी सीमाको बनाती हुई ओंकारजीसे १ $\frac{१}{२}$ मील पश्चिम जाकर फिर नर्म्मदामें मिलगई है ।

टापूके उत्तरकी भूमि क्रम क्रमसे ढलुआं है, परंतु दक्षिण और पूर्वकी भूमि चार पांच सौ फीट ऊंची और खड़ी है । टापूके सामने नर्म्मदाके दक्षिण किनारेकी भूमिभी खड़ी है, पर बहुत ऊंची नहीं है ।

टापूके सिर पर ओंकारपुरीके राजाका मकान है, राजा भिलाला जातिके हैं । भरतसिंह चौहानने सन ११६५ ईस्वीमें नाथूभीलसे मान्धाता टापूको छीन लिया । मृत राजा उस भरतसिंहकी २८ वीं पीढीमें थे । नर्म्मदाके दोनों किनारोंके मन्दिरोंका प्रबन्ध पुस्तहा पुस्तसे इसी खांदानके हाथमें है। ओंकारजीका सब खर्च यही चलाते हैं, और जो पूजा चढ़ती है उसको यही लेते हैं । नाथूके वंशधर अबतक टापूके उत्तर बगल और इसके सिरपरके पुराने मन्दिरोंके पुश्तैनी रक्षक हैं ।

नर्म्मदाके किनारेसे ऊपर राजाके मकानतक पहाड़ीके ढालुएं बगलपर ओंकारपुरीका मनोहर दृश्य दृष्टिगोचर होता है, उसको शिवपुरीभी कहते हैं । उसमें छोटा बाजार है, यात्री मोदियोंके मकानमें टिकते हैं । सन १८८१ की मनुष्य-संख्याके समय मान्धाता टापूमें ९३२ मनुष्य थे । पुरीसे पश्चिम नर्म्मदाके तटपर राजाकी छत्तरी है । कार्त्तिककी पूर्णिमासीको ओंकार पुरीमें स्नान दर्शनका मेला होता है, उस समय लगभग १५००० यात्री जाते हैं ।

ओंकारनाथका मन्दिर टापूके दक्षिण बगलपर नर्म्मदाके दहिने ओंकारपुरीमें है । ओंकारनाथके वर्त्तमान मन्दिरको और उसके पाशके कई छोटे मन्दिरोंको पेशवाने बनवाया था । ओंकारनाथके निज मन्दिरका द्वार उत्तर ओर दो मुहें मन्दिरमें है, जिसका द्वार पश्चिम ओर जगमोहनमें है । ओंकारेश्वर शिवलिंग अनगढ हैं, पासमें पार्वतीजीकी मूर्ति है । मन्दिरमें दिन रात दीप जलता है । दो मुहेंमन्दिरमें रात्रिके समय ओंकारजीका पलंग बिछाया जाता है, इसके बगलकी कोठरीमें शुकदेवजीकी मूर्ति और लिंगस्वरूप राजा मान्धाता हैं । जगमोहनके आगे एक बहुत पुराना और दूसरा सुन्दर मार्बुलका नया नन्दी है । ओंकारजीके मन्दिरसे ऊपर इससे लगाहुआ ईशान कोणपर महाकालेश्वरनामक शिवका शिखरदार बड़ा मन्दिर है, जिसके आगेका जगमोहन ओंकारजीके आगेके दो मुहमन्दिरके ठीक ऊपर है । महाकालेश्वरके मन्दिरके ऊपरके तहमें भी एक शिवलिंग है ।

ओंकारजीके मन्दिरके समीप अविमुक्तेश्वर, ज्वालेश्वर, केदारेश्वर,गणपति, कालिकाआदि देवताओंके मंदिर हैं और मन्दिरसे नीचे नर्म्मदाका कोटितीर्थ नामक पक्का घाट है; जहां स्नान और तीर्थ भेंट होती हैं।

टापूके भीतरही ओंकारपुरीकी छोटी और बडी दो परिक्रमा हैं, जो ओंकारनाथके मन्दिरसे आरम्भ होकर वहांही समाप्त होती हैं। परिक्रमा करते समय इस क्रमसे प्रसिद्ध मन्दिर मिलते हैं–(१) तिलभांडेश्वर शिवका मन्दिर, (२) ऋणमुक्तेश्वरके पुराने ढबका बडा मन्दिर, (३) गोरी-सोम-नाथके पुराने ढबका मन्दिर है. जिसके आगे अंगभंग किया हुआ बहुत बडा १ नन्दी है। सोमनाथ बहुत बडा लिङ्ग है। एक सौ गज दूर २० फीट ऊंचा एक स्तम्भ है। छोटी परिक्रमा करनेवाले यात्री वहांसे ओंकारपुरीको चले आते हैं, (४) टापूके पूर्व किनारेके पास वहांके सब मन्दिरोंसे बडा और पुराना सिद्धेश्वर महादेवका मन्दिर है । मन्दिरके पासके आंगनके बगलोंपर मोटे खम्भे लगेहुए दालान हैं। खम्भोंमें देवताओंकी तस्वीर खुदी हुई हैं। १० फीट ऊंचे चबूतरे पर मन्दिर खडा है चबूतरेपर चारों ओर ५ फीट ऊंचे बहुतेरे हाथी परस्पर लडते हुए पत्थरके बने हैं। दो हाथियोंके अतिरिक्त सब हाथियोंके अंग भंग हुए हैं। आगेके फाटकपर अर्जुन और भीमकी ६ । ६ हाथकी विशाल मूर्तियां हैं। इससे आगे जानेपर नर्म्मदाके तीर खड़ी पहाड़ी मिलती है, जिससे कूदकर पूर्व समयमें अनेक मनुष्य अपनी मुक्तिके लिये आत्महत्या करते थे। इस रीतिको अंगरेजी सर्कारने सन १८२४ ईस्वीमें बन्द कर दिया पूर्वकालमें मुसलमानोंने परिक्रमाके पासके प्रायः सम्पूर्ण पुराने मन्दिरोंके हिस्से तोड़ दिए थे और बहुत देवमूर्तियोंके अंग भंग कर दिए थे। परिक्रमा करते समय छोटे पुराने किलेकी टूटी फूटी दीवार देख पड़ती है ।

जिस जगह नर्म्मदासे कावेरी निकली है, वहां कई तबाह फाटक और एक बड़ी इमारत है, जिसपर पत्थरमें विष्णुके २४ अवतारोंकी मूर्तियां बनी हैं। इमारतमें शिवकी मूर्ति है, जिसके पासका शिलालेख सन १३४६ ई० के मुताबिक होता है। वहांसे कुछ दूर किनारेके नीचे रावण नालेमें १८ ३ फीट लम्बी पड़ी हुई एक मूर्ति है, जिसके १० हाथोंमें सोटे और खोपड़ियां इत्यादि, छातीपर एक बिच्छू और दहिने बगलमें एक मूसा है ।

ओंकारपरीके सम्मुख नर्म्मदाके बांए अर्थात् दक्षिण किनारे एक टीले पर ब्रह्मपुरा और उससे पश्चिम दूसरे टीले पर विष्णुपुरी तीर्थ हैं। दोनोंके मध्यमें कपिलधारा नामक छोटी धारा भूमिकी नालासे आकर गोमुखी द्वारा नर्म्मदामें गिरती है, उस स्थानका नाम कपिला-संगम है। वर्तमान सदीमें नर्म्मदाके दक्षिण किनारे पर बहुत मन्दिर बने हैं ।

ब्रह्मपुरीमें अमरेश्वर शिवका विशाल मन्दिर है, जिसके सामने पत्थरके खम्भे लगा हुआ मंडप बना है। दूसरे मन्दिरमें ब्रह्मेश्वर शिवलिंग और ब्रह्माकी मूर्ति है। विष्णुपुरीके विष्णु भगवानके मन्दिरमें विष्णु, लक्ष्मी और पार्षदोंकी मूर्तियां हैं। एक छोटे मन्दिरमें कपिल मुनिका चरण-चिह्न और एक स्थानमें कपिलेश्वर महादेव हैं। ब्रह्मपुरी और विष्णुपुरीके मध्यमें काशी विश्वनाथका नया मन्दिर है जिसको ओंकारपुरीके मृत राजाने बनवाया।

विष्णुपुरीसे थोडा पश्चिम नर्म्मदाके किनारे जलके भीतर मार्कण्डेय शिला नामक चट्टान है जिसपर यमयातनासे छुटकारा पानेके लिये यात्री लोग लोटते हैं। उसके समीप पहाड़ीके बगलपर मार्कंडेय ऋषिका छोटा मन्दिर है ।

मैं मोरतका स्टेशनसे ओंकारपुरी बैलगाडीपर गया और ओंकारपुरीमें २॥) रुपयेके किराएकी नावपर सवार हो मोरतका पहुंचा। नर्मदाकी धारा तेज है, स्थानपर पानीकी धारा पत्थरोंके ढोकोंपर टक्कर खाती है और जगह जगह बेगसे ऊंचेसे नीचे गिरती है। नदीका जल निर्मल है, दृश्य सुन्दर है ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा-मत्स्यपुराण-(१८५ वां अध्याय) नर्मदाके तटपर ओंकार, कपिला संगम और अमरेश महादेव पापोंके नाश करनेवाले हैं (१८८ वां अध्याय) जहां काबेरी और नर्मदाका संगम है कुबेरने वहां दिव्य १०० वर्ष तप किया और शिवसे वर पाकर वह यक्षोंका राजा हुआ । जो पुरुष वहां स्नान करके शिवजीकी पूजा करता है उसको अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है और रुद्रलोक मिलता है । जो मनुष्य वहां अग्निमें भस्म होता है अथवा अनशन व्रत धारण करता है उसको सर्वत्र जानेकी गति हो जाती है ।

अग्निपुराण-(११४ वां अध्याय) नर्मदा और कावेरीका संगम पवित्र स्थान है ।

कूर्मपुराण-(ब्राह्मी संहिता-उत्तरार्द्ध ३८ वां अध्याय) काबेरी और नर्म्मदाके संगममें स्नान करनेसे रुद्रलोकमें निवास होता है । वहां ब्रह्मनिर्मित ब्रह्मेश्वर शिवलिंग है । उस तीर्थमें स्नान करनेसे ब्रह्मलोक प्राप्त होता है ।

देवीभागवत-(७ वां स्कंध-३८ वां अध्याय) अमरेशमें चंडीका स्थान है ।

पद्मपुराण-(भूमिखण्ड-२२ वां अध्याय) जहां सिद्धेश्वर, अमरेश्वर और ओंकारेश्वर शिवलिंग हैं, वहां नर्म्मदाके दक्षिण तीरपर ब्रह्माको जानो । (२३ वां अध्याय) सिद्धेश्वरके निकट वैदूर्य्य नामक पर्वत है । (८७ वां अध्याय) च्यवन ऋषि पर्य्यटन करते हुए अमरकंटक स्थानमें नर्म्मदा नदीके दक्षिण तटपर पहुंचे, जहां ओंकारेश्वर नामक महालिंग है । ऋषीश्वरने सिद्धनाथ महादेवका पूजन और ज्वालेश्वरका दर्शन करके अमरेश्वरका दर्शन किया । फिर वह ब्रह्मेश्वर, कपिलेश्वर और मार्कंडेयेश्वरका दर्शन करके ओंकारनाथके मुख्य स्थानपर आए ।

शिवपुराण-(ज्ञानसंहिता-३८ वां अध्याय) शिवके १२ ज्योतिर्लिंग हैं, जिनमेंसे एक अमरेश्वरमें ओंकारलिंग हैं ।

(४६ वां अध्याय) एक समय विंध्यपर्वत ओंकार चक्रमें पार्थिव बनाकर पूजन करने लगा । कुछ समयके पश्चात् महेश्वरने प्रकट होकर विंध्यकी इच्छानुसार बरदान दिया । इसके अनंतर जब विंध्य और देवताओंने शिवजीसे प्रार्थनाकी कि हे महाराज आप इसी स्थान पर स्थित होयें, तब वहां दो लिंग उत्पन्न हुए; एक ओंकार यंत्रसे ओंकारेश्वर और दूसरा पार्थिवसे अमरेश्वर । संपूर्ण देवगण लिंगका पूजन और स्तुति करके निज निज स्थानको चले गए । जो मनुष्य इन लिंगोंकी पूजा करता है, उसका पुनः गर्भवास नहीं होता ।

सौरपुराण-(६९ वां अध्याय) रेवा नदीके तीरमें ज्वालेश्वर शिवलिंगके निकट करोड़ों तीर्थ विद्यमान हैं । वहां नदीमें स्नान करके ज्वालेश्वरके दर्शन करनेसे २१ कुलका उद्धार हो जाता है और शिवलोक मिलता है ।

इक्कीसवां अध्याय ।

(मध्यदेशमें) खंडवा जंक्शन, बुरहानपुर, हरदा, सिउनी, नरसिंहपुर, जबलपुर, मंडला और अमरकंटक ।

खंडवा ।

मोरतका स्टेशनसे ३७ मील दक्षिण, थोडा पूर्व (अजमेरसे ३९३ मील) मध्यप्रदेश नर्म्मदा विभागके निमार जिलेका प्रधान स्थान (२१ अंश ५० कला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश २३ कला पूर्व देशांतरमें) खंडवा एक कसबा है । यहां 'बंबे बरोदा सेंट्रल इंडियनके'

'राजपूताना मालवा' ब्रैंच और 'ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे' का जंक्शन है और फौजोंके ठहरनेके लिये छावनी बनाई गई है।

सन१८९१ की मनुष्य-गणनाके समय खंडवामें१५५८९ मनुष्य थे अर्थात् ९९७३हिन्दू, ४७९० मुसलमान, ४६८ क्रुस्तान, २४६ जैन, ८१ पारसी, २७ यहूदी और ४ एनिमिष्टिक।

खंडवा क़सबा बहुत पुराना है। क़सबेसे २ मील पूर्व सिविल स्टेशनमें कचहरीकी कोठी, एक गोल मकान और एक गिर्जा है।

निमार जिला—यह मध्यदेशका पश्चिमी जिला है। इसके उत्तर और पश्चिम धार राज्य और हुलकरका देश, दक्षिण खानदेश जिला और पश्चिम बरार और पूर्व हुशंगाबाद जिला है। जिलेका क्षेत्रफल ३३४० वर्गमील है।

जिलेका सदर मुकाम खंडवामें है। जिलेमें २ कसबे हैं। बुरहानपुर और खंडवा। सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बुरहानपुरमें जो तापती नदीकी घाटीमें है ३२२५२ और खंडवामें जो नर्म्मदाकी घाटीमें है १५५८९ मनुष्य थे।

इस जिलेमें असीरगढ़का किला और मान्धाता टापू, जिसमें ओंकारजीका मन्दिर है, दिलचस्पीकी प्रधान वस्तु हैं। जिलेके सिंगाजीमें आश्विन महीनेमें मान्धाता टापूमें कार्तिककी पूर्णिमाको मेला होता है। निमार जिलेके जंगलोंमें बाघ, भालू, सूकर, इत्यादि बनजंतु रहते हैं।

सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय निमार जिलेके २ कसबे और ६२५ गांवोंमें २३११३४१ मनुष्य थे, अर्थात् १२१००८ पुरुष और ११०३३३ स्त्रियां। इनमें १९९२९० हिन्दू, २४४२६ मुसलमान, ५२८२ आदि निवासी, १२४७ जैन, ७८९ क्रुस्तान, १०१ कबीर पंथी, ९७ पारसी, ५४ सतनामी, ४६ यहूदी और ९ सिक्ख थे। हिन्दुओंमें २१०३६ कुर्मी, १९३२० बलाई, १९२९५ राजपूत, ११८९८ ब्राह्मण थे। अनार्य और हिन्दूमतपर चलने वाले कुल आदि निवासी ३९०४१ थे, अर्थात् १६९३५ भील, ९५४१ कुरकु,८६४८ भिलाला, ३०३६ नहाल, ७६१ गोंड़, ९९ कोल, और २१ दूसरे।

रेलवे—खंडवासे रेलवे-लाइन ३ ओरसे गई है,—

(१) खंडवासे पूर्वोत्तर जबलपुर तक 'ग्रेट इंडियन पेनिनसूला रेलवे' उससे आगे 'इष्टइंडियन रेलवे'—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

६३ हरदा।
८९ सिउनी।
११० इटारसी शंक्शन।
१८३ गाड़रबाड़ा जंक्शन।
२११ नरसिंहपुर।
२६३ जबलपुर।
३२० कटनी जंक्शन।
३५९ माइहर।
३८१ सतना।
४२९ मानिकपुर जंक्शन।
४८७ नैनी जंक्शन।
४९१ इलाहाबाद।

इटारसी जंक्शनसे उत्तर, कुछ पूर्व 'इंडियन मिडलेंड रेलवे',—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

११ हुशंगाबाद।
५७ भोपाल।
८५ सांची।
९० भिलसा।
१४३ जीना जंक्शन।
१८२ ललितपुर।

२३८ झांसी जंक्शन ।
३७५ कानपुर जंक्शन ।

कटनी जंक्शनसे पूर्व दक्षिण 'बंगाल नागपुर रेलवे'
मील–प्रसिद्ध स्टेशन–
१३५ पेंड्रारोड ।
१९८ बिलासपुर ।

मानिकपुर जंक्शनसे पश्चिम, कुछ उत्तर 'इंडियन मिडलेंड रेलवे,'–
मील–प्रसिद्ध स्टेशन–
१९ करवी ।
६२ बांदा ।
१८१ झांसी जंक्शन ।

(२) खंडवासे दक्षिण–पश्चिम 'ग्रेट–इंडियन पेनिनसूला रेलवे,'–
मील–प्रसिद्ध स्टेशन–
३१ चांदनी ।
४३ बुरहानपुर ।
७७ भुसावल जंक्शन ।
१२१ पचौरा ।
१४९ चालीसगांव ।
१७५ नान्दगांव ।
१९१ मनमार जंक्शन ।
२३७ नासिक ।
२७८ कसारा ।
३२० कल्यान जंक्शन ।
३३२ थाना ।
३४७ दादर ।
३५३ बंबई विक्टोरिया स्टेशन ।

भुसावल जंक्शन से पूर्व ओर,—
मील–प्रसिद्ध स्टेशन—
१६६ बडनेरा जंक्शन ।
(अमरावतीके लिये)
१९५ बरदा जंक्शन ।
२४४ नागपुर ।

मनमार जंक्शन । से दक्षिण,—
मील–प्रसिद्ध स्टेशन
९५ अहमदनगर ।
१४६ धोंद जंक्शन ।

(३) खंडवासे चित्तौरगढ तक पश्चिमोत्तर, उससे आगे उत्तर 'राजपूताना मालवा रेलवे;—
मील–प्रसिद्ध स्टेशन—
३७ मोरतका ।
७३ मऊ छावनी ।
८६ इंदौर ।
१११ फतेहाबाद जंक्शन ।
१६७ रतलाम जंक्शन ।
१८१ जावरा ।
२४३ नीमच छावनी ।
२७७ चित्तौरगढ ।
३७८ नसीराबाद छावनी ।
३९३ अजमेर जंक्शन ।

बुरहानपुर ।

खंडवासे ४३ मील दक्षिण-पश्चिम बुरहानपुरका रेलवे स्टेशन है । बुरहानपुर मध्य प्रदेश नर्मदा विभागके निमार जिलेमें स्टेशनसे लगभग ३ मील दूर तापती नदीके उत्तर किनार पर शहरपनाहके भीतर बसा है ।

सन१८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बुरहानपुरमें ३२२५१ मनुष्य थे, अर्थात् १६५३२ पुरुष और १५७२० स्त्रियां । जिनमें २१४६४ हिन्दू, १०४८० मुसलमान, २९१ जैन, ९ यहूदी, ७ क्रस्तान और १ पारसी थे ।

बुरहानपुरमें अकबरका बनवाया हुआ लाल किला नामक ईटेका एक महल और औरंगजेबकी बनवाई हुई जामा मसजिद है। लाल किलेमें अब तक कई एक सुन्दर कमरे और

शाही विभव की दूसरी वस्तुओंकी निशानियां हैं। बुरहानपुरमें एक ऐसिसटेंट कमिश्नर और तहसीलदार रहते हैं। रूई और रेशमी बनावटकी सुन्दर दस्तकारी होती है।

निमार जिलेके दक्षिण वेतूल जिला और वेतूल जिलेके पूर्व छिन्दवाडा जिला है। दोनों जिलोंमें कोई बडा कसबा नहीं है।

इतिहास–खानदेशके फरुखी खांदानके नासिरखांने सन १४०० ई० में बुरहानपुरको कायम किया और दौलताबादके प्रसिद्ध शेख बुरहानुद्दीनके नामसे इसका नाम रक्खा। सन १६००में बादशाह अकबरने इस को मुगल राज्यमें मिला लिया। सन ११६५ तक यह डेकान सूबेकी राजधानी था, जब औरंगाबाद सूबेकी राजधानी हुई, तब बुरहानपुर खानदेशके बडे सूबेकी राजधानी बनाया गया। सन १७२० में आसफजाह निजामुलमुल्कने डेकानके राज्य शासनको छीन लिया और खासकरके बुरहानपुर में रहने लगा, जहां वह १७४८ में मर गया। सन १७३१ में १ ¾ वर्गमील भूमिको घेरती हुई शहरकी दीवार बनाई गई, जिसमें ९ फाटक बनें। सन १७६० में निजामने पेशवाको बुरहानपुर देदिया, सन १७७८ में पेशवाने सिंधियाको दिया और सन १८०३ में यह अंगरेजोंको मिला।

हरदा।

खंडवा जंक्शनसे ६३ मील पूर्वोत्तर हरदाका स्टेशन है। हरदा मध्यप्रदेशके हुशंगाबाद जिलेमें तहसीलीका सदर स्थान (२२ अंश २१ कला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश ८ कला पूर्व देशांतरमें) तिजारती कसबा है। वहांसे बहुत गल्ले और तेलके बीज दूसरे प्रदेशों में जाते हैं।

सन १९९१ की मनुष्य-संख्याके समय हरदा में १३५५६ मनुष्य थे, अर्थात् १००१० हिन्दू, २७३६ मुसलमान, ४१४ क्रस्तान, २९३ जैन, ६४ पारसी ६८ एनिमिष्टिक और १ अन्य।

सिउनी।

हरदासे २६ मील (खंडवासे ८९ मील पूर्वोत्तर) सिउनीका स्टेशन है। सिउनी मध्य प्रदेशके जबलपुर विभागमें जिलेका सदर स्थान (२२ अंश ५ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश ३५ कला पूर्व देशान्तरमें) एक छोटा कसबा है।

सन १८९१ की मनुष्य, गणनाके समय सिउनीमें ११९७६ मनुष्य थे। सन १७७४में महम्मद अमीनखांने सिउनीको बसाया। इसमें बड़ा पबलिक उद्यान, सुन्दर बाजार और एक सुन्दर सरोवर है। कचहरीके मकान, जेल, स्कूल, अस्पताल और पोष्टआफिस, सरकारी इमारत हैं।

सिउनी जिला–जिलेके उत्तर जबलपुर जिला, पूर्व मंडला और बालाघाट जिले, दक्षिण बालाघाट, नागपुर और भंडारा जिले और पश्चिम नरसिंहपुर और छिंदवाडा जिले हैं। जिलेका क्षेत्रफल ३२४७ वर्गमील है।

सतपुड़ाकी ऊंची भूमिके एक हिस्सेपर पहाड़ियां हैं। घाटियां चौडी और नंगी हैं। जिलेके दक्षिणी भागमें नोकदार बहुत पहाड़ियां हैं जिलेकी प्रधान नदी बेनगंगा है, जो नागपुर और जबलपुर जानेवाली सडकसे ३ मील पूर्व कुराईघाटके निकट निकली है और थोडा दक्षिण जाकर सिउनी और बालाघाट जिलोंकी सीमा बनतीहै। जिलेमें कई एक जगह लोहेकी खान हैं, परन्तु केवल एक जगह लोहा बनाया जाता है। जिलेकी छोटी नदियोंमेंसे बहुतेरीमें सोना

मिलता है । कभी कभी आदि निवासी कोमोंमेंसे मुंडिया लोग, जिनको इस जिलेके लोग सोनगिरिया कहते हैं, नदीकी बालू धोकर सोना निकालते हैं ।

सिउनीके निकट मुंडारमें बेनगंगाके निकासके पास और सुरइखामें बेनगंगा और हीरी नदीके संगमके निकट मेला होता है । और छपरेमें मवेशियोंका एक मेला होता है, जिसमें लगभग ७० हजार पशु एकत्र होते हैं ।

सन १८८१ में एक कसबे और १४६२ गांवोंमें ३३४७३३ मनुष्य थे, अर्थात् १७९७०५ हिन्दू, १३९४४४ आदि निवासी, १३४४२ मुसलमान, १४०८ जैन, ५९८ कबीरपंथी, ९९ कृस्तान, २५ सिक्स, ९ सतनामी और ३ पारसी । हिन्दुओंमें अहार, मेहरा और पोनवार अधिक हैं । लगभग १ लाख ५० हजार गोंड़ हैं, जो हिन्दू और आदि निवासी दोनोंमें गिने गए थे ।

नरसिंहपुर ।

सिउनीसे २१ मील (खंडवासे ११० मील) पूर्वोत्तर इटारसीमें रेलवेका जंक्शन है । इटारसीसे १५ मील पूर्वोत्तर बगरा स्टेशनके पास पहाड़के सुरंगी रास्ते होकर रेल निकली है । इटारसीसे ७३ मीलपर नरसिंहपुर जिलेमें गाड़रवाडा जंक्शन है, जहांसे १२ मील दक्षिण-पूर्व रेलवेकी एक शाखा मोपानीके निकट कोयलेकी खानको गई है ।

गाडरवाडासे २८ मील (खंडवासे २११ मील पूर्वोत्तर) नरसिंहपुरका रेलवे स्टेशन है, नरसिंहपुर मध्यप्रदेशके नर्म्मदा विभागमें जिलेका सदर स्थान सिंगी नदीके पास (२२ अंश ५६ कला ३५ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश १४ कला ४५ विकला पूर्व देशांतरमें) है । पहिले इसका नाम गड़ारिया मेडा था, पश्चात् छोटा गाड़रवाड़ा इसका नाम पडा । नरसिंहजीके मन्दिरके बननेके पश्चात् इसका नाम नरसिंहपुर हुआ ।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नरसिंहपुरमें १०२२० मनुष्य थे, अर्थात् ७६३१ हिन्दू, १९५६ मुसलमान, ३५६ जैन, २१८ एनिमिष्टिक, ५७ कृस्तान और २ पारसी ।

यहां प्रधान सरकारी इमारतोंमें जिलेकी कचहरियां, डिपटी कलक्टर और पुलिस सुपरिंटेंडेंटके आफिस, १ जेल, १ अस्पताल, एक धर्मशाला और कई एक स्कूल हैं और रुई वा गल्लेकी तिजारत होती है । नरसिंहपुरमें नरसिंहजीका विशाल मन्दिर बना है ।

नरसिंहपुर जिला—इसके उत्तर भोपाल राज्य और सागर, दमोह और जबलपुर जिले, पूर्व सिउनी जिला, दक्षिण छिंदवाडा जिला, और पश्चिम दूधी नदी, जो हुसंगाबाद जिलेसे इसको अलग करती है । जिलेका क्षेत्रफल १९१६ वर्गमील है । इस जिलेमें प्रायः सब गांवोंके निकट आमके कुंज और पुराने पीपल और बटके वृक्ष हैं ।

सन १८८१ में जिलेके २ कसबे और ९८५ गांवोंमें ३६५१७३ मनुष्यथे, अर्थात् ३०५१३७ हिन्दू, ४३९१० आदि निवासी, १३४२५ मुसलमान, २१०७ जैन, ४११ कबीरपन्थी, १०३ कृस्तान, १४ सतनामी और ३ पारसी । हिन्दुओंमें ३३१९७ लोधी, २६६९६ ब्राह्मण थे, दूसरी जातियां इनसे कमथीं । संपूर्ण आदिनिवासी ६३७३१ थे; अर्थात् ४६६४५ गोंड, १२९०३ कवरा और ११८३ दूसरे । इनमेंसे बहुतेरे हिन्दूमें गिने गए हैं ।

जबलपुर ।

नरसिंहपुरसे ५२ मील (खंडवा जक्शनसे २६३ मील पूर्वोतर और नयनी जंक्शनसे २२४ मील पश्चिम दक्षिण) जबलपुरका रेलवे स्टेशन है । जबलपुर मध्यप्रदेशमें किस्मत और जिलेका सदर स्थान (२३ अंश ११ कला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश ५९ कला पूर्व देशा-

न्तरमें) नर्म्मदा नदीसे ४ मील दूर एक शहर है, जो पहले नागपुरके भोसलेके अधिकारमें था और अब अंगरेजी राज्यमें है।

सन १८९१ की जन संख्याके समय जबलपुरमें ८४४८१ मनुष्य थे, अर्थात् ४४९२३ पुरुष और ३९५५८ स्त्रियां। जिनमें ६०९६४ हिन्दू, १९४४० मुसलमान, २१७३ कृस्तान, ११२९ जैन, ५९५ एनिमिष्टक ८५ बौद्ध ६४ पारसी, ७ अन्य और ४ यहूदी। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्षमें ३२ वां और मध्यप्रदेशमें दूसरा शहर है।

स्टेशनके पास एक सराय, जबलपुरके निकट कोयलेकी खान और शहरसे ४ मील दूर नर्म्मदा नदीका घाट है। शहरमें व्यापार बड़ा होता है। सिउनी, दमोह और मंडला पड़ोसके जिलोंमें जबलपुरसे बहुत वस्तु जाती हैं। शहरमें एक उत्तम तालाब है, जिसके चारों ओर बहुतेरे मन्दिर बने हैं। शहर और छावनीके बीचमें उमती नामक एक छोटीसी नदी है। दुर्ग की सेनामें एक युरोपियन पैदल रेजीमेंट, ६ कम्पनी देशी पैदलका एक रेजीमेंट और देशी सवारका एक भाग है।

मदन महल—शहरसे मदन महल तक ४ मील पक्की सड़क है। प्रायः ४०० वर्ष हुए कि, एक गोंड़ राजाने एक फकीरके सन्मानके लिये एक पहाड़ी पर इसको बनवाया। महलके पास बहुतेरे छोटे कुंड हैं।

मार्बुलकी पहाड़ी—जबलपुर शहर से ११ मील दक्षिण-पश्चिम और मीरगंजके रेलवे स्टेशनसे ५ मील दूर मार्बुलकी पहाड़ी है। शहरसे तांगा जाने लायक सड़क गई है। ९ $\frac{१}{२}$ मील जाने पर बाएं फिर कर सड़क की शाखा से वहां पहुंचना होता है। नाव पर सवार हो पहाड़ी के पास पहुंचना होता है। वहां श्वेत मार्बुल की खड़ी पहाड़ी है, जो तोड़ने पर चमकीली देख पड़ती है। नए बंगलेके पास, जहां कई श्वेत मन्दिर हैं, ८० फीट ऊंची खड़ी पहाड़ी है। वहां पानी १५० फीट गहरा है। एक मील आगे सरहदके चट्टान धारको रोकते हैं नाव सूखे मोसिममें जा नहीं सकती। वर्षा कालमें नर्म्मदा नदी ३० फीट उठती है, उस समय धार बहुत तेज हो जाती है। $\frac{१}{४}$ मील बाएं माधोराव पेशवा का खुदवाया हुआ देवनागरी अक्षर का लेख है। $\frac{१}{४}$ मील बाएं हाथीपांव नामक आश्चर्य्य चट्टान है। चट्टानों की उंचाई किसी जगह ९० फीट से अधिक नहीं है। सरहद के चट्टानों के $\frac{१}{२}$ मील आगे धुंआधार नामक एक बड़ा झरना है। बंगले से ८० गज दूर एक गावदुमी पहाड़ी पर एक मन्दिर है। एक बगल से स्थान तक १०७ सीढियां गई हैं। यहां पत्थर खोद कर बहुतेरी देवमूर्तियां बनी हुई हैं, जिनमें से अधिक शिव की हैं। अनेक मूर्तियों को मुसलमानों ने तोड़ दिया था। यहां कार्तिकमें एक स्नान दर्शनका मेला होता है, भेरा घाट मीरगंजके रेलवे स्टेशनसे ३ मील है।

जबलपुर जिला—मध्य देशमें एक किस्मत और जिलेका सदर स्थान जबलपुर है जबलपुर जिलेके उत्तर पन्ना और माईहर राज्य, पूर्व रीवां राज्य, दक्षिण मंडला, सिउनी और नरसिंहपुरके अंगरेजी जिले और पश्चिम दमोह जिला है। जिलेका क्षेत्रफल ३९१८ वर्गमील है।

जबलपुर जिलेमें माहा नदी है, जो मंडला जिलेमें निकली है, उत्तर जाकर विजय राघवगढके पास पूर्वको झुकती है और आगे जाकर सोन नदीमें गिरती है। जबलपुर और दमोह जिलोंके बीचमें गुरया नदी और पन्ना राज्य और जबलपुर जिले के बीचमें पटना नदी है। जिलेमें पूर्व से पश्चिम को ७० मील नर्मदा नदी बहती है। जिलेमें बागकी पैदावार बडी है। जोली, अगरिया, सखली और प्रतापपुरमें लोहे की बडी खान हैं। सन १८८२ में

जिलेकी ४८ खानोंमें काम होता था । रामघाट भेंरा घाट और सिंगापुरके पास कोयला निकलता है । इस जिलेमें मरवाडा और सिहोरा दो छोटे कसबे हैं ।

सन १८८१ की जन संख्याके समय जबलपुर जिलेमें ६८७२३ मनुष्य थे । अर्थात् ५६५३६१ हिन्दू, ६७८०४ आदि निवासी, ३४७९० मुसलमान, ५५१५ बौद्ध और जैन, १४२२ युरोपियन आदि, ५१ पारसी और ३३७ दूसरे । हिन्दू और जैनोंमें ६०४२० ब्राह्मण, ४५७६० लोधी,३४५१३ कुर्मी, ३२९११ अहीर, ३२९०५ चमार थे । आदि निवासी जातियोंमें, जो हिन्दू और आदि निवासी दोनों में गिने गए थे, ९८३८४ गोंड, ४६३८३कोल, और शेषमें भरैआ, वैगा इत्यादि थे ।

इतिहास–ग्यारहवीं और बारहवीं सदियोंमें जबलपुरका जिला हैहय वंशके राजाओं के अधीन था । सोलहवीं सदी में गढमडला के गोंड राजा संग्रानी शा ने ५२ जिलोंके ऊपर अपने बलको फैलाया, जिसमें जबलपुर का वर्तमान जिला भी था । उसके पोते प्रेमनारायणके बालकपन में गोंड रानी दुर्गावतीने राजकाज का निर्वाह किया । उस समय सूबेदार आसफ खांने राज्यपर आक्रमण किया । सिगौरगढ की गढी के नीचे युद्ध हुआ । आसफखां का विजय हुआ । रानी दुर्गावती मर गई । पहिले आसफखां गढ का स्वतंत्र मालिक बना, परंतु पीछे उसको छोड दिया । सन १७८१ तक यह गढमंडला के राजाओं के अधीन रहा । उस वर्ष सागर के शासक ने गढ मंडला के राजा को परास्त किया । सन १७९८ में पेशवा ने मंडला और नर्मदा घाटी को नागपुर के भोंसले को दिया । सन १८१७ में अंगरेजी गवर्नमेंट ने भोंसले से इसको ले लिया । सन १८८६ में नागपुर के चीफ कमिश्नर के अधीन जबलपुर एक जिला कायम हुआ ।

मंडला ।

जबलपुर शहरसे लगभग ५० मील दक्षिण-पूर्व मंडला कसबे को एक सडक गई है । मंडला मध्यप्रदेश: जबलपुर विभाग में जिलेका सदर स्थान (२२ अंश ३५ कला ६ विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश २४ कला पूर्व देशांतर में) है ।

सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय मंडला में ४७३२ मनुष्य थे, अर्थात् ३७२६ हिन्दू, ७४४ मुसलमान, १५६ आदि निवासी, ८३ कृस्तान और २३ कबीरपंथी ।

कसबेके ३ बगलोंमें नर्म्मदा नदी बहती है, जिसके किनारे पर १७ देव मन्दिर बने हैं जो सन १६८० से १८१७ तक के बने हुए हैं ।

मंडला जिला–इसके पूर्वोत्तर रीवाँ राज्य, दक्षिण–पूर्व बिलासपुर जिला, दक्षिण पश्चिम बालाघाट जिला और पश्चिम सिउनी और जबलपुर जिले हैं, जिले का क्षेत्रफल४७१९वर्गमील ।

सन १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय इस जिलेके १७५१ कसबे और गावोंमें ३०१७६० मनुष्य थे, अर्थात् १६७७४६ आदि निवासी,जो अपने असली मतपर हैं,१२३७९३ हिन्दू, ५६८६ कबीरपन्थी, ४०४८ मुसलमान, २८४ जैन, १२७ कृस्तान और ७६ सतनामी । कुल आदि निवासी, जो अपने असली मतपर हैं, अथवा हिन्दू में गिने जाते हैं, १८४५४८ थे, जिनमें १६४९६९ गोंड, ११४९३ बैगा; ७३०८ कोल, ७७८ दूसरे कोलारियन कोम थे । मध्यदेश के किसी जिले में इतने आदि निवासी या पहाडी कोम नहीं हैं । हिन्दू और जैन आदि में २१५२० अहीर, ११९०८ पंका, ९६८७ अहरा, ६७१२ धीमर, ६१४९ ब्राह्मण, ५५२० राजपूत थे ।

नर्म्मदा नदी जिले के मध्य होकर बहती है जिसकी सहायक अनेक छोटी नदियां हैं ३००० से अधिक आवादी की बस्ती केवल मंडला है जिले में मामूली कपड़े की विनाई के अतिरिक्त कोई दस्तकारी नहीं है। मेकल पहाड़ियोंमें लोहेकी ओर बहुत हैं। रामगढ़के पास खानों में बेशकीमत धातु निकलती हैं।

मंडला जिले में हृदयनगर एक गांव है, जिसको सन१६४४ई०में राजा हृदयशाहने बसाया था। यहां वर्ष में बंजर नदी के किनारे पर एक मेला होता है। मेलेमें बहुत क्रय विक्रय होता है।

इतिहास–गढ़ मंडला खांदानके ५७ वें राजा नरेंद्र शा ने सन१६८०में मंडला को राज्य शाशन की बैठक बनाई। उसने नदी के पास एक किला और उसके भीतर एक बड़ा महल वनवाया सन १७३९ में बालाजी बाजीराव पेशवा ने मंडलाको लेलिया। महाराष्ट्रोंने दीवार और फाटकोंसे कसबेको मजबूत किया। सन१८१८ में यह अंगरेजी गवर्नमेंटके हाथ में आया।

अमरकंटक।

जबलपुर से ५७ मील पूर्वोत्तर मध्यप्रदेश में कटनी जंक्शन और कटनीसे १३५ मील दक्षिण पूर्व मध्यप्रदेश में पेंड्रारोड रेलवेका स्टेशन है, जिससे करीब ७ मील दूर रीवाँ राज्य में विंध्याचलके अमरकंटक शिखर पर पूर्व समय के बहुतेरे देवमन्दिर हैं, जिनमें अमरनाथ महादेव और नर्म्मदा देवी के स्थान प्रधान हैं। उसी शिखरसे नर्म्मदा नदी निकली है और सोन नदी का उत्पत्ति स्थान भी वही है। यह शिखर समुद्र के जलसे लगभग ३४०० फीट ऊंचा सुन्दर वृक्ष लताओं से परिपूर्ण है। इससे अनेक सुन्दर झरने निकले हैं। रीवाँ दर्बारकी ओरसे मन्दिरोंके भोगराग का बन्दोबस्त रहता है। चारों ओर जंगल और पीरान देश है। इस निर्जन देश में पंडों की एक नई छोटी बस्ती है। यह पुराना तीर्थ बहुत दिनोंसे अप्रसिद्ध हो गया है। यात्री कम जाते हैं।

नर्म्मदा नदी चिपटे शिखर पर प्रथम एक कुंड में गिरती है और वहांसे ३ मील बहनेके उपरान्त अमर कंटकके प्रेटूके किदारे पहुंचकर खड़ी पहाड़ी पर गिरती है। लोग वहां की धाराको कपिलधारा कहते हैं। मार्ग में अनेक झरने नर्मदामें गिरते हैं। यह नदी अमरकंटकसे कई सौ फीट नीचे उतर कर मध्यदेशमें मंडला पहाड़ीके चारों ओर घूमकर रामनगर की उजाड़ दीवारोंके नीचे आई है। इस प्रकारसे एक सौ मील दौड़ने के उपरान्त यह मैदानमें पहुँचती है। और आर्यावर्त्त और दक्षिण प्रदेशके मध्यमें अपने निकासके स्थानसे लगभग ७५० मील पश्चिम बहनेके उपरान्त बम्बई हाते के भड़ौचके नीचे खंभातकी खाड़ी में गिरती है। जबलपुर, हुशंगाबाद, हंडिया, ओंकारपुरी (मांधाता टापू) और भडौच प्रसिद्ध नगर इसके किनारे हैं। बहुतेरे यात्री नर्म्मदाके निकास के स्थान से और मुहाने तक जाकर इस पवित्र नदीकी परिक्रमा करते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–शंखस्मृति–(१४ वां अध्याय) अमरकंटक और नर्म्मदा का दान अनंत फल देता है।

महाभारत–(वनपर्व्व ८४ वां अध्याय) जहां सोन और नर्म्मदा नदियां अलग हुई हैं, वहां बांसों के झुंड के स्पर्श करने से अश्वमेध यज्ञ का फल होता है।

(८९ वां अध्याय) पश्चिम दिशा में पश्चिम बहने वाली नर्म्मदा नदी है। ब्रह्मा के सहित सम्पूर्ण देवता नर्म्मदाके पवित्र जल में स्नान करने आते हैं।

(अनुशासन पर्व्व-२५ वां अध्याय) नर्म्मदा में स्नान करने से मनुष्य राजपुत्र होताहै।

मत्स्यपुराण–(१८५ वां अध्याय) कनखल में गंगा और कुरुक्षेत्रमें सरस्वती प्रधान हैं। नर्म्मदा नदी ग्राम अथवा वनमें सर्वत्र उत्तम हैं। सरस्वती का जल ५ दिनों में, यमुना जल

७ दिनों में और गंगा जल तत्कालही पवित्र करता है, परन्तु नर्म्मदा के दर्शन मात्र से जीव पवित्र हो जाता है। कलिंग देश के अमरकंटक वन में नर्म्मदा नदी मनोहर और रमणीय है। जहां पर्वत के समीप रुद्रों की कोटि है, वहां नर्म्मदा में स्नान कर जो रुद्रों का पूजन करता है, उस पर शिव प्रसन्न होते हैं। वहां जो मनुष्य यवोंसे देवताओं और तिलों से पितरों का तर्पण करते हैं, उनके ७ पीढ़ीके पुरुषे स्वर्ग में वास करते हैं।

नर्म्मदा नदीकी लम्बाई १०० योजन और चौडाई २ योजन है। उसके चारोंओर६० करोड़ और ६० हजार तीर्थ हैं। जो पुरुष जितेंद्रिय रहकर उस तीर्थपर प्राणोंको त्यागता है, वह देवताओंके दिव्य १०० वर्षतक स्वर्गमें वास करता है।

कूर्मपुराण–(ब्राह्मी संहिता–उत्तरार्द्ध–३८ वां अध्याय) नर्म्मदा नदी रुद्रकी देहसे निकली है, जो चराचर सर्व भूतोंका उद्धार कर सकती है। कनखलमें गंगा और कुरुक्षेत्रमें सरस्वती नदी अति पवित्र है, परन्तु नर्म्मदा ग्राम वा वनमें सर्वत्र अति पवित्र है। सरस्वतीका जल ३ दिनमें यमुनाका जल ७ दिनोंमें और गंगाजल तत्कालही पवित्र करता है, किन्तु दर्शनमात्रहीसे नर्म्मदाका जल पवित्र कर देता है। कलिंग देशके पश्चिमार्द्धमें अमरकंटक पर्वतमें १०० योजनसे कुछ अधिक लम्बी और २ योजन चौडी त्रिलोकमें परम पवित्र नर्म्मदा नदी है। अमरकंटक पर्वत पर ६० कोटि और ६० सहस्र देवताओंका निवास है। उस पर्वतपर जितेन्द्रिय होकर निवास करनेसे मनुष्य सहस्र वर्षपर्यंत स्वर्गमें सुखसे निवास कर पृथ्वीमें फिर आकर चक्रवर्ती राजा होता है और वहां मृत्यु होनेसे मनुष्य १०० वर्ष पर्यंत रुद्रलोक में निवास करता है। अमरकंटक पर्वतकी प्रदक्षिणा करनेसे पुण्डरीक यज्ञ करनेका फल मिलता है। (४० वां अध्याय) समुद्र और नर्म्मदाके संगम पर स्नान आदि कर्म करनेसे ३ अश्वमेध यज्ञ करनेका फल मिलता है। एरंडी और नर्म्मदाके संगमपर स्नान करनेसे ब्रह्महत्यादि पापोंका विनाश होता है।

अग्निपुराण–(११४ वां अध्याय) गंगाके जल में स्नान करने से जीव तत्कालही पवित्र होता है, परन्तु नर्म्मदा जल के दर्शन मात्रही से जीव का पातक दूर हो जाता है। अमरकंटक में पर्वत के चारों ओर ६० कोटि और ६० सहस्र तीर्थों का निवास है।

गरुड़पुराण—(पूर्वार्द्ध-८१ वां अध्याय) अमरकंटक उत्तम तीर्थ है।

शिवपुराण—(ज्ञानसंहिता--३८ वां अध्याय) नर्म्मदा नदी शिव का रूप है, इसके तट पर असंख्य शिवलिंग स्थित हैं।

पद्मपुराण—(सृष्टिखंड-९ वां अध्याय) पितरों की कन्या नर्म्मदा नदी भरतखंड में बहती हुई पश्चिम-समुद्र में जा मिली है।

(भूमिखंड–२० वां अध्याय) सोमशर्म्मा नर्म्मदा के तट पर कपिला-संगम पुण्य तीर्थ में स्नान करके तप करने लगा। (२१ वां अध्याय) जब विष्णु भगवान् उसको वरदान देकर चलेगये तब वह नर्म्मदा के तीर पुण्यदायक तीर्थ में, जिसका नाम अमरकंटक है, दानपुण्य करने लगा।

मेरी प्रथम यात्रा समाप्त हुई। मैं नयनी जंक्शन और बक्सर होता हुआ अपने गृह चरजपुरा को लौट आया और मेरे अनुज बाबू तपसीनारायण मुगलसराय जंक्शन से बनारस गये।

भारतभ्रमण–प्रथमखण्ड समाप्त.

पुस्तक मिलनेका पता—
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस–मुम्बई.